जीवन-संगिनी स्वर्गीया सरला की स्मृति में

जिसने

इस कोष की पूर्ति में

बड़ी सहायता दी थी और जिसे

यह संग्रह अत्यंत ही

प्रिय था

अवधी-कोष

श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

हिंदुस्तानी एकेडेमी
उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण :: २००० :: १९५५
मूल्य ७॥)

मुद्रक—श्री प्रेमचन्द मेहरा, न्यू ईरा प्रेस, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

जनपदीय भाषाओं के महत्व को अब अधिकाधिक समझा जा रहा है। उनके शब्दों को एकत्र करने का काम उन्हें लुप्त हो जाने से बचाने के लिए आवश्यक है। उनका कोष-रूप में संपादन लोक-साहित्य और लोक भाषा को समझने की दृष्टि से मूल्यवान् है। राष्ट्रभाषा हिंदी की शब्द-निधि को भरने की दृष्टि से भी यह कार्य कम महत्व का नहीं है। जनपदीय भाषाओं में ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनके समानार्थी हिंदी में नहीं मिलते और जिनके ग्रहण कर लेने से हिंदी की विचारों को व्यक्त करने की क्षमता बढ़ेगी। अतएव जनपदीय भाषा-कोषों की उपयोगिता स्पष्ट है।

बड़े हर्ष की बात है कि श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' ने अनेक वर्षों के परिश्रम से यह अवधी-कोष तैयार किया है। इस कार्य की पूर्ति के लिए ये बधाई के पात्र हैं।

हमें यह न भूलना चाहिए कि अपने ढंग का यह प्रारंभिक प्रयास है। हो सकता है कि सभी दृष्टियों से यह पूर्ण न हो। फिर भी जो सामग्री योग्य संपादक ने प्रस्तुत की है वह इतनी प्रचुर, मूल्यवान् तथा रोचक है कि आगे इस क्षेत्र में काम करने वालों को निश्चय ही इस से बहुत सहायता मिलेगी। यही नहीं, अन्य जनपदीय भाषाओं के भावी कोषकारों के लिए भी यह कोष पथ-प्रदर्शक होगा।

प्रस्तुत कोष मे मूल-शब्द लगभग १५,००० हैं, पर इनके साथ इनसे बननेवाले संज्ञा, क्रिया तथा विशेषण आदि, एवं विभिन्न ज़िलों में प्रयुक्त उच्चारण-भेद से बने रूप भी दिए गए हैं और इन सबकी सम्मिलित संख्या ५०,००० से ऊपर है।

व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति के अतिरिक्त मुहावरे, लोकोक्तियां तथा जायसी, तुलसी आदि कवियों और लोकगीतों तथा बोलचाल के प्रयोगों से उद्धरण देने से कोष की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

धीरेंद्र वर्मा
मंत्री तथा कोषाध्यक्ष

हिंदुस्तानी एकेडेमी
उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद
१२ ७. ५५

प्रस्तावना

वृंदावन साहित्य सम्मेलन (१९२५ ई०) में मैंने अवधी लोकगीतों पर एक निबंध पढा था। उस समय पंडित रामनरेश त्रिपाठी का ग्रामगीत सग्रह प्रकाशित नहीं हुआ था। १९३१ ई० में टर्नर के नैपाली-कोष ने मुझे अवधी-कोष के काम की ओर खींचा। टर्नर यों भी काशी में हमारे अध्यापक रहे थे और उनसे बाद को बहुत-सा पत्र-व्यवहार भी हुआ है। तब से आज तक—२५ वर्षों की लंबी अवधि में—प्रतिदिन कुछ न कुछ समय इस कोष को देता रहा हूं। इसे मनोरंजन समझें या व्यसन, पर कोष की पांडुलिपि मेरे साथ-साथ भारत में ही नहीं अफ़ग़ानिस्तान भर में घूमती रही है। एक बार तो यह सारी सामग्री खो भी गई थी और कई महीनों बाद मिली।

अवधी का क्षेत्र यों तो व्यापक है ही, इसके अनेक शब्द मुझे बाहर भी प्रचलित मिले। ग्वाई (गोई) और पहिती इनमें से मुख्य हैं। ये दोनों रूस की दक्षिणी सीमा से लेकर ईरान की पूर्वी एवं पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा तक उसी अर्थ में बोले जाते हैं जिसे हम अवध में समझते हैं। इस पर लखनऊ में हुए प्राच्यभाषा सम्मेलन में मैंने एक लेख पढ़ा था और अवधी के ये दोनों शब्द कूद कर पंजाब तथा पाकिस्तान को छोड़ते हुए इतनी दूर कैसे पहुँचे या उलटे उधर से इधर कैसे आये, यह सब भाषा-विज्ञानियों के कुतूहल तथा जिज्ञासा का विषय है।

शब्दों के इस आवागमन या कूद-फाँद में कितने ही प्रतिदिन गिरते-पड़ते, टूटते-फूटते तथा नष्ट होते जा रहे हैं। इसी कारण उपभाषाओं के कोष जितने ही शीघ्र प्रकाशित हो जायँ उतना ही अच्छा हो क्योंकि इनके बोलनेवाले प्रत्येक बूढ़े-बूढ़ी के देहावसान के साथ सैकड़ों पुराने शब्दों का लोप होता रहता है। हर्ष का विषय है कि लखनऊ विश्वविद्यालय से ब्रजभाषा सूरकोश का प्रकाशित होना प्रारंभ हो गया है और उधर राजस्थानी एवं भोजपुरी कोषों की भी तैयारी हो रही है।

अवधी के इस महत्वपूर्ण कार्य में मुझसे अनेक त्रुटियां बन पड़ी होंगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। एक तो मैं प्रायः अकेला ही यह काम करता रहा हूं, दूसरे मैं पूर्वी अवधी क्षेत्र का निवासी हूं। अतएव इस संग्रह में पूर्वी क्षेत्र का प्राधान्य रहा है यद्यपि पश्चिमी क्षेत्र के भी शब्दों तथा पूर्वी शब्दों के वैकल्पिक रूप देने का प्रयत्न किया गया है। इस संबंध में सीतापुर के डाक्टर नवल बिहारी मिश्र से विशेष सहायता मिली है और मेरे कुछ विद्यार्थियों ने भी काम किया है।

इस कोष का प्रारंभिक कार्य अवधी-अंग्रेजी में टर्नर की प्रणाली पर किया गया था, पर श्री पुरुषोत्तमदास टंडन तथा अन्यान्य शुभचिंतकों के आग्रह पर इसे वर्तमान रूप दिया गया। अंग्रेजीवाले संस्करण के प्रकाशनार्थ डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी, आचार्य नरेंद्रदेव तथा डाक्टर उदयनारायण तिवारी ने विशेष प्रोत्साहन दिया, यद्यपि वह अभी तक पूरा नहीं हो पाया है। हिंदीवाले वर्तमान संस्करण के प्रकाशन में मित्रवर रामचंद्र टंडन और भोलानाथ तिवारी ने मेरा बहुत हाथ बँटाया है। कोष की तैयारी के बीच कुछ नए शब्द मिले तथा कुछ

शब्दों के अर्थ बढ़ाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इन्हें परिशिष्ट में दिया जा रहा है। फिर भी मैं जानता हूं इस कोष के नये संस्करण में ग्रंथ का रूप और ही हो जायगा।

अवधी क्षेत्र से बाहर रहनेवाले पाठकों की सहायतार्थ, एक क्रिया (जाव) के भिन्न रूपों को परिशिष्ट के अनंतर दिया गया है, जिससे अन्य क्रियाओं की रूपरेखा का आभास मिलेगा। यत्र-तत्र अवधी के मुख्य कवियों तुलसी, जायसी आदि द्वारा प्रयुक्त अनेक शब्दों के भी उद्धरण भी दिये गये है। तथापि ऐसे उद्धरणों का एक समूह इसमें नहीं आ पाया है। यह दूसरे ही संस्करण में संभव हो सकेगा।

इसके साथ अवधी क्षेत्र का एक मानचित्र भी देना चाहता था, पर इस पर मत-भेद होने के कारण इसे अभी रहने दिया है। सहस्रों वर्गमील में करोड़ों जनता द्वारा प्रयुक्त इस महत्वपूर्ण भाषा के कोष का काम कितना कठिन है, इसका ध्यान रखते हुए अंत में मैं भाषाविज्ञान के पंडितों से यही नम्र निवेदन करूँगा कि वे मेरी इस कृति को क्षमा की दृष्टि से देखें। आशा है अवधी महासागर को पार करने के लिए मेरे इस छोटे डोंगे को विद्वान् वैसा ही समझेंगे जैसा कालिदास ने लिखा है—तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।

सत्यनारायण कुटीर,
हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
आषाढ़ शुक्ल ९, २०११

श्रीरामाज्ञा द्विवेदी "समीर"

संकेत-सूची

अ० अंग्रेज़ी
अनु० अनुकरणात्मक
अ० अकर्मक
अर० अरबी
अव्य० अव्यय
आ० आदरप्रदर्शक (रूप)
उ० उदाहरणार्थ
उल० उलटा
क० कविता
कच० कचहरी (में प्रयुक्त)
कबी० कबीर
कहा० कहावत
का० काश्मीरी
का० कानूनी या अदालती
क्रि० क्रिया
क्रि० वि० क्रिया-विशेषण
ग० गढ़वाली
गॉ० गॉथिक
गी० केवल या प्रायः गीतों में प्रयुक्त
गों० गोंडा
घृ० घृणात्मक (रूप)
ज० जर्मन
जा० जायसी
जौ० जौनपुर
ड० डच
ता० तामिल
तु० तुलना करें
तुल० तुलसीदास
दे० देखिये
द्वि० द्वित्वात्मक (रूप)
ध्व० ध्वन्यात्मक
नै० नेपाली
पं० केवल या प्रायः पंडितों द्वारा प्रयुक्त
पंज० पंजाबी
प० पश्तो
पहे० पहेली
पा० पाली
पुं० पुंलिङ्ग
पु० पुनर्द्योतक अथवा पुनरात्मक (रूप)
पू० पूर्वकालिक (रूप)
पू० अ० पूर्वी अवधी
प्र० प्रभावात्मक (रूप)
प्रत० प्रतापगढ़
प्रय० प्रयाग
प्रा० प्राकृत
प्रे० प्रेरणार्थक (रूप)
फ़ा० फ़ारसी
फ़ै० फ़ैज़ाबाद
फ़्रां० फ़्रांसीसी
बॅ० बॅगला
ब० बहराइच
ब० व० बहुवचन
बाँ० बाँदा
बा० बाराबंकी
ब्र० ब्रजभाषा
भा० भाववाचक (संज्ञा, रूप)
भो० भोजपुरी
म० मराठी
मा० मालवी
मि० मिर्ज़ापुरी
मु० मुहावरा
मुस० मुसलिम (प्रयोग)
मै० मैथिली
यू० यूनानी (ग्रीक)
राँ० राँगड़ी
रा० रायबरेली
ल० लखनऊ
लखी० लखीमपुर-खीरी (लखीमपुरी बोली)
लघु० लघुत्वसूचक (रूप)
लह० लहँदा
लै० लैटिन
वि० सा० विश्राम सागर
वि० बो० विस्मयादि बोधक अव्यय
वै० वैकल्पिक (रूप अथवा उच्चारण)
शा० शायद
सं० संज्ञा, संस्कृत; शब्दों के तुरंत ही बाद सं० संज्ञा का द्योतक है और उनके अंत में यह उनकी संस्कृत-मूलकता लक्षित करता है।
संबो० संबोधन का रूप
स० सकर्मक
सर्व० सर्वनाम
सिं० सिंधी
सी० सीतापुर
सु० सुलतानपुर
स्त्री० स्त्रीलिंग
ह० हरदोई
हा० हास्यात्मक (रूप अथवा उच्चारण)

नोट—प्रायः शब्दों के अंत में जिस भाषा से शब्द विशेष का संबंध है उसका निर्देश यों किया गया है :—फ़ा० फारसी, अर० अरबी, सं० संस्कृत आदि। जहाँ ! चिह्न है वहाँ उस शब्द के मूल आदि में संदेह सूचित होता है। प्रांतों अथवा ज़िलों के नाम का संकेत शब्द के उस क्षेत्र में प्रचलन या विशेष प्रकार के उच्चारण का सूचक है।

अ

अँकड़ी सं० स्त्री० दे० अँकरी।

अँकरी सं० स्त्री० (१) छोटी कंकड़ी;-पथरी, छोटी-छोटी कंकड़ियाँ; कूड़ा-करकट (खाद्य के लिए), (२) एक घास; अँकरी+सं० प्रस्तर।

अँकवारि सं० स्त्री० आलिंगन, दोनों हाथ फैला कर किसी को घेरने या भेंटने की मुद्रा; भर-,-भर;-देब, छाती से लगाना, भेंट-, स्त्रियों का गले मिलना; भेंट-कहब, ऐसा मिलन भाव (दूसरे द्वारा) निवेदन करना। सं० अंक।

अँकाइब क्रि० सं० दूसरे से अँकवाना, आँकब (दे०) का प्रे०, भा० काई, वै०-उब; सं० अंक।

अँकुरब क्रि० अं० पनपना, जी उठना, काम योग्य होना; सं० अंकुर।

अँकोर सं० पुं० रिश्वत;-देब,-लेब,-पाइब; वि०-हा, रिश्वती, स्त्री०-ही; सं० उत्कोच?

अँखुवा स० पुं० अंकुर;-निकरब, दे० आँखा; सं० अक्षि।

अँगरा सं० पुं० अंगारा; यक-आगि, जरा सी आग, जरि-, जो शीघ्र रुष्ट हो जाय या जल के अंगार हों जाय; वै० अङरा; जा०-गार,-रा; सं० अंगार।

अँगिआ सं० स्त्री० स्त्रियों के पहनने का वह कपड़ा जो छाती तथा पेट पर तना रहता है, प्रायः गीतों में ही यह शब्द प्रयुक्त होता है, वै०-या,-ङिआ; सं० अंग। दे० अङिआ।

अँगिराब क्रि० अ० अँगड़ाई लेना, मु० अकड़ना, गर्व से बातें करना; वै०-ङि; सं० अग (शरीर को तान लेना)।

अँगोछा सं० पुं० वह कपड़ा जो पुरुष प्रायः कंधे पर रखते हैं। स्त्री०-छी, क्रि०-छब, अँगोछे से (शरीर) पोंछना वै०-गौछा,-गउछा,-छी, अङो-, छूरी-(दे० छूरी) सं० अंग।

अँचइब क्रि० अ० आचमन करना (भोजन के बाद), हाथ मुँह धोना; प्रे०-वाइब,-उब (नौकर या दूसरे द्वारा अतिथि का) हाथमुँह धुलवाना, वै०-उब; सं० आ+चम्।

अँचर-धरौआ सं० पुं० विवाह का एक रस्म जिसमें वर ससुराल की कुछ स्त्रियों का अंचल पकड़ लेता और तब छोड़ता है जब वे कुछ उपहार देती हैं। सं० अंचल+धृ।

अँचरा सं० पुं० अंचल; सं० अंचल। "-मोरा जूँठा लरिकन लार बही रे बही"-गीत

अँचाब क्रि० अ० गर्म होना, आँच देना (चूल्हे आदि का); प्रे०-चवाइब, वै०-चिआब, याब।

अँचार सं० पुं० तेल तथा मसालों में सुरक्षित रखे आम आदि फल;-डारब,-धरब, मु०-डारब, व्यर्थ रक्खे रहना।

अँजीरी सं० स्त्री० अंजीर; जा०

अँजुरिआइब क्रि० सं० "अँजुरी" से लेना, देना, उठाना, रखना आदि; सं० अंजलि।

अँजुरी सं० स्त्री० अंजलि; यक-; दुइ-, जितना दोनों हाथों को एक में सटाकर फैलाने पर स्थान बनता है उतने स्थान में आनेवाला सामान; उसका दूना; सं० अंजलि।

अँजोर सं० पुं० उजाला;-होब, प्रातःकाल हो जाना;-करब, प्रसिद्ध कर देना, व्यं० जलना या जलाना (घर, गाँव आदि) क्रि० वि०-रें, उजाले में, कबी० "यही अँजरोरें बिछाय लेव", वै० उजिआर,-यार, उँ-,प्र०-जरोर, जा०-रा, सं० उज्वल।

अँजोरिया सं० स्त्री० चाँदनी, चाँद, वै०-आ,-री;-उअब,-निकरब, चाँदनी निकलना, जा०-री; फ़्रैं० उँजे, सं० उज्ज्वल।

अँटइब क्रि० स० पूरा बाँट देना, वै०-वाइब, दे० आँटब।

अँटिआइब क्रि० स० आँटा (छोटे-छोटे गट्ठर) बनाना, दे० आँटा,-टी।

अँतरिख सं० पुं० अंतरिक्ष, जा०-क्ख,-रीखा।

अँदोरा सं० पुं० आंदोलन, जा० (पदु० १२, ६२)

अँधकूप सं० पुं० अंधकूप, जा० (पदु० २१, ६), तु० भवकूपा (तुल०)

अँधिआर सं० पुं० अंधेरा; जा० (पदु० २४, ८०), दे० अन्हिआर, वै०-रा (पदु० १०, ४)

अँबराउँ सं० पुं० आम का बाग, दे० अमराई, जा० (पदु० २, १८, २४)

अँबिरथा दे० अमिरथा, जा० (पदु० १९, २२)

अँइच-पइँच सं० पुं० इधर उधर अथवा व्यर्थ की बात, बाधा,-लगाइब; वै०-चा-चा, ग० ऐंछ-पैंछ।

अइँचव क्रि० सं० खींचना; प्रे०-चाइव,-चवाइव,-उव, नै०-चु।
अइँचाताना सं० पुं० व्यक्ति जिसकी आँखें तिरछी हों; कभी कभी वि० जैसा भी प्रयुक्त होता है।
अइँठ सं० पुं० ऐंठ जाने की प्रवृत्ति; गर्व,-करव,-होव, वै० ऐं-, द्वि०-ग्वँइठ, दे०-व।
अइँठन सं० पुं० ऐंठने का निशान अथवा रूप;-परव, (रस्सी में) ऐंठ जाने की स्थिति हो जाना।
अइँठनी सं० स्त्री० लकड़ी का एक औज़ार जिससे रस्सी ऐंठी जाती है।
अइँठव क्रि० अ० व्यर्थ मिजाज़ दिखाना; अकड़ जाना, क्रोध करना; वि०-ठोहर; प्रे०-ठाइव, द्वि०-गोइँठव, अकड़ दिखाना, व्यर्थ की बात या देर करना; वै० ऐं-।
अइँठव क्रि० सं० ऐंठना, (द्रव्य) ले लेना, ज़ोर से दबाना; अनावश्यक प्रभाव डालना, प्रे०-ठवाइव,-ठाइव,-उव, वै० ऐं-।
अइँठोहर वि० पुं० अकड़नेवाला; गर्वीला, स्त्री० -रि, भा०-पन,-रई, अठुरई (दे०)।
अइँड़ी वि० घमंडी; वै० अयँ-, दोनों लिंगों में यह शब्द एक ही रूप में प्रयुक्त होता है। दे० अयँड।
अइगुन सं० पुं० दुर्गुण, हर्ज, हानि, वि०-नी,-निहा; वै० अय-, ऐ-; सं० अवगुण।
अइजन सं० पुं० लिखने में ,, चिह्न, अर० ऐज़न, (२) इजन, अं०; वै०-हि-, ऐ-; अरबी तथा अं० दोनों शब्दों का विकृत रूप अवधी में एक ही है।
अइतवार सं० पुं० रविवार, आदित्यवार; सं० आदित्य-; दे० इतवार, यत-।
अइनी सं० स्त्री० वह कलम जिसमें लोहे की निब हो, वै०-य-, फा० आहन (लोहा)+सं० ई।
अइबी वि० दुर्गुणी, ऐबवाला; दोनों लिंगों में एक सा प्रयुक्त, अर० ऐब (दुर्गुण)+सं० इन्।
अइया सं० स्त्री० पति अथवा पिता की माँ; पितामह की माँ, व्यं० उस पुरुष की स्त्री जिस पर इस शब्द का प्रयुक्त करनेवाला रुष्ट हो; वै०-आ, ऐआ, ऐया, सं० आर्या, भो० ईया।
अइल-गइल सं० पुं० पूर्वी बोली जिसमें "अइल" (आइल=आया) और "गइल" (गया) बहुत बोला जाता है। वै०-ली-ली;-बोलव,-लगाइव।
अइलाइनि दे० अय-।
अइस क्रि० वि० ऐसा; कभी-कभी विशेषण के रूप में भी बोला जाता है; प्र०-न,-सै,-नै,-नौ, जा० "कबहुँ न अइस जुड़ान सरीरू" (सिंहल द्वीप खंड), तइस, ऐसी तैसी, दे० अस।
अउँकी-बउँकी सं० स्त्री० बेसिर पैर की बात, इधर उधर की या टालने की बात,-मारव, ऐसी बातें करना; धोका देने की कोशिश करना; वै० औं-।
अउँघाई सं० स्त्री० नींद;-लागव,-आइव; क्रि०-घाव, निद्रा में आना, वै० औं-।
अउँठा सं० पुं० अँगूठा,-देखाइव (दे० ठेंहुना); स्त्री०-ठी, सं० अंगुष्ठ; प्र०-ऊँ-, वै० अइ-(दे०)।
अउँठी सं० स्त्री० किनारा (थाली, गिलास, रोटी आदि का); 'ओंठ' का स्त्री० रूप; सं० ओष्ठ, ग० अँगोठू।
अउँधी वि० पु० उलटा, स्त्री०-धी (जा० पदु० २५, ४६); क्रि०-धाइव,-न्हाइव; वै०-न्ही।
अउँसा सं० पुं० नये अन्न का वह अंश जो दान में दिया जाता है; सं० अंश।
अउअल वि० पुं० प्रथम, बढ़िया, श्रेष्ठ; स्त्री०-लि; अर० अव्वल।
अउंडव क्रि० स० बैलगाड़ी या इक्के के पहिये में तेल डालकर धुरे की सफाई करना, प्रे०-डाइव।
अउझड़ी वि० सनकी; कभी-कभी सं० की तरह भी प्रयुक्त, वै०-व-, औ-?
अउटव क्रि० अ० खौलना; प्रे०-टाइव,-उव, स० खौलाना, वै०-व-।
अउतार दे० अवतार; जा० (पदु० १, ४)
अउधान दे० अवधान, जा० (पदु० ३, ६)
अउधारव क्रि० स० प्रारंभ करना; जा०-रा (पदु० ७, ५०)
अउर वि० पुं० और; प्र०-रै,-रौ, वै०-व-,-रा (रा० व०), स्त्री०-रि,-रिनि, ग० उर, औरै, हौरै।
अउरा गोंज सं० पुं० गड़बड़ स्थिति; वि० जो एक में मिला हुआ हो या अलग न किया जा सके (मामला); दे० गोंजव (मिला देना); अउर+गोंजव, वै०-व-।
अउल सं० पुं० गर्म गिचपिचा मौसम, जिसमें पसीना हो और हवा न चले;-होव,-रहव; अर० हौल, ग० बौल।
अउलाई सं० स्त्री० वमन करने की इच्छा,-आइव, ऐसी इच्छा होना; वै०-व-,औं-।
अउलि-अउलि क्रि० वि० बार-बार (कटु स्मृति अथवा पश्चात्ताप के लिए);-आइव, बार-बार किसी खेद-जनक बात की याद आना, उ० मोरे इहै आवत हैं, मुझे यही बार-बार याद हो आता है; अर० हौल (परेशान)।
अउलिया सं० पुं० मस्त मनमौजी पुरुष; कभी-कभी वि० के रूप में भी आता है। अर० [वली का बहुवचन] औलिय:
अउवल दे० अउअल।
अउसव क्रि० अ० गर्मी एवं पसीने के मारे दुर्गंधमय हो जाना; गर्मी में परेशान हो जाना; प्रे० साइव,-सवाइव, सं० उष्ण।
अउसाहिन वि० पसीने में भीगे हुए कपड़े की भाँति दुर्गंधमय; आइव, ऐसी दुर्गंध देना।
अउसेवरि सं० स्त्री० कष्टदायक अवस्था,-करव, कष्ट देना, तंग करना। दे० अव-;प्र०-सेर।
अऊँठा सं० पुं० अँगूठा;-लागव,-लगाइव, हस्ताक्षर स्वरूप अँगूठे का निशान लगना या

लगाना;-देखाइब, इनकार कर देना (कुछ देने से); सं० अंगुष्ठ।
अकई वि० स्त्री० दूसरी; अकवा (दे०) का स्त्री०; वै० य-, आ०-ऊ (पुं०)
अकक वि० पुं० एक एक; वै० यकक; प्र०-काक; सं० एकाकी।
अकच्छ सं० पुं अधिकता, अधिक उत्पात अथवा बाधा;-करब,-होब; सं० अ+कच्छ (कक्षा ?)
अकछीं अव्य० छींकने पर जो शब्द कहा जाता या मुँह से स्वयं निकलता है; प्रायः किसी को छेड़ने के लिए भी यह शब्द कह दिया जाता है, क्योंकि किसी कार्य के प्रारम्भ में छींक होना अशुभ माना जाता है। ग०-च्छीं। व्र० अ-कछीं; सं० छिक्का।
अकजऊँ वि० हानिकारक (अवसर); अकाज (दे०) करानेवाला (मौका); यह शब्द बिना संज्ञा अथवा कर्ता के ही वाक्य में प्रयुक्त होता है; उ० बड अक-होय त यदि बहुत हर्ज होनेवाला हो तो . , सं० अ+कार्य; वै०-काजूँ।
अकजहर वि० हर्ज करानेवाला (व्यक्ति); काम न करनेवाला या धीरे-धीरे करनेवाला; दे० अकाज-रासी; सं० अकार्य।
अकट्ट दे० अकाट।
अकठा वि० अकेला, वै०-ठाँ, य-।
अकड़ सं० पुं० गर्बीलापन, घमंड; वि०-ड़ी,-ड़ू,-बाज।
अकड़बाज वि० जिसमें अकड़ जाने की आदत हो; अकड़+फा० बाज़।
अकड़वरि सं० स्त्री० छोटी कंकड़ी, बहुत छोटी-छोटी कंकड़ी; वै० अँ०-, अँकडी, अँकरी (दे०); जा० अँकरवरी, भो०-उरी।
अकड़ू वि० अकड़बाज़, गर्बीला, व्यंग्य में-"खाँ" या-"मियाँ" भी कहते हैं। वै० ड़ी, ग० अकड़ू।
अकतई सं० स्त्री० जल्दी, वै०-कु।
अकतहर वि० पुं० जल्दबाज़; स्त्री०-रि, वै० कु-, दे० आकुत, ग० उकुताहर।
अकताब क्रि० अ० जल्दी करना; आवश्यक्ता से अधिक शीघ्रता करना; प्रे० तवाइब,-उब; वै०-कु-, ग० उक्तावणो; दे० आकुत।
अकथ वि० न कहने योग्य; प्रायः गीतों एवं कविता में, सं० अ+कथ् (कहना)।
अकबाल दे० इकबाल।
अकरकढ़ा स० पुं० प्रसिद्ध दवा; वै० अँ-,-ढ-।
अकरार सं० पुं० वादा, शर्त,-करब,-होब, वै० इ-; दे० करार। फा०।
अकवा वि० पुं० एक, दूसरा; स्त्री० ई, वै० य-; आ०-ऊ।
अकस-मकस सं० पुं० हीला-हवाला, टाल-टूल, दीर्घ-सूत्रता,-करब, वै०-पकस; उकुस-पुकुस (दे०), अकुस-पकुस।
अकसरुआ वि० घर का अकेला (व्यक्ति), दोनो लिंगों में यह शब्द एक-सा ही रहता है, वै०-ग-; सं० एक।
अकसा सं० पुं० एक अन्न; वै० अँ-; स्त्री०-सी
अकहत्थी दे० यक-।
अकहरा वि० पुं० जिसमें एक ही पर्त हो (वस्त्र); स्त्री०-री, वै० य-, फ़ा० यकलः; ग० एखारो, नै० यकहोरी।
अकाक वि० एकाध; दोनों लिंगों में एक-सा बोला जाता है, यद्यपि प्र० में स्त्री० कि हो जायगा; प्र०-कै,-ककै वै०, य-, सं० एकाकी।
अकाज सं० पुं० हर्ज (काम का),-करब,-होब;-रासी, वि० व्यर्थ बैठा रहने या हर्ज करनेवाला; वि०-जी,-जूँ; सं० अ+कार्य।
अकाट वि० जो कट न सके या झूठ न हो सके; प्र०-कट्ट; सं०।
अकारथ वि० व्यर्थ, नष्ट;-जाव,-होब,-करब; ग० अखार्त, सं० अकृत।
अकाल सं० पुं० प्रायः "काल" बोला जाता है (दे०); ग० अकाल; सं० अ+काल।
अकास सं० पु० आकाश;-लागब, बहुत लंबा हो जाना (वृक्ष अथवा फसल का),-पताल यक करब, कुछ उठा न रखना; ग० अगास, आगास, सं० आकाश।
अकिलि सं० स्त्री० वुद्धि;-वंत,-वंद,-वंदा, अक्लमंद; ग० अक्कल, अर० अक्ल।
अकीन सं० पु० विश्वास;-आइब,-होब,-करब,-परब; दीन-अकीन, नीयत, ईमान, फा० यकीन।
अकुतई सं० स्त्री०, दे० अकतई, इसी प्रकार अकुत-हर, अकुताब आदि भी हैं।
अकुलाब क्रि० अ० घबराना, आकुल होना, सं० आकुल।
अकुस-पकुस दे० अकस-मकस।
अकूत दे० अनकूल, कूतब। जा० (पदु० १७,६)
अकेल वि० पु० अकेला;-दुकेल, वि०, क्रि० वि० एक या दो साथी होने पर, स्त्री०-लि (लिनि भी), प्र०-लै,-लौ, ग० यखुली (दोनों लिंगों में), फ़ा० यकलः, दुला, सं० एकाकी, वै० अँ-।
अकेलिया वि० एक व्यक्ति का, जिसमें साझा न हो। वै० अँ-।
अकोल सं० पु० एक जंगली पेड़ और उसका फल जो लीची की भाँति गूदे और बीजवाला, पर बाहर से चिकना होता है। वै०-लह। सं० अंकोल।
अकौआ सं० पु० आक, मदार, उसका फल, पेड आदि। सं० आक।
अकौटब क्रि० अ० एक हो जाना (कई दल के लोगों का); बदल जाना, वै० य-।
अख्तिआर सं० पुं० अधिकार, शक्ति, वै०-यार; अर० इख्तियार।
अखज्ज सं० पु० निकृष्ट खाद्य; प्रायः "अज्ज-खज्ज"

तथा "अज्ज-गज्ज" के रूप में बोला जाता है; सं० अखाद्य।

अखनी सं० स्त्री० लकड़ी का एक औज़ार जिसके उँगलीदार सिरे से खलियान में कटी फसल को फैलाते अथवा बटोरते हैं। भो० अखइनि, सं० अक्षयिणी; व० पँचागुर।

अखर वि० असह्य, बुरा, कटु;-लागव,-देव, बुरा लगना;-जानि परव, असह्य जान पड़ना, क्रि०-व, भार लगना, असह्य हो जाना। सं० अ+चर्।

अखरा वि० पुं० कोरा, साफ किया हुआ, सूखा (नाज); "खरा" का दूसरा रूप।

अखराज सं० पुं० खेत पर से जोतनेवाले के अधिकार को हटा देने की अदालती कार्रवाई; ऐसा मुक़दमा; करव,-होव, अर० खिराज (बाहर करना)।

अखीर सं० पुं० अंत, छोर;-मँ, अंत में;-दर्जा, अंतिम स्थिति;-कार, क्रि० वि० अंततोगत्वा, वै०-खिरकार; अर० आखिर।

अखीरी वि० अंतिम, निश्चित;-बात,-दर्जा; अर० आखिर।

अखुरा-पखुरा सं० पुं० अंग-प्रत्यंग; प्रायः घायल होने या टूटने के लिए ही प्रयुक्त; वै० ढखुरा-(दे०),-खौरा-पखौरा (बाँ)।

अखैया सं० पुं० अनन्त तथा अनुपयोगी वस्तु; केवल "अखैया क बन" (वेरनि) (व्यर्थ का बड़ा जंगल) मुहावरे में ही प्रयुक्त; सं० अक्षय।

अखोर वि० निकृष्ट, हेय [केवल व्यक्ति के लिए], कभी-कभी संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त; सं० अ+फा० खुर्दन, खाना [न खाने योग्य]

अगउढ़ी सं० स्त्री० पहले ली या दी हुई मजदूरी; सं० अग्र।

अगरहरी सं० पुं० बनियों की एक उपजाति।

अगराव क्रि० अ० गर्व दिखाना, काम न करना, प्रे०-राइव,-उव।

अगरि-पछरि क्रि० वि० आगे-पीछे, चाहे जब।

अगल-बगल क्रि० वि० दोनों किनारे, दायें-बायें, 'बगल' का द्वित्व, सं० अग्रे (आगे)+फा० बगल, प्र०-लँ लँ।

अगवाँ क्रि० वि० प्राचीन समय में; प्र०-वैं,-वों; सं० अग्र।

अगवार सं० पुं० घर के सामने का हिस्सा,-पिछवार; क्रि० वि०-रे रें, वै०-रा, ग० अगवाड़ी-पिछवाड़ी, सं० अग्र।

अगवारि सं० स्त्री० खलियान में तैयार नये अन्न का वह भाग जो देवताओं, ब्राह्मणों आदि के लिए पहले ही निकाल कर रख दिया जाता है। वै० अँ-; सं० अग्र (आगे=पहले)।

अगवासी सं० स्त्री० हल के फार (दे०) में आगे लगनेवाला एक छोटा पतला लकड़ी का टुकड़ा, सं० अग्र+वासी [रहनेवाला]।

अगसरब क्रि० अ० आगे बढ़ जाना; प्रे० सारब,-सराइब,-उब।

अगहन सं० पुं० कातिक के बाद का महीना; सं० अग्रहायण।

अगहनिया सं० स्त्री० अगहन में होनेवाली फसल; वै०-नी, सं०।

अगाड़ीं क्रि० वि० प्राचीन काल में; सं० अग्र।

अगाड़ी सं० स्त्री० पशु के आगे लगी हुई रस्सी;-पछाड़ी, घोड़े के अगले तथा पिछले पाँवों में बँधी रस्सी, सं० अग्र, पृष्ठ।

अगाह वि० समय से पहले तैयार (फसल, फल आदि); सं० अग्र। उल० पछाह (दे०)

अगाह वि० सूचित, विज्ञापित;-करब,-होब; फ़ा० आगाह, भा०-ही, सूचना।

अगाही सं० स्त्री० किसी बात के दूसरे द्वारा कही जाने के पहले ही कुछ ऐसी बात कह देने की चालाकी जो पहले का काट अथवा उत्तर हो;-मारब, ऐसी बात कह देना; सं० अग्र।

अगिआइब क्रि० स० जला देना, प्रायः स्त्रियों द्वारा शाप रूप में प्रयुक्त, इसी अर्थ में "दढ़िया-इब" भी कहती हैं; दे०-दाढ़ा, डाढ़ा, दढ़िआइब; सं० अग्नि।

अगिआव क्रि० अ० (फोड़े अथवा अंग विशेष का) आग की तरह जलना या गर्म रहना; वै-याव; सं० अग्नि।

अगिनि सं० स्त्री० आग, प्रायः साधुओं द्वारा या शपथ खाने के लिये प्रयुक्त; दूसरे अर्थ में "-माता" या "-देवता" कहते हैं। पँच-, एक प्रकार की तपस्या जो कुछ साधू लोग गर्मियों में करते हैं और जिसमें धूप में बैठकर अपने चारों ओर पाँच स्थानों पर आग जला लेते हैं। साधु लोग कभी कभी जोर देकर "-नी" भी बोलते हैं;-बान, प्रसिद्ध बाण जिसका वर्णन अनेक कथाओं में है। पँच-लेब,-तापब, पंचाग्नि की तपस्या करना। सं० अग्नि।

अगिया सं० पुं०(१) एक रोग जो गेहूँ आदि फसलों में लगता और जिसके कारण अन्न जल सा और काला पड़ जाता है। (२) इस नाम का एक कीड़ा भी होता है जिसके छू जाने पर मनुष्य का चमड़ा जल सा जाता है; (३) एक तृण; वै०-री; सं० अग्नि।

अगिया-बैताल-सं०पुं० विक्रमादित्य के दो प्रसिद्ध पार्षद, अति तीव्र एवं बलवान् व्यक्ति;-होब, तत्क्षण शीघ्रता पूर्वक काम कर डालना।

अगियारि सं० होम;-करब; वै०-रि,-गियारी, (बाँ) हूम-,सं० अग्नि।

अगिला वि० पुं० आगे वाला; स्त्री०-ली; संज्ञा के रूप में यह शब्द किसी भी व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होता है जिसके सम्बन्ध में बात चल रही हो और जिसे वीर, उदार अथवा गर्वीला समझा जाता है।

उ० फेर तौ-बोला, फिर तो बहादुर बोल उठा; जा० "अगिलन्ह कहँ पानी लेइ बाँटा, पछिलन्ह कहँ नहिं काँदौ आँटा।" सं० अग्र। भो०

अगुआ सं० पुं० नेता; भा०-अई, नेतृत्व, क्रि०-ब, आगे बढ़ना, नेतृत्व करना, प्रे०-आइब,-वाइब, आगे कर देना; सं० अग्र।

अगुआनी स० स्त्री० बारात का स्वागत,-करब,-होब, ग० अगवानी। भो०; सं० अग्र।

अगुई सं० स्त्री० आगे या पहले कुछ करने की हिम्मत,-कढ़ाइब, पहले कोई नया काम करना;-पछुई, आगे-पीछे; "अगुअई" का सूक्ष्म रूप; सं० अग्र।

अगूढ़ सं० पुं० जटिल प्रश्न, कठिन समस्या;-परब,-काटब; सं० गूढ़।

अगोछब क्रि० स० आगे बढ़ कर रोक लेना, प्रे०-छवाइब; सं० अग्र।

अगोरब क्रि० स० प्रतीक्षा करना, रक्षा करना, रखाना; मता० परखब (दे०) तु० तब लगि मोहिं परेखेहु भाई। सं अग्र + ह।

अगोरा सं० स्त्री० प्रतीक्षा, उत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा; रक्षा, चौकीदारी;-होब,- करब,-रहब।

अगौढ़ी सं० स्त्री० (मज़दूरी आदि के स्थान में) आगे दी हुई वस्तु, द्रव्य आदि, वै० अगवढ़ि,-गउढ़ी (दे०), सं० अग्र।

अगर वि० अलभ्य, गर्वीला; होब, घमंडी हो जाना; वै०-अ० क्रि०-राब, घमंड करना, बात न सुनना, सं० अग्र? फ़ा० अगर [यदि], 'अगर-मगर' करनेवाला व्यक्ति?

अघवाइब क्रि० स० "अघाब" का प्रे० रूप, व्यं० बुरा व्यवहार करना, तंग करना (विशेष कर उस व्यक्ति का जिससे अच्छे व्यवहार की आशा की गई हो)।

अघाउर सं० पुं० पूरा संतोष, भरपेट,-होब,-पाइब, 'अघाब' (दे०) से।

अघाब क्रि० अ० संतुष्ट हो जाना (भोजन से), पेट भर कर खा लेना, व्यं० तंग आ जाना, प्रे०-घवाइब,-उब?

अघोड-पंथी सं० पुं० अघोड पथ का मानने वाला, वि० घृणोत्पादक, सं० अघोर+पथ्+इन्।

अघोड़ी वि० घिनौना, घृणास्पद। सं० अघोर।

अङइब क्रि० सं० सहना, प्रे०-वाइब, सं० अंग (अर्थात् अपने शरीर पर डाल लेना या झेलना)?

अङऊँ सं० पुं० वह वस्तु जो किसी देवता, ब्राह्मण या पुण्य के लिए निकाल कर अलग रख ली गई हो,-काढ़ब,-निकारब, सं० अन्न,-अ?

अङना सं० पुं० आँगन, स्त्री०-नइया,-नाई (गी०), सं० अंगण।

अङरखा सं० पुं० कोट की तरह का सबसे ऊपर पहनने का कपड़ा, स्त्री० खी; सं० अंग+रक्ष्।

अङरा दे० अँगरा।

अङार सं० पुं० अंगार;-लागब, जल उठना; सं० अंगार।

अङिआ सं० स्त्री० यह शब्द परतो में स्त्री पुरुषों दोनों के गंजी जैसे कपड़े के लिए आता है; दे० अँगिआ। गी०

अङुठा सं० पुं० अँगूठा, वै०-ङुँठा (दे०), सं० अंगुष्ठ।

अङुरा सं० पुं० अंगुल, एक अंगुल,-भर, ज़रा सा, थोड़ा सा (कपड़ा, भूमि आदि); सं०।

अङुरियाइब क्रि० सं० उँगली डालकर (प्रायः गुदा) खोदना मु० मूर्ख बनाना, वै० उँगली से संकेत करना, सं० अंगुलि।

अङुरी सं० स्त्री० उँगली, क्रि०-रिआइब, सं० अंगुलि। जा०।

अङूर सं० पुं० अंगूर, जा०।

अङोछा दे० अँगोछा।

अचंभव सं० पुं० अचंभा, वै०-भौ, सं० आश्चर्य।

अचक्के क्रि० वि० अचानक; वै०-क्कँ। सं० अ+चक्र?

अचरज सं० पुं० आश्चर्य,करब,-होब; ग० आस्चर्ज, अचरज, सं०।

अचानक क्रि० वि० अकस्मात्, सं० आश्चर्यजनक बात,-सुनब,-कहब।

अचारज स० पुं० सं० यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार में आचार्य का काम करने वाला व्यक्ति;-बइठब, आचार्य का काम करना; सं० आचार्य।

अचार-विचार सं० पुं० आचार-विचार,-करब, धार्मिकता-पूर्वक रहना; सं०।

अचारी सं० पुं० व्यक्ति जो विशेष आचार करता हो, जैसे अपने हाथ से भोजन बनाना आदि। आ०-बाबा,-महराज।

अची वि० बो० ज़रा; प्रायः बूढ़ों द्वारा प्रयुक्त; वै० रची, अजी? फ़ा० जौ० सु० प्रत०।

अचूक वि० न चूकनेवाला (औषध आदि)।

अचेत वि० बेहोश, स्त्री०-ति, यद्यपि दोनों लिंगों में यह शब्द प्रायः ज्यों का त्यों बोला जाता है।

अच्छर सं० पुं० अक्षर; मु० करिया-भइँसि बराबर, काला अक्षर भैंस बराबर, स०।

अच्छा वि० पुं० बढ़िया, स्त्री०-च्छी,-करब,-होब, (बीमार का) ठीक करना, होना, क्रि० वि० हाँ, प्र०-च्छै भा०-ई, सं० अच्छ।

अच्छें क्रि० वि० अच्छी तरह, भली प्रकार,-रहब, स्वस्थ रहना; सं० अच्छ।

अछन-बिछन क्रि० वि०बहुतायत से,-होब, अधिक मात्रा में होना (फल आदि का), सं० आच्छन्न+विच्छिन्न, अर्थात् ऐसा होना कि सब कुछ ढक (आच्छन्न) कर वह वस्तु इधर उधर बिखर (विच्छिन्न हो) जाय, प्र०-ना-बिछन।

अछनाधार क्रि० वि० निरंतर; केवल रोने के लिए प्रयुक्त,-किहैं रोइब, ऐसा रोना। सं० अश्रुपूर्ण+धारा।

अछयवर सं० पुं० अच्चयवट. वि० चिरंजीवि, सुखी, फला-फूला -अ रहौ, अच्चयवट की भाँति सदा हरे भरे रहो ! वै०-छै-, प्र० च्छै-, सं० ।
अछरा दे० अछार ।
अछरी सं० स्त्री० अप्सरा; जा० (पदु० २, ६४, ३, ४८) ।
अछार सं० पुं० यश के स्थान में अपयश,-धरब, तुहमत लगाना ।
अछार-दुलार सं० पुं० आदर;-करब,-होब,-रहब, ?
अजगर सं० पुं० प्रसिद्ध बडा साँप,-यस, मोटा एवं सुस्त, कहा०-को भख राम देवैया ।
अजगुति सं० स्त्री० अनोखी बात; वै०-जुगि, सं० अयुक्ति ।
अजगैवी वि० विचित्र, फा० अज ग़ैब [भविष्य (के गर्भ में) से], "मर्द अज़ ग़ैब बरू मी आयद व कारे च कुनद ।" हाफ़िज़ ।
अजब वि० आश्चर्यजनक, प्र०-बै, अर० ।
अजमाइब वि० स० आज़माना, ग०-मौण, फा० आज़मूदन ।
अजमूजा सं० पुं० अंदाज,-लेब, अंदाज लगाना, फा० आज़मूदन ।
अजर अमर वि० जिसे बुढ़ापा तथा मृत्यु न प्रभावित कर सकें; सं० ।
अजरिहा वि० पुं० रोगी; स्त्री०-रही,-रिही;-फ़ा० आज़ार; दे० अजार ।
अजलति सं० स्त्री० बदनामी, अपराध,-लागब, तोहमत लगना,-लगाइब,-देब, लांछन लगाना ?
अजवा दे० आजा ।
अजवाइनि दे० जवाइनि ।
अजहुँ क्रि० वि० आज भी, अभी; प्र०-हूँ; जा० (पदु० १०, ६१, २२, ४०; ११, ४८); तुल० अजहुँ न बूझ अबूझ (बाल०), सं० अद्य ।
अजाची वि० तृप्त,-करब,-होब; सं० अ + याची (न माँगनेवाला = संतुष्ट) ।
अजाति वि० जाति के बाहर, बहिष्कृत,-करब,-होब,-रहब,-क भात, निषिद्ध, अवांछनीय; सं० ।
अजान सं० पुं० (१) अज्ञात,-म, बिना जाने, वि० अज्ञात; न जाननेवाला (व्यक्ति), सं० अज्ञात-, (२) आजान,-देब,-लगाइब, अर० ।
अजार सं० पुं० रोग, वि०-री,-जरिहा (दे०), रोगी; फा० आज़ार ।
अजिआउर सं० पुं० घर या गाँव जहाँ से किसी की आजी (दे०) या दादी व्याह कर आई हो, वै०-या , सं० आर्या ।
अजिआ-सासु सं० स्त्री० सास की [सास, पुं०-ससुर, ससुर का बाप;. वै०-या-, सं० आर्य + श्वसुर ।
अजीरन सं० पुं० अजीर्ण, वि० बहुत; सं० जीर्ण ।
अजुऐ क्रि० वि० आज ही;-औ, आज भी; दे० आजु । वै०-वै सं० अद्य ।
अजुगि सं० स्त्री० अद्भुत बात; दे० अजगुति ।
अजुर वि० अप्राप्य; जो जुर (दे० जुरब) न सके; सं० अ + युज् ?
अजूबा (१) सं० अद्भुत बात; वि० अद्भुत । अर० अजब; (२) एक प्रसिद्ध पत्तीवाला पौदा जो फोड़े फुंसियों के फोडने में काम आता है ।
अजोधा सं० पुं० अयोध्या,-जी, अयोध्या तीर्थ; वै० ध्या,-जुद्दा,-ध्या, सं०; कहा० राम छाँड़ेन-जेहि भावै सो लेय ।
अजौं क्रि० वि० अब भी, अब तक; तु० "अजौं न बूझ अबूझ"; सं० अद्य ।
अज्ज-खज्ज सं० पुं०-अनिश्चित भोजन, जो कुछ मिले वही भोजन,-खाब, वै० गज्ज, स० अखाद्य ।
अटक सं० पुं० अड़चन, संदेह;-परब,-होब,-क्रि० -ब ।
अटकब क्रि० अ० रुक जाना, टँग जाना; मु० गटई-, गले पड जाना (व्यक्ति का) अथवा गले में (खाद्य का) अटक जाना; वै० अ-, प्रे०-काइब,-उब; उल० सटकब (दे०) ।
अटकर सं० पुं०अंदाज, पता;-लेब, पाइब, मिलब, पता लेना, पाना या मिलना; वै० अँ-, क्रि०-ब ।
अटकर-पच्चू वि० अटकल पच्चू;-मारब, अटकल लगाना ।
अटकरब क्रि० स० पता लेना या लगाना (छिपकर); भेद लेना; वै० अँ-।
अटरम-पटरम सं० पुं० कई प्रकार की वस्तुओं का समूह; वै०-सटरम; ग० सटरम ।
अटारम सं० पुं० प्रबंध, तैयारी, वै० नटारम (दे०); सं० नटारंभ ।
अटारी सं० स्त्री० कोठे के ऊपर का कमरा, बैठक आदि; गीत एवं कविता में "-टरिया"; सं० अट्टालिका ।
अटाला सं० पुं० बहुत सा सामान ?
अट्ट-पट्ट सं० पुं० बुरा-भला, बुरा;-कहब,-बोलब; वै०-सट्ट, अड्ड बड्ड,-टर-पटर,-टां-टां, अंड बंड,-टा-टा,- टायँ-टायँ; ग० अट्ट-पट्ट ।
अट्ठाइस वि० २० और ८;-वाँ-ईं; सं० अष्टाविंशति ।
अट्ठाइसवाँ वि० पुं० २८ वाँ; स्त्री०-ईं; सं० अष्टविंशतितम ।
अट्ठानबे वि० ६८,-वाँ; सं० ।
अट्ठारह वि० १० और ८;-वां,-ईं । वै०-टा-।
अट्ठावन वि० ५० और ८,-वां,-ईं ।
अ-इआँ क्रि० वि० प्रति आठवें दिन, दसइआँ, आठवें-दसवें दिन; वि० आठवाँ भाग; वै०-ठैयाँ,-याँ, यें-दसयें; सं० अष्ट ।
अठईं सं० स्त्री० आठवाँ भाग; क्रि० वि० यहीं पर, वै० य-, यहि ठाईं; दे० ठाँव ।
अठपहरा सं० पुं० वह ज्वर जो २४ घण्टे न उतरे; -क जर; सं० अष्ट + प्रहर ।

अठपहल वि० पुं० आठ पहलवाला (आभूषण, तखत आदि); स्त्री०-लि; सं० अष्ट + पृष्ठ।
अठयें क्रि० वि० आठवें;-दसयें, आठवें-दसवें दिन; सं० अष्टमे।
अठरहवाँ वि० पुं० अट्ठारहवाँ; स्त्री०-ई; सं० अष्टादशम।
अठवाँ वि० पुं० आठवाँ, स्त्री०-ई, आठवाँ भाग;-बांटब; सं० अष्टम।
अठसियवाँ वि० पु० ८८ वां; स्त्री०-यई; सं०।
अठहत्तरि वि० अठहत्तर;-वाँ-ई, ७८वाँ, ७८वीं; सं०।
अठिलाब क्रि० अ० इठलाना; वै०-ठु-,-ठुराब।
अठुर वि० पुं० जो किसी की बात न माने, स्त्री०-रि, भा०-ई; सं० (नि = अ)-ष्ठुर।
अठैयाँ दे० अठइआँ।
अठोहब क्रि० स० पुरानी बात को प्रयत्न से याद करना; सं० ओष्ठ (अर्थात् स्मरण करके ओंठ से कहना)।
अठौनी-पठौनी स० स्त्री० लाना या भेजना (स्त्रियों का); शुद्ध शब्द "अनौनी" ("आनब" से) है, पर "पठौनी" (पठइब दे०) के अनुप्रास की लालच से 'नौ' का 'ठौ' हो गया; सं० आ+नी+प्रेषय।
अडार वि० पुं० अधिक, स्त्री०-रि, जा० (पदु० १०, ३७, २४, १११)।
अड्डा सं० पु० ठहरने या रहने का स्थान; जहाँ कोई प्रायः बैठा करे, स्त्री०-डी, सहारा,-डी देब, सहारा देना, रोकना।
अडबग वि० पुं० बेढंगा, असुविधा-जनक; स्त्री०-गि, भा०-ई, क्रि० वि०-गें, असुविधा में,-गें परब, बुरी तरह फँस जाना। द्वि०-सड़बंग।
अड़ब क्रि० अ० अड़ जाना, रुकना; प्रे०-ड़ाइब,-उब, आड़ब।
अडबी-तडबी सं० स्त्री० टेढ़ी-मेढ़ी भाषा, शान से बोली गई भाषा;-बोलब, बूकब,-लगाइब, रोब से बोलना, गर्व करना, अरबी + तरबी (अनु० शब्द)।
अडसठि वि० साठ और सात, वै०-ठ, अँ-;-वाँ, -ठई; सं० अष्टषष्ठि।
अड़सब क्रि० अ० किसी पोले स्थान में दूसरी वस्तु का ठूस उठना और न निकलना, प्रे०-साइब, -उब, वै० अँ-; सं० अंतः।
अडहुल दे० अढ़उल।
अडाइब क्रि० स० गिरा देना (द्रव का),-, बाधा पहुँचाना; 'अड़ाब' का प्रे०; वै०-उब, अड़वाइब,-उब।
अड़ानि सं० स्त्री० किसी वस्तु या व्यक्ति के अड़ने का स्थान।
अड़ाब क्रि० अ० गिर पड़ना (द्रव पदार्थ का); (पशु का) गर्भ गिरा देना, प्रे०-इब,-उब, सं० अंड (अर्थात् गर्भ के बच्चे का अंडे के ही रूप में रह जाना, पूरा न होना), अंडे की भाँति फूटकर बह जाना।
अड़ार सं० पुं० मिट्टी का बड़ा टुकड़ा जो फटकर (विशेषतः नदी अथवा कुएँ के किनारे पर) गिर जाय;-फाटब, ऐसा टुकड़ा गिरना; सं० अंड अर्थात् अंडे की भाँति फटना; वै० अँ-। दे० करार।
अडियल वि० अड़नेवाला; वै-अ-; दे० अड़ब।
अड़ियाब क्रि० अ० गर्व दिखाना, गर्वीली बातें करना; वै०, अँ-,-आब।
अड़िल वि० बेहूदा ढंग से अड़ जानेवाला (व्यक्ति); अडियल का पु० रूप; प्र०-ल्ल।
अडेरि सं० स्त्री० जानबूझ कर किया हुआ व्यर्थ का झगड़ा,-करब,-मचाइब,-जोतब, वै० अँ-; सं० अ+रण ?
अड़ेरी वि० "अड़ेरि" करने वाला या वाली; वै०-रिहा, स्त्री०-ही, नै० अटेरि। वै० अँ-।
अड़ोरब क्रि० सं० उँड़ेलना; प्रे०-रवाइब,-उब; वै०-लब, उँड़े-; सं० उद्वेलय।
अडोस-पड़ोस सं० पुं० घर के दोनों ओर का स्थान; वै०-रो-;-सी-सी, पड़ोस में रहने वाले।
अढइब क्रि० स० आज्ञा देना, प्रे०-वाइब,-उब;-वैया, आज्ञा देनेवाला; अढ़वा-बिरता, कमाया या दिया हुआ। वै०-उब, सं० आ + देश्।
अढ़इया सं० पुं० सेर भर का देहाती तौल जो "पसेरी" (दे०) का आधा होता है; २½ का पहाड़ा; वै०-या,-ढ़ैया,-आ।
अढ़उल सं० पुं० गुड़हल का फूल जो लाल रंग का और देवी का परम प्रिय होता है; वै० अँ-,-ड़हुल,-ढ़ौल ?
अढ़ब-अढ सं० पुं० अनावश्यक शीघ्रता,-करब,-मचाइब; 'अढ़इब' से, वै० अढ़ौ-,-ढ़ौ ?
अढाई वि० ढाई; कहा० (१) घरी म घर घर जरै-(सात) घरी भद्दरा, अर्थात् घर तो घड़ी भर में जला जा रहा है, पर (पंडित जी का कहना है) अभी भद्रा वा मुहूर्त २½ घड़ी है और बुझाने का अवसर नहीं है। (२) अपुना क रोई धोई आन क-पोई, अपने भोजन के लिए तो लाले पड़ रहे हैं, पर दूसरे को २½ रोटी तैयार करके देना चाहता है। स० अर्धद्वय।
अढ़िआ सं० स्त्री० छोटी लकड़ी की तश्तरी;-ढोकिया, छोटे-मोटे बर्तन, सारा सामान, वै०-या, भो० हँड़िया-ढोकिया, सी० अरघी, सं० अर्घ।
अढ़ुक सं० पुं० अड़चन,-ढारब, बाधा करना; क्रि०-ब, रुकना। भो०-ल,- काइल, रुकना, रोकना।
अढ़ैया दे० अढ़इआ।
अतना वि० पुं० इतना; स्त्री०-नी,-वतना, थोड़ा बहुत।
अतर सं० पुं० इत्र;-लगाइब, छिरकब, वै० अँ-;अ० इत्र।

अतरब वि० अ० अंतर पड़ना, बीच में नागा पड़ना; प्रे०-राइब,-उब, वैं० अँ-; सं० अंतर।
अतरा सं० पुं० दो चीजों के बीच का तंग स्थान; कोना-; वैं० अँ-; सं० अंतर।
अतरि-खोतरि क्रि० वि० कभी-कभी; बीच-बीच में अंतर डालकर; वैं०-रे-रे; वैं० अँ-; सं० अंतर।
अतरिया वि० ज्वर का वह प्रकार जो बीच में एक या दो दिन छोड़कर आता है; क्रि० वि० बीच में एक दिन छोड़कर; वैं०-आ, अँ-
अतरी सं० स्त्री० अँतड़ी; वैं० अँ-; सं० अंत्र।
अतलस सं० पुं० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जो पहले स्त्रियाँ पहनती थीं; ठाट-बाट की पोशाक,-चुनरी, चुनरी-, दो रंगीन कपड़े जो सधवाओं के मुख्य चिह्न हैं। अर०।
अताय-पंछी सं० पुं० निःसहाय व्यक्ति; ?+सं० पक्षी।
अतिराब क्रि० अ० गर्व करना, इतराना। सं० अति ?
अतिसह वि० अतिशय;-होब,-करब, दुःसह होना, या दुःसह व्यवहार करना; सं० अतिशय।
अतीरा दे० वतीरा; अर० वतीरः (तरीक़ा)।
अतुराई सं० स्त्री० आतुरता;-करब, जल्दी करना;-परब; सं० आतुर (दे०)।
अतू वि० बो० कुत्तों के बुलाने का एक शब्द; "तू" का ध्वन्यात्मक रूप जो दुहराकर "अतू-अतू" करके बोला जाता है। छोटे पिल्ले के लिए "कूत-कूत" कहते हैं।
अत्ति सं० स्त्री० चरम सीमा (प्रायः अत्याचार आदि की);-करब,-होब, असह्य व्यवहार करना या होना; सं० अति।
अथइब क्रि० अ० डूबना (सूर्य, चंद्र आदि का), दिन-, संध्या होना, उ० साँझ भई दिन अथवन लागे (गीत); सं० अस्त+होब।
अथक्क वि० पुं० न थकने वाला; अथक; स्त्री०-क्कि।
अथाह वि० पुं० अथाह; स्त्री०-हि। सं० अ+।
अदग वि० पुं० बेदाग, नया; स्त्री०-गि; सं० अ+फ़ा० दाग़। दे० निदाग।
अदति सं० स्त्री० वस्तु, अर० अदद।
अददहा वि पुं० कमजोर, रोगी, स्त्री०-ही,-दिही, अर० अदद (संख्या) से शायद 'हा' (वाला) लगाकर "गिने" (दिन) वाला अथवा "गिनती" (के दिन) वाला (अल्पायु) अर्थ हुआ हो, वैं०-दिहा।
अदना वि० पुं० छोटा, नीच, स्त्री०-नी,-नी बात, छोटी बात; पदनी, छोटी-छोटी (दे० पदनी),-आला, छोटा बड़ा; अर०।
अदब सं० पुं० डर, आदर,-करब,-राखब, अर०।
अदबदाय क्रि० वि० जान बूझकर, बिना सूझे, ख़्वामख़्वाह, प्रायः ख़राब काम के ही लिए प्रयुक्त, अद (?)+फ़ा० बद (ख़राब)+सं० आय (चतुर्थी विभक्ति)?
अदमी सं० पुं० आदमी। मर्द-(दे० मर्द), अर०।
अदराब क्रि० अ० आदर पाने की इच्छा करना (नीचों या छोटों का), इतराना, प्रे०-रवाइब,-उब, सं० आदर।
अदल सं० पुं० न्याय, जा० (पद्० १, ११, ११३-४-५)
अदलतिहा वि० पुं० अदालत में प्रायः जाने वाला, मुकदमेबाज़, स्त्री०-ही, दे० अदालति।
अदल-बदल सं० पुं० विनिमय,-करब,-होब, वैं०-ला-ला, स्त्री०-ली-ली,-लाई-लाई, अर० बदल, परिवर्तन।
अदहन सं० पुं० पानी जो चूल्हे पर दाल या भात पकाने के लिए रखा जाय -देब,-धरब, ऐसा पानी चढ़ाना मु० बहुत गर्म, देह-भ है, शरीर बहुत गर्म है, सं० दह् (जलना)।
अदाँ वि० दिया हुआ चुकता,-करब,-होब, ऋण-मुक्त होना,-होइ जाब, परम त्याग एवं कष्ट करना, फ़ा० अद।
अदान वि० पुं० अज्ञान, नादान· स्त्री०-नि. सं० अ+फ़ा० दान. (दानिश, नादान)।
अदालति सं० स्त्री० अदालत, मुकदमेबाजी,-करब,-होब वि०- दलतिहा (दे०); अर०।
अदावति सं० स्त्री० शत्रुता, वैमनस्य;-करब,-होब; अर०-त (अदू=शत्रु), वि०-दवतिहा।
अदाह सं० पुं० बड़ी आग,-लागब,-लगाइब. वैं०-दहा (जौं०), सं० दाह।
अदिन सं० पुं० बुरा दिन, संकट, दे० कुदिन,-घेरब,- आइब, सं० अ+दिन।
अदेनिया वि० न देने वाला, दरिद्र, सं० अ+देब (दे०)।
अदेह वि० पुं० जिसका शरीर बहुत मोटा हो, जो अपने शरीर को सँभाल न सके, वैं०-हँ; सं० अ+देह।
अद्दरा सं० पुं० आर्द्रा नक्षत्र, पानी बरसानेवाला प्रसिद्ध १५ दिन का अवसर, सं०।
अद्धा सं० पुं० आधी बोतल, शराब की छोटी बोतल; सं० अर्द्ध।
अद्धी सं० स्त्री० एक बारीक सफ़ेद मलमल का भेद; सं०।
अधउखा सं० पुं० गन्ने का आधा टुकड़ा; स्त्री०-खी, सं० अर्ध+इक्षु (अध+ऊखि) दे० उखुड़ि।
अधकचरा वि० पु० आधा कच्चा, आधा पक्का, अधूरा (काम), सं० अर्ध+कचरब (दे०)
अधकरिया सं० स्त्री० आधे साल का लगान, वैं०-आ सं० अर्ध+कर।
अधकी सं० पुं० अधिक मूल्य या तौल,-माँगब,-लेब,- देब, सं० अधिक।

अधजर वि० पुं० आधा जला हुआ; जा० (पदु० २०, ७२, २२, १५), सं० अर्धज्वलित।
अधन्ना सं० पुं० आध आने का सिक्का, स्त्री०-न्नी, सं० अर्ध + आना।
अधपई सं० स्त्री० आध पाव का तोल, वै०-वा (पुं०) सं० अर्ध + पाव (दे०)।
अधबहीं सं० स्त्री० आधी बाँह की गंजी, कमीज़ आदि, वै० हियाँ,-बाहीं, सं० अर्ध + बाँह (दे०)।
अधबुढ वि० पुं० अधेड़, आधा बूढ़ा-; स्त्री०-ढ़ि, सं० अर्ध + वृद्ध।
अधमई सं० स्त्री० अधमता; वैसे 'अधम' कम बोला जाता है, सं० अधम + ई।
अधरम सं० पुं० अधर्म,-करव,-होब, वि०- मी, दे० बेधरमी, स०।
अधवा वि० आधा, स्त्री०-ई, सं० अर्ध।
अधवाइब क्रि० सं० आधा कर देना, आधा बाँट या समाप्त कर लेना, सं० अर्ध, वै०-उब,-धिआ,-सं०।
अधार सं० पुं० आधार, भरोसा, परम प्रिय या अंतिम आधार की वस्तु, जिउ क-, जीवन आधार; प्रान-, प्राणों का आधार, सं०।
अधिआ सं० पुं० एक प्रणाली जिसके अनुसार खेत, बाग या पशु का मालिक उन्हें दूसरे को सौंप देता है और उपज में उसे आधा हिस्सा देता है,-पर देब, इस प्रकार गाय, खेत आदि देना, वै०-या, सं० अर्ध।
अधिआउर सं० पुं० आधा हिस्सा, वै०-या-,सं० अर्ध।
अधिआब क्रि० अ० आधा हो जाना, आधा समाप्त हो जाना या चुरा जाना, प्रे०-इब, उब, वै०-याब, सं०।
अधिआर सं० पुं० आधे का हिस्सेदार, स्त्री०-रि,-रिनि,-न, भा०-री, वै०-यार, सं० अर्ध।
अधिकई सं० स्त्री० अधिकता, वै०-काई, सं० अधिक + ई।
अधिकाब क्रि० अ० अधिक हो जाना, सं०।
अधिकार वि० पुं० बहुत, अधिक, स्त्री०-रि, भा०-री, अधिकता, सं० अधिक + आर।
अधिकारी सं० स्त्री० बहुतायत, अधिकता,-होब; स० अधिक + आरी।
अधिरजी वि० खाने-पीने में उतावला एवं लालची, अधिक खाने वाला, जल्दी खाने वाला, सं० अधीर, अधैर्य + ई।
अधीन वि० मातहत, अधिकार में, नीचे, सं०।
अधेड वि० पुं० आधी अवस्था वाला, स्त्री०-ढि, सं० अर्ध।
अधेडी सं० स्त्री० एक रोग जो बड़े-बड़े गीले दानों के रूप में कमर के एक ओर या कमर से गले तक कहीं भी होता है, कभी-कभी आधी कमर में केवल दाहिनी ओर ही दाने होते हैं,-होब। सं० अर्ध।

अधेला सं० पुं० आधा पैसा, एक-,-लौ न, कुछ भी नहीं; घृ०-लचा,-ची; सं० अर्ध।
अधेली स० स्त्री० आधा रुपया, अठन्नी,-सूका, आठ आना, चार आना, सूका-, दे० सूका; सं० अर्ध।
अधौखा दे० अधउखा।
अनकब क्रि० स० कान लगाकर सुनना, दूर से सुनना, जो कठिनता से सुना जा सके उसे सुनना, 'कान' के क एवं न का विपर्यय हुआ है; सं० आ + कर्ण। अकनि राम पगु धारे (तु०)।
अनकुस सं० पुं० कष्ट,-लागव, बुरा लगना,-मानव, क्रि०-साव, रुष्ट होना, व्र० अनखाब, सं० अकुश, दे० आँकुस।
अनकूत वि० जिसका अनुमान न लग सके, जो कूता न जा सके, दे० कूतब, सं० अन + कूतब।
अनखाती वि० जो कुछ न खाय; क्रोध में न खाने वालों के लिए प्राय. प्रयुक्त, सं० अन + खाव।
अनगढ़ वि० जो गढ़ा न हो, खुरदरा, सं० अन + गढ़ब (दे०)।
अनगनती वि० अनगिनत, वै०-गि-, सं० अन + गनती [जिसकी 'गनती' (दे०) न हो] सं० अगणित।
अनगब क्रि० स० (खपरैल की छत) मरम्मत करना, प्रे०-गाइब,-गवाइब,-उब, वै०-न्ब।
अनगयर वि० पुं० दूसरा, अपरिचित; स्त्री०-रि, वै०-गैर, स० अन + अर० गैर, सं० अन + अ० ग़ैर (दूसरा), सं० का 'अन' निरर्थक है।
अनचिन्ह वि० अपरिचित,-मनई, अपरिचित व्यक्ति; -मानब, सं० अन + चीन्ह (दे० चीन्हब)।
अनजउरा सं० पुं० वह घर जहाँ अनाज रखा जाय, अनाज का भण्डार, किसी किसान की खेती में हुए सारे अन्न की राशि, वै० अं-; सं० अन्न + जवर (दे० जवरा)।
अनजल सं० पुं० रहने का अवसर, होब,-रहब,-पानी, निवास, सं० अन्न + जल (भोजन या जीवन की दो आवश्यकताएँ), दे० दाना-पानी।
अनजहा वि० पुं० जिसमें अनाज पड़ा हो (भोजन, मिठाई आदि), जिसमें अनाज रखा जाता हो (बर्तन), स्त्री०-ही, वै० अंज-, सं० अन्न।
अनजही सं० स्त्री० अनाज देने का कारबार, सूद पर अनाज भी उधार दिया जाता है,-चलब, दे० बिसरही, बिसार, सं०।
अनजाद सं० पुं० अनुमान, फा० 'अन्दाज़' का विपर्यय, वै० अजाद, क्रि०-दब, दे० अनदाजब।
अनजान वि० न जाना हुआ,-में, अज्ञान की स्थिति में, बिना जाने, सं० अज्ञान।
अनजाने क्रि० वि० बिना जाने, सं० अज्ञाने।
अनटस सं० पुं० मनमुटाव, भीतरी बैर, अज्ञात बैर,-राखब, स० अंतः।
अन्टी सं० स्त्री० धोती का वह भाग जो कमर के

चारों ओर लपेटा जाता है,-मँ, पास में,-मँ दरव, -धरव, पास में रख लेना।

अनडू सं० पुं० वह बैल जिसके अंडकोष निकाले न गये हों, सं० अनडुह्।

अनती सं० स्त्री० छोटे बच्चों के कान में पहनने की वाली, शायद "अनन्ती" जो किसी समय "अनन्त" की भाँति कान में पहनी जाती रही हो। सं०।

अनधन वि० बहुत (द्रव्य) गीतों मे (अनधन सोनवाँ) स० अन+धन (जो धन न समझा जाय अर्थात् बहुत होने पर साधारण माना जाय), अन्न, धन?

अनबानी सं० स्त्री० अनुचित वाणी जा० (पद्मु० २५, ७८)।

अनबोल वि० पुं० बेहोश; स्त्री०-लि,-ता, जो पशुओं की भाँति बोल न सके, जो मनुष्य की भाषा न बोले या अपना दुःख प्रगट न कर सके, सं० अन +बोलब।

अनभल सं० पुं० अहित, हानि;-करब,-ताकब,-होब तुल० अरिहुँक-कीन न रामा। सं० अन+भल (दे०)।

अनमन वि० पु० जिसकी तबियत ठीक न हो जिसका मन किसी काम में लगता न हो, स्त्री०-नि, सं० अन्यमनस्क।

अनमेल वि० जिसका मेल या जोड़ न हो. सं० अन+मिल।

अनराजब क्रि० सं० अन्दाज़ या पता लगाना; फ़ा० अंदाज़।

अनर-चोटवा दे० अन्हर-।

अनवट सं० पुं० पैरों के अँगूठों में पहनने का स्त्रियों का एक गहना;-बिछुआ, पैर की उँगलियों के लिए दो गहनों का जोडा। सं० अंगुष्ठ।

अनवासब दे० अँवासब।

अनसइत वि० पुं० अंशवाला, भाग्यवान्, स्त्री०-ति वै० अंश- सं० अंश (भाग्य)।

अनसुहाति सं० स्त्री० बुराई अशोभनीय स्थिति, ऐसी बात जो दूसरों को बुरी लगे, वै०-सो- सं० अन +सोहब (सोहना=अच्छा लगना) दे०।

अनसोवनि सं० स्त्री० न सोने देने की स्थिति, नींद से बाधा,-होब,-करब, न सोने देना, सं० अन (न)+सोइब (सोना) दे०।

अनहड वि० पुं० विचित्र स्त्री०-डि,-खेवा, विचित्र ढंग।

अनहद सं० पुं० अनाहत राग सं०।

अनहोनी वि० स्त्री० न होनेवाली, आशातीत सं० अन (न)+होब (होना), दे० होनी।

अनाज सं० पुं० नाज,-पानी, खाने का सामान, वि०-नजहा,-ही, सं० अन्न।

अनाथ वि० जिसका कोई सहायक न हो, सं०।

अनादर सं० पु० निरादर,-करब,-होब, सं०।

अनाप-सनाप सं० पु० व्यर्थ के शब्द, मूर्खता-पूर्ण बात -कहब,-बक्कब सं० अन+आप (आपे से बाहर की बातें)।

अनार सं० पु० प्रसिद्ध फल,-दाना, इसका दाना जो खटाई बनाने के काम आता है। फ़ा०।

अनारी सं० न जाननेवाला व्यक्ति, वि० बेशउर, भा०-पन, अनरपन, सं० अनार्य।

अनाहूत क्रि० वि० अकारण, बिना बुलाए, सं० अन+आहूत (निमंत्रित)।

अनिच्छा सं० स्त्री० दुःखदायी स्थिति -करब,-होब, सं० अन+इच्छा (इच्छा के विरुद्ध)।

अनिरुध सं० पुं० उषा का प्रेमी कृष्ण का पौत्र, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न का पुत्र, जा० (पद्मु० २०, १३५, २३, १२५ २५, १७१-२)।

अनी सं० स्त्री० सेना जा० (पद्मु० १०, ४१) सं०।

अनुहारि सं० स्त्री० समता (चेहरे की)। सं० अनु+हृ?

अनेग वि० अनेक, बहु०-न, स्त्री०-नि।

अनेगन वि० अनेक, बहुतेरे -परकार (अनेक प्रकार के भोजन),-रकम,-किसिम, नाना भाँति सं० अनेक।

अनेति स० स्त्री० अत्याचार, अन्याय -करब,-चलब, दे० कुनेति, सं० अनीति, वि०-ती,-तिहा।

अनेर वि० पुं० दूसरे स्थान का (पशु), कभी-कभी अनजान भटके राही के लिए भी आता है, सं० अ+नेर (निकट)=दूर का।

अनेरै क्रि० वि० व्यर्थ में, बिना कारण (जौ०)।

अनेसा सं० पु० चिंता, संदेह,-करब -होब, जा० अँदेस, फ़ा० अंदेश।

अनैआ सं० पुं० लानेवाला,-पठवैआ, स्त्रियों को लाने और ले जानेवाला (ससुराल आदि में), वै०-नवैया,-या सं० आ+नी।

अनोखेक वि० विचित्र, अलभ्य, प्रायः वस्तुओं के लिए, वै०-कै, नोखेक कहा० नोखे क नाउनि बाँसे क नहन्नी।

अनौनी-पठौनी सं० स्त्री० स्त्रियों को लाने और भेजने की प्रथा।

अनौवा स० पुं० किसी को लाने के (विशेषतः स्त्रियों के) समय आया हुआ सामान, वै०-आ, सं० आ+नी।

अन्न सं० पुं० नाज -पानी, भोजन का सामान,-प्रासन, छोटे बच्चे को पहले पहल अन्न खिलाने का संस्कार; सं०।

अन्नर अव्य० भीतर, अन्दर, प्र०-रै-, भीतर ही भीतर, फ़ा० अंदर।

अन्नास क्रि० वि० बिना किसी कारण के, सं० अनायास।

अन्नास-बदे क्रि० वि० बिना छेड-छाड़ के, अन्नास (दे०) + बद (फ़ा०)=खराब,-क, व्यर्थ, निरर्थक।

अन्निउँ-पनिउँ क्रि० वि० प्रत्येक दशा में, चाहे जैसी दशा हो।

अन्हउटी दे० अन्हवटब।
अन्हर-चोटवा सं० पुं० बिना देखे या सोचे-समझे किया हुआ काम, अन्हर (अंधा)+चोट, जैसे अंधा बिना देखे चोट करता या मारता है।
अन्हरा सं० पुं० अंधा मनुष्य, स्त्री०-री, आ०-रू, क्रि०-राब, अंधा हो जाना, मूर्खता करना, सं० अंध।
अन्हवटब क्रि० स० (बैल की) आँखों पर अन्हौटी बाँधना, मु० आँखों पर पट्टी बाँधकर या हाथ रखकर (व्यक्ति को) मारना, सं० अंध, भो०।
अन्हवाइब दे० नहवाइब, जा० अन्हवावा (पदु० २०, ७६)।
अन्हिआर सं० पुं० अंधेरा,-करब,-होब,-पाख, कृष्ण पक्ष,-री, अंधेरी रात, जग-(होब), व्यर्थ, शून्य (किसी का भविष्य), भा०-अरिया, वै०-यार सं० अंधकार।
अन्हेरि सं० स्त्री० अन्याय, अंधेर,-करब,-होब, वि०-री, अंधेर करनेवाला।
अन्होरी सं० स्त्री० गर्मी में शरीर पर होनेवाले छोटे-छोटे दाने, वै० म्हौ-,-म्हौ-,म्हउ-, भो० अँभौ-सं० आम्र (छोटे-छोटे आम के फलों की भाँति के दाने)।
अपग वि० पुं० जिसका हाथ या पैर टूटा हो, स्त्री०-गि, सं० पंगु, "तव करि राखु अपंग"-गिरि।
अपच सं० पुं० भोजन न पचने का रोग,-करब (किसी खाद्य का),-धरब,-होब, सं० अ+पच्।
अपजस सं० पुं० बदनामी, वि०-हा,-हा कपार, अपयश पा जाने वाला (सिर), ऐसे दुर्भाग्य वाला व्यक्ति, स्त्री०-ही, तुल० हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ, सं०।
अपढ़ वि० पुं० अनपढ़, अशिक्षित, स० अ+पठ्।
अपनपौ सं० पुं० आत्मीयता, मेलजोल, घनिष्ठता;-होब, करब,-रहब, सु० अपनपौ आपुन ही बिसरयो।
अपनाइब क्रि० स० अपना कर लेना, (दूसरे की वस्तु) ले लेना।
अपनिहि वि० स्त्री० अपनी ही, वै०-यै।
अपनी-अपना सं० पुं० स्वार्थ का व्यवहार, स्वार्थांधता,-होब, करब।
अपनै वि० अपना ही।
अपनौ वि० अपना भी।
अपया वि० बिना पैर वाला, असमर्थ, कोढ़ी-, अपाहिज, सं० अ+फा० पा (पैर) भो०।
अपरपार वि० जिसके पार का पता न चले, अथाह; प्रायः भगवान् की माया या महिमा के लिए, सं०।
अपरब क्रि० अ० पार हो जाना, अत तक पहुँच जाना, सं० अपर (दूसरा) अर्थात् दूसरे किनारे पहुँच जाना।
अपरबल वि० सर्वोपरि, प्रबल, सं० 'प्रबल' के साथ निरर्थक 'अ' का उदाहरण भो०।
अपराध सं० पुं० कसूर,-करब,-होब, वि०-धी, पापी, सं०।
अपलच्छ सं० पुं० अकर्मण्यता, सुस्ती, वि०-छी, घृणित एवं अकर्मण्य। सं० अप+लक्ष् ?
अपवादि सं० शरारत,-करब, वि०-दी, बदमाश।
अपसर सं० पुं० अफसर, वै०-पी-, अं० आफ़िसर।
अपसा-मँ क्रि० वि० आपस में, प्र०-सै-ठे० आपुस।
अपहरब क्रि० स० अन्यायपूर्वक ले लेना, हरब-, दूसरे की वस्तु ले लेना, सं० अप+हृ।
अपाढ वि० कठिन, दुष्प्राप्य, होब,-रहब,-करब, क्रि० वि०-ढें, मजबूरी में, निःसहाय अवस्था में।
अपार वि० जिसका पार न हो, सं०।
अपावन वि० अपवित्र, हेय "परयो-ठौर में कञ्चन तजत न कोय"।
अपाहिज वि० हाथ पैर से लाचार, सं० ऐसा व्यक्ति। अ+पद (जिसके हाथ पैर न काम करें)।
अपिलाँट सं० पुं० अपील करनेवाला (कच०), अं० अपीलांट।
अपीलि सं० स्त्री० मुकदमे की अपील,-करब,-होब,-दायर करब,-सुनब, अं० (कच०)
अपीसर सं० पुं० अफसर, भा०-री, वै०-पि-, अं० आफ़िसर, अर० अफ़सर (ताज)।
अपुआ सर्व० स्वयं, प्र०-ऐ,-नै, वै०-ना, वा।
अपुनइ क्रि० वि० अपने ही, स्वयं, जा० (पदु० २१ ३४)........वै० आपुहि (जा०, अख०, ४७), -इ,-पै।
अपुना सर्व० स्वयं, प्र० नै, स्वयं ही, वै०-आ,-वा।
अपुसा सर्व० आपस,-क, आपस का, क्रि० वि०-सँ, आपस में, प्र०-सै म, आपस में ही।
अपूरब वि० अपूर्व, "सरसुति के भंडार की बडी-बात, ज्यों खरचै त्यों-त्यो बढ़ै बिन खरचे घटि जात"। सं०।
अपूरी वि० स्त्री०, पूरी, भरपूर, व्याप्त, जा० (पदु० २, १८२, १६, ४४)
अफनाब क्रि० अ० घबराना, शा० 'उफान' से-उफान खा जाना या आपे से बाहर हो जाना।
अफरादाँ वि० व्यर्थ, अधिक,-जाब,-खर्च करब, अर० इफ़रात।
अफलातून सं० पुं० बडे गर्व एवं मस्तिष्क वाला व्यक्ति,-बनब, गर्वीली बातें करना, अ० (अ) फलातूँ (यूनानी दार्शनिक जिसे अंग्रेज़ी में प्लैटो कहते हैं)।
अफायाँ वि० व्यर्थ, निरर्थक,-जाब,-होब, सं० अ+फ़ा० फ़ायदा. ?
अफीमि सं० स्त्री० अफीम,-मची, अफ़ीम खानेवाला, फ़ा० अफ़यून, अं० ओपियम।
अब क्रि० वि० इस समय, प्र०-ब्ब,-ब्बै,-ब्बौ, "कालि करै सो आजु कर आजु करै सो अब्ब" (कबीर)।
अबकी क्रि० वि० इस बार, प्र०-कियै,-यौ।

अवखोरा सं० पुं० गिलास फ़ा० आबख़ोरः (आब =पानी+ ख़ुरदन, पीना) वै०-प-।
अवगा वि० जिसमें पानी न मिला हो (विशेष कर दूध एवं गन्ने का रस), सं० अ+वगड़ब (दे०), गवडब=मिलाना, भो०-गै,-अवै (अधिक)।
अवतर वि० पुं० खराब, और खराब (प्रायः स्थिति के लिए), स्त्री०-रि फ़ा० अबतर (खराब)।
अवयँ क्रि० वि० अभी, थोड़े समय पूर्व या पश्चात्, वै०-हीं,-वैं,-व्वै।
अवलै क्रि० वि० अब तक, वै०-लौं।
अववँ क्रि० वि० अब भी, इस पर भी, प्र०-व्वौं,-व्वौ।
अववाव सं० पुं० वह सरकारी टैक्स जो ज़मींदारों से मालगुजारी पर शिक्षा, सड़क आदि के लिए वसूल होता था। अर० अबवाब [बाब, (द्वार) का बहु०]
अवसें क्रि० वि० इस समय से फिर से।
अवहिन क्रि० वि० अभी, वै० हीं।
अवहीं क्रि०, वि० अभी, वै०-हिन,-वैं, प्र०-हिनैं,-व्वै।
अवाही-तवाही सं०स्त्री० आफ़त,-परब,-बकब, अंड-बंड बकना, फ़ा० तबाह (नष्ट)।
अवीरि स० स्त्री० अवीर,-लगाइब, अर०-बीर (कई सुगंधों का संग्रह)।
अवेर-सवेर क्रि० वि० समय-कुसमय,-करब सं० सुवेला दे० सवेर।
अवेरि सं० स्त्री० विलंब, देर,-कै,-सें-लै, देर तक, देर से,-करब,-होब, सं० अवेला।
अवै क्रि० वि० अभी, वै०-वहीं, प्र०-व्वै, वहिनैं,-हीं।
अवौ क्रि० वि० अब भी वै०-वहूँ,-वौं प्र०-व्वौ।
अभिरब क्रि० अ० भिड़ जाना दे० भिड़ब। निरर्थक अ।
अभिलाख सं० पुं० अभिलाषा, हार्दिक इच्छा, करब,-होब क्रि०-व, इच्छा करना (प्रायः अनिष्ट)।
अभेर सं० पुं० संघर्ष, नत-, नातेदारी का सिल-सिला।
अभोखन स० पुं० आभूषण, भोजन या पान का सामान (प्राय. देवी देवता का) यह शब्द स्त्रियाँ देवताओं को कुछ चढ़ाते समय कहती है—' लेव महराज, आपन-"। सं० आभूषण, अ+भूख?
अमउआ सं० पुं० एक हरा कपड़ा जो कच्चे आम के रंग का होता है, वै०-मौआ सं० आम्र।
अमचुर सं० पुं० आम की सूखी खटाई स० आम्र-चूर्ण।
अमरस सं० पुं० आम का रस, स० आम्र-रस।
अमराइ सं० स्त्री० आम की नई बगिया छोटे पेड़ों का बाग स० आम्र।
अमल स० पुं० समय नशा (जो समय पर लगता है);-करब,-लागब,-दखल, अधिकार; अर०; वि०-ली, नशेबाज़, वै०-लि, क्रि०-लियाब, नशे का वक्त होना या नशे के समय कष्ट पाना, प० अमल=समय।
अमला सं० पुं० कर्मचारी गण,-ओहदार,-फइला, दफ्तर के लोग,-लोग, अर० अमल (कार्य) [आमिल (कार्यकर्ता) का बहु०]।
अमलोनी सं० स्त्री० एक खट्टा साग, सं० आम्ल (खट्टा)।
अमानत सं० स्त्री० रखी हुई या जमा की हुई रकम या वस्तु-रहब,-धरब, अर०।
अमाब क्रि० अ० अंदर आ सकना (किसी वस्तु का), प्रे०-मवाइब, अँटाना।
अमार सं० पुं० एक फल और उसका पेड़।
अमावट सं० पुं० पके आम के रस की पपड़ी जो धूप में सुखाकर बनती है। सं० आम्र।
अमावस सं० पुं० अमावस्या वै०-मवसा सं०।
अमिआ स० स्त्री० छोटे छोटे कच्चे आम के फल, वै०-या सं० आम्र।
अमिट वि० जो मिट न सके।
अमिनई सं० स्त्री० अमीन का काम, उसकी नौकरी,-करब दे० अमीन, वै०-मीनी।
अमिरई सं० स्त्री० अमीरी, आराम करने की आदत, वै० अमिरपन अ०।
अमिरऊ वि० अमीर की भाँति,-ठाट बाट,-खान पान, अ० अमीर, सरदार।
अमिरपन सं० पुं० अमीरी, वै०-ई।
अमिर्त सं० पुं० अमृत, वि० बहुत मीठा, सं० अमृत।
अमिर्ती सं० स्त्री० जलेबी की तरह की प्रसिद्ध मिठाई, वै० इमि- सं० अमृत।
अमिलई सं० स्त्री० खट्टापन, खटाई, सं० अम्ल।
अमिलचुक वि० बहुत खट्टा प्र०-क सं० अम्ल।
अमिलतास सं० पुं० एक पेड़ और उसका पीला फूल, इसके लंबे फल को 'सिंघर-डंडा" (दे०) कहते हैं और इसके फल का गूदा दस्त कराने के लिए दिया जाता है। वै०-म-।
अमिला सं० पुं० एक प्रकार की बोवाई जो धान के लिए काम में आती है;-मारब, धान खेत में बोने के दो दिन पहले खेत जोत देना जिससे पानी के कारण बीज इकट्ठा बटुर न जाय (सं० अ+ मिल, मिलब, न मिलना)।
अमिलाब क्रि० अ० खट्टा हो जाना; प्रे० लवाइब;-न, जो खट्टा हो गया हो, सं० अम्ल (खट्टा)।
अमिली स० स्त्री० इमली; वै० इ-; सं० अम्ल (खट्टा), क्योंकि इमली खट्टी होती है। दे० आमिल, अमिलाब।
अमीन सं० पुं० भूमि का नाप-जोख करनेवाला अधिकारी, भा०-नी,-मिनई। अर० अमीन (विश्वास-पात्र)।

अमीर वि० धनाढ्य; आराम करनेवाला; भा०-री, मिरई,-पन, क्रि०-राब, अमीर हो जाना, अर० ।
अमेठव दे० उमेठव ।
अमेठियाँ क्रि० वि० जिस दिन बाज़ार न हो;-लेब, ऐसे दिन खरीदना; शा० अ+पैठ (बाज़ार) ?
अमोला सं० पुं० आम का छोटा पौदा या पेड़, सं० आम्र ।
अमौआ दे० अमउआ ।
अयँठ सं० पुं० गर्व से बात करने का ढंग; ऐंठ, वि०-ठोहर (दे० अइँठोहर) ।
अयँड सं० पुं० घमंड,-मयँड, व्यर्थ की आपत्ति,-करब; वि०-डी, घमंडी, क्रि०-ब -इँटव,-डियाव ।
अयना सं० पुं० मुँह देखने का शीशा; अर० आईनः ।
अयर-गयर वि० पुं० दूसरा, अपरिचित, फ़ा० ग़ैर (दूसरा) ।
अयरन स० पुं० कान में पहनने की बाली; अ० इयर-रिंग, वै० ऐ- ।
अयलाहिन वि० मुँह के स्वाद को खराब करनेवाला,-आइव ऐसा स्वाद देना, वै०-इ- ।
अयस सं० पुं० मज़ा, आनंद,-करब, मज़े उड़ाना; अर० ऐश ।
अयाची दे० अजाची ।
अरइल सं० पुं० एक प्रसिद्ध स्थान जो प्रयाग के पास गंगा-जमुना संगम के दक्षिणी किनारे पर है। जा० (पदु० १०, १२६)
अरई वि० स्त्री० जो उबली न हो,-कोदई (दे०कोदो), पुं० अरवा (दे०) ?; (२)-विरई, जड़ी-बूटी ।
अरक सं० पुं० अर्क,-उतारब, अर० अर्क़ ।
अरगन-परगन सं० पुं० सारा पड़ोस,-न्योतब, सबको बुलाना; दे० परगना, फ़ा० परगनः (टुकड़ा) ।
अरगनी सं० स्त्री० कपड़ा टाँगने की लकड़ी या रस्सी, अर० अरग़न; वै० अल-(सि०), अलग+नी ? स० आलग्न ।
अरगला सं० पुं० हठ; मचल पड़ने की स्थिति,-करब,-डारब, जा० (पदु० २९, ७४) सं० अर्गला ।
अरघ सं० पुं० अर्घ्य,-देब, पूजा स्वरूप जल चढ़ाना; सं० अर्घ्य ।
अरघा सं० पु० पात्र जिसमें शिव, शालग्राम आदि की मूर्ति पर चढ़ाया हुआ जल गिरता है । सं० ।
अरज सं० स्त्री० प्रार्थना, करब,-मारूज, विनती;-मंद, प्रार्थी, वै०-जि, अर० अर्ज़ (पेश करना) ।
अरजाल सं० पुं० बोझ, उत्तरदायित्व, व्यर्थ की बदनामी,-आइब (उप्पर, सिरें-), अर०रज़ल (नीच) का बहुवचन ।
अरजी स० स्त्री० प्रार्थनापत्र,-देब,-दावा, मुकदमे की पहली प्रार्थना। अ०-र्ज़ी।
अरजूमाल वि० कठिनता से सँभलनेवाला (व्यक्ति),-होब, चल फिर न सकना; अर० आरज़ू+फ़ा० मंद (जो दूसरे से प्रार्थना करे) ?
अरतें-बिरतें क्रि० वि० अवसर पड़ने पर; आवश्यकता होने पर, सं० आर्त+वृत्त ।
अरथाइब क्रि० सं० समझाना, समझाकर कहना; वै०-उब, सं० अर्थ ।
अरथी सं० स्त्री० मुरदे की सवारी,-निकरब;-निकारब,-बनाइब । सं० रथ ।
अरदास सं० पुं० प्रार्थना;-करब (विशेषकर देवता से) अ० अर्ज़+फ़ा० दाश्त ।
अरधेल सं० पुं० जिसके पिता या माता असली न हो, सं० अर्ध ।
अरपब क्रि० स० चढ़ा देना, अर्पण कर देना; ले लेना (दूसरे की वस्तु), अर्पि लेव,-देब; सं० अर्प ।
अरबा सं० पुं० विशेषता,-लगाइब; किसी बात को सीधे न कहकर द्राविडी प्राणायाम करना, अर० रबः (चौथाई), अरबः (वर्ग का चतुर्भुज)=चार ।
अरबी-तरबी दे० अड़बी- ।
अररर वि० बो० फागुन में कबीर (दे०) गाते समय यह शब्द राग से और "कबीर अररर" के रूप में गाया जाता है ।
अरराब क्रि० अ० टूटकर गिरना (पेड़, दीवार आदि का), अकस्मात् गिर पड़ना, ध्व०'अररर' से ।
अरवा वि० पुं० जो बिना धान उबाले हुए कूटा गया हो (चावल);-चाउर, स्त्री०-ई (दे०) ।
अरसा सं० पुं० देर,-करब,-होब, वै०-ड़-, अर० अर्सः ।
अरसी सं० स्त्री० अलसी, दे० तीसी ।
अरहरि सं० स्त्री० अरहर का पेड़, उसका दाना; वि०-हा, अरहरवाला (खेत) ।
अराम सं० पुं० आराम, सुख;-करब, सुस्ताना,-देब,-रहब, बेराम (दे०), बेराम-, क्रि०वि०-में-बेरामें, सुख दुःख में, फ़ा० आराम ।
अरायज नवीस सं० पुं० कचहरी का वह व्यक्ति जो प्रार्थनापत्र लिखा करता है। अर० अर्ज़, बहु० फ़ा० अरायज़+नविश्तन, लिखना, भा०-सी ।
अरार स० पुं० मिट्टी या पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े जो नदी के किनारे कुएँ या पहाड़ में से फटकर गिरते हैं,-फाटब, वै०-हार ।
अरुआ स० पु० अरुई या घुइयाँ का बड़ा रूप जिसे बडा भी कहते हैं,-भसुआ, रद्दी भोजन, चाहे जो कुछ (भोजन के लिए), मु० चाहे जैसे लोग ।
अरुआरब क्रि० स० आरंभ करना, वै०-बा-, सं० आरंभ।
अरुई सं० स्त्री० घुइयाँ ।
अरुठ वि० अरुचिकर, सूना,-लागब, बुरा लगना; सं० अरुचि ।
अरूस सं० पुं० अड़ूसा, प्रसिद्ध औषध का पेड़ जिसे संस्कृत में वासा कहते हैं; वै०-सा,-ड़ू-।

अरे संबो० पुकारने या संबोधित करने का शब्द, सं० रे।
अरोस-परोस सं० पुं० निकटवर्ती स्थान;-सी-सी, पड़ोस के लोग।
अलई-पलवा सं० पुं० इधर-उधर की बातें, असंबद्ध बातें,-बतुआव; सं० अ+लभ (दे० लहब)+पल्लव (सं० पल्लव-ग्राही), वै०-ही-पलही,-वलही।
अलकापुरी सं०स्त्री० सुंदर काल्पनिक स्थान जिसका वर्णन साहित्य में है, इंद्र की नगरी, सं०।
अलख वि० जो लखा या देखा न जा सके,-लीला, अद्भुत व्यवहार, सं० अलक्ष्य।
अलगण्ट वि० बिलकुल अलग, वै०-ट्ट, क्रि० वि०-टें,-ट्टें, प्र०-ट्टै।
अलग वि० पुं० पृथक्, स्त्री०-गि, क्रि० वि०-गें, क्रि०-गाव,-गाइब,-उब, सं० अ+लग्न।
अलगउआ वि० किसी का अकेला (हिस्सा, घर आदि), वै०-गौआ,-चा।
अलगाइब क्रि० स० अलग कर देना, बाँटना प्रे०-गवाइब,-उब, वै०-उब।
अलगाव क्रि० अ० अलग हो जाना, प्रे०-गाइब।
अलगी-बिलगा सं० पुं० एक घर के लोगों के अलग हो जाने की क्रिया, प्रथा आदि,-करब,-होब, सं० अ+लग्न, वि+लग्न।
अलगें क्रि० वि० पृथक्, अलग,-रहब,-करब,-होब।
अलङ सं० पुं० किनारा, भाग स्त्री०-ङि, यक-, एक किनारे, वै०-लॅ।
अलफ वि० खड़ा, रुष्ट, अलग,-होब, घोड़े का चलते-चलते खड़ा हो जाना (व्यक्ति का) नाराज़ हो जाना, अर० अलिफ़ (प्रथम अक्षर) जो सीधा खड़ा रहता है।
अलमारी सं० स्त्री० आलमारी, वै० इ-।
अलयपन सं० पुं० सुस्ती, काहिली;-करब, वै० लै-, दे० अलाई।
अलर-बलर वि० उलटा-सीधा, अस्त-व्यस्त।
अललटप्पू वि० बेसिर पैर का, अंदाज़िया।
अलवान सं० पुं० गर्म चादर, प्र० आ- अर० अलवान (लौन=रंग) का बहु०।
अलसई सं० स्त्री० आलस, करब,-लागब, सं० आलस्य।
अलसाब क्रि० अ० आलस करना, नींद में आ जाना प्रे० (?)-साइब,-उब सं० आलस्य।
अलाई वि० बहुत सुस्त, काहिल -क पेट, अत्यंत काहिल, बेकार भा०-पन,-लयपन,-लैपन, वै०-लहिया।
अलान वि० अलग,-करब,-होब, रहब, अर० ऐलान (प्रगट)।
अलाप सं० पुं० गाने का राग, क्रि०-ब, टेरना, राग से गाना, सं० आलाप।
अलाय-बलाय सं० पुं० बीमारी, बुराई, कूड़ा-करकट, प्रायः स्त्रियाँ बच्चों के लिये देवताओं से मनौती या प्रार्थना करते समय इस शब्द का प्रयोग यों करती हैं-"दुरगा जी बच्चा क-लइ जायँ", अर० बला।
अलावाँ अव्य० अतिरिक्त, सिवाय अर० अलावः।
अलियावन सं० पुं० कूड़ा, कचड़ा।
अलेल वि० बहुत (वस्तुओं के लिए) होब,-रहब।
अलैपन दे० अलयपन।
अलोन वि० पुं० बिना नमक का, स्त्री०-नि, प्र०-नै,-नै खाब, बिना नमक के ही खाना, सं० अ+लवण।
अलोप वि० गायब, लुप्त -करब,-होब, सं० अ+लुप्, और कई शब्दों की भाँति इसमें भी 'अ' निरर्थक है।
अल्हइत सं० पुं० आल्हा गानेवाला, दे० आल्हा, आल्हखंड।
अल्हर वि० अल्हड़, कच्चा,-बतिया, बहुत छोटा फल, खाने के अयोग्य दे० आल्हर प्र०-ढ़०, भा०-ई,-पन।
अवँरा सं० पुं० आमला, उसका पेड एवं फल,-भर, जरा सा (गुड आदि), स्त्री०-री, छोटा आमला सं० आमलक।
अवगतब क्रि० अ० सूझना, समझ में आना, अवगत होना वै० अगवनब (विपर्यय-वग,-गव), सं० अवगत।
अवघड सं० पुं० औघड, भा०-ई,-पन, वि०-डी (औघडी मता, औघडों की परम्परा)।
अवङर सं० पुं० अवसर,-परब, सं० अवसर (?)
अवचक क्रि० वि० अकस्मात् वै० औ-, प्र०-चक्कें।
अवचट सं० पुं० आकस्मिक अवसर -परब।
अवतारी वि० अद्भुत -मनई, विशेष शक्तिशाली व्यक्ति, वै०-रिक, सं० अवतार।
अवध सं० पुं० अयोध्या अवध प्रांत जिसमें १२ ज़िले हैं -पुरी, अयोध्या नगरी (तुल०),-नरेस,-धेस, दशरथ अथवा राम, अयोध्या के राजा।
अवर वि० पु० और, अन्य, प्र०-रौ, दूसरा भी, स्त्री०-रि,-रिउ, वै०-उर, औ- तुल० अरु, अवरु सं० अपर।
अवला-मवला दे० औला-मौला
अवसान-खता सं० पुं० ख़तरा (जिससे कोई बच गया हो) भूल फा० अवसान (होश)+खता।
अवसि क्रि० वि० अवश्य, तुल० अवसि देखिये देखन जोगू -कै, अवश्य ही, जान बूझकर सं० अवश्य।
अवसेवरि सं० स्त्री० छेड़छाड़, कष्ट -काब, बार बार दुःख देना, छोटी-छोटी बातों में तंग करना, वै०-उ- शा० अवाहि (दे०)+सेवर (दे०) जो दोनों शब्द जुताई के लिए आते हैं,-अर्थात् कभी कम, कभी अधिक? अ० सेवरो (जोतना), उल० खाँजो।

अवाँरी सं० स्त्री० पंक्ति, यक-, दुइ-(मकान), सं० अवलि।
अवाँसब क्रि० सं० (नई वस्तु का) उपयोग प्रारंभ करना [विशेषकर बर्तन का] व्यं० नई स्त्री के साथ रमण करना, वैं०-चब (फ़ै०)।
अवाई सं० स्त्री० आना,-जवाई, आना-जाना, सं० आ+गम्।
अवाचब क्रि० अ० मरने के पूर्व अनबोल हो जाना, वि०-चा,-चीं, ऐसी दशा में, सं० अ+वाच् (बोलना)।
अवाज सं० स्त्री० आवाज,-देब,-करब,-जा, ताने की बोल, कटाक्ष,-जा कसब, कटाक्ष करना, बोली बोलना, वैं०-जि, फ़ा० आवाज़।
अवाट-बवाट सं० पुं० व्यर्थ की बात, गाली-गलौज,-बक्कब, बुराई करना, व्यर्थ की बकवास करना, वै०-चाँट-चाँट, दे० अंड-बंड।
अवारा वि० बिना पालक या मालिक का, क्रि०वि० होकर,-घूमब,-फिरब, सं० संबंध-हीन व्यक्ति, भा०-वरई,-वरपन, फ़ा० आवारः।
असघा-पसंघा दे० पसघा।
अस वि० पुं० ऐसा, स्त्री०-सि, क्रि० वि०, इस प्रकार, प्र०-स, यसस,-इसै,-इसनै,-इसौ,-सब (ऐसा ही,-भी),-कुछ, ऐसा कुछ, कुछ तरकीब, कहा० "हमारे मर्द न तोहरे जोय,-कुछ करौ कि लरिका होय।"
असकति सं० स्त्री० आलस, न करने की इच्छा,-करब,-लागब, वै०-कि-,-कु-,क्रि०-ताब, वि०-हा,-ही, स० अशक्ति।
असकि सं० स्त्री० निर्बलता, दे० सक्कि, सं० शक्ति।
असगध सं० पुं० एक पेड़ जिसकी छाल औषधि के काम आती है, सं० अश्वगंध।
असगुन सं० पुं० अपशकुन,-होब,-करब, वि०-नी,-नहा,-ही, जिसके दर्शन या आगमन से काम में बाधा पड़े, सं० अशकुन, फ़ा० शगुन।
असढ़िआ सं० पुं० एक बड़ा साँप जो विषैला नहीं होता और असाढ़ में पानी बरसने पर दिखाई देता है, वैं०-साँप, सं० आषाढ़।
असथिर वि० पुं० स्थिर, निश्चित, स्त्री०-रि, भा०-रई,वैं०-हथिर,-ल, क्रि० वि०-रैं,-लें, स्थिरता-पूर्वक, सं० स्थिर; दे० अह-।
असनेह सं० पुं० प्रेम, स्नेह,-करब,-राखब,-होब, वि०-ही, स्नेही, सं० स्नेह।
असबाब सं० पुं० सामान, माल-, संपत्ति, अर०।
असमजस स० पुं० दुबिधा,-करब,-म परब, सं०।
असमान सं० पुं० आकाश, वि० भारी,-होब, भारी होना, न उठ सकना, फ़ा० आसमान।
असमानी वि० दैवी,-सुलतानी, भगवान् का या राजा का (हुक्म), अपनी शक्ति के बाहर की बात, फ़ा०।
असम्हौ क्रि० वि० इतना अधिक कि विश्वास न पड़े,-होब, अधिक उत्पन्न होना, वैं०-म्है०, सं० असंभव।
असर स० पुं० प्रभाव,-परब,-होब,-करब,-रहब,-दार, प्रभावशाली, अर०।
असरेइब क्रि० स० सेवा करते रहना, पालना, आशा में लगे रहना, आश्रित रहना, सं० आ+श्रि।
असल वि० पुं० सच्चा, शुद्ध, स्त्री०-लि, वैं०-सि--ली, भा०-ई, प्र०-असल,-लै-, सच्चा सच्चा,-कै, अपने बाप का असली बेटा, प्रायः दूसरे को ललकारने के लिए यह अंतिम प्रयोग आता है। अर०-स्ल।
असवार सं० पुं० सवार, वि० चढ़ा हुआ, हावी,-होब,-करब,-कराइब, चढ़ाना-री, सवारी, फ़ा०; सं० अश्व।
असस क्रि० वि० ऐसा, ऐसे ऐसे, वि० इस प्रकार का, स्त्री०-सि, वैं० य-, प्र०-सै,-सौ, दे० अस।
असहि वि० असह्य,-होब, असह्य हो जाना, सं०।
असाई सं० स्त्री० मक्खी जो सड़ी वस्तुओं या घावों आदि पर हगकर कीडे पैदा करती है,-हगब, ऐसे कीड़े होना।
असाढ सं० पुं० आषाढ़ का महीना,-लागब, बरसात आना, सं० आषाढ़।
असान वि० आसान, भा०-नी, फ़ा० आसान।
असामी सं० पुं० प्रजा, व्यक्ति जो दूसरे का खेत जोते, (ई मालदार-अहै, यह व्यक्ति धनवान है) फ़ा०।
असिल दे० असल।
असूलब क्रि० स० वसूल करना, लेना, स० असूल-तहसील, आमदनी जो किराये आदि से प्राप्त हो, अर० वसूल।
असूली सं० स्त्री० प्राप्ति, लगान,-करब,-होब, अर० वसूल।
असौं क्रि० वि० इस वर्ष, वैं० य-,-सो, प्र० असवैं, यसवैं,-वौं।
अस्थान सं० पुं० स्थान, देवता का स्थान, वैं०-ह-, दे० थान्ह, सं० स्थान।
अहँजब क्रि० स० (शरीर को) तोड़ देना, निर्बल कर देना,-जि उठब, बीमारी आदि के बाद हाड़ मांस गल जाना,-पहँजब, अच्छी तरह कूट देना, प्रे०-जाइब,-उब,-जवाइब,-उब।
अहँडा सं० पुं० बर्तन (प्राय: मिट्टी के), तौल का पत्थर,-भाँड़ा, बहुत से बर्तन, स्त्री०-ड़ी,-कोहँड़ी, सारा सामान, दे० कोंहड़ी, हाँड़ी, हंडा, सं० भाण्ड।
अहँडोरब क्रि० अ० जी मचलना, उथल पुथल मचाना, जिउ-, कै करने की इच्छा होना, स० (पानी या अन्य द्रव को) मथ डालना, प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब, सं० आंदोल।

अहक सं० स्त्री० उत्कंठा, हार्दिक इच्छा -मिटब, मिटाइब क्रि०-ब, किसी बात या व्यक्ति के लिए मरना, [अहकि-अहकि, इच्छा की अपूर्ति सहते-सहते, प्रतीक्षा में निराश होकर], फा०-क (चूना)।
अहका सं० पुं० ज़ोर की प्यास -लागब, फा०-क (चूना)।
अहकाइब क्रि० सं० तरसाना अहक पूरी न होने देना, वै०-उब।
अहतर सं० पुं० अस्तर -लगाइब,-देब, सं० स्तर।
अहथाप स० पुं० स्थापना -करब,-होब, क्रि०-ब, सं० स्था।
अहथापना सं० स्त्री० स्थापना,-करब,-होब, सं० स्थापना। क्रि० पब, सं० स्थापय्।
अहथिर वि० पुं० स्थिर, निश्चित, शांत स्त्री०-रि, वै०-ल, अस्थिल। भा० ई, क्रि० वि०-रें, शांति-पूर्वक जा० "सबै नास्ति वह अहथिर" (पदु० स्तुतिखंड ६), दे० असथिर, सं० स्थिर।
अहदंकब क्रि० अ० डर जाना, घबरा उठना।
अहदियाब क्रि० अ० घबराना, वै०-आब प्रे०-वाइब,-उब।
अहदी वि० सुस्त, भा०-पन। अर० अहद।
अहनी दे० अइनी।
अहमक वि० पुं० मूर्ख, स्त्री०-कि, भा०-ई, अर०।
अहय क्रि० अ० है, वै०-इ, आटै, वाटै, फै० सु० प्रत०।
अहरब क्रि० सं० काटकर सीधा करना (लकड़ी) व्यं० पीटना (व्यक्ति को), खूब मारना,प्रे०-रवाइब, -उब। स० आ+हृ।
अहरा सं० पुं० उपलों की आग जिस पर दाल, बाटी आदि पकाते हैं बिना चूल्हे की आग,-जोरब, -लगाइब, सं० आहार ?
अहरी सं० स्त्री० कुएँ के पास का स्थान जहाँ पशुओं के पीने के लिए पानी भर दिया जाता है, फै० सु० प्रत०, स० आहार? ऐसे स्थान पर प्रायः जानवर चरने या आहार के बाद आते हैं। भो० अहरी (जंगली बैल)।
अहह वि० बो० ओ हो! हाय हाय! तुल० अहह तात दारुन दुख दीना।
अहार सं० पुं० भोजन, खूराक,-करब,-देब,-पाइब,-मिलब,-लेब, सं० आहार।
अहिजन सं० पुं० (१) इंजन, (२) " " चिन्ह,-देब,-लगाइब, ऐसा चिन्ह लगाना, वै०-इँजन-इ-दे०), पहले अर्थ में अं० एंजिन, दूसरे में अर० ऐज़न (भी)।
अहित सं० पुं० बुराई, हानि,- करब,- होब, सं०।
अहिवात सं० पुं० सधवापन, सौभाग्य, वि०-ती, सधवा ब०-तिन, तुल० 'अचल रहै-तुम्हारा'। स० अहोभाग्य।
अहिर सं० पुं० गाय भैंस पालने वाला, एक हिंदू जाति जिसके लोग उजड्ड, पर सीधे होते हैं। स्त्री०-रिन,-नि०, वै०-ही-, घृ०-रा,-रवा -रिनिया, क्रि०-राव अहिर का सा (उजड्ड) व्यवहार करना, कहा० अहिर क पेट गहिर कुरमी क पेट अडार, भा०-ई,-पन सं० आभीर,-री।
अहिरई सं० स्त्री० अहीरों का सा व्यवहार,-गाइब, अहीरों की सी बातें (मूर्खता-पूर्ण व्यवहार) करना, क्रि०-राव, अहीर का सा व्यवहार करना।
अहुँजी सं० स्त्री० एक व्यंजन जिसमें दूध, चावल और ज़ीरे के साथ लौकी के बारीक लच्छे पकाये जाते हैं।-रीन्हब,-बनइब,-खाब। सं० भुर्ज् ?
अहेरिया सं० पुं० शिकारी, अहेर करनेवाला गी० राम लखन दुओ बन कै-, सं० आखेट।
अहो संबो० संबोधन या आश्चर्य करने का शब्द,-भैया,-भाग्य वै०-हौ (दूसरे प्रयोग में)।
अहोगति दे०-घो-।
अहौं क्रि० अ० हूँ, बैठा या खड़ा हूँ जीवित हूँ, जब लग-,जब तक मैं हूँ, सं० अस्मि।

आ

आँक सं० पुं० चिह्न, संख्या आदि जो किसी वस्तु या स्थान पर लिखा हो,-लगाइब,-मारब,-देब, सं० अंक।
आँकब क्रि० स० मूल्य लगाना, अंदाज़ से मूल्य निर्धारित करना, प्रे० अँकाइब, अँकवाइब। सं० अंक।
आँकुस सं० पुं० अङ्कुश, रोकथाम, रुकावट, जा० "सेंदुर तिलक जो आँकुस अहा" (पदु० ६४१)।
आँखब क्रि० स० (आटे को) आँखे से चालना, दे० आँखा।
आँखा सं० पुं० (१) चमड़े या लोहे का बना बड़ा चलना (दे०) जिसमें बहुत बारीक छेद होते हैं और जिससे आटा चाला जाता है, (२) बीज का अँखुआ -निकरब, सं०अक्ष।
आँखि सं० स्त्री० आँख,-मारब,-लागब,-खोलब,-मूनब (मर जाना),-काढ़ब,-निकारब,-सेंकब-उठब, क्रि० वि०- खीं, आँख से,- देखब, अपनी आँखों देखना, दुइ-करब, पक्षपात करना, सं० अक्षि।

आँगा सं० पुं० अँगरखा, स्त्री०-गी, अँगिया,-आ, अङ्गिआ (दे०), वै०-ङा, सं० अंग।
आँचर सं० पुं० अँचरा, सं० अंचल।
आँचि सं० स्त्री० आँच,-लागब,-देब,- देखाइब, क्रि० अँचाव, अँचियाव (गरम होना)।
आँजन सं० पु० आँख का अंजन,-देब,-लगाइब, सं०।
आँजब क्रि० स० अंजन या काजल तैयार करना या लगाना, तुल० अंजन-आँजि हग, सं० अंज।
आँटब क्रि० अ० पूरा पड़ना, खाना-पीना मिलना, उ० यहि सनई क आँटत नायँ, इस व्यक्ति को खाना कपड़ा नहीं मिलता, प्रे० अँटइब,-वाइब,-उब, पूरा करना,-बाँटब "पछिलन्ह कहँ नहिं काँदौ आँटा"-जा०।
आँटा सं० पुं० घास या कटी फसल का बंडल, स्त्री०-टी, क्रि० अँटियाइब, छोटे-छोटे बंडल बनाना।
आँठा सं० पुं० मांस अथवा जमे हुए लोहू का छोटा टुकड़ा।
आँडा सं० पुं० डंक, स्त्री०-डी, प्याज़ या लहसुन का पूरा गंठा, यक-, दुइ-,-डोइया, बच्चे-कच्चे, सारा परिवार, सं० अंड।
आँतर सं० पुं०(१) अंतर, दूरी,-परब,-देब, (२) खेत का जोता हुआ भाग, यक-, दुइ-, क्रि० अँतरब, बीच-बीच में अनुपस्थित होना, काम न करना, आदि, सं० अंतर, दे० अतरब।
आँसु सं० स्त्री० आँसू,-पोंछब, संतोष देना,-ढरकाइब, बहुत रोना,-गिराइब, सं० अश्रु।
आइब क्रि० अ० आना, कामें-, गवनें-,-जाव, भा० अवाई (दे०) वै०-उ-।
आइसु सं० स्त्री० नेवता, भोजन का निमंत्रण,-देब,-लेव,-आइब,-खाब,-पाइब; आयसु (तुल०) (आज्ञा) दे०, अथवा आइब के 'आइसु' (तू आना) रूप से।
आकर क्रि० वि० गहरा (जोतने के लिए), सेव (दे०) का उल०, वै० अवाहि [दे०]।
आकी-बाकी सं० पुं० बचा-खुचा अंश, शेष, ऋण का अंश, दे० बाकी (अर० बाकी)।
आखत सं० पुं० अन्न जो नाई, कहार आदि को दिया जाता है, सं० अक्षत = न टूटा हुआ, जैसे जौ, धान आदि।
आखर सं० पुं० अक्षर, शब्द, यक-, एक शब्द,-कहब, एक बार कह देना, सं० अक्षर।
आखिर क्रि० वि० अंत में, अन्ततोगत्वा, वि०-री, आखीरी, अंतिम, प्र०-कार, अर०।
आगर वि० पु० चतुर, स्त्री०-रि (गीतों में प्रायः "सरब गुन आगरि"); गुन-, गुण से भरपूर, सं० आगार, गुणागार।
आगा सं० पुं० (१) आगे का हिस्सा,-पाछा, (किसी समस्या के) सभी पहलू,-सोचब,-रोकब; हिम्मत अथवा उत्साह कुंठित कर देना,-अन्हियार होब, भविष्य अन्धकारमय होना, सं० अग्र। (२) पठान व्यापारी, फ़ा० आग़ः (-क: = मालिक)।
आगि सं० स्त्री० आग,-देब, दाह संस्कार करना,-लागब, तुरन्त क्रुद्ध हो उठना,-होब, गर्म हो जाना (व्यक्ति का),-भउर,-पानी, गरम-गरम गालियाँ, शाप आदि, उ० हमरे मुँह से-भउर (-पानी) निकरी, मेरे मुँह से अभी अपशब्द या शाप निकलेगा, वै०-गी, अगिनि,-नी (साधुओं द्वारा), सं० अग्नि, दे० अगिनि।
आगिल वि० पुं० अगला, आगेवाला, स्त्री०-लि वै० अगिला (दे०), पालकी उठानेवाले कहारों में जो आगे चलनेवाले होते हैं उन्हें,-और पीछेवालों को 'पाछिल' कहते हैं। सं० अग्र।
आगें क्रि० वि० पुराने समय में, पहले, सामने, प्र० अगवाँ, वै० आगे,-पाछें, बाद को, सं० अग्रे।
आङ्गछ सं० पुं० अङ्ग अथवा शरीर का प्रभाव, व्यक्ति विशेष का प्रभाव, यनकै-यइसनै बाय, इस व्यक्ति के रहने से ऐसा ही होता है। वै०-ढछ, आँग-, सं० अङ्ग।
आङ्गा सं० पुं० दे० आँगा, वै०-ङा।
आछी सं० स्त्री० एक जङ्गली पेड़ जिसका फूल बहुत सुगंधित और लकडी हल्की पीले रङ्ग की होती है।
आजा सं० पुं० पितामह, स्त्री०-जी, सं० आर्य,-र्या; म० आजोबा, दे० अजिआउर।
आजु क्रि० वि० आज, प्र०-इ, आजही,-कालि, आजकल, दो एक दिन में,-जौ,-जू, आज भी, सं० अद्य।
आड सं० पुं० पर्दा,-करब,-होब,-परब,-ओड़, किसी प्रकार का पर्दा, क्रि०-ब, रोकना, क्रि० वि० आडे, छिपकर,-डें-चलते, छिपाकर,-ड़ें-डें, छिप-छिपकर। भा० अड़गर,-ड़।
आडब क्रि० स० रोकना, मोहड़ा-, भार सँभालना, अड़ब (दे०) का प्रे०, प्रे० अड़ाइब,-उब।
आड़ क्रि० वि० पर्दे में, छिपकर, द्वि०-आड़ें, छिपे-छिपे, दे० आड़।
आढ़ति सं० स्त्री० आढ़त, पूँजी, धन,-करब,-होब, वि०-ती, अढ़तिया।
आँती सं० स्त्री० आँतें,-फारब, आँतें निकालना, कष्ट करना,-पोटी, पेट के भीतर का सब कुछ, वि० -फार, जिसके करने में बडा परिश्रम हो, सं० अंत्राल। अं० यंट्रेल।
आँती-सार सं० पुं० प्रसिद्ध रोग, वै० आ-।
आतुर वि० पु० व्याकुल, उत्सुक, जल्दबाज, कहा० आतुर चोर सुहुत बैपारी, भा० अतुरई, स्त्री०-रि, सं०।
आदर सं० पु० मान,-करब,-होब,-भाव, सत्कार, क्रि० अदराव (दे०), सं०।

आदि सं० स्त्री० इतिहास, व्योरा, रहस्य,-जानब,-अंत, पूरी बात, सं०।
आदी सं० स्त्री० अदरक, कहा० बानर का जानै-क सवाद ?
आध वि० पुं० आधा, स्त्री०-धी,-खाँड, थोड़ा सा (अर्ध+खंड), आधो-,आधे-, ठीक आधा २, क्रि० अधिआब,-आइब, दे० अधिआ, सं० अर्ध।
आधा वि० पुं० आधा,-तीहा, थोड़ा सा (तीहा = तीसरा भाग, दे०) स्त्री०-धी, कहा० जौ धन देखी जात आधा देई (लेई) बाँटि, सं० अर्ध।
आधी वि० स्त्री० आधी, (२) सं० स्त्री० आधी रोटी, कहा० आधी तजि सारी को धावै, आधी रहै न सारी पावै, सं०
आन वि० पुं० दूसरा,-केउ, दूसरा कोई, स्त्री०-नि प्र०-नव,-नै-नउ,-नौ, केव, आन-, दूसरे २ आनै-दूसरा दूसरा, दूसरे ही दूसरे, स० अन्य।
आन सं० स्त्री० शान,-बान। फा०
आनन-फानन क्रि० वि० तुरंत-मँ, तुरंत ही, फा० आन (क्षण)+फानन ? फा० फौरन्।
आनब क्रि० स० लाना-पठइब (बहू बेटी को) लाना और भेजना, प्रे० अनाइब,-नवाइब,-उब, सं० आ+नी।
आनय वि० दूसरा ही,-केव, दूसरा ही कोई, प्र०-नौ,-नब, दे० आन, वै०-नै, सं० अन्य।
आन्हर वि० पुं० अन्धा, स्त्री०-रि; क्रि० अन्हराव, भा० अन्हरई, सी० आँधर, दे०अन्हरा, सं० अंध।
आन्ही सं० स्त्री० आँधी,- आइब,-जोतब, ऊधम मचाना,- पानी,- यस, बहुत जल्दी करनेवाला।
आपइ सर्व० आपही, वै०-य,-पै, पुइ।
आपउ सर्व० आप भी, वै०-पव,-पौं।
आपकै सर्व० आपका, आपकी, प्र०-पैक,-पौक।
आपन सर्व०अपना, स्त्री०-नि, अपनै-, आपना ही अपना भा० अपनपौ, अपनपव, ममता, सू० अपनपौ आपुन ही बिसर्‌यो।
आपस क्रि० वि० लौट कर,-जाब,-देब,-करब,-होब, भा०-सी, वै०-पुस, फ़ा० पस (पीछे),(२) परस्पर,-क,-मँ, भा०-दारी।
आपा सं० पुं० अपनापन, स्वत्व, घमंड, कबी० ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।
आपिस स० पुं० दफ़्तर, आफ़िस-र,-अफ़सर, अं०, (२) क्रि० वि० वापस, वै०-पुस फा० वापस।
आपु सर्व० आप, स्वयं, प्र०-इ,-पइ,-पै,-पउ,-पौ, कहा० बाँडौ आपु गई चारि हाथ पगही लै गई।
आपुस क्रि० वि० वापस, (२) परस्पर,-कै, आपस का, वै० दूसरे अर्थ में, अपुसा, प्र०-सै, भा०-सी, दे० आपस,-पिस, फा० वापस।
आपुस-मँ क्रि० वि० आपस में, प्र० अपुसै मँ, आपस में ही, फा० वापस।
आपै सर्व० स्वयं, गों० व० सी०-पुइ।
आपौ सर्व० आप भी, वै०-पहु (कबी०)।
आफति सं० स्त्री० आपत्ति, दुःख,-आइब,-परब; सं० आपत्ति, अर० आफ़त (बाधा)।
आफती वि० आफ़त लाने वाला, उत्पात करने वाला, वै० अफतिहा,-ही, उद्दंड, अर०-त।
आब सं० पुं० शक्ति, रोब, प्रभाव,-दार, रोब वाला, बहु-मूल्य,-ताब, प्रभुत्व, शक्ति, फ़ा०।
आबनूस सं० पुं० प्रसिद्ध काली लकड़ी,-यस, बहुत काला,-क कुंदा, बहुत काला व्यक्ति। अर०
आबरूह सं० स्त्री० इज़्ज़त, प्रतिष्ठा,-उतारब,-देब,-लेब, वि०-ही,-दार; फ़ा० आब (पानी)+रू (मुँह), ह निरर्थक लगा है, वै०-हि वै०-रोह (जौ०), इज़्ज़ति—।
आम सं० पुं० आम का पेड़ या फल,-घास रद्दी वस्तु (विशेषतः खाने की), (२) वि० साधारण, रिवाज,-दस्तूर (१) सं० आम्र, (२) अर० आम।
आमा हरदी स० स्त्री० एक प्रकार की हल्दी जो दवा में काम आती है। पके आम के रंग की होने से ?
आमिल वि० पुं० खट्टा, स्त्री०-लि-चुक, बहुत खट्टा, क्रि० अमिलाब, खट्टा हो जाना सं० आम्ल।
आमी सं० स्त्री० अवध और मगध के बीच की प्रसिद्ध नदी जिसे बौद्ध साहित्य में अनोमा कहा गया है।
आयलदार वि० पुं० देनदार, ऋणी, बोझ से दबा, स्त्री०-रि, वै०-बंद। फ़ा० अयालदार (गृहस्थ)
आयसु सं० स्त्री० आज्ञा, निमंत्रण (ब्राह्मण को भोजनार्थ),-देब-लेब,-कहब (निमंत्रण देना),-आइब, क० में प्रायः आज्ञा के ही अर्थ में, तुल० उठे सकल नृप आयसु पाई, दे० आइसु, आइब का तृ० पुरुष का विधिलिङ् का रूप "आइसु" (तू आना) होता है, शा० इससे 'आज्ञा' का अर्थ आ गया हो।
आरचा सं० स्त्री०(देवता की) पूजा, पूजा,-धार्मिक कृत्य सं० अर्च् (पूजा करना)।
आरत वि० प्रायः क० में 'दुखी' के अर्थ में प्रयुक्त, सं० आर्त।
आरती सं० स्त्री० आरती,-उतारब, आदर करना, व्यं० अपमान करना (-उतरब, अपमान होना),-लेब, देवता की आरती के समय उपस्थित रहना,-लाइब, पूजा के स्थान से आरती की थाली बाहर लाना, सं०।
आर-पार क्रि० वि० इस पार से उस पार; छेदकर, पूरा पूरा; प्र०-रापार।
आरम पुलिस सं०स्त्री०सशस्त्र पुलिस, अं० आर्म्ड पुलिस।
आरर वि० पुं० (वृक्ष या डाल) जो जल्दी टूट सके, स्त्री०-रि,।
आरब सं० पु० आहट,-पाइब,-मिलब,-लेब, मु० पता लेना, पाना (धीरे या चुपके से),।

आरा सं० पुं० लकडी चीरने का औजार, स्त्री०-री,-चलब,-चलाइब, काट-कूट या चीड़-फाड़ करना, छाती पर-चलब, परम क्लेश होना। फ़ा० आरः

आराकस सं० पुं० आरा चलाने वाला?(बढ़ई)। फ़ा० आरः + कशीदन (खींचना)

आरागज सं० पुं० बैलगाडी के दोनों पहियों के किनारे की लम्बी लकड़ी।

आराम दे० अराम।

आरीं क्रि० वि० किनारे, यक-, एक ओर,-आरीं, चारों ओर,-पासें, पास, किनारे, एक पंक्ति में बैठे हुए बच्चे खेल में बार-बार चिल्लाते हैं-"आरीं आरीं कउआ बींच म गुह खउआ" अर्थात् किनारे किनारे (बैठनेवाले) कौए हैं और बीच में (बैठनेवाले) गू खाने वाले हैं।'' यही कहकर बच्चे उठ-उठ कर अपने-अपने स्थान बदलते रहते हैं।

आल-गाल स० पुं० इधर उधर बातें,-मारब, गप मारना, कहा० "चोरवै आल-छिनरवै ढाढ़स" अर्थात् चोर को इधर उधर की बातें बनाना होता है और छिनाला करने वाले में हिम्मत चाहिए। इस कहावत के अतिरिक्त यह शब्द अलग नहीं प्रयुक्त होता, दे० गाला। पं० गल'(बात)

आल्हखंड सं० पुं० आल्हा का उपाख्यान,-कहब,-सुनाइब,-गाइब, आल्हा (दे०) + सं० खंड।

आल्हर वि० पुं० नया, दो चार दिन का,-बतिया, दो चार दिनों का फल (न तोड़ने लायक), स्त्री०-रि,-नीन, थोड़ी देर पूर्व लगी हुई निद्रा,- निनिया (गी०), सी०अल्हरा,-री यह शब्द इन्हीं दो प्रयोगों में आता है, दे० अल्हड़ (नवयुवक) ?

आल्हा सं० पुं० प्रसिद्ध योद्धा जिसका इतिहास-"आल्हा" नामक वीर गाथा में वर्णित है।-ऊदल (जिसे कभी कभी रूदल भी कहते हैं), दोनों सगे भाई, बच्चे प्रायः गाते हैं-"ढोलि बजाओ आल्हा गाओ, माठा पाओ पी लइ जाव"। आल्हा वर्षा काल में ही प्राय. गाया जाता है और इसके साथ ढोल बजता है।-होब,-गाइब,-कहब, आल्हा का गीत गाना, अल्हइत (दे०) यह गीत गाने वाला।

आला सं० पुं० यंत्र,-लागब,-लगाइब, यंत्र लगाकर देखना या परीक्षा करना। अर०-लः

आला वि० बढ़िया, ऊँचा,-हाकिम, बड़ा अफसर,-मनई, अच्छा व्यक्ति,-बाति, अच्छी बात, ऊँची बात,-अदना, छोटे बड़े लोग। अर०-लअ।

आला-पाला सं० पुं० इधर उधर की बातें, व्यर्थ की गप, ऊँची ऊँची बातें,-उडाइब,-बक्कब, दे० अलई-पलई, अर० आलअ। दे० आल-गाल।

आली सं० स्त्री० सखी, वै० अली, क० गी०, वैसे बोलने में अप्रयुक्त, सं० अलि।

आले-आले वि० पुं० बड़े-बड़े, एक से एक बढ़कर,-जगमाँ अहैं, संसार में बडे-बड़े (एक से एक बढ़कर) लोग पड़े हैं, अर० आलअ का देहाती बहुवचन।

आवँरि-पावँरि सं० स्त्री० वशज, संतति। वै० ला-, सी० पँवरि, लउँदी पउँदी, सं० अवली।

आवारा दे० अवारा।

आस स० स्त्री०आशा, भरोसा,-करब,-छोड़ब,-रहब, होब,-भरोस, प्र०-सा, सं० आशा।

आसन सं० पुं०आसन,-मारब,-लगाइब, लेब, कुस-सं० अस् (बैठना)।

आसनी सं० स्त्री० बैठने की छोटी चटाई, दरी आदि।

आसरा सं० पुं० आश्रय, भरोसा, आशा,-करब,-देब -रहब,-होब,-छूटब, क्रि०वि०-रें, भरोसे पर,-रे-गीर (किसी के) आश्रय पर निर्भर, सं० आश्रय, + फा० गिरफ्तन, पकड़ना।

आह स० स्त्री० आह,-भरब, दु:ख की साँस लेना,-लेब, दुख देना, उ० गरीब कै-नाहीं लेय क चाही, गरीब की आह न लेना चाहिए, कबी० "कबिरा दीन अनाथ की सबसे मोटी आह (हाय)", वै०-हि, हाय (किसी के मुँह से 'हाय' निकलना ही आह है।) क्रि० अहकब -काइब (दे०), फा०।

इ

इ वि० यह, प्र०-है,-हौ-हवै, वै० ई।

इकबाल सं० पुं० स्वीकृति (कचहरी में दी हुई, विशेषतः किसी अपराध की),-करब,-होब, वि०-ली, (अपराध) स्वीकार करनेवाला (मुलजिम, गवाह), वै० अ-, (२) रोब, प्रतिष्ठा, सरकारकै-, हजूर कै-,वै० य-अ-[कच०], फा०

इच्छा सं०स्त्री० अभिलाषा,-करब,-पूरन होब,-रुरब, वै० प्र० हि-(दे०)।.सं०

इजराय सं० पुं० (किसी हुक्म का) कचहरी से प्रकाशित, विज्ञापित या रवाना होने की क्रिया,-करब,-होब,-कराइब, वै०-रा,-इ, वि०-ई (डिगरी, हुकुम); अर०।

इजलास सं० स्त्री० कचहरी,-करब,-देखब,-होब,-लागब, वै० गिलास, वि०-सी,-लसिहा (इजलास जाने का आदी), अर० इजलास (बैठक), कच०।

इजहार सं० पुं० (कचहरी में दिया) बयान,-देब,-लेब,-होब-कराइब,-पातीं, मुकदमे की पूरी कार्रवाई, कच०, अर०-ज़-।

इजाजति सं० स्त्री० आज्ञा,-देव,-पाइव,-मिलव कच०, अर०-ज़त।

इजाफति सं० स्त्री० दावत,-करव, दावति,-आव-भगत, वै० जा-, अर० जियाफत।

इजाफा सं० पुं० वृद्धि (विशेषत: लगान की) -करव, लगान या किराये की वृद्धि का दावा करना,-होव दे० जा-, अर० इजाफ़: कच०।

इजारबन्द सं० पुं० पाजामा बाँधने का नाड़ा। फा० इज़ार (पाजामा)+बंद।

इजारा स० पुं० ठेका,-लेव,-होव; अर० इजार:।

इज्जति सं०स्त्री० आवरू, प्रतिष्ठा,-करव,-देव,-लेव, अपनी आवरू देना, दूसरे की ले लेना या वेइज्जती करना, वि०-दार, प्रतिष्ठावान्,-हा,-ती, इज्जत संवंधी,-वाहा, मानहानि (का मुकदमा या दावा). कच०। अर०

इटकोह सं० पुं० ईंट का टुकड़ा,-मारव,-फेंकव वै०-हा, ईं-।

इटारि सं० पुं० पांडेय लोगों का प्रसिद्ध स्थान, पाँड़े, इस स्थान के पांडेय; वै० इँ।

इतला सं० स्त्री० सूचना -देव,-करव,-आइव,-लाइव,-होव, वै०-ई,-त्त-,-त्ति-, अर० इत्तलाअ, (कच०)।

इतवार सं० पुं० विश्वास करव,-होव; वि०-री, विश्वास करने योग्य, अर० एतवार।

इतवार दे० यतवार स० आदित्य।

इनकार सं० पुं० 'न' करना, अस्वीकार;-करव, क्रि०-व, नकारव वि०-री (गवाह), जो (मुकदमे की वात को) इनकार करे, कच० अर०।

इनरी स० स्त्री० नई व्याई गाय या भैंस के दूध को जमाकर बनाई हुई दही की सी मिठाई जो मित्रो एवं पडोसियों को वाँटी जाती है इसमें छूत मानकर इसे वडे-बूढे प्राय: नहीं खाते। यह कई दिन तक वनती रहती है जब तक दूध साफ और पतला नहीं हो जाता, वै० इँदरी,-खी, ई-,फै०-ड़ी, सी० अँड़री प्र० पेवसी।

इनसान सं० पु० कृतज्ञता -मानव,-करव; अर० इहसान, उपकार।

इनसाफ सं० पुं० न्याय;-करव,-होव,-चाहव, वि०-फी,-न्याय युक्त, न्यायवाली (वात) अर०इंसाफ।

इनाइति सं० स्त्री० कृपा,-करव,-होव, वै०-त, अर० इनायत।

इनाम सं० पुं० पारितोषक -देव,-पाइव,-लेव,-मी कान, पुरस्कार पानेवाला कान, अर० इनआम।

इनार सं० पुं० कुआँ, स्त्री-री,-नरिया, वै०-रा; कुआँ-धरव, कुआँ-ताकव,-लेव, डूबकर मर जाना।

इफराति सं० स्त्री० अधिकता, वै० अ- वि० अधिक वै० अफरादाँ (व्यय के लिए), व्यर्थ,-खर्च करव।

इम्तिहान सं० पुं० परीक्षा,-देव,-लेव,-होव; अर० इम्तहान। वै०-न्ति-

इमला सं० पुं० दूसरे को वोलकर लिखाने की क्रिया,-लिखव,-देव,-वोलव, अर० इम्ल:।

इमान सं० पुं० ईमान,-लेव,-देव, वि०-दार,-रि, भा०-दारी, अर० ई—

इमिरती सं० स्त्री० एक मिठाई, वै० अमिरती, सं० अमृत, दे० अमिर्ती, अमिर्त।

इरखहा वि० पुं० ईर्ष्यालु, स्त्री०-ही सं० ईर्षा।

इरखा सं० स्त्री० ईर्षा,-दोख, ईर्षा-द्वेष,-मानव,-करव क्रि०-व, ईर्षा करना, वि०-खहा,-ही, क्रि० वि०-दोखें, ईर्षा द्वेष के कारण, सं०।

इरादा सं० पुं० निश्चय, इच्छा,-करव -होव अर०-द:।

इलइची दे० इलायची।

इलजाम सं० पुं० अपराध,-लागव,-लगाइव, मनई के सिरें,-उप्पर-लागव, अर०-ज़ाम।

इलटि सं० स्त्री० मैली चीज, गू,-खाव, गू खाना (एक प्रकार की सौगंध, उ०-खाव जौं ई वाति फिरि करौं; यदि ऐसा फिर करो तो गू खाओ), शा० अर० इल्लत (रोग) से। प्र० ई-, ल्ल-।

इलमारी सं० स्त्री० आलमारी, दे० अ-, पुं०-रा, वडा अलमारा।?

इलहिदा वि० पुं० अलग -करव,-होव,-रहव,-खाव; प्र० ला-,-दें, वै-दाँ, अ-, स्त्री०-दी, अर० अलाहिद:।

इलाका सं० पुं० क्षेत्र, अधिकृत क्षेत्र, जागीर,-केदार, जागीरदार, वड़ा जमींदार,-पाइव,-खरीदव। लेव, अर०।

इलाजि सं० स्त्री० औषधि, दवा -करव,-होव,-देव,-कराइव,-वारी, दवादारू,-वारी,-करव,-होव .. वि० लजिहा,-ही, इलाज। अर० इलाज

इलावा अव्य० अतिरिक्त, वै० अ-वाँ; अर० अलाव:।

इल्लति सं० स्त्री० वुराई, अवगुण, आफत;-म परव, परेशानी में पड जाना, वि०-हा, अर०-त (वीमारी)

इल्लिम सं० पुं० इल्म, ज्ञान, विद्या,-हुनर, तरकीव, कुलि-,सभी तरकीवें, कउनिउ-से, किसी भी तरह वि०-दार, विद्वान्, जाननेवाला, अर० इल्म।

इसकूल सं० पुं० मदरसा, स्कूल, वि०-ली,-कुलिहा, स्कूलवाला, अं०।

इसटाप सं० पुं० दल, दल-वल, दफ्तर के लोग अं० स्टाफ।

इसटांप सं० पुं० कचहरी में लगाने का टिकट या टिकटदार कागज -लिखव अं० स्टांप।

इसपात सं० पुं० फौलाद, वि०-ती, फौलाद का वनाया हुआ।

इसवगोल सं० पुं० एक दवा; इसके बीज पेट के लिए गुणकारी होते हैं, वै०-प-,फा० अस्पगोल।

इसाई सं० पुं० ईसाई, स्त्री०-इन,-नि० प्र० ई-।

इस्क सं० पुं० अनुचित प्रेम, शौक,-वाज़ी, परस्त्री-गमन,-वाज़, ईश्क प्रेमी, वै०-स्कि। अर०-श्क

इस्टि सं० स्त्री० सिद्धि,-होब,-करब, किसी देवता का प्रसन्न होना या करना, सं० इष्टि ।
इस्तगासा सं० पुं० दावा, कचहरी में किया गया दावा, फौजदारी मुकदमा,-करव,-देब,-दायर करब, अर० इस्तगासः । कच०
इस्तालक सं० पुं० उत्साह, प्रोत्साहन, जोश, बढ़ावा;-देब,-पाइब, उकसाना, उत्तेजित होना; अर० इस्तआल (भड़काना) ।
इस्तिरी सं० स्त्री० कपड़े की कलप; कलप करने की मशीन;-करब,-कराइब ।
इस्तिहार सं० पुं० विज्ञापन, इश्तहार;-देब,-करब, -कराइब,-छपाइब; अर० इश्तहार ।
इस्तीफा सं० पुं० त्यागपत्र, किसान का अपने खेत से त्याग-पत्र;-देब,-लेब; वै०-स्थापा,-हतीपा,-स्थीपा,-स्ते-.-पा, अर० इस्तीफ़: (क्षमा माँगना) ।
इहाँ क्रि० वि० यहाँ; प्र०-है,-हीं; वै०-हवाँ, प्र०-हवैं, -वाँ, ई-,सं० इह ।
इहै वि० यही, वै-०-हवै, प्र० ई-।
इहो वि० यह भी; वै०-हौ -हवो, ई-, सं० इयं।
इहौं क्रि० वि०यहाँ भी वै०-हवौं, सं०इह ।

ई

ईखि सं० स्त्री० ईख, गन्ना; वै० ऊखि, उखुड़ि,—डी (दे०) सं० इक्षु ।
ईङुर सं० पुं० सेंदुर की तरह का एक रंग, जिसे स्त्रियाँ लगाती हैं, वै० ईंगुर ।
ईन्हन सं० पुं० ईंधन; स० इन्धन;
ईमान सं० पुं० दे०इमान,-दार,-दारी, अर० ।
ईरघाट-बीरघाट, क्रि० वि० इधर-उधर, उ० केउ-केउ-, कोई यहाँ कोई वहाँ, अर्थात् सब तितर-बितर, अव्यवस्थित ।
ईलटि सं० स्त्री० दे० इलटि
ईसर सं० पुं० भगवान्, परमेश्वर, सं० ईश्वर, देवस्थानी एकादशी (कार्तिक) के दिन स्त्रियाँ रात को सूप को गन्ने के डंडे से पीटती हुई कहती हैं—"ईसर आवैं दलिद्दर जायँ।" अर्थात् दरिद्र (घर में से) भागे और भगवान् (घर में) आवें;-कैगति, भगवान् की लीला; वि०-री, ईसरी माया ।
ईसाई दे० इसाई ।
ईसान वि० उत्तर-पूर्व (का कोण) जिसे मूठीक (दे० मूठि) कोन (दे० कोन) कहते हैं ।
ईहैं क्रि० वि० यहीं; इहैं का प्र० रूप
ईहै, वि० यही, इहै का प्र० रूप
ईहौं क्रि० वि० यहाँ भी, इहौं का प्र० रूप
ईहो वि० यह भी, इहो का प्र० रूप

उ

उँचवाइब क्रि० स० ऊँचा करना; उँचाब (दे०) का प्रे०, रूप, वै०-उव, सं० खच्च ।
उँचाई सं० स्त्री० दे० ऊँच ।
उचाब क्रि० अ० ऊँचा हो जाना, प्रे०-चवाइव,-उव, "ऊँच" से क्रि०, वै०-चिआव,-इब ।
उँचास वि० थोड़ा ऊँचा,-सें, ऊँची भूमि पर, 'आस' प्रत्यय और विशेषणों में भी लगता है, जैसे खटास, मिठास आदि, सं० ।
उँचाह वि० कुछ ऊँचा, सं० उच्च ।
उँचिआइब क्रि० स० ऊँचा कर देना, 'उँचाव' का प्रे० रूप, वै०-चवाइव,-उव ।
उँचिआव क्रि० अ० ऊँचा हो जाना; 'उँचाव' का वै० रूप, उ० येकर पेट उँचिआय गय, इसका पेट (भरकर) ऊँचा हो गया ।
उँजेर सं० पुं० उजेला; प्रकाश, होव. सवेरा होना, सं० उज्ज्वल ।
उँटहा सं० पुं० ऊँटवाला, ऊँट+हा जैसे मोटहा (दे० मोट) ।
उँटाब क्रि० अ० ऊँटनी का गर्भिणी होना । प्रे०-टवाइब ।
उँटिनी सं० स्त्री०, माँदा ऊँट, वै०-टनी; सं० उष्ट्र ।
उँडेलब क्रि० स० उँडेलना, सं० उद्वेल, प्रे०-डेलवाइव,-उब,-वै०-रब,-अँडोरव ।
उ वि० सर्व० वह, ग० सुँ, सं० सः ।
उअब क्रि० अ० (तारो, चंद्र तथा सूर्य का) निकलना, मु० मन में आना; जा० "नजवौं आजु कहाँ दहुँ उआ" (सिंहलद्वीप खंड १) उ० आजु कहाँ उआ कि तू आयो, आज यह कैसे हुआ कि तुम इधर आ गये ? प्रकाशित होना, ग्रामगीत की एक सुंदर पंक्ति है-धना मोरी उई अहैं जैसे जुन्हैया, अर्थात् मेरी सखी चाँदनी, की भाँति प्रकाशित हो रही है । वै० उवब, प्र० रू-।

उआइव क्रि० स० उठाना (तलवार, डंडे आदि का), उठव का प्रे० रूप जिसमें 'ठ' का 'अ' हो गया है; वै०-वा-।

उआरव क्रि० स० मनौती अथवा पूजा के लिए अलग निकालकर रखना (रुपये पैसे आदि), प्राय बीमारी आदि की दशा में ऐसा किया जाता है, जिसमें 'उआरी' वस्तु को हाथ में लेकर बीमार के ऊपर से घुमा देते हैं प्र० वारना (वारी जाऊँ), दे० वलि, वलि-वलि, वै०-वा-

उआरा न्योछा वि० किसी देवता अथवा ब्राह्मण को देने के लिए रखा हुआ; उआरा + न्योछा (दे० न्योछव), न्योछावरि अथवा नेवछावरि भी इसी 'न्योछव' से बनते हैं।

उइ सर्व० वि० वह (पुं० स्त्री०) लखी०-ठावँ, उसी जगह, जौ० वइ, प्र०-ई,-हैं (फ़ै० व०)।

उकठव क्रि० अ० सूख जाना (पेड़ का); वै०-कुठव; सं० 'काष्ठ (लकड़ी हो जाना)।

उकवति सं०स्त्री० दाद की तरह का एक रोग जिसमें से पंछा (दे०) निकलता रहता है, वै० उँ,-कौत।

उकसव क्रि० अ० (रस्सी का खाट आदि में से) निकल जाना, सं० केश (बँधे हुए बालों की तरह खुल जाना), प्रे० उकेसव; कसव (दे०) से भी संबंध हो सकता है।

उकाई सं० स्त्री० कै करने की इच्छा,-आइव, वै० व-, वकलाई।

उकील सं० पुं० वकील; भा०-ली, वकालत; करव, वकील या वकालत करना, अर० वकील।

उकुर सं० पुं० हक; अवसर विशेष पर जो कुछ किसी को मिले, जैसे संबंधियों, नौकरों आदि को,-लेव,-मारव;-भर पाइव।

उकुरूँ क्रि० वि० चूतड़ों को भूमि से बिना छुआये केवल पैरों पर (बैठना); वै०-क,-सी० रुवा

उकेलव क्रि० स० छिलका उतारना, वै० निकोलव, ग्रा० 'केला' से (केले की भाँति छिलका उतार देना) उ + केल, जैसे उ + केस (दे० उकेसव), प्रे०-वाइव,-उव।

उकेसव क्रि० स० खोल डालना (खाट आदि की रस्सी), प्रे० सवाइव; सी०-कासव, सं०'केश' से; दे० उकसव, ग्रा० सं० 'कर्ष' (खींचना) का उलटा?

उखमज सं० पुं० दुष्ट, भा०-ई; सं० उष्मज, जो अकस्मात् आ जाय।

उखरहर वि० पुं० उखाड़ देनेवाला (कथन),-बोलव, ऐसा बोलना जिससे बना काम बिगड़े, स्त्री०-रि, वै०-ड-।

उखर-बँट सं०पुं० व्यक्ति जिसके संबंध में कुछ ज्ञात न हो, जिसका ठिकाना न हो, दे० बँट।

उखारव क्रि० स० उखाड़ना;-सँपारव, बिगाड़ने की कोशिश करना, धमकी के रूप में यह बोला जाता है, उ० उखारि सँपारि लिह्यो, जो कुछ करना होगा कर लेना।

उखाव सं० पुं० जो खेत ईख की खेती के लिए रखा गया हो; दे० ऊखि; सं० इक्षु।

उखुड़ि सं० स्त्री० ईख, वै०-डी; सं० इक्षु।

उखुनुक सं० पुं० झगड़ा करने का थोड़ा सा बहाना, साधारण झगड़े का कारण,-काढ़व,-मिलव,-पाइव; वै० उस-।

उगहनी सं० स्त्री० चंदा करने की क्रिया;-करव, लगाइव, चंदा एकत्र करना। सं० गृह, लेना। वै०-गाही।

उगहव क्रि० स० कई लोगों से माँगकर एकत्र करना; चंदा करना; सं० गृह; प्रे०-हाइव,-हवाइव,-उव।

उगालदान सं० पुं० वह बर्तन जिसमें थूका या कुल्ला किया जाता है; दे० उगिलव।

उघरव क्रि० अ० खुल जाना, प्रे०-घारव,-घरवाइव; तु० उघरे अंत न होइ निबाहू।

उघरवाइव क्रि० स० खुलवाना।

उघार वि० पुं० खुला; स्त्री०-रि,-मु०-होव, खुल जाना, दिल की या असली बात कहना। ग० उघड्यूँ

उघारे क्रि० वि० नंगे ही (पैर, सिर या सारे शरीर से), बिना कपड़े पहने, उघारे मूँड़, नंगे सिर;-गोड़ें, नंगे पैर।

उचकव क्रि० अ० कूदना, उछलना, चौकन्ना हो जाना; प्रे०-काइव,-उव, सं० उत् + चक्र (चक्र अथवा सीमा के बाहर)।

उचकहर वि० पुं० उचक जानेवाला, जो शीघ्र बात न माने; स्त्री०-रि।

उचकुन सं० पुं० वह वस्तु जो किसी दूसरी को ऊँची करने के लिए नीचे रखी जाय;-देव,-लगाइव, स्त्री०-नी; वै०-ना;-चु-; ऊँच + फ़ा० कुन (करो), सी०-करका।

उचक्का वि० पुं० जिसका पता-ठिकाना न हो; स्त्री० क्की; सं० उत् + चक्र।

उचटव क्रि० अ० न लगना, उचट जाना (मन, हृदय, जी), प्रे०- टाइव,-टव-चाटव, सं० उच्चाट।

उचरव क्रि० अ० (चिपकी हुई वस्तु का) अलग हो जाना, प्रे०-चारव,-चरवाइव,-उव।

उचाट सं० पुं० स्थिति जिसमें मन न लगे; किसी बात में जी न लगना;-होव,-करव,-लागव, सं० उच्चाटन, ग० उच्चाट।

उचारव क्रि० स० उच्चारण करना; (चिपकी हुई वस्तु को) उधेड़ लेना (कागज, पट्टी आदि); प्रे०-चरवाइव,-उव, वै० उचेरव सं० उच्चर (उत् + चर)।

उचुकुन सं० पुं० दे० उचकुन।

उचेरव क्रि० स० उधेड़ लेना (वि० चमड़ा), चास-, बहुत मारना, सी०-ध्यालव।

उछरव क्रि० अ० निशान पड़ना, दिखाई देना; बुरा दिखना (रंग आदि का), दर्द, घबराहट आदि से कूदना,-पटकव, छटपटाना, प्रे०-छारव।

उछार सं० पुं० वमन;-होव,-करब, कै होना, करना।

उछाह सं० पुं० उत्साह; वि०-हिल, उत्साहपूर्ण; सं०

उछिहिर वि० मुक्त, ऋणमुक्त,-होब,-करब, युक्त होना; करना, स० उच्छिद्र (छिद्रहीन); ऋण एक छिद्र माना गया है।

उछिन्न वि० नष्ट,-करब,-होब, नष्ट करना, होना; सं० उच्छिन्न (कटा हुआ); के जाव, नष्ट हो जाओ (शाप)।

उजड्ड वि० अशिष्ट, उद्दण्ड, भा०-ई, उद्दण्डता;-पन सं० उद्दण्ड,ग० उज्जड़।

उजबक वि० अशिक्षित, गँवार, भा०-ई,-करब, गँवरपन करना, ग० उजबक।

उजरउटी सं० स्त्री० सफेदी (चाँदी, वर्षा आदि की),-होव, सफेद ही सफेद हो जाना;-करब, (पक्के मकान, सफेद कपड़े अथवा रुपयों से) सफेदी ला देना, सं० उज्ज्वल।

उजरति सं० स्त्री० मजदूरी, फीस (लिखने आदि की) फा०।

उजरव क्रि० अ० उजड़ जाना, नष्ट होना; गाँव से चला जाना, भागना, प्रे०-जारव,-जरवाइव,-उब।

उजराव क्रि० अ० गोरा होना, सफेद हो जाना।

उजवास सं० पुं० प्रबंध;-करब;-होब; क्रि०-सब।

उजहब क्रि० अ० लुप्त हो जाना; जा० "उजहि चली जनु भा पछिताऊ" (पद्० ४८४),।

उजागर वि० पुं० प्रसिद्ध; प्रकाशित; स्त्री०-रि; वै०-गिर;-करब,-होब, नाँव-होब, करब, नाम प्रसिद्ध करना, होना, उ+सं० जाग्रत।

उजार वि० पुं० उजड़ा हुआ, वीरान, क्रि० ब;-लागब, सूना लगना, गीत-"हमै लागत उजारी हम न अवध माँ रहबै।"

उजारव क्रि० स० उजाड़ देना, प्रे०-रवाइब,-उब।

उजिआर स० पुं० उजाला, प्रकाश;-करब, प्रकाशित करना, मुँह-होब, करब, पुराना अपयश मिट जाना या मिटाना। सं० उज्ज्वल, वि० के रूप में भी प्रयुक्त। वै०-यार, भा०-री, ग० उज्यालु।

उजीर सं० पुं० मंत्री; शतरंज का फ़र्जी, फा० वज़ीर; भा०-जिरई;-री।

उजुर सं० पुं० आपत्ति, प्रार्थना;-करब; अर० उज्र;-दारी, (कचहरी में की हुई) आपत्ति (अपने विपक्षी के विरुद्ध),-माजरा, कहना सुनना, प्रार्थी का विवरण;-दार, आपत्ति उठानेवाला विपक्षी।

उझकब क्रि० अ० बड़बड़ाना, जोश में आकर निरर्थक बातें कहना, 'झक' से संबद्ध।

उझिलब क्रि० स० किसी बर्तन में से निकालकर बाहर डालना, प्रे०-लवाइब,-उब।

उझिला सं० पुं० उबटन का सुगंधित सामान जिसमें तिल, सरसों, नागरमोथा आदि पड़ता है।

उठक-बैठक सं० पुं० उठने-बैठने की क्रिया, ग० उठक-बैठक, वै० बइठक।

उठनि सं० स्त्री० रिवाज, वै०-ठानि, अर्थात् उठने अथवा प्रचलित होने की क्रिया, प्रचलन, प्रचार।

उठब क्रि० अ० उठना, खड़ा होना (लिंग का), तैयार होना (मकान का), दुखना (आँख का), भैंस वा गाय का भैंसाने या बरदाने के लिए उत्सुक होना, चौके पर जाकर भोजन करना, सोकर जगना, प्रे०-ठाइब,-ठवाइब,-उब, सं० उत्तिष्ठ,-बैठब, उठना-बैठना, उठक-बैठक, आना-जाना, मिलना जुलना,-करब, उठने बैठने की कसरत करना।

उठवाई सं० स्त्री० उठाने की क्रिया, उठाने की मज़दूरी, उठने की रीति।

उठाइब क्रि० स० उठने में मदद करना, भोजन के लिए ले जाना, तैयार कराना (इमारत), ले लेना (दूसरे की वस्तु), प्रे०-ठवाइब। सं० उत्थापय, वै०-उब।

उठाईगीर सं० पुं० जो दूसरे की वस्तु लेकर चल दें, उठाई (उठाकर) गीर (फा० गीरद, लेना) ले जानेवाला, जैसे राहगीर आदि।

उठाट सं० पुं० उजाड़ने का कम, करब;-होब, उजाड़ देना, उजड़ जाना (व्यक्ति का)।

उठैआ सं० स्त्री० सौरी (दे०) की शुद्धि जो बच्चा पैदा होने के कई दिन बाद तक कई बार होती है। इसमें चमारिन और धोबिन सौर के वस्त्रादि "उठाकर" ले जाती हैं, इसी से इसको 'उठैआ' कहते हैं। वै० उठइआ,-या;-होब,-परब,-डाँड होब, व्यर्थ जन्म होना [जिसके जन्म पर 'उठैआ' में जो कुछ व्यय हुआ हो वह भी माता पिता पर दंड (डाँड़) स्वरूप हो]।

उठौआ सं० पुं० उठाया हुआ (भोजन), उठने की बारी (भोजनादि के लिए), जो भोजन चौके में से बाहर उठा लाया गया हो अर्थात् छुआ हो, वै० परसौआ (दे०)-खाब, ऐसा भोजन करना, वै० उ०-वा।

उड़नखटोला सं० पुं० उड़नेवाला खटोला (दे०), बच्चों की कहानियों में प्रायः वर्णित खटोला, जो हवा में उड़ता है।

उड़नछू वि० जो छूते ही उड़ जाय, जो देखते ही देखते गायब हो जाय।

उड़ब क्रि० अ० उड़ना, ऐसी बात कहना जो धोखा देनेवाली हो, इधर-उधर की उड़ाना समाप्त हो जाना (धन आदि का), जल्दी से चल देना, प्रे०-ड़ाइब,-उब,-वाइब,-पड़ब, खूब खर्च होना, सं० उड्डीय।

उड़ाइब क्रि० स० उड़ाना, व्यय करना, चुरा लेना,-पड़ाइब, उदारतापूर्वक व्यय करना, शीघ्र रवाना कर देना, प्रे०-ड़वाइब।

उड़ासब क्रि० स० (खाट को) खड़ी कर देना, बिस्तर हटा देना, प्रे०-ड़सवाइब, 'डासब' (दे०) का उलटा।

उड़ाही सं० स्त्री० वह चोरी जो छप्पर को एक ओर से उठाकर की गई हो,-देब,-मारब, 'उठाइब' से अर्थात् उठाकर चोरी करना।

उड़ुस सं० पुं० खटमल, वि०-हा,-ही, जिसमें खटमल हों।

उढ़रबक्रि० अ० भाग जाना (स्त्री का), फुर्ती, प्रे० -ढारब,भगाना, उढरी, भगी हुई; उढारी, भगाई हुई, उढ़री-उढ़रा, भगे हुए स्त्री-पुरुष (एक साथ)।

उतइली सं० स्त्री० शीघ्रता,-करब,-परब, वै०-हि-, ते-, वि०-लिहा, जल्दबाज़।

उतपात सं० पुं० दूसरों को दुःख देना व्यर्थ का कष्ट -करब,-मचाइब,-होब, सं० उत्पात, वै० प्र०-तापात।

उतरब क्रि० अ० नीचे आना, स० पार करना घाट-, वै०-तारब,-तरवाइब,-उब सं० उत्तर।

उतरब क्रि० अ० उतरना प्रे०-तारब,-तरवाइब, कहा० जेकरी छाती नाहीं बार, तेकरे साथ न उतरी पार, अर्थात् जिस पुरुष की छाती में बाल न हों वह बहुत अविश्वसनीय होता है।

उतराई सं० स्त्री० (नदी में) उतार देने की मजदूरी, वै० उतरौना,-नी; तु० "नहिं नाथ उतराई चहौं"।

उतान वि० पुं० छाती ऊपर किये हुए; जो ऐसा हो, स्त्री०-नि, क्रि० वि० छाती तानकर।

उतार सं० पुं० (नदी में से) उतर सकने की स्थिति; पानी कम होना,-होब, चढ़ा-, गावदुम, क्रि०-ब, इज्जति उतारब, पानी उतारब, अपमान करना।

उतारा सं० पुं० समता,-देब, समता देना, बराबरी की बात कहना, उदाहरण देना।

उतीरा सं० पुं० तरीका, वै० वतीरा (दे०), फा०।

उथल वि० पुं० जहाँ कम पानी हो(नदी आदि में), क्रि० वि०-लें,सं० स्थल,-पुथल, ऊपर से नीचे तक परिवर्तन,-होब,-करब।

उदंत वि० पुं० जिस (पशु) के दाँत पूरे न निकले हो, कम अवस्था का, स्त्री०-ति, उ+सं० दंत, दे० दाँतब, प्र०-न्तै, यू० ओडंट (दाँत) सी०-दत

उद्वस सं० पुं० सुख से बैठे रहने में विघ्न,-करब, विघ्न डालना, छेड़ना, सं० उत्+वस (रहना)=न रहने देना [उप+विश=बैठना]।

उदम सं० पुं० परिश्रम, काम,-करब, वै०-दि्दम,-दूदम, ऊदम, वि० मी, सं० उद्यम।

उदय सं० पुं० प्रारंभ, निकलना (सूर्य, चंद्र आदि का),-होब, सं०, वै०-दै, भाग्य चमकना। उदयातिथि, वह तिथि जो सूर्योदय के समय लगी हो।

उदहब क्रि० स० हाथ से पानी निकाल देना (तालाब नाँद आदि से), दे० दहाइब, दह सं० उत्+ह्रद। मु० अपनै-,दूसरे की बात न सुनना।

उतराई सं० स्त्री० उतारने का कर; दे० उतरौना, तुल० "नहिं नाथ उतराई चहौं" (रामा०२।१००); सं० उत्+तर।

उताइल सं० पुं० शीघ्रता; वि०-हिल; वै० उतइली; जा० 'पवन चाहि मन बहुत उताइल" (अख० १२); दे० उतइली।

उतिराब क्रि० अ० (पानी के) ऊपर आना; जा० "सुन्नम सुन्नम सब उतिराई, सुन्नहि महँ सब रहै समाई" (अख० ३०); सी०-तराब सं० उत्तर।

उदगरब क्रि० अ० जोश में आना, सीमा के बाहर आ जाना, प्रे०-गारब।

उदास वि० पुं० प्रसन्नताहीन, भा०-सी, स्त्री०-सि। उ+दशा, अच्छी दशा न होना अथवा उत्+आशा, निराशा की अवस्था?

उदासी सं० पुं० एक प्रकार के साधु जिनका अखाड़ा अयोध्या में है।

उदित वि० खिला हुआ, प्रसन्न;-होब,-चेहरा; सं० मुदित अथवा उदित (नक्षत्र की भाँति निकला तथा चमकता हुआ); तुल० "उदित अगस्त पंथ जल सोखा"।

उधथ वि० पुं० जिसका रंग फीका पड़ गया हो,-होब,-परब, (रंग) हलका या फीका हो जाना। स्त्री०-थि।

उधम सं० पुं० शरारत, गड़बड़,-करब,-मचाइब,-मचब, वि०-मी, वै० ऊ-;-ढकेल, उधुम-ढकेल, बहुत काम करनेवाला, रात दिन काम में लगा रहनेवाला।

उधरहा वि० पुं० उधारवाला, स्त्री०-ही, हथ-उधरा ऐसा उधार जिसका उल्लेख लिखा पढ़ी में न हो, लिखित ऋण, हाथ का लिया हुआ उधार।

उधार सं० पुं० कुछ समय के लिए दूसरे से माँगी हुई वस्तु, क्रि० वि०-रें, माँगकर, नकद दाम न देकर-देब,-लेब,-काढ़ब,-माँगब,-करब, सं० उ+धृ (लेना),-वाढ़ी, हथ-उधरा, हाथ से दिया हुआ, जिसकी लिखा-पढ़ी न हो।

उधिराब क्रि० अ० छेड़-छाड़ करना, दूसरों को तंग करके स्वयं दुःख उठाना, अपनी शामत लाना।

उधुआँ वि० व्यर्थ;-जाब, होब,-करब; शा० धुएँ की भाँति गायब होना, या किसी काम न आना=उ+धुआँ?

उनइब क्रि० अ० नीचे झुकना (डाल अथवा बादल का), घटा उनइब, बारिश होने की संभावना होना, प्रायः कविता में प्रयुक्त, वै० व—

उनइस वि० उन्नीस, कुछ घटकर या कम,-बीस, थोड़ा अंतर, वै० व-;सं० एकोनविंश।

उनरब क्रि० अ० (फल, कच्चे अनाज आदि का) बढ़कर मोटा होना और पकना, दे० उलरब।

उपचार सं० पुं० दवा उपाय,-करब, सं०।

उपछब क्रि० स० पटक-पटककर साफ करना, मु० मसलना, पटककर मारना, प्रे०-छाइब,-उब,-छवाइब,-उब, वै०-पि-,-पु-; दे० फीचब।

उपजब क्रि० अ० पैदा होना (अनाज, बुद्धि, धन आदि), प्रे०-पजाइब,-उब,-जवाइब, सं० उत्पाद्।

उपधिआ सं० पुं० ब्राह्मणों की एक उपजाति, स्त्री०-धाइन,-नि, वै०-या, सं० उपाध्याय, घ०-भवा, हा०-यऊ।

उपर-फट्ट वि० व्यर्थ का, आवश्यकता से अधिक, अनिमंत्रित आया हुआ (व्यक्ति), उपर (ऊपर से) फट्ट (फटकर) आया हुआ।

उपराब क्रि० अ० ऊपर आना उल० तराब, (दे०) प्रे०-राइब,-उब; जा० "सुर्ज्हि सात सरग उपराहीं, सुर्ज्हि सातौ धरति तराहीं" (अख० २०) सं० उपरि, अं० अप, अपर ।

उपराजब क्रि० स० उत्पन्न करना, जा० "प्रथम जोति-विधि तेहि कै साजी, ओरेहि प्रीति सिष्टि उपराजी" (पद्०११); सं० उपार्ज (उप + अर्ज) ।

उपरी सं० स्त्री० गोबर की बनी सुखाई हुई मोटी-मोटी खपटियाँ जो जलाने के काम आती हैं। -पाथब, ऐसी-बनाना, सं० उपल ।

उपल्ला सं० पु० कपड़े का वह भाग जो ऊपर हो या जिसे ऊपर होना चाहिए, इसका उलटा "तरल्ला" (दे०) है ।

उपसहा वि० पुं० न खाया हुआ, व्रत रखनेवाला; स्त्री०-ही, सं० उपवास ।

उपाय सं० पुं० तरकीब,-करब,-होब, वै०-व, सं० ।

उपारब क्रि० स० उखाड़ना (बाल, घास आदि), प्रे०-रवाइब,-उब, हमार काव उपारि लेहैं ? मेरा क्या कर सकेंगे ? सं० उत्पाट ।

उपास सं० पुं० व्रत, भोजन न करने का दिन; वि० उपसहा,-ही, सं० उपवास ।

उप्पर क्रि० वि० ऊपर, प्र० उपरैं,-रौ, सं० उपरि ।

उफनब क्रि० अ० उबाल खाना;. उबलकर बर्तन के बाहर गिरने लगना ।

उफरब क्रि० अ० अकस्मात् मर जाना; नष्ट हो जाना; उफरि परब (मनुष्य या जानवर का) झटपट मर जाना, सं० उत्+फर (किसी फल की भाँति) टूटकर गिर जाना। शाप के रूप में प्रयुक्त, तूँ उ-फरि परौ, तू मर जा ।

उबकन सं० पुं० बर्तन में बँधी रस्सी जिससे उसे टाँगा या उठाया जाय; वै०-का,-कनी,-बान्हब, -लगाइब।

उबरन सं० पुं० बचा हुआ अंश, वै० उबारन, बचाया हुआ भाग ।

उबरब क्रि० अ० बचना, शेष रहना, जीवित रह जाना (बीमारी अथवा युद्ध आदि के बाद), प्रे० -बारब,-राइब,-उब ।

उबहनि सं० स्त्री० मोटी रस्सी जिसमें बाँधकर बड़े बर्तनो से पानी खींचा जाता है, सं० उत्+ वह् (ले जाना) ।

उबांत स० पुं० वमन,-करब,-होब,-कराइब ।

उबारन सं० पुं० बचाया हुआ भाग ।

उबारब क्रि० स० बचाना, रक्षा करना, 'उबरब' का प्रे०रूप, प्रे०-बरवाइब ।

उबारा सं० पुं० बचत;-होब;-करब ।

उबिआब क्रि० अ० घबराना (व्यक्ति का), न लगना (मन, जिउ), ऊबना (दे० ऊबब) प्रे०-आइब,-उब,-वाइब; वै०-याब, शा० 'ओवा' (दे०) से संबद्ध (जैसे ओवा की बीमारी में मनुष्य घब-राता है) ।

उभरब क्रि० अ० उठना; भरकर ऊपर आना (फोडा आदि); हिम्मत करना, जोश में आना; चलना (बात, चर्चा), प्रे०-भारब,-भरवाइब; दे० भरब । सं० उत्+भृ ।

उमकब क्रि० अ० जोश मे आकर कुछ कहना; व्यर्थ की बात करना; प्रे०-काइब,-उब ।

उमचब क्रि० अ० उछलना, कूदना; ऊँची-ऊँची बातें करना, बहकना; प्रे०-चाइब,-उब ।

उमड़ब क्रि० अ० (तालाब, नदी आदि का) भर-कर ऊपर से बहना; (हृदय का) भर आना (प्रेम, सहानुभूति आदि से); प्रे०-डाइब,उ+मेड (मेड से बाहर होना); दे० मेड़, मेड़ी ।

उमथब क्रि० स० मथकर बाहर निकालना (पानी आदि); अ० (जिउ) मचलाना (जिउ बहुत उमथत बाय, कै करने की इच्छा हो रही है); सं० उत्+मंथ; प्रे०-थाइब,-उब ।

उमदा वि० पुं० बहुत अच्छा, बढ़िया, स्त्री०-दी; अर० उम्दः ।

उमस सं०पुं० बिना हवा की गर्मी,-होब, ऐसी गर्मी होना,-करब (चारि रोज से बहुत-किहे बाय, चार दिन से (मौसम या भगवान् ने) बड़ा उमस कर रखा है । सं० उष्म, पं० उबस; ग० उम्यस ।

उमहब क्रि० स० बार-बार मथना, दुहराना; अपनी ही बात कहते रहना, सं० उन्मंथ, 'थ' का 'ह' में परिवर्तन । "एकहि को उमहै गहै" (रहीम), बूड़ै बहै उमहै जहँ बाल (बेनी) ।

उमिरि सं० स्त्री० अवस्था; जीवन,-बीतब,-गहत (फ़ा० गश्त) होब, जीवन भर कट जाना;-गहता, बुड्ढा, क०-या; अर० उम्र, ग० उम्मर ।

उमेठब क्रि० स० पकड़कर ऐंठना; मल देना किसी अंग को), क० नैन करैं तकसीर पै उरज उमेठे जायँ; प्रे०-ठवाइब,-उब ।

उमेद सं० पुं०आशा,-करब,-होब,-पाय जाब (पाया जाना), फ़ा० उम्मीद, ग० उमेद ।

उरगह सं० पुं० मुक्ति (सूर्य अथवा चंद्रमा की),-होब, ग्रहण से मुक्ति होना, ग्रहण समाप्त होना; उ+ग्रह का विपर्यय ।

उरझब क्रि० अ० उलझना; फँस जाना (व्यक्ति, बात, खेल, मामला), वै०-ल-,प्रे०-झाइब,-उब; उ+सं० ऋजु (सीधे से उलटा कर देना) ।

उरठ वि० पुं० सूखा, नीरस;-लागब, अच्छा न लगना (आजु बहुत-लागत है, आज बहुत बुरा लग रहा है); उ+सं० रस (स का ठ में परिवर्तन) ।

उरिन वि० ऋण-मुक्त,-होब,-करब, ग० उरिण ।

उरेहब क्रि० स० खींचना (चित्र), चित्रित करना; प्रे०-हवाइब,-हाइब; जा०"ससि केसन्हि ससि सौंह उरेही" (पदु० ४१८); स० उत्+लिख्, रेख् ।

उर्द सं० पुं० उड़द, माष, स्त्री०-र्दी, एक छोटे प्रकार का उड़द, वि० -हा, उड़दवाला (खेत), उड़द से

भरा, मिला अथवा जिसमें उड़द पकाया गया हो; स्त्री०-ही।

उर्दी सं० स्त्री० वरदी,-पहिरब,-लेब,-पाइब; फा० वर्दी (घुड़सवार); शायद घुड़सवारी के लिए सारे ईरान में एक निश्चित पोशाक रही हो।

उलइब क्रि० स० उदाहरण देना, ताना मारना, व्यंग्य रूप से कहना; उ+लय (राग) अर्थात् बुरा मानने के लिए अथवा दुःख देने के लिए किसी बात का कहना, याद दिलाना आदि; वै०-उब।

उलका-पत्तर सं०पुं० उत्पात, गड़बड़,-करब,-नाधब, ऊधम मचाना; सं० उल्कापात, अर० उल्का (आसमानी वस्तु)।

उलचब क्रि० स० (पानी) उलचना; एक स्थान से दूसरे स्थान पर फेंकना; प्रे०-चवाइब,-उब।

उलझा सं० पुं० पीछे को डाला हुआ मिट्टी का ढेर;-मारब, खेत में से मेड़ की ओर मिट्टी डालकर मेड़ ऊँचा करना या खाई खोदना।

उलझारब क्रि० स० पीछे की ओर झटका देना; ज़ोर से पीछे को धक्का देना।

उलटब क्रि० अ० स० उलट जाना; उलट देना; -पलटब, इधर-उधर करना; प्रे०-टाइब,-टवाइब; वै०-पुलट,-सुलटब,-उल्टब इत्यादि।

उलटवाह वि० उलटी (बात); जिससे सुलझी बात भी उलझ जाय; वै०-ल्ट-;उ+लट (लट से विपरीत या अलग); दे० लट,-टि, लटब।

उलदब क्रि० स० (बर्तन में रखी चीज को) उलट देना, जैसे पानी, दूध, अनाज आदि।

उलदब-बलदब क्रि० स० इधर से उधर करना, बदलते रहना; उलटब+बदलब (दूसरे शब्द में 'बदलब' का विपर्यय होकर 'बलदब' बन गया है) वै०-ल्द; भा० उल्द-बल्द,-ल्दा-बल्द।

उलदाबल्द सं० पुं० उलट-फेर, इधर-उधर;-होब, -करब। वै० उल्द-बल्द (विपर्यय क्रिया से संज्ञा में आ गया है), अल्द-बल्द (अदल-बदल)।

उलरब क्रि० अ० उछलना, प्रे०-लारब।

उलटबाँसी सं० स्त्री० सीधी बात न करने की आदत;-चलब,-कहब; उलटी+बाँसुरी, अर्थात् उलटी बाँसुरी (बजाना) अथवा उलटा राग।

उल्ल वि० पु० (सवारी) जो पीछे दबी हो; उल० दबाहुर,-बाऊ (सी०)।

उल्ला सं० पुं० बुरे काम के लिए प्रोत्साहन;-देब, -पाइब।

उल्लू वि० मूर्ख; सं० उलूक, ग० उल्लू ,-करब,-बनइब,-होब।

उवब क्रि० अ० दे० उअब; दिन-उवानीं, क्रि० वि०, दिन निकलते-निकलते; सूर्योदय होते-होते।

उवाइब क्रि० स० दे० उआइब।

उवादा सं० पुं० वादा,-करब,-लेब, रुपया देने के लिए वचन देना और दिन निश्चित करना;-क काम, टालने का काम; कहा० गवा काम जब भवा उवादा; वै०-आदा; फा० वादः।

उवारब क्रि० स० दे० उआरब।

उसकब क्रि० अ० उठना, हटना; ज़रा सा कष्ट करना, प्रे०-काइब,-उब; सं० शक् (सकना)।

उसकिना सं० पुं० घास का मुट्ठा (दे०) जिससे बर्तन माजा जाय, क्रि०-इब।

उसताद सं० पुं० गुरु; वि० चतुर; वै० वस्ताद, वहताद; अर० उस्ताद; भा०-दी, वस्ता-।

उसवाड सं० पुं० स्वाँग; वै०-डी,-वाँगी;-करब,-लाइब, व्यं० हँसी, वि०-वड्हा,-वाडी।

उसरहा वि० पुं० ऊसरवाला, स्त्री०-ही।

उसराब क्रि० अ० ऊसर हो जाना।

उसार सं० पुं० घर का सारा सामान, सब सामान लेकर चले जाना;-करब,-धरब,-पसार, विदाई, भगदड़; सं० उ+सृ (चलना)।

उसिआर सं० पुं० कूड़ा; कूड़ा-करकट;-करब, वै०-यार।

उसिजब क्रि० अ० उबल जाना; मु० गर्मी में परेशान हो जाना; प्रे०-जाइब,-जवाइब;-उब, सं० उष्ण अथवा सृज (तैयार होना, उबलकर) शा० सिच् से भी (भाप से भीगना)?

उसिनब क्रि० स० उबालना (चावल, आलू आदि) प्रे०-नवाइब,-नाइब,-उब, सं० उष्णः व्यं० जल्दी में या बुरी तरह पका देना। प० ईशवल (उबालना), ईशपवल (उबलना)।

उसीका सं० पुं० लिखित ठेका या अन्य कार्रवाई, -लिखब,-करब, अर० वसीक़ः।

उसीयति सं० स्त्री० उत्तराधिकार-करब, दे देना, -अपना उत्तराधिकारी कर देना (संपत्ति पर), -नामा, कचहरी में लिखित पत्र जिसमें किसी को उत्तराधिकार दिया जाय वै० व-; अर० वसीयत।

उसीला सं० पं० ठौर, सिलसिला, संबंध, मित्रता, फा० वसीलः, अर० में भी यह शब्द इसी अर्थ में आता है यद्यपि हिज्जे भिन्न है।

उहाँ क्रि० वि० वहाँ, प्र०-हें,-हँवैं।

उहै वि० सर्व० वही, सभी लिंगों में यह शब्द एक सा रहता है,-मनई,-मेहरारू, वै०-हवै, आ० वहै (केवल व्यक्तियों के लिए)।

उहौ वि० सर्व० वह भी, आ० वऊ,-न्हू (केवल व्यक्तियों के लिए); दे०वय।

ऊ

ऊँच वि० पुं० ऊँचा, स्त्री०-चि,-नीच, छोटा-बड़ा (व्यक्ति), उचित-अनुचित (बात,पत्त), क्रि०ऊँचाब, ऊँचियाव, प्रे० ऊँचवाइव-याइब, । क्रि० वि० ऊँचें, ऊँचे स्थान पर,-सुनब, कम सुनना, सं० उच्चैः तुल०-निवास नीच करतूती । ग० उच्चु ।

ऊँट सं० पुं० लंबी गर्दन का प्रसिद्ध जानवर, स्त्री० ऊँटिनी, कहा० ऊँट चरावै निहुरे निहुरे, जब ऊँट ऐसे लंबे-ऊँचे जानवर को चराना है तो छिपकर चरवाहा कब तक रह सकता है? अर्थात् बड़ी-बड़ी बातें करनेवाला छिपा नहीं रह सकता। क्रि० ऊँटाव (ऊँटिनी का गर्भ धारण करना), सं० उष्ट्र।

ऊ वि० सर्व० वह, श्रा० वय (दे०)।

ऊअब क्रि० अ० उअब का प्र० रूप-जिसका प्रे० नहीं बनता।

ऊकड़-बाकड़ सं० पुं० अंड-बंड, अपशब्द,-बक्कब, अपशब्द कहना, वै० ऊगड-बागड़।

ऊकबीक वि० परेशान, घबराया,-होब ।

ऊखा-हरन सं० पुं० लंबी-चौड़ी कथा; निरर्थक बात,-गाइब, व्यर्थ की बातें कहना, बाणासुर की कन्या ऊषा के अनिरुद्ध द्वारा हर ले जाने पर कई वर्ष तक संग्राम हुआ था, उसी का उल्लेख इस शब्द में है। सं० ऊषाहरण।

ऊखि सं०स्त्री०ईख, गन्ना, वै० उखुडि,-डी,सं०इक्षु।

ऊढ़ सं० पुं० बे नाम का मनुष्य (काम न करनेवाला),वि० जपाट मूर्ख, निकम्मा, स्त्री०-ढ़ि, सं० मूढ़ ।

ऊत सं० पुं० एक प्रकार का भूत, विचित्र पुरुष असाधारण कार्य करनेवाला पुरुष, शा० भूत का बिगड़ा रूप ।

ऊदम सं० पुं० 'उदम' का प्र० रूप, परिश्रम, सं० उद्यम, वै०उद्दम,-द्दिम ।

ऊधम सं० पुं० उधम,-करव,-मचाइव ।

ऊधौ सं० पुं० कृष्ण के सखा उद्धव जी, वै० ऊधव; -माधौ, कोई भी, कहा० न ऊधौ क लेब न माधौ क देब, (किसी से कुछ काम नहीं।) सं० उद्धव ।

ऊबब क्रि० अ० ऊबना, वै० उबिआब; प्रे० उबिआइब,-उब । शा० 'ओबा' से संबद्ध अर्थात् वैसे ही घबराना जैसे 'ओबा' की बीमारी में लोग घबराते हैं।

ऊमी सं० स्त्री० गेहूँ की अधपकी बाल का आग में भूना हुआ गर्म गर्म चबेना जो प्रायः देहात में खाया जाता है। ग०-मि; सी० ऊँबी ।

ऊहि सं० स्त्री० याद, स्मृति (बचपन की),-आइव, -होब, पुरानी बचपन की बात याद रहना। सं० ऊह्य, ऊह (वितर्क)।

ए

एँड़ा सं० पुं० पैर या जूते का पिछला भाग;-लगाइब,-मारब,-देब, एँड़ी से किसी को ज़ोर से मारना, स्त्री० ड़ी, ह० सी० याँ-,-ड़ी, यँड़उरा ।

ए सबो० हे, ऐ; ए भाई, ऐ भाई ।

एई वि० यही; यह शब्द दोनों ही लिंगों में एक सा प्रयुक्त होता है; वै० यई।

एऊ वि० यह भी; दे० 'एई'।

एक वि० एक,-जने, एक पुरुष,-जनी, एक स्त्री; वै० यक; प्र० एकइ,-उ; सी० ह० याक ।

एकइ वि० एक ही; वै० यक्कै, यकइ,-व एक का प्र० रूप; कविता में 'एकहु' सी० ह० या-।

एकउ वि० एक भी, वै० एकौ, यक्कौ, यकव, याकौ ।

एकर सर्व० पुं० इसका; स्त्री०-रि, वै० एकै, यहिका ।

एका सं० स्त्री० एकता, एकत्र रहने और काम करने की शक्ति; होब,-करब; सं० ।

एगारह वि० ग्यारह; सं० एकादश ।

एजाँ क्रि० वि० इस स्थान पर, फ़ा० ईंजा; प्र० एईजाँ (जौ०)।

एठाइर क्रि० वि० इस स्थान पर, वै०-हिर, इन सभी शब्दों में 'स्थ' का परिवर्तन 'ठ' में हुआ है और अंत में कहीं य और कहीं र लग गया है।

एठाईं क्रि० वि० इसी स्थान पर; दे० ठाँव, ए+स० स्थान, वै० एईठाँ, एई ठायँ,-वँ; प्र० एठइनैं, -हीं, सी० ह० यहि ठउर ।

एठियाँ क्रि० वि० इसी जगह; प्र०-यैं ।

एती वि० इतना; ग० यति, सी० ह० यत्ता,-त्ती।

एवज सं० पुं० बदला, एक व्यक्ति की जगह दूसरा; वै० य-,-जी, दे०; अर० एवज़, दे०औजी।

एवमस्त अव्य० अच्छा, यही सही। यह पूरा वाक्य है और सं०एवमस्तु (ऐसा ही हो) का बिगड़ा रूप है जो गाँववाले बड़ी मस्ती से बोलते हैं। यह प्राय: यह समझते हैं कि इसका अर्थ है—"अच्छा

हम इसी में मस्त (प्रसन्न) रहेंगे" (ठीक है)।
एसवँ क्रि० वि० इसी वर्ष, प्र०-वँ०; वै० य-,आ-(सी० ह०)।
एसस वि० पुं० ऐसे ऐसे (बहु वचन में); स्त्री० -सि; वै० य-(दे०) अ-; सी० ह० अइस अइस।
एहर क्रि० वि०इधर, वै०य-; दे०यहर,-वोहर,यहर-वहर,इधर-उधर; सी०ह० इंवे उंवे, ग०यख, यत्त।
एहीं क्रि० वि० यहीं; ग० यखी, यथ्थें।

ऐ

ऐआ सं० स्त्री० दे० अइया।
ऐगुन सं० पुं० अवगुण, दे० अइगुन।
ऐरन सं० पुं० कानों में पहनने का गहना जो नीचे लटकता है (ऊपर पहने जानेवाले का नाम 'उतला' है। दे०), अं० इयर-रिंग।
ऐसन वि०, क्रि० वि० ऐसा; इस तरह; प्र०-नै,-नौ; दे० अइस।
ऐहैं क्रि० अ० आवेंगे, एक वचन तृ० पु० में भी यह आ० रूप है। वै० अइहैं।
ऐहै क्रि० अ० आवेगा, 'आइब' का यह रूप प्रायः मुसलमानों द्वारा बोला जाता है; नहीं तो साधारण तृतीय पु० भविष्य रूप 'आई' होता है; वै० अइ-।
ऐहों क्रि० अ० आऊँगा; मुसलिम प्रयोग; हिंदू 'आइब' और 'अइबै' (हम) तथा 'अइबों' एवं 'अइवँ'(मैं) बोलते हैं। मुसलमान इसी प्रकार सब क्रियाओं के कुछ भिन्न रूप बोलते हैं। वै०-हौं
ऐहो क्रि० अ० आओगे; यह भी मुसलिम प्रयोग है, हिंदू 'अइबो'-वौ बोलते हैं, वै०-हौ, अइ-।

ओ

ओंका-बोंका सं० पुं० एक खेल जिसमें बच्चे हाथ की मुट्ठियाँ बाँधकर ऊपर नीचे रखकर कहते हैं —ओंका-बोंका तीन तिलोका लैया लाती चंदन काती...।
ओंठ सं० पुं० होंठ, स्त्री० अउँठी (दे०), म्हा० पहिलेह चुम्मा-टेढ़, अर्थात पहले ही चुंबन पर होंठ टेढ़ा हो गया?
ओंड़ब क्रि० स० हाथ, पैर या थूथुन (दे०) से गोड़ना (जैसे सूअर करता है), ख़राब कर देना (खेत आदि को), प्रे०-ड़ाइब,-वाइब,-उब, 'गोड़ब' का दूसरा रूप, दे० गोड एवं० गोड़ब।
ओंड़ा सं० पुं० वह बड़ी कौड़ी जिससे खेल में 'ढाही' मारी जाती है और जिसमें प्रायः लड़के 'राँग' भरते हैं जिससे वह भारी होकर यथास्थान फेंकी जा सके। दे० ढाही तथा राँग।
ओइ वि०, सर्व० वही, वई (दे०) का प्र० रूप; पुं० एवं स्त्री० दोनों के ही लिए एक रूप है। नपुं० लिंग में 'ढहवै' होता है जो निरादर में नौकरों आदि के लिए भी प्रयुक्त होता है।
ओऊ वि० सर्व० वह भी; वऊ (दे०) का प्र० रूप जो दोनों लिंगों में एक सा रहता है; नपुं० के लिए 'ढहौ' जो निरादर सूचक है। रामायण में ये दोनों शब्द 'सोई' तथा 'सोऊ' रूप में आये हैं।
ओकर सर्व० उसका; स्त्री०-रि; प्र० ओहकर, वहकर; वहिकै; वहीकै। आ० ओनकर, वनकर, वनकै मुस०-कै।
ओकलाई सं० स्त्री० उलटी करने की इच्छा;-आइब; नै० वाक, वै० वकि-।
ओकाँ सर्व० उसको, वै० वहिकाँ, वहकाँ; प्र०वहीकँ; आ० वनकाँ, ओनकाँ; प्र० वनहीकँ; मुस० वहिकाँ।
ओखरी सं० स्त्री० दे० वखरी।
ओछर वि०पुं० नीच, ओछा; स्त्री०-रि; क्रि०-राब दे० वछराब (केवल चोट आदि के लिए)।
ओजन सं० पुं० भार, तौल,-करब, तौलना;-पाइब, पता या सूचना पाना, जानना फा० वज़न।
ओजह सं० पुं० कारण; अर० वजह।
ओजा सं० पुं० वटवद,-करब,-देब, मुजरा करना, देना; अर० वज़अ।
ओझन क्रि० अ० फँस जाना (वि० कीचड़ या दलदल में), प्रे०-झाइब; -मु० किसी हिसाब या मामले में फँसा रहना; भा०-झास (दे० वझास)।
ओझा सं० पुं० भूत-प्रेत उतारनेवाला; मंत्र-यंत्र करनेवाला, ब्राह्मणों की एक उपजाति; सं० उपाध्याय का प्रा० रूप; भा०-ई, वझाई।
ओझाई सं०स्त्री० भूत उतारने की क्रिया,-करब; मु०

किसी समस्या पर बहुत देर तक विचार करते रहना, पर कुछ निश्चित न कर पाना;-करब,-कराइब-होव । वै० व-।
ओट सं० पुं० आड़, परदा; कभी-कभी 'वोट' के अर्थ में भी प्रयुक्त;-करव,-देब, दे० 'वोट'।
ओढ़ना दे० वढ़ना।
ओढ़ब क्रि०स० ओढ़ना;-बिछाइब, (किसी बात में) लगा रहना; वही काम करना; मु०सिर पर रखना, स्वीकार कर लेना, प्रे०-ढ़ाइब,-ढ़वाइब,-उब।
ओढ़र सं० पुं० बहाना;-पाइब,-मिलब,-करब।
ओत सं० स्त्री० बहाना;-करब; वि०-ती (प्रत०जौ०)
ओद वि० पुं० आर्द्र, नम, स्त्री०-दि, क्रि०-दाव; -होव; मु० गाँड़ि-होव, चूतर-होव, डर जाना, डरके मारे पेशाब या टट्टी करना। सं०आर्द्र।
ओदारब क्रि० स० दे० वदारब, सं० विद्र।
ओदी सं० स्त्री० क़लम (पेड़, पौदों आदि की); -लगाइब,-धरब,-लागव, सं०आर्द्र से क्योंकि गीली मिट्टी लगाकर ओदी रखी जाती है।
ओनइब क्रि० अ० दे० वनइब; प्रे० ओनाइब, वनाइब,-उब,-नवाइब,-उब, जा० "ओनई घटा आइ चहुँ फेरी।"
ओनकर सर्व० उनका; स्त्री०-रि, दे० वनकर।
ओनान सं० पुं० हुक्म, -देब, आज्ञा मानना। दे० वनान।
ओन्हन सर्व० दे० वन्हन।
ओन्हब क्रि० स० रस्सी से बाँधकर नीचा कर देना (छप्पर आदि), प्रे०-वाइब,-हाइब,-उब, सं०उन्नम्।
ओफाँ सं० पुं० लाभ, उन्नति (स्वास्थ्य में),-देब, -करब,-होब, लाभ करना (औषधि का);अर० वफ़ा (इसी अर्थ में दवा के लिए प्रयुक्त)।
ओबरि सं० स्त्री० सुंदर बैठक का स्थान, यह शब्द प्रायः ग्रामगीतों में ही आता है। वै०-री, उ० बड़े रे सजन कै बिटियवा दिहेउ गज ओबरि।
ओबरी सं०स्त्री० घर के भीतर का भाग; गीतों में प्रायः प्रयुक्त, जा० खनि गढ ओबरी महँ लै मेला (पदु० ६४२), वै०-रि, व-।
ओबा सं० स्त्री० घोर संक्रामक बीमारी जैसे हैज़ा आदि, इसे दैव प्रकोप समझकर देहाती कभी-कभी 'ओबा माई' (जैसे माता, शीतला माता, काली-माई आदि) कहते हैं। उ० तुहैं ओबा (अथवा ओबा माई) लै जायँ,-धरैं अर्थात् तुम्हें ओबा हो जाय।
ओय संबो० बच्चों द्वारा प्रयुक्त; आपस में खिलवाड़ करने का शब्द जो कभी-कभी बड़े भी बच्चों के साथ कहते हैं, प्रायः दो बार "ओय-ओय" रूप में बोला जाता है। दे० लोय-लाय। वै०-होय।
ओर सं०पुं० किनारा, तरफ़, अंत, पक्ष;-होव, नाश होना,-करब, नष्ट कर देना; तु० चितै तेहि ओरा; क्रि०-राव; वै०-री; शाप— तोहार ओर होय, तेरा वंश नष्ट हो, दे० वराब।
ओरउनी सं० स्त्री० छत का वह किनारा जो भूमि की ओर झुका रहता है और जहाँ से वर्षा का पानी गिरता है,-चुअब, इतना पानी बरसना कि छत के किनारे से टपके; वै० वर-,ओरी, जा० मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी, कहा० ओरिक पानी बँड़ेरी जाय। दे० वरउत।
ओरखब क्रि० अ०, स० ध्यान देना, बात सुनना; आज्ञा मानना; वै० वर-।
ओरमब क्रि० अ० एक ओर लटकना, प्रे०-माइब, लटकाना, एक ओर झुकाना, वै० वर-।
ओरवत सं० पुं० किनारे का भाग (छप्पर या छत का); वै० वर-,-उत।
ओरा सं० पुं० कमी, क्रि०-व, वराव, कम होना, समाप्त हो जाना; नष्ट हो जाना (वंश का); 'ओर' से; स्त्री० में भी बोला जाता है,-परब,-होब,-करब (बचाना); भा०-ई; प्रे०-रवाइब,-उब, वरइब, -उब।
ओरा सं० पुं०, ओला,-परब,-गिरब,-बरसब; अं० होर।
ओरियाँ सं० स्त्री० तरफ, ओर; क० गी० में ओरा 'ओरी' और बोलचाल में 'ओरियाँ';उ०यहू ओरियाँ बाँटब, इधर भी बाँटो। ओर (दे०) का विकृत रूप।
ओसरि सं० स्त्री० भैंस जो गाभिन होने लायक हो गई हो। सी० ह० वा-।
ओसरी सं० स्त्री० बारी;-ओसरीं, एक-एक करके, बारी-बारी से,-लगाइब,-बान्हब, बारी निश्चित कर लेना। वै० व-।
ओसहन सं० पुं० वह अनाज जो ओसाया जाय; (दे० वसाइब) जैसे धान, गेहूँ, वै० वस-।
ओसार सं० पुं० बरामदा, वै० व-,-रा, स्त्री०-री।
ओहर क्रि०वि० उधर; वै० व-; यहर-,इधर-उधर, प्र०-रै, उधर ही,-रौ, उधर भी। सी० ह० उंघे।
ओहार सं० पुं० पीनस (दे०) या पालकी के ऊपर ढकने का रंगीन कपड़ा, वै० व-; ओढ़ाइब (ढकना) से।
ओहि सर्व० उसको; जा० "जना न काहु, न कोइ ओहि जना।" (पदु० स्तुति खंड)।
ओहि वि० उसी,-ठाँ, उसी जगह; दे० ठाँव, जा० 'फिरि फिरि पानि ओहि ठाँ भरई" (पदु० २६४); "ओहि ठाँव सहिरावन मारा।" (वही)
ओहीं क्रि० वि० वहीं, 'वहीं' का प्र० रूप, ग०-हूँ, वहाँ या उधर भी। दे० वही।

औ

औंकी-वौंकी दे० अउँकी-।
औंगव क्रि०सं०पहियों में तेल डालकर साफ़ करना (गाड़ी); प्रे०-गाइव,-उव; वै०-ञ्च, अउञ्च (दे०)
औंघाई सं० स्त्री० नींद,-लागव,-आइव; क्रि० -घाव; वै० अउँ।
औंघाव क्रि० अ० सोने की इच्छा करना; सोने लगना; वै० अउँ-(दे०)।
औ संयो० और; वै० अउ, अउर, अवर।
औघड़ सं० पुं० वाममार्ग का अनुयायी;-पंथी, ऐसे पंथ का माननेवाला, भा०-ई,-पन, वै० अव-; सं० अघोर। दे० अवघड़।
औचट सं० पुं० दे० अवचट।
औजार सं० पुं० काम करने के सामान, यंत्र आदि, अर० औज़ार।
औजी सं०स्त्री० किसी एक आदमी के स्थान में दूसरे के काम करने की पद्धति;-करव,-लेव,-देव, ऐसा काम करना, वै० अउ-, यव-; अर० एवज़; दे० एवज।
औझड़ी वि० सनकी; मौज में आकर कुछ भी कर डालनेवाला; वै० अव-, अउ-(दे०)।
औटव क्रि० स० औटना; प्रे०-टाइव,-उव,-टवाइव, -उव।
औढरदानी वि० ऐसा दानी जो चाहे कुछ दे डाले; मौज में आकर सब कुछ दान कर देने वाला; प्रायः यह वि० शिवजी के लिए आता है।
औरउ वि० पुं० और भी,-केउ, कोई दूसरा भी; स्त्री०-रिउ, वै० अव-, औरव, अउ-।
औरति सं० स्त्री० पत्नी, स्त्री; औरत;-हा, औरत के संबंध का; उ०-माजरा, स्त्री-संबंधी बात।
औरा सं० पुं० आँवला; वै० अवँरा (दे०) सं० आमलक।
औरा-गोंज जिसमें और भी बातें या वस्तुएँ मिली हों। दे० अउरागोंज; और+गोजव (दे०)
औला-मौला वि० पुं० मस्त, उदार; मनजौकी (दे०), औला (औलिया, साधु)+मौला, मालिक; अर०।
औवल वि० पुं० प्रथम, श्रेष्ठ; स्त्री०-लि, वै० अउ-,-अल; अर० अव्वल। दे० अउअल।
औसाहिन दे० अउसाहिन।

क

कंकड़ सं० पुं० दे० काँकर;-पत्थर; स्त्री०-ड़ी, वै०-र, मु०-पियव, सूखा तम्बाकू पीना,-स्नान, केवल शरीर पोंछने की क्रिया।
कँकरहा वि० पुं० कंकड़ वाला, कंकड़ भरा हुआ; स्त्री०-ही।
कंकाली सं० पुं० एक घुमक्कड़ जाति के लोग जो शिकार करते, भीख माँगते और गाते फिरते हैं, स्त्री०-लिनि -यस, चिल्लानेवाला, मँगता; सं० कंकाल (शायद ये लोग किसी समय शिव के उपासक और कंकाल-पूजक थे)।
कँगना सं० पुं० कंकण; यह शब्द प्रायः गीतों में प्रयुक्त होता है। बोलचाल का रूप 'ककना' है। वै० कढना, ककना, सं० कंकण।
कँगला सं० पुं० अनिमंत्रित दरिद्र लोग जो खाने के लिए विवाह अथवा तेरहवीं आदि अवसरों पर यों ही पहुँच जाते हैं। 'कंगाल' का घृ० रूप, क्रि० -व, दरिद्र हो जाना। भा० कँगलपन, कँगलई,-लाई। वै० कङ्ला।
कंगा सं० पुं० बिना बुलाये खाने के अवसर पर पहुँच जानेवाला व्यक्ति,-खवाइव,-खाव, वै०-ङ्गा।
कंगाल वि० पुं० दरिद्र, स्त्री०-लि, भा०-गलई,-पन। वै०-ङाल।
कंचन सं० पुं० सोना, वि० हरा-भरा हरियर-, खूब फूला-फला, सुहावना,-बरसब, धनधान्य की अधिकता होना, तु० तुलसी तहाँ न जाइये कंचन बरसै मेह। सं०।
कंचित क्रि० वि० शायद; सं० कदाचित्, ट० कन-चित में०। प्र० तैं, शायद ही।
कंटोल सं० पुं० नियंत्रण अं० कंट्रोल, वै०-टउल, -ट्रौल।
कंठ सं० पुं० गला;-फूटव, आवाज़ निकलना,-करव, याद कर लेना, कंठस्थ करना, क्रि० वि० कंठे (दे०), कंठ में, जीभ पर; सं० कंठ।
कंठा सं० पुं० गले में पहनने का आभूषण;-स्त्री० -ठी, भगवान के स्मरणार्थ केवल एक दाने की माला जो इस बात का भी द्योतक है कि इसका धारण करनेवाला निरामिषभोजी है,-ठी बान्हव,-पहिरब, -लेव, त्याग का व्रत लेना, त्याग देना; सं० कंठ।
कंठिहा वि० पुं० कंठी धारण करनेवाला; वैष्णव, स्त्री०-ही सं० कंठ।

कंठे क्रि० वि० कंठ में, कंठ पर; यनके-सूरसती बैठी अहैं, इसकी जिह्वा पर सरस्वती बैठी है (जो कहता है सत्य हो जाता है); सं० कंठे।

कंडउरा सं० पुं० वह घर जिसमें कंडा रखा जाय; कंडे का भंडार,-क घर, ऐसा घर; वै०-डौरा; कंडा + अउरा या औरा, संग्रह।

कंडा सं० पुं० गोबर के सूखे टुकड़े; उपला; स्त्री० -डी,ऐसा छोटा टुकड़ा,-होब; सूख जाना, ऐंठ जाना, मर जाना (ठंड के मारे); प्रायः बिच्छू को देखकर लोग "कंडा कंडा" कहने लगते हैं, विश्वास यह है कि ऐसा कहने से वह किसी को काटेगा नहीं, भाग जायगा।-परब, पेट मँ-परब, आँतों में मल सूख (कर कंडा हो) जाना,टट्टी न होना।

कंडील सं० पुं० पतले और प्रायः रंगीन काग़ज़ के बने पिंजड़े जिसमें दिया जलाकर विशेष अवसरों पर टाँगा जाता है; अं० कैण्डिल (मोमबत्ती); वै०-दील,-डैल।

कंडैल सं० पुं० एक पीला और लाल फूल जिसका पेड़ बड़ा सा होता है। दे० कनैल, कनइल; वै०-डइल।

कँड़जि सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जिसकी दातून बनाते हैं और जिसमें फली लगती है। इसमें कड़वी गंध होती है, जिससे दाँत के कीड़े मरते हैं।

कँड़िआ सं० स्त्री० पत्थर या कंकड़ों की बनी भूमि में गड़ी वस्तु जिसमें मूसल से चावल, दाल आदि छाँटते (दे० छाँटब) या कूटते हैं। वै०-या, काँड़ी।

कंता सं० पुं० पति; प्रेमी, कहा० जैसे कंता घर रहें वैसे रहे बिदेस, वै०-था, कंत,-थ, कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त; सं० कांत।

कंतूतुरि सं० स्त्री० अँधेरे में रहनेवाला मेढक की भाँति का एक रेंगनेवाला जंतु, मु० फूहड़ और इधर उधर बेकार घूमने वाली स्त्री या व्यक्ति।

कंथ सं० पुं० दे० कंता।

कंद सं० पुं० कई पौदों की प्रायः मीठी जड़ें जो फलाहार के रूप में खाई जाती हैं; वै०-मूल।

कँपइब क्रि० सं० कँपाना, प्रे०-पाइब,-वाइब, वै०-उब, काँपब का प्रे० रूप, सं० कम्प।

कँपकँपी सं० स्त्री० बार बार काँपने की क्रिया,-धरब,-लागब,-होब।

कंपा सं० पुं० तिकोनी लकड़ी जिस पर बुलबुल पकड़ने के लिए लासा लगा दिया जाता है, मु० तरकीब,-लगाइब, उपाय करना, वै० काँ-,वै० प्र० -फा।

कंबर सं० पुं० कंबल, वै०-मर, कम्मर, कमरा; स्त्री० कमरी,सं० कंबल, दे० कमरा।

कंस सं० पुं० द्वेष, ईर्ष्या;-राखब,-करब,-होब; वै० कुंस, खुंम, कुनुस, खु,-वि०-हा,-ही; सी० मकस।

कँसहा वि० पुं० काँसा मिला हुआ, स्त्री०-ही।

क संबो० क्यों, कहो; उ० क भैया, क रे, क्यों रे, क बाबा! कहो बाबाजी! वै०का, (२)संबंध कारक का सूचक, जो 'कै', का अथवा 'कर' का रूप है, उ० रामराज क माई, रामराज की माँ (दे०कर, कै), कभी कभी 'को' के अर्थ में कर्म कारक का चिह्न, उ०वन क मारब, उनको मारूँगा, जिसमें 'क' वास्तव में 'का' 'काँ' अथवा 'कह' का सूक्ष्म रूप है।

कइँची सं० स्त्री० कैंची,-काढ़ब, मीन-मेख निकालना।

कइँजड़ सं० पुं० दे० कनजड़।

कइअउ, वि० कई,-जने, कई लोग,-जनी, कितनी ही स्त्रियाँ, 'कइउ' (दे०), का प्र० रूप वै०-वो, -ओ,-औ।

कइअहा वि० पुं० काई लगा, स्त्री०-ही।

कइआब क्रि० अ० काई (दे०) से ढक जाना, काई लगना। 'काई' से क्रि०, वै०-याब।

कइउ वि० कई,-मनई, कई मनुष्य,-मेहरारू, कई स्त्रियाँ, प्र०-अउ,-औ।

कइठूँ वि० कितने, वै०-ठें, स्त्री०-ठी, कहीं-कहीं "कइठीं", दोनों लिंगों में बोला जाता है, प्र०-इठूँ, -अउठूँ,-ठें,-ठीं, कितने ही, कई।

कइति सं० स्त्री० एक जंगली पेड़ और उसका फल जो गोल, सफेद और पकने पर खटमिठा होता है, पुं०-था, वै०-थि, सं० कपित्थ।

कइती सं० स्त्री० ओर, तरफ़, यहि-,इस तरफ़; कउनी-,किस ओर, जौ० प्रत० प्रय०।

कइथऊ वि० कायस्थों का, वै० कय-।

कइथा सं० पुं० कइति (दे०) का बड़ा फल और पेड़, सं० कपित्थ।

कइथिनि सं० स्त्री० कायस्थ की स्त्री,-क डोला, बड़े विलंब की तैयारी, शादी के समय कायस्थों के यहाँ से दुलहिन का डोला (दे०) बहुत देर में निकलता है,-डोला करब, देर लगाना। सं० कायस्थ (कायथ, दे० + इनि)। सं०,

कइथी सं० स्त्री० वह भाषा जिसमें कायस्थ लोग प्रायः लिखते हैं। इसमें अक्षरों के ऊपर पाई नहीं लगती और यह शीघ्रता से लिखी जाती है। वै० -यथी, कै-। सं० कायस्थ।

कइदि सं० स्त्री० क़ैद, नेल,-होब,-करब,-जाब, अर० क़ैद।

कइदी सं० पुं० बंदी, क़ैद गया हुआ व्यक्ति, पकड़ा हुआ पुरुष या स्त्री, अर० क़ैद + सं० इन्।

कइनारा सं० पुं० शाखा;-फूटब, शाखा निकलना; वि०-नार,-इनियार, शाखोंवाला। स्त्री०-नि।

कइनि सं० स्त्री० बाँस की पतली टहनी,-अस, दुबला-पतला, 'कइनारा' का स्त्री०।

कइयाव क्रि० अ० काई से भर जाना, काई लग जाना, वै०-आब, कै-, दे० काई।

कइरी वि० स्त्री० कयर रंग की; दे० कयर; कयरा का स्त्री०।

कइस वि० पुं० कैसा; स्त्री०-सि०; वै०-सन,-नि,-कइस,-सन,-कइसन, कैसे-कैसे, किस-किस प्रकार के।

कइसे क्रि०वि० कैसे, किस प्रकार; प्र०-सै,-कइसे, कैसे-कैसे,-सौं, किसी भी प्रकार; वै०-सय,-सो,-सौ।

कइहा क्रि० वि० कब, किस दिन; वै० कहिया,-आ (दे०); प्र०-है,-हाँ, कभी;-है न, बहुत दिन पूर्व।

कउआ सं० पुं० कौआ,-हँकनी, कौओं को उड़ानेवाली (एक स्त्री जिसकी कथा प्राय. देहात में कही जाती है); हँकनी, हाँकनेवाली। वै० कौआ,-वा सं० काक।

कउआकमामा सं० पुं० एक जंगली लता और उसका फल जो पकने पर लाल हो जाता है, शायद यह नाम इसलिए है कि पकने पर इसे कौए बहुत खाते हैं। सी० ह०-बोड़ी।

कउआब क्रि० अ० सोते हुए व्यक्ति का बड़बड़ाना, अंडबंड या निरर्थक बातें कहना।

कउआरी सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जो ज़हरीला होता है।

कउआरोर सं० पुं० बड़ा शोर (जैसे कौए एकत्र होकर मचाते हैं), कौआ+रोर (पं० रोला, शोरगुल),-मचाइब,-करब, अं० रोर, गर्जन।

कउआली सं० स्त्री० एक प्रकार का गाना; इसके गानेवालों को कउआल कहते हैं और यह प्रायः कई गवैयों द्वारा एक साथ ज़ोर-ज़ोर से गाई जाती है। फ़ा० क़ौवाली।

कउकिआब क्रि० अ० व्यर्थ चिल्लाना; बंदर की भाँति बोलना; काँवकाँव करना, क्रोध करना; वै०-उँ-,-याब।

कउँची सं०स्त्री० पतली टहनी, विशेष कर अरहर के पेड़की जिसका टोकरी बनाने में उपयोग करते हैं।

कउड़ी सं० स्त्री० कौड़ी जो पहले सिक्के की भाँति चलती थी,-काम कै नाहीं, किसी भी काम का नहीं, व्यर्थ; दुइ-क, किसी महत्त्व का नहीं; दुइ-क मनई, हलका मनुष्य, क्षुद्र पुरुष, कउडी, थोडा-थोडा बचा करके, कठिनतापूर्वक (धन एकत्र करना),-क तीन, बेकार, निरर्थक, सस्ता, वै० कौडी।

कउथाँ क्रि० वि० कौन सा बार, (जानवरों के ब्याने के लिए), स्त्री०-थीं, किस कक्षा में, कौन सी ?

कउनि वि०स्त्री० किस, कौन-सी, प्र०-उ,-नी; तुल० कउनिउँ जतनि देह नहिं जाना।

कउनीं क्रि० वि० किस मार्ग से, किधर, वि० किस; -ओर, किस ओर,-राहीं, किधर ?

कउने वि० पुं० किस, प्र०-उ, किसी भी।

कउरब क्रि० स० 'खपरी' (दे०) में किसी अन्न को धीरे-धीरे भूनना (बिना घी तेल के),प्रे०-राइब,-उब,-वाइब,-उब, व्यं० जलाना, नष्ट करना, दुःख देना।

कउरा सं० पुं० जाड़ों में तापने के लिए जलाई आग, अलाव,-करब,-बारब,-जराइब; मु०-लागब, बहुत गर्म हो जाना (ज्वर से शरीर का);-होब, गर्म हो जाना (क्रोध से); क्रि०-रब। सी० कुहरा।

कउल सं० पुं० प्रतिज्ञा, वादा;-करब, वादा करना, -लेब, प्रतिज्ञा ले लेना,-क मनई,-क पक्का, अपनी बात का पक्का,-करार, शर्तें, फ़ा० क़ौल।

कउलहा वि० पुं० देखने में निकृष्ट; स्त्री०-ही।

कउली सं० स्त्री० दोनों बाहों को दोनों ओर से फैलाकर जितना घेरा बन जाता है उसके भीतर का स्थान,-भरब, हाथों से घेरकर पकड़ लेना; बँ० कोल (अंक), दे० कोरा, कोर; पं० कोल (पास), सी० -रयाब।

कउस वि० पुं० गोरा पर देखने में बुरा; स्त्री०-सि, -सी; वै०-हा,-ही।

ककई सं० स्त्री० राब की तरह की पतली मीठी द्रव वस्तु जो गन्ने के रससे तैयार की जाती है।

ककऊ सं० पुं० 'काका' का व्यं० रूप; संबो० का भी रूप यही है। 'ऊ' लगाकर अनेक संज्ञाओं से घृणात्मक, दयाप्रदर्शक, व्यंग्यात्मक आदि रूप बनते हैं, प्रायः ऐसा किसी वर्णन में ही किया जाता है।

ककना सं० पुं० कंगन; लोहे के कोल्हू की चूड़ियाँ जो 'मूड़ी' (दे०) के मत्थे पर होती हैं। दे०कोल्हू।

ककनिआइब क्रि० स० हाथ से बहते हुए पानी के 'बरहे' (दे० बरहा) के दोनों ओर नीचे से गीली मिट्टी निकालकर ऊपर रखते जाना जिससे किनारों से पानी बहे नहीं और बरहा पुष्ट हो जाय। वै०-उब,-या-; प्रे०-वा-, ककनियाने में सहायता देना।

ककहरा सं०पुं०'क' से 'ह' तक के अक्षर; हिंदी वर्णमाला पढ़ब,-बोलब, सारे अक्षर पढ़ना या याद करना। वै० के-,सी० ह० ओनामासी।

ककहा सं० पुं० कंघा, स्त्री०-ही, वै० कँ-;-करब, कंघा करना।

ककही सं० स्त्री० एक घास जिसका फूल कंघी के आकार का होता है और जिसके पत्तों में जवाब होता है। रानी-, रानी कैकेयी, सं० कैकेयी का अपभ्रष्ट रूप।

कका सं० पुं० काका, चाचा, प्रायः कविता में प्रयुक्त, उ० 'करति कका की सौंह''। स्त्री० ककिआ; प्र०-क्का,। काका, काकी।

ककिआ सं० स्त्री० काकी, यह पुकारने के ही लिए प्रायः कहा जाता है उ० कहो ककिआ, खाब तैयार भा, कहो चाची, खाना तैयार हुआ ?-ससुर,-सासु, स्त्री या पति का काका या काकी।

कक्कन सं० पुं० दोनों हाथों की उँगलियों को आपस में फँसाकर ज़ोर से चाहे अपने ही दोनों हाथों या किसी दूसरे के हाथ को पकड़े रहने की मुद्रा, -बोहब, ऐसी मुद्रा करना, सं० कंकण (क्योंकि इस प्रकार की स्थिति में कंकण की सी शक्ल बन जाती है), दे० ककनिआइब।

कक्कू सं०पुं० काका या 'कक्का' का प्यार वाला रूप; ऐ प्यारे काका! कभी कभी काका के लिए परोक्ष में प्रयुक्त; उ० हमरे-आजु नाहीं आये, हमारे काकाजी आज नहीं आये।

कखउरी सं० स्त्री० काँख, वै०-खौरी, कँ-;-मु०काँख के बाल, उ०-बनाइब,-बनवाइब, काँख के बाल बनाना या बनवाना।

कखरवारि सं० स्त्री० कखौरी में होनेवाली फुड़िया।

कगार सं०पुं० नदी या पहाड़ी का किनारा जो एकदम पानी या गड्ढे के पास ही हो। वै०-रा-।

कचकच सं० पुं० चिड़ियों के बोलने का शब्द, व्यं० कटु अथवा झगड़े वाले शब्द; वि० कुछ कुछ कचा; मु० अनुभवहीन।

कचकचाब क्रि० अ० किसी के ऊपर रुष्ट होकर या चिल्लाकर बोलना; डाँटना, 'कचकच' से।

कचकाइब क्रि० स० डंक मार देना; मु० मारना; वै० कु-, यह शब्द प्राय: बिच्छू के लिए बच्चों के संबंध में प्रयुक्त होता है।

कचड़वा सं० पुं० लड़ाई-झगड़ा, अशांति; वै० चकड़वा।

कचड़ा सं० पुं० कूड़ा-करकट, वि० गंदा, उ०-मनई, नीच प्रकृति का पुरुष, वै०-रा, सं० कचुर(गंदगी)।

कचनार स० पुं० एक पेड और उसका फूल जिसकी तरकारी बनती है। मु०-होब, हरा भरा होना।

कचपचिआ सं० स्त्री० सूक्ष्म तारों का एक समूह जो ठीक गिने नही जा सकते, वै०-ची, जा० "औ सो चंद कचपची गरासा"।

कचर स० पुं० थोड़ा अपच; अधिक खाने के पश्चात् की दशा,-धरब,-थाम्हब, अपच हो जाना।

कचरब क्रि० अ० बहुत खाना या मुफ्त का खाना; स० खूब खाना, हाथों, पैरों या गंभीर वस्तुओं से ज़ोर-ज़ोर दबाना, मु० बहुत मारना, प्रे०-वाइब,-उब,-राइब, भा०-राई,-रवाई।

कचाब क्रि० अ० हिम्मत न करना; शब्दत: इसका अर्थ है कचा सिद्ध होना, प्रे०-चवाइब, हिम्मत हारने में सहायता देना।

कचाहिन सं०स्त्री० अशांति, दु:ख, निरतर अशांति;-होब; वै०-नि,-हन,-हनि, कि-, दे० किचा; शायद 'कीच' से (अर्थात् कीचड की भाँति दु:खद)।

कचिआब क्रि० अ० दे० कचाब, इन दोनों क्रियाओं का भूतवाला रूप प्रायः बोला जाता है; उ० 'कचान' अथवा 'कचिआन' बाटैं, बे हिम्मत हार गये हैं; वै०-याब, कचु-।

कचूर सं० पुं० एक पौधा जिसकी जड़ सुगंधित और दवा के काम की होती है, हरियर-, खूब हरा (जैसे कचूर का पत्ता या उसकी जड), इसकी जड़ सूखती नहीं और वही लगा दी जाती है।

कचेठ वि० पुं० कुछ-कुछ पका; पकने के निकट; स्त्री०-ठि।

कचेहरी सं० स्त्री० अदालत; बैठक, सभा,-लागब,-करब,-जाब। वि०-रिहा, कचेहरी करनेवाला (व्यक्ति) या,-संबंधी (कार्य)।

कचोरा सं० पुं० कटोरा; यह उच्चारण प्राय: स्त्रियों द्वारा किया जाता है, स्त्री०-री।

कचौड़ी सं० स्त्री० दाल भरी हुई पूड़ी (दे०), वह पूड़ी जिसमें आलू या और कुछ भरा हो।

कच्च सं० पुं० गिरने या टूटने की आवाज़,-सें,-धें, ऐसी आवाज़ के साथ।

कच्च-पच्च सं० पुं० भीड, शोरगुल; 'कच्च' और 'पच्च' की अथवा जल्दी जल्दी बच्चों के बोलने की-सी आवाज़, बच्चों की बहुतायत, वै०-बच्च।

कच्चा वि० पुं० जो पका न हो (फल आदि); अपूर्ण (काम), अनुभवहीन (व्यक्ति);-पक्का, जैसा ही तैयार हो, जल्दी में तैयार की हुई वस्तु।

कच्ची वि० स्त्री० न पकी हुई, घी में न पकाई हुई (रसोई); अशिष्ट (बात); सं० पानी में पकाई रसोई; उ० हम यनके हाथे क कच्ची न खाब, मैं इसके हाथ की कच्ची (रसोई) न खाऊँगा, पूरी कचौरी आदि को पक्की कहते हैं।

कच्चै क्रि० वि० बिना पके या उबाले ही; मु०-खाब, देखकर जलना, देख न सकना, उ० मोकाँ देखिकै ऊ-खात है, मुझे देखकर वह बहुत जलता है। प्र०-कुच्चै, जैसा मिला वैसा ही।

कछनी सं० स्त्री० कमर से नीचे पहनने का कपड़ा, -काछब, ऐसा कपड़ा पहनना, तुल० "कछनी काछे" जा० (अलंकार-भूपित), पदु० १०, १२९।

कछार स० पु० नदी या झील का किनारा, ऐसे स्थान की भूमि या आबादी।

कछू सं० पुं० कुछ भी; वि० कुछ भी, कोई भी, 'कुछु' का प्र० रूप, प्र० कुच्छुइ, कुच्छ, कुच्छौ, वै० कुछू, कुछु।

कज सं० पुं० ऐब, दुर्गुण, वि०-जी, फा०, रक्स करदन खुद न दानद सहन रा गोयद कजस्त।

कजकई सं० स्त्री० चालाकी, 'कज़ाक' (दे०) होने का गुण या भाव, कज़्ज़ाक़ का भा०, वै०-पन,-ज़ाकी।

कजकपन स० पुं० 'कजाक' से भा० सं० प्राय: 'कजकई' बोलते हैं।

कजरवटा सं० पुं० काजल रखने की ढक्कनदार डिब्बी जो टाँगी जा सकती है; स्त्री०-टी, वै० रौ-, टी, सं० कज्जल।

कजरहा वि० पुं० काजलवाला, काजल लगा हुआ, स्त्री०-ही, काजर+हा, ही, सं० कज्जल।

कजरार वि० पुं० काला, काजल की भाँति, स्त्री०-रि, काजर+आर (जैसे मटियार, बड़आर), सं०।

कजरी सं० स्त्री० दीपक से निकला हुआ कालिख, कालिमा, बादलों की घनी काली घटा,-बन, एक घना जंगल जिसका वर्णन कहानियो में आता है; -लागब, काली घटा छाना; सं० कज्जल।

कजरौटा सं० पु० कजरवटा (दे०)।

कजा सं० स्त्री० अंत, मृत्यु;-आइब,-करब; मृत्यु आना, मर जाना,-होब, अर० क़ज़ा, मौत।

कजाक वि० पुं० चालाक, स्त्री०-कि; भा० कजकई;-पन,-पी; फ़ा० 'क़ज़्ज़ाक़' जो एक जंगली जाति का नाम है, ये बड़े चालाक तथा बेरहम होते हैं।

कजिआयँ सं० स्त्री० क्लिचक्लिक, मीन-मेख, 'क़ाज़ी' की भाँति बाल की खाल निकालने की क्रिया, -करब,-होब, छोटी छोटी बातों पर अड़ना। वै०-यावँ, अर० 'क़ाज़ी'।

कजो वि० दुर्गुणवाला या वाली, ऐबी; फ़ा० कज, टेढ़ापन।

कटक सं० स्त्री० लड़ाई, सं० कटक (फ़ौज), तुल० मरविहु वार कटक संहारा।

कटकटाब क्रि० अ० चिल्लाना, रुष्ट होना।

कटघरा सं० पुं० लकड़ी का घर या घेरा, थोड़ी देर के लिए बनाया हुआ घर, वै०-र· कठ-. काठ+घर।

कटच्छर सं० पुं० कटा अक्षर (लिखावट में), अशुद्धि।

कटनी सं० स्त्री० घूमकर चलने या भागने की क्रिया;-कटाइब, पकड़ न जाने के लिए दूसरी ओर से निकल जाना।

कटनवार सं० पुं० कटा हुआ टुकड़ा, बचा हुआ भाग; वै०-वर।

कटब क्रि० अ० कटना; मरना; मरब-, लड़ना, मरना,-कुटब, कट जाना, प्रे० काटब, कटाइब,-वाइब,-उब।

कटर-कटर सं० तथा क्रि० वि० किसी कड़ी चीज़ को दाँतों के नीचे काटने या दबाने की आवाज़; ऐसी आवाज़ के साथ उ०-चबाय लिहिस, उसने जल्दी-जल्दी चबा लिया; वै०कट-कट।

कटरा सं० पुं० काठ का घेरा. मैदान, जिस मैदान से कोई चीज काटकर साफ कर दी गई हो; जंगल साफ करके अधिकार किया हुआ भाग।

कटलहा वि० पुं० कटा हुआ; स्त्री०-ही. 'लहा' लगाकर क्रियाओं से 'भाग' का अर्थ देनेवाले शब्द बनते हैं. उ० फटलहा, फुटलहा; घृणा का भी भाव इससे प्रकट होता है।

कटवाइब क्रि० स० कटाना; मरवा देना. काटने में सहायता देना. वै०-उब।

कटवासी सं० स्त्री० कटे हुए बाँस का एक टुकड़ा; छोटा टुकड़ा; वै०-वाँ-; कट+बाँस। सं० वंश।

कटहर सं० पुं० एक फल और उसका पेड़ जो गर्मियों में फलता है; पनस जिसे मालवा तथा महाराष्ट्र में फनस कहते हैं।-हरी चंपा, एक चंपा जिसका फूल बड़ा होता है और जिसकी गंध पके कटहल की भाँति होती है।

कटहरब क्रि० स० पीटना; खूब मारना; प्रे०-राइब,-वाइब,-उब।

कटहा वि० पुं० काटनेवाला; स्त्री०-ही. सं० महा-ब्राह्मण जो मृत्यु-कार्य के दान लेता है।

कटाँ वि० तन्मय. सब कुछ त्याग या कर देने वाला-होब, किसी काम के लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाना।

कटाइब क्रि० स० कटाना; कटवाना काटने के लिए आज्ञा देना, सहायता देना आदि।

कटाई सं० स्त्री० काटने की क्रिया, मजदूरी आदि.-करब,-लागब,-देब. प्रे०-वाई।

कटा-कट्ट वि० बिना अन्न जल के, निराहार; क्रि० वि०बिना भोजन किये हुए, उ०काल्ही से-परा बाय, कल से ही निराहार पड़ा है।

कटानि सं० स्त्री० काटने का दाँव, काटने की जगह। 'आनि' लगाकर 'दाँव' या 'समय' का निर्देश होता है, जैसे 'पहुँचानि' (दे०)=पहुँचाने या पहुँचने का अवसर, समय अथवा मौक़ा।

कटार वि०पुं० काँटेवाला; स्त्री०-रि वै० कँ-,सं० कंटक; छुरी-मारब,-मारि लेब, आत्मघात करना।

कटारी सं० स्त्री० एक हथियार।

कटासि सं० स्त्री० काटने की इच्छा, 'सि' लगाकर इच्छा प्रगट की जाती है: उ० हगासि, लिखासि, पियासि।

कटिआ सं० स्त्री० (फसल के) काटने का मौसम, काटने की क्रिया:-परब,-होब,-करब. वै०-या;-बिनिया, काटकर तथा बीनकर (अनाज बटोरना)।

कटील वि० पुं० काँटेवाला: स्त्री०-लि. अपत कँटीली डार (बिहारी)· तेज धारवाला,काटनेवाला:-आँखि, पैनी आँख, काँटे की भाँति चुभनेवाली आँख।

कटुआ वि० पुं०जिसके किनारे कटे हुए हों (गहना): स्त्री०-ई।

कटुक वि० पुं० ज़रा सा भी अप्रिय,-बचन, तनिक अप्रिय शब्द; यह वि० केवल बात या शब्द के ही लिए आता है, उ०मैं तो वनकों-बचन नाहीं कह्यों, मैंने तो उन्हें कुछ भी अप्रिय नहीं कहा।

कटूती सं० स्त्री० बचाने की कोशिश: कंजूसी: -करब, दबा लेना, आवश्यकता से अधिक बचा लेना, काट लेना (मजदूरी, इनाम आदि). वि० कटुतिहा,-ही।

कटेरा सं० पुं० काटनेवाला।

कटैयाँ सं० पुं० स्त्री० काटने की इच्छा रखनेवाला या वाली: वै०-वैयाँ,-वइयाँ आदि यह शब्द क्रिया के साथ ही प्रयुक्त होता है: उ०-चाहो,-होय,-चाहिन,-रहिन,-रहीं, काटनेवाले हो, काटना चाहा, काटनेवाले थे,-थीं इत्यादि।

कटैया सं० पुं० काटनेवाला: वै०-वैया,-इया,-वइया,-आ।

कटोरा सं० पुं० कटोरा. स्त्री०-री,-रिया,-आ;-यस आँखि: कटोरा जैसी (बड़ी चौड़ी) आँखें;-यस मुँह बाये, कटोरे की तरह मुँह फैलाये।

कटौती, सं० स्त्री० कमी· कम करने की बात, वै०-टवी-होब,-करब, कम होना, कम कर देना(वेतन, मजदूरी अथवा मजदूरों की संख्या)।

कट्ट-कट्ट क्रि० वि० दे० कटर-कटर।

कट्ट-कुट्ट सं० पुं० काट-कूट (प्रायः लिखने में), इसी से कि० 'काटब-कूटब' भी बनती है।

कट्टू सं० पुं० (काल्पनिक) जन्तु जो काट ले; बच्चों को डराने के लिए प्रायः यह शब्द प्रयुक्त होता है, वि० भयावह, डरावना, [दोनों ही लिंगों में यह शब्द एक सा रहता है], वै० काट्टू।

कट्ठा सं० पुं० भूमि के माप का एक अंश जो ५ हाथ होता है; मु०-देब, हटना, चलना, स्थान छोड़ना (अर्थात् एक कट्ठा भी चलना), प्रायः यह मु० नकार के साथ बोलते हैं, वै०-न देहैं, वह चलेंगे ही नहीं।

कठई सं० स्त्री० मिट्टी का बरतन जिसमें गाय या भैंस दुही जाती है, यह नाम शायद इससे पड़ा हो कि प्रारंभ में यह बर्तन संभवतः काठ का रहता होगा। काठ+ई ? वै० (ल० सी० ह० आदि में) 'कछुई', 'कच्छप' से ? सं० काष्ठ।

कठउता सं० पुं० काठ का बना थाल, स्त्री०-ती, कठवति वै०-ठौता,-ती।

कठकू वि० काठ का बना, [यह शब्द दोनों लिंगों में इसी प्रकार रहता है।-कोल्हू, लकड़ी का कोल्हू (जो पहले गन्ना पेरने के लिए प्रयुक्त होता था)।

कठकरेजी वि० बड़े दिलवाला, काठ+करेज (जिसका कलेजा लकड़ी का हो), दोनों लिंगों में यही रूप रहता है, भा० का रूप भी यही है। -करब, हिम्मत करना, सं० काष्ठ।

कठघर सं० पुं० दे० कटघरा, वै०-रा, काठ+घर (सं० काष्ठ+गृह)।

कठपुतरी सं० स्त्री० कठपुतली,-क नाचि, काठ की बनी पुतलियों का नाच,-होब, खूब काम करते रहना, सं० काष्ठ+पुत्तलिका।

कठबपवा सं० पुं० वह बाप जिसने किसी की विधवा माँ से ब्याह किया हो, प्रायः ऐसे ब्याह नीचे की जातियों में होते हैं और ऐसी अवस्था में पहले पति से उत्पन्न बच्चे माँ के साथ अपने 'कठबपवा' के घर आ जाते हैं। काठ+बाप (काठ का बाप, पिता जिसमें सच्चे पिता की भावनाएँ न हों), सं० काष्ठ।

कठमचवा सं० पुं०दे०खटमचवा, सं०काष्ठ+मंच।

कठाइन वि० जिसमें काठ की सी गंध या स्वाद हो, वै०-हिन,-आइब,-लागब। काठ+आइन (हिन), सं० काष्ठ।

कठिन वि० जो किसी की बात न समझे या न माने, मुश्किल, भा०-ई,-ता, सं०।

कठुआब क्रि० अ० (मिट्टी या दूसरे गीले पदार्थ का) कड़ा हो जाना, 'काठ' से (लकड़ी की भाँति कड़ा होना), स० काष्ठ।

कठुला सं० पुं० कठ में पहनाई जानेवाला गहना, सं० कंठ।

कठेठ वि० पुं० कड़ा, स्त्री०-ठि, सं० काष्ठ (लकड़ी की तरह),-होब,-करब (प्रायः गीली वस्तुओं का),

कठोर वि० पुं० कड़ा (शब्द, पुरुष), स्त्री०-रि, भा० -ई,-ता, सं०।

कठोली सं० स्त्री० लकड़ी की कटोरी, मु०-गढ़ब, देर तक निरर्थक बातें करते रहना, सं० 'काष्ठ'।

कठौता स० पुं०काठ का बड़ा थाल जिसकी वारियाँ ऊँची होती हैं जिससे इसमें अधिक वस्तु रखी जा सके। सं० 'काष्ठ' स्त्री०-ती, कठवति। तुल० कठौता भरि लै आवा, वै०-उता (दे०)।

कठौवा वि० पुं० कठऊ (दे०), वै०-आ।

कडकड़ाब क्रि० अ० 'कड़कड़' का शब्द करना, ज़ोर-ज़ोर से बोलना।

कड़कड़ाब क्रि० अ० घबराना, घबराकर चिल्लाना, प्रे०-ड़ाइब,-उब, भा० बड़ी,-बड़ी होब,-परब, घबराहट हो जाना।

कड़वाइब क्रि० स० काँड़ने (दे० काँड़ब) में सहायता करना, पिटवाना, भा०-ई, वै० कँडाइब,-उब।

कड़ा सं० पुं० पैर में पहनने का गहना,-छड़ा, दो चाँदी के गहने जो एक दूसरे के ऊपर पाँव में स्त्रियाँ पहनती हैं।

कड़ा वि० कठिन, कठोर, बहुत अधिक (दुःख या बीमारी);-होब, भा० -ई, स्त्री०-ड़ी, असंभव, उ०वनकै बचब-है, उसका बचना असंभव है।

कड़ाई सं० स्त्री० कड़ा होने का भाव, सख्ती,-करब,-होब।

कड़ाकुलि सं० स्त्री० एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया जो जाड़ों में मैदान की ओर सैकड़ों की संख्या में एकत्र उड़ती और बोलती हुई आती है। यह बहुत ऊँची उड़ती हैं और ज़ोर-ज़ोर से बोलती हैं, इसी से,-यस, शोर करनेवाला, मुहा० है।

कड़ाही सं० स्त्री० दे० कराही।

कड़ी स० स्त्री० ज़ंजीर का एक भाग, लकड़ी का लंबा टुकड़ा जो मकान में लगता है, गाने का एक भाग, लकड़ीवाले अर्थ में वै०-री।

कड़ू वि० कड़वा या कड़ुई, वै०करू, सं० कटु।

कड़े-कड़े ध्व० कौवों को उड़ाने के लिए यह शब्द कहा जाता है, जैसे कुत्तों को बुलाने के लिए 'तूतू' (दे०) इत्यादि।

कड़ौं-कड़ौं ध्व०ज़ोर-ज़ोर से वोले या कर्णकटु शब्द, चिल्लाहट;-करब, शोर करना; शा० 'कर्ण' से संबद्ध (अर्थात् ऐसे शब्द जो कानों पर आक्रमण करें)।

कढब क्रि० अ० निकलना, प्रे० काढ़ब, कढाइब,-वाइब,-उब, पं०।

कढा सं० पुं० काढ़ा (दे०),-बनइब,-पियब।

कढाइब क्रि० स० निकलवाना, ज़बरदस्ती करके निकालना; ज़ोर से निकालना, निकालने में सहा-

यता करना (कड़ा, पहना गहना आदि)। वै०-उब, काढ़ा।
कढाई सं० स्त्री० कड़ाही, दे० कराही।
कढ़ी सं० स्त्री० बेसन या अन्य आटे की बनी भोजन की सामग्री, जिसमें मसाले, गुड़ आदि पड़ते हैं और जो रोटी तथा भात दोनों के साथ खाई जाती है। महाराष्ट्रवाले इसमें और दाल में भी गुड़ डालते हैं।-चट्ट, मराठों का एक घृणात्मक नाम क्योंकि वे कढ़ी बहुत खाते हैं।
कढुआ सं० पुं० ज़बरदस्ती किसी की कन्या का डोला (दे०) निकलवा कर उससे व्याह कर लेने का रिवाज,-कढ़ाइब, ऐसा व्याह कर लेना, 'काढ़ब' (निकालना) से। वि० पुं० निकाला हुआ, फेंका हुआ, घर से बाहर किया हुआ, निरर्थक; स्त्री० -ई।
कढ़ैआ सं० पुं० निकालनेवाला; नक्काशी करनेवाला, काढ़नेवाला या वाली। प्रे० कढ़वैआ, वै०-या।
कणाजि सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जिसकी छाल कड़वी होती है।
कत वि० पुं० कितने, कितना, वै० रा,-तिक,-ना, स्त्री०-ति, प्र०-त्ती, केत्ती, कविता में 'केते' 'केती' प्रयुक्त होता है। प्र०-त्ता, केत्ता।
कतना वि० कितना, स्त्री०-नी; वै० के-,-रा,-री।
कतरन सं० पुं० कपड़े से कटे हुए छोटे-छोटे टुकड़े।
कतरनी सं० स्त्री० कैंची; यस० जल्दी जल्दी (जीभ चलना)।
कतरब क्रि० स० कतर लेना, काट लेना मु० बात बनाना, वै० कु-, कुतु-(धीरे से), प्रे०-राइब,-वाइब,-उब, भा० -राई,-वाई।
कतर-ब्योंत सं० पुं० कठिनतापूर्वक प्रबन्ध; किसी प्रकार प्रबंध,-करब, किसी प्रकार पूरा करना या जुटाना दे० ब्योंत, बेवँत, कतर (काटकूट) + ब्योंत (प्रबंध)।
कतराब क्रि० अ० किनारे चला जाना, अलग हो जाना, बचराना, डरना (किसी बात या व्यक्ति से)।
कतल सं० पुं० हत्या,-करब,-होब -क राति, महत्त्वपूर्ण अवसर (मुहर्रम की कथा से), फ़ा० क़त्ल।
कतहुँ क्रि० वि० कहीं किसी स्थान पर, सं० कुत्र, वै०-तौ प्र०-हूँ,-तौं,-त्त-; चाहे-, चाहे कहीं,-न, कहीं नहीं।
कतवार सं० पुं० कूड़ा-करकट, खर-(दे० खर), वै० कताउर।
कताइब क्रि० स० कतवाना, कातने में मदद करना, प्रे०-वाइब,-उब, वै० उब; भा० -ई,-वाई, कताई-बिनाई।
कताई स० स्त्री० कातने की क्रिया, मज़दूरी आदि, -बिनाई, कातने और बुनने की कला।
कतिक वि० कितना, कितने, (यह शब्द संख्या तथा तौल आदि सब के लिए प्रयुक्त होता है)।
कतिकहा वि० कातिकवाला, कातिक में मस्त (कुत्ता), सं० कार्तिक।
कतौं क्रि० वि० कहीं, प्र०-त्तौं, कहीं भी; वै०-तहूँ,-तहुँ,-तहूँ; चाहे कहीं, चाहे जहाँ;-न, कहीं नहीं।
कतौ अव्य० या तो, वै० कि-।
कत्तई वि० निश्चित, पक्का, क्रि० वि० निश्चयपूर्वक (कहना, करना आदि); अर० क़तई।
कत्ती सं० स्त्री० एक प्रकार की बँधी-बँधाई पगड़ी जिसे सिर पर हाथ से फिर बाँधने की आवश्यकता नहीं पड़ती।-दार, कत्ती समेत,-वाला।
कत्थू वि० किसी भी, प्रायः यह शब्द निरर्थकता प्रगट करने के लिए प्रयुक्त होता है,-लायक नाहीं, किसी काम का नहीं,-काम के न, निरर्थक।
कथक सं० पुं० नाचने और गाने का पेशा करनेवाला पुरुष, वै०-थि-,-त्थ-, सं० कथा (कथा गाकर सुनाने और नाटक करनेवाला), भा० -थिकई, कत्थकपन,-ई।
कथरा सं० पुं० बड़ी मोटी कथरी (दे०), घृ० प्रयोग।
कथरी सं० स्त्री० फटी हुई बिछाने की (कई कपड़ों को एकत्र सीकर बनाई) वस्तु, पके कटहल का छिलका जिसका भीतरी भाग ग़रीब लोग खाते हैं;-गुदरी, फटा पुराना कपड़ा; प्र० कत्थर-गुद्दर; सं० कन्था, कहा०कत्थर गुद्दर सोवैं मरजादू बइठि रोवैं।
कथहा वि० कथा कहनेवाला (पंडित या ब्राह्मण); घृ० क्योंकि यह उन्हीं ब्राह्मणों के लिए आता है जो कथा कहकर ही अपना निर्वाह करते हैं।
कथा सं० स्त्री० सत्यनारायण की कथा, श्रीमद्भागवत की कथा; प्रथम अर्थ में पुंल्लिङ्ग भी बोलते हैं, पर दूसरे अर्थ में सदा स्त्री०,-कहब,-बैठब,-कहाइब, -बैठाइब, ऐसी कथा होना, या इसका कराना, -वार्ता, धार्मिक सम्मेलन या सत्संग, स०।
कथिक दे० कथक, प्र०-त्थि।
कदम सं० पुं० पग, पैर, चरण;-उठाइब, चलने का कष्ट करना,-धरब, चलना, यक-, चारि-, थोड़ी दूर, फा० क़दम।
कदम सं० पुं० एक पेड़ और उसका फूल जो गोल पीले रंग का होता है और फल में परिवर्तित हो जाता है; साहित्य तथा गीतों में इसका विशेष वर्णन है, प्रायः कृष्ण संबंधी कथाओं में, सं० कदंब; वै०-मि, कभी-कभी स्त्री० में भी बोलते हैं, जैसे-सियाँ के तरें, कदम के नीचे।
कदर सं० स्त्री० मूल्य, आदर,-करब,-होब, बे-, नकदर, निकृष्ट (वि०), वै०-रि, वि०-री, क़द्र करने वाला फा० क़द्र।
कदरई सं० स्त्री० दे० कादर, दे०-पन।
कदराब क्रि० अ० हिम्मत हारना, डरपोक हो

जाना, किसी काम में हिचक करना, कार्य मारंभ करके पीछे हटना; कादर (दे०) से।
कथवँ क्रि० वि० कौन जाने, शायद; वै०-धौं, -दहुँ,-धौं।
कन सं० पुं० कण; चावल, गेहूँ आदि अन्न के छोटे टुकड़े, अन्न का मैल;-खुदी, अन्न का फेक देनेवाला भाग, निकृष्ट भाग या भोजन, वै०कना, स्त्री०-नी, सं० कण।
कनइल सं० पुं० एक फूल जो लाल तथा पीला होता है और जिसका पेड़ बड़ा होता है, कनेर, जिसका दूध आक के दूध की भाँति विषैला होता है। सं० कणेरु।
कनई सं० स्त्री० कीचड,-होब, ठंडा हो जाना।
कनउज सं० पुं० कन्नौज जिसका आल्हा (दे०) में बहुत वर्णन है;-जिआ, कन्नौज का,-बाभन, कान्य-कुब्ज ब्राह्मण।
कनऊ सं० पुं० काना व्यक्ति, 'काना' या 'कनवा' का आदरप्रदर्शक या व्यंग्यात्मक रूप, स्त्री० कानौ।
कनखिआ सं० पुं० आँख का कोना, क्रि० वि० तिरछे (देखना, ताकना), वै०-आँ,-या, कोन+आँखि (आँख का कोना);-ताकब,-देखब,-अन, चुपके से या जल्दी (देखना)।
कन्चन वि०हरा-भरा,-होव; हरिअर-, खूब हरा-भरा (पेड़, बाग आदि), सोना,- बरसब, संपत्ति होना, सं० कंचन।
कन्चित क्रि० वि० शायद, सं० कदाचित् से।
कनचोदा वि० पुं० बदमाश, हरामी, कन (काना)+चोदा=काने (पिता) का जन्माया हुआ, स्त्री०-दी।
कन्छट सं० पुं० स्त्रियों का कोई गुप्तांग; यह शब्द केवल गाली में प्रयुक्त होता है; उ० तोरे-में, तेरे ··, जैसे "तोरी गाँडी में···।"
कनछेदन सं० पुं० कान छेदने का संस्कार; वै०-नि, स्त्री०।
कनटोप सं० पुं० जाड़ों में पहनने की टोपी जिससे कान ढके रहते हैं, कन (कान)+टोप (टोपी) या तोप (दे० तोपव, ढकना); वै०-पा।
कनटाइन सं० स्त्री० झगड़ालू स्त्री, वि० लड़ाका (स्त्री), वै०-नि।
कनपटी सं० स्त्री० कान के पास का मत्थे का भाग, वै०-टा, कन (कान)+पटी (पट्टी=टुकड़ा)।
कनफटा सं० पुं० वह साधू जिसके कान फाड दिये गये हों; ऐसे साधू कुछ कबीरपंथी और कुछ गोरख-नाथ के अनुयायी होते हैं।
कनफोर सं० पुं० ज़ोर का कर्णकटु शब्द जो बरा-बर होता रहे,-करब,-होव, कन (कान)+फोर फोरव=फोड़ना, दे० फोरब।
कनबोजा सं० पुं० कान के दोनों किनारे का भाग कान+बोजा।
कनमइलिया सं० पुं० कान से मैल निकालनेवाला व्यक्ति, जिसका यही पेशा होता है। ऐसे लोग अपने औज़ार आदि लिये घूमा करते हैं। कन (कान)+मइलि (दे०), मैल।
कनमनाब क्रि० अ० सोते से जग जाना; बुरा मानना, बड़बड़ाना, किसी बात को बुरा मानकर कुछ कहना या दौड़-धूप करना। कन (कान)+मन, कान से सुनकर मन में (किसी बात को) लाना।
कनरब क्रि० अ० किनारे से कटता जाना (फल, पत्ता अथवा पेड, पशु या व्यक्ति का अग), किनारा (दे०) से, यद्यपि 'किनराब' (दे०) एक दूसरी क्रिया भी है।
कनवा सं० पुं० काना पुरुष; यह घृ० रूप है और आदरप्रदर्शक रूप है 'कनऊ'। सं० काणः, यह शब्द वि० के रूप में भी प्रयुक्त होता है।
कनाब क्रि० अ० काना हो जाना, काने की भाँति व्यवहार करना, न देख सकना। सं०काणः (व्यं०)।
कनिआ सं० स्त्री० गोद; वै०-या,-आँ,-म, गोद में;-लेब, गोद में लेना, कभी कभी यह शब्द पुं० में भी बोला जाता है।
कनिआर वि० पुं० योग्य; दूसरों के लिए कुछ करनेवाला, स्त्री०-रि, वै०-न्हि-,-होब, सं० स्कंध (कंधेवाला); संस्कृत में पुरुषों के बड़े कंधों को सम-र्थता का सूचक कहा गया है-"व्यूढोरस्कः वृषस्कंधः शालप्रांशुः महाभुजः" (कालिदास); अथवा 'कनी' (दे०) से, जिसमें बहुमूल्य टुकड़े हों या होसकें।
कनी सं० स्त्री० छोटा टुकडा, प्रायः हीरे या अन्य बहुमूल्य रत्नों के टुकड़ों के लिए प्रयुक्त।
कनुआब क्रि० अ० गंदा हो जाना (पानी का); बरसात के बाद अथवा सफाई होने पर (कुएँ या तालाब के पानी का) गदला रहना, प्रे०-इब, मु० जिउ-, तबियत हट जाना, ऊब जाना।
कनुई वि० स्त्री० दे० कानी (उँगली, स्त्री)।
कनेठी सं० स्त्री० कान पकड़ने की क्रिया, या दंड,-लगाइब,-देव, कान ऐंठना, इस प्रकार दंड देना, सं० कर्ण+एंठव (दे०)
कनौजिया वि० पुं० कन्नौज का, दे० कनउज, अवध की कई जातियों में कनौजिया तथा अन्यान्य भेद होते हैं, सं० कान्यकुब्ज।
कन्जड सं० पुं० एक नीच जाति जिसके पुरुष गीदड आदि का शिकार करते हैं। ये लोग बहुत लड़ाके और प्रायः जंगली होते हैं। इसी से शोरगुल एवं झगड़ों के लिए इनका उदाहरण दिया जाता है, का-यस लड़त हौ, क्या कंजडों की भाँति लड़ते हो?
कन्जहा वि० पुं० जिसकी आँखें कंजे (दे०-जा) की भाँति भूरी हों, स्त्री०-ही; घा०-हऊ, घृ०-हवा,-हिआ, वै०-जा,-जी, कहा० करिया बाभन गोरिया सूद, कजा तुरक भुवर रजपूत।

कन्जा सं० पुं० एक कटीला जंगली पेड़ जिसमें काँटे होते हैं। इसकी झाड़ी होती है और इसके फल भूरे रंग के होते हैं जो कई ओषधियों में काम आते हैं।
कन्ना वि० पुं०कीड़ा लगा हुआ (फल, गन्ना आदि) स्त्री०-न्नी, क्रि०-व, कीड़े से खराब हो जाना।
कन्नादान सं० पुं०कन्यादान;-देव,-लेव,-होव।
कन्नी सं० स्त्री० औज़ार जिससे राज काम करते हैं;-बँसुली, दोनों औज़ार।
कन्हावरि सं० स्त्री० वह कपड़ा जो वर की ओर से वधू के भाई (प्राय: छोटे) के लिए व्याह में आता है; इसी को कंधे पर रखकर वह विवाह संस्कार में भाग लेता है; सं० स्कंध (कन्धे पर रखने के कारण)।
कन्हैया सं० पुं० श्रीकृष्ण जी;-होव,-बनव मौज करना; सं०।
कपछई सं० स्त्री० विपत्ति, कष्ट,-करब,-होब, सं० कफक्षय (जो रोगों का राजा कहा जाता है), वै०-पु,-फ-।
कपट सं० पुं० धोखा, छल,-करब,-राखब, छल-, वि०-टी, कपट करनेवाला, सं०, मु० काट-कपट, अस्पष्ट व्यवहार।
कपटव क्रि० स० काट लेना बचा लेना; काटव-चुराना; वै० कुपु-, प्रे०-टवाइब, कुपु-।
कपड़-छान सं० पुं० कपड़े से छानने की क्रिया या नियम;-करब, जैसे दवा आदि को करते हैं; कपड़ (कपड़ा) + छान (दे० छानब)।
कपड़ा सं० पुं० वस्त्र; लत्ता,-से रहब,-होब, ऋतुमती होना;-ही, कपड़े की दूकान या व्यापार,-ड्हा, कपड़ेवाला -ड्ही करब, कपड़े की दूकान करना, कपड़ाही और कपड़ही दोनों रूप प्रचलित हैं।
कपार सं० पुं० सिर, तोहार-, तुम्हारा सिर (अस्वीकृति प्रकट करने का प्रबल रूप) अर्थात् तुम मूर्ख हो, तुम्हारी बात ग़लत है। सं० कपाल, कर्पर,-फोरब,-पीटब,-खाब, परेशान करना।
कपास सं० स्त्री० रुई, स० कार्पास।
कपिला वि० स्त्री० काले और लाल के बीच के रंग की, प्राय: गाय के लिए ही यह वि० आता है; सं०।
कपूत सं० पुं० नालायक पुत्र, योग्य पिता का अयोग्य पुत्र, सं० कुपुत्र,-होब,-जनमब,-जनमाइब।
कपूर सं० पुं० कपूर सं० कर्पूर।
कपूरा सं० पुं० बकरे का अंडकोप, स्त्री०-री, एक सुगंधमय जंगली बूटी,-जमाइब।
कपूरी सं० स्त्री० एक बूटी जिसके जड़ में कपूर सी सुगंध होती है। इसकी पत्ती साँप की दवा के काम आती है।
कफ सं० पुं० खाँसने पर भीतर से निकलनेवाला सफेद मैल-करब,-धरब,-होब सं०।
कब क्रि० वि० किस समय, प्र० ब्बै,-ब्बौं,-हुँ,-हूँ,-बों,-ब्बै न, बहुत देर पहले,-ब्बौं न, कभी तो,-ब्बौं न,कभी नहीं।
कब न क्रि० वि० बहुत पहले, प्र० कब्बै न, कबय न; कब्बौं न (कभी नहीं)।
कबरा वि० पुं० काले और लाल रंग का, स्त्री० -री, चित-,काले और सफेद धब्बों वाला,-री, वै० काबर, चित-।
कबलै क्रि० वि० कब तक वै०-लौं।
कबाइति सं० स्त्री० नियमानुकूल चलने, उठने बैठने आदि की क्रिया,-करब,-होब,-लेब,-देब; मु० नियमों का अत्यधिक पालन, कष्ट; वै०-बा-,अर० कवायद (कायदः का बहुवचन)।
कबाब सं० पुं० भुना हुआ मांस का छोटा टुकड़ा जिसमें मसाला मिला होता है और जिसे लोहे के सिकचे पर रखकर सेंकते हैं-होब, भुन जाना, बहुत अप्रसन्न होना, भीतर ही भीतर रुष्ट होना। अर०।
कबाला सं० पु० लिखित बिक्री-पत्र,-करब,-लिखब, -होब, अर० क़बालः।
कबाहति सं० स्त्री० परेशानी, झंझट,-करब,-होब, वै०-ट,-टि।
कबिताई सं० स्त्री० कविता,-करब; मु० तरकीब, प्रयत्न,-लागब,-न लागब, तरकीब सफल होना या न होना। उ० "कवि कहँ देन न चहै विदाई, पूछै केसव की कविताई।"
कबित्त सं० पुं० छंद का एक भेद जिसे प्राय: पढ़े-लिखे देहाती भी याद रखते और गाते हैं। सं० कवित्व।
कबिरा सं० पुं० कबीर का नाम जो प्राय: इनकी बानियों में आया है। उ० "खरी-खरी कबिरा कही और कह्यो सब झूठ।"
कबिराज सं० पुं० अच्छा कवि, कविता सुना कर भीख माँगनेवालों की एक मुसमान जाति का व्यक्ति।
कबीं वि० राजी;-होब,-रहब,-करब।
कबीर सं० स्त्री० एक प्रकार का गीत जो देहाती फागुन में गाया करते हैं और जिसमें प्राय: गाली-गलौज होता है। इसके अंत में "कबीर अररर..." होता है; वै०-रि,-बोलब,-गाइब, ऐसा गीत गाना। अर० कबीर (बड़ा)।
कबीसन सं० पुं० कमीशन -देब,-लेब,-खाब अं० कमिशन।
कबुज सं० पुं० अपच; कब्ज़,-होब,-धरब,-याम्हब -करब; वि०-जी,-जिहा, जिसे कब्ज़ हो, अपच करने-वाला (पदार्थ), अर० क़ब्ज़।
कबुला सं० पु० क़ब्जा, अधिकार; यह शब्द दर-वाज़े में लगनेवाले उस लोहे के पेंच के लिए भी आता है जो लकड़ी में ठोंक दिया जाता है;-लगाइब; दे० क़ब्जा।
कबुर सं० स्त्री० कब्र; वै०-रि, अर० क़ब्र।

कबुलवाइब क्रि० स० स्वीकार कराना,कबूल कराना "कबूलब" से प्रे०; वै०-उब,-लाइब,-लाउब ।
कबुली सं० स्त्री० एक प्रकार की सफेद मटर; दे० काबुली, इस प्रकार की मटर को "कबुली केराव" भी कहते हैं। दे० केराव।
कबूतर सं० पुं० प्रसिद्ध चिड़िया; फ़ा० ।
कबूल वि० स्वीकृत,-करब,-होब; फा० मक़बूल, क्रि०-ब, मानना, अर० कबूल ।
कबेलू सं० पुं० एक रंग; खपरैल ।
कबोधनि सं० स्त्री० व्यर्थ की बात,-गढ़ब,-करब, बकवास करना, सं० बोधय (बतलाना, वर्णन करना)।
कबौं क्रि० वि० कभी, प्र०-ब्बौं, दे० कब, वै०-बौं।
कब्जा सं० पुं० अधिकार,-करब,-होब,-लेब, -पाइब,-देब, वै० कब-,-बुजा;-दखल, पूरा अधिकार, वास्तविक अधिकार, दे०-बुजा ।
कम वि० थोड़ा,अधिक नहीं यह शब्द संख्या तथा परिमाणवाचक दोनों है, भा०-मी,-ती फ़ा० कम,-तर, कुछ कम ।
कमकर सं० पुं० नीची जाति का व्यक्ति; वि० नीच जिसके माँ बाप का ठीक पता न हो, शूद्र; कम (काम)+कर (करनेवाला) अर्थात् खेती बाड़ी या मज़दूरी का काम करनेवाला। भा०-ई।
कमगर वि० पुं० काम का; लाभदायक, स्त्री०-रि, फा० 'कारगर' का अनुकरण करके यह शब्द बना लिया गया है। दे० कामगीर ।
कमजोर वि० पुं० निर्बल, वै०-ड़, भा० -री, पं० नाजोड़,-ड़ी, फ़ा० कमज़ोर ।
कमती सं० स्त्री० कमी, आवश्यकता, टोटा; वि०, कुछ कम, फ़ा० कम ।
कमबुझ वि० पुं० कम बुद्धिवाला, बेसमझ; स्त्री०-झि, कम+बूझ (बुद्धि का बूझ हो गया है), सं० का ध प्राकृत में झ हो जाता है। भा०-ई, बुद्धि-हीनता ।
कमरा सं० पुं० कंबल, स्त्री०-री, छोटा कंबल; वै० कम्मर; कहा० कम्मर पर जब परै पिछौरी जाइ बेचारा करै चिरौरी। (दे०)
कमवाइब क्रि० स० काम लेना, मज़दूरी कराना; भा० -ई; वै०-उब; सं० कर्म ।
कमहगि सं० स्त्री० काम करने की अवधि, मज़दूरी, परिश्रम;-करब,-होब; स० कर्म ।
कमाई सं० स्त्री० उत्पन्न की हुई वस्तु, आमदनी; -खाब,-करब,-होब, सं०कर्म, फा०कमाईगर ।
कमाऊ वि० कमाई करनेवाला या वाली; मेहनती,-पूत, परिश्रमी पुरुष, सं० कर्म, फ़ा० कमाईगर ।
कमान वि० पैदा किया हुआ उपार्जित,-खाब, निर्भर रहना, सं० कर्म।
कमानी सं० स्त्री० लचनेवाली लोहे या अन्य धातु की स्प्रिंग; फा० कमान ।
कमाब क्रि० अ० काम करना, मज़दूरी करना, स० परिश्रम करके ठीक करना (खेत आदि), प्रे०-वाइब, -उब, सं० कर्म ।
कमासुत सं० पुं० काम करके दूसरों को खिलाने वाला व्यक्ति, कमा (कमाकर सहायता करनेवाला)=कमाऊ + सुत (पुत्र), वि० योग्य, श्रमी।
कमिआगिरी सं० स्त्री० तरकीब या चालाकी से कुछ बचा लेने की आदत, कम कर देने की चाल, कमी + फ़ा० गीरी (ले लेना)=कमी करके (स्वयं) ले लेना, वै०-यागीरी, अर० कीमिया (रसायन)।
कमी सं० स्त्री० न्यूनता,-करब,-होब ।
कमीचि सं० स्त्री० छोटा नये ढंग का कुर्ता, कमीज़, अर० कमीज़, लै० केमीसिया ।
कमीना वि० पुं० नीच, दुष्ट, स्त्री०-नी, भा०-पन, -मिनई,-मिनपन, अर० कमीनः ।
कमीसन दे० कबीसन ।
कमेटी सं० स्त्री० सलाह, कई व्यक्तियों की बैठक, -करब,-होब, वै०कु-, अं० कमिटी ।
कमेरा वि० पुं० कमानेवाला ।
कमोरा सं० पु० बड़ा घड़ा, मटका, स्त्री०-री ।
कम्मर दे० कमरा, कंबर ।
कय वि० कितने,-ठूँ,-ठें, संख्या में कितने, वै०-इठूँ, -ठें,-ठीं, कै,-जने, कितने पुरुष,-जनी, कितनी स्त्रियाँ। प्र० कइउ, कइयउ,-अउ, कई। स० कत
कर सं० पुं० कल,-पुर्जा; घाँट, तरकीब ।
कर संबोध-सूचक शब्द, का, की, उ० यन-,वन-, जेकर बिटिया, जिसकी बेटी, स्त्री० कभी-कभी -रि।
करइल सं० पुं० बाँस का कोपल, बाँस की नई डाल,-य्स, ख़ूब लंबा ।
करक सं० पुं० पेट का दर्द,-थाम्हब,-पकरब,पेशाब रुकने के कारण दर्द होना, सं० कर्क ।
करकच सं० पुं० बार बार का झगड़ा,-करब,-होब वि०-हा,-ही,-करनेवाला,-ली, झगड़ालू ।
करकट सं० पुं० कूड़ा, कचड़ा, कूरा- ।
करकब क्रि० अ० दर्द करना (काँटा आदि)।
करकस वि० पुं० सख्त काम लेने में कड़ा, स्त्री०-सि, भा०-ई, सं० कर्कश ।
करछु सं० पुं० नमकीन एवं कटु स्वाद,-मारब, वै०-छं, क्रि०-छाब, ऐसा लगना ।
करछुलि सं० स्त्री० कलछी, पुं०-ला, वै० कल-।
करजा सं० पुं० ऋण,-देब,-लेब, वै०-जि, अर० कर्ज़, वि०-जी, ऋणी,-जिहा, ऋण लेनेवाला ।
करनी सं० स्त्री० बुरा काम, वै० कर्नी, कुल-करब, -होब, सब कुछ करना या होना (बुराभला सब)।
करब क्रि० स० करना, प्रे०-राइब,-वाइब,-उब।
कराइब क्रि० स० करवाना, करब का प्रे०, वै०-उब, प्रे० करवाइब,-उब, स० क्रि ।

करा सं० पुं० सन (दे०) या मूँज (दे०) का टुकड़ा, दो करे मिलाकर रस्सी बटी जाती है। उ० यक करा पेटुआ (दे०), एक टुकड़ा सन, मूँजि, यह शब्द पुं० और स्त्री० में तथा बहुवचन में भी एक सा ही रहता है, चारि करा इत्यादि।
करायल सं० पुं० एक प्रकार का गोंद या लासा जिनमें खुशबू होती है। इसे देहाती स्त्रियाँ माँग सँवारने में लगाती हैं।
करार सं० पुं० समझौता, वादा, किनारा (दे० करारा),-करब,-होब,-मदार, एक दूसरे से किया हुआ निश्चय, फा० करारदाद।
करारा वि० पुं० सख्त, बलवान, स्त्री०-री, सं० पुं० किनारा (नदी या ताल का), वै०-र, "माँगत नाव करार पै ठाढ़े"-तुल०।
करारी क्रि० वि० अवश्य, निःसन्देह, करार के अनुसार।
कराल वि० कठोर, निर्दय सं०।
कराह सं० पुं० लोहे का बड़ा बर्तन, जिसमें गन्ने का रस आदि पकता है कड़ाह, स्त्री०-ही, सं० कटाह।
कराही सं० स्त्री० कड़ाही,-मानब,-देब,-चढ़ाइब, देवी देवताओं के स्थान पर (कड़ाही में) पकवान बनाकर अर्पित करना, सं० कटाह।
करवँट सं० पुं० करवट,-लेब,-करब,-बदलब।
करिंगा सं० पुं० आल्हा में वर्णित प्रसिद्ध पुरुष जिसे करिया, करिंगाराय आदि भी कहते हैं।
करिआ वि० काला या काली, यह शब्द भी दोनों लिंगों में एक सा रहता है, उ०-मरद,-मेहरारु (दे०), कहा०-अच्छर भइँस बराबर, करिआ बामन गोरिया सूत,-करिंगन, खूब काला (जामुन)।
करिआइब क्रि० स० भीतर कर देना, बंद कर देना (पशु, मनुष्य आदि को), बंदी करना, प्रे०-वाइब; करिआब का प्रे०। सं० कारा।
करिआब क्रि० अ० भीतर बंद होना, क़ैद हो जाना, प्रे०-आइब,-उब, सं० कारा से, भू० करिआन। (भीतर बंद या घुसा हुआ)।
करिआरी सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जिसमें विष होता है।
करिक्का वि० पुं० काला, स्त्री०-क्की।
करिखहा वि० पुं० कालिख लगा हुआ काला; शर्मिंदा, बेशर्म, स्त्री०-ही।
करिखा सं० पुं० कालिख;-देब,-लागब,-लगाइब, मुँह काला कर लेना, (शर्म अथवा बदनामी के कारण)।
करिगह सं० पुं० जुलाहे का औज़ार जिससे बुनाई होती है, कहा० करिगह छाँडि तमासे जाय, नाहक चोट जोलाहा खाय।
करिना सं० स्त्री० कन्या, अविवाहित लड़की,-दान,-देब,-खवाइब, कन्याओं को भोजन कराना (प्रायः नवरात्रों में या मानता में);-कुँआरि, कुँआरी कन्या।
करिया वि० दे०-आ,-भुजंग, साँप जैसा काला,-बादर होब, बादलों की भाँति एकत्र हो जाना।
करियाइब क्रि० स० बंद करना, क़ैद कर देना; वै० करिआ-, प्रे०-वाइब,-उब सं० कारा।
करिवाइब क्रि० स० जेल करा देना, बंद करने में सहायता करना (पशुओं को), वै०-उब सं० कारा।
करिहावँ सं० स्त्री० कमर,-भर (पानी), कमर तक गहरा प्र०-हाईं भर; सं० कटि।
करी सं० स्त्री० दे० कड़ी यह शब्द प्रायः लकड़ी वाले अर्थ में ही आता है, जंजीर और गानेवाले अर्थ में 'ड़ी' रहता है। दे० कड़ी।
करीना सं० पुं० तरीका, आदत, व्यवहार, अर० क़रीनः।
करीब वि० निकट;-बी, निकट का (नातेदार) अर० करीब।
करील सं० पुं० एक जंगली पेड़ जो व्रज में बहुत होता है और जिसका व्रज-काव्य में प्राय वर्णन है।
करुअई सं० स्त्री० कड़ुआपन, वै०-आई सं० कटु।
करुआर सं० पुं० लोहे का काँटा,-लगाइब,-लागब।
करुआब क्रि० अ० कड़ुआ लगना, कड़ुआ हो जाना, सं० कटु।
करुई वि० स्त्री० थोड़ी देर पूर्व लगी हुई (नींद), इसका अर्थ शायद यों हो गया कि ऐसी नींद का टूटना बहुत बुरा लगता है। सं० कटु।
करुख वि० कटु (शब्द),-बोलब,-कहब, कड़ा शब्द कह देना, वै० कु-, सं० कटु, करुष, कर्कश, फ़ा० करख्त।
करेंठा वि० पुं० काला काला (व्यक्ति) घृ०, स्त्री० -ठी, बदमाश काली स्त्री।
करेज सं० पुं० कलेजा, हिम्मत, दिल,-करब,-होब, बड़ा-, बहुत हिम्मत, कठ-जी, हिम्मतवाला (जिसका कलेजा लकड़ी का सा हो), प्र०-जा, स्त्री०-जी।
करेजी सं० स्त्री० बकरे आदि के कलेजे का नरम भाग जो खाया जाता है, कठ-, दे० करेज।
करेर वि० पुं० सख्त; कड़ा; अधिक अवस्था का (जवान), स्त्री०-रि, मु० पुष्ट, बलवान,-करब,-परब, सख्ती से व्यवहार करना भा०-री,-रई।
करैआ सं० पुं० करनेवाला, वै०-या,-धरैआ, परिश्रम करनेवाला, सहायक।
करैला सं० पुं० करेला, स्त्री०-ली, वै० करइ-; कहा० यकतो-दुसरे नीम चढ़ा।
करैया सं० पुं० करनेवाला, "करैआ" का प्र० रूप।
करोइब क्रि० स० नीचे से पोंछ या खुरच लेना; अच्छी तरह पोंछना।
करोनी सं० स्त्री० जिस मिट्टी के बर्तन में दूध खौलाया जाय उसके भीतर से खुर्ची हुई मलाई जो सोंधी

होती है और प्रायः छोटे-छोटे बच्चों को दी जाती है। सी० ह०-रवावनि,-वनी -चनि।
करोर सं० पुं० करोड़, सं० कोटि, वै० कि-।
करोरब क्रि० स० खुरचना, प्रे०-रवाइब,-उब।
करौनी सं० स्त्री० कुछ करने की मज़दूरी।
करब क्रि अ० शाप देते रहना, दाँत-,ईर्ष्या करना, बुरा चाहना।
कलँगी स० स्त्री० पगड़ी के ऊपर निकला हुआ अंश, चिड़ियों के सिर पर उठा हुआ भाग, जुलफ़ी।
कल सं० पुं० कुशल, ठीक हालत;-कुसल, अच्छा समाचार,-से;-परब,-पाइब, आराम पाना।
कलई सं० स्त्री० क़लई,-करब,-होब, फ़ा० क़लई।
कलऊ स० पुं कलियुग, सं० कलि।
कलक सं० पुं० हृदय की अपूर्ण इच्छा,-होब,-रहय, -मिटब,-मिटाइब, अर० क़िल्क़।
कलकलाब क्रि० अ० (खौलते घी या तेल की) 'कलकल' आवाज़ करना; प्रे०-इब,-उब, खौलाना।
कल-कुसल सं० पुं० आनंद, मंगल, कल्याण।
कलजुग सं० पुं० कलियुग,-हा, कलियुग की (बुरी) बातें जानने या करनेवाला, स्त्री०-ही, वि०-गी, कलियुग का; सं०।
कलझब क्रि० अ० दुःख या वियोग से तड़पना, प्रे०-झाइब,-उब,-वाइब,-उब।
कलपब क्रि० अ० हार्दिक इच्छा करना, तरसना, प्रे०-पाइब,-उब, सं० कल्प।
कलबली सं० स्त्री० खुजली की एक उपजाति, -होब।
कलम सं० स्त्री० लेखनी, प्राय.-मि, सं० कलम, फ़ा० क़लम, लै० कैलमस।
कलसा सं० पुं० पानी का घड़ा, स्त्री० सी, सं० कलश, सी० ह०-सु।
कलह सं० पुं० झगड़ा,-ही, झगड़ालू, कभी-कभी स्त्री० में भी बोला जाता है। वै० कल्ला, झगरा-कल्ला,-होब,-करब, सं०।
कलाँ वि० उम्दा, बढ़िया,-रासि, बहुत बढ़िया (वस्तु, जानवर), प० कलारास, स्वागत, फ़ा० कलान (बड़ा)।
कला सं० स्त्री० चाल, चतुरता, चालाकी,-करब, -आइब,-पढ़ब,-वंत, चालाक।
कलाई सं० स्त्री० हाथ की कलाई,-घड़ी, हाथ पर बाँधने की घड़ी।
कलाक सं० पुं० घंटा, यह शब्द प्रायः बम्बई, कलकत्ते आदि से नौकरी करके लौटे हुए देहाती बोलते हैं, अं० क्लाक, ओ'क्लाक (बजे)।
कलाबाजी सं० स्त्री० ऐसे खेल जिसमें शरीर को मोड़ने का अवसर आता हो,-करब,-देखाइब, सं० कला+फ़ा० बाज़ी।
कलाम सं० पुं० शब्द, बात, ज़रा सी बात, यक-, ज़रा सी बात, अर०कलाम।
कलि सं० स्त्री० आराम, सुख, छुटकारा, (बीमारी से) फ़ुरसत,-होब,-पाइब, वै०-ल।
कलिआ सं० स्त्री० मांस,-खाब,-बनइब (दे०), अर० क़लियः (मांस-खंड) "हाज़िर है जो कुछ दाल दलिया, समझिये उसको पुलाव क़लिया" -अकबर।
कली सं० स्त्री० बंद फूल; खटाई का टुकड़ा (एक-खटाई), सिरजई (दे०) या कुरते के किनारे का तिकोना भाग, जिसे कल्ली भी कहते हैं।
कलील वि० थोड़ा, कम, अर० क़लील।
कलेवा सं० पुं० सबेरे का पहला भोजन, विवाह का एक रस्म, वै०-ऊ, -करब।
कलेस सं० पुं० कष्ट, दुःख, सं० क्लेश,-होव,-देव, -करब, दुःख उठाना,-सित, दुखित, दुःख में।
कलोरि सं० स्त्री० वह गाय जिसके बच्चा न हुआ हो, वि० के रूप में भी प्रयुक्त।
कलोल सं० पुं० खेल, आमंद, स्त्री-प्रसंग,-करब; वै० कि-, सं० कल्लोल।
कल्ला सं० पुं० पेड़ का नया अंग, मनुष्य की कलाई,-फूटब,-पकरब, झगरा-, लड़ाई-झगड़ा। स्त्री० -ल्ली (दे० कली)। दे० गट्टा।
कल्लाब क्रि० अ० घिसने के कारण दर्द करना (जैसे चलते-चलते पैर का)।
कल्हारब क्रि० स० घी या तेल में खूब भूनना, मु० जलाना, तंग करना, दुःख देना, प्रे०-ल्हरवाइब, -उब।
कवर सं० पु० नेवाला, ग्रास, वै० कौर, सं० कवल।
कवरा सं० पुं० रोटी का टुकड़ा जो प्रायः कुत्ते को दिया जाता है, वै० कौ-,-देब,-माँगब, भीख में भोजन माँगना,-पाइब, सं० कवल।
कवल सं० पुं० कमल, कमल का फूल, वै० के-, कँ-,-ला, सं० कमल।
कवलहा वि० पुं० दे० कउलहा।
कवही सं० स्त्री० दरवाजे के पीछे का भाग जहाँ से बाहर की बात सुनाई दे।-लागब, चुपके से सुनना।
कवाइति सं० स्त्री० दे० कवाइति।
कस वि० पुं० कैसा, स्त्री०-सि, कस, कैसे-कैसे, प्र०-स, किस प्रकार, वै० क्यस, केसस, केस-केस, सं० कः।
कसक सं० स्त्री० अपूर्ण इच्छा, हार्दिक इच्छा, वै०-कि,-मिटाइब,-रहब।
कसकुट सं० पुं० काँसा और पीतल मिला हुआ, वि०-हा, ऐसे मिलावट का बना हुआ (बर्तन), कस (काँसा) +कुट (कुटा हुआ), सं० कांस्य।
कसद सं० पु० इच्छा, निश्चय,-करब,-होब, वि० -दी, अर० क़स्द।
कसनि स० स्त्री० कस देने की क्रिया, कसने की बात, कसने का तरीका।
कसब क्रि० स० कसना, मजबूत करना, कस

देना; मु० ताकीद कर देना, डाँट देना; प्रे०-साइब, -चाइब,-उब।
कसब सं० भा० वेश्या वृत्ति,-करब,-कराइब, ऐसी वृत्ति करना या कराना। अर०।
कसबा सं० पुं० छोटा नगर बड़ा गाँव। फ़ा०।
कसबी सं० स्त्री० वेश्या।
कसम सं० स्त्री० शपथ,-खाब,-धराइब, वै०-मि; अर० क़सम।
कसयपन सं० पुं०कसाई का काम, निर्दयता,-करब, निर्दयी होना अर० क़स्साबी वै०-सै-।
कसरि सं० स्त्री० कमी,-रहब,-करब,-होब,-पाइब, -देखब;-भोजन की कमी, इच्छित काम की अपूर्ति, -काढ़ब,-लेब,-निसारब, बदला लेना,-निकालना, अर० कसर।
कसा वि० पुं० कड़ा किया हुआ, सख्त बँधा हुआ, मजबूत फँसा हुआ, स्त्री०-सी।
कसाई सं०पुं०पशुओं की हत्या करनेवाला, मु० वि० निर्दय, कठोर (पुरुष),-क काम, निर्दयता, कसयपन, कसाई की वृत्ति, कठोरता;-करब, अर० क़स्साब।
कसाब क्रि० अ० (किसी पदार्थ का स्वाद) खराब हो जाना, काँसे का सा स्वाद हो जाना, पीतल के बर्त्तन में रखी हुई (दही आदि की तरह की) वस्तु का स्वाद-भ्रष्ट हो जाना, "काँसा" से, प्रे० कसवाइब,-उब। सं० कांस्य।
कसाला सं० पुं० कष्ट; बहुत परिश्रम,-करब,-होब, सं० कष्ट।
कसि वि० स्त्री० कैसी, किस प्रकार की. 'कस' का स्त्री०; दे० 'कस'।
कसूर सं० पुं० अपराध,-करब,-होब,-पाइब, -देखब,-रहब,-दार,-वार, अपराधी (पुं०),-रि (स्त्री०), अर० क़ुसूर।
कसेर सं० पुं काँसे (और पीतल) का काम करनेवाला, कँसेरा,-पन,-ई, कसेर का काम या व्यापार, सं० कांस्य।
कसैपन सं० पुं० कसाई का काम या उसका सा व्यवहार, निर्दयता, दे० कसयपन।
कस्तूरी सं० स्त्री० कस्तूरी, वि० चालाक, चलता हुआ,-होब, चतुर हो जाना, वै०-ह- सं०।
कहँ क्रि० वि० कहाँ, कविता में प्रयुक्त, प्र०-वाँ।
कहँरई सं० स्त्री० कहार का काम या उसका सा व्यवहार, वै०-पन।
कहँरब क्रि० अ० कहरना, कराहना, दुःख के मारे धीरे-धीरे चिल्लाना वै०-रहब,-लहब(सी०ह०) प्रे० -रवाइब।
कहँरवा सं० पुं० कहारों द्वारा गाया जानेवाला एक गीत और उसका राग।
कहकहा सं० पुं० ज़ोर की हँसी,-मारब,-लगाइब, अर० क़हक़ह (सन्दर्भ क़हक़हः)।
कहश्रुति सं० स्त्री० जनश्रुति, व्यर्थ की बात, -सुनब,-होब, सं० कथ्।
कहनी सं० स्त्री० कहानी, वै० कि-, किहि-,-हि-, -कहब,-सुनब,-सुनाइब, सं० कथ्।
कहब क्रि० स० कहना, सूचना देना, प्रे०-हाइब,-उब,-हवाइब,-उब, सं० कथ्।
कहवाँ क्रि० वि० किस स्थान पर, 'कहाँ' का प्र० रूप।
कहवाइब क्रि० स० कहलाना, सूचना भेजना; वै० -उब।
कहाँ क्रि० वि० किस स्थान पर,-कहाँ, किस-किस स्थान पर, जहाँ-, यत्र तत्र, थोड़ा-बहुत;-है; क्या बात करते हो,-कहब।
कहाउति सं० स्त्री० मृत्यु की सूचना,-देब,-जाब; लाइब,-कहब,-आइब, वै०-वति।
कहानी दे० कहनी।
कहार सं० पुं० एक उपजाति जो पानी भरने, बर्तन माँजने आदि का सेवा-कार्य करती है, तुल० भरि-भरि भार कहारन आना;-री, पालकी उठाने की कहारों की मज़दूरी, भा०-हरई,-पन, वै०-हाँर।
कहावति दे० कहाउति।
कहासि सं० स्त्री० कहने की अनावश्यक इच्छा या आदत,-लागब,-होब, 'कहब' से।
कहिआ क्रि० वि० किस दिन, कितने दिन पर, वै०-या, प्र०-औ, जहिआ-, कभी-कभी, यदा-कदा, कहिऔ न, कभी भी नहीं, सं० कदा।
कहुँ क्रि० वि० कहीं; वै० प्र० कहूँ, जहँ-,जहाँ कहीं, कहुँ-कहुँ, कहीं-कहीं (तुल० कहुँ-कहुँ वृष्टि सारदी थोरी), कहुँ न, कहूँ न, कहीं नहीं,-नाहीं, कहीं भी नहीं।
कहे क्रि० वि० कहने पर,-धोबी गदहा प नाहीं चढ़त, कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता। सं० कथ्।
कहैआ सं० पुं० कहनेवाला, बोलनेवाला, टोकने या रोकनेवाला, प्र०-वैया, वै०-या, कहइआ,-या। सं० कथ्।
कहो संबो० क्यों, कहिये, उ०-भैया, क्यों भाई, कहो, बाति ठीक है न, कहिये, यह बात ठीक है न? वै०-हौ, सं० कथ्।
काँकर सं० पुं० कंकड़, पत्थर, कूड़ा-करकट (भोजन का रद्दी सामान)।
काँकरि सं० स्त्री० ककड़ी, अं० कुकुम्बर।
काँखब क्रि० अ० काँखना, दर्द के कारण धीरे-धीरे कराहना -पादब, दुःख के कारण धीरे-धीरे चलना-फिरना मु०बहाना करना, हिचकिचाना।
काँखा-सोती क्रि० वि० एक काँख के नीचे से ले जाकर दूसरे कंधे के ऊपर से, जैसे दुपट्टा बाँधा जाता है। तुल०।
काँखि सं० स्त्री० काँख, कँखौरी।
काँच सं० पुं० शीशा।
काँजी सं० स्त्री० खटाई; पानी में डालकर कुछ फलों या गाजर आदि के टुकड़ों से बनी खटाई

जो पाचक रूप से पी जाती है। "दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय।"
काँटा सं० पुं० काँटा, लोहे का एक औज़ार जिससे कुएँ में गिरे हुए बर्तन फँसाकर निकाले जाते हैं, कुछ देहाती लोग (प्रता०, सु० आदि में) 'काँट' भी बोलते हैं। राहि क-,बाधा,-काढ़ब,-रून्हब (दे०);-होब, बहुत दुबला हो जाना, सूख जाना (व्यक्ति का), सं० कंटक।
काँडब क्रि० स० पैर से दबाना, खूब मारना, पीटना, प्रे० कँड़ाइब,-उब,-वाइब,-उब।
काँडी सं० स्त्री० दे० कँडिआ।
काँपब क्रि० अ० काँपना, डरना, बहुत भय खाना, प्रे० कँपाइब,-उब,-कँपवाइब,-उब, सं० कम्प।
काँपी सं० स्त्री० लिखने के लिए कई पन्नों की एक बही जो किताबनुमा हो, अं० कापी बुक।
काँवरि सं० स्त्री० बहँगी, जिसके दोनों ओर मनुष्य बैठाये जायँ जैसा श्रवण ने किया था,-खेइब,-बहब, पार करना, कष्ट उठाना।
काँसा सं० पुं० पीतल और ताँबे की मिलावट।
का सर्व० क्या, वै० काव, द्वि० का-का, क्या-क्या, काव काव, कौन-कौन सी वस्तु या बात, सं० का (वार्त्ता), संबो० क्यों, क्यों जी, कहिये, इसके आगे संबोधित व्यक्ति का नाम जोड़ देते हैं, पश्चिम में "कै, कै हो" बोलते हैं। दे० कै।
काई सं० स्त्री० काई,-लाग-,-होब, वि० कइआन (काई लगा हुआ), कइअहा,-ही।
काउँ-काउँ सं० पुं० काँव-काँव,-करब, होब, व्यर्थ की बातें करना,-होना; वै० वँ।
काकजंघा सं० पुं० एक घास जो दवा में काम आती है। इसके छोटे पौदे की शाखायें कौए की टाँगों की भाँति होती हैं, इसी से इसका यह नाम पड़ा है। वै० ग-, सं०।
काका सं० पुं० चाचा, पिता का छोटा भाई, स्त्री०-की,-लागब,-कहब, सं०।
काकुनि सं० स्त्री० एक अन्न जिसके दाने गोल-गोल सुनहले रंग के होते हैं। माल-, एक जंगली लता जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है जो औषधि के काम आता है।
काची-कूची सं० कचड़ा, प्राय: मातायें छोटे बच्चों का मुँह धोते समय कहती हैं-"काची-कूची कौआ खाय, दूध भात मोर (बतासा) भैया खाय।"
काछब क्रि० स० बर्तन या द्रव वस्तु को पोंछ लेना, साफ़ करना, प्रे० कछवाइब,-उब,कछनी,-विशेष प्रकार से धोती पहनना, तुल०।
काज सं० पुं० काम; काम-,सं० कार्य,-करब,-होब,-आइब,-जें आइब, समय पर सहायक होना,-जें कामें, अवसर विशेष के समय, राज-, संपत्ति, काम-काजी, परिश्रमी, काम में लगा रहने वाला।
काजर सं० पुं० काजल,-पारब, काजल तैयार करना, आँखि क-काढ़ब, चतुरतापूर्वक ले लेना, चालाकी करना;-देब, विवाह की एक रस्म जिसमें बहिन या बुआ दूल्हे की आँख में काजल लगाती है। सं० कज्जल।
काज़ी सं० पुं० मुसलमानों के धार्मिक व्यवस्था-दाता; वि० काम करनेवाला; काम-, परिश्रमी; अर० क़ाज़ी।
काट सं० पुं० तरकीब, किसी चाल या कठिनाई के विरोध में दूसरी चाल या तरकीब; प्रभाव,-करब,-निकारब; कूट,-छाँट।
काटब क्रि० स० काट देना, मिटाना (दुःख आदि), विरोध करना, न मानना (बात), बीच में बोल देना (दूसरे की बात में), प्रे० कटवाइब, कटाइब,-उब, छाँटब,-कूटब, राह-, शुभ काम के लिए जाते समय, लोमड़ी, गीदड़ आदि का मार्ग में आ जाना। मु० पीटना, मुफ़्त में खूब खाना।
काटि सं० स्त्री० तेल, घी आदि द्रव पदार्थों की मैल, वै०-टु (सु०, फै०)।
काटू सं० पुं० डरावना जीव, कोई डराने की बात, डरानेवाला व्यक्ति, हौवा। काटनेवाला (पशु, व्यक्ति)।
काठ सं० पुं० लकड़ी,-क उल्लू, अकर्मण्य, मूर्ख, काठे क जगरूप, नाम के लिए मालिक, काठें मारब, एक प्रकार का दंड जिसमें नैपालवाले अपराधी के एक या दोनों पैर एक लकड़ी में फँसा देते हैं, सं० काष्ठ।
काठी सं० स्त्री० घोड़े या ऊँट के ऊपर रखने की गद्दी, मनुष्य की बनावट या ढाँचा, सं० काष्ठ से (शायद पहले काठियाँ लकड़ी की बनती थीं)।
काढ़ब क्रि० स० निकालना, उतारना, कपड़े पर चित्रादि बनाना,-बीनब, सीयब-, कढ़ाई-बुनाई या सिलाई आदि करना, आँखि-,(नदी का) बहुत बढ़ना, रुष्ट होना। प्रे० कढ़ाइब,-ढ़वाइब,-उब, सं० कर्ष।
काढ़ा सं० पुं० किसी दवा को पानी में उबालने के बाद जो क्वाथ बनता है, (सत) निकाला हुआ; वास्तव में इस शब्द का अर्थ ही "निकाला हुआ" है, 'काढ़ब' से, सं० कर्ष।
कातब क्रि० स० कातना,-बिनाइब, सब कुछ करना, झंझट करना, प्रे० कतवाइब, कताइब,-उब। सं० कात
कातरि सं० स्त्री० लकड़ीवाले तेल पेरने या गन्ने के कोल्हू में लगी एक पटरी, सन-,वि० अधपगली, पुं० सनकातर (दे०), सी० ह० कतरी।
कातिक सं० पुं० क्वार के पीछे आनेवाला मास,-लागब, (कुत्तों के) मैथुन का समय होना, क्रि० कतिकाब, (कुत्तो का) मस्त होना।
कातिब सं० पुं० दस्तावेज़ या दूसरा क़ानूनी क़ागज़ लिखनेवाला, अर०।
कातिल सं० पुं० हत्यारा, वि० परेशान करनेवाला, सख़्त, निर्दय, अर० कातिल।

क़ादर वि० पुं० डरपोक, निकम्मा, सुस्त वै० खादर (सी० इ०),गादर (दे०) क्रि०कदराव भा०कदरई, कदरपन, सं० कायर।
कादहूँ क्रि० वि० क्या सचमुच, शायद, का (क्या ?)+दहुँ (दे०)=धौं वै० काधौं, कधौं।
कान सं० स्त्री० सूरन।
कान सं० पुं० कान,-देव,-करब,-लगाइब,कानौं-कान, ज़रा भी, उ० खबर न मिली, सुनना, ध्यान-पूर्वक सुनना सं० कर्ण।
काना सं० पुं० जिसकी एक आँख न हो· स्त्री०-नी। आ०-राम, कनऊ,-नउनू, स्त्री० कानौ,-नो, कनुई।
कानि सं० स्त्री० लज्जा अपने व्यक्तित्व अथवा मर्यादा आदि का ध्यान,-करब,-होब, ध्यान और लज्जापूर्वक सोचना, कुल-,अपने कुल की लज्जा।
कानू सं० पुं० बनियों की एक उपजाति।
कानौ सं० स्त्री०कानी स्त्री, "कानी" कनुई (सी०) का आ०रूप, जैसे 'काना' से कनऊ (दे०)। वै०-नो।
कान्ह सं० पुं० कंधा डेहरी (डे०) के ऊपर का किनारा;-देब, शव की टिकठी (दे०) में कंधा लगाना; वै० काँधु (सी०ह०) सं० स्कंध।
कान्हा सं० पुं० कृष्णजी,वै० कान्ह, कन्हाई, कन्हैया (प्रायः गीतों मे प्रयुक्त); सं० कृष्ण।
काफी वि० पर्याप्त -होब,-रहब फा० काफ़ी।
कावर वि० पुं० कबरा (दे०) स्त्री०-रि॰ चित, काला और सफ़ेद बूटीवाला, पं० चिट्टा (सफेद)+कावर। सं० कर्बुर।
कावा सं० पुं० टेढ़ा मार्ग,-काटव, इधर उधर घूमना, फ़ा० कावः खुदाई; इस नाम का ईरानी इतिहास में एक लुहार है जो ज़ुहाक राजा को मारता है।-काटि जाव, टाल देना।
काबिल वि० योग्य, उपयुक्त, सं०-लियत,-होब,-रहब, फा० काबिल।
काबुली सं० पुं० काबुल का निवासी;-चना,-केराव, बड़े-बड़े सफेद चने और मटर के दाने, इस प्रकार की मटर को प्रायः 'कबुली' कहते हैं। कहा० "काबुल गये मोगल बनि आये बोलै मोगली बानी, आब आब करि मरि गये मुड़वारी धरा पानी।"
काम सं० पुं० कार्य, आवश्यकता; मरने के बाद का ब्रह्म-भोज;-काज, काम-,-में आइब,-में-काजें; दे० काज,-काजी, व्यस्त। सं० कर्म, पं ज० कम।
कामिल वि० पुं० अच्छा, बढ़िया भा० कमिलई,-पन, फा० कामिल, पूरा।
कायर वि० डरपोक, निकम्मा भा० कयरई, कयर-पन, सं०।
काया सं० स्त्री० शरीर, इच्छा, पेट -भरब, इच्छा-पूर्ति होना; सं०।
कार सं० पुं० काम, आवश्यकता फ़ा० कार, सं० कार्य,-बार, व्यापार, स्थिति।
कारन सं० पुं० कारण, झगड़ा,-करब, रोना, किसी के मर जाने पर रोना, बुरी तरह रोना या चिल्लाना। सं० कारण, वि०-नी, झगड़ा करानेवाला।
कारपरदाज़ सं० पुं० जो किसी दूसरे का काम करे, नौकर, फ़ा०।
कारबारी वि० परिश्रमी कुछ करनेवाला, व्यापार-वाला। फ़ा० कार+बार।
काराराति सं० स्त्री० कालीरात, प्रायः यह शब्द स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है या सौगंध खाने के लिए उ०-वेधी अहै, मैं कुछु नाहीं जानत हौं, रात का समय है, सचमुच में कुछ भी नहीं जानता।
कारीगर सं० पुं० बारीक काम करनेवाला व्यक्ति, भा०-री, फा०।
काल सं० पुं० समय मृत्यु; अंत-,मृत्यु का समय; अकाल,-परब, अकाल होना, सु-,अच्छा समय, फसल आदि, सं०, प० कल. (हर कला=रासे=जो प्रति क्षण स्वागत पावे)।
कालिका सं० स्त्री० काली का छोटा रूप, छोटी काली; -देवी,-माई, सं०।
काली सं० स्त्री० देवी -माई, कालीमाता,-चौरा, देवी का स्थान; सं०।
कावँ-कावँ दे० काउँ-काउँ।
काव सर्व० क्या; सं० किं।
कासि सं० स्त्री० एक जंगली और लंबी घास जो बरसात में होती है; तुल० फूली कासि सकल महि छाई, वै० काँ-,काँस। सं० काश।
कासी सं० स्त्री० काशी,-पुरी,-धाम,-करवट, सं० काशी।
काह सर्व० क्या, प्राय: कविता में प्रयुक्त; दे० का।
काही सं० स्त्री० हरा लिए हुए काला रंग, फ़ा० काह, घास, भूसा।
काहू सर्व० किसी, वै० केउ, केहु, प्र०-हू,केऊ, -मनई,-जगहा,-चीजि,-बाति।
किंगिरी सं० स्त्री० एक बाजा, जिसे प्रायः भिख-मंगे बजाते हैं,-रिहा, ऐसा बाजा बजानेवाला; वै०-ङ्गिरी,-ङ्गिरि-।
किचकिच सं० स्त्री० कीचड़ की अधिकता, कहा-सुनी, व्यर्थ की बातें, बहस, वै०-पिच,खिच-खिच।
किचाहिन सं० स्त्री० दे० कचाहिन, 'कीच' (कीचड) से।
किचिर-किचिर सं० पुं० थूकने या बेमतलब की बात की आवाज़,-होब,-करब, वै०-पिचिर, घिचिर-।
किछु वि० सर्व० कुछ, जा०, दे० कुछु।
किटकिटाव क्रि० अ० छोटे छोटे पत्थर या कंकड़ के टुकड़ों की भाँति दाँत में गड़ना, 'किट-किट' आवाज़ से ध्व०।
किटाव क्रि० अ० किसी बात पर बुरी तरह तुल

जाना, अनावश्यक हठ करना, जान बूझकर झगड़ा करने पर तैयार होना।
कित क्रि० वि० कहाँ, किधर, कविता में प्रयुक्त, सं० कुत्र।
कितना दे० केतना।
किताबि सं० स्त्री० पुस्तक, फा० किताब।
कितारा दे० केतरा।
कितौ या तो, कहाँ तो।
कियाँ सं० पुं० कीड़ा,-परब,-लागब, क्रि०-ब, -कियाँ क,-यस,-भरे क, छोटे-छोटे, बहुत छोटे (बच्चे), सं० कृमि, फा० किर्म।
कियाब क्रि० अ० कीड़ा पड़ना (फल आदि में), सं० कृमि। वै० कि-,-आ-।
किरतन सं० पुं० कीर्तन,-करब,-होब, सं० कीर्तन, वि०-निहा।
किरपा सं० स्त्री० कृपा,-करब,-होब,-निधान सं० कृपा।
किराव क्रि० अ० कीड़ा पड जाना, वै० कियाव।
किरोध सं० पुं० क्रोध,-करब; वि०-धी,-धिहा, सं०।
किलकब क्रि० अ० खिलखिला कर हँसना, प्रे०-काइब,-उब।
किलकारी सं० स्त्री० हर्ष की हँसी,-मारब।
किलना सं० पुं० गोल मोटे कीड़े जो प्राय: जानवरों के बदन पर चिपके रहते हैं; स्त्री०-नी।
किला सं० पुं० दुर्ग, अर० क़लअ।
किल्ली सं० स्त्री० दरवाज़ों को भीतर से बंद करने के लिए लकड़ी की छोटी चीज़,-मारब,-देब,- प० कीली (चाभी), सं० कीलक।
किसनई सं० स्त्री० किसान का काम, परिश्रम, तरकीब,- करब,-लागब; 'किसान' से भा०, सं० कृषक।
किहनी सं० स्त्री० कहानी, छोटा सा किस्सा,-कहब, -सुनाइब,-सुनब,वै०-हि-,सं० कथा, कथानक।
कीच सं० स्त्री० कीचड़, वै०चु-,-चि, "मीचु है भली पै न कीचु लखनऊ की"।
कीचर सं० पुं० आँख से निकलनेवाला मैल, -लागब,-निकरब, वि० किचरहा,-कुचरहा, गंदा।
कीटि सं० स्त्री० दाँत या दूसरे अंगों पर जमी मैल, प्र०-टी।
कीना सं० पुं० लज्जा, शर्म, पछतावा,-करब,-होब, -आइब,-दार, शर्मदार, फा० कीन: (द्वेष)।
कीरति सं० स्त्री० कीर्ति, यश,-करब,-होब सं० कीर्ति।
कीरा सं० पु० कीड़ा, साँप,-परब,-लागब,-काटब, -मारब,-निकारब,-झारब, वै० डा, किरवा, क्रि० किराब, सं० कीट।
कीरी सं० स्त्री० छोटे-छोटे कीडे (प्रायः पानी के); चींटी, कबी० साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय। सं० कीट, कृमि।
कीलब क्रि० स० बंद करना, (देवता भूत आदि) स्थापित कर देना (कील गाड़ कर), प्रे० किलाइब, -वाइब,-उब।
कीला सं० पुं० चक्कियों अथवा जाँत के बीच में लगा लकड़ी का खूँटा, स्त्री०-ली, प० कीली अं० की (चाभी), प्र० किल्ला।
कुँअना स० पुं० कुआँ, छोटा कुआँ, इस शब्द में छुटाई के अतिरिक्त स्मृति तथा स्नेह भी सन्निहित हैं, कवि० तथा गीतों में प्रयुक्त, सं० कूप।
कुँआर वि० पुं० क्वाँरा, अविवाहित,स्त्री०-रि, सं० कुमार,-री। भा०-अरई, अरपन।
कुँचवाइब क्रि० स० (पशुओं के) अडकोश निकलवाना, 'कूँचब' (दे०) का प्रे०रूप, वै०-चाइब,-उब, मु० पिटवाना या दंड दिलाना, पशुओं के अंडकोश निकालनेवालों को 'कुँचबन्हिया' कहते हैं।
कुचाइब क्रि० स० पिटवाना, दे०-वाइब।
कुँडिआइब क्रि० अ० 'कूँड़ि' बोना (दे० कूँड़ि), स० (खेत) इस प्रकार बोना, प्रे०-वाइब,-उब।
कुंड सं० पुं० नदी या तालाब का गहरा स्थल, सं०।
कुंडल सं० पु० कान में पहनने का आभूषण, जिसे मर्द भी पहनते हैं।
कुंडलिया सं० स्त्री० प्रसिद्ध छंद,-कहब,-पढ़ब,-लिखब। स० कुंडली।
कुडली सं० स्त्री० जन्मपत्री,-बनाइब,-देखब, -बिचारब, पुरानी पद्धति से यह पत्री कुंडलित करके रखी जाती है, इसी से इसका यह नाम पड़ा है। सं०।
कुंजा सं० पुं० एक रोग जिसमें शरीर भर में दाने पड़कर खुजली होने लगती है।
कुंजी सं० स्त्री० चाभी, असली उपाय, रहस्य,-देब,-भरब,-अइँटब, उकसाना, किसी झगड़े आदि के लिए उकसाना।
कुंदा सं० पुं० मोटी लकड़ी का भारी भाग,-यस, बहुत मोटा, स्त्री०-दी, फा० कुंद, मोटा, मुड़ा हुआ, तेजहीन।
कुंभ सं० पु० एक राशि, महत्वपूर्ण पर्व जिसमें प्रयाग, हरद्वार आदि स्थानों पर मेला होता है, स्त्री०-भी, छोटा कुंभ जो ६ वर्ष पर लगता है, बड़ा प्रति १२ वर्ष पर,-लागब,-नहाब, सं०।
कुंभी स० स्त्री० छोटा कुंभ, जो ६ वर्ष पर आता है,-पाक, एक प्रकार का नरक।
कुआँ सं० पुं० कुवाँ,-इनारा लेब,-ताकब,-धरब,-डूब मरना,-क वियाह, देहात में दो कुओं का व्याह भी होता है, दे० वियाह। स० कूप।
कुआर सं० पुं० क्वार का महीना,-री, क्वार में होनेवाली फसल,-रा, क्वार का, उ०-घाम, क्वार की कड़ी धूप।
कुइआँ सं० स्त्री० छोटा सा कुआँ, वै० कुई-, -याँ।

कुकरम सं० पुं० बुरा काम,-करब,-होब, सं० कुकर्म, वि०-मी।
कुकुर-छिनारा सं० पुं० बुरी तरह फँस जाने की स्थिति, क्योंकि कुत्तों के मैथुन में दोनों बहुत देर तक फँसे रहते हैं, कुकुर (कुक्कुर दे०)+छिनारा (दे०) स० कुक्कुर।
कुकुरदंता वि० (वह व्यक्ति) जिसके दाँतो के ऊपर दांत हों, कुकुर (कुक्कुर)+दंता (दाँतवाला), सं० कुक्कुर+दंत।
कुकुर-निनिया सं० स्त्री० कुत्ते की नींद, बीच-बीच में टूट जानेवाली नींद, जल्द टूट जानेवाली निद्रा, सं० कुक्कुर+निद्रा सोइब, जागब, ऐसा सोना या जगना।
कुकुर-मुत्ता सं० पुं० एक सफेद छतरीदार घास जो प्रायः वर्षा में होती है। विश्वास यह है कि जहाँ कुत्ते मूतते हैं वहीं यह होती है। सं० कुक्कुर+मूत्र।
कुकुरहौ सं० स्त्री० कुत्तों के बार-बार भूँकते रहने की क्रिया -होब, सं० कुक्कुर।
कुकुराब क्रि० अ० कुतिये का गाभिन होना, उसका कुत्ते से संगम कराना सं० कुक्कुर।
कुकुसब क्रि० अ० (फल या अनाज के दाने अथवा फली आदि का) बिना पके सूखकर खराब होना, वै०-मु-,प्रे०-साइब,-उब।
कुकुही सं० स्त्री० रोने की क्रिया -कढ़ाइब, कूँ कूँ करके रोना प्रारंभ करना ही अथवा हौ लगाकर ताँता सूचित करनेवाले शब्द प्रायः अवधी में बनते हैं।
कुचकुचवा सं० पुं० उल्लू, इस नाम का एक इतिहास है। कहते हैं कि जब लक्ष्मणजी को शक्ति लगी और हनुमान दवा के लिए पर्वत ही उठा लाये तो बहुत विलंब हो गया और सारी रात बीत गई। उल्लू पक्षी बोला—"कूच-कूच काच-कूच" अर्थात् जल्दी 'कुच-कुचा' (दे०-इब) कर दवा लगाओ। तभी से इस पक्षी का यह नाम पड़ा।
कुचकुचाइब क्रि० स० पत्थर से छोटे-छोटे टुकड़े करके कुचल डेना (पीसना नहीं), ध्व० 'कुच-कुच' से।
कुचरा सं० पुं० बड़ा झाड़ू, स्त्री० री. कुचरी-बढ़नी, बुहारी प्रायः कुचरा अरहर के सूखे पेड़ो से बनता है, सं० कूर्चिका।
कुचाब क्रि० अ० (महुए का) फूलना; दे० कूच,-चा।
कुचाल सं० स्त्री बदचलनी, बुरा व्यवहार, वै०-लि, सं० कु+चाल (चल्, चलना)।
कुचिला सं० पुं० एक विष, जहर-खाब, विष खाना।
कुचुर-कुचुर क्रि० वि० बेशरमी से या दूसरों की भावना का ध्यान किये बिना (ताकना), आँख फैलाकर, ध्व०।
कुचुरा वि० पुं० जिसकी आँखे बंद सी हों, जो ठीक देख न सके, जिसकी आँखें साफ़ न हों, स्त्री०-री, वै० कुचुर।
कुचुराइब क्रि० स० कुछ मूँद लेना (आँख), जल्दी-जल्दी बंद करना; दर्द के मारे बंद करना।
कुच्छ वि० कुछ का प्र० रूप प्र०-च्छुइ।
कुछ-कुछ वि० क्रि० वि० थोड़ा सा, थोड़ा-थोड़ा; कुछ न कुछ, कोई न कोई वस्तु या बात। प्र० कुच्छ, कुच्छुइ,कुछ्ह।
कुछु वि० कुछ, प्र०-इ,-च्छुइ, छु। वै० किः।
कुजगहाँ क्रि० वि० बुरे स्थान पर; शरीर के ऐसे स्थान पर जहाँ पर चोट, फोड़ा आदि शीघ्र ठीक न हो सके। सं० कु+जगह (दे०), फा० जाय, गाह, वै० जायगा, स्थान।
कुजुगुति सं० स्त्री० निंदा, छुपके-छुपके की हुई विरोध या समालोचना की बातें; सं० कु+युक्ति अथवा उक्ति वै०-जु-, दे० जुगुति; उ० 'कुजुगुति करत रहनियाँ' -समीर।
कुजाति सं० स्त्री० नीच जाति जाति-, अनजान लोग, कोई भी, चाहे जो। सं० कु+जाति मु० कुजाती क (अजाती) भात, गर्हित वस्तु।
कुजूनि सं० स्त्री० कुबेला, विलंब (भोजन, स्नान आदि के लिए) -होब,-करब, जूनि-, समय पर, चाहे जिस समय सं० कु+जूनि (दे०), क्रि० वि०-नीं,विलंब से।
कुटइआ सं० पुं० कूटनेवाला; वै०-या,-टैया; भा० कूटने का पेशा, कूटने की मजदूरी।
कुटना-पिसना, सं० पुं० कूटना-पीसना, घर का काम, गृहस्थी।
कुटनी सं० स्त्री० दूती, स्त्रियों को पराये पुरुषों के लिए बहकानेवाली स्त्री, पुं०-ना।
कुटम्मस सं० पुं० बुरी तरह की मार घोर दण्ड, कुटाई, 'कूटब' से;-होब,-करब व्यं०।
कुटवइआ दे० कुटइआ।
कुटवाइब क्रि० स० कुटवाना, पिटवाना, मरवाना भा०-ई, वै०-उब।
कुटाइब क्रि० स० कुटाना, कूटने में मदद देना भा०-ई, कूटने की मजदूरी. वै०-उब।
कुटाति सं० स्त्री० कूटने की मिहनत या आवश्यकता।
कुटासि सं० स्त्री० कूटने की इच्छा।
कुटिआइब क्रि० अ० हँसी करना, योंही कहना, स० छेड़ना, दे० कूटि वै०-याइब,-उब।
कुटिहा वि० पुं० मजाकिया, हँसी करनेवाला, स्त्री०-ही कूटि+हा।
कुटी सं०स्त्री० कुटिया, प्र०-ट्टी सं०।
कुटुक वि० पुं० जरा भी कठोर नहीं, तनिक भी कटु नहीं, शब्दों अथवा वाक्यों के लिए ही प्रयुक्त, सं० 'कटु'।
कुटुम सं० पुं० परिवार, बालबच्चे,-पलिवार, खान्दान, सं० कुटुंब।

कुट्टुर-कुट्टुर क्रि०वि०धीरे-धीरे (चबाना, काटना या खाना), ध्व० ।
कुट्टुराइब क्रि० स० धीरे-धीरे और आराम से खाना, बिना परिश्रम किये खाना, अ० मौज करना, "कुट्टुर-कुट्टुर" से (अर्थात् 'कुट्टुर-कुट्टुर' की आवाज़ करते रहना) ।
कुटेम सं० पु० अतिकाल, विलंब,-करब,-होब, स० कु+टेम (अं० टाइम) समय ।
कुटेव सं० पुं० बुरी आदत,-परब,-होब, सं० कु+टेव (दे०) ।
कुट्ट वि० समाप्त (बात-चीत, समझौता आदि),-करब,-होब, प्रायः बच्चे अपने खेल में प्रयुक्त करते हैं । प्र०-ट्टे ।
कुट्टी सं० स्त्री० कटा हुआ चारा,-काटब ।
कुठाँव सं० पुं० बुरा स्थान, शरीर का ऐसा भाग जहाँ, घाव, फोड़ा आदि अधिक दुःख दे, ठाँव-क्रि० वि० किसी भी स्थान पर । स० कु+ठाँव ।
कुठार सं० पु० कुल्हाड़ी, तुल० धरहु दंत तृन कंठ कुठारा, सं० ।
कुठिला दे० कोठिला ।
कुड़क दे० कुरुक ।
कुड़की दे० कुरकी (दे०)=स्थान ।
कुड़िया सं० स्त्री० छोटी कूँड़ी (दे०), वै०-आ, सं० कुंड ।
कुढग सं० पुं० बुरा ढंग, बुरी स्थिति, वि०-गी, -गा, बेशऊर, मूर्ख ।
कुढब क्रि० अ० भीतर ही भीतर रुष्ट होना (किसी के ऊपर), (हृदय का) निराश हो जाना, प्रे०-ढ़ाइब,-उब ।
कुण्डनी सं० स्त्री० छोटा कूँड़ा (दे०), बड़ा मिट्टी का बर्तन, वै० कुँड़नी, सं० कुंड ।
कुतरक सं० पु० कुसमय अथवा अव्यवस्थित भोजन स्नान आदि,-होव,-करब, स० कुतर्क, दे० तड़क, ताव-तड़क ।
कुतवाइब क्रि० स० कूतब का प्रे० रूप, वै०-उब, भा०-ई, कूतने की क्रिया या उसकी मज़दूरी ।
कुतुआ वि० पु० अंदाज से निश्चित, बिना गिना या तोला, स्त्री०-ई, दे० कूतब, वै०-वा ।
कुद्रराब क्रि० अ० कूदकर चला जाना (वि० बच्चों का), कूदब, से, प्रे०-रवाइब,,-उब (?)
कुतुनब क्रि० स० काट लेना, थोड़ा सा कतर लेना, वै०-रब, प्रे०-नाइब,-राइब ।
कुदानि सं०स्त्री० कूदने लायक स्थिति,-होव, कूदने की क्रिया, चतुरता आदि ।
कुदाइब क्रि० स० कुदाना, कूदने में सहायता करना, प्रे०-दवाइब,-उब, 'कूदब' का प्रे०, भा० -ई ।
कुदारि सं० स्त्री० कुदाल, कुल कै-,बड़ा कपूत, पुं० -दरा,-दारा; सं० ।
कुनकुनाब क्रि० अ० कुछ कड़वा लगना, बुरा मानना, कुछ कहना (बुरा-भला), चेतना, उत्तेजित होना ।
कुदासि सं० स्त्री० कूदने की प्रबल इच्छा,-लागब,
कुनह स० पुं० ईर्ष्या, द्वेष,-करब,-राखब, वि०-ही, -दार, वै० कुंस, फा० कीनः ।
कुस सं० पुं० ईर्ष्या, द्वेष,-राखब, वै० कुनह खुंस, वि०-सी,-हा,-ही, दे० कस,-नही ।
कुनाई सं० स्त्री० सूखी पत्तियों का चूरा, भूसे का बारीक भाग ।
कुनीति दे० कुनेति, सं० 'कुनीति' को 'कुनेति' समझ लिया गया है, देहातियों को इन दोनों का भेद नहीं ज्ञात होता ।
कुनेति सं० स्त्री० बुरी नीयत,-होब,-बसब (मन माँ, जिउ माँ), सं० कु+अर० नीयत, वि०-ती, -तिहा,-ही बुरी नीयतवाला या वाली ।
कुपित वि० अप्रसन्न, प्रायः पण्डित लोग ही इसे बोलते हैं, या व्यं०अथवा प्र० में साधारण लोग, वै० को-, सं० ।
कुपुटब क्रि० स० थोड़ा सा काट लेना, ऊपर से ज़रा सा काटना, मु० बीच में बात काट लेना, वै०-पटव, प्रे०-टाइब,-वाइब,-उब ।
कुपूत दे० कपूत ।
कुपेंच सं० पुं० बुरा दाँव, ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर गड़बड़ हो,-चे परब, पशोपेश में पड़ जाना, सं० कु+पेंच (दे०) ।
कुप्पा सं० पुं० बड़ी पीपी, पीपा, चमड़े का वर्तन, -होब, रुष्ट होकर मुँह फुला लेना, स्त्री०-पी, सं० कूपक, कूप ।
कुफार सं० पुं० व्यंग्य, कटु वाक्य, सं० कु+फार (दे०) ऐसी बात जो फार की भांति चुभे या हृदय को फाड़ दे,-कहब, बोलब ।
कुफुति सं० स्त्री० आंतरिक वेदना,-करब,-होब, फा० कोफत ।
कुफुर सं० पुं० भीषण परिवर्तन, घोर तथा अवांछनीय स्थिति,-करब,-होब अर० कुफ़्र (धार्मिक अविश्वास) ।
कुबजा सं० स्त्री० प्रसिद्ध कुबड़ी स्त्री जिससे कृष्ण जी का प्रेम था । सं०-ब्जा ।
कुबरहा वि० पुं० जिसके कूबड़ हो, स्त्री०-ही, घृ०-हवा,-हिया ।
कुबरी सं० स्त्री० कुबजा का दूसरा नाम, टेढ़ी लकड़ी जो छड़ी की जगह प्रयुक्त हो ।
कुबाच सं० पुं० बुरा वचन,-कहब,-बोलब, वै० -च्य, सं० कुवाच्य ।
कुमसब क्रि० अ० (फल का) पकने के स्थान में सूख जाना, मु० (व्यक्ति का) सूख जाना, प्रे०-सवाइब, -साइब,-उब, सं० 'उष्म' से = (गर्मी के कारण) बुरी तरह (कु) पकना । वै०-मु- ।
कुमारग सं० पुं० बुरा मार्ग, वि०-गी,-मर्गिहा,-ही, तुल०-गामी, सं० कुमार्ग ।

कुमेटी-सं० स्त्री० सलाह,-करव, पड्यंत्र करना, अं० कमिटी।
कुरंग सं० पुं० बुरा रंग, बुरी स्थिति -होव,-देखव सं० कु + रंग क्रि० वि०-में, बुरी स्थिति में।
कुरइव क्रि० स० (द्रव, अनाज आदि को) बरतन से बाहर गिरा देना; प्रे०-वाइव,-उब, वै०-उब।
कुरउनी स० स्त्री० ढेरी, पृथ्वी पर रखी हुई राशि (अन्न, फल आदि की) -लागव,-लगाइव, ढेर हो जाना, लगाना, पं० कूरा (दे०) वै०-रौ-।
कुरक-अमीन सं० पुं० कुर्की करनेवाला अफसर; वै०-रुक,-हु-, अर० कुर्क-अमीन।
कुरकी सं० स्त्री० कुर्क करने की आज्ञा या क्रिया, -आइब,-होव,-करव, वै०-रु-,-ह-प्र०-डुकी।
कुरता सं० पुं० लंबी कमीज़ की तरह का कपड़ा जिसकी बाहों में प्रायः बटन नहीं होतीं और दोनों ओर जेबें होती हैं स्त्री०-ती, बंगाली-, जिसकी बाहों में बटन लगती हैं। फा० कुर्तः।
कुरबान सं० पुं० चढ़ावा -करव,-होव,-नी, भेंट, त्याग,-नी देव,-करव, चढ़ा देना, मार डालना, फ़ा० कुर्बान।
कुरमियाना सं० पुं० कुर्मियों का मुहल्ला, उनकी बस्ती, वै०-आ-।
कुरमी सं० पुं० खेती करनेवाली जाति का हिंदू, स्त्री०-मिनि, क्रि०-मियाव, कुर्मी सा व्यवहार करना।
कुरसी सं० स्त्री० बैठने की चौकी, जिसमें कभी-कभी बेत की बुनाई होती है, अफसर की जगह, -पाइव,-देव,-लेव, आदर पाना, देना, लेना,।
कुरान सं० पुं० मुसलिमों की धार्मिक पुस्तक -कसम, कुरान की सौगंध, अर० क़ुरआन।
कुरिआ सं० स्त्री० झोंपड़ी;-धरव, वै०-या, अर० क़रिया (गाँव)।
कुरिआइव क्रि० स० कूरी (दे०) लगाना, छोटी-छोटी ढेरी लगाना, एकत्र करना, वै०-उब,-याइव।
कुरिआव क्रि० अ० एकत्र होना, ढेर हो जाना, प्रे०-आइव,-चाइव।
कुरी सं० स्त्री० डुडुआ (दे०) और कबड्डी के खेलों में खिलाडियों की पारी;-बदलव,-बान्हव,-बनइव।
कुरील सं० पुं० एक शूद्र जाति।
कुरुई सं० स्त्री० छोटी हल्की टोकरी या मौनी (दे०)।
कुरुक दे० कुर्क,-करव,-होव। दे० कुरकी।
कुरुख वि० पुं० कठोर (शब्द),-कहव,-बोलव; वै० कुल-; सं० कटु, करुप।
कुरुब सं० पुं० पड़ोस,-जवार, आस-पास के गाँव; अर० क़ुर्ब, निकटता; वै० क़ुरब-, अर० जवार, पड़ोस।
कुरुर-कुरुर क्रि० वि० मुर्र-मुर्र आवाज़ करते हुए (चबाना या खाना), ध्व०, वै०-मुरुर; क्रि०-राइव।
कुरूप वि० बदसूरत सं०, भा०-ता।
कुरौनी-सं० स्त्री० दे० कुरउनी; प० क़ुर:; वै० -ना (फै० सु०)।
कुल सं० पुं० वंश,-कै कुदारि, नालायक,-मरजाद, कुल की मर्यादा,-बोरन,-नी, कुल को डुबाने-वाला या वाली, क० चलीं-नौ गंगा नहाय; सं०।
कुलफा सं० प० एक साग जो गर्मियों में होता है, फ़ा० ख़ुर्फ़ा।
कुलफी सं० स्त्री० मीठा बरफ जिसमें दूध आदि मिला हो।
कुलबोरन दे० कुल।
कुलही सं० स्त्री० बच्चों की टोपी जिससे कान भी ढका रहता है, फा० कुलाह (टोपी)।
कुलाँच सं० स्त्री० छलाँग, वै०-चि,-मारव,-मरब, तुर० कुलाच (कुदान)।
कुलामनाय सं० स्त्री० वह बात जो किसी के कुल भर में मना (निषिद्ध) हो, सं० कुल+अर० मनअ -होव,-करव।
कुलिआना सं० पुं० कुली की मजदूरी, तुर० कुल (नौकर)।
कुली सं० पुं० सामान ढोनेवाला,-गीरी, कुली का काम, तुर० कुल (नौकर)।
कुलीन वि०पुं० अच्छे कुल का, श्रेष्ठ, स्त्री०-नि, सं०।
कुलुफ सं० पुं० ताला -लगाइव,-मारव, कुफ़्ल।
कुल्थी सं० स्त्री० एक अन्न, जिसके पत्तों का साग और बीज की दाल बनाते हैं। सं० कुलत्थः, नै० कुर्थि।
कुल्ला सं० पुं०कुल्ली,-करव,-कराइव, हाथ धुलाना, सं० चुलक।
कुस सं० पुं० कुश,-पहिती, तर्पण करने का सामान, लव-, राम के दोनों प्रसिद्ध पुत्र, वै० -सा, वि०-हा,-ही, सं० कुश।
कुसल सं० स्त्री० कल्याण;-करव,-होव,-पूछव;-छेम, कल-;-मनाइव, सं० कुशल; क० कुसलाई,-लात (ता) तुल०।
कुहीकाल वि० पुं० स्त्री० तेज़, चतुर, चालाक,-होव।
कुहुक सं० पुं० दे० कूक, क्रि-व, मीठे स्वर से गाना, दोनों शब्द एक ही जान पड़ते हैं, पर एक गाने के लिए, दूसरा सुरीले रोने के लिए भी आता है; दोनों में कभी-कभी अंतर भी कम होता है यदि आवाज़ मीठी हो।
कुहेसा सं० पुं० कुहरा:-परव, वै०-ही-,-हिरा,।
कूँच सं० पुं० यात्रा, सफ़र का प्रारंभ,-करब,-होव; मु०-कइ जाव, मर जाना।
कूँचव क्रि० स० तोड़कर छोटे-छोटे टुकड़े कर देना, किसी वस्तु को दूसरी वस्तु या पैर आदि से पिचल देना, चबाना, पान-,आराम करना, मु० खूब पीटना, मारना, प्रे० कुँचाइव,-वाइव,-उब।
कूँचा सं० पुं० गली, मुहल्ला, गली-, प्रायः बहुत

कम प्रयुक्त, फा० कूचः, बड़ा झाड़ू, झाड़ू का अग्र भाग, कुछ वृक्षों के फूल, जैसे महुए का।

कूँची सं० स्त्री० चित्र बनाने का छोटा ब्रुश, दातून का अगला भाग जिससे दाँत साफ होते हैं; पुं०-चा।

कूँटा सं० पुं० डंठल के टुकड़े जो अन्न तैयार हो जाने पर खलियान में पड़े रहते हैं, स्त्री०-टी, छोटे-छोटे ऐसे टुकड़े जो जानवरों को खिलाये जाते हैं, वि० कुँटहा।

कूँटी सं० स्त्री० तंबाकू के छोटे निकम्मे टुकड़े या नाज के डंठलों के छोटे-छोटे टुकड़े जो दँवाई के बाद बचते हैं।

कूँड़ा सं० पुं० मिट्टी का बड़ा घड़ा, स्त्री० कुँड़नी, सं० कुंड।

कूँड़ि सं० स्त्री० खेत की जुती हुई गहरी पंक्ति, पानी चलाने का खुले मुँह का लोहे या मिट्टी का बर्तन जिसे 'बरेत' में बाँध कर सिंचाई के लिए काम में लाते हैं,-बरेत (दे०),-बोइब, पंक्ति में बीज बोना, 'छिटुआ' (दे०) नहीं, सं० कुंड, 'कूँड़ा' का स्त्री०।

कूँडी सं० स्त्री० एक खुले मुँह का मिट्टी या पत्थर का बर्तन,-सोंटा, भाँग घोंटने का सामान, सं० कुंड।

कूँथब क्रि०अ०ठहर ठहर कर दर्द करना (पेट का)।

कूआँ सं० पु० कुआँ का प्र० रूप। सं० कूप।

कूक सं० स्त्री० रोने की आवाज, स्त्रियों के भेंटने की उतनी आवाज जो एक साँस में रोने पर हो, एक-, दुइ-रोइब, "कुहुक" का वै० रूप।

कूकब क्रि० स० (घड़ी में) कूक देना, प्रे० कुका-इब,-वाइब,-उब।

कूकुर सं० पु० कुत्ता, स्त्री०-रि, सं० कुक्कुरः।

कूच सं० पुं० (महुए का) फूल,-लेब, फूल लेना, वै०-चा, क्रि० कुचाब (दे०)।

कूचुर वि० पुं० जिसकी आँख मुलमुलाती हो, दे० कुचुरा, स्त्री०-रि, क्रि० कुचुराब; प्र०-रहा।

कूटब क्रि० स० कूटना, मारना, प्रे० कुटवाइब, -उब, काटब-, कम करना, काट-, काट-छाँट।

कूटि सं० स्त्री० हँसी, मज़ाक,-करब,-होब, त्रि० कुटिहा, क्रि० कुटिआइब (दे०)।

कूटू सं० पुं० एक अनाज का सा दाना जो फला-हार के काम आता है।

कूत सं० पुं० अनुमान, अंदाज़,-होब,-करब,-लगा-इब, अन-, असंभव, क्रि०-ब, अनुमान लगाना, वि० कुतुआ।

कून-कून ध्व० छोटे कुत्तों को बुलाने का शब्द, 'कुत्ता' से लघु० रूप।

कूतब क्रि० स० (संख्या अथवा तोल आदि का) अनुमान लगाना, प्रे० कुताइब,-तवाइब,-उब।

कूद-फाद सं० पुं० कूद-फाँद,-करब,-होब; पू० -दि-दि।

कूदब क्रि० अ० कूदना, प्रे० कुदाइब,- दवाइब, -उब, मु० जल्दी करना, घबरा जाना, बेसमझी करना, राज़ी न होना,-फानब, उछरब-।

कूबति सं० स्त्री० शक्ति,-होब,-करब,-देखब, अर० क़ूबत, प्र० कुब्बति, वि० कुब्बती,-दार।

कूबर सं० पु० कूबड़,-निकरब,-होब, त्रि० कुबरहा, -ही।

कूबा सं० पुं० जिसकी पीठ टेढ़ी हो, स्त्री०-बी।

कूरा सं० पुं० ढेर, हिस्सा,-लगाइब,-करब,-देब, -लागब, स्त्री०-री, क्रि० कुरिआइब, लघु० कुरौनी, -रउनी, अर०कूरः (पजावा दे०)।

कूरी सं० स्त्री० छोटी ढेरी,-चलाइब, साँप या अन्य विषैले जंतुओं के विष उतारने के लिए सरसों की "कूरी" पर मंत्र पढ़कर फूँक मारने की क्रिया करना जिससे रोगी के रखे हुए हाथ जंतु विशेष की कूरी पर रेंगते-रेंगते स्वयं पहुँच जाते हैं। इसी से विष के प्रकार की सूचना मिल जाती है और वही पीले सरसों पीस कर विष-व्याप्त अंग पर मले जाते हैं। क्रि० कुरिआइब, जूरी-, अव-शेष वंश, नाम व निशान; वै० प्र०-ढ़ी।

कूला सं० पुं० दिल के नीचे का भाग, पीठ के पीछे कमर के दोनों ओर का निचला भाग, वै० -ल्हा।

कूवाँ सं० पुं० 'कुआँ' का प्र० रूप, सं० कूप।

केंचुआ सं० पुं० प्रसिद्ध कीड़ा, मु० बहुत अस-हाय और निर्बल,-परब, पेट में रोग के कारण केंचुए पड़ना।

केंचुलि सं० स्त्री० साँप की केंचुल,-छोड़ब।

केउ सर्व० कोई, प्र०-ऊ,-हू, वै०-व, को-,क्यउ, केउ-कोई कोई,-न, कोई नहीं, सं० कोऽपि।

केकर सर्व० किसका, स्त्री०-रि,-रे, किसके, वै० -हकर, प्र०-हि-,-हुकै (नायँ), मुस०-का,-की।

केकरहा सं० पुं० केकड़ा, वै० के—।

केकहरा दे० ककहरा।

केकही सं० स्त्री० कैकेयी, रानी-, महाराणी कैकेयी, वै० क-,-ई, सं० कैकेयी।

केकाँ सर्व० किसको, ल० सी० ह० हिकाँ।

केठई क्रि० त्रि० किस स्थान पर। वै० क-,-ठाईं, -ठाँवँ,-ठाहर,-हिर,-ठाइर, सं० किं स्थानं,-ने।

केतत वि० पुं० कितना बड़ा, स्त्री०-ति, प्र०-हत।

केतना वि० पु० कितना, स्त्री०-नी, वै०-रा,-री, क-, कतिक, केतिक, सं० कत।

केतव क्रि० वि० या तो, वै० कितौ, के-, कतव, प्र०-त्त-, कित्तौ।

केतहँत क्रि० वि० कहाँ तक, दे० यतहँत, वत-।

केतहाँ क्रि० वि० कहाँ, वै०-हँ, सं० कुत्र।

केनाढा सं० पुं० मोटा गन्ना, स्त्री०-ढ़ी, छोटा या कम मोटा गन्ना, वै०-रा।

केतिक दे० केतना, प्र०-त्ति-, कत्तिक, कत्तेक।

केतौ दे० केतव।

केथा सं० पुं० किस (वस्तु), स्त्री-थी वै०-थुआ. प्र०-स्थू,-स्थौ, कित्थौ, सं० कः।
केथू वि० किसी, किसी भी, प्र०-स्थू,-स्थौ,-थौ।
केदहुँ दे० किदहुँ, क० किधौं।
केर कारक चिन्ह का, की वैं० का, स्त्री०-रि।
केरमुआ सं० पुं० पानी में होनेवाला एक साग, लघु०-ई, वै०-वा, फा० करम, तु० करमकल्ला वैं० के –।
केरुआ सं० पुं० एक जंगली फल जो कँटीदार झाड़ी पर होता है, इसका साग विशेषत जेठ, दशहरे के दिन खाया जाता है।
केरा सं० पुं० केला स्त्री० लघु०-री, सं०कदली।
केराना सं० पुं० किराना, अनाज -करब, नाज की दूकान रखना, दे० केराइब क्रि० स०।
केराया सं० पु० किराया, वै०-वा भारा-,-भारा, अर० किरायः।
केराव सं० स्त्री० मटर संबंधकारक के साथ इसका रूप 'केराई,-ये' हो जाता है,-ई,-ये क खेत, -क दालि क्रि० इब, सूप में अनाज अलग करना।
करी सं० स्त्री० छोटे-छोटे जंगली केले, सं०कदली।
केलि सं० स्त्री० खिलवाड़, मज़ेदारी,-करब सं०।
केवला दे० कवल।
केव वि० सर्व० कोई,-केव, कोई कोई, वै०-उ, कोई, सं० कोऽपि।
केवट सं० पुं० एक जाति जिसके लोग मछली मारने, नाव चलाने आदि का काम करते हैं, स्त्री० -टिन,-नि, तुल० -हिया, केवटों का मुहल्ला।
केवटी सं० स्त्री० कई अन्नों की मिली दाल, वै० केउटी, क्य-।
केवाँचि सं० स्त्री० एक जंगली पेड़ जिसकी फलियों की सुंदर तरकारी होती है, पर उनके ऊपर के बालों से खुजली उठती है इन्हें एक दूसरे पर फेंककर स्त्रियाँ एक दूसरे से हँसी करती हैं, "छतीसी के छेद केवाच करावती'-समीर, वै० कवाँचि,-च।
केवाँर सं० पुं० किवाड़ स्त्री०-री वै०-रा,-देब, -मारब,-बढँगाइब (दे०)।
केस वि० क्रि० वि० कैसा, वि० स्त्री०-सि,-केस, कैसे-कैसे-स, कैसे, किस प्रकार, वै० क्यस, क्यसस, कस, कसस।
केसरि सं० स्त्री० केसर, ज़ाफ़रान बहुमूल्य पदार्थ, अलभ्य वस्तु मु०-करब,-होब, अद्भुत वस्तु देना (किसी व्यक्ति या वस्तु का), वै०-र, सं० वि० -या,-आ।
केहर क्रि० वि० किधर, वै० क्य-।
केहाँ-केहाँ व्य० छोटे बच्चे के चिल्लाने या रोने की आवाज़-करब; क्रि० केहाँब, वै० क्यहँ-, भो०, मै० क्य-,क्य –।
केहि सर्व० किस ? इसमें कारक लग जाते हैं, उ० -कर,-पर,-से,-काँ, सं० कः।
केहू सर्व० किसी भी इसमें भी ऊपर की भाँति सभी कारक संयुक्त कर दिये जाते हैं, के या केहि का प्र० रूप।
कै संबो० क्यों जी, क्यों भाई,-हो, इसके आगे प्रायः संबोधित व्यक्ति का नाम जोड़ दिया जाता है, सी० लखी, ल० ह०, पू० अ० में 'का'।
कै सर्व० कितना, कितने,-ठू,-ठीं,-ठें, कितने,-जने, -जनी, कितने व्यक्ति,-ठू,-ठें लगाकर संख्या की स्पष्टता की जाती है प्र०-यो,-यौ,कई, कितने ही।
कैर वि० पुं० सफेदी लिए हुए; स्त्री०-रि; वै०कैरा, -रहा, कयर, अं० फ़ेयर।
कैसन वि० पुं० कैसा, स्त्री०-नि, वै० कइ-, कइस, प्र०-नौ, चाहे जैसा।
कैसे क्रि० वि० कैसे, वै० कइ-, कइसय -कैसे, कैसे-कैसे, प्र०-सेव,-स्यो, चाहे जैसे।
कैहा क्रि० वि० कब, किस दिन, वै० कहिआ (दे०) यह शब्द वास्तव में 'ह' और 'अ' के विपर्यय से बना है। प्र०-है, बहुत दिन पूर्व, सं० कदा।
कोखि सं० स्त्री० गर्भ, पेट,-में, गर्भ से (उत्पन्न), -खीं, पेट से, सं० कुक्षि, वै० को-. मै०भो०।
कोंचब क्रि० स० कोंचना, छेद करना, प्रे०-चाइब, -चवाइब,-उब, सं० कुच्।
कोंछ सं० पुं० (स्त्रियों का) अंचल, वै०-छा,-पूजब, एक संस्कार जिसमें नई बहुओं और सधवाओं के विदाई के अवसरों पर उनके आँचल चावल-गुड़ आदि से भरे जाते हैं;-छे क चाउर, ऐसा दिया हुआ चावल, गुड़ आदि। सं० कुक्षि, मै०, भो० खोंइँछा।
कोंछि सं० स्त्री० फलों का गुच्छा जो पेड़ पर हो-सं० कुक्षि।
कोंछी सं० स्त्री० ऊँचे पेड़ों से फल तोड़ने के लिए लंबी लग्गी में लगी हुई एक जाली जिससे फल साबित मिल सकें।
कोंड़िलाचब क्रि० अ० आनन्द के मारे नाचना, कोंड़ (दे०) + नाचब ?
कोंड़ सं० पुं० आनंद; हँसी;-करब, मज़ाक करना, आनंद लेना, हँसी करना, सं० क्रीड़ा ?
को सर्व० कौन वै० के, कवन,-नि (स्त्री०), सं० कः; ल० सी० ह०।
कोइना सं० पुं० महुए का फल, वै०-या (जौ० प्रत०) स्त्री०-नी, भो०।
कोइरी सं० पुं० एक हिन्दू जाति के लोग जो कंठी पहनते और मांसादि नहीं खाते, स्त्री०-रिनि, वै०-यरी, क-, ये लोग शाक पैदा करते और बेचते हैं, दे० कोयर।
कोइल सं० स्त्री० कोयल, वह पका आम जो किनारे सूख कर विशेष सुगंध देता हो। कहते हैं ऐसे फल पर कोयल पाद देती है तभी यह ऐसा हो जाता है, वै०-लि, कैलि। क्वैलिया, क्वइलरि,-ली, काली स्त्री (स्त्रियों द्वारा गाली में प्रयुक्त)।

कोइला सं० पुं० कोयला,-होब, जल जाना, क्रोध करना, जल कर राख हो जाना, वै० क०-, क्रि० -ब, जलती लकड़ी का-होना या बनना।
कोई सर्व० कोई, वै०-उ, केव,-उ, प्र०-ईं;-ऊ, केऊ, सं० कोऽपि।
कोई स० स्त्री० (पशु के) पेट के दोनों किनारे जो खाने पर भर जाते हैं,-उपराव।
कोउ सर्व० कोई,-कोउ, कोई कोई, तुल० कोउ कोउ पाव भक्ति जिमि मोरी, सं० कोऽपि, प्र० -ऊ।
कोकसास्त्र सं० पुं० कामशास्त्र,-पढ़ब, सं० कोकशास्त्र।
कोका वि० मूर्ख, उल्लू,-बाई, बेढंगा,-दास, निरा उल्लू; वै० को-।
कोट सं० पुं० पहनने का कोट, अं०, स्त्री०महल, बड़े आदमी का मकान,-टें, राजदरबार में, मालिक के घर, दूसरे अर्थ में, वै०-टि।
कोटर सं० पुं० रहने का स्थान, अं० क्वार्टर, वै० का-।
कोटि सं० स्त्री० करोड़ों यत्न।
कोठरी सं० स्त्री० छोटा कमरा, सं० कोष्ठ।
कोठा सं० पुं० मकान के ऊपर का तल्ला, छत के नीचे बना हुआ वह स्थान जिसमें वस्तुएँ सुरक्षित रखी रहें; सं० कोष्ठ,-रि, भंडार का रक्षक।
कोठी सं० स्त्री० माल रखने या बेचने का बड़ा स्थान, महाजन का घर, नये प्रकार का बँगला, -चलब, कारबार होना, सं० कोष्ठ।
कोड़ा सं० पुं० चाबुक,-मारब,-लगाइब।
कोड़ी सं० स्त्री० बीस की राशि; दुइ-,चालीस,
कोढ़ सं० पुं० कुष्ट, कोढ़ी का रोग, क्रि०-ढ़ियाब, -आब, कोढ़ी हो जाना, सं० कुष्ठ।
कोढ़िकस स० पुं० कोढ़ का प्रारंभ, कुष्ठ का फैलाव, वि०-हा,-ही।
कोढ़ी सं० पुं० (व्यक्ति) जिसे कोढ़ हो, वि० घृणित, बुरी आदतों वाला, सं० कुष्ठी, क्रि० -ढ़िआब,-याव।
कोतल वि० पुं० खाली (सवारी), मु० खाली हाथ, क्रि० वि० बिना कार्य सिद्ध किये, फा०।
कोतवाल सं० पुं० पुलीस का अफसर जो एक नगर की शांति का उत्तरदायी होता है, वै० कु-, भा०-ली, गी० सैयाँ भये-अब डर काहे कै?
कोतहगरदनिआ वि० जिसकी गर्दन छोटी हो, फा०कोताह + गर्दन, ऐसे लोग चालाक और दीर्घ-जीवी माने जाते हैं।
कोताह वि० कम, तंग, भा०-ही, कमी,-ही करब, बचाना, कंजूसी करना, फा० कोताह, कुताही (कमी), भो०।
कोतिआ वि० दुबला-पतला और ऐसे बैठक का जो शीघ्र बूढ़ा न हो (बैल, व्यक्ति), वै०-या,-ती, मै० काँत।
कोदई सं० स्त्री० कोदो का चावल या भात, सं० कोद्रु, वै० क-।
कोदव सं० पुं० कोदो का पेड़, चावल या बीज आदि, वै०-दो,-दौ, भो०, सं० कोद्र।
कोन सं० पुं० कोना, कोण,-आरी, खेत का कोना और किनारा,-गोड़ब, जुताई के बाद खेत के किनारे, कोन आदि के बचे हुए भागों को गोड़ना, स्त्री०-निया, मकान की छत का कोना,-का घर, कोनेवाला कमरा, स०, कोने की ओर, वै०-ना क्रि०-नाब, कोने में जाना,-नियाब,-निआइब, कोने में छिपना, छिपाना,-कस, वि० कोने की ओर, -सैं, प्र०।
कोप सं० पुं० क्रोध,-करब, क्रि-व, राम क-, भगवान की कुदृष्टि (यह किसी बुरे अवसर का वर्णन करते समय प्रारंभ में कहा जाता है),-भवन, वह स्थान जहाँ क्रोध करनेवाला व्यक्ति जाकर बैठे।
कोमर सं० पुं० नदी के कटाव का वह कोना जहाँ घास आदि बहुतायत से हो।
कोमल वि०पुं० नरम,आराम-तलब, भा०-ई, सं०।
कोय सर्व० कोई, कविता में प्रयुक्त, "जाको राखै साइयाँ मारि न सकिहै कोय", सं० कोऽपि।
कोयर स० पुं० जानवरों के खाने का चारा,-राही, चारे की कटाई, उसकी कमी आदि।
कोयरी सं० पुं० यह जाति शायद साग-भाजी की खेती करने के कारण ही (कोयर की) ऐसा कहलाती है। वै०-इरी, कइ-,दे०, स्त्री०-रिनि, कोयर-वाली।
कोरचा सं० पुं० छिपा हुआ धन, चुराकर बचाया हुआ पैसा,-करब,ऐसी बचत करना, वै० कव-,वि० -चहा,-ही, इस प्रकार पैसा जोड़नेवाला या वाली। मै० कोंसल, भो० कोसिला?
कोरट सं० पुं० रियासत की सरकार द्वारा देख-रेख, कोर्ट (ऑव वार्ड),-होव, (किसी के इलाके की) सरकार द्वारा देख रेख होना,-करव, अं० कोर्ट।
कोरमब क्रि० अ० लटक कर मर जाना, रस्सी से लटककर आत्मघात करना, मु०किसी के यहाँ खाने के लिए पड़े या लटके रहना, प्रे०-माइब दे० वर-मब,-माइब।
कोरव सं० पुं० छत में लगनेवाला लकड़ी या बाँस का टुकड़ा, वै०-रौ,-रो, मु०-गनब, भूखा रहना, रात को भूखा रहने पर यदि नींद न आवे तो छत के नीचे लेटा व्यक्ति लकड़ियाँ गिनकर ही समय काट सकता है।
कोरवर वि० पुं० सूखा (पकौड़ा), गीले को भिज-वर (दे०) कहते हैं, मु०-करब,-होब, भूखा रह जाना, कोरा ही रहना, दे० कोरे।
कोरा सं० पुं० गाढे का थान, वि० न धुला हुआ (नया कपड़ा), उपयोग में न आया हुआ, स्त्री० -रि,-री (धोती), प्र०-रे,-रिहि,-रिनि।

कोरा सं० पुं० गोद, लेव, गोद में लेना -में लुकाव, शरण लेना, मदद माँगना प० कोल (पास), उ० कौली (भरना क्रि०-इव, दे०,-रीं, गोद में, होव, गोद में होना, छोटा होना (बच्चे का)।

कोराइव क्रि० अ० (गाय भैंस का) ब्यानेवाली होना, ऊपर के ही शब्द से यह क्रिया बनी जान पड़ती है अर्थात् गोद, अंक या पेट (गर्भ से या बच्चे से) भरा होना। वै०-उव भो०-इराइव, मै० कुम्हरायल।

कोरान सं० पुं० कुरान -कसम, कुरान की सौगंद वै० कु-,अर०।

कोरि सं०स्त्री० किनारा, धार -मारव, धार को मोड़ देना, छाँट देना -निकरव, किनारा निकलना या निकला रहना -कसरि, कमी-वेशी, दुर्गुण-होव, मै०-र।

कोरी सं० पुं० शूद्रों की एक उपजाति, शायद 'कोल' से इस शब्द का संबंध हो।

कोरै क्रि० वि० कोरा ही, बिना काम किये हुए ही -लौटव,-लौटाइव।

कोरो दे० कोरव वै० कोरौ -वाती, छप्पर छाने का सामान, मै० वत्ती भो०।

कोलवा सं० पुं० खेत का छोटा टुकडा छोटा सा खेत, यक-, दुइ-,वै० क्व-।

कोलिआ सं० स्त्री० छोटी सी गली, वै०-या।

कोल्हार सं० पुं० कोल्हू (गन्ने का) का घर गुड़ पकाने का स्थान मै० कल्हुआर, भो०कोल्हवाड़ी।

कोल्हू सं० पुं० तेल या गन्ना पेलने का पेंच- -चलव,-चलाइव,-पेरव,-हाँकव।

कोवा सं० पुं० कटहल के फल के भीतर के मीठे बीज साँप के छोटे बच्चे वै०-आ, पो-(प्रत०जौ०) मै०-आ।

कोसा सं० पुं० मिट्टी का छोटा कटोरा, स्त्री०-सिआ,-या, सं० कोप।

कोह सं० पु० क्रोध, करब, क्रि०-हाव, क्रोध करना, वि०-ही (क०) सं० क्रोध। तुल० बाल ब्रह्मचारी अति कोही।

कोहवर सं० पुं० विवाह के समय का वह स्थान जहाँ वर वधू एकत्र बैठाये जाते हैं; तुल०, सं०कोह (क्रोध)+वर, जहाँ वर कभी-कभी क्रोध करे या रूठे, विवाह में कई बार दूल्हा रूठता और मनाया जाता है। मै० कोबरा,-घर।

कोहँड़ी सं०स्त्री०वर्तन आदि गृहस्थी के सामान.- करव, सामान लेकर गाँव छोड़ जाना, शा० 'कोहा' (दे०) से-।

कोहँड़ा सं० पुं० कुम्हड़ा; सं० कुष्मांड।

कोहँड़ौरी सं० स्त्री० सफेद कुम्हड़े से बनी बड़ी।

कोहाँर सं० पुं० मिट्टी का बर्तन बनानेवाला; स्त्री०-रिनि,-इनि,-इन; भा०-हँरई,-पन, सं० कुंभ-कार, हाँरी. जा०"मोहिं का हँसेसि कि कोहँरहि?' मै० कुम्हार, भो० कोहाँर।

कोहा सं० पुं० मिट्टी का बड़ा कटोरा बोये खेत का एक छोटा खंड; सं०कोप, मै० भो०।

कोहाइनि सं० स्त्री०, कुम्हार की स्त्री, कहा० हौ-हानि चुतरे प आवाँ, जल्दी-जल्दी में कुम्हार की स्त्री ने आवाँ अपने चूतड़ों पर ही लगा लिया।

कोहाव क्रि० अ० मचल जाना. क्रोध करना, रूठ जाना सं० क्रोध।

कौंसल सं० पुं० सलाह, राय,-करव,-होव, अं० काउंसिल।

कौआ सं० पुं० दे० कउआ. सं० काक।

कौआव दे० कउआव।

ख

खँखारव क्रि०अ० खाँस देना (सूचनार्थ), वै० खें-, दे० खखार।

खँघारव क्रि० स० पानी से धोना (बर्तन को), मु० नष्ट कर देना,-धारि उटव, नष्ट हो जाना, झट से नष्ट होना।

खँचिआ सं० स्त्री० छोटी टोकरी (घास आदि के लिए);-भर, बहुत से, पुं० खँचवा, खाँचा; इन टोकरों में अनाज नहीं रखा जा सकता, क्योंकि इनमें बड़े-बड़े छेद होते हैं। लघु०-चोली,-ला, वै०-या।

खँचुहा सं० पुं० कछुआ स्त्री०-ही, वै० खें-, सं० कच्छप।

खँभड़ी सं० स्त्री० एक छोटा-सा बाजा जो एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से बजाया जाता है,-डिहा, ऐसा बाजा बजानेवाला।

खंभर वि० पुं० मिला हुआ (अन्न), खालिस नहीं प्र०-रा, अंभर-, रद्दी।

खंड सं० पुं० भाग, (मकान का) पूरा अंश, उ० दुइ खंड कै मकान, सं०,मु०-है-खंड, टुकड़े-टुकड़े।

खंडव क्रि० सं० टुकड़े करना; तोड़ देना, तुल० अजगौ खंडेउ ऊखि जिमि…; सं० खंड।

खँड़हर सं० पुं० खँड़हर;-परव,-होव, सं० खंड।

खँड़सरी सं० स्त्री० खाँड बनाने की दूकान, खँड-साल, वै०-सारि,-र।

खँड़िआ सं० स्त्री० टुकडा (मछली, मांस का); स० खंड, क्रि०-इव, टुकड़े करना।

खँड़ुवा सं० पुं० हाथ का कड़ा, वै०-आ।

खँड़उली सं० स्त्री० ईंट के टुकड़े; वै०-दौ-, खँड़-; सं०खंड+अवलि (टुकड़ों की पंक्ति)।

खइँचड संं० पुं० रूच्चर वि० झगड़ालू, भिन-भिक करनेवाला, स्त्री, वैं० खैं-, खच्चड़।
खइँचब क्रि० स० खींचना, ले लेना; प्रे०-चाइब, -वाइब,-उब।
खइँतड वि० पुं० निकृष्ट (व्यक्ति), झगड़ालू, स्त्री० -ढि, वैं० खैं-,-ढँ-।
खइनी सं० स्त्री० खाने का तंबाकू पीनेवाला तंबाकू 'पियनी' (दे०) कहलाता है, 'खाब' (दे०) से, सं० खाद्।
खइर सं० स्त्री० कुशल, खैर, होव, अच्छा होना, -मनाइब,-माँगब, करब, वैं०-रि, खैर, अर० ख़ैर कवी० "कबिरा खड़ा बजार में सब की माँगै खैर"
खइरात सं० स्त्री० दान, मुफ्त में देना,-करब, दान करना,-लेव, वि० ती, मुफ़्त, वैं०,-ति,-य-, अर० ख़ैरात।
खइरियत सं० स्त्री० कुशल,-करब,-पूछब,-होब; वैं०-य-, ति,
खइरी वि० स्त्री० खैर रङ्ग की पुं० खयर (दे०)।
खइलरि सं० स्त्री० रई, मट्ठा बनाने की लकड़ी की बनी चीज़, मुड-, चक्कर में डालनेवाली बात, परेशानी,-करब, तंग करना, मुड़ (मूड = सिर) + ख-, सिर को मथनेवाली (बात)।
खइहँस सं० पुं० झंझट, (हृदय या मस्तिष्क को) खा डालनेवाला ? 'खाब' से (खइ + हँस),-होव, -करब,-रहब, जिउ कै-, परेशानी, अथवा क्षय (खय-खइ) + हस (हास-हस) स्थिति जिसमें क्षय तथा हास हो ? या जिसमें 'हँसी' (सुख) का क्षय हो।
खउँखिआब क्रि० अ० झुँझलाकर बोलना, जल्दी से चिल्ला उठना, फा० ख़ूँख्वार से ? अर्थात् डरावना होना, दे० कउकिआब।
खउकब क्रि० अ० चिल्लाना, स० डांटना, डराना, प्रे०-कवाइब; वैं० घ-।
खउफ सं० पुं० ध्यान, डर, चिंता,-लागब,-होब, -करब,-खाब,-रहब, वैं० खौ-,-फि, अर० ख़ौफ़।
खउरा स० पुं० खुजली (प्रायः पशुओं, विशेषतः कुत्तों की),-होब, क्रि०-व, खुजली से क्लिष्ट हो जाना; वि०-रहा,-ही, कहा० गाँड़ि ही मखमले क भगवा ! प्रे०-इव, खुजलाना।
खउलब क्रि० अ० खौलना, उबलना, प्रे०-लाइब, -उब।
खउहटि सं० स्त्री० खाने के लिए दी हुई मज़दूरी, अनाज-आदि,-लेव,-देव, वि० फूहड़ (स्त्री०)।
खकसी सं० स्त्री० एक जंगली फल जिसकी तरकारी होती है, वैं० खे-,-खूसी।
खखरहा वि० पुं० पुराना, बीच-बीच में छेदवाला (टोकरा); स्त्री०-ही, (झउली, दउरी दे०) वैं० खांखर, खँ-।
खखराव क्रि० अ० पुराना होना, छेदवाला हो जाना, 'खाँखर' हो जाना।
खखाब क्रि० अ० जोर से हँसना, प्र०-क्खा-, खखाय क हँसब, ठट्टा मार के हँसना।
खखार सं० पुं० जमा हुआ थूक, गले के नीचे से निकाला हुआ थूक, वैं० खे-,खँ-, क्रि०-व, आवाज़ करके थूकना; वैं० खे-,खॅ- (दे०)।
खखुण्डी सं० स्त्री० भुट्टे का डंठल जिसमें से दाना निकल गया हो वैं० खु-।
खग सं० पुं० पक्षी; केवल क० कहावतों आदि में प्रयुक्त;-' खग जानै खग ही की भाषा ' सं०।
खङब क्रि०अ० घटना, कम पड़ना, सं० क्षय से ?
खङवा सं० पुं० पशुओं का एक रोग जिसमें खुर सड़ने लगता है, क्रि०-डाब, खाङब, ऐसे रोग से ग्रसित होना।
खचाखच क्रि० वि० पूरी तरह (भरा रहना); प्र० -च्च-।
खँचोला दे० खँचिआ।
खजनची स० पुं० कोषाध्यक्ष, रुपया रखनेवाला।
खजाना सं० पुं० कोष, मु० बहुत सा माल व्यं० कुछ नहीं -होब,-धरब,-धरा रहब, अर० ख़ज़ानः, -नची (अर०-न'दार)।
खजुआब क्रि० अ० खुजाना, खुजलाना, प्रे० इब, -उब,-वाइब, मु० चूतर खजुआइब पछताना, देखते रह जाना; खाज (दे०) से।
खजुलिहा वि० पुं० जिसे खुजली हुई हो, स्त्री० -ही।
खजुली सं० स्त्री० खुजली, खाज, दे० खाज।
खजूरि सं० स्त्री० खजूर का पेड़ और उसका फल, मु० बहुत लंबा, कहा० सरग से गिरा-मँ अटका। अर्थात् छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवति।
खटइहा वि० पुं० खटाई का शौकीन, जिसमें खटाई रक्खी गई हो (बर्तन), स्त्री०-ही।
खटक सं० पुं० संदेह, चिंता, बे-,नि-, वैं०-का, खुटका; प्र० खुटुक,-का,-करब,-होब,-रहब।
खटकीरा सं० पुं० खटमल; कहा० कायथ औ खट-ये का जानैं पराई पीरा, खट + कीरा (दे०) कीड़ा, खाट का कीड़ा।
खटलुस वि०पुं०थोड़ा खट्टा, ज़रा खट्टा, स्त्री०-सि।
खटपट स० स्त्री० अनबन, मन-मुटाव,-रहब,-होब, कोशिश, दौड़ धूप,-करब, वि०-टी,-टिहा, दौड़-धूपवाला, तिकड़मी।
खटपटी सं० स्त्री० पैर में पहनने की खड़ाऊँ, वि० खटपट करनेवाला, तिकड़मी, वैं०-टिहा।
खटमचवा सं० पुं० छोटी-सी चौकी या खाट जिस पर रोगी आदि को उठाकर या बैठाकर ले जायँ, खट (खाट) + मचवा (दे०), वैं०-चिआ (दे०)।
खटमल दे० खटकीरा।
खटरस वि०कई रसोंवाला, मज़ेदार, सं० षट्रस।
खटर-पटर सं० पुं० खट-पट की आवाज़, थोड़ा बहुत गड़बड़, अनबन, ठहर-ठहर के लड़ाई झगड़ा,-लाग रहब, झगड़ा लगा रहना।

खटराग सं० पुं० झंझट, -करब,-होब,-रहब; षट्राग (छः राग जिसको जानने मे समय तथा परिश्रम चाहिए)।

खटखट सं० पुं० समाज में स्थान, रोब, मान -होब; वास्तव में इस शब्द के अर्थ हैं "खट-खट की आवाज़" अर्थात् समाज में नाम-कीर्त्ति।

खटाई सं० स्त्री० खटाई-परब,-डारब, -मिठाई अच्छाई-बुराई।

खटाऊ वि० खटानेवाला, बहुत दिन तक रहनेवाला· दे० खटाब।

खटाक सं० पुं० जल्दी -से, तुरंत, वै० खट से, प्र०-ट-,-का।

खटाब क्रि० अ० चलना (वस्तु का), बहुत दिन तक टिकना या खराब न होना।

खटारा वि० पुराना या पुरानी (गाडी, मोटर आदि), बेकार, रद्दी।

खटासि सं०स्त्री० खट्टापन, थोडी खटाई, वै०-स।

खटिआ सं० स्त्री० खाट -निकरब, मर जाना (तोरि-निकरै, तू मर जा, प्रायः यह शाप स्त्रियो के मुँह से सुना जाता है।) वै०-या -मचिआ, घर का सामान। पुं०-टवा, सं० खट्वा।

खटिक सं० पुं० एक जाति जो सुअर पालते, पत्थर आदि का काम करते हैं, स्त्री०-किन,-नि, भा०-कई,-पन।

खटोला सं० पुं० बच्चों की छोटी खाट, उडन-, छोटा सा वायुयान, स्त्री०-ली।

खट्टा वि० पुं० खट्टा; स्त्री० ट्टी,-होब,-करब, (हृदय, मन आदि) फिर जाना, उदासीन होना; क्रि० -ट्टाब।

खड़ंजा सं० पुं० टूटी हुई ईंट; वै०-रजा, स्त्री० -जी।

खड़कब क्रि० अ० खड़ की आवाज़ करना; प्रे० -काइब,-उब।

खड़काइब क्रि० स० खड़खड़ करना, खड़खडाना, खोलने के लिए ढकेलना, वै० खु-उब, खड़कब का प्रे० रूप।

खड़खड़िया सं० स्त्री० गाड़ी जिसके पहिये खड़-खड़ करते हों; पुरानी गाड़ी, बच्चो के खेलने की गाड़ी, वै०-या।

खड़ग सं० पुं०तलवार; कथा० या गीत में प्रयुक्त, वै -गि।

खड़बड़ सं० स्त्री० घबराहट, परेशानी;-होब, -मचब,-परब,-मचाइब, वै०-ड़ी -डी मँ परब, क्रि० -ड़ाब, खलबली में पड़ना, गिर पड़ना, खराब होना, नष्ट हो जाना।

खड़बडाइब क्रि०स०खराब कर देना, (स्थिति आदि) खलबली में डालना, परेशान कर देना।

खड़बिड़हा वि० पुं० टेढा-मेढ़ा वै०-बीहड़, खिड़-, स्त्री०-ही, सं० षट्+हिं० बीहड, छ. (कोण का) और भारी।

खडमडल सं० स्त्री० नाश, गडबड़ -होब,वै० खर-, -लि, खर (गदहा)+मंडल (मंडली)=मूर्खों का समाज या षट् (छः) (जैसे षड्यंत्र में)+मंडल; अथवा खल (दुष्ट)+मंडल।

खड़ा वि० पुं० उठा हुआ, स्त्री-ड़ी, क्रि०-ढ़िआब, खड़ा करना, वै० ठढ़िआइब (दे०)।

खढ़िआइब क्रि० स० खडा करना, वै० ठ-(दे०), -उब।

खत सं० पुं० पत्र,-पत्र, समाचार -आइब,-मिलब;-लिखब, फा० ख़त।

खतम वि० समाप्त,-होब,-करब, मु० मृत; फ़ा० खत्म।

खतरा सं० पुं० भय, भयानक स्थिति;-खाब, धोका खाना (प्र०-त्रा,-त्त-);-होब, फ़ा०।

खतहा सं० पुं० गड्ढा. छोटा गढ़ा करब,-खनब मु० पेट,-भरब, पेट पालना,-भरना, जीना स्त्री०-ही।

खता सं० पुं कसूर, ग़लती, अपराध,-करब,-होब, वै०-ताँ, वि०-वार फा०-त'।

खतिआइब क्रि० स० खतियाना, क्रम से सूची बनाना, खाता बनाना वै०-या,-उब, खाता (दे०) से।

खतिऔनी सं० स्त्री० रजिस्टर जिसमें खेतों का ब्योरा हो, खेतों का खाता; वै०-अउ-।

खदरब क्रि० अ० खराब हो जाना, प्रे०-राइब, -रवाइब,-उब, खादर (दे०) से, क्योंकि नदी की बाढ़ के कारण प्रायः खादर की भूमि खराब हो जाती है और फसल भी नष्ट हो जाती है; वै०-राब

खदरबदर सं० पुं० गड़बड़,-होब,-करब, ध्व० खदर (दे० खद्दर)+बदर, निरर्थक, द्वि० शब्द 'खादर' से, जैसे खादर का भाग कभी सूखा कभी जलमय रहा करता है, शायद 'खद्दर' भी इसी से हुआ है।

खदराउर वि० पुं० खादवाला, उपजाऊ, स्त्री०-रि -रें, उपजाऊ स्थान में, वै०-दि-,-गर,-हा ,-गउर।

खदानि सं० स्त्री० खोदने की जगह; खान, वै०-न; सं० खन् (खोदना)।

खदिगर वि० पुं० खादवाला, स्त्री०-रि,-रें, ऐसे स्थान में, खादि+गर (फ़ा० प्रत्यय), प्र०-गौर, -गउर।

खदुका सं० पुं० ऋण लेनेवाला; यही शब्द स्त्रियों के लिए भी प्रयुक्त होता है। शायद सं० खाद् (खाना) से "खानेवाला' के अर्थ में है।

खदेरब क्रि० स० पीछा करना; हाँकना, भगाना, निकाल देना. प्रे०-वाइब,-उब।

खद्दर सं०पुं० मोटा कपडा जो हाथ से कते सूत का बना हो मोटी और सादी वस्तु।

खनकब क्रि० अ० सिक्कों की भाँति आवाज़ देना या करना, वै० खु-, प्रे०-काइब, मु० रुपयों की अधिकता होना, ध्व०।

खनकाइब क्रि० स० सिक्कों की तरह बजाना, बहुत सा रुपया एकत्र करना, मु० कमाना, जोड़ना।
खनखन सं० पुं० सिक्कों या धातु के बर्तनों की आवाज़,-होब,-करब, प्र०-नखन,-नाखन, वै० खनाखन ध्व०।
खनता सं० पुं० खोदा हुआ स्थान, गड्ढा, स्त्री० -ती, वै० खंता; सं०खन् से।
खनब क्रि० स० खोदना, प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब, -खोदब, हाथ से काम करना, ज़मीन या खेत में कुछ करना; सं० खन्, मु० जरि-,नाश करने की कोशिश करना, खनि डारब, हठ करना, दुआर खनि डारब, बार-बार (किसी के घर) आकर तंग करना। फ़ा० कंदन।
खनमाँ क्रि० वि० क्षणभर में, तुरंत ही बाद, सं० क्षण+(माँ=में),वै-नि-,प्र०-नि खनि,बार-बार,-नै माँ,-मँ, क्षण का यह अपभ्रंश रूप दूसरे अर्थ में नहीं बोला जाता।
खनाइब दे० खनब।
खनाखन सं० पुं० बहुत से चाँदी सोने की आवाज़, दे० खनखन।
खनि क्रि० वि० क्षणभर में, एक बार;-यस,-वस, क्षणभर में ऐसा कि वैसा, सं० क्षण, प्राय: थोड़ी-थोड़ी देर में ही परिवर्तनशील स्थिति के लिए प्रयुक्त। वै०-नु, प्र०-हि,-नै,-नै मँ।
खनिआइब क्रि० स० खाली करना, वै०-न्हि,-हा-, -उब, खाली का 'ल' परिवर्तित होकर 'न' हो गया है; दे०खाली (फ़ा०खाली), यदि 'खलिआइब' बने तो उसका दूसरा ही अर्थ होता है, दे० खलि-।
खनिआब क्रि० अ० खाली हो जाना, प्रे०-इब; 'खाली' से, वै०-न्हि-,-या-,-हा-।
खपइब क्रि० स० खपाना, वै०-पा-,-उ-, प्रे०-वाइब, -उब; 'खपब' का प्रे०।
खपची सं० स्त्री० लकड़ी या पत्थर का पतला टुकड़ा, वै०-च्ची (प्र०), खि-,पुं०-चा,-पीच।
खपटा सं० पुं० मिट्टी के बर्त्तन का टूटा छोटा हिस्सा, स्त्री०-टी, वै० खि-।
खपड़ा सं० पुं० मकान की छत पर रखने के लिए मिट्टी के पके हुए टुकड़े,-करब,-छाइब,-पाथब।
खपति सं० स्त्री० खपत,-होब,-करब।
खपती वि० खब्ती, अधपागल, वै०-ख़्ती,-प्ती, अर० ख़ब्त।
खपब क्रि० अ० पूरा पड़ जाना, समाप्त हो जाना, प्रे०-इब,-उब,-पाइब,-उब, दे० खोपब।
खपरी सं० स्त्री० मिट्टी की कड़ाही जिसमें दाना आदि भूना जाता है, मु० काली वस्तु,-लगाइब, मुहें-लागब,-लगाइब, शर्म के मारे मुँह काला करना या होना, त्रि०-रिहा।
खपाइब क्रि० स०पूरा करना, वै०-उब, प्रे०-वाइब, वै० खि-।
खप्पर सं० पुं० मिट्टी का छोटा बर्त्तन जिसमें देवताओं के लिए दूध, शराब आदि रखा जाता है, -देब,-चढ़ब,-चढ़ाइब।
खफा वि० नाराज़, क्रुद्ध,-होब,-रहब,-करब, अर० ख़फ़: (उदास, क्रुद्ध), सं० खप्प (क्रोध)।
खफीफ वि० कम, थोड़ा (चोट आदि); अर०।
खफीफा सं० पुं० छोटे मामलों को देखने की अदालत, अर० ख़फ़ीफ़:।
खबरदार वि० होश में, होशियार, सचेत, सँभल कर (रहना), यह शब्द दूसरों को सावधान करने के लिए प्रयुक्त होता है। भा० -री,-करब, सावधान कर देना,-री करब, रक्षा करना, बचाना, अर० ख़बर+फ़ा० दार।
खबरि सं० स्त्री० समाचार, चिंता, पता,-लेब, -करब,-होब,-रहब, मु०गाँडी गर्दने क-(नाहीं), कुछ पता या फ़िक्र (न होना), वै०-र, अर० ख़बर (समाचार)।
खबीस वि० बुड्ढा और बदसूरत, अर० ख़बीस, बुरा (दिल और सूरतवाला)।
खबोर वि० पुं० खूब खानेवाला (पशु), स्त्री०-रि, 'खाब' से।
खब्बू वि० मुफ़्त खानेवाला, जिसे इधर-उधर फिर कर मुफ्त खाने की लत पड़ गई हो। खाब (दे०) से।
खमिआ सं० स्त्री०,छोटा खंभा, वै०-म्हि-,-हा,-या, सं० खंभ।
खमीर सं० पुं० ख़मीर,- उठाइब,-उठब, फ़ा०।
खमीरा सं० पुं० एक प्रकार का बढ़िया पीनेवाला तंबाकू, वै०-म्ही-।
खमोस वि० पुं० खामोश, चुप,-करब,-होब,-रहब, स्त्री०-सि, भा०-सी, फा० खामोश।
खयका सं० पुं० भोजन,-करब,-होब; वै० खायक, -खाय (खाने) क (का)=खाने का (सामान)।
खयकार वि० नष्ट,-होब,-करब, सं० क्षय या फ़ा० खाक (मिट्टी), वै० खै-।
खयर सं० पुं० खैर, कत्था, वि० इस रंग का, स्त्री०-रि,-री, खैर रंग की,-राही, कत्था बनाने की क्रिया, उसका व्यापार आदि प्र०-रा (वि० के अर्थ में)।
खयराति दे० खइ-।
खयरिआत दे० खइरि-।
खयानति सं० स्त्री० दूसरे की वस्तु हड़प लेने की क्रिया,-करब,-होब, वै०-त, अर० खयानत।
खरंजा सं० पुं० दे० खड़ंजा।
खरइब क्रि०स० गर्म करना (घी या तेज़ का), आग पर 'खर' करना, प्रे०-वाइब।
खर सं० पुं० जंगली घास,-ऋुर (दे०),-पाती, वि० गर्म, खौला हुआ (घी, तेज़),-करब,-राब, सख़्त या अनुदार होना, निर्दयता करना, क्रि०-इब; वै० -उब, प्रे०-वाइब, नाश्ते या खाने में विलंब,-करब, -होब, (खाने पीने में,) देर करना, वै० खराई,

-सेवर, कभी देर कभी सबेर (खाने पीने में),-करब, -होब ।
खरकब क्रि० अ० 'खर' से होना, खर खर की आवाज़ करना, प्रे०-काइब,-उब, प्र० खु-,-ड-।
खरखर वि०पुं० साफ़ (व्यक्ति), निर्लेप; जो लगाव की बात न करे, भा०-ई,-पन; स्त्री०-रि ।
खरखराब क्रि० अ० 'खर खर' करके गिरना (घास आदि का), प्रे०-इब,-उब ।
खरचा सं० पुं० खर्च,-चलब,-करब,-होब; वै०-च, स्त्री०-ची (दैनिक व्यय), वि०-चवाह, खूब खर्च करनेवाला, उदार; क्रि०-चब (काम में लाना), फा० खर्च,-पात,-पाती ।
खरजुर सं० पुं० जुकाम,-होब,-करब (खाने में विलंब करना); क्रि०-राब (जुकाम पाना), दे०खर; खर + जुरब (एकत्र होना) या जुड़ाव (जूड = ठंड)
खरदवाइब क्रि० स० खराद कराना, खरादब का प्रे०; वै०-उब, भा०-ई, खरादने की क्रिया या उसकी मजदूरी; अ० खराद, 'खरादी' करनेवाला ।
खरब सं० पुं० १०० अरब, अरब खरब लौं दरब है उदै अस्त लौं राज-तुल० स० खर्व ।
खरबराई सं० स्त्री० नाश्ता, खर (दे०) + बराइब (बचाना, रोकना) वह खाना जिससे 'खर' न हो; वै०-राब,-बचाव,-करब,-देब ।
खरबूज सं० पुं० खरबूज़ा, प्र०-बुज्जा, जिसे बच्चे प्रयुक्त करते हैं । फ़ा० खरबूज़ ।
खरमकरा सं० पुं० एक घास जिसके सिरे पर 'मकरे' (दे० मकरा) के पैरों की भाँति लंबे फैले हुए अंग होते हैं खर + मकरा ।
खरल सं० पुं० दवा कूटने का वर्तन,-करब, कूटना ।
खरहरा सं० पुं० घोड़े की पीठ साफ़ करने का ब्रुश, बड़ा झाड़ू,-करब,-होब; कहा० "दाना न घास-दूनौं जून" ।
खरहा सं० पुं० खरगोश, स्त्री०-ही ।
खरही सं० स्त्री० कटी हुई फसल की ढेरी,-करब,-लगाइब, सु०राशि, बहुत (बन) राशि,खर (घास) ।
खराई सं० स्त्री० कुसमय जलपान या भोजन के कारण गले या पेट में गड़बड़, सिरदर्द आदि, -करब,-होब ।
खराऊँ सं० पुं० खड़ाऊँ,-पहिरब, 'खर' की खुरों की भाँति जिसमें खुर हों (वह पैर में पहनने की वस्तु) ।
खराटाँ सं० पुं० सोते समय नाक या मुँह से निकलनेवाली आवाज़-लेब, प्र० खर्राटा, 'खर्र-खर्र' की आवाज़, ध्व० ।
खराद सं० पुं० खरादने की मशीन, क्रि०-ब, प्रे० -रदवाइब -उब, अ० 'खराद' जो "खरादी" करनेवाले के लिए आता है ।-पर चढ़ाइब ।
खरादब क्रि० स० खरादना, खराद करना ।
खराब वि० पुं० रद्दी, बुरा, स्त्री०-बि, भा०-बी, -करब,-होब ।
खराब क्रि० अ० सख़्ती करना, रोब दिखाना (राजा या शासक का), 'खर' (गर्म) से ।
खरिआ सं० स्त्री० दे० दुद्धी,-मट्टी, सं० खटिका ।
खरिआइब क्रि० स० कमाना, खूब नफा करना, वै०-या-,'खरा' (अच्छा लाभ) करना ।
खरिका सं० पुं० दाँत साफ़ करने की लकड़ी, तिनका,-करब; खर + इक् जैसे तृण से तिनका । वै०-रचा,-रिचा ।
खरिदवाइब क्रि० स० खरीद कराना, खरीदब का प्रे०, फा० खरीद, भा०-ई; फा० खरीदन ।
खरिदवार सं० पुं० गाहक, स्त्री०-रि ।
खरिहान सं० पुं० खलिआन,-होब,-करब -नी, नये अनाज का एक अंश जो नौकरों को मिलता है ।
खरी सं० स्त्री० खली, तिल, सरसों आदि की रोटी जो तेल निकलने पर इनसे कोल्हू द्वारा तैयार होती और जानवरों को खिलाई जाती है ।-दाना, दाना-,-भूसा ।
खरीता सं० पुं० दे०-ली-,फ़ा० ।
खरीद सं० स्त्री० क्रय,-करब,-होब, वै०-दि,-दारी, क्रय का क्रम, बड़ी खरीद,-दार, ख़रीदनेवाला, गाहक, वै० खरीदार, क्रि०-ब, फ़ा० ।
खरीदब क्रि० स० खरीदना, मोल लेना; प्रे० -रिदवाइब,-उब; भा०-दि,-इ; फ़ा० ख़रीदन ।
खरुस वि० सख्त (बात), कठोर (वचन);-कहब, -बोलब,-भा० -ई, क्रि०-साब, खुनसाब (दे०); वै०खुनुस ।
खरोच सं० पुं० नोचने या छिलने का चिह्न, वै० -चा,-रौंच,-लागब क्रि०-ब, नाखून से छिलना, काँटे, चाकू आदि से छिल जाना ।
खल वि० पुं० दुष्ट, स्त्री०-लि, भा० -ई,-ई करब, सं० ।
खलइब क्रि० स० 'खाल' (दे०) करना, नीचे करना, वै०-ला-,-उब; दे० खलाइब ।
खलकति सं० स्त्री० जनता, बहुत से लोग, दुनिया, वै० खि , अ० ख़िलक़त ।
खलखलाब क्रि० अ० खलखल की आवाज़ करना, उबलना, खौलना, प्रे०-इब,-उब, ध्व० ।
खलड़ा सं० पुं० खेती को देखने या सँभालने के लिए बना हुआ छोटा मकान (रहने का मुख्य घर नहीं जो अन्यत्र होता है),-करब,-होब, वै० -लँगा, दे० पाही ।
खलबल। दे० खड़बड़,-बड़ी, इन दोनों में 'ल' बदलकर 'ड़' हो गया है ।
खलरा सं० पुं० चमड़ा,-उतारब, स्त्री०-री,-राई, क्रि०-रिआइब,-लिआइब, मरे पशु का चमड़ा उतारना, वै० छ ; सं० छाला; दे० छलरा, खोलराई ।
खलल सं० पुं० गड़बड़, बाधा (पेट आदि में); -करब,-होब, अ० ख़लल ।
खलाइब क्रि० स० 'खाल' करना, खाल + आइब,

वै० खल-,-उब, उ०पेट-;भूख बतलाने के लिए अपना पेट पचाकर दिखाना।
खलार वि० पुं० कुछ नीचा, स्त्री०-रि,-रें, नीचें, नीचो भूमि में, दे० खाल (इसी में 'आर' लगाकर और 'खा' से-'ख' होकर यह शब्द बना है, जैसे 'ऊँच' से 'ऊँचास')।
खलास वि० बंद, खतम,-करब,-होब, अर०।
खलासी सं० पुं० सामान को साफ करनेवाला नौकर।
खलिआ वि० खाली, जिस पर कुछ लदा न हो, फुरसत में, दे० खाली, वै०-या, क्रि०-इब, -न्हिआइब।
खलिआइब क्रि० स० मरे हुए या मारे हुए पशु की खाल उतारना, वै०-लरिआइब,-याइब, सं० छाला से (छ=ख), सी० ह० निकाइब।
खलिगर वि० पुं० कुछ खाली, फुरसतवाला, स्त्री०-रि, वै०-हर, खाली+गर।
खलिफा सं० पुं० दे० खलीफा।
खलिहर वि० पुं० खाली, जिसके पास समय हो, स्त्री०-रि, क्रि० वि०-रें, फुरसत में, खाली+हर।
खलीता स० पुं० थैली, जेब, अर० खरीतः (थैला), वै०-रित्ता, सी० ह०।
खलीफा सं० पुं० दर्जी, दर्जी को संबोधित करने का यह संभ्रांत शब्द है। अर० ख़लीफ़ः (नेता), अफ़गानिस्तान आदि देशों में यह बढ़ई, लुहार आदि के लिए भी आता है, उनके चेले उन्हें ऐसे ही पुकारते हैं--गुरु अथवा नेता मानकर।
खलुई वि० स्त्री० नीचे वाली (भूमि आदि), 'खाल' से स्त्री०, दे० खाल,-लें।
खवइआ सं० पुं० खानेवाला, वै०-या,-वैया।
खवउअलि सं० स्त्री० खूब खाने की आदत, क्रिया आदि,-होब,-परब, वै०-वाई, सं० खाद्।
खवही सं० स्त्री० (दूल्हे, समधी आदि के) खाने के समय दिया गया नेग (दे०),-देब,-पाइब,-लेब, सं० खाद्।
खवाइब क्रि० स० खिलाना, 'खाब' का प्रे०, वै० खि-,-उब, खाब-, भोजन करने कराने का संबंध, सं० खाद्य।
खवाई सं० स्त्री० खाने की क्रिया, व्यवस्था, सुविधा आदि,-करब,-होब।
खवार सं० पुं० खानेवाला, खूब खानेवाला, स्त्री० -रि।
खवास सं० पुं० व्यक्तिगत नौकर, जो नौकर पान आदि खिलावे या भोजनादि के समय सेवा करे, पू०, स्त्री०-सिन,-नि अर० ख़वास (भीतर जानेवाले व्यक्तिगत नौकर)।
खवैआ दे० खवइआ, वै०-वैया,-वइया।
खस सं० पुं० पानी में होनेवाली घास जिसकी जड़ पानी डालने से सुगंध देती है। फ़ा०।
खसकब क्रि० अ० धीरे से चल देना, खिसक पड़ना, हट जाना, प्रे०-काइब,-उब,-कवाइब,-उब, वै० खि-।
खसकाइब क्रि० स० हटा देना, भगा देना, चुरा लेना, छिपा देना, प्रे०-कवाइब,-उब, वै०-उब, खि-।
खसखस सं० पुं० खाने में 'खसखस' करने का स्वाद, जीभ में 'खसरखसर'(दे०) लगने का भाव, -होब,-करब,-लागब, वै०-सरखसर, प्र०-साखस, -स्सखस्स, ध्व०।
खसबू सं० स्त्री० सुगंध,-आइब,-देब,-लेब,-रहब, वै० बोय, खु-।
खसम सं० पुं० पति, प्रेमी, कभी-कभी स्त्रियाँ यह शब्द एक दूसरे को गाली देने के लिए प्रयुक्त करती हैं,-करब, मर्द कर लेना (विधवा का), फ़ा०।
खसर-खसर दे० खसखस।
खसरा सं० पुं० एक बीमारी, जिसमें छोटे-छोटे दाने सारे शरीर पर हो जाते हैं।
खसरा सं० पुं० पटवारी का एक कागज जो प्रत्येक गाँव के खेतो के सबंध में होता है।-खतिऔनी, दो महत्वपूर्ण कागज जो प्रत्येक पटवारी बनाता है।
खसलति सं० स्त्री० आदत, खराब आदत,-परब, -होब, अर० ख़सलत।
खइराब क्रि० अ० गिर पड़ना (शरीर या किसी अन्य स्थान से कपड़ों आदि का)।
खहान वि० पुं० हहान-, भूखा-प्यासा, परेशान, घबराया हुआ, स्त्री०-नि-नि, हहाब (दे०) अलग बोला जाता है पर 'खहाब' कोई क्रिया नहीं है।
खाँखर वि० पुं० (कपड़ा) जिसके आर-पार दिखाई पड़े, स्त्री०-रि, दे० खँखरहा, क्रि० खखराब।
खाँचब क्रि० स० खींचना (चित्र, अंक आदि), प्रे० खँचाइब,-उब, वै० खीं-,खै-, घी-, सं० खच्।
खाँचा स० पुं० बड़ा टोकरा (भूसा आदि रखने के लिए), स्त्री०-ची, वै० खँचवा,-चिआ,-या।
खाँची सं० स्त्री० छोटा खाँचा,-भर, बहुत से (बच्चे आदि), क्रि० खँचिआइब, टोकरों में भरना (पत्तियाँ आदि)।
खाँड सं० स्त्री० देहाती शक्कर, सं० खंड, पं० में इसका उच्चारण "खंड" ही होता है।
खाई सं० स्त्री० गहरी नाली या खेतों के चारों ओर खुदी भूमि,-खोदब, वै० खाँ-,-ईं,-ही।
खाऊ वि० खानेवाला, बहुत खानेवाला, रिश्वत खानेवाला, हज़म कर जानेवाला, बेईमान,-चीर, हड़प जाने में निर्भय या बेशर्म।
खाक सं० स्त्री० मिट्टी, गर्द, धूल,-नाहीं, कुछ भी नहीं,-होब, नष्ट होना,-कइ देब, नष्ट कर देना, -भभूत, साधू का दिया राख का प्रसाद, प्र० खैकार, खयकार (दे०),-मँ मिलब;-मिलाइब, वि० -की, मटमैले रङ्ग का, एक प्रसिद्ध साधू 'खाकीबाबा' नाम के थे। फ़ा० ख़ाक़।

खाङब क्रि० अ० 'खङवा' रोग से क्लिष्ट होना, दे० खङवा।
खाज सं० स्त्री० खुजली,-होव, वै०-जु (फै० सु० प्रता०),-जि।
खाजा सं० पुं० खाझा, एक प्रकार की मिठाई।
खाट सं०स्त्री० खटिया, पुं० खटवा, लघु० खटिआ (दे०), सं० खट्वा।
खाढा वि० पुं० लंबा और बदसूरत लंबा-चौड़ा (व्यक्ति), सं० बैलगाड़ी का रास्ता, सिलसिला, मु०-ढें लागव,-लगाइब, किसी रास्ते पर लगना या लगाना; यक-ढें लागव, किसी सिलसिले से लग जाना।
खाता सं० पुं० हिसाब का पन्ना, हिसाब की किताब या उसका पन्ना विशेष, वही-, हिसाब की वही, वं० बई, पुस्तक, क्रि० खतिआइब, ब्योरेवार हिसाब करना।
खातिर सं० स्त्री० आदर, मान,-करव,-होव, "के खातिर,"के वास्ते,-तवाजा, आवभगत, सम्मान (में दी हुई दावत),-होव,-करव; निसा-, वि० निश्चित, बेफिक्र, निसा-रहब,-होब,अर०, इंशाय-(भगवान की इच्छा)।
खादर सं० पुं० नदी के किनारे का भाग, क्रि० खदराव, खदरव (दे०); (२) वि०सुस्त (सी०ह०)।
खादि सं० स्त्री० खाद, मु०-होइ जाव, न उठना, पड़ा रहना (सुस्त व्यक्ति के लिए), वि० खदिगर, -गउर,-हा।
खानजादा सं० पुं० एक प्रकार का उच्च श्रेणी का मुसलमान; खान+ज़ाद',खान का पुत्र।
खानदान सं० पुं० वंश, परिवार,-नी, एक ही कुल का, अच्छे घर का फ़ा० ख़ान्दान (घर)।
खानपान सं० पुं० खाना-पीना, एक साथ का खाना-पीना;-करव,-होव,-रहब; सं०।
खानसामा सं० पुं० खाना पकानेवाला नौकर, भंडारी, फ़ा० ख़ान: (घर)+सामाँ, सामान, जो घर के सामान की देख-रेख करता हो।
खाना सं०पुं० भोजन,-पियना, खाना-पीना,-दाना, कुछ भोजन,-करव,-होव।
खानि सं० स्त्री० किस्म, प्रकार, यक-, दुइ-, दुइ-करव,-होव, (खाने-पीने में) दो प्रकार का व्यवहार करना, पक्षपात करना,-खानि कै, तरह-तरह के।
खापव क्रि० अ० कोल्हाड़ में गरम रस के खौलते रहने पर उसमें धीरे-धीरे ठंडा रस डालते रहना, मु०-दहाइब, काम चलाना, पूरा करना (दे० दहाइव), 'खपव' से संबद्ध या उसका प्रे० ?
खाय क्रि० स० खाना, प्रे० खवाइव,-उब, सं० भोजन,-करव, भोजन बनाना,-होय, भोजन तैयार होना, सं० खाद्।
खाम वि० पुं० कम, छोटा, स्त्री०-मि, भा०-मी, कमी, त्रुटि,-होव,-रहव,-करव,-पाइव।
खार वि० पुं० नमकीन, खारा; स्त्री०-री, वै० खरिआ (दे०),-रि, प्र०-री, सं० क्षार।
खारुआँ सं० पुं० एक रङ्गीन कपड़ा जो प्रायः पतला होता है और अब बहुत कम आता है, वै०-वाँ।
खाल सं० स्त्री० चमड़ा, वै०-लि; लघु०खलरा,-री, -उतारव।
खाल वि० पुं० नीचा, गहरा, क्रि० वि०-लें, नीचे, -ले-ऊँचें, बुरी स्थिति में,-गोड़ परव, धोखा खाना; क्रि० खलाव, गहरा या नीचा हो जाना (प्रायः भूमि का), म० खाली (नीचे), प० खल्ली।
खाला सं० स्त्री० बुआ,-क घर, आराम का स्थान, कबीर ने इसे एकाध स्थल पर प्रयुक्त किया है। अर० ख़ालः।
खाली वि० रिक्त,-हाथ,-पेट, फ़ा०; वै० खलिआ, -या।
खावा सं०पुं० खाया हुआ (भाग),-पिआ, स्त्री०-ई।
खास वि० पुं० विशिष्ट, स्त्री०-सि, फ़ा०
खाँसव क्रि० अ० खाँसना, खाँसी से पीड़ित होना; प्रे० खँसाइव,-वाइव,-उब।
खासा वि०पुं०अच्छा, ठीक-ठाक, बढ़ा; स्त्री०-सी।
खासिअत सं० स्त्री० विशेषता, गुण; वै०-य-,-ति।
खाहमखाह क्रि० वि० अवश्य, विना चूके, निःसंदेह, यदि दूसरों की इच्छा न भी हो, कोई चाहे या न चाहे तो भी, फ़ा०।
खिचवाइब क्रि० स० खिचाना, निकलवाना, वै० -उब, भा०-ई, खिचाने की क्रिया या उसका पारिश्रमिक, परिश्रम आदि, सं० कर्ष्।
खिचानि सं० स्त्री० खींचने की मिहनत, सं० कर्षण।
खिचुहा सं० पुं० कछुआ, वै० खें-, खँ-,स्त्री०-ही, दे० खँचुहा, सं० कच्छप।
खिचाइव क्रि० स० खिचवाना, 'खींचव' का प्रे०, वै०-उव, भा०-ई, सं० कर्षय।
खिड़रिचि स० स्त्री० खंजन पक्षी।
खिआव दे०-याव।
खिखिआव क्रि० अ० जोर से हँस देना; बिना मतलब हँसना या झट से हँस पड़ना, ध्व० 'खि-खि' करना।
खिचखिच सं० स्त्री० हठ; दोनों ओर खींचने की क्रिया, आपत्ति;-होव,-करव, वै० वि-।
खिचरी सं० स्त्री० खिचड़ी;-खाव, विवाह के समय का एक कृत्य जिसमें वर तथा उसके साथियों को भोजन के समय उपहार मिलता है,-होव, काले और सफेद की मिलावट हो जाना (बालों में), पुं०-रा, जिसमें उड़द का साबित दाना चावल के साथ पकता है, क्रि०-रिआव, खिचरी नाम का एक त्योहार भी है जो माघ में संक्रांति को पड़ता है और उस दिन उड़द की खिचड़ी खाई और दान दी जाती है।

खिजमत सं० स्त्री० सेवा;-करब,-होब; वै०-ति, प्र०-जा; फ़ा० ख़िदमत।
खिजाब सं० पुं० बालों पर लगाने का मसाला; -करब,-लगाइब, अर०।
खिझरी सं० स्त्री० दूध की वह अवस्था जब वह गर्म होने पर फट जाय,-होब; क्रि०-रिआब, -याब।
खिझाइब क्रि० स० रुष्ट करना, परेशान करना, खीझब (दे०) का प्रे०, वै०-उब, भा०-नि, इसका विलोम "रुझाइब' और "रिझाइब" है।
खिटखिट सं० स्त्री० खिटखिट की आवाज, किसी बात पर व्यर्थ की बहस,-करब,-होब, ध्व०, क्रि० -टाब।
खिडबिडहा दे० खड़बिड़हा।
खिदमत दे० खिजमत।
खिदिर-बिदिर वि० पुं० खराब, नष्टप्राय,-होब, -करब, प्र०-द्दि-,सं० छिद्र ? दे०खदरब, खदर-बदर।
खिन्नी सं० स्त्री० एक बड़ा पेड़ और उसका फल जो मीठा होता है, वै०-रनी, सं० क्षीर (क्योंकि इस फल में दूध भी होता है)।
खिपचा स० पुं० दे० खपची, प्र० खपीच,-ठोकब, कष्ट देना, वै० ख-।
खिपड़ा दे० खपडा, वै० टा,-टी।
खिपाइब दे० खपाइब।
खियाब क्रि० अ० घिसना, कम होना, प्रे०-वाइब, वै०-आव, सं० क्षय।
खियाल सं० पुं० ध्यान, हँसी,-करब,-होब,-रहब, -आइब, फ़ा० ख़्याल।
खिरकी सं० स्त्री० खिड़की।
खिरनी दे० खिन्नी।
खिरपब क्रि० स० किसी काम में लगा देना, प्रे० -पवाइब,-पाइब,-उब।
खिलकति सं० स्त्री० आदत, तमाशा, भीड, -करब, फ़ा० ख़लकत।
खिलब क्रि० अ० खिलना, प्रसन्न होना, प्रे० -लाइब,-उब।
खिलाफ वि० पुं० विरुद्ध, -होब,-रहब,-करब, भा० -ति, स्त्री०-फि, अर० ख़िलाफ़।
खिल्ली सं० स्त्री० हँसी,-करब,-उड़ाइब,-होब, हँसी।
खिवाइब क्रि० स० दे० खवाइब, प्रे० खिउ-।
खिसकढ़ी सं० स्त्री० खीस निकालने की आदत, बात या क्रिया, वै०-ढ़ई, वि०-ढ़ा,-ढ़वा, खीस +काढ़ब (दे०)।
खिसकब क्रि० अ० खिसकना, धीरे से चल देना, -काइब, वै० ख-।
खिसकाइब दे० खसकाइब।
खिसखिस सं० स्त्री० दाँतों में बालू की तरह लगने की क्रिया या भावना, क्रि०-साब,-होब,-करब, लागब, प्र०-सिर-खिसिर; ध्व०।
खिसहटि सं० स्त्री शर्म, खिसिया जाने का भाव, झेंप,-मिटाइब, वै०-सिहट।
खिसिआब क्रि० अ० शर्माना, ऐसी स्थिति में पड़ना कि मुँह न दिखाने की हिम्मत हो, प्रे० -वाइब,-उब, खीसि (दे०)।
खिसिहट दे० खिसहटि।
खिस्सा सं० पुं० कहानी, वै० खीसा,-कहब,-सुनब, -सुनाइब, 'खीसा' का प्र० रूप।
खिस्सू वि० खीस निकालनेवाला, झेंपू, शर्माने-वाला।
खींचखाँच सं० पुं० इधर उधर को खींचने की क्रिया,-करब,-होब, वै०- तान, खैंच-।
खींचब क्रि० स० खींचना, प्रे० खिंचवाइब,-उब, खैंचवाइब,प्रे० खैं-, घीं-,घैं।
खीझब क्रि० अ० रुष्ट हो जाना, प्रे० खिझाइब, -वाइब,-उब, सं० खिद्।
खीरा सं० पुं० प्रसिद्ध फल।
खीरि सं० स्त्री० खीर, दूध चावल का बना मीठा पकवान, सं० क्षीर।
खीलब क्रि० स० खूब बंद कर देना, कील से बंद करना, स० कील।
खीलि सं० स्त्री० धान के भीतर का भुना हुआ चावल, फोढ़े के भीतर की नुकीली चीज जो उसके पकने पर निकलती है, स्त्रियों की नाक में पहनने की कील, प्र०-ली, सं० कील।
खीसा सं० पुं० जेब, फा० कीसः (जेब के भीतर का भाग)।
खीसा सं० पुं० किस्सा, कहानी,-कहब,-सुनब, -सुनाइब, प्र० खिस्सा, फ़ा० क़िस्सः।
खीसि सं० स्त्री० विनती करते, माँगते अथवा दर्द होने के समय ओठों के खुलने से बनी मुँह की आकृति,-काढ़ब,-निपोरब,-निकारब, वि० खिस्सू, -निकाल देनेवाला (कुछ करनेवाला नहीं), क्रि० खिसिआब, पुं० खीस।
खँटिआइब क्रि० स० खूँटी पर रखना या टाँगना, वै०-उब, खूँटी (दे०) से।
खुइलब क्रि० अ० कूदकर चलना, तेज़ चलना, प्रे०-लाइब,-उब।
खुइसट वि० खुसट, रद्दी।
खुक्का वि० खाली, वै० खो-,-क्खा।
खुखंडी सं० स्त्री० बिना दाने की "बालि" (जोन्हरी की), दे० 'बालि', पुं०-डा।
खुखुई सं० स्त्री० बरसात के दिनों में कुछ वस्तुओं पर जम जानेवाली 'भुकुडी' (दे०) ऐसी चीज, -लागब।
खुचुर सं० पुं० दोप, ऐब,-काढ़ब।
खुटखुटाइब क्रि० अ० 'खुटखुट' करना, ध्व०।

खुटिहन सं० पुं० वह खेत जिसमें 'खूँटी' वाले नाज बोये जायँ, दे० खूँटी वैं० खुँ-।
खुद क्रि० वि० स्वयं; प्र०-दै;-दौ, फा०।
खुदरा वि० पुं० टूटा, छुट्टा, दे० खुदुर, खुदुर-खुदुर।
खुनकब क्रि० अ० आवाज़ करना, रुपये या पैसे की भाँति शब्द करना, प्राप्ति होना प्रे०-काइब, -वाइब,-उब ध्व० खुन।
खुनहा वि०पुं० खूनवाला, मारनेवाला स्त्री०-ही, खून+हा फा० खूँ।
खुनाइब क्रि० स० दौड़ाना, 'खून' गरम करना (दौड़ा कर), प्रे०-वाइब वैं०-उब यह शब्द केवल घोड़े के लिए आता है।फ़ा० खूँ।
खुनाब क्रि० अ० जोश में आना, खून चढ़ जाना एक कत्तल करने के बाद औरों को मारने के लिए तैयार हो जाना फ़ा० ख़ूँ से।
खुनुस सं० पुं० द्वेष दे० कुँस वैं० खुनुस।
खुफिआ वि० गुप्त गुप्त विभाग के कर्मचारी -रहब, -राखब,-होब वैं०-या अर० खुफ़ियः।
खुबसूरत वि० पुं० सुंदर वैं० ख-फा० ख़ूब (अच्छी)+सूरत (शक्ल) स्त्री०-ति।
खुबै क्रि० वि० बहुत ही, 'खूब' का प्र० रूप वैं० -पै, फ़ा० ख़ूब (अच्छा)।
खुमचब क्रि० स० पकड़ के दबा देना, खूब पीटना, मारना, प्रे०-चाइब,-चाइब,- उब, वैं०-मु-।
खुमार सं० पुं० अंतिम प्रभाव (नशे का) वैं०-री, फ़ा० खुमार (नशा खाने या पीने की इच्छा)।
खुरकब क्रि० अ० 'खुर' की आवाज़ होना, ऐसी आवाज़ करना, प्रे०-काइब,-चाइब,-उब, वैं० -ड़-,-रु-।
खुरखुर सं० पुं० 'खुरखुर' की आवाज क्रि०-राब, -राइब।
खुरचन सं० पुं० किसी अच्छी चीज़ के खुरचने से जो निकले, जैसे मलाई, दही आदि का-,वैं०-नी, जो विशेषतः मक्खन या छाछ के खुरचन के लिए आता है।
खुरचब क्रि० स० दबाकर पोछना खुरचना, प्रे० -वाइब,-उब,-चाइब; प्र०-चारब दे० खुरचब, सं० खुर।
खुरचारब क्रि० अ० खुर से या नाखून से पृथ्वी को खुरचना, सं० खुर+चारब (चलाना), 'खुरचब' भी 'खुर' से संबद्ध है, क्योंकि पशु अपने नखों या खुरों से पहले पहल पृथ्वी खुरचते देखे गये होंगे जिससे वर्तन या उसमें लगी हुई वस्तु को खुरचने की इच्छा मनुष्य में हुई होगी। वैं० -रिहाब, प्र० छुर-।
खुरदी सं० स्त्री० हाथी के दोनों ओर लटकती हुई थैली जिसमें सामान रखा जाता है। वैं०-र्दी, -र्दी, फ़ा० खुर्द (छोटा) हाथी की तुलना मे यह थैली बहुत छोटी होती है, शायद इसी से यह नाम दिया गया हो। फ़ा० खुर्जीन (दो भागों वाला वह थैला जो ऊँट, गधे आदि पर रखते हैं)।
खुरदुर वि० खुरदरा; स्त्री०-रि।
खुरपा सं० पुं० घास खोदने का एक लोहे का औज़ार स्त्री०-पी; क्रि० पिआइब, खुरपा या खुरपी से (घास) साफ करना, खोदना।
खुरपिआइब क्रि० स० खुर्पी से साफ करना, प्रे० -यवाइब,-उब।
खुरमा सं० पुं० खुर्मा, एक मिठाई जिसके टुकड़े छोटे-छोटे छुहारे की भाँति काटे जाते हैं अर० खुर्मः (छुहारा या खजूर), स्त्री०-मी, उ० "हलवैया की बेटी बड़ी सुनरी काटति है खुरमी-खुरमा"-गीत।
खुरबुर सं पुं० खुड़बुड़ की आवाज़, चूहे की इधर-उधर फिरने की आवाज़, वैं०-ड-ड, क्रि०-राब, -ड़ाब.-ड़ाइब।
खुराई सं० स्त्री० खुर के चिह्न -चीन्हब,-देखब वैं० -ही, सं० खुर।
खुराक सं० स्त्री० भोजन, एक समय का खाना, -की, भोजन का पैसा, वि० खूब खानेवाला, वैं० खुरकिहा,-ही वैं० खो- फ़ा० खू-।
खुरासानी सं०स्त्री० एक प्रकार की जवायन, शायद यह पहले खुरासान से आती थी जो ईरान का एक भाग था।
खुरि स्त्री० खुर- क्रि०-आब।
खुरिआब क्रि० अ० गर्भ से निकलनेवाले पशु की खुर दिखाई पड़ना, जन्म होना, 'खुरि' से, सं० खुर।
खुरी सं० स्त्री० खुर रखने का समय, आने का समय (पशु के) खुर, मदन-, खुर का विचला भाग- सं० खुर।
खुरुर-खुरुर सं० पुं० खुर-खुर की आवाज़ ध्व० वैं०-खुड़ुर-खुड़ुर,-दुड़ुर, गड़बड़, बीमारी या मृत्यु, -होब,-करब।
खुरुस दे० खरस।
खुलता वि० सुन्दर, ऊँची हुई,-देब, अच्छा लगना; =खुला हुआ (बंद नहीं)=हँसता हुआ।
खुलब क्रि० अ० खुलना, प्रे० खोलब, खुलाइब, खोलवाइब,-उब, अकिलि-, बुद्धि काम करने लगना, आँखि-, बाति-।
खुलासा वि० साफ़, स्पष्ट,-करब,-होब,-कहब, प्र० -साटि, साफ-साफ,-पेट,-दस्त; वैं०-साँ, फा० सः।
खुलाइब क्रि० स०खोलने का प्रबंध करना, आँखि-, बीमारी आदि में बंद हो गई आँख को फिर से दवा द्वारा ठीक कराना।
खुस वि० प्रसन्न, खुश;-करब,-होब,-रहब, फ़ा० खुश (अच्छा),भा०-सी -हाल, अच्छी हालत में, धनी, फा० ख़ुश।
खुसकी सं० स्त्री० सड़क का रास्ता, सूखा रास्ता, सूखापन, फ़ा० ख़ुरक।

खुसामद सं० स्त्री० खुशामद;-करब,-होब;-बरामद, खुश करने के अनेक तरीके फ़ा० खुश + आमद (स्वागत), वि०-दी, खुशामद करने के लिए उत्सुक, -टट्टू, निरा खुशामदी, व्यर्थ का खुशामदी।

खुसिआली सं० स्त्री० खुशी, आनंद का अवसर, आनंद-प्रदर्शन,-करब,-मनाइब,-होब, फा० खुश + सं० आली (पंक्ति)।

खुसी-खुसी क्रि० वि० प्रसन्नतापूर्वक; बिना कुछ कहे सुने; फ़ा० खुशी।

खूँट सं०पुं०कान का मैल,-काढ़ब,-निकारब,किनारा, अंतिम सीमा, क्रि०वि०-टें, कपड़े के कोने में।

खूँटा सं० पुं० लकडी या लोहे का मेख,-गाड़ब, डट जाना, स्त्री०-टी,-यस, छोटा, न बदनेवाला।

खूइ सं० स्त्री० आदत; खराब आदत,-होब,-रहब, वै०-य, खोय, खोइ, फा० ख़ूय, दे०खोइ।

खूदा सं० पुं० अन्न का रद्दी हिस्सा, टूटे भाग (चावल आदि के); स्त्री० दी, कन-खूदी, (चावल आदि के) छोटे-छोटे कण और पिसे भाग, सं० कण।

खून सं० पुं० लोहू, हत्या,-करब,-होब, वि०-नी, हत्यारा, फ़ा० खून, क्रि० खुनाइब,-नाव (दे०)।

खूनब क्रि० स० कूटना, चोटों से पीस देना, मु० खूब मारना, मार-मार कर 'खून' निकाल देना, प्रे० खुनाइब,-वाइब,-उब।

खूप क्रि० वि० खूब; प्र०-पै, फ़ा०-ब; वै० खुपै बं० खूप, भा०-बी।

खूय स० दे० खूइ।

खूसट वि० रद्दी, बेकार (व्यक्ति); सूखा और निकम्मा, भा० खु-पन,-ई।

खूहा सं० पुं० बुरी बात, अपराध, तुहमत,-लगाइब, -पारब,-लागब, स्त्री०-ही,-उड़ाइब, प्र० हूही।

खेइब क्रि० स० खेना, चलाना, प्रयोग में लाना; मु० निभाना; प्रे०-वाइब,-उब, भा०-वाई, क० -वैया, खेनेवाला, वै०-वइआ,-या।

खेकसी सं० स्त्री० एक जङ्गली फल जिसका साग बनता है, पुं०-सा, वै० ख-।

खेखार सं० पुं० मुँह से निकला हुआ लबाब, -थूक, क्रि०-ब, जोर से थूकने या गला साफ करने की आवाज करना, पहेली-"बनमाँ बुढ़वा खेखारै" -कुल्हाड़ा।

खेढा सं० पुं० कठिन स्थिति, बेढंगा काम।

खेढी सं० स्त्री० पशुओं के बच्चे पैदा होने पर योनि से निकली हुई मांस और खून की थैली,-गिरब, -गिराइब, सी० ह० ल० झर।

खेत सं० पुं० खेत,-करब,(चंद्रमा) निकलना(अँजोरी, जुन्हैया खेत किहिस), क्रि०-तिआइब, मानना, लिहाज करना,-वारी, भा०-ती, खेती-वारी,-तिहर, खेती-वाला, किसान, सं० क्षेत्र।

खेतारी सं० स्त्री० खेतो का पड़ोस, गाँव से दूर स्थान, खेत + आरी (पास), सं० क्षेत्र + अवलि।

खेतिहर सं० पुं० किसान, खेती + हर, सं० क्षेत्र।

खेदब क्रि० स० हाँकना, निकालना, भगाना, प्रे० -दाइब,-दवाइब,-उब, सी०ह० ल०-दिब।

खेप सं० पुं० बोझ, जितना एक बार में लद सके; वै० खें-, क्रि०-पिआइब,-उब, खेपों में परिवर्तित करना (खाद, फसल आदि को), सं० क्षिप् (फेंकना) से अर्थात् जितना एक बार में उठाकर फेंका जा सके।

खेम सं० पुं० कुशल, कल्याण,-कुसल,-पूछब; सं० क्षेम, वै० छे-।

खेमा सं० पुं० तंबू,-डारब,-परब, फा० खेम.।

खेल सं० स्त्री० खिलवाड़, मनोरंजन;-करब-मचाइब, -होब, वै०-लि,-वार, क्रि०-ब, सं०।

खेलब क्रि० अ० खेलना, खेल करना, भूत आदि के आवेश में आकर झूमना, कुछ कहना आदि, प्रे० -लाइब,-लवाइब,-उब; वि० लार, खेलनेवाला, पट्ठ, पहलवान, सं० खेल।

खेवइया दे० खेइब।

खेवट सं० पुं० पटवारी के कागज जिसमें भूमि के अधिकारियों का विवरण होता है,-लागब, अधिकार होना,-होब-करब,-पट्टी, ऐसे पत्रों में प्रवेश, इनका लेख आदि।

खेवनहार सं० पुं० (नाव) चलानेवाला, खेनेवाला, खेवन (खेइब) + हार, कविता में ही प्रयुक्त।

खेवा स० पुं० (नाव का) पूरा बोझ या खेप, जितना एक बार में खेया जा सके।

खेहा सं० पुं० (लकडी पर लगी) घाव, स्त्री०-ही, वै० छेहा,-ही,-लागब,-मारब,-लगाइब, सं०छिद्।

खैंचब दे० खइँचब, इसी प्रकार दे०खइँतड़-,खइचड़ (खैंतड़, खैंचड़)।

खैका सं० पुं० भोजन, वै० खय-,-करब (भोजन बनाना),-होब, भोजन तैयार होना, सं० खाद्।

खैकार वि० नष्ट, नष्टप्राय;-करब,-होब, सं० क्षय + कार।

खैर सं० स्त्री० कुशल, वै०-रि, खइर,-रि, अर० ख़ैर, 'कत्था' के अर्थ में इस शब्द का रूप 'खयर' है।

खैरा वि० पुं० कत्थई या भूरे रंग का, स्त्री०-री, वै०-य-।

खैराति दे० खइ-।

खोंखर वि० पुं० भीतर से पोला, प्र०-रू, स्त्री० -रि, दे० झोंझर, यह शब्द प्राय: आभूषणों के लिए प्रयुक्त होता है।

खोंडिल-बाडिल वि० टूटा-फूटा, जैसा-तैसा, दे० खोड़।

खोंचब क्रि० स० खोंच देना, हाथ या दूसरी चीज से खोद देना, आँख में मार देना, प्रे०-वाइब, -चाइब,-उब, कहा० काना होय खोचि जाय।

खोंचा सं० पुं० रस्सी का बुना हुआ थैला जो फल तोड़ने के काम में आता है, स्त्री०-ची।

खोंची सं० स्त्री० नाज, साग भाजी आदि में से निकालकर लिया हुआ टैक्स,-काढ़ब,-लेब।
खोंड़ वि० पुं० कम, खंडित -करब,-होब, यह प्रायः आय, इनाम आदि के लिए आता है। सं० खंड ?
खोंड़र सं० पुं० पोल, खाली स्थान -करब,-रहब, -होब।
खोंड़ा वि० पुं० जिसका एक या दो दाँत टूट गया हो, स्त्री०-ड़ी, आ०-ड़े,-ड़ई,-ऊ; बच्चे खेल में कहते हैं-"खोंड़ा दाँत विजौली क बिया, वह माँ हगे सियारे क घिया।"
खोंपी सं० स्त्री० कलम (हजामत की),-कढ़ाइब, -काढ़ब, कलम कटाना, काटना, पुं०-पा (हास्यात्मक) हल के लोहेवाले फल के नीचे लगनेवाली लकड़ी जिसकी गावदुम शक्ल भी पुराने ठाट के हजामत के कलम की भाँति होती है।
खोंस-खाँस सं० पुं० इधर-उधर, व्यर्थ की बातें -करब,-लगाइब।
खोंसब क्रि० स० बाहर से लगा देना, जोर से लगाना; मु० (शिकायत) कर देना; प्रे०-वाइब, -साइब,-उब।
खोआ सं० पुं० खोया, वै०-वा।
खोइ सं० स्त्री० आदत, बुरी आदत; वै०-य, खइ।
खोइब क्रि० स० खोना, मिटा देना, प्रे०-वाइब, -उब, वै०-उब; मु० खोय जाब, विधवा हो जाना, (पति के बिना) गुम हो जाना; सं० क्षय।
खोका सं० पुं० लकड़ी का खुला डब्बा; वै० -खा।
खोक्खा वि० खाली प्र०-क्खै, वै० खु-।
खोड सं० पुं० कपड़े का वह भाग जो काँटा, कील आदि लगने से फट गया हो,-लागब, वै० खोंग; वि०-ड्लि।
खोज सं० स्त्री० तलाश -करब,-होब,-पाइब क्रि० -ब, वि०-जी, छानबीन करनेवाला,उत्सुक, वै० -जि।
खोजब क्रि० स० तलाश करना, खोजना; प्रे० -जाइब,-उब,-जवाइब,-उब।
खोजवार सं०पुं०खोजनेवाला, वै०-जार स्त्री०-रि।
खोजा सं० पुं० पुरुष जिसके मूँछ दाढ़ी न निकलती हो वै०-झा।
खोजाई सं० स्त्री० खोज करते रहने की कार्रवाई, पद्धति आदि, प्रे०-वाई, वै० ख्व-।
खोजासि सं० स्त्री० खोज करने की अत्यधिक या अनुचित इच्छा -लागब 'आसि' लगाकर अतिशयोक्ति अथवा अनौचित्य का प्रदर्शन होता है, जैसे बकवासि।
खोजी वि० खोज का शौकीन।
खोझर सं० पुं० बीच का भाग जिसमें खोखलापन हो,-रहब,-होब, वै० झो-।
खोझा दे०-जा।
खोट वि०पुं० शरारती, तंग करनेवाला, तुल० छोट कुमार खोट अति' भा०-पन,-टाई, स्त्री०-टि।
खोता सं० पुं० घोसला,-बनइब।
खोद-खाद सं० पुं० थोड़ा सा काम, खेती का कुछ प्रारंभिक काम,-करब,-होब क्रि०-ब-ब, खोद-खाद करना, खोदना-खादना; सं० खन्।
खोदब क्रि० स० खोदना प्रे०-दाइब,-दवाइब,-उब खनब-,कुछ करना, खेती का कुछ काम करना।
खोभार सं० पुं० विकट स्थान, संकट, खतरे की जगह; वै० ख-;-मँ, विपत्ति में (पड़ना, रहना)।
खोय सं० स्त्री० आदत, बुरी आदत; दे०-इ।
खोराँट वि० घाघ, पक्का; प्र०-राँट।
खोरा सं० पुं० कटोरा, गिलास; पूरा शब्द 'आबखोरा' पानी-पीने का बर्तन है; फ़ा० खुर्दन, पीना, खाना, पीने या खाने का बर्तन।
खोराक सं०स्त्री० खुराक; एक व्यक्ति का भोजन; वै० खु-; फ़ा०खुराक वि०-की, खूब अधिक खानेवाला।
खोरि सं० स्त्री० गली,-खोरि, गली-गली।
खोरिआ सं० स्त्री० कटोरी वै०-या।
खोल सं० स्त्री० मोटी दुहरी चादर (ओढ़ने के लिए) जिसके चारों ओर मगजी (दे०) लगी होती है, वै०-लि,-ओढ़ब फ़ा० ख़ोल।
खोलब क्रि० स० खोलना, प्रे०-लाइब-वाइब,-उब।
खोलराई सं० स्त्री० छिलका, व्यं०-खाल;-निकारब; दे० खलरा,-राई, क्रि०-रब,-राइब, मुँह से छिलका निकाल-निकालकर खाना।
खोवा सं० पुं० खोया, वै०-आ।
खोह सं० पुं० निर्जन स्थान, दूर की जगह, फ़ा० कोह ? प्र०-हे, द० खोहे मँ, बड़ी दूर और सुनसान जगह।
खौकब क्रि० अ० जोर से बोलना, डाँटना, प्र० -किआब,-इब; वै० घौ-।
खौखिआब क्रि० स० डाँटना; ध्व० खौ खौ करना प्र०-आइब।
खौफ सं० पुं० डर, भय,-खाब,-लागब,-करब,-होब; वै० खउफ फ़ा० ख़ौफ।
खौफिआ सं० पुं० गुप्तचर,-पुलीस, पुलीस का एक गुप्त विभाग या उसका सदस्य, दे० खु-, वि० गुप्त, वै० खो-;फ़ा० खुफियः।
खौर सं० पुं० राख जो मत्थे में लगाई जाती है।
खौरहा वि० पुं० जिसे (विशेषत: कुत्ते को) खुजली हुई हो; स्त्री०-ही, दे० खउरा, क्रि० खौराब, वै० खउरहा मु० दरिद्र।
खौरा दे० खउरा।
खौलब क्रि० अ० खौलना, प्रे०-लाइब,-वाइब,-उब, मु० गर्म पड़ना, रुष्ट होना, लोहू-,ताव आना, क्रोध होना वै० खउ-।
खौहटि दे० खउहटि।
खौहार सं० पुं० झंझट, झगड़ा,-मँ परब, व्यर्थ के झंझट में पड़ जाना, वै० खउँ-।

ग

गगा सं० स्त्री० गंगाजी,-उठाइब, गंगा की शपथ खाना,-जानें, गोरैया, शपथ, सं० ।
गंगबरार सं० पुं० वह भूमि जो नदी के पाट के कारण जोत में न आ सके ।
गँछाई सं० स्त्री० गाँछने (दे० गाँछब) की क्रिया, सुंदरता या मजदूरी; गाँछने की मिहनत, प्रे० -वाई ।
गज सं० पुं० ढेर,-लागब,-करब, क्रि० गाँजब (दे०) प्रे० गँजाइब, फ़ा० गंज ।
गँजब क्रि० अ० एकत्र होना, बहुत होना, अधिक (धन, सामग्री) होना, प्रे० गाँजब, गँजाइब, -वाइब, एकत्र कराना, रखवाना; फ़ा० गंज, ढेर ।
गँजवाइब क्रि० स० इकट्ठा करना करना, वै०-उब ।
गँजहँड सं० पु० बड़ा बर्तन, बड़ा पेट, गज (हाथी)+हंड (हंडी या हंडा =वर्तन), हाथी का बर्तन, वै० गज-,यह शब्द प्रायः पेटू या बहुत खानेवाले के लिए प्रयुक्त होता है । -भरब, (पेटू का) पेट भरना, 'हाँडी' (दे०) या हंडा जिसमें चीजें 'गाँजी' या एकत्र रखी जायँ ।
गँजहा वि० पुं० गाँजा पीनेवाला; स्त्री०-ही, गाँजावाला,-लो, दे० गाँजा ।
गँजाइब क्रि० स० एकत्र कराना, ढेर करके रखवाना, भर देना, अधिक कर देना, प्रे०-वाइब,-उब ।
गँजाई सं० स्त्री० गाँजने की क्रिया, मजदूरी अथवा पद्धति; प्रे०-वाई, वै० गँजानि (केवल पद्धति या विधि के अर्थ में) ।
गँजासि सं० स्त्री० गाँजने की बड़ी इच्छा,-लागब, -होब, क्रियाओं में 'आसि' लगाकर इच्छा या उत्कंठा-सूचक संज्ञाएँ बनती हैं ।
गँजिआ सं० स्त्री० कमर में लपेटकर या लटकाकर रुपया-पैसा रखने की बुनी हुई थैली, वै०-या, ('गाँजब') से जिसमें एकत्र कुछ 'गांजा' या रखा जाय) ।
गंजा वि० पुं० जिसकी खोपड़ी पर बाल न हों ।
गंजी सं० स्त्री० शकरकंद, यह दो प्रकार का होता है, लाल और सफेद; व्यं० मु० कुछ नहीं, केवल लिंग (क्योंकि इसकी शकल लिंग से मिलती है), -निकोलब, व्यर्थ का काम करना, कुछ न करना। -फराक, बनियान, प्रायः बनियान को "गंजी" ही कहते हैं, पर शौकीन नवयुवक-फराक (अं० फ्राक ?) कभी-कभी कहा करते हैं ।
गँजेड़ी वि० पुं० गाँजा का शौकीन, गाँजा के नशे में मस्त, गाँजा का आदी; इसी तरह 'भाँग' से 'भँगेड़ी' बनता है । वै०-री ।
गँजैआ वि० पुं० गाँजनेवाला, प्रे०-वैआ, वै० -या ।
गंठा सं० पुं० प्याज़ का मोटा बड़ा दाना, स्त्री० -ठी; यक-पियाजि, बिना पत्ते का प्याज ।
गँठिआब क्रि० अ० गांठ पड़ जाना, सं० ग्रथि ।
गँठी वि० स्त्री० जँची, ठीक से तैयार की गई (बारात, बात, महफ़िल आदि), वै० गँ-,पुं०-ठा ।
गँठील वि० पुं० गाठवाला, पुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, छोटा पर चुस्त (व्यक्ति), स्त्री०-लि, वै०-ला ।
गँठुली सं० स्त्री० फल की गुठली,-परब, गुठली पड़ जाना, वै० गे-, ग-, क्रि०-लिआव,-याव, गुठली पड़ना ।
गँठैआ सं० पुं० गांठनेवाला, ले लेनेवाला, प्रे० -ठवैया, वै०-या,-वइआ,-या, गँ- ।
गँठौनी सं० स्त्री० गांठ लगाने या गांठने की मज़-दूरी, कम बोला जाता है ।
गंड सं० पुं० गाँड, प्रायः गाली में ही प्रयुक्त, उ० दुत तोरे-में ।
गंडा सं० पुं० (प्रायः हनुमान या भैरव का) प्रसाद स्वरूप रंगीन धागा जिसे भक्त लोग पहनते हैं । चार की संख्या को भी गंडा कहते हैं, उ० यक-(चार) पइसा, दुइ-(आठ)।
गंडू वि० पुं० गाँडू, यह शब्द यों भी नीच जातियों द्वारा एक दूसरे को फटकारने या डाँटने के लिए प्रयुक्त होता है, उ० दु (या दू)-,दुत गाँडू ।
गँडुआ वि० पुं० गाँड़ मारने या मरानेवाला, अप्राकृतिक व्यभिचार करने और करानेवाला; वै० -हा,-वा, क्रि०-ब, अपनी बात से विचल जाना; साथ न देना ।
गँडहा वि० पुं० शायद यह "गँडुआ" का प्र० या घृ० रूप है जो फटकारने के ही लिए आता है; स्त्री०-ही ।
गदा वि० पुं० मैला, अपवित्र, स्त्री०-दी, वै०-ला, -ली, फ़ा० गंदः ।
गंध सं० स्त्री० दुर्गंध, महक;-आइब,-देब, वै० गन्ह,-न्हि ।
गंधाब क्रि० अ० बदबू करना, वै०-न्हाब, सं०गंध ।
गंधि सं० स्त्री० बदबू,-आइब,-देब, वै०-न्हि, सु-, खुशबू, दुर-, बहुत बदबू ।
गँसनहर सं० पुं० गाँसनेवाला, डाँटनेवाला; स्त्री०-रि ।
गँसना सं० पुं० गाँसनेवाला, यह शब्द यों तो व्याकरण-सिद्ध है पर बहुत कम प्रयुक्त होता है । स्त्री०-नी ।
गँसनि सं० स्त्री० सिकुड़ने या कसने की क्रिया, "गसब" से, जैसे "फँसनि" (फँसब से) ।
गसब क्रि० अ० गँस जाना, प्रे० गाँ,-साइब-सवाइब (दे०) ।

गँसाइब क्रि० स० ढँटवाना, "गाँसब" (दे०) का प्रे०-वै०-उब, प्रे०-सवाइब,-उब ।
गइआ सं० स्त्री० गऊ, गाय,-राखब,-दुहब,-माता; दे० गऊ ।
गइबुआ वि० पुं० आवारा, जिसके घर-वार का पता न हो, फ़ा० ग़ायब ।
गइर वि० पुं० अन्य, अपरिचित, बाहरी वै० गयर फा० ग़ैर -करब, संतोष करना, तितीक्षा करना, सहना ।
गई त्रि० स्त्री० बीती,-गुजरी, पुरानी,-बाति, पुरानी बात ।
गउँखा सं० पुं० ताक, दे० ताख, सं० गवाक्ष, क्योंकि प्राचीन काल में ये ताक गौ के नेत्रों के आकार के बनते थे ।
गउँगीर वि० पुं० चालाक़ जो अपनी 'गौं' पर न चूके, गउँ (दे० गौं + गीर (फ़ा०) पकड़ने वाला, वै० गौं-, गवँ-।
गउँछा सं० पुं० नई शाखा, गाँछा -फूटब,-फोरब, वँ० गाछ (वृक्ष) स्त्री०-छी, वै० गाँछा ।
गउँज सं० पुं० गूँज, धूआँ आदि की घूमती हुई लहर, पद-, पाजामे का वह नाम जो पुराने देहातियों ने इसे बड़े फूहड़पन के साथ दिया है—अर्थ "जिसमें 'पाद' गूँजे (बाहर न निकल सके), क्रि० -ब ।
गउँजब क्रि० अ० गूँजना, हर्षित होना. मनैमन-, भीतर ही भीतर प्रसन्न होना, फूला न समाना, प्रे०-जाइब,-उब ।
गउआरासा त्रि० बहुत ही सीधा, गऊ की भाँति गऊ + रासि (प्रकार, सं० ।
गउआई सं० स्त्री० अफ़वाह, जनरव, अनिश्चित बात, फा० गुफ्तन (कहना),-करब,-होब ।
गउकस। सं० स्त्री० गोवध, फा० गाव + कुशी, वै०-ब- फा० कुश्तन (मारना) ।
गउघाती त्रि० गऊ की हत्या करनेवाला, सं० गो + घात + इन ।
गउचर सं० पुं० गायों के चरने के लिए रखी भूमि, वै० गो-, सं० गोचर, इस नाम का एक स्थान बदरीनाथ के पास है ।
गउदान सं० पुं० गोदान,-देब-करब,-होब, सं० ।
गउधुरिया सं० स्त्री० गोधूली; सं० ।
गउमाता सं० स्त्री० गोमाता सं०, वै० गव-।
गउर सं० पुं० तरकीब, पेच,-करब,-लगाइब, वि०-री, चतुर -गार, कुछ न कुछ राह,-होब, फ़ा० ग़ौर (चिंता) ।
गउरा सं० स्त्री० गौरी,-पार्वती, पार्वती जी,-माता, सं० गौर, वै०-री, तुल० ।
गउहत्या सं० स्त्री० गऊ के मारने का काम, पाप आदि,-करब,-होब,-लागब, सं० गोहत्या ।
गऊ सं० स्त्री० गाय, वि० सीधा-सच्चा,-मनई,-कसम, गाय की शपथ,-माता,-बराभन, गो ब्राह्मण,-गोहारि।
गगरा सं० पुं० लोहे, ताँबे आदि धातुओं का घड़ा स्त्री०-री, मिट्टी का घड़ा ।
गच सं० पुं० चूने की जुड़ाई फ़ा० गच, चूना ।
गचकब क्रि० स० आराम से खाना, बेकारी में बैठे-बैठे खाते रहना, प्र०-काइब, ध्व० 'गचक' (भोजन के पेट में गिरने की आवाज) से, व्यं० हज़म कर लेना. चुरा लेना, गर्भधारण करना, सहवास में पूरा लिंग भीतर कर लेना ।
गचक्का सं० पुं० निर्द्वन्द्व भोजन,-मारब, खूब खाना, ध्व०, प्र०-चागच;-च्च (क्रि० वि०), ब-।
गचब क्रि० अ० (कौड़ी या ओड़े का) ढाही (दे०) के या दूसरे ओड़े (दे०) के पास पहुँच जाना, स० -चाइब,-उब, पास ।
गचर गचर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और अधिक (खा जाना); क्रि० राइब ध्व० प्र० ब-।
गचाका दे० गचक्का, वै०-क,-क से,-कें, दे० कचाक, ध्व० 'गच' ।
गचागच क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और खूब (भोजन या सहवास); प्र०-च्च ।
गछाव क्रि० अ० गाँछा फोड़ना, गँछाना, वै० गँ-, वँ० गाछ (पेड़), वि०-न, नई पत्तियों तथा डालोंवाला; दे० गलछा ।
गज स० पु० कपड़ा या भूमि की एक नाप, ३ फ़ीट, मु०-करब, नियंत्रित कर लेना, सीधा कर देना (क्योंकि गज़ सीधा होता है), हरा देना, हाथी, फा० गज़ (प्रथम अर्थ में,, स० गज (अंतिम अर्थ में) ।
गजरदम्म सं० पुं० बड़ा सबेरा, प्रात.काल -म्मैं, बड़े सबेरे, सूर्योदय के बहुत पूर्व ।
गजर-बजर सं० वि० एक में मिला हुआ, अस्पष्ट, -करब,-होब ।
गजरा सं० पुं० फूलों की माला, बड़े-बडे फूलों का हार,-डारब,-पहिरब,-पहिराइब ।
गजरिहा वि० पुं० गाजर वाला (खेद, वर्तन आदि), स्त्री०-ही ।
गजल सं० पुं० घंटा, घंटे की आवाज, प्रेम की कविता, फ़ारसी या उर्दू का एक छंद, अर० ग़ज़ल (पीछेवाले अर्थों में), अर० में इसका वास्तविक अर्थ है "स्त्री० से वार्तालाप = प्रेम की बात" ।
गजक सं० पुं० एक मिठाई ।
गजट सं० पुं० विज्ञापन पत्र, -करब,-कराइब, प्रकाशित करना या कराना,-होब, घ्रं० गज़ट ।
गजब सं० पुं० आश्चर्यजनक स्थिति, भयानक काम,-करब,-होब,-गुजरब,-गुजारब, अर० ग़ज़ब, क्रोध, वि० अद्भुत ।
गजबाँक सं० पुं० वह बड़ा बाँक या अंकुश जो पीलवान रखता है । सं० गज + वंक, दे० बाँक ।
गजा सं० स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा; मज़बूत

कपड़ा, शा० 'गज' से (हाथी के चमड़े जैसा मोटा या मजबूत)।
गजुआ दे० गेजुआ।
गज्झा सं० पुं० सुख, आनंद;-मारब, आनंद करना, ऐश करना, शा० (गज=हाथी की तरह पानी में आनंद से) डूबा रहना, खाने पीने में डूबा या मस्त रहना, दूध या घी की अधिकता या धार से उसमें जब 'बुल्ले' (दे० बुल्ला) उठते हैं तो उन्हें भी 'गज्झा छूटब' कहते है, वै०-झ्झा,-ज्जा (दूसरे अर्थ में)।
गझिन वि० पुं० पास पास (बोया या उगा हुआ), इसका विपरीत शब्द 'बिड़र' (दे०) है, क्रि० -नाब।
गझ्झा दे० गज्झा।
गटई सं० स्त्री० गला, गर्दन,-लै, गले तक, -दबाइब, जबरदस्ती करना, मार डालना,-लगाइब, गले मढ़ना, वै० गँ, बैठब, गला बैठ जाना,-चलब, गाने में गला अच्छा चलना। (लै० गटर, ड० गल्यन)।
गटकब क्रि० स० जल्दी खा या निगल जाना, अधिक खाना, प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब, भा० -वाई।
गटकौअलि सं० स्त्री० गटकने की आदत, उसकी पद्धति या निरंतरता, वै०-कउअलि,-वलि।
गटक्का सं० पुं० एक बार में या झट खा जाने का क्रम,-मारब, 'गटक' का प्र० रूप, वै०-क्क।
गट्ट-गट्ट क्रि० वि० बड़े-बड़े कौर करके जल्दी-जल्दी (खाना), प्र० गटा-गट्ट, -गट, वै०-ट।
गट्टा सं० पु० एक मिठाई जिसमें चीनी के गोल गोल टुकड़े काटे जाते हैं; 'गिट्टी' (दे०) से संबद्ध, स्त्री०-ट्टी, लै० गटा (बूँद)।
गट्ठर स० पुं० बड़ी गठरी, स्त्री० गठरी, व्यं० पुं० -ठरा, क्रि० गठरिआइब,-आब,-उब।
गट्ठा सं० पुं० बड़े-बड़े टुकड़े, कई टुकड़े एक में बँधे, गाँठि (दे०) से संबद्ध, क्रि०-ब, ऐंठकर टुकड़े बन जाना या (प्याज के) गट्ठे पड़ना, पियाजि-,प्याज की एक गाँठ; स्त्री०-ट्ठी।
गठनि सं० स्त्री० बनावट, बनावट की मजदूरी, शरीर या चेहरे की गठन, स० गठ्।
गठब क्रि० अ० ठीक होना, सगठित हो जाना, प्रे० गाठब, गठाइब,-उब, गठवाइब,-उब, वै० गँ-; सं० गठ्।
गठरी सं० स्त्री० पोटली, बोझ;-बान्हब,-करब, -होब, क्रि०-रिआइब, गठरी की तरह बाँध लेना, सं० गठ्, व्यं० पुं०-रा, बड़ा गट्ठर, बेढङ्गा सा बँधा गट्ठर।
गठा वि० पुं० सगठित, चुस्त, ठीक, अच्छे प्रबंध-वाला (घर, परिवार आदि); स्त्री०-ठी, वै० गँ-।
गठाइब क्रि० स० गाँठ लगवाना, ठीक करवाना; मु० प्रसंग कराना; वै० गँ-,-उब, प्रे०-ठवाइब, -उब, भा० गठाई, गाँठने की मजदूरी, रीति आदि।
गठानि सं० स्त्री० गाँठ, गठान, परब,-होब।
गठारि वि० स्त्री० गाँठवाली, पु०-र, वै० गँ-, दे० गँठिहा,-ही, यह शब्द बहुत कम प्रयुक्त होता है।
गठिआ सं० स्त्री० वायुविकार का रोग, गँठिआ, वै०-या, गँ-,-होब, सं० ग्रन्थि (गाँठ)।
गठिआइब क्रि० स० गाँठ लगाना, बाँधना, अच्छी तरह रखना, मु० (बात) याद रखना, न भूलना; वै० गँ-,-उब, स० गठ्, प्रे०-वाइब।
गठिबन्हन स० पुं० गाँठ बाँधने की क्रिया, पद्धति (जो ब्याह के बाद भी अनेक अवसरों पर होती है जिसमें पति-पत्नी एकत्र बैठकर भाग लेते हैं), व्याह,-करब,-होब; सं० ग्रन्थिबंधन, वै० गँ—।
गठिवाइब क्रि० स० गाँठ या गठरी बाँधने में सहायता करना, वै०-उब, गँ-,सं० ग्रथि।
गठिहा वि० पुं० गाँठवाला, मन में द्वेष या ईर्ष्या रखनेवाला, चुप्पा, स्त्री०-ही, स० ग्रंथि+हा; वै० गँ-।
गडकब क्रि० अ० डाँटना, चिल्लाना, शोर मचाना, प्रे०-काइब,-उब, धमकाना।
गड़गड़ा सं० पु० हुक्का (क्योंकि इसमें 'गड़गड़' की आवाज़ आती है), ध्व०, स्त्री०-डी।
गड़गडाब क्रि० अ० गड़गड़ की आवाज़ होना या देना, प्रे०-इब,-उब,-वाइब,-उब, अर० ग़रग़रा (गले में से कुल्ला करने का पानी, दवा आदि)।
गडड सं० पु० गडड़ या गरर की आवाज़, ध्व०, -गड़ड़ होब,-करब, वै० प्र० घ-,घर-।
गड़तरा सं० पुं० कपड़े का टुकड़ा जो छोटे बच्चों की गाँड के नीचे रखा जाता है, वै०-ड़ि-, गँ-; गाँड़ि+तर (नीचे)।
गडपब क्रि० स० खा जाना, चुरा लेना, बेईमानी से ले लेना, प्रे०-पाइब,-उब, वाइब,-उब।
गड़प्प स० पुं० डूबने से अधिक पानी, गहराई, -होब, गहरा होना; मु०-करब, हज़म कर लेना, न देना, क्रि०-ब, ध्व०।
गड़ब क्रि० अ० गड़ना, गड़ जाना, दर्द करना (पेट या आँख का), प्रे०-ड़ाइब,-ड़वाइब।
गडबजई स० स्त्री० बात काटने की आदत,-करब, उलट या पलट जाना, मुकर जाना, गड़ (गाँड़) +बाज़ी, गाँडूपन अर्थात् मर्द की भाँति न व्यवहार करना या होना।
गडबड वि० पुं० खराब, रद्दी, अव्यवस्थित, स्त्री०-ड़ि, क्रि०-डाब, खराब हो जाना' प्र०-ड्ड, -ड्ड,-ड्डी।
गड़बड़ा सं० पुं० जमीन में खोदा हुआ गड्ढा

जिसमें कुछ चीजें-फल आदि-रखी जायँ; -खनव।

गड़बड़ाब क्रि० अ० खराब हो जाना, प्रे०-इब, -उब।

गड़बड़ी सं० स्त्री० खराबी,-करब,-होब,-देखब, -पाइब,-रहब।

गडमरई सं० स्त्री० अप्राकृतिक व्यभिचार, वै० -राई-रवा, ऐसा व्यभिचार करनेवाला।

गड़म्म वि० गायब, लापता,-करब-,होब, प्र० गुड़-।

गड़र-बड़र वि० गड़बड़,-होब,-करब; वै० ल-,अ-।

गड़रा स० पुं० एक घास जिसकी जड़ बहुत मज़बूत होती है, खस का एक प्रकार जो पानी से दूर भी होता है; वै० गँ-।

गड़रिआ सं० पुं० भेड़ चराने या पालनेवाला; वै० -या,-ड़े-,गँ-; कहा०-क गोजी,-क लाठी, जो छोटा ही होता जाय। स्त्री०-रिनि,-डेरिनि।

गड़ल्लरि सं० स्त्री० एक चिड़िया जो अपनी दुम बार-बार ऊपर नीचे किया करती है, गड़ (गाड़ = दुम) +(उ) ल्लरि (उलरब दे०); वै०-ड़ु-,गँड़-; मु० जो व्यक्ति एक स्थान पर देर तक न रहे, आवारा गर्द, परिवर्तनशील।

गड़वा सं० पुं० पानी देने का शानदार बर्तन, हत्थेदार और टोंटीदार लोटा; वै० गँड़ु-,-आ; स्त्री०-ई, गँ-।

गड़वाइब क्रि०स० गड़वा देना; वै०-उब,-ड़ाइब; भा०-ई।

गड़सा सं० पुं० गँड़ासा, एक लोहे का औजार जिससे चारा काटते हैं; वै०-ड़ास, ड़ासा, गें-,स्त्री० -सी,-ड़ासी।

गड़हा सं० पुं० गड्ढा, स्त्री०-ही, छोटी तलैया; मु० पेट,-भरब, पेट पालना, खाना,-गुड़हा,-सड़हा, -ही-गुड़हा।

गड़हिआ सं० स्त्री० गड़ही, वै०-या।

गड़ाइब क्रि० स० गड़वाना; प्रे०-ड़वाइब,-उब।

गड़ाक सं० पुं० गिरने की आवाज़,-से, जोर से, दे०-ड़ाका।

गड़ाका सं० पुं० गहरे में गिरने की आवाज़;-होब, वै०-क,-म -क से,-ये; प्र०-ड़क्का,-मारब।

गड़ालू सं० पुं० एक कंद जिसकी तरकारी होती है।

गड़ास सं० पुं० चारा काटने का एक लोहे का औज़ार, स्त्री०-सी; वै०-सा, गँ-।

गड़ाही सं० स्त्री० बड़े गड्ढे की स्थिति, खाईं; ऊँची-नीची भूमि,-मारब, खोदकर चारों ओर से खाईं बना देना;-लगाइब।

गड़िआइब क्रि० स० गड़ा लेना, मूँद लेना (आँख), दर्द के मारे न खोलना वै०-ड़ाइब,-उब।

गड़िआब क्रि० अ० बात बदल देना, अपनी बात काट देना, पीछे हटना· वै०-ड़ु-,गँ-,-याब, गाँड़ि (दे०) से।

गड़िबजई सं० स्त्री० किसी की बात न मानने की आदत, अपनी ही बात बदल देने की प्रवृत्ति; -करब, वै० गँ-,गाँ-; गाँड़ि+बाजी, नामर्दी की आदत।

गड़िलका सं० पुं० अपनी ही बात पर डटे रहने का हठ-पाइब,-करब; वि०-ल्ल, वै०-कई, गँ-; शायद "अड़िल्ल" के वै० रूप से भा० सं०।

गड़िहा वि० पुं० गड़ुवा स्त्री०-ही; दु-, दुतकारने या शरमवाने के लिए वाक्यांश; वै०-ड़ु-,गँ-।

गड़ुआई सं० स्त्री० गड़ुआ होने का भाव; ऐसी आदत;-करब,-कराइब; दे०-आ, वै० गँ-।

गड़आब क्रि० अ० दे०-ढ़ि; प्रे०-वाइब; वै० गँ-।

गड़ुँघरा वि० पुं० बेशरम, स्त्री०-री; गड़+उघरा, जिसकी गाँड़ उघार (खुली) हो; वै०-गँ।

गड़ुर सं० पुं० गरुड़जी; विष्णु का वाहन;-देवता, -महराज, सं० गरुड़।

गड़ुल्लरि सं० स्त्री० एक **छोटी** चिड़िया जो अपनी दुम उलारा करती **है; मु०** जल्दी-जल्दी बदल जानेवाला व्यक्ति, भा०-ल्लरई, परिवर्तनशीलता, अनावश्यक रूप से बात या स्थान बदल देने की आदत, गाँड़ि + उलारब; वै० गँ-।

गड़ुली सं० स्त्री० कपड़े या रस्सी की गोल टिकरी जिसे स्त्रियाँ घड़ों के नीचे अपने सिर पर रखती हैं, घड़ों के नीचे या भूमि पर भी रखा जाता है, वै० गे-, गँ-।

गड़ुवा वि० पुं० दे०-आ; वै० गँ-; भा०-अई, -वई,-पन; क्रि०-वाब,सं० दे० गड़आ।

गड़ू वि० पुं० वज़नी, भारी- धरब,-पाइब, प्रभाव पड़ना प्र०-ड़ू, क्रि० ड़ुआब,-ड़ु-,-ड़ुं;वै०-ड़ूँ; सं० गुरु।

गढ़ सं० पुं० क़िला, दुर्ग; शक्ति का स्थान, केंद्र, -महोबा, महोबा का दुर्ग (आल्हा में प्रसिद्ध), माँडौ-,मांडू का किला (जो मध्यभारत में है) जहाँ आल्हा ऊदल भेस बदल कर गये थे।

गढ़नि सं० स्त्री० बनावट (चेहरे या शरीर की); गढ़ने की क्रिया।

गढ़ब क्रि० स० गढ़ना, लकड़ी या धातु की वस्तु बनाना, मु० पीटना, खूब मारना, कठोली-,बातें बनाना, (बच्चों की) व्यर्थ बातें करना; प्रे०-ढ़ाइब, -उब,-वाइब,-उब (ज़ेवर बनवाना)।

गढ़वाई सं० स्त्री० गढ़ने की मजदूरी, मिहनत आदि।

गढ़ाई स०स्त्री० गढ़ने की क्रिया, मजदूरी, सुंदरता आदि; मु० मार, पिटाई, गाढ़ापन, बदमाशी, रहस्य न बताने की आदत; दे० गाढ़।

गढ़ानि सं० स्त्री० गढ़ने की मिहनत;-होब, -करब।

गढ़ी सं० स्त्री० छोटा सा गढ़, (अयोध्या की) **हनूमान** गढ़ी जिसमें प्रसिद्ध मूर्ति है और जो चारों ओर से क़िले की तरह बना है।

गढ़ुआव क्रि० अ० बोझ से दबना, बोझ अनुभव करना, वै०-हुं-, प्रे०-वाइव, दे० गढ़, गरू।
गढ़ू वि० वजनदार, भारी,-गँभीर,-होब;-गँभीर, बोझिल, मु० गर्भवती, वै०-हू।
गढ़ैश्रा सं० पुं० गढ़नेवाला, बनानेवाला, व्यं० पीटनेवाला, मारनेवाला, वै०-या,-ढ़इया;-वैया।
गढ़ौश्रा वि० पुं० गढ़ा हुआ (ढला हुआ नहीं), आभूषणों के लिए प्रयुक्त।
गण सं० पुं० सहायक, भेदिया,-लागव, भेद देने वाला होना; वै० गन; सं० गण।
गणपुत्तर सं० पुं० काल्पनिक बच्चा जो (पुरुष के) गांड मारने से हो; वै० गँड़-,-डि-पुत्र; गांड़ + सं० पुत्र।
गतका सं० पुं० एक खेल जिसमें चमड़े से ढके हुए डंडों से ढाल पर मारते हैं, फरी-, फरी (दे०) मारना और गतका खेलना, सं० गदा।
गतागम सं० पुं० तनिक ज्ञान, कुछ भी पता;-होब, -रहब, गत (गया)+आगम (आना)=आना-जाना, आने-जाने तक का पता; सं०, प्र०-म्म, म्य, -म्मि (स्त्री०)।
गति सं० स्त्री० हालत, अंतिम स्थिति, मरने पर की स्थिति, बुरी हालत, बुढ़ापे की हालत,-होब, -करब, बुरा बर्ताव होना या करना;-ती परब, काम आना, अंत में काम देना; सं०।
गद्गद वि० पुं० थोड़ा भीगा; पूरा न सूखा;-रहब, -होब; दे० गदु (जिससे यह शब्द संबद्ध जान पड़ता है); मु० प्रसन्न, स्निग्ध, भीगा (प्रेम के मारे)।
गदर सं० पुं० बलवा;-करब, होब, अर० ग़दर।
गदराब क्रि० अ० दानों से भरपूर हो जाना (खड़ी फसल का), पकने के लिए तैयार हो जाना (फल का), वि०-रान; मु० गादर (दे०) हो जाना, डर जाना, सुस्ती करना, प्रे०-वाइब,-राउब, गी० "अमवा बउरि गये महुवा गदराने ।"
गदला वि० पुं० गँदला (पानी); स्त्री०-ली, वै० -न-।
गदहपुन्ना सं० पुं० वह बूटी जिसे आयुर्वेद में पुनर्नवा कहते हैं। इसका साग सुंदर होता है।
गदहरोइयाँ वि० पुं० जिसके बाल गदहे के रंग के हों (पशु), गदहा+रोवाँ (बाल) दे०, सं० गर्दभ+रोम।
गदहला सं० पुं० मोटा या पुराना गद्दा, वै० -दाला।
गदहवा सं० पुं० किसी मूर्ख के संबध में घृ० प्रयोग, 'गदहा' का घृ० रूप, स्त्री०-हिआ,-या; उ० करे-! क्यों गदहे ?
गदहा सं०पु० गधा; स्त्री-ही, मु०मूर्ख, स०गर्दभ।
गदहिला स० पु० एक कीड़ा जो मोटा सा होता है और जाडों की फसल में लगता है।-लागव; वै० गधइ-,-धै-।
गदा सं० पुं० प्राचीन हथियार जो हनूमान आदि योद्धा धारण करते थे।-मारव,-उठाइव,-फेरव, -भाँजव (दे०)।
गदागद क्रि० वि० (घूसों के लिए) जल्दी-जल्दी एक के बाद दूसरा,-मारब,-लगाइब,-लागव; ध्व०, वै०-द।
गदाला सं० पुं० भारी गद्दा या ओढ़ना, दे० गदहला,-देला।
गदु सं० स्त्री० पेड़ों से निकला हुआ लासा, गोंद आदि जो चिपकाने के काम आता है, वै० गा-।
गदुराव क्रि० अ० गादुर (दे०) की भाँति व्यवहार करना, दोनों ओर रहने की कोशिश करना जैसा पुरानी कथा में गादुर ने किया था।
गदेला सं० पुं० छोटा पतला गद्दा, बच्चा, दूसरे अर्थ में वै० गेदहरा (दे०)।
गदोरी सं० स्त्री० हथेली कहा० जौन पण्डित की पोथी म तौन पण्डिताइन की गदोरी मँ।
गद्दा सं० पुं० गद्दा; स्त्री०-द्दी, राजा की कुर्सी; गद्दी लेव,-पाइव,-छोड़ब, राजगद्दी छोड़ना।
गद्दी सं० स्त्री० छोटा गद्दा, राजा का आसन, -होव,-लेब,-देव,-छोड़ब,-पाइव, राज-, राजा को सिंहासन पर बैठाने की पद्धति।
गधइला दे० गदहिला, शायद मोटा होने और धीरे-धीरे चलने के कारण इस कीड़े को यह नाम मिला है, सं० गर्दभ।
गन सं० पुं० मुखबिर, भेदिया, सहायक,-लागव, -राखव, सं० गण।
गनउनी सं०स्त्री० गिनने की मजदूरी, वै०-नौ-;सं० गणना।
गनकब क्रि० अ० धीरे-धीरे पर बराबर शब्द करना, प्रे०-काइब, मार देना, वै०-उब, सं० गनक, ऐसा शब्द।
गनगनाब क्रि० अ० 'गनगन' शब्द होना या करना; ध्व०।
गनती सं० स्त्री० गणना, गिनती, इज्जत, करब, -होब वै०-न्ना; सं० गणना।
गनपति सं० पुं० गणेश जी का एक नाम, सं० गणपति, वै०-त,-जी।
गनब क्रि० स० गिनना, प्रे०-नाइब,-उब, तरई-, भूखा रहना, सं० गणय।
गन्ना सं० स्त्री० विवाह के लिए वर वधू की पत्री की देख-रेख,-गनाइब,-करब,-होव।
गन्ना सं० पुं० ईख,-पेरब,-चुहब (दे०) चूसना, -चुहाइब,-चीइब (दे०)।
गन्हकि सं० स्त्री० गंधक।
गन्हकी वि० गंधक का सा, गंधकी;-रंग, ऐसा रंग।
गन्हाउर सं० पुं० बदबूदार वस्तु; सं० गंध; मु० बदनाम, घृणित, स्त्री०-रि।

गन्हाव क्रि० अ० बदबू करना; प्रे०-न्हवाइब,-उब; सं० गंध।

गन्हिआ सं० पुं० एक कीड़ा जिसके छूने से बुरी गंध निकलती है; "गन्हाव" से;-लागब, ऐसे कीड़े का फसल में लग जाना जिससे गेहूँ आदि खराब हो जाता है। दे० गान्ही।

गन्हिआब क्रि० अ० "गान्ही" (हींग) लग जाना अकड़ जाना, किसी की बात न मानना।

गन्हौरा सं० पुं० गंदी चीज; स्त्री०-री, वि० बदबूदार, वै०-न्हाउर।

गपकब क्रि० स० जल्दी से खा जाना, सब खा जाना प्रे० काइब,-उब।

गपाष्टक सं० स्त्री० लंबी और व्यर्थ ती बातें -करब,-लगाइब, गप+सं० अष्टक, वि०-की,गप्पी।

गपोलिया वि० पुं० गप उडानेवाला; झूठा।

गपोली सं० स्त्री० गप व्यर्थ की बात, ब० -लियाँ -मारब,-उड़ाइब।

गप्प सं० स्त्री० व्यर्थ की बात, झूठ बात -करब, -मारब वै० गप, वि०-प्पी, व्यर्थ की बात करनेवाला।

गप्फा सं० पुं० बड़ा कौर या निवाला,-मारब, जल्दी और खूब खाना, वै० गफ्फा, अं० गल्प, गफ्फा, उ० गल्पन।

गबगब सं० पुं० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ कहे हुए शब्द,-करब क्रि०-याब, बकना, शोर करना।

गबच्चू सं० पुं० मूर्ख, वै०-द्द, बप-।

गबड़ब क्रि० स० मिला देना (जल, अन्न आदि), एक में कर देना, खराब कर देना (दूध आदि), प्रे०-ड़ाइब,-डवाइब,-उब।

गबदा सं० पुं० (स्त्री की) मोटी योनि, जवान स्त्री की योनि व्यं० तगडी युवती, स्त्री०-ही,-दी।

गबद्द वि० भोंदू, कुछ मूर्ख सं० व्यक्ति जिसमें विवेक न हो; वह जिसकी बुद्धि मोटी हो, 'गबदा' गबद्द दोनों मोटापन के द्योतक हैं।

गबन सं० पुं० खयानत सरकारी या दूसरे का धन बेईमानी से ले लेने का अपराध;-करब,-होब।

गबर-गबर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ (बोलने के लिए) तु० गप्प प० ग़प, दे० गब्भा, ध्व०, कभी-कभी खाने के लिए भी प्रयुक्त (भूखे या गरीब के लिए) -खाब।

गबरू दे० गभड,-जवान, खूब युवावस्था का केवल पुरुषों के लिए प्रयुक्त। वै०-भड्डू,-भरु,-भ्रू।

गब्बर वि० पुं० जिसकी जीभ बहुत चलती हो, गुस्ताख, व्यर्थ की, या छोटे मुँह बडी बात करनेवाला, स्त्री०-रि,-होब,-करब भा०-ई।

गब्भा सं० पुं० झूठी बात, छोटे मुँह बड़ी बात; -मारब वै०-म्मा,-प्फा,-ब्भा, तु० गप (खूब बात) जदन (मारना), प० ग़प।

गब्बे सं० पुं० बातें, लंबी-लंबी पर प्रायः झूठी बातें, यह शब्द बहुवचन के समान प्रयुक्त होता है और "गब्भा" का बहु० जान पड़ता है।-छाँटब मारब,-उड़ाइब, तु० प० ग़प, वै०-ब्बें।

गभकब क्रि० स० झट से और आसानी से काट देना, मार डालना, मार देना, प्रे०-काइब,-उब।

गभड्ड वि० पूरा (युवा);-जवान; दे० गबरू।

गभाक सं० पुं० साग, केले का पेड़ आदि काटने की आवाज,-से,-दें, झट से (काटना), ध्व०; प्र० -भाका।

गभिनाइब क्रि० स० गर्भवती कर देना प्रे०-नवाइब; वै०-उब, प्रायः हँसी या गाली में प्रयुक्त।

गभिनाब क्रि० अ० गर्भवती होना, गर्भ धारण करना (पशुओं के लिए) व्यंग्य में या हँसी में स्त्रियों के लिए भी प्रयुक्त प्रे०-इब,-उब, सं० 'गर्भ' वि० "गाभिन" (दे०), उससे यह क्रिया बनती है। भूत "गभिनानि" (गाभिन हुई)।

गभुरई सं० भा० गर्व मुँह फुला कर बोलने की प्रवृत्ति इस शब्द से अनुमान होता है कि "गभुर' कोई विशेषण होगा, पर ऐसा शब्द बोला नहीं जाता शायद पहले रहा हो,-सं० गह्वर? तु० गब्बर।

गभुराब क्रि० अ० मुँह फुला कर बोलना, ऐंठ के बोलना, रुष्ट होना वै०-आब।

गभ्भ सं० पुं० डूबने या पानी में गिरने का शब्द; -सें,-दें;वै०-ब्भ,-ब्ब, ध्व०।

गभ्भा दे० गब्भा,-छाँटब।

गभ्रू दे० गबरू।

गम सं० पुं० धीरज, शान्ति -खाब, धीरज धरना, सहना.-करब, कुछ न करना, चुप रहना; अर०ग़म (शोक)।

गमक सं० स्त्री० महक,-देब, क्रि०-ब।

गमकब क्रि० अ० महकना; प्रे०-काइब।

गमगमहटि सं० स्त्री० खुशबू का ताँता, महक; -मचब, 'गमक' का प्र० रूप।

गमछा सं० पुं० अँगोछा पू० अ०।

गमला सं० पुं० मिट्टी का बर्तन जिसमें फूल लगाया जाता है।

गमाक सं० पुं० गिरने की आवाज; प्र०-का, जोर की आवाज;-बें,-सें, जोर से,-का होब, बडी आवाज होना (गिरने की); क्रि०-ब, उ० गोला-; ध्व०; दे० धमाक,-का।

गमागम दे० धमाधम।

गमी सं० स्त्री० शोक का अवसर, मृत्यु, प्र०-म्मी; सादी-, हर्ष एवं शोक के अवसर,-होब,-परब; अर० ग़म।

गम्हीर वि० पुं० भारी, वजनवाला; गंभीर; कम बोलनेवाला; गरू-, आदरणीय, व्यं० गर्भवती; स्त्री०-रि, सं० गम्भीर; भा०-म्हिरई; वै० गहू-, दे० गरू।

गयतल वि० पुं० बहुत पुराना, बेकार; स्त्री०-लि; गय (गया, समाप्त)+तल (तल्ला) जिसका तल्ला

फट गया हो (वह जूता); वै० गै-,-हा,-ही; प्राय: निर्जीव वस्तुओं के लिए प्रयुक्त;-खाता, बेकार वस्तुओं का ढेर।
गयबुआ वि० योंही आया हुआ, जिसका पता न हो; जिसका ठिकाना न हो; स्त्री०-बुई, पर दोनों लिंगों में यों भी एक सा प्रयुक्त होता है। शा० अर० गायब से।
गयर वि० पुं० दूसरा, पराया, बाहरी स्त्री०-रि; अर० ग़ैर, दे० अनगयर।
गयल सं०स्त्री० राह, गली, प्राय' कविता में प्रयुक्त, जहाँ यह प्रेमियों की गली के लिए या "प्रेम-मार्ग" के लिए आता है। वै० गैल।
गयस सं० पुं० गैस, गैस की रोशनी; अं० गैस, वै० गैस,-जरब,-जराइब।
गया सं० पुं० गयाधाम, प्रसिद्ध तीर्थ,-करब, गया जाकर पितरों का श्राद्ध आदि करना, सं०।
गर सं० पु० गला,-काटब, (किसी वस्तु का खाने पर) गले में चिरमिराना जैसे जमीकंद आदि, -दबाइब, जबर्दस्ती करना; फा० गुलू, लै० गुल।
गरक वि०डूबा, नष्ट,-करब,-होब, अर० ग़र्क़, शायद 'गड़प' भी इसी से संबद्ध है (दे०)।
गरगज वि० मोटा, फूला हुआ,-होब, तगडा हो जाना; फूलि कै-होब, खा पीकर मोटा होना: प्रसन्न हो जाना, फा० करगस, गिद्ध (जो पतला लंबा होता है पर मुर्दा खाकर मोटा बन जाता है।)
गरगराब क्रि०अ० जोर से और क्रोधपूर्वक बोलना, चिल्लाना, झगड़ा करना, ध्व० 'गरगर', दे० गुर्र, अर० गर, फा० गुलू (गले पर जोर देकर बोलना), अर० गरगरा, गले में कुल्ली करने की दवा।
गरज सं० स्त्री० स्वार्थ, काम, आवश्यकता;-होब, -रहब,-बावला, स्वार्थांध, अपने काम से पागल, स्वार्थसिद्धि में व्यस्त; वै० गर्जि,-जि, गर्ज; वि०-जू, अर० ग़र्ज़।
गरजब क्रि० अ० गरजना, जोर से बोलना, गर्व या क्रोध से डाँटना, झगड़ना, पहे० तर गरजै उपर चमकै (हुक्का)।
गरजि दे० गरज।
गरजी वि०गर्जवाला, जिसे आवश्यकता हो, अल्-जिसे आवश्यकता न हो या जिसकी बहुत पूछ हो, अलगरजी क सौदा, बिना स्वार्थ का काम, वह काम जिसमें किसी की रुचि न हो, कहा० तीन जाति अलगरजी, नाऊ धोबी दरजी; यह शब्द कम प्रयुक्त होता है, प्राय: "गरजू" या "गरजूँ" बोलते हैं। अर० ग़र्ज़।
गरजू वि० गर्जवाला, जिसे आवश्यकता हो; वै० -जूँ, अर० गर्ज (स्वार्थ) से।
गरब सं० पुं० घमण्ड, वि०-बी,-बिहा; वै०-भ, सं० गर्व,-करब,-होब।
गरभ सं० पु० गर्भ;-रहब,-गिरब,-गिराइब,-गिर-वाइब; सं० गर्भ; तुल० गर्भक के अर्भक दलन"'।
गरभी वि० गर्ववाला, घमंडी; वै०-बी,-बिहा, -भिहा।
गरम वि०गर्म, क्रुद्ध;-करब,-होब, क्रि०-माब,-माइब, -उब, फा० गर्म।
गरमाइब क्रि० स० गर्म करना; वै०-उब, प्रे०-मवा-इब; फा० गर्म।
गरमागरम वि० ताजा, गर्मगर्म, फा० गर्म।
गरमागरमी सं०स्त्री० क्रोध से भरी बातें, दो तरफ से गरम-गरम बातें -होब, वै० गरमीगरमा।
गरमाब क्रि०अ० गर्म होना, क्रुद्ध हो जाना; कामातुर होना, प्रे०-इब,-उब,-मवाइब,-उब।
गरमिहा वि० पुं० जिसे गर्मी या सूजाक आदि रोग हो; स्त्री०-ही।
गरमी सं० स्त्री० गर्म होने का भाव; सूजाक आदि की बीमारी,-होब,-करब; फा०गर्मी, गरमा, गरमा-; क्रि०-सिआब, गर्म हो जाना (व्यक्ति का), गर्मी में थक या परेशान हो जाना।
गरमें क्रि० वि० गरमी में, गर्मी के समय; धूप में, फा० 'गर्म'।
गरर सं०पुं० 'गर-गर' का शब्द; बार बार 'गर-गर' की आवाज;-गरर;-होब,-करब; ध्व०, क्रि०-राब।
गरसहा दे० गोरस।
गरसी सं० स्त्री० दे० गोरसी।
गरह सं० पुं० ग्रह, कष्ट, होब-रहब,-कटब, -काटब,-गोचर, ज्योतिषीय गणना, सं०ग्रह।
गरहन सं० पुं० ग्रहण,-लागब,-क छाया, जन्म-जात चिह्न जो किसी के शरीर पर हो, जिसे गर्भस्थित शिशु पर ग्रहण का प्रभाव बताते हैं।
गरहित वि० ग्रह से प्रभावित, कष्ट में; सं० ग्रहित, गृहीत।
गरही वि० ग्रह द्वारा क्लिष्ट; गरह + ई, सं० ग्रह + इन्।
गराम-सुधार सं० पुं० सरकार का "ग्रामसुधार" विभाग, सं० ग्राम-सुधार।
गरार वि० पुं० तगडा, ज़ोरदार; स्त्री०-रि।
गरारा सं० पुं० गले को ठीक करने के लिए दवा, नमक आदि का कुल्ला;-करब, अर० गरगरा।
गरारी सं० स्त्री० पत्थर या ईंट आदि पर रस्सी का चिन्ह,-परब, कुएँ की गराड़ी जिससे रस्सी लटकाई जाती है।
गरास सं० पुं० ग्रास, कवर, एक-,दुइ-, क्रि० ब, खाना, थोड़ा सा खाना, सं० ग्रास।
गराह सं० पं० दे० ग्राह।
गरिआइब क्रि० स० गाली देना; प्रे०-वाइब, वै० -या,-उब, गारी (दे०) से क्रिया।
गरिबई सं० स्त्री० गरीबी, दरिद्रता; अर० गरीब (दरिद्र), वै०-ता।
गरिबऊ वि० दरिद्रयपूर्ण, गरीबीवाला, अर०ग़रीब + ऊ जैइे "बरिऊ" (दे०)।

गरिबता सं० स्त्री०गरीबी, दरिद्रता; अर० गरीब+ सं० ता; वै०-री-।
गरिवाव क्रि० अ० गरीब हो जाना, गरीब बन जाना, अर० गरीब से क्रि०।
गरियाइब दे० गरिआइब।
गरी सं० स्त्री० गिरी, नारियल का गूदा।
गरीब वि० पुं० दरिद्र, धनहीन, स्त्री०-वि०. भा० -बी,-रिबई,-रिबता, वि०-रिबऊ दे० अर० गरीब।
गरीब-नेवाज़ सं० जो गरीब का पालन करे; वि० गरीब पर दयालु तुल०-जू; अर० गरीब+फा० नवाज़ (कृपालु)।
गरीब-परवर सं० पु०जो गरीब की सहायता करे, बड़े अफसरों या महानुभावों को संबोधन करने का पुराना शब्द; वि०परम दयालु, अर० गरीब + फा० परवर (पालक)-परवरदन, पालना।
गरीबी सं० स्त्री० दरिद्रता;-बूझब,-समझब, गरीबी का ध्यान या ख्याल करना, अर० गरीब+ई।
गरुअई सं० स्त्री० वज़न, बोझ, शांति, वै०-आई, सं० गुरु+अई।
गरुआब क्रि० अ० बोझ के कारण थकना, असह्य होना, "गरू" से क्रि०; सं० गुरु+आब, प्रे० -वाइब,-उब।
गरुई दे० गेरुई।
गरुक्का वि० पुं० वजनी, भारी, स्त्री०-क्की "गरू" का प्र० रूप, सं० गुरु+का, दूसरे वि० में भी यह अवधी प्रत्यय 'का' या'क्का'लगता है, उ० 'बड़का''छोटका' आदि।
गरुड़ सं० पुं० प्रसिद्ध गरुड़ जी जो विष्णु के वाहन हैं, वै०-ड़र,-रुर, स० गरुड, आ०-महराज, -भगवान।
गरुहर वि० पुं० गुरुतर, अधिक वज़नी, अधिक प्रभावशाली, सं० गुरुतर=गरु+हर, यह 'हर' प्रत्यय कभी-कभी 'हन' हो जाता है, जैसे 'छोट-हन' बडहन (दे०), स्त्री०-रि।
गरू वि० भारी, शांत,-गँभीर, गर्भवती, परम शांत, सं० गुरु+गंभीर भा०-रुअई।
गरे क्रि० वि० गले (में);-लगाइब सिर मढ़ना, ज़बरदस्ती (किसी को कुछ) देना, वै०-रें ('गर' में), फ़ा० गुलू।
गरेछब क्रि० स०घेरना, तंग करना, फँसाना, प्रे० -छवाइब,-उब सं०ग्रस्, गृह्, वै०-सब।
गरेड़ी सं० स्त्री० गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े, वै०-ड़ेरी, गँ—।
गरैआ दे० गौरैया।
गलइचा सं० पुं० गलीचा, कालीन; वै०-लैचा; फा० कालींचः (छोटा), कालीन (बड़ा) कालीन; "गुनगुने गिलिम गलीचे हैं गुनीजन हैं"।
गलइब क्रि० स० गलाना, वै०-उब, प्रे०-लाइब, -लवाइब,-उब,'गलब' का प्रे०।
गलका सं० पुं० खट्टे या कच्चे फल का शकर तथा मसालों के साथ बनाया हुआ अचार -बनाइब।
गलगल वि०नरम, भीगा, पका हुआ, परम प्रसन्न, द्रवीभूत, कहा०"गलगल नेबुआ औ बिउ तात"; -होब, करब।
गलचउर सं० पुं० मजे की बातें, लंबी-लंबी बातें, व्यर्थ की बातें -करब,-होब, गल (गाल)+चाउर (चावल) जैसे नरम चावल धीरे-धीरे आराम से खाये जाते हैं वैसी ही बढ़िया, बेकाम की बातें। प्र०-चभ्भौ (चाभब, दे०)चबा-चबाकर की हुई बातें, वै०-चौर,-चब्भौ।
गलछा सं० पुं० नई शाखा,-फूटब,-फोरब; दे० गँछाव।
गलत वि० पुं० अशुद्ध,-करब,-होब; स्त्री०-ति; वै० -ल्त -ल्ति; अर० गलत (अशुद्धि) भा०-ती।
गलता वि० पु० बहुत पुराना, फटा हुआ, गला (दे० गलब) हुआ; दे० गैतल गयतल।
गलती सं० स्त्री० अशुद्धि, चूक, भूल;-होब,-करब, -खाब, धोका खाना, अर० गलत से 'ई' लगाकर भा० बना यद्यपि अर० में वह शब्द स्वयं भा० है।
गलफर सं० पुं० गाल के भीतर का भाग, गल (गाल)+फर (फारब ?)=फल; तु० स्वी० गाल, गिल (अं)=पानी के जन्तुओं के श्वास के अंग।
गलफा सं०पुं० अफवाह, गप, जनरब,-होब -करब, -उडब,-उडाइब; शा० गलफर से संबद्ध जैसे पं० गल (बात) दे० गाला।
गलफुलना वि० पुं० जिसका गाल फूला हो, मोटे मुँह का, स्त्री०-नी, वै०-नहा,-ही, गल (गाल)+ फुलना (दे० फूलब)।
गलब क्रि० अ० गलना, पिघलना, खर्च होना, नीचे जाना (कुएँ की दीवार आदि का), लगना; रुपया-,पैसा-, पसीजना, दयालु हो जाना; प्रे० -लाइब,-वाइब,-उब।
गलबा सं० पुं० आंदोलन, गड़बड,-होब; फा०गुल-गुल (शोरगुल),-करब,-होब, शा० यह शब्द और 'गलफा' एक ही है।
गलबाहीं सं० स्त्री० गले में बाँह डालने की क्रि-या,-देब, आलिंगन करना· गल+बाँह, क०-हियाँ, वै०-हैं।
गलसटब क्रि० अ० बातें करना, गप मारना; व्यर्थ की और लंबी बातें करते रहना, पं० गल (बात)+ साटब (दे०)=सटहरब (मारना) दे०।
गलहंस सं०पुं० नि.संतान की संपत्ति का अधिकार।
गला सं० पुं० गला, कंठ,-चलब,-बैठब; प्राय. 'नटई', फा० गुलू।
गलाइब क्रि० स० गलाना, वै-उब, प्रे०-लवाइब, -उब, मु० पइसा-(किसी काम में पहले) द्रव्य खूब खर्च कर देना, भा०-ई -लवाई।
गलानि सं० स्त्री० ग्लानि, दुःख, अफसोस,-होब, -करब, सं० ग्लानि।
गलार वि० पुं० बहुत या जोर से बोलनेवाला,

गुस्ताखी से बोलनेवाला, स्त्री०-रि, 'गल' या 'गर' से ।
गलारा सं०पुं० पानी बहने का बड़ा रास्ता जो पानी स्वयं काटकर बना लेता है,-होब,-करब, प्र० घ ।
गलिआइब क्रि० स० जबरदस्ती मुँह या गले में (भोजन आदि) डाल देना, वै०-उब, मे०-वाइब, -उब, 'गर' या'गल' से।
गलिआरा सं०पुं० तंग और दो दीवारों या मकानों के बीच का रास्ता, 'गली' से 'आरा' प्रत्यय लगाकर ।
गलिआँ सं० स्त्री० गली, क्रि० वि०-गलिआँ, गली-गली (गी०), वै०-याँ ।
गली सं० स्त्री० छोटी तंग सड़क;-गली, बहुत सी गलियों में ।
गलीज सं० स्त्री० गंदगी, गंदी वस्तु, वि० गंदा, अपवित्र, अर० ग़लीज़ (जमी हुई वस्तु) ।
गलुआ सं० पुं० मोटे या फूले हुए गाल;-निकरब, मोटा हो जाना, 'गाल' से, वै०-वा,-हा ।
गलुक्का स० पुं० छोटा गाल, बच्चे के गाल, जिसे डाँटना या मारना हो उसके) गाल,-निकरब, -काढ़ब,-चीरब, 'गाल' (दे०) का घृ० रूप ।
गलूबंद दे० गुलु-।
गलैया सं० पुं० गलनेवाला, पसीजनेवाला, दया करनेवाला, मे०-लवै-, वै०-आ, भा०गलाई,-करब, -होब ।
गलोना दे०घ-,शायद शब्द 'गलब' या 'घुलब' से बना है ।
गल्ला सं० पुं० अनाज, दूकान का रुपया (जो एक स्थान पर रखा हो); ऐसे रुपये का स्थान;-पानी, माल, अर०ग़ल्ल: (अनाज), प्राचीन काल में अनाज ही मुख्य धन था ।
गवँखा सं० पुं० दे० गउँखा, सं० गवाक्ष ।
गवँगीर वि० पुं० चालाक; समय का लाभ उठानेवाला; गवँ, दाँव, + फ़ा० गीर (पकडनेवाला), वै० गौं-, गउँ-(दे०) ।
गवँरई सं० स्त्री० सीधापन, मूर्खता;-करब, सं० 'ग्राम' से भा० संज्ञा ।
गवँरऊ वि० गाँव का, सीधा, असभ्य, सं० 'ग्राम' से; गवाँर+ऊ।
गवँरपन सं० पुं० सिधाई, मूर्खता, स० ग्राम ।
गवमाँस सं० पु० गोमांस,-खाब,महापाप करना, वै०-उ-; सं० गोमांस ।
गवसाला सं० स्त्री० गोशाला, वै० गउ-, सं० गोशाला ।
गवहिंआ सं० पुं० मेहमान, अतिथि ।
गवहीं सं० स्त्री० मेहमानी, ससुराल के रिश्ते में पहले-पहल जाने की पद्धति; ऐसे समय का उपहार,-करब ।
गवइआ सं० पुं० गानेवाला, वै०-या,-वै-, प्राय: दोनों लिंगों में प्रयुक्त ; स० ।
गवई सं० स्त्री० देहात, गाँव; गाँवों का समूह, "गवई गाहक कौन ?"-बिहारी; क्रि० वि० गाँव में; सं० ग्राम ।
गवकसी दे० गउ- ।
गवचर दे० गउ-।
गवन सं० पुं० विवाह के पश्चात् बहू का पति के घर जाने का रस्म,-करब,-देब,-होब,-लेब,-आनव; सं० गमन (जाना),-ने क दुलहिन, शर्मीली, लजीली, धीरे-धीरे बोलने या चलनेवाली; वै० गौन,-ना ।
गवतब क्रि० स० सूझना, दे० अवगतब; विपर्यय से 'वग' का 'गव' होकर प्रारंभिक 'अ' का लोप हो गया है ।
गवनई सं० स्त्री० गाने की क्रिया; गीत; स० गायन ।
गवनहरि सं० स्त्री० गानेवाली, कभी पुरुषों के लिए '-हर' प्रयुक्त होता है । सं० गी + हिं० हर ।
गवाँइब क्रि० स० खोना, गँवाना, वै०-उब ।
गवाँर सं० पुं० गाँव का रहनेवाला, वि० सीधा, शहर के नियम न जाननेवाला; मूर्ख, भा०-वरई, -पन ।
गवाँरू वि० गँवारों का सा; देहाती; गँवार+ऊ; सं० ग्राम ।
गवा सं० पुं० दो उँगलियों के बीच का चमड़ेवाला भाग, बेल का नया टुकड़ा;-फेंकब, -फूटब ।
गवाह सं० पुं० साक्षी, फ़ा० जिसमें यह शब्द 'गवाही' के भी अर्थ में आता है । भा०-ही ।
गवाही सं० स्त्री० गवाह होने या बनने का भाव, क्रिया आदि,-देब,-लेब; फ़ा०;-साखी, सबूत, -लागब, सबूत की आवश्यकता होना,-हेरब, सबूत खोजना; यह समास फ़ा० तथा सं० (साक्षी) की मिलावट का सुंदर नमूना है ।
गवैआ दे० गवइआ ।
गस सं० पुं० बेहोशी, बेहोश होने की क्रिया या स्थिति,-आइब,-अर० ग़शी (बेहोशी) ।
गसइआ सं० पुं० डाँटनेवाला, गाँसनेवाला या वाली, दे० गाँसब, वै० गँ-,-वइआ,-वैया ।
गस्त सं० पुं० चक्कर, घूमने की क्रिया -लगाइब, -करब,-घूमब, फ़ा० गश्त, घूमना; वै०-हत, (देहाती लोग), हजार-गस्ता, वह (स्त्री) जो हजारों के पास जाय, यह गाली प्राय स्त्रियों द्वारा ही प्रयुक्त होती है ।
गहकी सं० पुं० गाहक, सं० ग्रह से (ग्रहण करनेवाला) ।
गहगह वि० पुं० प्रसन्न, परम संतुष्ट,-होब, -करब ।
गहत सं० पुं० चक्कर,-करब,-घूमब,-लगाइब; फ़ा० गश्त, हजार-गहता (दे०) ।
गहदाला सं० पुं० मोटा गद्दा; मोटा कपड़ा ।

गहदिआब क्रि॰ अ॰ (घाव या फोड़े का) सूज जाना, भर कर दर्द करना।

गहदी सं॰ स्त्री॰ नाले के किनारे का भाग; ऊँचा भाग।

गहनिहा वि॰ पुं॰ जिसे गहनी (दे॰) रोग हो गया हो, स्त्री॰-ही।

गहना सं॰ पुं॰ आभूषण;-गढ़ाइब,-देब।

गहनी सं॰ स्त्री॰ जानवरों की जीभ का एक रोग जिसमें दाने या काँटे से हो जाते हैं।-काढब, इस रोग को अच्छा करना जिसमें जीभ पर नमक आदि रगड़ते हैं। वि॰-निहा,-ही, सं॰ गृह।

गहने-क-छाया स॰ स्त्री॰ किसी बच्चे के शरीर पर वह काला चिह्न जो जन्मजात हो। विश्वास है कि ऐसे बच्चों के गर्भ में होने पर जब ग्रहण लगता है तो ऐसे चिह्न प्रायः हो जाते हैं,-परब, -होब, सं॰ ग्रहण।

गहब क्रि॰ स॰ पकड लेना, ग्रहण करना, ज़ोर से पकडना प्रे॰-हाइब,-हवाइब,-उब, "दोपहि को उमहै गहै"।

गहबड़ वि॰ पुं॰ जिसमें रंग गहरा हो; स्त्री॰-ड़ि, वै॰ गहावड़ि (गीतों में प्रयुक्त)-"चुनरी गहावड़ि" क्रि॰-बोड़ब,-रब (दे॰) पियरी ·· ··।

गहाइब क्रि॰ सं॰ पकडाना, यह शब्द बहुत कम प्रयुक्त होता है। सूरदास ने कविता में "गहाऊँ" ब्रजभाषा का रूप लिखा है, पर अवधी कविता में यह नहीं मिलता। स॰ गृह।

गहारि दे॰ गोहारि।

गहिआइब क्रि॰ सं॰ गाही लगाकर गिनना, दे॰ गाही।

गहिया दे॰ गोहिया।

गहिर वि॰ पु॰ गहरा, स्त्री॰-रि, कहा॰ "अहिर क पेट गहिर कुरमी क पेट मडार", भा॰-ई, पन, -राई, क्रि॰-राब,-राइब,-रवाइब।

गाँगासहाई स॰ पुं॰ कल्पित व्यक्ति जो चारों ओर उदारता प्रदर्शित करे; वै॰ गाँगू, गंगा + सहाय, जो गंगा की भाँति सर्वत्र सहायतार्थ उदार रहे।

गाँछब क्रि॰ स॰ बटोरकर बाँध देना प्रे॰ गँछा-इब,-वाइब,-उब, भा॰ गँछाई,-वाई।

गाँछा सं॰ पुं॰ नया कल्ला, पत्ता, आदि,-फोरब, -फूटब, दे॰ गछाब, ब॰ गाछ (पेड़), वै॰-फा।

गाँजड़ सं॰ पुं॰ नदी के किनारे का भूभाग।

गाँजब क्रि॰ स॰ एकत्र करना, ढेर करना, 'गंज' (फ़ा॰) से, प्रे॰ गँजाइब, गँजवाइब।

गाँजा सं॰ पुं॰ एक नशीली पत्ती जो चिलम पर पी जाती है,-भाँग, नशे की सामग्री।

गाँठब क्रि॰ स॰ पक्का करना; अपने चक्कर में फँसाना; मु॰ भोग करना; मतलब-, स्वार्थ सिद्ध करना; प्रे॰ गँठाइब,-उब, गँठवाइब,-उब।

गाँठि सं॰ स्त्री॰ गाँठ; मु॰ बहुत दिन का (पर जो देखने में इतने दिन का न जान पड़े),-परब, मन-मुटाव हो जाना,-डारब, मनमुटाव डाल देना। हरदी क-, यक गाँठि हरदी, हल्दी का एक पूरा टुकडा, वि॰ गँठिहा, गाँठवाला,-देब,-जोरब, पति-पत्नी के कपडों में गाँठ लगाना (धार्मिक कृत्यों के के लिए),-जोराइब, ऐसा कराना; सं॰ ग्रंथि।

गाँड़ सं॰ पुं॰ गन्ने का टुकडा;-बैठाइब, बोये हुए गन्ने के खेत में एक या दो दिन बिखरे हुए टुकडों को ठीक-ठीक फिर से रखना,-बैठवाइब,-उब।

गाड़ब क्रि॰ स॰ गाडना; प्रे॰ गडाइब,-ड़वाइब, -उब।

गाँड़ि सं॰ स्त्री॰ गाँड़,-मारी,-चोदी, स्त्रियों के लिए गाली;-मारब,-सराइब;-मराउब,-खोदब, तंग करना, व्यर्थ कष्ट देना, वि॰। "कबिरा चाक कुम्हार का मागे दिया न देय। "चहै नांद लै लेय"

गाँड़ू वि॰ पुं॰ जो गाँड़ मारे या मरावे, मु॰ नामर्द, नीच; दु-, हत्तेरे की, दुत, वै॰ गँडुआ, हा (स्त्री॰ -ही ई,-ही), कभी-कभी लोग "गँड़िहा" भी बोलते हैं।

गाँव सं॰ पुं॰ ग्राम,-गड़ी, गाँव के पडोस के लोग, -भाई, गाँवा-, एक गाँव के लोग जो भाई सदृश हों। सं॰ ग्राम

गाँस सं॰ पुं॰ नियंत्रण, डर;-राखब; क्रि॰-ब।

गाँसब क्रि॰ स॰ डाँटना, रोकना; प्रे॰ गँसाइब, -सवाइब,-उब।

गाइ सं॰ स्त्री॰ गाय, मु॰ दीन, अनाथ, शरणागत, सं॰ गो, वै॰ गाय, गइया, आ।

गाइब क्रि॰ स॰ गाना, मु॰ किसी बात को बढा कर और देर तक कहते रहना प्रे॰ गवाइब, वै॰ -उब, -वजाइब, प्रे॰ गवाइब,-उब, मु॰ गायें बजायें जाब, बरबाद होना।

गाऊ-घप्प वि॰ जो शीघ्र न समझे, सुस्त जो सब कुछ हजमकर जाय, गाऊ (गाय) + घप्प (गिरने की आवाज़ अर्थात् जिसे गाय तक के गिरने की आवाज (न पता चले), यह दोनों ही लिंगों में एक प्रकार प्रयुक्त होता है।

गागरि दे॰ गगरी, यह शब्द प्राय॰ गीतों अथवा कविता में प्रयुक्त होता है।

गाज सं॰ पुं॰ फेना,वज्र;-उठब,-परब, मु॰ गाज परै (वज्र पड़े)।

गाजब क्रि॰ अ॰ हर्ष प्रदर्शित करना, परम प्रसन्न होना, गर्वपूर्वक हर्ष करना, वै॰ गौजब।

गाजरि सं॰ स्त्री॰ गाजर; मुरई-,साधारण वस्तु, सं॰ गृंजन।

गाजा-बाजा सं॰ पुं॰ हर्ष प्रदर्शन, आह्लाद, 'गाजब' से, गाजा + बाजा।

गाजी सं॰ पुं॰ मुसलिम पीर जिसकी पूजा होती है;-मियाँ; अर॰ ग़ाज़ी, इन्हें प्राय: "बालेमियाँ" भी कहा जाता है; कहा॰ एक हाथ के बालेमियाँ, नव हाथ कै पूँछि।

गाट सं॰ पुं॰ गार्द; अं॰।

गाटर सं० पुं० लोहे का गर्डर, अं० ।
गाटा सं० पुं० मोटा टुकड़ा, चौड़ा छोटा खेत; व्यं० मोटा छोटा सा व्यक्ति, व्यक्ति जो अपना रहस्य दूसरे को न बताये, इस व्यंग्यात्मक अर्थ में यह शब्द स्त्रियों के लिए भी ऐसे ही प्रयुक्त होता है । वै०-ट,-टि ।
गाड़ा सं० पुं० छिपकर हमला करने का ढंग,-परब, इस प्रकार हमला करना ।
गाढ वि० पुं० गाढ़ा, कठिन, सं० संकट;-अवसान, विपत्ति,-परब, गाढ़ें, संकट के समय, कठिनता से, व्यं० जो अपना भेद शीघ्र न बतावे;-मनई, स्त्री० -ढ़ि, प्र०-ढ़ै,-ढ़ै-गाढ़ ।
गाढा सं० पुं० मोटा कपड़ा, वि० जो अपने हृदय की बात दूसरे को न बतावे, छिपानेवाला, स्त्री०-ढ़ि ।
गाढ़ें क्रि० वि० कठिनता से, मजबूरी में,-परब, कष्ट में पड़ना, मजबूरी में फँसना ।
गाती सं० स्त्री० दोनों कंधों पर बँधा हुआ कपड़ा जो कुर्ते की भाँति दोनों ओर नीचे तक लटका हो । यह देहात में छोटे-छोटे बच्चों और कभी-कभी साधुओं या बड़ों-बड़ों को भी पहनते देखा है । सं० गात (शरीर), अर्थात् जिससे शरीर ढका रहे, कहा० अगुना क भगवै न बिजारी क गाती अर्थात् स्वयं लँगोटी भी नहीं पाता पर बिल्ली के लिए 'गाती' का प्रबंध करता है (कोई मूर्ख) ।
गाथा सं० स्त्री० लंबी कहानी, व्यर्थ की बात, कभी-कभी व्यंग में यह शब्द पु० भी बोला जाता है । सं० ।
गादर वि० पुं० कम चलनेवाला (हल या गाड़ी आदि का बैल), क्रि० गदराब ।
गादा सं० पुं० कच्ची मटर, चने, मक्का आदि का कूटा हुआ अंश जिसकी दाल, कढ़ी आदि बनती है । अधपके गेहूँ के इसी प्रकार कुटे हुए पदार्थ को पूरब में "हावुस" कहते हैं ।
गादु सं० स्त्री० किसी पेड़ का गोंद या लासा ।
गादुर सं० पुं० चमगीदड़; चम-, जो० गेदुर, -री (छोटे-), रा०प्र०चमगीदुर,-गुदरू, सो० वि० ।
गाना सं० पुं० गीत; इन अर्थ में प्राय: "गाति" बोला जाता है । सं० गान ।
गाफा सं० पुं० यह शब्द कभी-कभी "गाँछा" के लिए बोला जाता है,-फोरब, वै० गाँ-, गों- ।
गाभ वि० बहुत (हरा), उ० हरिअर गाभ (खूब हरा) ।
गाभिन वि० गर्भिणी, वै०-नि, सं० गर्भ ।
गाय सं० स्त्री० गऊ, व्यं० सीधा, गरीब, मूर्ख, सं० गो ।
गारब क्रि० स० निचोड़ना, गारना, अच्छी तरह निकालना; प्रे० गराइब,-उब, गरवाइब, -उब ।
गारा सं० पु० मिट्टी का गारा;-माटी,-चूना; फ़ा० गिल ।
गारी सं० स्त्री० गाली;-देब,-सुनब,-सुनाइब,-गाइब; क्रि० गरिआइब, प्रे०-वाइब,-उब ।
गाल सं० पुं० गाल,-बजाइब, शंकरजी की पूजा में मुँह फुलाकर गालों से शब्द करना; दे० गलफर ।
गाला सं० पुं० गप, व्यर्थ की बात,-मारब, लंबी-लंबी बातें करना, प० गल, बात, दे० ।
गाहक सं० पुं० ग्राहक; दे० गहकी; सं० ग्रह ।
गाही सं० स्त्री० पाँच की ढेरी, यक-, पाँच; दुइ-, दस, रा० घई, सो० पचकरी ।
गिंजना वि० पुं० गींजनेवाला, स्त्री०-नी दे० गींजब ।
गिंजवाइब क्रि० स० "गींजब" का प्रे० रूप, वै० -जाइब ।
गिंजाइब क्रि० स० गींजने में सहायता करना, गींजने के लिए बाध्य करना, भा०-ई ।
गिंजाई सं० स्त्री० गींजने की क्रिया, प्रे० गिंजवाई; वै०-जानि ।
गिचपिच वि० एक में मिला हुआ, अस्पष्ट, वै० -चिर-पिचिर, क्रि०-चाब, अस्पष्ट होना, प्रे०-चाइब, -कर देना, द्वि०-गिचपिच ।
गिजबिज वि० लिपटा हुआ, वै०-जिर-बिजिर, क्रि०-जाब, प्रे०-जाइब ।
गिजिर-बिजिर वि० दे० गिजबिज, वै० लि-विजिर ।
गिटकी सं० स्त्री० ईंट या पत्थर का छोटा टुकड़ा, वै०-ट्टी ।
गिटपिट सं० पुं० जल्दबाजी की बात;-गिटपिट, ऐसी बातों का पुनरावृत्ति,-करब,-होब, क्रि०-टाब, वै०-टिर-पिटिर ।
गिडगिडाब क्रि० अ० भयपूर्वक याचना की बातें करना, ध्व० ।
गितिहा वि० गीतवाला, स्त्री०-ही ।
गिदहरा दे० गेदहरा ।
गिद्ध सं० पुं० पक्षी विशेष, व्यं० बहुत देखनेवाला, सर्वभक्षी (व्यक्ति), सं० गृद्ध्र ।
गिद्ध-गोहारि सं० स्त्री० चिल्लपों, मारपीट,-होब, -करब, गिद्ध+गोहारि (दे०), गिद्धों की भाँति ऊँची आवाज,-होब,-करब,-मचाइब ।
गिथिआब क्रि० अ० हठ करना, अड़ा रहना, चिल्लाना, व्यर्थ का चिल्लाना ।
गिनगिनाब क्रि० अ० काँप जाना, थर्रा उठना; प्रे० -नाइब ।
गिनती सं० स्त्री० दे० गनती, सं० गण् ।
गिन्नी सं० स्त्री० सोने का सिक्का जिसे अंग्रेजी में गिनी कहते हैं, वि०-न्निहा, गिनीवाला, अं० ।
गिब-गिब क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ (बातें करना), प्र०-बिर-बिर,-करब, ध्व० ।
गिब्बे सं० पुं० लंबी गप, व्यर्थ की बात,-मारब, -छाँटब, वै० प्र०,-ब्बी ।
गिलट सं० पुं० एक धातु जिसका रंग चाँदी की भाँति होता है; वि०-हा,-टिहा, अं० गिल्ट (?) ।

गिल्ला सं० पुं० शिकायत,-करब, उलाहना देना, फ़ा० गिलः।
गिहथापन सं० पुं० चतुरता, बुद्धि; सं० गृहस्थ+पन;-लागव,-लगाइब, वै०-स्था-।
गिहथिन सं० स्त्री० गृह कार्य में निपुण स्त्री; वि० कुशल, वै०-हि-,-नि, सं० गृहस्थ+इनि।
गींज-गाँज सं० पुं० एक मे मिला देने की क्रिया, -करब,-होब, क्रि० गींजब-गाँजब।
गींजब क्रि० स० एक में मिला देना, प्रे० गिंजाइब, -जवाइब,-उब,-गाँजब; सी० गिंजइब।
गीति सं० स्त्री० गीत,-गाइब, सं०।
गीध सं० पुं० गिद्ध, सं०गृध्र तुल० "गीध...वाजपेई" क्रि०-ब, गिद्ध की भाँति हिल जाना (जैसे गिद्ध मांस या मरे पशु के पास हिल जाता है।)
गील वि० पुं० गीला, भीगा; स्त्री०-लि क्रि० गिलाब, प्र०-लै,-लौ।
गुँजहरा सं० पुं० हाथ में पहनने का छल्ला, -गोदहरा, हाथ-पैर के छल्ले, सं० गुंजा+हरा (वाला), पहले ऐसे आभूषणों में गुंजा लगा रहता था। दे० गोदहरा।
गुगुल सं० पुं० एक दवा, वै० गूगुर, गुगुल, सं०।
गुचकब क्रि० स० जल्दी से और अधिक खा जाना; प्रे०-कवाइब,-काइब,-उब, वै०-चु-।
गुच्छा सं० पुं० गुच्छा।
गुज-गुज वि० पु० नरम, धीमा, कमजोर, सुस्त। प्र०-हा, स्त्री०-जि,-ही।
गुजर स० पुं० कालयापन,-करब,-होब वै०-जारा, -रान, फ़ा०।
गुजरब क्रि० अ० बीतना, मर जाना, गवाही-साक्षी देना, प्रे०-जारब,-राइब,-उब,-रवाइब।
गुजराती वि० गुजरात का,-इलायची, सफेद छोटी इलायची वै०-यती।
गुजरान सं० पुं० गुजारा,-होब,-करब, निर्वाह होना, करना।
गुझिया दे० गोझिया।
गुट सं० पुं० गिरोह,-करब,-होब, एका कर लेना, प्र०-ट,-ट्ठ।
गुदुर-गुदुर क्रि० वि० धीरे-धीरे और अधिक (खाना), क्रि०-राइब; वै०-जु-।
गुट्टी सं० स्त्री० पत्थर या ईंट आदि का छोटा टुकड़ा,-डारब, बाँटने के लिए प्रबंध करना, वै० गोटी,-ट्टी।
गुड्डा सं० पुं० गुड़िया का पति, गुड्डी-, गुड़िया और उसका पति।
गुड सं० पु० दे० गुर।
गुडगुड़ा सं० पुं० छोटा हुक्का, स्त्री०-डी, क्रि० -ब, गुड-गुड शब्द करना, प्रे०-इब, धीरे-धीरे हुक्का पीते रहना।
गुड़हल दे० अदउल।
गुड़गुड़ सं० पुं० रह-रहकर गुड़गुड़ शब्द, प्र०-डुर-दुडुर, पेट का-शब्द जो अपच से होता है, -होब,-करब।
गुडिआ सं० स्त्री० गुड़िया; वैं०गुडुई।
गुडी सं० स्त्री० पतंग।
गुढी सं० स्त्री० जौ की लाई, वै० गू-,-रूही, इसे जौ०सु०प्र० आदि में 'वहुरी' कहते हैं। सी०गूरी।
गुत्थी सं० स्त्री० गुत्थी,-निकारब,-सोझवाइब, गुत्थी सुलझाना।
गुदना दे० गोदना।
गुदुरी सं० स्त्री०मटर की फली; फली या छीमी जिसके भीतर दाने हों।
गुन सं० पु० गुण, तरकीब,-नी, चतुर,-निया, जानने वाला,-करब, लाभ करना, काम आना,-गार, गुण या लाभ करनेवाला, स्त्री०-रि, सं०।
गुन-आगर वि० पु० गुणपूर्ण, स्त्री०-रि, सं०गुण+आगार।
गुनब क्रि० स० विचार करना, मनन करना; पढ़ब-,सीखना, अध्ययन करना; प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब, सं गुण, गुणन करना।
गुपचुप क्रि० वि० छिपे-छिपे, चोरी से; सं० गुप् (छिपाना)+चुप (चुपके), प्र०-प्प-प्प।
गुबुर-गुबुर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और अधिक (खा जाना); क्रि०-राइब, प्र०-जु-प्र०-जु।
गुमान सं० पुं० गर्व, घमंड;-करब,-होब; वि०-नी, -मनिहा, घमंडी।
गुमास्ता सं० पु० गुमाश्ता, खबर लेने या देनेवाला; नौकर, वै०-म-।
गुम्म वि० पुं०गुम, गायब;-होब,-करब, फा०,-सुम्म चुप-चाप; क्रि०-माइब, गुमकर देना।
गुम्मा सं० पुं० गूमा, एक जंगली पौदा जिसकी पत्तियां दवा में काम लाते और दाल में डालते हैं।
गुम्मी वि० गुमनाम,-दरखास, गुमनाम प्रार्थनापत्र या शिकायत, फा० गुम।
गुर सं० पुं० गुड, रहस्य,-पाइब,-लेब, रहस्य समझना,-म्मा, गुड में पकाया हुआ आम,-धनिआ, गुड़ में पकाया हुआ गेहूँ जो चबाया जाता है; गुड़+धान्य,-थिउ, शुभ।
गुरखुल सं०पु० पैर में काँटा आदि का पुराना घट्ठा। वि०-हा (२) एक जंगली पौदा; वै०-खुरू।
गुरछार वि० थोड़ा-थोड़ा मीठा; गुर (गुड़)+छार।
गुरजब क्रि० अ० गुर्राना, डाँटना,-भा०-जवाई।
गुरवाई सं० स्त्री० गुड़ बनाने की क्रिया; कहा० वापराज ना देखी पोय ताके घर.. होय।
गुरहा वि० पुं० गुड़वाला, गुड़ खाने का शौकीन; स्त्री०-ही।
गुराही सं० स्त्री० जानवरों (विशेषतः भैंसों) के पैर में बाँधने की रस्सी,-लगाइब, वै० छनानी (प्र० जौ०), शायद 'गोड़' से।
गुरिआ सं०स्त्री०लकड़ी या काँच की मनिया;-पहिरब,-यान्हब।

गुरुआ स० पुं० व्यक्ति जिसकी वृत्ति गुरु (मंत्र देने आदि) के काम की हो; भा०-ई;-अई ।
गुरू सं० पुं० गुरु; पक्का व्यक्ति; सं० ।
गुरेरब क्रि०स० आँख फाड़कर या क्रोधपूर्वक देखना, धमकाना ।
गुर्राब क्रि० अ० गुर्राना ।
गुलंदाज सं० पुं० छोटे-छोटे टुकड़ोंवाला नमक, शायद फा० गुल (फूल) + अंदाज = फूल की भाँति खिला हुआ (दिखने में) ।
गुल सं० पुं० फूल; दिये की टेस द्वारा छोड़ा हुआ कालिख का गोल टुकड़ा,-खिलब, मजा आना;-छर्रा उड़ाइब, मज़ा करना, फा० ।
गुल-गुला सं० पुं० मीठी पकौड़ी ।
गुलाचैन सं० पुं० एक फूल जिसका पेड ऊँचा होता है । फ़ा० गुल ।
गुलेचब क्रि० स० लपेट-लपेटकर खाना, मजे से खाना; फा० गुल + ऐंचब, वै०-लें-।
गुलेलि सं०स्त्री० धनुष की भाँति पत्थर आदि फेंकने का लकड़ी तथा चमड़े का बना हथियार;-मारब, -चलाइब ।
गुलौरि सं० स्त्री० गुड़ बनाने का स्थान; वै० गुलवरि, सी० ह० ल० गड़ूरि, सं० गुड ।
गुल्ला सं० पुं० गन्ने का वह टुकड़ा जो एक बार में खाया या चूसा जा सके,-करब,-बनइब; वै० घु-, गटरिया (सी०)
गुल्ली सं०स्त्री० लकड़ी की गिल्ली जिससे बच्चे खेलते हैं;-डंडा, प्रसिद्ध खेल "गिल्ली-डंडा" ।
गुस्सइल वि० पुं० गुस्सावाला, स्त्री०-लि ।
गुस्सा सं०पुं० क्रोध,-करब,-होब; अर० गुस्सः ।
गुह सं० पुं० पाखाना, मैला;-निकारब,-काढ़ब, बहुत पीटना;-मूत उठाइब, खूब सेवा करना;-थरि, गंदा स्थान; गुह + स्थली, कहा० बनरे क मारें हाथ भर गुह, गुनाह बेलज़्ज़त ।
गुहब क्रि० स० गुहना, एक में गूथना, प्रे०-हाइब, -हवाइब, स० ग्रथ् ।
गुहरा सं० पुं० कंडा, दे० गोहरा, स्त्री०-री ।
गुहराइब क्रि० स० बुलाना, पुकारना, प्रे०-रवाइब, वै० गो-,-उब, भा०-हारि, गो- ।
गूँगाँ सं० पुं० अस्पष्ट शब्द,-करब, कुछ बोलना, ध्व० ।
गूँजब क्रि० अ० गूँजना, प्रे० गुँजाइब,-जवाइब, माला की भाँति की मनिया बनाना ।
गूङ वि० पुं० गूँगा; स्त्री०-ङि; क्रि० गुङाब, गूँगा हो जाना, सं० गुंग ।
गूझा सं० पुं० फल के भीतर का गूदा, प्र० गुज्झा ।
गूजर सं० पुं० एक जाति और उसके लोग; स्त्री० -री, गुजरिन, सं० गुर्जर ।
गूजी सं० स्त्री० एक छोटा कीड़ा जो प्राय कान में घुस जाता है ।
गूढ़ वि० पुं०कठिन, पते का, असली, स्त्री०-ढि, कठिन समस्या, क्रि० गुढ़ाब, कठिन हो जाना, -परब, कठिनता सन्मुख आना,-काटब, सं० ।
गूढ़ी दे० गुढ़ी ।
गूथब क्रि० स० गूँथना; गनब-,हिसाब लगाना, पता लगाना; प्रे०गुँथाइब,-वाइब,-उब ।
गूदर सं० पुं गुदड़ा, कचड़ा, प्र० गुद्दर, कत्थर-, पुराने कपड़े, स्त्री० गुदरी ।
गूदा सं० पुं० गूदा, प्र० गुद्दा, स्त्री०-दी, रेंडी आदि की नरम मींगी,-काढ़ब, .खूब पीटना ।
गूलब क्रि०स० मारना, पीटना; प्रे० गुलाइब,-उब ।
गूलरि सं० स्त्री० गूलर,-क फूल, अलभ्य अथवा अदृश्य पदार्थ ।
गूला सं० पुं० जमीन में खोदा हुआ बड़ा चूल्हा, -बनाइब,-खोदब,-खनब।
गूवा सं० पुं० फाँक, टुकड़ा, वै० गुआ,-वा ।
गेंगें सं० पुं० प्रार्थना पूर्ण शब्द, बिनती,-करब, प्र० घेंघे; ध्व० ।
गेंड़ सं० पुं० गन्ने का सबसे ऊपर का भाग जिसमें पत्ते लगे हों ।
गेंड़ा सं० पुं० खेत का बड़ा टुकड़ा ।
गेंडी सं० स्त्री० गन्ने का कटा छोटा टुकड़ा; क्रि० -बिछाइब, छोटे-छोटे टुकड़े करना; मु० मार डालना ।
गेंडुरी सं० स्त्री० रस्सी या कपड़े की गोल वस्तु जो घड़े के नीचे टिकने के लिए रखते हैं । सी० यँ-।
गेंडुआ सं० पुं० टोटीदार लोटा, आ० झँझरे गें-गगाजल पानी; स्त्री०-ई,-री, वै० गड़का, सं०गडुक ।
गेजुआ सं० पुं० घोंघे के भीतर रहनेवाला पानी का कीड़ा जिसके अंडो से केकड़े होते हैं ।
गेताढी सं० स्त्री० जुआठे में लगनेवाली रस्सी; दे० जुआठा, जोंठा ।
गेद सं० पुं० छोटा बच्चा; वै०-हरा; यद्यपि यह शब्द पुं० है पर यह आता है लड़के और लड़की दोनों के लिए ।
गेन सं० पुं० गेंद, आ० फुलगेनवा (फूल की गेंद), -खेलब ।
गेनवरि सं० स्त्री० एक घास जिसके डंठल से कलम बनाते हैं; सं० में इसे मुष्क और फा० में मुश्कबेत कहते हैं । इसके डंठल में गाँठें और भीतर पोला होता है । वै० ग्य- ।
गेना सं० पु० गेंदा का फूल या पेड़; स्त्री०-नी, छोटा गेंदा; बच्चे गाते हैं-"गेना क फूल केऊ छुयेब उयेब न,गेना मरिजैहैं केउ रोयेब वोयेब न ।"
गेरावँ सं० स्त्री० पशुओं के "पगहे" का वह भाग जो उनके गले के चारों ओर बँधता है, दे० पगहा, सं० ग्रीव (गर्दन), वै० राइँ ।
गेरुआ सं० पु० गेरु, वि० इस रंग का, वै०-रू ।
गेरुई सं० स्त्री० एक रोग जो गेहूँ के पौदे में लगता है और जिसके लगने से सारा पेड़ गेरू की भाँति लाल हो जाता है । यह संक्रामक होता है और

इसके सबंध में यह पहेली हैः-"हाथ न गोड़ नहीं मुँह चकरे, खात है अनाज चलत भुईं पकरे"।

गेह् सं० पुं० परवाह, रक्षा, चिंता, करब,-होब।

गेहुँअन सं० पुं० एक प्रकार का साँप जिसका रंग गेहूँ की भाँति और जो विषैला होता है, वै० गो-दे०, सं०।

गैया सं० स्त्री० गाय।

गैर वि०पुं० दूसरा; स्त्री०-रि; वै० गयर; अर० ग़ैर; दे० अनगयर, गयर; सं० स्त्री० संतोष, तितीक्षा; -करब; वि० री।

गैल सं० स्त्री० रास्ता, दे० गयल।

गैस दे० गयस।

गोंइठा सं० पुं० सूखे गोबर का टुकड़ा; स्त्री०-ठी, वै० ग्व-।

गोंजब क्रि० स० एक में मिला देना; पशुओं का सानी पानी करना, चारा देना; प्रे०-जाइब,-जवाइब,-उब, भा०-जाई।

गोंठब क्रि० स० किसी वस्तु या अंग को उँगली या गोबर आदि से छूकर हाथ फेर देना, प्रे०-ठाइब, -वाइब,-उब।

गोगा वि० पुं० मूर्ख -बाई, महामूर्ख।

गोचर सं० पुं० दे० गरह-।

गोई सं० स्त्री० दो बैल, बैल की जोड़ी प० ग्वाई।

गोजर सं० पुं० बहुत पैरोंवाला विषैला कीड़ा, कनखजूरा, वि० धीरे-धीरे काम करनेवाला।

गोजी सं० स्त्री० सोंटी, छोटी लाठी, पुं०-जा, नया मोटा कच्चा, वै०-दी (जौ० प्र० सु०)।

गोझनवट सं० स्त्री० स्त्रियों के अंचल का वह भाग जो बायें ओर नीचे किसी वस्तु के छिपाने या चुराने के लिए प्रयुक्त होता है। सं० गुह्, छिपाना ?

गोझिआ सं० स्त्री० गुझिया;-सोहारी, स० गुह् ? क्योंकि इसके भीतर मसाला, शक्कर आदि भरा रहता है।

गोट स० पुं० कपड़े का किनारा, मगज़ी,-लगाइब।

गोटी सं० स्त्री० खेलने के लिए मिट्टी लकड़ी आदि का टुकड़ा प्र०-टी, गु-;-डारब, बाँटने के लिए गोटी डालना, दे० गुट्टी।

गोड़ सं० पुं० पैर,-धरब, पैर छूना या पकड़ना, -लागब,-मूड़ धरब, हाथ-जोरब, प्रार्थना करना, -हाथ, हाथ,-सर्वांग।

गोड़ना वि० पु० नष्ट करनेवाला, भाग्यहीन, स्त्री०-नी, गोड़नेवाली वै० ग्व-।

गोड़नि सं० स्त्री० गोड़ने के योग्य होने की (भूमि की) स्थिति।

गोड़ब क्रि० स० गोड़ना, प्रे०-ड़ाइब,-उब।

गोड़हरा सं० पुं० पैर में पहनने का कड़ा,-गुँजहरा, पैर तथा हाथ में पहनने के कड़े, गोड़+हर।

गोड़ा सं० पुं० बर्तन के नीचे का वह भाग जो 'गोड़' (पैर) की भाँति हो, जिस पर वह खड़ा रहे, पौदे की रक्षा के लिए उसके चारों ओर खोंदा घेरा मारब,-लगाइब।

गोड़ी सं० आगमन का प्रभाव, 'गोड़' से; यह प्रायः नवागत वधू या अतिथि के लिए प्रयुक्त होता है।

गोत सं० पुं० गोत्र-ती, गोत्रवाला, बिरादरी का व्यक्ति, सं०।

गोदनहरि स० स्त्री० स्त्री० जो दूसरी स्त्रियों के हाथ, ठोढ़ी आदि पर चित्र, चिह्न आदि गोदती है, वै०-री गोदब+ हर।

गोदना सं०पु० एक घास जिसके दूध से काले दाग पड़ जाते हैं, इसके कई प्रकार होते हैं, स्त्री०-नी, (२) अंगों पर गोदा हुआ चिह्न,-गोदब; वै० ग्व-।

गोदब क्रि० स० टेढ़ा मेढ़ा लिखना, चिह्न बनाना, प्रे०-दाइब, दवाइब,-उब, भा०-दाई,-दवाई।

गोदा सं० पुं० पीपल या बरगद के फल।

गोदाम सं० पुं० गोदाम; अं० गोडाउन।

गोदामिल वि० कुछ खट्टा;-लागब; शायद 'गोदा' से,-दे०गोदा, (गोदा+आमिल=गोदे की भाँति खट्टा)।

गोदाही सं० स्त्री० टेढ़ा मेढा छोटा डण्डा; ताज़ा तोड़ा हुआ डंडा,-मारब, शायद गो+दाह (गऊ का दाह करनेवाला)।

गोधन सं० पुं० खटकिनो द्वारा क्वार-कातिक में गाया जानेवाला लंबा गीत जिसमें दुःख पूर्ण गाथा है; मु० लंबी दुख भरी कहानी;-गाइब; इस गीत की गानेवाली स्त्रियाँ गोबर की मूर्ति बनाकर हाथ में लिए घर घर गाती फिरती थीं, पर अब खटिक पञ्चायत ने ऐसा करना बंद कर दिया है।

गोन सं पुं० गोंद।

गोनरा सं० पुं० बहुत बड़ी चटाई जो बैलगाड़ी में फर्श की भाँति बिछायी जाती है।

गोनरी सं० स्त्री० छोटी चटाई;-पूरब, ऐसी चटाई बनाना, क्रि०-रियाइब, चटाई की भाँति लपेट लेना।

गोनी सं० स्त्री० एक घास जिसे साग के रूप में खाते हैं।

गोंफब क्रि० स० डाँटना, रोकना; होंफब-,नियंत्रण में रखना, फटकारना।

गोंफा सं० पुं० नया पत्ता,-फूटब,-फोरब।

गोबर सं० पुं० गाय भैंस का गू; क्रि०-रिआइब, वि०-हा,-ही;-री, गोबर का बना लेप,-री करब, ऐसा लेप (दीवार आदि पर) करना;सं० गोमल।

गोभब क्रि० स० किसी फल या अन्य वस्तु मे धीरे-धीरे और ऊपर ही ऊपर छेद करना, मु० शब्दों या व्यंग्यो से दुख पहुँचाना; प्रे०-वाइब, -भाइब,-उब, भा०-भाई,-वाई।

गोभवार वि० पुं० गर्भ का (बाल)।

गोभी सं० स्त्री० गोभी का पेड़ या फूल।

गोमती सं० स्त्री० प्रसिद्ध नदी;-माता।

गोयाई दे० गोवाई।

गोर वि० पुं० गोरा; स्त्री०-रि,-री;-हर, .खूब गोरा; गीतों में 'गोरिया'' एवं ''गोरी'' प्रयुक्त। भा० -राई,-हरई; भो० हर; घृ०-ऊ आ०-हरकू।

गोरखधधा सं० पुं० तरह-तरह के झंझट; खट-राग;-करब,-म परब, प्रसिद्ध गोरखनाथ के नाम पर प्रचलित।

गोरखमुंडी सं० स्त्री० एक प्रकार की मुंडी जिसका अर्क बनता है।

गोरस सं०पुं० दही और मट्ठा, वि०-हा,-ही, व्यं० से ''गोरसहा'' गाँडू के लिए प्रयुक्त होता है। कहा० ''सदा क-ही झामबहू''।

गोरा स० पुं० अंग्रेज़; प्र-रै;-रौ।

गोरि सं० स्त्री० क़ब्र, ग़ोर।

गोरू सं० पुं० पशु, व्यं० पशु की भाँति का व्यक्ति; मूर्ख, भा०-अई, वि०-रुहा।

गोल वि० पुं० गोल, स्त्री०-लि;-गोल; भा०-लाई; क्रि०-लाब,-लाइब,-लिआइब,-हथी, रोटी जो हाथ से ही गोल की जाय, जिसमें चकले बेलन की मदद न हो। सं०।

गोला सं० पुं० गोला;-बरुद, बम-, स्त्री०-ली।

गोलि सं० स्त्री०गोल, गिरोह,-बान्हब; क्रि०-आव, -याइब, एकत्र करना।

गोली सं० स्त्री० गोली;-चलब,-चलाइब,-मारब, -खाब,-दागब,-लीलब।

गोवा सं० पुं० चालाक जो अपनी बात छिपा रखे, ''गोइब'' से, यद्यपि यह क्रिया अवधी में नहीं है; रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखौ गोय; भा०-ई; फा० गुफ़्तन (बोलना), गोया (बोलने-वाला = चालाक)।

गोस सं० पुं० गोश्त, मांस; वि०-हा, मांसभक्षी, -मच्छी, मांस-मछली।

गोसा सं० पुं० कोना; फ़ा० गोशः।

गोसाईं सं० पुं० एक जाति जिसके लोग महादेव के पुजारी होते हैं; सं० गोस्वामी।

गोसैयाँ स० पुं० भगवान्।

गोह सं० पुं० एक जंगली जानवर; कहा० ''गोह क बच्चे सब कलबले''।

गोहना सं० पुं० (स्त्रियों के) बाल बाँधने का रंगीन धागा; वै० गु-, 'गुहब' से।

गोहनें क्रि० वि० साथ साथ; क्रि०-निआइब, साथ-साथ हो लेना या ले लेना।

गोहराइब क्रि० स० पुकारना; प्रे०-रवाइब।

गोहारि सं०स्त्री०दु:ख के समय की पुकार,-करब-लगा-इब,-लागब, गऊ-,दु:खी की सहायता,पुकार आदि।

गोहिआ सं० स्त्री० मार का चिह्न (व्यक्ति के शरीर पर),-परब; वै०-या।

गोहुँअन सं० पुं० एक प्रकार का साँप जो गेहूँ के रंग का होता है। वै० गे-।

गोहूँ सं० पुं० गेहूँ; सं० गोधूम।

गौ दे० गऊ।

घ

घँघरा सं० पुं० बड़ा लहँगा, स्त्री०-री, प्र० घा-, वै०-ङ-।

घंट सं० पुं० किसी के मरने पर हिंदुओं द्वारा बांधा जानेवाला मिट्टी का घड़ा जिसे बाहर किसी पेड़ पर लटकाकर उसमें प्रतिदिन पानी भरते हैं, -बान्हब,-फोरब, इसे १०वें दिन फोड़ते हैं, सं० घट।

घंटा सं० पुं०घंटा, स्त्री०-टी, घरी-, व्यं० कुछ नहीं, -लेब,-पाइब,-देब।

घंता-मंता सं० पुं० एक खेल जिसमें छोटे बच्चे को घुटने पर बैठाकर झुलाते और ''घंता मंता'' कहते हैं,-लेब।

घइँचब क्रि० स० खींचना, प्रे०-चवाइब, वै० खइँ-, घैं-।

घइला सं०पुं० घड़ा, प्राय: गीतो मे, वै०-ल,-यल।

घइहल वि० पुं० घायल, चोट लगा हुआ; स्त्री० -लि;-करब,-होब, वै०-य-,-हिअल, क्रि०-हाइब, घायल कर देना।

घउकब क्रि०स० डाँट लेना, ज़ोर से डाँटना, डराना; वै० ठ-।

घउधियाब क्रि० स० डपटना, चिल्लाकर कहना, वै०-आब।

घउलर सं० पुं० मोटा व्यक्ति; प्र०-रा, यह शब्द दोनों लिंगों में बोला जाता है; कभी-कभी ''-रि'' स्त्री० प्रयुक्त होता है।

घघेंचब क्रि० स० डाँट देना; रोब में लेना, शा० घेंच से अर्थात् घेंच (दे०) दबा देना।

घचर-घचर क्रि० वि० रुक-रुककर और इधर-उधर हिलते हुए।

घट सं० पुं०शरीर, देह, ''जब लौं घट में प्रान'' इसी कविता खंड में प्रयुक्त; स्थान (''घट-घट व्यापी राम'')।

घटइब क्रि०स०कम करना,वै०-टा-,प्रे०-वाइब,-उब।

घटका सं० पुं० प्राण निकलने के समय की स्थिति; -लागब, मरणासन्न होना।

घट-घट क्रि० वि० स्थान-स्थान पर; प्रति प्राणी में, प्राय: धार्मिक एवं दार्शनिक काव्य में प्रयुक्त।

घटवार सं० पुं० घाटवाला, भा०-री।

घटाना सं० पुं० घटाने का प्रश्न;-लगाइब, ऐसा प्रश्न लगाना।

घटिआही सं० स्त्री० पर-स्त्री-प्रसंग;-करव,-लागव, -लगाइव, ऐसे अपराध का लगना या लगाना।
घटिहा वि० पुं० पर-स्त्री से मैथुन करनेवाला;-ही, पर-पुरुष से प्रसंग करनेवाली।
घट्टी सं० स्त्री० हानि, घाटा;-आइव,-लागव;-देव (किसी सौदे का) नुकसान देना।
घट्ठा सं० पुं० शरीर के किसी भाग पर पड़ा चिह्न जिसमें चमड़ा मोटा हो जाता है;-परव; क्रि०-च।
घड़घड़ाव क्रि० अ० घड़घड़ की आवाज़ देना, वै० -र-राव, ध्व०।
घड़र-घड़र सं० पुं० "घड़र-घड़र" का शब्द;-होव, -करव; वै०-रर, ध्व०।
घड़ा सं० पुं० दे० गगरा,-री।
घत सं०स्त्री० मौका, दाँव;-पाइव,-लागव,-लगाइव-वै० घाति, वि०-गर,-तिगर।
घन वि० पुं० घना, स्त्री०-नि।
घन्नी सं०स्त्री० यातना, मु०-घसव, कष्ट उठाना, झेलना, भुगतना, वै० घिसनी, घसनी।
घप सं०पुं० भारी वस्तु के गिरने की आवाज,-दे०, -सें; प्र०-प्प,-पाक, घपा-(पु०), घपर-घपर (क्रि० वि०) खूब ज़ोर से (पीटना)।
घपकव क्रि० स० जोर से और झट से मार देना; प्रे०-काइव,-उव।
घपचिआव क्रि० अ० घबरा जाना, अज्ञान में पड़ जाना, कुछ कर न सकना, प्रे०-आइव,-वाइव।
घपच्चू सं० पुं० मूर्ख; वि० के रूप में भी, ऐसे ही स्त्री० में प्रयुक्त।
घपाक दे० घप, प्र०-का।
घबड़ाव क्रि० अ० घबरा जाना; प्रे०-ड़वाइव,-उव।
घमंजा सं० पुं० मिलावट, गड़बड़,-करव,-होव।
घमंड सं०पुं० गर्व, वि०-ढी,-करव,-होव,-निकारव, गर्व छुड़ाना (दंड देकर)।
घम स० पुं० गिरने का शब्द,प्र०-म्म,-से, पु० घमाघम; घम्मा-घम्मी, मार-पीट।
घमउनी सं०स्त्री० धूप में बैठकर गर्म होने की क्रिया, -करव, वै०-मौनी।
घमकव दे० घपकव।
घमघम वि० घामवाला, कुछ गर्म (मौसम),-होव, -करव, सं० घर्म।
घमछाहीं सं० स्त्री० मौसम जिसमें घाम और छाँह दोनों हों, ऐसा स्थान, सं० घर्म+छाया।
घमाक सं० पुं० ज़ोर से गिरने का शब्द, प्र०-क्का, -से ध्व०।
घमाघम सं० पुं० ज़ोर ज़ोर से गिरने या मारने का शब्द,-होव,-करव, प्र०-म्मा-म्मी ध्व०।
घमाव क्रि० अ० घाम में बैठना, घाम का आनन्द लेना, सं० घर्म।
घमौनी दे० घमउनी।
घम्मड़ घम्मड़ क्रि० वि० जोर-जोर से (बाजे के बजने के लिए)।
घर सं० पुं० रहने का स्थान, किसी यंत्र या उसके अंग-विशेष के रुकने का स्थान,-करब, (स्त्री का) पुरुष के यहाँ जाना या बैठ जाना,-बार;-विधि,-घर की भाँति प्रबंध,-घुसना, घर में ही पड़ा रहनेवाला, स्त्री०-नी।
घरइया सं पुं० दे०-रैया।
घरजानी वि० बिना लिखा-पढ़ी के, गुपचुप (दिया गया उधार),-मरजानी, व्यक्तिगत (व्यवहार जिसे दूसरे न जानें)।
घरवारी वि०पुं० जिसके परिवार हो, घरबार वाला, -होव।
घरर सं० पुं० रगड़ने का शब्द,-घरर करव,-होव।
घरवना सं०पुं०छोटा घर जो बच्चे खेल में बनाते हैं; घर-,खिलवाड़, वै०-रौना।
घराना सं० पुं० कुल, 'घर' से, स० गृह।
घराय सं० स्त्री० घर का सा व्यवहार, मा०-रोपा।
घरिआ सं० स्त्री० छोटा सा मिट्टी का प्याला, वै० -या।
घरिआर सं० पुं० घड़ियाल,-यस, लंबा चौड़ा (व्यक्ति), वै०-यार।
घरिआरी सं० स्त्री० बजाने की गोल घंटी, घंटा-, घरी-घंटा, सूचना देने की व्यवस्था।
घरी सं०स्त्री० घड़ी, समय का एक अंश,यक- दुइ-, -घरीं, बार-बार,-पहर, थोड़ी थोड़ी देर।
घरुक सं०पुं० एक नीची जाति और उसके व्यक्ति।
घरुही सं० स्त्री० घर का खँडहर या चिह्न, सं० गृह।
घरू वि० घर का सा, मैत्रीपूर्ण, निजी, दोनों लिंगों में एक सा रूप।
घरैया सं० घर का व्यक्ति (बारात का नहीं), कभी-कभी "घराती" (और बाहरी को बराती) कहते हैं।
घलघलाइव क्रि० स० ज़ोर से गिराना (पानी), पेशाब करना, वै०-उव, ध्व०।
घलघलाव क्रि० अ० बिना रुकावट के बहना, घल-घल शब्द करना, प्रे०-इव, ध्व०।
घलर-घलर क्रि० वि० घल-घल करके, प्र० घुलुर-घुलुर, वै०-ल-ल, ध्व०।
घलाइव क्रि० स० लगा देना, फँसा देना; प्रे०-लवा-इव,-उव।
घलारा सं० पुं० पानी बहने का मार्ग; ज़ोर से बहता हुआ पानी -फूटव।
घलुआ सं० पुं० घाला (दे०), सौदे में दिया हुआ वह अंश जो तोल के अतिरिक्त यों ही दिया जाय, -देव,-लेव; वै०-वा।
घलोना सं० पुं० लाल पका हुआ फल; प्रायः बच्चे इस शब्द का प्रयोग करते हैं। वै०-लौं-,-लव-।
घवंदि सं० पुं० केले के फलों का गुच्छा; यक-, दुइ- (केरा), वै० घरै-।
घसनी सं० स्त्री० तुच्छ काम, कठिन परिश्रम, -घसव, ऐसा काम करना, वै० घि-।

घसर-पसर क्रि० वि० किसी प्रकार; यों ही; बुरी तरह, वै०-मसर।
घसरब क्रि०स० (कोई गंदी वस्तु दूसरे साफ वस्तु में) लगा देना, पोत देना, प्रे० राइब,-उब।
घसाई सं० स्त्री० माजने या घिसने की क्रिया।
घसिआरा सं० प० घास काटने या बेचनेवाला, स्त्री०-रिन, भा०-री; वै०-अरा,-सेरा।
घसिहा वि० पुं० घासवाला (खेत), घास से भरा; स्त्री०-ही।
घसीट सं० पुं० जल्दी-जल्दी लिखा हुआ अक्षर, घसीटी हुई लिखावट;-लिखब,-पढ़ब।
घसीटब क्रि० स० पृथ्वी पर खींचना, ज़ोर से खींचना, प्रे०-सिटवाइब,-उब, मु० जल्दी-जल्दी लिख देना।
घहराब क्रि० अ० घिर कर आवाज़ करना, ज़ोर से गिर पड़ना। "गगन घटा घहरानी"-कबीर।
घहिअल दे०-इहल, वै०-यल।
घाँटी सं० स्त्री० गले के बीच का भाग,-के तरें, गले में, मिट्टी की घंटी जो बच्चे खेलते हैं।
घाइ सं० स्त्री० घाव।
घाघ सं० पुं० प्रसिद्ध लोकोक्तिकार, घुटा हुआ अनुभवी व्यक्ति, वि० प्रभावशाली।
घाघरा सं० पुं० लंबा-चौड़ा लहँगा, वै०-घरा, स्त्री० घँघरी।
घाट सं० पुं० नदी या तालाब के किनारे बना हुआ स्नान योग्य स्थान, यक-टें, एक किनारे, थोड़ा बहुत पूरा, घटवार, घाटवाला, पार उतारनेवाला, स० घट्ट।
घाटा सं० पुं० हानि,-होब,-लागब, स्त्री०-टी, घट्टी।
घाटि सं० स्त्री० पर-स्त्री गमन,-करब, वि० घटिहा, -ही (पर-पुरुष-गामिनी), धोका (फै० जौ०), सं० घात।
घात सं० पुं० दावँ,-लागब,-करब,-पाइब,-ताकब, -देखब, वै०-ति।
घातक वि० मारनेवाला, हानिकारक, वै०-ति-; -होब।
घान सं० पुं० (नाज, तिल आदि का) वह भाग जो एक बार में भूना या पेला जा सके, यक-, दुइ-,स्त्री०-नी (दे०)।
घानी सं० स्त्री० कोल्हू में पेलने के लिए उतना तिल, सरसों आदि जितना एक बार में पेला जा सके।
घाबड़ा सं० पुं० घबराहट।
घाम सं० पुं० धूप, क्रि० घमाब (दे०), सं० घर्म।
घामड़ वि० सुस्त, मूर्ख, भा० घमड़ई,-पन।
घाय सं० स्त्री० घाव (दे०)।
घारी सं० स्त्री० पशुओं के रहने का घर, क्रि० घरिआइब,-उब, घारी में कर देना, शा०'घर' का स्त्री० रूप?

घालब क्रि० डालना, यह दूसरी क्रि० के साथ ही लगाकर अर्थ देता है, उ० कै-, दै-, कर डालना, दे डालना आदि।
घाला सं० पुं० सौदे के साथ अंत में दिया हुआ उपहार;-देब,-लेब, वै०घलुआ,-वा, घेलवा (जौ०)।
घाव सं० स्त्री० ज़ख़्म,-करब,-लागब,-होब, वि० घइहल,-य-, घै-।
घासि सं० स्त्री० घास, वि० घसिअरा,-सेरा,-आरा (दे०), घसिहा,-पात, घासपात, रद्दी वस्तुओं की मिलावट।
घिचवाइब क्रि० स० खिचवाना, वै०-उब, 'घींचब, का प्रे० रूप।
घिचाइब क्रि० स० खिचवाना, वै०-उब, प्रे० -वाइब।
घिचानि सं० स्त्री० खींचने की मिहनत।
घिअना सं० पुं० घी, यह शब्द 'दिअना' (दे०) की भाँति केवल प्रयाग, जौनपुर आदि कुछ प्रांतों में ही बोला जाता है, नहीं तो प्रायः इसका रूप 'घिउ' है (दे०), सं० घृत।
घिआर वि० पुं० घी वाला, स्त्री०-रि, बहुत घी देनेवाली (गाय, भैंस आदि) या जिसके दूध में बहुत घी होता हो।
घिउ सं० पुं० घी, घाघ-"गलगल नेबुआ औ घिउ तात", सं० घृत, गुर-होव, शुभ होना, उ० तोहरे मुँह माँ-होय, तुम्हारे शब्द शुभ अथवा सत्य हों, वै०-व, वि०-यहा,-ही,-आर।
घिउ-कुँआरि सं० स्त्री० ग्वारपाठा जिसके भीतर से घी सा गूदा निकलता है। यह कई दवाओं में पड़ता है और पेट ठीक करने के लिए इसकी तरकारी भी खाई जाती है।
घिघिआब क्रि० अ० ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना, प्रे० -वाइब,-उब, 'घी-घी' शब्द से, ध्व०।
घिचपिच सं० स्त्री० आपत्ति, विघ्न, अड़चन,-करब, -होब।
घिन सं० स्त्री० घृणा,-लागब, क्रि०-नाब (दे०), वै०-ना,-नि, सं० घृणा।
घिनवना वि० पुं० घृणा उत्पन्न करनेवाला, स्त्री० -नी।
घिना सं० स्त्री० घृणा, -करब,-लागब; क्रि०-ब, वि०-नवना,-नी, सं०।
घिनाब क्रि० अ० घृणा करना, सं०।
घियहा वि० पुं० घीवाला, स्त्री०-ही, घी की बनी हुई; जिसमें घी रखा गया हो।
घिराइब क्रि० स० घसीटना, प्रे०-रवाइब,-उब।
घिव दे० घिउ।
घिसकब क्रि० अ० खिसकना, प्रे० घुसकाइब, वै० घु-,खि।
घिसनी दे० घसनी, प्र०-सु-।
घींचब क्रि० स० खींचना, घसीटना, प्रे० घिचाइब, -चवाइब,-उब।

घुइरब क्रि० अ० घूरना; आँख जमाकर देखते रहना, क्रोध से देखना, ताकना।
घुइस सं० पुं० एक छोटा जङ्गली जानवर, मूस-, रात को चुराकर खानेवाले जानवर,-लागब।
घुइहाइब क्रि० स० लकड़ी या कलछी आदि डाल कर (बर्तन में रखी हुई वस्तु को) चलाना, "मारी रोटी,-हाई दालि"।
घुघुआब क्रि० अ० घू घू शब्द करना, स० डाँटना, क्रुद्ध होना ध्व०।
घुघुटारि वि० स्त्री० घूँघटवाली, हा०आ०-री, घूघुट+आरि; दे० घूघुट।
घुघुरी सं० स्त्री० भिगोकर उबाला या छौंका हुआ खड़ा अन्न,-चबाब,-डारब (तैयार करना)।
घुच्च-घुच्च क्रि० वि० बार-बार बिना ज़ोर लगाये और बिना कुछ असर के (मारना, लगाना आदि), प्र०-चुर-चुर।
घुच्ची सं० स्त्री०लग्गी में लगी हुई लकड़ी जिससे दूसरी लकडी आदि खींची या तोड़ी जाती है। -घुच्ची, वि० छोटी-छोटी भीतर धुसी हुई (आँख), दे० लग्गी,-ग्गा।
घुटुर-घुटुर क्रि० वि० धीरे-धीरे बिना शब्द किये (पी लेना), ध्व०।
घुट्ट सं० पुं० किसी पदार्थ को पीने की आवाज़, -से,-घुट,-घुटुर-घुटुर, धीरे से (पी लेना), ध्व०।
घुट्टी दे० घूँटी;-देब, (बच्चों को) घुट्टी देना या दवा पिलाना, व्यं० ज़हर देना।
घुड़कब क्रि० स० घुड़कना, डाँटना, प्रे०-कवाइब, -काइब,-उब।
घुन सं० पुं० नाज में लगनेवाला छोटा कीड़ा, -लागब, रोगी हो जाना क्रि० घुनब, घुनों द्वारा नष्ट होना।
घुन-घुना सं० पुं० छोटे बच्चों के खेलने का खिलौना जिसमें से "घुनघुन" आवाज़ होती है, ध्व०, स्त्री०-नी।
घुमना वि० घूमनेवाला, घर-,जो दूसरों के घर घूमता रहे, आवारा, सुस्त, स्त्री०-नी।
घुमरब क्रि० अ० लौटना, प्रे०-राइब, लौटाना मु० बदला लेना, लौटकर आक्रमण करना।
घुमरी सं० स्त्री० चक्कर (सिर में) -आइब, ऐसे चक्कर आना,-परैया, एक खेल जिसमें बच्चे "घु ..परैया-रैया .." कहते और एक दूसरे को पकड़कर घूम-घूम नाचते हैं; व्यं० व्यर्थ के चक्कर।
घुरकब क्रि० स० ज़ोर से डाँटना, वै०-ड़-,मा० -की,-कवाई।
घुरकी सं० स्त्री० घुड़की,-धमकी, डाँट-फटकार, -देब, वै०-ड़-।
घुरघुराब क्रि० अ० 'घुर-घुर' शब्द करना; ध्व०।
घुरचब क्रि० अ० निर्बलता अथवा बीमारी के कारण उठ न सकना; कष्टमय जीवन बिताना, प्रे० -चाइब,-चवाइब।
घुरचारब दे० खुरचारब।
घुरमुसहा वि० पुं० कम बोलनेवाला पर भीतर ही भीतर द्वेष रखनेवाला, चुप्पा, स्त्री०-ही, घूर+मूस (घूर पर के मूस की भाँति चुपके से खोदने या नुकसान करनेवाला)+हा, क्रि०-साब।
घुरमुसाब क्रि० अ० भीतर ही भीतर बुरा मानना, बिना कुछ कहे नापसंद करना।
घुरसारि सं० स्त्री० घुड़साल, वै० घो-।
घुरहू-कतवारू सं० पुं० कोई भी, तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति, घुरहू तथा कतवारू प्रायः नीची श्रेणी के लोगों के नाम होते हैं। पहले का अर्थ है—घूर पर पड़ा हुआ, दूसरे का 'कतवार' (दे०) बटारने-वाला।
घुरुर-घुरुर क्रि० वि० धीरे-धीरे और घुर-घुर की आवाज़ करते हुए (जाँत या चक्की), ध्व०।
घुरेसब क्रि० स० घुसेड़ना, प्रे०-सवाइब, वै०-सेरब, इन दोनों में वर्ण-विपर्यय का ही भेद है।
घुलघुलाब क्रि० अ० 'घुलघुल' की आवाज़ करना, प्रे०-इब, पेशाब कर देना (प्रायः बच्चों के लिए), ध्व०।
घुलब क्रि० अ० घुलना, बीमारी से धीरे-धीरे मृत-प्राय होना, प्रे०-लाइब,-उब।
घुल्ला सं० पुं० लकड़ी या गन्ने का छोटा टुकड़ा, स्त्री०-ल्ली,-करब, (बच्चों के लिए) गन्ने का छोटा टुकड़ा छील देना।
घुसरब क्रि० अ० घुस जाना; प्रे०-से-,-सेरवाइब, -उब।
घुहिआइब दे० घुइहाइब।
घूँट सं० पुं० पानी, शर्बत आदि का उतना अंश जो एक बार में पिया जाय, क्रि०-ब, धीरे-धीरे या कठिनता से पीना, एक-,दुइ-।
घूँटी सं० स्त्री० बच्चों की दवा,-देब, ऐसी दवा पिलाना, व्यं० विष देना।
घूघुट सं० पुं० घूँघट,-काढ़ब।
घूघुर सं० पुं० घुघुरू।
घूमब क्रि० अ० घूमना, लौटना, (समय का) फिर आना; प्रे० घुमाइब,-वाइब,-उब, वै० प्र० घुमरब।
घूर सं० पुं० कूड़ा-करकट का ढेर,-करब,-लागब, -लगाइब,-यस, लंबा चौड़ा पर सुस्त और बेकार।
घूस सं० पुं० रिश्वत,-देब,-लेब, वि० घुसहा, घूस लेनेवाला।
घेघा सं० पुं० गर्दन, गला, गले की बीमारी जिसमें सूजन हो जाती है; स्त्री०-घी (व्यं० घृ०)।
घेंच सं० पुं० लंबी पतली-गर्दन, प्र०-चा, वै०-चु, -चि; प्रायः चिड़ियों या पशुओं के लिए, घृ० रूप में कभी कभी व्यक्तियों के लिए भी प्रयुक्त।
घेंटा सं० पुं० सूअर का बड़ा मोटा बच्चा, वै० बघेंटा, घेंटा।
घेर सं०पुं०घेरा,-वार, बादलों का उमड़ना; क्रि०-ब।

घेरब क्रि० स० घेरना, चारों ओर से रोकना, प्रभाव डालना, प्रे०-राइब,-वाइब,-उब, भा० -वाई, घेरा, घेर-घार।
घेरा सं० पुं० चारों ओर से बनाई हुई दीवार या लकड़ी, काँटे आदि की रोक-थाम,-डारब, सिपाहियों या रक्षकों द्वारा घेर लेना; भा०-ई,-खोई।
घेवँडा सं० पुं० एक फल जिसकी बेल चुलती है और जिसका साग बनता है।
घैचब दे० घइँ-।
घैटा दे० घंटा।
घैहल दे० घइहल।
घोंइटब क्रि० स० खूब घोटना, डाँटना, दे० घोंटब जिसका यह प्र० रूप है, प्रे०-टाइब,-टवाइब,-उब।
घोंघा सं० पुं० पानी में होनेवाले 'गेजुआ' (दे०) का घर जिसे सूखने पर अंजन आदि रखने के काम में लाते हैं, वि० मूर्ख, स्त्री०-घी, छोटा -घा।
घोंचू वि० उल्लू, मूर्ख, जिसे ठीक बात समय पर न सूझे, भा० घोंचवाफेर,-मँ परब, भूलभुलैयाँ या विकट स्थिति में पड़ जाना।
घोंट-घाँट सं० पुं० जल्दी-जल्दी तथा बार-बार घोंटने का क्रम,-करब।
घोंटब क्रि० स० घोंटना, डाँटना, प्रे०-टाइब,-उब, -वाइब,-उब, व्यं० रट लेना, भा०-टाई।
घोंटारब क्रि० स० लिखने की तख्ती या पट्टी को कालिख लगाने के बाद शीशे के टुकड़े से घोंटकर चमकाना, ऐसे शीशे के टुकड़े को "घोंटारा" कहते हैं। प्रे०-टरवाइब, दूसरे से घोंटारा लगवाना, विद्यार्थी तख्ती की ऐसी तैयारी को "घोंटारा-पोतारा" कहते हैं। दे० पोतारब।
घोंटू वि० घोंटनेवाला, किसी बात को रट लेनेवाला बुद्धि का कम उपयोग करनेवाला।
घोखब क्रि० स० रटना, प्रे०-खाइब,-उब,-खवाइब, -उब, सं० घोष (शोर) अर्थात् चिल्लाकर या ज़ोर-जोर से रटना या स्मरण करना।
घोघर सं०पुं० एक काल्पनिक व्यक्ति जिसको बुलाकर या जिसका नाम लेकर छोटे बच्चों को डराया जाता है, दे० हौआ।
घोघी सं० स्त्री० किसी कपड़े का, विशेषतः कंबल का, लपेटकर सिर पर ऐसा बाँधा हुआ रूप जिससे वर्षा से बचाव हो सके,-थान्हब,-करब।
घोड़न वि० पाजी, बदमाश।
घोड़ा सं० पुं० पशु विशेष, स्त्री०-डी, क्रि०-ब, घोड़ी का गर्भिणी होना, वै०-ढ़वना, सं० घोटक।
घोर वि० बहुत, बड़ा, अधिक।
घोरब क्रि० स० घोलना, प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब, -उब, अ० बहुत विलंब करना।
घोलर वि० बहुत मोटा; प्र० घौ-, दे० घउलर।
घोला सं०पुं० गहरा गड्ढा या पतला नाला।
घोसी सं० पुं० दूध का काम करनेवाली एक जाति का व्यक्ति, सं० घोष।
घौधियाब दे० घउ-।
घौलर दे० घउल-तथा घो-।

च

चग सं० पुं० पतंग,-चढ़ब, महँगा हो जाना।
चगा वि० पुं० अच्छा, स्त्री०-गी, वै०-ङ्गा।
चंगुल सं० पु० पंजा,-मँ, पंजे में, वै०-ङ्गुल।
चँगेरा सं० पु० हल्की सुदर डलिया, स्त्री०-री, वै०-ङ्गेरा,-री।
चचल वि० पुं० जल्दी-जल्दी चलने या बदलने वाला, स्त्री०-लि।
चंचल वि० पुं० चचल, स्त्री०-लि, "चंचलि जोय चनैनी ओंठवन बुधि उपराजै" (चनैनी); भा०-ई।
चंट वि० पुं० चालाक, स्त्री०-टि, प्र०-ठ, भा० -ई,-पन।
चठ वि० पु० चालाक, स्त्री०-ठि, भा०-ई।
चंडाल सं० वि० दुष्ट व्यक्ति, भा०-डलई,-पन।
चंडी सं०स्त्री० दुर्गा, झगड़ालू स्त्री,-पाठ, दुर्गा-पाठ, वै०-ण्डिका, सं०।
चँडुला वि० पुं० जिसके सिर में बाल न हो, स्त्री० -ली, वै०-नु-,-ड़-,-चण्ु।
चंडू सं० पुं० एक नशे की वस्तु जो पी जाती है, -खाना, ऐसा स्थान जहाँ-चिलम पर लोग एकत्र बैठकर पीते हैं, काहिलों और गप्पियों का घर,-क गप्प, बे सिर पैर की बात।
चंडूल दे० चँडुला।
चँडुला वि० पु० जिसके सिर में बाल न हों, वै० -णु-,-नु-, स्त्री०-ली।
चंदा सं०पुं० चदा, चंद्रमा,-माँगब,-उगहब,-मामा, चंद्रमा जिसे बच्चे मामा कहते हैं। वै०-न्ना।
चंनन सं० पुं० चंदन, वै० चन्नन।
चपत वि० गायब, अदृश्य,-होब,-करब।
चँपवाइब क्रि० स० चाँपब (दे०) का प्रे० वै० -पाइब।
चंपा सं० पुं० प्रसिद्ध फूल।
चपू वि० सुंदर, विचित्र, सं०।
चसुर दे० चमसुर।
चइत सं० पुं० चैत, सं० चैत्र,-कुआर, दोनों फसलों का समय, क्रि० वि० साल में दो बार,-हरा,-रें, चैत के मास या वसत ऋतु में।

चइता सं० पुं० एक गाना जो प्राय: चैत में गाया जाता है।
चइती सं० स्त्री० चैत में होनेवाली फसल।
चइला सं० पुं० चिरी हुई लकड़ी का मोटा टुकड़ा, यस, हट्टा-कट्टा, स्त्री०-ली, पतला और छोटा लकड़ी का टुकड़ा।
चइली सं० स्त्री० पतली सूखी फाँफी जो नाक के भीतर मैल या खुश्की से जम जाती है -परव, क्रि० -लिआव।
चउँक सं० पुं० चौंक, तेज़ी, वि०-हर, स्त्री०-रि, -होव,-रहव।
चउँकव क्रि० अ० चौंकना, प्रे०-काइव,-कवाइव।
चउँचिआव क्रि० अ० व्यर्थ चिल्लाते रहना, किसी पर रुष्ट होकर बोलना, ध्व० 'चेउँ (दे०) चेउँ' से।
चउँसठि वि० स्त्री० चौंसठ; वै०-चँ-,-ठ; सं० चतुः-षष्ठि।
चउआ सं० पुं० चार अंगुल की चौड़ाई; ताश की चौकी, पशु; सं० चतुष्पाद, वै०-वा, दे० चावा।
चउआई सं० स्त्री० ऐसी हवा जो चारों ओर से चले; चउ (चौ)=चार; सं० चतु:।
चउआल सं० पुं० चारों ओर की बातें, व्यर्थ की बात;-आइव,-करव,-चतुआव, वि०-ली।
चउआलिस वि० चालीस और चार।
चउक सं० पुं० चौक,-पूरव, धार्मिक कृत्यों में आटे आदि से चौक बनाना,-के क राँड़ि, विधवा जिसने पति से संयोग न किया हो।
चउकड़ी सं० स्त्री० छलाँग,-भरव, छलाँगें मारना।
चउकस वि०पुं० होशियार, तैयार भा०-ई, चउ+कस, जिसके चारों (अंग या कोने) कसे हों अर्थात् दोनों आँखें और दोनों कान सचेत हो। स्त्री०-सि।
चउका सं०पुं० चौका,-वेलना, रोटी बनाने के दोनों सामान;-देव,-लगाइव।
चउकिआ सं० पुं० एक प्रकार का सुहागा जिसे -सोहागा कहते हैं।
चउकी सं० स्त्री० चौकी, पहरा देने का स्थान; -पहरा, पहरा-,-लागव,-देव।
चउकोना वि० पुं० चौकन्ना,-होव, करव,-रहव, स्त्री०-नी, चउ+कोन, जिसके चारों कोने (दो आँखें, दोनों कान, चार अंग) खड़े या तैयार हों।
चउकोर वि० पुं० चौकोर, स्त्री०-रि।
चउखट सं० पुं० चौखट, वै०-टा,-नाघव, घर के बाहर या भीतर जाना।
चउखुटा वि० पुं० चार कोनेवाला; स्त्री०-टी चउ (चार)+खूँट कोने, जिसमें चार कोने हों: वै० -कुंठा, दे० खूँट।
चउगड़ा सं० पुं० खरगोश, चउ+गोड़, जो सभी पैरों से अर्थात् बहुत तेज़ भागे।
चउगान सं० पुं० गेंद का पुराना खेल जिसका उल्लेख कविता में प्राय: है।
चउगिर्द क्रि० वि० चारों ओर प्र०-र्दा,-र्दे, चउ+फा० गिर्द, वै० चव-।
चउगुना क्रि० वि० चौगुना स्त्री०-नी।
चउगोड़िया सं० स्त्री० किलनी (दे०) की तरह का एक छोटा जीव जिसके चार पैर होते हैं और जिसके मनुष्य के बालों में पड़ने से भावी आपत्ति की सूचना मिलती है; चउ (चार)+गोड़ (पैर)।
चउतरफा क्रि०वि० चारों ओर, चउ+फा० तरफ़।
चउतरा सं० पुं० चबूतरा स्त्री०-रिजा।
चउताल दे० चौताल।
चउथा वि० पुं० चौथा, स्त्री०-थी -थाँ, चौथी वार (जानवरों के ब्याने के लिए प्रयुक्त); उ०-बियानि अहै,-चेत गाभिनि वाय, चौथी वार ब्याई या गाभिन है।
चउथिआर सं० पुं० चौथाई का मालिक, स्त्री० -रि।
चउथी सं०पुं० चौथा भाग, वै०-था,-थाई,-थिआई।
चउदह वि० चौदह,-वाँ,-ईं, चौदहवाँ,-वीं।
चउधराना सं० पुं० चौधरी का स्वत्व, हिस्सा -आदि।
चउधरी सं० पुं० चौधरी, स्त्री०-राइन।
चउन्हिआव क्रि०अ० घबरा जाना, चौंधिया जाना, प्रे०-आइव,-वाइव,-उब, दे० चवन्हा।
चउपट वि०पुं० चौपट, नष्ट,-होव,-करव, क्रि०-टाव, भा०-टाचार।
चउपया सं० पुं० चौपाया, वै० चौपया।
चउपहल वि० पुं० चौपहल, चार किनारेवाला, स्त्री०-लि, प्र०-ला, वै०-फाल, चव-।
चउपाई सं० स्त्री० चौपाई, दोहा-।
चउपाल दे० चौपाल।
चउफेर क्रि० वि० चारों ओर, प्र०-रिआँ,-रीं।
चउबरदिआ वि० पुं० जिसमें चार बैल लगते हों, चउ+बरद (बैल), केवल 'ढेंगे' (दे० ढेंगा) के लिए प्रयुक्त।
चउबाइन सं० स्त्री० चौबे की स्त्री, वै०-नि।
चउबिस वि० चौबीस,-वाँ,-ईं, चौबीसवाँ,-वीं, सं० चतुर्विंशति।
चउबे सं० पुं० चौबे, सं० चतुर्वेदी।
चउबोला सं० पुं० एक प्रकार का छंद।
चउभरि सं०स्त्री० दाढ़ के दाँत, चउ (चार)+भरि (भरनेवाला) अर्थात् चार स्थानों के दाँत।
चउमहला सं० पुं० चार महल (जो एकत्र हों)।
चउमासा सं० पुं० बरसात का समय, एक प्रकार का गीत जिसे चौमासे में गाते है। सं० चतुर्मास।
चउमुहानी सं० स्त्री० वह स्थान जहाँ चार सड़कें मिलें या चार नदियों का संगम हो।
चउरब क्रि० स० चारों ओर से कसकर बाँध देना, प्रे०-राइव,-वाइव,-उब।
चउरहा वि०पुं० चावल वाला; स्त्री०-ही, चाउर+हा, दे० चाउर; (२) सं० पुं० चौराहा।

चउसझा सं० पुं० खेती या अन्य काम जिसमें कई लोगों का साझा हो,-करब,-रहब,-होब ।
चउहान दे० चव-।
चकई सं० स्त्री० प्रसिद्ध पक्षी,-चकवा, चकवा-, इस पक्षी का जोड़ा जो रात को बिछुड़ जाता है ।
चकचोन्ही सं० स्त्री० चकाचौंध,-लागब ।
चकडबा सं० पुं० कलह, शोरगुल,-मचब,-मचाइब ।
चकती सं०स्त्री० कपड़े का टुकड़ा जो फटे हुए भाग पर पैबंद की भाँति लगाया जाय,-लगाइब,-लागब बदरे मँ-लगाइब, दुनिया से ऊपर काम करना ।
चकत्ता सं०पुं० शरीर पर उभरा हुआ 'ददोरा' दे०, -परब ।
चकब क्रि० अ० चौंक जाना, सतर्क हो जाना, प्रे० -काइब ।
चकमा सं० पुं० धोका,-देब ।
चकरई सं० स्त्री० चौड़ाई, 'चाकर' का भा०; वै० -पन ।
चकरार वि० कुछ अधिक चौड़ा, 'चाकर' (दे०) का तु० रूप ।
चकरी सं०स्त्री० नौकरी,-करब,-देब, वै० चा-, वि० -रिहा ।
चकरिहा सं० पुं० चाकरी करनेवाला, नौकरी-पेशा ।
चकरेंठ वि० पुं० तगड़ा और चौड़ा (व्यक्ति), स्त्री०-ठि, सं०-ठा, ऐसा व्यक्ति ।
चकल्लस सं० पुं० मजा, हँसी,-करब,-होब,-रहब ।
चकला सं० पुं० रंडियों के रहने का स्थान ।
चकवड़ सं० पुं० प्रसिद्ध पौदा, सं० चक्रमर्द ।
चकवा सं० पुं० पक्षी-विशेष,-चकई, इस पक्षी का जोड़ा, रोटी के लिए बना आटे का गोला,-करब, सं० चक्रवाक ।
चकाचक सं० पुं० मज़ा, खाने का आनंद; ध्व० घी की अधिकता का मजा तथा उसकी ध्वनि, -रहब ।
चकाबूह सं० पुं० चक्रव्यूह, झगड़ा,-मचब,-मचाइब,-होब; सं० ।
चकार सं० पुं० 'च' का अक्षर, उसका उच्चारण ।
चकिआ सं०स्त्री० चक्की (जिसे हाथ से चलाते हैं), -चलब,-चलाइब,-यस, मोटी और चौड़ी (स्त्री), वै०-या ।
चकित वि० घबराया हुआ, आश्चर्य में पड़ा;-होब, -करब, प्र० छकित; सं० चक से (चकित) ।
चकोर सं० पुं० प्रसिद्ध पक्षी, स्त्री०-री, सं० ।
चकौआ सं० पुं० चकवा का घृ० तथा स्नेहात्मक रूप, स्त्री०-कैया, गीतों में प्रयुक्त ।
चक्कर सं० पुं० चक्र,-करब,-काटब,-मारब,-लगाइब ।
चक्का सं० पुं० बड़ा पहिया ।
चक्की सं० स्त्री० चक्की, वै०-किआ ।
चक्कू सं० पुं० चाकू,-मारब,-चलब,-चलाइब ।
चखनब क्रि०स० पोत देना, प्रे०-वाइब,-उब,-नवाइब,-उब ।
चखनाचूर सं० वि० छोटे छोटे टुकड़े, टूटा,-होब, -करब, वै०-क-।
चखब दे० चींखब ।
चगड वि० पुं० चालाक, प्र०-गगड,-धड,-ग्घड; भा०-ई,-पन ।
चड्डुल सं० पुं० चंगुल ।
चडेरा सं० पुं० मूँज का बना सुंदर छोटा टोकरा, स्त्री०-री,-रिआ ।
चचरा सं० पुं० पानी सूखने के बाद मिट्टी पर फटा हुआ दरारा,-परब,-फाटब, क्रि०-रिआब, वै० चँ-।
चचा सं० पुं० चाचा, दे० काका, स्त्री०-ची, फ़ा० ।
चचिआ-ससुर सं० पुं० स्त्री का चाचा, स्त्री० -सासु ।
चटकन सं० पुं० चपत, वै०-ना, क्रि०-निआइब ।
चटकब क्रि० अ० चटकना (व्यक्ति का), सूख जाना (खेत का), प्रे०-काइब,-कवाइब, सिंचाई करके गोड़ने के पहले सूखने देना (प्रायः गन्ने के खेत को) ।
चटाइब क्रि० स० चटाना, प्रे०-टवाइब, वै०-उब; भा०-ई ।
चटाई दे० गोनरी ।
चटोर वि० जो बार-बार खाता रहे, लालची; जिभ , जिसकी जीभ सब कुछ खाना चाहती हो, भा०-पन,-ई ।
चट्टपट्ट सं०पुं० क्षण,-मँ, तुरंत, प्र०-ट्टा-पट्टा मँ,-ट्टें, -ट्टेंहँ, तुरंत ही, दे० पट्टें, क्रि० वि० जैसा प्रयुक्त ।
चट्टी सं० स्त्री० चप्पल ।
चट्टू वि० चाटनेवाला या वाली, दूसरे के यहाँ मुफ्त खाने का आदी व्यक्ति ।
चट्टे क्रि० वि० तुरंत; प्र०-हँ,-हि ।
चढ़ब क्रि० स० चढ़ना, प्रे०-ढ़ाइब,-ढ़वाइब, भा० -ढ़ाई,-ढ़ावा (पूजा में आया सामान, द्रव्य आदि) ।
चणानी सं० स्त्री० नये कुएँ की दीवार को नीचे गलाने की क्रिया,-होब,-करब, दे० चाणब ।
चणुला दे०-डुला ।
चतुर वि० पुं० होशियार, स्त्री०-रि, भा०-पन,-ई, प्र०-त्तुर, स० ।
चत्तुर वि० पुं० चालाक, स्त्री०-रि, भा० ई, सं० चतुर जिससे अर्थपरिवर्तन हुआ है ।
चथरा सं० पुं० टुकड़ा, किसी फल आदि का फूटा भाग,-होब,-करब,-क्रि०-ब, चि-रिआब, फूट जाना (पके फल आदि का), शा० 'छितराव' का एक रूप ।
चथरिआइब क्रि० स० फोड़ देना, टुकड़े कर देना ।
चद्दर सं० पुं० स्त्री० चादर, प्र०-दरा, वै०-रि, चादरि, चादरा (बहुत बड़ा चद्दर), कबीर-"झीनी-झीनी बीनी चादरिया ।"
चनगा सं० पुं० एक प्रकार की मछली ।

चनरमा सं० पुं० चंद्रमा, चाँदी या सोने का छोटा चंद्राकार गहना जो ग्रह-शांति के लिए पहना जाता है। सं०।

चनवा सं०पुं० स्त्रियों का एक आभूषण जो चंद्राकार रत्नजटित होता है और मत्थे के ऊपर पहना जाता है। सं० चंद्र+वा (अवा प्रत्यय जो प्रायः पुं० शब्दों में लगता है)।

चना सं० पुं० प्रसिद्ध अन्न,-भर, थोड़ा सा, सं० चणक।

चनिश्रा सं० स्त्री० छोटी सी झील जिसमें कभी-कभी खेती की जाती है। वै०-या।

चनिहा वि० पुं० चाँदीवाला; चाँदी मिला हुआ; स्त्री०-ही।

चनुला वि० पुं० चंडूल; दे० चँडुला।

चन्नर सं० पुं० मृत्यु के समय की अवस्था,-लागव, मृत्यु संनिकट होना· सं० चंद्र।

चन्ना-माई स्त्री० चंद्रमा; छोटे-छोटे बच्चे या माताएँ चंद्रमा को इसी तरह संबोधित करते हैं। लोरी-"चन्ना माई चन्ना माई, धाय आव धपाय आव।"

चन्नू-चेहरा सं० पुं० छोटी-छोटी चिड़ियाँ जो बहुत शोर करती हैं।

चपटव क्रि० अ० दे० छुपटव।

चपर-चट्ट वि० निर्जन, सूना लंबा-चौड़ा (मैदान), -ट्टे, निर्जन स्थान में।

चपरहा वि० पुं० अभागा स्त्री०-ही।

चप्पर वि० पुं० चपल, स्त्री०-रि· दीदा क-गुस्ताख, भा०-ई, सं०।

चफइल वि० पुं० लंबा-चौड़ा (मैदान), शा० 'फइल' (दे०) का विकृत रूप।

चबइनी सं० स्त्री० 'चबैना' के स्थान में दिया हुआ नकद-देव,-लेव, दे० चबयना· वै०-चयनी, -बै-; सं० चर्व (चबाना)।

चबयना सं० पुं० चबाने का अन्न, भुना चना, चावल आदि सं० चर्व; दे० चेबाव; वै०-वैना।

चबरा सं० पुं० चपत, तमाचा, क्रि०-रिआइव -मारब।

चबरिआइव· क्रि० स० तमाचे लगाना, खूब मारना; वै०-उब।

चबवाइव क्रि० स० चबाने को देना, (कोल्हू में गन्ना) लगाना पेरने को देना, वै०-उब, भा०-ई।

चबाव क्रि० स० चबाना काट लेना· सं० चर्व।

चबुआव क्रि० अ० डाँटना, घुड़कना; स० फटकारना।

चबुरी सं० स्त्री० क्रोध की मुद्रा, मुँह को ज़ोर से बंद करने की मुद्रा,-बान्हव, ऐसी मुद्रा बनाना।

चभकव क्रि० स० चभकना; प्रे०-काइव,-उव, -कवाइव।

चभक्का सं० पुं० चभकने की क्रिया -मारव, मज़ा लेना, दूर जाना या चमकना।

चभोरव क्रि० स० (घी, पानी तथा तेल में) भली भाँति भिगो देना, प्रे०-राइव,-उब।

चभ्भ सं० पुं० पानी या कीचड़ में गिरने का शब्द, -सें,-दें; ध्व०।

चमइनिहा वि० पुं० चमाइन रखनेवाला, स्त्री० -ही, चमाइन (दे०)+हा।

चमउधा दे० मौधा।

चमकटिया सं० पुं० चमार, चमड़ा काटनेवाला चम+कटिया; सं० चर्म, व्यं०एवं गाली, नीच, दुष्ट।

चमकन वि० पुं० शौकीन जो अपने कपड़े लत्तों को बहुत झाड़-पोंछकर रखे, स्त्री०-नि, '-व' से (चमकनेवाला)।

चमकव क्रि० अ० चमकना मुँह बनाकर किसी को छेड़ना प्रे०-काइव,-उव।

चमगादुर सं० पुं० चमगीदड़; वि० जो दोनों ओर रहे; औ० गेदुर, वा० चमगी-।

चमचम क्रि० वि० चमक के साथ प्र०-मा-,-म्म, क्रि०-माव, प्रे०-माइव।

चमचा दे० चि-।

चमड़ा सं० पुं० चर्म -उतारव, खूब पीटना, स्त्री० -ड़ी, सं० चर्म, फ़ा० चरम।

चमतकार सं०पुं० अद्भुत कार्य, वि०-री, अद्भुत, विचित्र कार्य करनेवाला, सं०-त्कार।

चमन वि० साफ सुथरा; फ़ा० चमन, उपवन।

चम्म सं० पुं० झट,-सें, तुरंत।

चमरई सं० स्त्री० नीचता, दुष्टता;-करव, 'चमार' (दे०) का भा०, चमार+ई, सं० चर्म+कार (चमार)।

चमरउधा वि० चमारोंवाला (जूता), जिसमें नर्मी न हो, कड़ा, देहाती, चमार+धा (बीच में 'चमरऊ' का ऊ ह्रस्व हो गया है)।

चमरउटी सं० स्त्री० चमारों के रहने का मुहल्ला, गाँव का पिछला भाग।

चमरऊ वि० चमारों का सा, चमारोंवाला, चमार+ऊ, प्र०-उआ।

चमरकट वि० दुष्ट· प्र०-ट्ट, प्राय· गाली या डाँट-फटकार में प्रयुक्त-"दु-या हत-", भा०-ई।

चमरटोला सं० पुं० चमारों का मुहल्ला, स्त्री० -ली,-लिया।

चमरपन सं० पुं० चमार सा व्यवहार,-करव,होव।

चमरसउँच सं० पुं० झमेला,-होव, चमार+सउँच (दे०, शौच) अर्थात् चमारों के शुद्ध होने की (विलंबवाली) क्रिया।

चमसुर सं० पुं० एक बीज जो बच्चों को दूध में घोंटकर पिलाया जाता है।

चमाइनि सं० स्त्री० चमार की स्त्री, फूहड़ और गंदी स्त्री; वि० चमइनिहा (दे०)।

चमाचम वि० पुं० चमकनेवाला, क्रि० वि० चमक के साथ, प्र०-म्म।

चमार सं० पुं० निम्न श्रेणी का व्यक्ति, वि० नीच, भा०-री, चमरई, चमरपन, स्त्री०-इन,-नि ।
चमूना वि० वना-ठना, शौक़ीन ।
चमेली सं० स्त्री० एक प्रकार का फूल, उसका पेड़, यह प्राय. स्त्रियों का नाम भी होता है ।
चमोटब क्रि० स० उँगलियों से चमड़े को पकड़कर नोच लेना, भा०-टा, सं० चर्म ।
चमौधा सं० पुं० चमडे का थैला, वि० देशी चमड़े का या विना सीझे चमड़े का (जूता), वै० उधा, सं० चर्म ।
चय संबो० हाथी को आगे बढ़ाने के लिए कहा गया शब्द जो महावत प्रायः प्रयोग करता है। दूसरे शब्द हैं "धत" "मलि" (दे०) वै० चै, चइ ।
चरकट वि० पु० दुष्ट, नीच, चर (चारा)+कट (काटनेवाला), आवारा, भा०-ई, वै०-हा, चोर ।
चरकहा वि० पुं० चरका देनेवाला, स्त्री०-री ।
चरका सं० पु० धोखा,-देब, वि० कहा ।
चरखा सं० पु० कातने का पुराना औज़ार,-कातव, -कताइब ।
चरखी सं० स्त्री० लक्डी या लोहे की बनी कुएँ में लगी पानी भरने की मशीन, आतशबाज़ी में चक्कर करनेवाली चीज, शा० फा० चर्ख़ (आकाश) से (गोल या चलनेवाला के अर्थ में) ।
चरचा सं० स्त्री० उल्लेख, वात,-करव,-चलव, -चलाइव,-होव ।
चरनी सं० जानवरों के खाने का स्थान जिसमें हौदी (दे०) आदि लगी हो, वै०-न्नी, 'चरब' से (चरने या खाने का स्थान) ।
चरफर वि० पु० तेज़, स्त्री०-रि, भा०-ई ।
चरव क्रि० अ० स० चरना, घास खाना, प्रे०-राइब, -उब, भा०-राई, चरहा ।
चरवाँक वि० पुं० चालाक, स्त्री०-कि, शा० स० 'चार्वाक' से ।
चरबियाव क्रि० अ० मोटा हो जाना, गर्व करना, 'चरबी' (दे०) से०, वै०-आब ।
चरबी सं० स्त्री० चर्वी,-चढ़व, गर्व होना, क्रि० -बियाब,-आव, वि०-बिहा,-ही ।
चरमर सं० पुं० 'चरमर' का शब्द, प्र०-र्र-र्र, क्रि० -राव, ऐसा शब्द करना, पु०-रर-रर, ध्व० ।
चरर सं० पुं० 'चर्र-चर्र' शब्द, प्राय 'चरर-चरर' अथवा 'चरर-मरर' रूप में ।
चराइव क्रि० स० चराना, प्रे०-रवाइव,-उव, भा० -ई,-रवाई ।
चरवाह सं० पुं० चरानेवाला, चरवाहा, भा०-ही, चराने की मज़दूरी, क्रिया आदि ।
चरसा सं०पु०पानी निकालने का चमड़े का वर्तन ।
चरहा सं० पुं० चरने की घास की अधिकता,-लागव, 'चरब' से ।
चराई सं० स्त्री० चराने की क्रिया, मज़दूरी आदि, दे० चरवाही ।
चरी सं० स्त्री० एक नाज, उसका पेड, दाना आदि जिसे प्रायः जानवरों को खिलाते हैं और कहीं-कहीं 'जोन्हरी' कहते हैं। वि०-रिहा, (खेत) जिसमें चरी बोई हो ।
चरांव क्रि० अ० विना पानी या तेल के बाल अथवा खाल का खुरखुरा हो जाना ।
चलइआ वि० चलनेवाला, चलने (दे० चलव) वाला, वै०-वै-, लै-।
चलकई सं० स्त्री० चालाकी,-करव, दे० चलाँक, वै०-लँ-।
चलचलू वि० चलने के लिए तैयार ।
चलता वि०पुं० चलनेवाला, निभानेवाला, किसी प्रकार काम चलानेवाला, चालाक, स्त्री० ती; कबीर- "चलती चक्की देखिकै दीन कबीरा रोय" ।
चलनी सं० स्त्री० (आटा आदि) चालने की छेद-वाली डलिया, पुं०-ना ।
चलब क्रि० अ० चलना, प्रे०-लाइव,-उव,-वाइव, -उब, प्र०-वै, सं० चल ।
चलाँक वि० पुं० चालाक, स्त्री०-कि, भा०-की, -लकई,-लँ-।
चलाइव क्रि० स० चलाना, डालना (पशुओं का 'कोयर' दे०), प्रे०-लवाइव ।
चलाई सं० स्त्री० चलने की क्रिया या मिहनत, -करब, चलने में परिश्रम करना, चालने की क्रिया, मज़दूरी आदि ।
चलाउब क्रि० स० दे० चलव ।
चलान सं० स्त्री० माल या रुपये की आमदनी, -आइव,-जाव, वै०-नि,-करव,-होव, पुलिस द्वारा पकड़े जाने की कार्रवाई करना या होना। वि०-नी, चलनिहा ।
चलावा सं० पुं० व्यवहार, आचरण, वर्ताव, 'चलब' किया से ।
चलिसवाँ वि० पुं० चालीसवाँ, स्त्री०-ईं ।
चली-चला सं० स्त्री० चलने की तैयारी, जल्दी आदि, व्यं०मृत्यु की निकटता, वै० चला-चली ।
चलौनी सं० स्त्री० चवेना भूनते समय उसे चलाने के लिए पतली लकड़ियों का एक समूह, पुं०-ना, वै०-लउनी ।
चवँरि सं० स्त्री० चँवरी,-डोलाइव, चवँरी हाँकना, -डुरव, चवँरी चलना, सं० चामर ।
चवँसठि वि० चौंसठ, वै० चउँ-, सं० चतु.षष्ठि ।
चवहान सं० पुं० चौहान राजपूत, वै० चउ-, भा० -हनई,-पन ।
चवकसई सं० स्त्री० चौक्सी, वै०-उ ।
चवखट दे० चउखट, अनेक शब्द जिनका उच्चारण "चउ ..." होता है विकल्प में "चव .." बोले जाते है ।
चवगिद दे० चउ- ।

चवन्नी सं० स्त्री० चार आने का सिक्का या मूल्य; वि०-न्निहा,-ही।
चवपरतब क्रि० स० चार परत करना, प्रे०-ताइब, -तवाइब वै०-उ…,चौ…; चउ+परत।
चवफाल वि० पुं० जिसके चार किनारे हों. वै० -उ- स्त्री०-लि चव (चार)+फाल (फल दे०). दे० चउपहल।
चवफेर क्रि० वि० चारों ओर, वै०-उ-दे०।
चवमासा दे० चउ-।
चवरंगी वि० अनेक रंगवाला, जिसका कुछ पता न चले: चव (चार)+रंग+इन् प्रत्यय. भा० -रंग, षड्यंत्र,-करब।
चवराई सं० स्त्री० एक प्रकार का साग, चवलाई: वै०-अँ-।
चवरानवे वि० चौरानवे।
चवरासी वि० चौरासी लख-, ८४ लाख योनि।
चवाई वि० चुगुलख़ोर, बातूनी, झूठा।
चसका सं० पुं० शौक़, व्यसन -परब,-होब।
चसपा वि० चिपका हुआ,-करब,-होब, प्राय: समन के लिए प्रयुक्त वै०-पाँ।
चसम सं० स्त्री० आँख,-सें, स्वयं अपनी आँखों से; अपनी-, स्वयं, फ़ा० चश्म, आँख।
चसमा सं० पुं० चश्मा-देब,-लगाइब।
चहँटा सं० पुं० कीचड़-करब,-लागब, क्रि०-टिआइब, कीचड़ में चलना गिराकर मार देना।
चहँटब क्रि० स० दबा देना, पटककर मारना ख़ूब मारना।
चह सं० पुं० लकड़ी का बना पुल।
चहक वि० पुं० चमकीले रंग का, स्त्री०-कि।
चहकब क्रि० अ० ख़ूब बातें करना गर्व भरी बातें करना: प्रे०-काइब, वि०-कन, ऐसी बातें करनेवाला; स्त्री०-नि: प्रे०-काइब,-उब।
चहचहाव क्रि० अ० चिड़ियों की भाँति बोलना. 'चहचह' करना. बहुत और जल्दी-जल्दी बोलना।
चहबच्चा सं० पुं० छोटा सा कुँआ या तहख़ाना-भण्डार- फ़ा० चाह (कुँआ)+बच्चा, कुएँ का बच्चा या छोटा कुँआ।
चहरी दे० चेहरी।
चहला सं० पुं० गहरा कीचड -करब,-होब।
चहलुम सं० पुं० प्रसिद्ध मुसलिम त्योहार, अर० चेहल्लुम (चालीसवाँ)।
चहारुम सं० पुं० चौथा या चौथाई भाग- ज़मींदार का वह अधिकार जो आसामी द्वारा लगाये पेड़ों, उनके फलों आदि पर होता था। फ़ा०।
चहुआ सं० पुं० हिम्मत, उपाय, षड्यंत्र-चलब, सफलता मिलना।
चहटब क्रि० स० घेर कर दबा लेना, पराजित कर लेना प्रे०-टवाइब,-उब।
चाँडब दे० चापब, चणनी।
चाँपब क्रि० स० दबा देना, पटक देना, व्यं० ख़ूब खाना; प्रे० चँपाइब, चँपवाइब,-उब; सं० 'चाप' से।
चाइनि सं० स्त्री० चाई की स्त्री।
चाई सं० पुं० मछली पकड़ने और नाव चलानेवाली एक जाति के पुरुष स्त्री०-इनि।
चाउर सं० पुं० चावल वि० चउरहा,-ही।
चाक सं० पुं० मिट्टी का गोल बड़ा थाल जिस पर गर्म गुड़ फैलाकर भेली बनाते हैं;कुम्हार का चाक।
चाकर सं० पुं० नौकर, भा०-री, चकरी, नोकर-, भृत्यवर्ग, नोकरी-चाकरी, कोई काम।
चाकर वि० पुं० चौड़ा, स्त्री०-रि: भा० चकराई, -रई,-पन, वै०-ल।
चाकी सं० स्त्री० बिजली,-परै, बिजली गिरे,-मारै, शाप देने के शब्द; चकिया।
चाकू सं० पुं० चक्कू।
चाखब क्रि० स० चखना. प्रे० चखाइब, चखवाइब, -उब।
चाट सं० स्त्री० आदत, व्यसन,-परब,-लागब।
चाटब क्रि० स० चाटना, इधर-उधर खाते रहना, प्रे० चटाइब, चटवाइब,-उब।
चाटा सं० पुं तमाचा; वै० चाँ-।
चाढ़ सं० पुं० इमारत बनाते समय काम करने के लिए लकड़ी का मचान;-चान्हब।
चाणब क्रि० स० कुएँ की दीवार को गलाना, मु० ख़ूब खाना, मुफ़्त खाना, दे० चणनी, प्रे० चणाइब,-उब।
चादरि सं० स्त्री० चद्दर, क०-"झीनी-झीनी बीनी चादरिया", पुं० चादरा।
चानमारी सं० स्त्री० चाँदमारी,-करब,-होब।
चाना वि० पुं० जिसके मत्थे पर सफ़ेद बाल हों (प्राय: भैंसा); स्त्री०-नी।
चानी सं० स्त्री० चाँदी,-होब, मज़ा होना;-सोना, सोना-;सं० चंद्रिका।
चाप सं० पुं० धनुष,-चढाइब, निर्दयता करना, कठोर होना, यह शब्द इसी मुहावरे में बोला जाता है, अलग नहीं, सं०, वै० चाँप।
चापर वि० पुं० नष्ट, स्त्री०-रि,-करब,-होब, दे० चपरहा।
चाबस वि० बो० शाबास! वै०-सि।
चाबुक सं० पुं० कोड़ा; फ़ा०।
चाभब क्रि० स० चाभना, ख़ूब खाना, मुफ़्त खाना, प्रे० चभवाइब,-उब।
चाभी सं० स्त्री० कुंजी;-लगाइब,-देब, मु० भेद, रहस्य, प्रभाव, अधिकार।
चाम सं० पुं० चमड़ा; सं० चर्म, फ़ा० चरम।
चाय दे० चाह।
चारा सं० पुं० पशुओं का भोजन, दाना-, कुछ भोजन;-करब,-होब।
चारि वि० चार, प्र०-उ,-रइ,-रउ,-रिहि,-रिउ, सं० चत्वारि; दुइ-,-पाँच,-छ, थोड़े से।

चारौ वि० चारों; चारि का प्र० रूप 'चारउ'।
चाल सं० स्त्री० चाल, वै०-लि,कु-चलब,-चूल (करब), चालाकी (करना)।
चालब क्रि०स० चालना (आटा आदि), दीवार या भूमि आदि में छेद करना; प्रे० चलवाइब,-उब।
चालिस वि० चालीस, सं० चत्वारिंश, प्र० चलिसौ, -सै।
चालु दे० चाल।
चाव सं० पुं०-शौक़।
चावा सं० पुं० चार अंगुल का नाप, यक-, दुइ-।
चिआँ सं० पुं० इमली का बीज,-यस, छोटा, वै० -याँ, प्र० ची-।
चासनी सं० स्त्री० चाशनी;-उठाइब,-लेब।
चाह सं० स्त्री० चाय।
चाहब क्रि० स० चाहना।
चाहुति सं० स्त्री० आवश्यकता, प्रेम,-होब,-रहब, -करब।
चिउरा सं०पु० चिवड़ा,-दहिउ, दही एवं चूड़ा जो एक में मिलाकर प्रायः पूरब में खाया जाता है, दहिउ-।
चिक्चिक सं० पुं० चिक-चिक का शब्द,-करब, व्यर्थ बकना।
चिकना वि० पुं० जो सुंदर कपड़े लत्ते या भोजन पसंद करता हो, स्त्री०-नी।
चिकवा सं० पुं० चींक, बकरा काटनेवाला, स्त्री० -इन,-नि।
चिकारा सं० पु० सारंगी की भांति का एक छोटा बाजा, तु०ज़ोर की आवाज़-"परेउ भूमि करि घोर चिकारा", सं० चीत्कार।
चिकन स० पुं० एक सुंदर कपड़ा जो पुराने लोग बहुत व्यवहार में लाते थे।
चिकिन सं० स्त्री० जाँच पड़ताल,-होब,-करब, अं० चेकिंग।
चिकिर-पिकिर सं० पुं० आपत्ति,-करब।
चिकोटब क्रि० अ० चिकोटी (दे०) काटना, दो उँगलियों से पकड़कर नोचना।
चिकोटी सं० स्त्री० दो उँगलियों से पकड़कर नोचने की क्रिया,-काटब, पुं०-टा।
चिक्क सं० पुं० चेक, परदेवाला चिक, अं०।
चिक्कन वि० पुं० चिकना, साफ़;-करब,-होब, नष्ट करना या होना, भा० चिकनई,-पन,-वट, सं०।
चिखना सं० पुं० चीखने या स्वाद लेने की क्रिया, दे० चींखब, वै० चि-,-चीखब, स्वाद लेना, चिखाइब।
चिखाई सं० स्त्री० चींखने की पद्धति, परम्परा या निरंतर क्रिया।
चिंखुरब क्रि० स० एक-एक करके उखाड़ना (घास आदि), प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब,-उब।
चिंखुरवाई सं० स्त्री० चिखुरने की क्रिया या उसकी मज़दूरी आदि।
चिंगना दे० चिल्ना।
चिंगुरा सं० पुं० किसी अंग की नस के अकड़ने की क्रिया,-लागब, क्रि०-रब (बहुत कम प्रयुक्त); वै०-हुरा।
चिघरब क्रि० अ० चिल्लाना, व्यर्थ का शोर करना, प्रे०-रवाइब,-उब; भा०-वाई, सं० चीत्कार।
चिङना संबो० छोटे-छोटे बच्चों या प्रेम पूर्वक अपने से छोटों को संबोधित करने का शब्द जिसे प्रायः वृद्ध लोग प्रयुक्त करते हैं और उनमें भी अधिकतर स्त्रियाँ। उ० अरे '',नाहीं ',मोर''', फ़ा० चिगनान (?), सिरके बालों का समूह, अं० चिकाबिडी, बच्चों के लिए स्नेह का शब्द।
चिचिआब क्रि० अ० चिल्लाना, 'ची-ची' करना, प्रे०-वाइब, ध्व०।
चिचोरब क्रि० स० (किसी सूखी वस्तु को) दाँत से काटना, परिश्रमपूर्वक अथवा निरर्थक काटना, प्रे०-रवाइब।
चिजुनि सं०स्त्री० बच्चों द्वारा प्रयुक्त शब्द जो 'चीज़' के स्थान में आता है; उन्हें खुश करने के लिए इसे बड़े लोग भी बोलते हैं, प्र०-ज्जुनि, ची-।
चिटकन वि० पुं० जो शीघ्र रुष्ट हो जाय, स्त्री० -नि, दे० चिटकब।
चिटकब क्रि० अ० चिटकना, फटना (बीज आदि का), रुष्ट होना, प्रे०-काइब,-उब, पूर्व० में 'चिटिकि' हो जाता है।
चिट्टा सं० पुं० उत्तेजना,-देब,-झारब, झगड़ा लगाना।
चिट्ठा सं० पुं० रसद पानेवालों की सूची जो बारात आदि में तैयार होती है,-देब,-बाँटब; अं० चिट।
चिट्ठी सं०स्त्री० पत्र,-पत्री, रुक्का, तु० अं० चिट।
चित सं० पुं० चित्त,-लगाइब,-देब मन-, पूरा मन, -से उतरब,-पर चढ़ब।
चितइब क्रि० अ० देखना, ताकना, वै०-उब, प्रे० -वाइब।
चितकाबर वि० पुं० चितकबरा, स्त्री०-रि।
चित्त वि० जिसका मुँह ऊपर हो और जो पीठ के बल पड़ा हो; प्र०-त्तै, इसका उलटा 'पुट्ट' है।
चित्ती सं० स्त्री० गोल-गोल दाग़ या निशान, -परब; पं० चिट्टा (सफ़ेद)।
चिथरा सं० पुं० चीथड़ा, क्रि०-ब, फट जाना, चिथड़े-चिथड़े हो जाना।
चिदुरब क्रि०अ०फैल जाना, प्रे०-दोरब (मुँह आदि अंगों का), सं० दर, फ़ा० दराज़ (चौड़ा)।
चिदोरब क्रि० स० फैलाना (लाचारी अथवा लज्जा से मुँह का), मुँह, ओंठ-।
चिनकब क्रि० अ० ज़रा सा शोर करना,-मिनकब, आहट करना।
चिनगा सं० स्त्री० खराब भेली या गुड़ जो चिप-चिप करे, क्रि०-गाब, गुड़ का ऐसा हो जाना, सं० छिन्न ?

चिनिआव क्रि० अ० किसी काम के करने में नखरे करना; वै० चीनी होब; चीनी की भाँति दुष्प्राप्य होने की कोशिश करना ?

चिनिहा वि० पुं० चीनीवाला, स्त्री०-ही, यह शब्द चीनीवाले वर्त्तन, वोरे अथवा चीनी के शौक़ीन व्यक्तियों के लिए आता है।

चिन्हाइव क्रि० स० परिचय कराना, अपने दुर्गुणों का परिचय देना, वै०-उव।

चिन्हार सं० पुं० परिचित, स्त्री०-रि; भा०-न्हरई, -पन।

चिपरी सं० स्त्री० गोवर की पतली उपरी (दे०), -होव, दब जाना।

चिप्पड सं० पुं० बडा सा चीपा (दे०)।

चिबिलपन सं०पुं०चिबिल्ले का स्वभाव, वै०-ल्लई,-ल्ल-।

चिबिल्ला वि० पुं० जिसका व्यवहार बच्चो सा हो; स्त्री०-ल्ली।

चिमचा सं० पुं० चम्मच।

चिमरई सं० स्त्री० मज़बूती, चीमर (दे०) होने का गुण, वै०-पन।

चिमराव क्रि० अ० चीमर हो जाना, पुष्ट होना।

चिरई सं० स्त्री० चिड़िया, प्रिया, उ० अरे मोरि चिरई !

चिरुआ सं० पुं० चुल्लू, यक-,दुइ-,वै० च-।

चिरकुट सं० पुं० चीथडा; छोटा फटा कपडा।

चिरउरी सं० स्त्री० प्रार्थना,-मिनती, अभ्यर्थना, -करव।

चिराहिन वि० बाल के जलने की सी (बू); -आइव।

चिरुआ वि० पुं० चीरा हुआ (लकडी का टुकडा), विशेषकर यह 'कोरो' (दे०) के लिए आता है।

चिलबिल सं० पुं० एक जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत हल्की होती है।

चिलमि सं० स्त्री० चिलम, कहा० धन नाते हुक्का पोसाक नाते चिलमि।

चिलरहा वि० पुं० जिसमें चीलर (दे०) हों, स्त्री० -ही।

चिल्लहटि सं० स्त्री० बराबर चिल्लाते रहने की क्रिया;-परव।

चिल्लाब क्रि० अ० चिल्लाना, प्रे०-ल्लवाइव,-उव।

चिहराव क्रि० अ० जरा सा फट जाना (ठोस वस्तु का), बीच से कुछ फटना, प्रे०-वराइव, तु० चियराव।

चीक सं० पुं० वकरा काटने व उसका मांस वेचनेवाला, वै० चिकवा, स्त्री०-किनि।

चीकट वि० पुं० बहुत मैला, स्त्री०-टि, क्रि० चिकटाव।

चीखव क्रि० स० स्वाद लेना, प्रे० चिखाइव, -उव।

चीजु सं० स्त्री० चीज; वै०-जि, दे० चिजुनि; प्र० ?नि, चिज्जुनि; बच्चों द्वारा मक्त।

चीठी सं० स्त्री० चिट्ठी।

चीतरि सं० स्त्री० पतला विषैला साँप जो चितकवरा होता है, 'चित्ती' से (जिस पर चित्ती हो)।

चीनी सं० स्त्री० शक्कर, मु०-होव, अकड़ना; क्रि० चिनिआव (चीनी होव के अर्थ में)।

चीन्ह सं० पुं० चिन्ह, उपहार;-परिचै, जान-पहचान,-करव,-होव; वि० चिन्हार (दे०)।

चीन्हव क्रि० स० पहिचानना, प्रे० चिन्हाइव,-उव, -न्हवाइव,-उव, सं० चि।

चीन्हा सं० पुं० रेखा, निशान,-करव,-पारव, -खींचव सं० चिह्न।

चीपा सं० पुं० मिट्टी आदि का बड़ा ढला; तु० अं० चिप (छोटा टुकडा), हिं० चिप्पी, सं० क्षिप् (जो फेंका जाय)।

चीपी सं० स्त्री० महुए के भीतर की गुठली।

चीमर वि० पुं० पुष्ट; दुवला-पतला पर न टूटने, -फूटनेवाला, स्त्री०-रि, भा० चिमरई,-पन।

चीरव क्रि० स० चीडना,-फारव, प्रे० चिराइव, -उव,-रवाइव,-उव, भा० चिराई।

चीरा सं० पुं० चीडने का निशान;-देब, चीड देना; दे०छीरा।

चीरौ क्रि० चीडो,-त रकत नाहीं, यह मु०उस समय प्रयुक्त होता है जब किसी की अधिक घवराहट का वर्णन करते हैं।

चीलर सं० पुं० सफेद मोटे-मोटे जूँ जो प्राय: कपडों या गंदे वालों में पडते हैं।

चील्हि सं० स्त्री० चील, यह शब्द प्रायः देहात में छोटी लडकियों के लिए भी प्रयुक्त होता है। नीची जाति की स्त्रियों के नाम भी 'चील्हा' आदि होते हैं।

चुँगुल सं० पुं० जो चुँगली या पीठ पीछे बुराई करे भा०-ली; वै०-ढुल,-लागव।

चुअब क्रि० अ० चूना, गिरना, प्रे०-आइव, -वाइव।

चुकब क्रि० अ० चुकना, समाप्त होना, प्रे०-काइव।

चुकाइव क्रि० स० चुकाना, प्रे०-कवाइव, -उव।

चुक्क वि० बहुत खट्टा; प्राय: "अमिल (दे०) चुक्क" बोलते हैं; सं० चुष् से (अर्थात् जो चूसने में खट्टा हो)।

चुका-पुक्का वि० समाप्त,-होव, प्रायः यह शब्द छोटे बच्चे किसी वस्तु को खा चुकने पर हथेली वजाकर कहते हैं। 'चुकब' से।

चुचकब क्रि० अ० (हरे फल का) पिचककर सूखना, प्रे०-काइव; सं०-काली, चुसकाली, ऐसा सूखा आम।

चुचकारब क्रि० स० पुचकारना।

चुचकाली सं० स्त्री० आम जो डाल में ही सूख गया हो; दे० 'चुचकब'।

चुटकी सं० स्त्री० दो उँगलियों के बीच की पकड़, -भर, थोडा सा।
चुतरी सं० स्त्री० चूतरों पर पडी चर्बी या मुटाई, -परब।
चुनउटी सं० स्त्री० चूना रखने की डिबिया।
चुनचुनाब क्रि० अ० चींटी काटने या मिर्च लगने का सा अनुभव होना।
चुनब क्रि० स० चुनना, प्रे०-नाइब,-उब,-वाइब, -उब।
चुनरी सं० स्त्री० ब्याह में पहननेवाली रंगीन साड़ी जो दुलहिन धारण करती है। कबी० "नैहरे म धुमिल भई मोरि. ।"
चुनहा वि० पुं० चूनेवाला; स्त्री०-ही।
चुनाई सं० स्त्री० चुनने की क्रिया, मज़दूरी आदि, प्रे०-वाई, सं० ची।
चुनाव सं० पुं० चुनने का ढङ्ग, क्रम आदि, सं० ची।
चुनौटी सं० स्त्री० चूना रखने की डिबिया।
चुन्नट सं० पुं० चुना हुआ भाग (कपडे आदि का)।
चुप वि० शांत, क्रि०-पाब, प्रे०-वाइब, चुप होना या करना। प्र०-प्पै,-प्प।
चुप्पा वि० पुं० जो कम बोले और अपने विचारों को छिपावे, स्त्री०-प्पी।
चुप्पी सं० स्त्री० चुप रहने का क्रम,-साधब।
चुप्पे क्रि० वि० बिना किसी को बतलाये, गुप्त रूप से।
चुबुराब क्रि० स० मुँह में रखकर धीरे-धीरे चाभते रहना, प्रे०-राइब।
चुभुर-चुभुर क्रि० वि० मुँह में किसी द्रव पदार्थ के "चुभुर-चुभुर" शब्द करके पीने के लिए यह क्रि० वि० आता है।
चुमकारब क्रि० स० प्यार से बुलाना, सं० चुंब + कृ।
चुम्मब क्रि० स० चूमना,-चाटब, प्यार करना, प्रे० -माइब,-उब, सं० चुंब।
चुम्मा सं० पुं० चुंबन, स्त्री०-म्मी;-देब,-लेब; स० चुंबन।
चुरइब क्रि० स० पकाना, प्रे०-वाइब,-उब, वै० -उब।
चुरइलि सं० स्त्री० चुडैल, झगरालू स्त्री।
चुरकी सं० स्त्री० चोटी (पुरुष की),-राखब,-रखाइब,-वान्हब, सं० चूडिका।
चुरखुनी सं० स्त्री० छोटे-छोटे टुकडे,-करब,-होब, दे० चूर + खूनब, पुं०-ना (खूने हुए छोटे टुकड़े)।
चुर-चुर वि० खस्ता, जो खाने में "चुर-चुर" शब्द करे, क्रि०-राव, स्त्री०-रि।
चुरब क्रि० अ० पकना, प्रे०-इब (दे०)।
चुराई सं० स्त्री० चुरने या पकने की क्रिया, प्रे० -वाई।

चुरिआव क्रि० अ० ऊपर तक भर जाना, प्रे०-इब, -उब, सं० चूडा (सिर) से।
चुरिया स० स्त्री० चूड़ी,-क धोवन, स्त्री का बनाया भोजन, घर का खाना,-फोरब,-उतारब, -पहिरब।
चुरिला सं० पुं० चूडी, खँड़ुवा, कंकण, इस नाम का एक गीत जो देहातों में गाते हैं।
चुरिहार सं० पुं० चूड़ी बेचनेवाला, स्त्री०-रिन, -नि; चूरी + हार।
चुरुआ दे० चिरुआ।
चुरुट सं० पुं० बड़ा सिगरेट; ता० "शुरुत्त"।
चुल्ला सं० पुं० छल्ला,-पहिरब,-लगाइब।
चुल्हका सं० पुं० एक व्यक्ति या बच्चे का भोजन जो जल्दी में बिना चूल्हे के, कंडे की आँच पर बने,-डारब, ऐसा भोजन तैयार करना, 'चूल्हा' से।
चुल्हिआ-दुआर सं० पुं० चूल्हे का द्वार, घर का भीतरी काम, कहा०वई मियाँ दर दरबार वई मियाँ चु।
चुल्हि-पोतना वि० पुं० (पुरुष) जो घर के भीतर ही रहा करे, चूल्हा पोतनेवाला, बाहर के काम के लिए अयोग्य।
चुवब क्रि० अ० चूना, प्रे०-वाइब,-आइब, वै० -अब; सं० च्यव्।
चुसवाइब क्रि० स० चुसाना; 'चूसब' का प्रे० रूप।
चुहकब क्रि० स० चूस लेना; वै०-हु-, सं० चुष्, प्रे०-काइब,-उब।
चुहब क्रि० स० चुहना, प्रे०-हाइब,-वाइब, -उब।
चुहाइब क्रि० स० कोल्हू मे गन्ना देना, चूसने के लिए देना, प्रे०-वाइब,-उब।
चुहुट वि० पुं० चालाक, मक्खीचूस, स्त्री०-टि, -टिनि, फा० चुस्त।
चूँची सं० स्त्री० स्तन, पुं०-चा, व्यंग एवं घृणा में बड़े स्तनों के लिए। -पियब, कुछ न जानना, बच्चे सा व्यवहार करना।
चूक सं० स्त्री० गलती, धोका,-होब,-करब, भूल-, अपराध।
चूकब क्रि० अ० चूकना, रह जाना, न कर सकना, प्रे० चुकवाइब।
चूङब क्रि० स० एक एक करके उठाना या खाना, चुँगना, प्रे० चुङाइब; दे० टूङब।
चूतर सं० पुं० चूतड़, दे० चुतरी।
चूति सं० स्त्री० स्त्री का गुप्तांग, तोरि-माँ, गाली देने के शब्द (स्त्रियों के लिए)।
चूतिआ वि० पुं० मूर्ख; भा०-पन,-ई।
चून सं० पुं० चूना,-ताख, अत्युक्ति,-लगाइब, बढ़ाकर कहना, इधर-उधर लगाना; सं० चूर्ण।

चूनी सं० स्त्री० दाल आदि का टूटा या निकृष्ट भाग,-खूदी,-मिरखुनी, निकृष्ट भोजन।
चूर सं० पुं० खाट के कोने का भाग, सं० चूड़ा; -मिलाइब,-उखारब।
चूर सं० पुं० चूरा, टूटा हुआ बारीक भाग (अन्नादि का), वि० थका हुआ,-चूर होब, बिलकुल थक जाना।
चूरन सं० पुं० चूर्ण, सं०;-क लटका, चूरन बेचने का गीत।
चूरा सं० पुं० टूटा हुआ भाग; होब, टूट जाना।
चूरी सं० स्त्री० चूड़ी,-पहिरब,-उतारब,-फोरब (विधवा के लिए); दे० चुरिआ।
चूल्हा सं० पुं० चूल्हा; स्त्री०-हि; कहा० आठ कनौजिया नौ चूल्हा।
चूसब क्रि० स० चूसना; प्रे० चुसाइब,-वाइब,-उब, सं० चुष्।
चेंचा सं० पुं० गर्दन; दे० घेंचा,-पकरब, क्रि० -चिआइब, गर्दन पकड़ कर दबाना, बाध्य करना।
चेंचि सं० स्त्री० गेहूँ के साथ होनेवाला एक जंगली पौदा जिसके दानों से देहात की स्त्रियाँ सिर साफ करती हैं; वै०-चु।
चेड़ा वि० पुं० लंबा चौड़ा पर सुस्त; बहुत खानेवाला पर निकम्मा, दे० चइला।
चेका सं० पुं० बड़ा टुकड़ा (मिट्टी पत्थर या गुड़ का), वै० ची-।
चेत सं० स्त्री० होश, स्मृति,-होब,-करब,-क्रि०-ताब, -ब, वै०-ति, सं० चित्।
चेतब क्रि० अ० स० ध्यान देना; होश करना, सँभालना, प्रे०-ताइब, वै०-ताब; सं० चित्त।
चेतवाही सं० स्त्री० चिंता, परवाह -राखब, चेत+वाही।
चेना सं० पुं० एक प्रकार का चावल जो दो महीने में तैयार होता है।
चेफ सं० पुं० गन्ने का छिलका जो चूसते समय पहले उतार देते हैं। वै०-फि,-फु।
चेरिआ सं० स्त्री० नौकरानी, लौंडी-, परिचारिकाएँ, वै०-या, सं० चारिका; 'चेरा' का स्त्री०, यद्यपि यह शब्द पुं० में प्राय: बोला नहीं जाता; तुल० ने लिखा है "सदा हरि चेरा" (चेला के अर्थ में)।
चेला सं० पुं० शिष्य, स्त्री०-लिनि, भा०-ही।
चेलाही सं० स्त्री० चेलों का निवास, गुरु का क्षेत्र जिसमें वह निरंतर घूमता रहता है।
चेल्हवा सं० पुं० एक प्रकार की सफ़ेद सुंदर मछली, -यस, चपल एवं सुंदर।
चेहरा सं० पुं० मुखड़ा।
चेहरी सं० स्त्री० एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो प्राय: बाजरे आदि के खेत में चुँगती है;-लागब, -करब, मजदूरों या गरीबों का कटे खेत में से पड़ा हुआ अन्न बीनना।
चैत दे० चइत।
चैन सं० पुं० आराम,-लेब,-करब,-पाइब; वै० चयन।
चोंकब क्रि० स० किसी नुकीली वस्तु से कुरेदना, प्रे०-काइब।
चोंकरब क्रि० अ० ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना; प्रे० -वाइब।
चोंगा सं० पुं० गोल लपेटा हुआ पुलिंदा; क्रि० -गिआइब।
चोंघट वि० पुं० मूर्ख, उल्लू।
चोंचि सं० स्त्री० चोंच; क्रि०-आइब, चोंच से पकड़ना या नोचना।
चोंड़ा सं० पुं० कच्चा कुआँ जो सिंचाई के लिए तैयार कर लिया जाता है।
चोइँटा सं० पुं० गुड़ जो गीला और बेमज़ा हो जाता है; गुड़ की पाग (दे०) निकाल लेने पर कड़ाह में पानी डालकर जो गुड़ का पानीदार भाग बच रहता है उसे भी कहते हैं। क्रि०-ब, ऐसा हो जाना।
चोकर सं० पुं० आटे का मोटा भाग; चूनी-,निकृष्ट अन्न, वि०-हा।
चोख वि० पुं० नुकीला, तेज़, पैना; स्त्री०-खि; भा० -खाई, क्रि०-खाब, तेज़ होना,-खवाइब, तेज़ करना।
चोट सं० स्त्री० आक्रमण,-करब।
चोटा सं० पुं० राब से बना पतला द्रव जिसे तंबाकू आदि में डालते हैं।
चोटाब क्रि० अ० चोट लग जाना, प्रे०-वाइब।
चोटि सं० स्त्री० चोट।
चोटी सं० स्त्री० वेणी।
चोदब क्रि० स० मैथुन करना; प्रे०-दाइब,-उब, -दवाइब,-उब।
चोन्हर वि० पुं० जिसे दीख न पड़े, स्त्री०-रि, घृ० -रा, री क्रि०-राब।
चोन्ही सं० स्त्री० आवश्यकता से अधिक रोशनी; चक-,-लागब; पुं०-न्हा (?)।
चोपी सं० स्त्री० आम का विषैला पानी, वि०-पिहा।
चोबदार सं० पुं० दरबार का वह नौकर जो 'चोब' (फ़ा० डंडा) उठाता है।
चोर सं० पुं० जो चोरी करे; क्रि०-राइब, प्रे० -वाइब,-उब,-कट, जो छोटी-छोटी चोरी किया करे -टई, ऐसी आदत, सं०।
चोला सं० पुं० शरीर,-छूटब, मरना, कवन-, कौन जाति।
चोलिआ सं० स्त्री० चोली।
चोवा सं० पुं० तेल-फुलेल,-चंदन, शृंगार,-लगाइब।
चौक सं० पुं० दे० चउक।
चौड़ा वि० पुं० इसके लिए ठेठ अवधी शब्द 'चाकर' है; भा०-ई।
चौहान दे० चवहान।

छ

छँटनी सं० स्त्री० छाँटने या अलग करने की क्रिया. -होब,-करब।

छँटब क्रि० अ० छँट जाना, अलग हो जाना, प्रे० -टाइब, छाँटब।

छँटा वि० पुं० विशिष्ट, सर्वोच्च, स्त्री०-टी।

छंटा वि० पुं० (घोड़ा) जो छाना या बँधा हुआ चरता हो, स्त्री०-टी, 'छनब, छानब' से।

छँटाइ सं० स्त्री० छाँटने की क्रिया, मजदूरी अथवा मिहनत, दे० छाँटब।

छंडब क्रि० अ० टूटने योग्य हो जाना (मूँज आदि का), सं० 'खंड' से (टुकडों में टूटने योग्य होना)।

छँहाब क्रि० अ० धूप से आकर छाँह में बैठना या थकान मिटाना।

छई सं०स्त्री० क्षयरोग, सं०, कप-,कफ,-करब,-होब, दुर्दशा करना या होना, तंग करना या होना।

छउँकटई सं० स्त्री० विश्वासघात,-करब, छउ (क्षय)+कंठ=गला काटना।

छउँकटहा वि० पुं० विश्वासघाती, स्त्री०-ही, वै० -टिहा।

छकड़ा सं० पुं० भारी बैलगाड़ी, वि० पुराना, रद्दी।

छकनी सं० स्त्री० घास पीटने की लकडी की बनी झाड़ू के प्रकार की एक चीज़।

छकब क्रि० अ० छकना, ख़ूब खाना या पीना आश्चर्यान्वित होना, प्रे०-काइब,-उब।

छकलिया वि० जिसमें छः कली हों (कुर्ता, छाता आदि), वै०-आ।

छगड़ाब क्रि० अ० बकरी का गर्भ धारण करना, वै० छे-।

छगड़ी सं० स्त्री० बकरी, दे० छेरी, वै० छे-; बँ० छागल।

छच्छाकाल वि० पुं० क्रुद्ध,-होब।

छच्छाब क्रि० अ० (घास आदि का) फैलकर बढ़ते रहना।

छजब दे० छाजब।

छज्जा सं० पुं० छत, लंबी छत।

छटकब क्रि० अ० अलग हो जाना, कूदना, फिसलना, प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब।

छटकहरि वि० स्त्री० जो (गाय या भैंस) दुहते समय कूद जाय; वै०-कहलि।

छटाँक सं० पुं० पाव का चौथाई,-भर कै, दुबला-पतला (व्यक्ति)।

छट्ठी सं० स्त्री० जन्म के छठवें दिन का उत्सव, -बरही, हर्ष के अवसर; सं० षष्ठ।

छठिआँतर सं० पुं० भेद, मनोमालिन्य;-होब, -रहब, बच्चों की छठी में बिच्छू के डंक आदि डाले जाते हैं जिससे उन्हें बिच्छू काटने आदि का डर नहीं रहता, इसी से यह शब्द (छठी का अंतर) बना है।

छठिआब क्रि० अ० हठ करना (प्राय: बच्चों का), आग्रह करना।

छड सं० पु० पतला डंडा (प्राय: लोहे का), स्त्री० -ड़ी, सं०स्थ।

छड़ा स० पु० स्त्रियों के पैर में पहनने का आभूषण; कड़ा-,दोनों साथ पहने जानेवाले चाँदी के गहने।

छडी सं० स्त्री० हाथ की लकड़ी, सं० स्थ।

छड़ुआ वि० पुं० छोड़ा हुआ, पृथक् किया हुआ (साँड़ आदि),-छोड़ब,-छोड़ाइब; बकरे, भैंसे आदि जानवर मानता (दे०) के रूप में इस प्रकार छोड़ दिये जाते हैं। उन्हें देवताओं के नाम पर कोई मारता नहीं और वे खूब खाते फिरते हैं।

छत सं० स्त्री० मकान की छत।

छतनार वि० पुं० जिसका ऊपर का भाग छत या छतरी की भाँति हो; छायादार, वै० छो-, स्त्री० -रि, सं० छत्र+नार।

छतिआइब क्रि० स० छाती की ऊँचाई तक उठा लेना, छाती के बल उठाना।

छतीसा वि० पुं० दुष्ट, चालाक; स्त्री०-सी, प्र० -त्ती-, भा०-तिसपन,-सई।

छत्ता स० पुं० (शहद आदि का) छाता, सं० छत्र।

छत्तिस वि० छतीस,-वाँ,-ईं।

छन सं० पुं० क्षण,-भर,-नै भर, वै० छि-,सं० क्षण; दे० छिन।

छनकब क्रि० अ० झट से रुष्ट हो जाना, प्रे०-काइब, सं० 'क्षण' से (क्षण भर में), वि० छनकहर, जो छन भर में रुष्ट हो जाय, स्त्री० -रि।

छनछनाब क्रि० अ० आग पर झट गर्म हो जाना (घी या तेल की भाँति), गर्म होकर आवाज़ करना, नाराज़ होकर बोलने लगना, अनु०; वै० छि-।

छनटा वि० पुं० जो छना या बँधा रहे (घोड़ा या टट्टू), जो खुला न छूटा हो, स्त्री०-टी, वै० छंटा, -टी,-नुआ,-ई।

छनना सं० पुं० कपड़े या धातु का टुकड़ा जिससे द्रव वस्तु छानी जाती है, स्त्री०-नी।

छनब क्रि० अ० छन जाना, प्रे० छानब, छनाइब, छनवाइब,-उब।

छनुआ वि० छाना हुआ, बँधा, स्त्री०-ई, ये दोनों शब्द घोडे-घोड़ियों के लिए आते हैं।

छन्नी सं० स्त्री० स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक चाँदी का आभूषण, वै०-निआ,-या।

छपइब क्रि० स० छिपाना, वै०-पाइब।

छपकब क्रि० स० पतली छड़ी से मारना, जल्दी-जल्दी मारना, प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब ।
छपका सं० पुं० पतली, प्रायः हरी तोड़ी हुई छड़ी, स्त्री०-की ।
छपछप क्रि० वि० ऊपर तक (वर्तन के लिए), मुँह तक, पूरा-पूरा, प्र०-पाछप,-प्प ।
छपटब क्रि० अ० चिपकना, छाती लगना, प्रे० -टाइब,-उब, वै० छि-।
छपब क्रि० अ० छपना, छिपना, गुप्त रहना; प्रे० -पाइब,-उब,-पवाइब,-उब ।
छपया सं० पुं० जानवरों की एक संक्रामक बीमारी, -धरब, छपया हो जाना, यह पेट में सूजन के साथ प्रारंभ होती है ।
छपरा सं० पुं० छप्पर,-छाइब,-धरब, वि०-रहा (छप्पर का) ।
छपहार सं० पुं० छापनेवाला; टीका लगानेवाला ।
छपाइब क्रि० स० छपाना, छिपाना वै०-उब, प्रे० -पवाइब,-उब ।
छपाई सं० स्त्री० छापने की मजदूरी या मिहनत; -करब,-होब ।
छप्पन वि० पचास और छः ।
छबनी सं० स्त्री० टोकरी ।
छबि सं० स्त्री० शोभा;-लागब,-देखब (छबि देखत बनत है); सं० छवि ।
छबीला वि० पुं० सुंदर; छैल-,देखने में सुंदर; स्त्री०-लि,-ली, सं० छवि + ल, ली ।
छब्बिस वि० बीस और छः;-वाँ,-ईं; सं० षड्विंश ।
छब्बे वि० कहावत में प्रयुक्त ९० के आगे की एक काल्पनिक संख्या; कहा० जइसै नब्बे वइसै छब्बे, अर्थात् थोड़ी और अधिक आपत्ति में भेद ही क्या?
छमब क्रि० स० क्षमा करना, वै० छि-, सं० क्षम्, दे० छिमा ।
छम्म सं० पुं० गहनों या अन्य वस्तुओं के गिरने की सुरीली आवाज़,-से, छमा-,ऐसी आवाज़ के साथ, ध्व० ।
छय सं० स्त्री० नाश,-मान, नष्ट;-होब,-करब, स० क्षय ।
छरड़ब क्रि० अ० (अन्न का) कड़ा हो जाना, वि० -ड़हा, ऐसा चना, मटर आदि, स्त्री०-ही ।
छरछरहटि क्रि० वि० निरंतर छरछर आवाज़ के साथ, ध्व० ।
छरछराब क्रि०अ० घाव पर नमक के लगने का सा दर्द होना ।
छरर-छरर क्रि० छरर-छरर आवाज़ के साथ, ध्व० ।
छरहर वि० पुं० लंबा एवं पतला (व्यक्ति), स्त्री० -रि, 'छर' (छड़ी) की भाँति, विशेषणों में 'हन' लगाकर "लगभग" का अर्थ प्रदर्शित किया जाता है, उसी 'हन' का यह 'हर' दूसरा रूप है जो 'गोरहर' (दे०) आदि वि० में लगता है। मोट मोटहन, छोट से छोटहन आदि बनते हैं ।
छराछर क्रि० वि० तेज़ी के साथ; निरंतर; प्र०-रं ।
छर्रा सं० पुं० छोटी गोली; स्त्री०-र्री ।
छल सं० पुं० धोखा; कपट; वि०-ली,-लिआ,-या, वै०-ई ।
छलकब क्रि० अ० बाहर निकल पड़ना (द्रव या उसके पात्र का), प्रे०-काइब,-उब ।
छलरा सं० पुं० चमड़ा; स्त्री०-री, पतला या छोटा चमड़ा, क्रि० खलरिआइब, दे० खलिआइब, खलरा ।
छलिआ वि० पुं० छल करनेवाला, स्त्री०-नि ।
छली वि० पुं० छलवाला, स्त्री०-नि ।
छल्ला सं० पुं० बड़ी अँगूठी, कच्ची दीवार के ऊपर लगी पक्की ईंट की तह, स्त्री०-ल्ली;-ल्ली जोरब, -जोराइब ।
छवँकटई सं०स्त्री० विश्वासघात,-करब, वै०छौं-।
छवँकटहा वि० पुं० विश्वासघाती, छली, स्त्री० -ही, छवँ (क्षय?) + कंठ या कटहा (काटनेवाला), दे० छउँ-; वै० छौं-।
छवँछियाब क्रि० अ० परेशान होना, वै०-उँ-।
छहरब क्रि० अ० शोभित होना; प्रे०-राइब, छवि + हरब ।
छाँट सं० पुं० उलटी, कै,-करब,-होब, उलटी करना, होना ।
छाँटब क्रि० स० छाँटना, काट देना, साफ करना; प्रे० छँटाइब,-टवाइब,-उब, भा० छँटाई, छँटनी ।
छाँड़ब क्रि० स० छोड़ना, त्याग देना, प्रे० छोड़ाइब,-ड़वाइब ।
छाइब क्रि० स० (छप्पर आदि) छाना प्रे० छवाइब, -उब, वै०-उ-;-छोपब, रक्षा करना; प्रबंध करना ।
छाकब क्रि० स० खाना या पीना, खूब डटकर खाना या पीना, पं० छकना; वै० छ-।
छाजब क्रि० अ० शोभा देना, अच्छा लगना; सं० सज् ।
छाता सं० पुं० छतरी,-देब,-लगाइब, सं० छत्र, स्त्री० छतुरी ।
छाती सं० स्त्री० सीना,-फुलाइब,-उँचवाइब,-फारब, -फाटब, दुख देना,-होना,-जुड़ाब, शान्ति मिलना क्रि० छतिआइब ।
छानब क्रि० स० छानना, पता लगाना, ढूँढ़ना, प्रे० छनवाइब,-उब; भा० छनाई,-वट; रस-, शर्बत-, घोड़ी-, घोड़ी के पैर बाँध देना ।
छान्हि सं० स्त्री० फूस की बनी छत,-छप्पर, फूस का मकान ।
छापखाना सं०पुं० छापाखाना; प्रेस, हिं० छाप + फा० खाना, घर ।
छापब क्रि० स० छापना, घेर लेना; प्रे० छपाइब, -पवाइब,-उब ।
छाया सं० स्त्री० छाँह, वि०-दार -करब;-देब,-रहब ।
छार सं० पुं० राख, धूल,-होब,-करब; सं० क्षार, दे० जच्छार (जा० रही छार सिर मेलि) ।

छाला सं० पुं० चमड़ा, दे० छलरा, खलरा, मु० -निकोलब (दे०),-उधेरब ।
छाली सं० स्त्री० छाल, सुपाड़ी ।
छावा वि० पुं० छाया हुआ,-छोपा, तैयार (मकान)।
छाहँ सं० पु० छाया, रक्षा, बचाव, सहायता, -करब,-देव, सं० छाया, फा० सायः, अं० शेड ।
छिकनी सं० स्त्री० दे० नकछिकनी ।
छिंगुरी सं० स्त्री० कानी उँगली, कनिष्ठिका ।
छिआ विस्म० छीः,-छिआ, छीः-छीं;-थुआ, फजीता,-होव; क्रि० छिछिआइब, दोप निकालना, वै०-या ।
छिंकरब क्रि० अ० नाक साफ करना, दे० छींकि, छींकब, वै०-नकब ।
छिछिआइब क्रि० स० बुरा कहना, दोष निकालना, छिद्रान्वेषण करना, शब्द "छि-छिः" कहना ।
छिछिला वि० जो गहरा या गभीर न हो ।
छिटकब क्रि० अ० छिटक जाना, तितर-बितर हो जाना, प्रे०-काइव,-उव ।
छिटकवाह वि० पुं० दूर-दूर पड़ा हुआ, पृथक्, क्रि० वि० दूर-दूर (बीज बोने के लिए) ।
छिटकाइब क्रि० स० अलग करना, दूर-दूर कर देना ।
छिटकी सं० स्त्री० बूँद का छोटा टुकड़ा जो उड़-कर पड़े, आँख में हुआ मोतियाबिंद,-परब, वै० -टी,-टा, छीटा ।
छिट्टा सं० पु० बड़ा बूँद जो भूमि से उछलकर ऊपर आवे, स्त्री०-टी,-परब, वै० छीटा ।
छिटाइब क्रि० स० बिखेरना, जल्दी-जल्दी बोवा देना, वै०-उव, छींटब (दे०), प्रे०-टवाइब, भा०-ई ।
छिटिकि-बिटिकि क्रि० वि० पृथक्-पृथक्, दूर-दूर ।
छिटुआ वि० बिखेरी हुई (बुवाई), क्रि० वि०बीजों को छीटकर (बोना) ।
छितनी सं० स्त्री० छोटी छिछली टोकरी (मिट्टी ढोने के लिए) ।
छितराइब क्रि० स० बिखेर देना, तितर-बितर कर देना, वै०-उब ।
छितराव क्रि० अ० बिखर जाना ।
छिन सं० पुं० थोड़ी देर,-भर, क्षण भर, सं० क्षण ।
छिनकव दे० छिंकरब ।
छिनगाइब क्रि० स० छोटी-छोटी डालो को काट-कर साफ करना, प्रे०-गवाइब, सं० छिन्न से ।
छिनब क्रि० स० (सिल या जांत) छिनना, रुखानी से खुरदरा करना, वै० छी-, प्रे०-नाइब,-उव ।
छिनरई सं० स्त्री० पर पुरुप अथवा पर स्त्री गमन करने की आदत, वै०-पन, दे०-रा ।
छिनरहटि वि० स्त्री० छिनाला कराने की आदत वै०-ट ।
छिनरा वि० पुं० पर-स्त्री-गामी, स्त्री०-री, -नारि ।
छिनहा वि० पुं० जिसके मुँह पर माता के दाग हों, स्त्री०-ही ।
छिनाइव क्रि० स० छिनवाना, दे०-नब, प्रे० -नवाइब ।
छिनाई सं० स्त्री० छिनने की मजदूरी, पद्धति अथवा परिश्रम,-करब ।
छिनारि वि० स्त्री० पर-पुरुपगामिनी, दे०-नरा, वै०-नरी ।
छिनैआ सं० पुं० छिननेवाला, वै०-नवैआ ।
छिपब दे० छपब ।
छिबुलकी सं० स्त्री० छोटी सी चालाक स्त्री, धूर्त लड़की, यह घृ० प्रयोग में ही आता है ।
छिमा सं० स्त्री० क्षमा,-करब,-होब, यह शब्द कभी कभी पुं० में भी प्रयुक्त होता है । क्रि०-मब, छमब, वै० छ-, सं० ।
छिया सं० स्त्री० गदी वस्तु, मैला,-थुआ, थुक्का-फजीता,-होव, निंदा होना,-करब ।
छिरकब क्रि० स० छिरकना, प्रे०-काइब,-कवाइब, -उव ।
छिलब क्रि० स० छिलना, दे० छोलब, प्रे०-लाइब, -लवाइब ।
छिहाइब क्रि० स० भरकर ठूँसना, खूब भरना, ऊपर तक भरना ।
छिहुली सं० स्त्री० छोटा सा पेड़, कभी-कभी "-ला" भी बोला जाता है, पलाश का पेड़, प्रायः गीतों में प्रयुक्त ।
छींकब क्रि० अ० छींकना,-पादब, किसी प्रकार पूरा करना; सं० छिक्का ।
छींकि सं० स्त्री० छींक,-आइब,-होब ।
छी वि० बो० छीः; वै० छिः,-या ।
छीछ सं० पुं० छिद्रान्वेषण,-पारब, दुरालोचना करना, ध्व० "छी-छी" करना ।
छीछालेदरि सं० स्त्री० दुर्गति,-होब,-करब ।
छीछिल वि० पुं० छिछला, स्त्री०-लि ।
छीजब क्रि० अ० कम हो जाना (वस्तु का) ।
छींटब क्रि० स० इधर-उधर फेंकना,-बोइब, बिखराना, मु० खूब बाँटना (रुपये का), प्रे० छिटाइब,-टवाइब ।
छींटा सं० पुं० दे० छिट्टा ।
छीनब दे० छिनब ।
छीया सं० पुं० गू वै० छि-, प्रायः मातायें बच्चों को चेतावनी के लिए प्रयुक्त करती हैं ।
छीरा सं० पुं० कपड़े में फटने का 'चिन्ह,-परब, -होब, वै०-र ।
छीलब क्रि० स० छीलना, वै० छि-, प्रे० छिलाइब, -वाइब,-उब ।
छुअब क्रि० स० छूना, दान देना,-संकलपब, संकल्प करके दान देना, प्रे०-आइब,-वाइब ।

छुई-मुई सं० स्त्री० एक बूटी जिसे लाजवंती भी कहते हैं ।
छुट्टा वि० अकेला, सादा (जैसे छुट्टा पान) ।
छुट्टी सं० स्त्री० छुट्टी,-देब,-पाइब,-लेब,-होब ।
छुतमितार सं० पुं० छूत का संदेह या भ्रम ।
छुतिहर सं० पुं० वह घड़ा जिसका पानी पीने के काम न आवे, मु० भ्रष्ट व्यक्ति छूति+हर ।
छुतिहा वि० पुं० गंदा, छूतवाला, जूठा, स्त्री०-ही, छूति + हा ।
छुधा सं० स्त्री० भूख (पं०), ज़ोर की भूख -ब्यापब, ऐसी भूख लगना ।
छुल्ल सं० पुं० किसी द्रव के तेजी से गिरने, उलचने आदि की आवाज,-से ।
छुहारा दे० छोहारा ।
छूँछ वि० पुं० खाली स्त्री०-छि, प्र०-छै, तुल० बोली असुभ भरी सुभ छूँछी ।
छूट सं० स्त्री० स्वतंत्रता, मुआफी (कर आदि से) -पाइब,-मिलब; वै०-टि ।
छूटब क्रि० अ० छूटना, प्रे० छोडाइब ।
छूति सं० स्त्री० छूत ।
छूमंतर सं० पुं० झटपट चंगा कर देनेवाला मंत्र; छूकर ठीक कर देनेवाला रहस्य ।
छूरा सं० पुं० छुरा, स्त्री०-री, चाकू ।
छेंकब क्रि० स० रोकना रोंकब-, अड़ंगा लगाना प्रे०-काइब ।
छेहाइब क्रि० स० घायल करना, छेही (दे०) मारना; वै० छेहिआइब ।
छेगड़ाब क्रि० अ० छेगडी (दे०) का गर्भिणी होना; सं० छाग ।
छेगड़ी सं० स्त्री० बकरी, सं० छागी ।
छेद सं० पुं० छिद्र, वि०-दा,-ही, छेदवाला, सं० छिद्र ।
छेदना सं० पुं० मौनी (दे०) बिनने का वह औज़ार जिससे छेद करके सींक पिरोया जाता है ।
छेदब क्रि० स० छेद करना, मु० व्यंग बोलना, प्रे०-दाइब,-दवाइब ।
छेपक सं० पुं० बाधा; किसी कथा के बीच में योंही जोड़ा हुआ प्रकरण,-मिटब, बाधा दूर होना; सं० क्षेपक ।
छेम सं० पुं० कल्याण -कुसल, कुसल-कहब,-पूछब; सं० क्षेम ।
छेरी सं० स्त्री० बकरी ।
छेहिआइब क्रि० स० काटना, कई जगह थोड़ा-थोड़ा काट देना, छेही लगाना ।
छेही सं० स्त्री० पेड़ पर काटा या लगाया हुआ चिह्न,-मारब,-लगाइब क्रि०-हिआइब,-हाइब ।
छैला सं०पुं० शौकीन, दिखावटी पुरुष वै० छयल, -ल ।
छोकड़ा सं० पु० लडका, स्त्री०-डी ।
छोट वि० पुं० छोटा, स्त्री०-टि,-हन, कुछ छोटा, -ट, छोटे-छोटे; भा०-टाई,-पन; वै०-का,-की ।
छोड़ब क्रि० स० छोडना, प्रे०-डाइब,-ड़वाइब, -उब ।
छोत सं० पुं० गू या गोबर का उतना ढेर जो एक मनुष्य या पशु का हगा हो ।
छोपब क्रि० स० कोई गीली वस्तु चारों ओर से लेपना, मु० रक्षा करना, पक्ष करना प्रे०-पाइब, -पवाइब,-उब, सं० क्षेपू ।
छोभ सं० पुं० दु:ख पूर्ण क्रोध,-होव,-करब; सं० क्षोभ ।
छोर स० पुं० किनारा ।
छोरब क्रि० स० छीनना खोलना (बँधा हुआ गट्ठर; गाँठ आदि), प्रे०-राइब,-वाइब,-उब ।
छोलन सं० पुं० वह अंश जो छीलने पर गिरे; व्यर्थ गया हुआ भाग, वि० नालायक, नीच ।
छोलब क्रि० स० ऊपर का खोल उतारना प्रे० -लाइब,-लवाइब ।
छोह सं० पुं० ममता, प्रगाढ़ प्रेम,-करब, क्रि० -हाब ।
छौंकटई दे० छउँ-, छवँ-,वि०-टहा ।
छौंकब क्रि० स० बघारना,-बघारब, तरह तरह के पकवान तैयार करना, प्रे०-काइब,-उब ।
छौना सं० पु० सूअर का छोटा बच्चा ।

ज

जइस क्रि० वि० जैसा, वै०-सन; प्र०-सै,-सनै ।
जइहा दे० जहिआ ।
जई सं० स्त्री० जंगली जौ, छोटा पतला जौ ।
जउ क्रि० वि० जो, यदि वै० जौं
जकसन सं० पुं० जंक्शन, आनंद का स्थान; रौनक की जगह, अं० ।
जक्क सं० पुं० थोड़ा-सा पागलपन, झक्क, वि० -क्की, क्रि०-काव;-क्काव; हि० झक्क ।
जगब क्रि० अ० जगना, प्रे०-गाइब,-गवाइब, -उब वै० जा-, सं० जागृ ।
जगरनाथ सं० पुं० जगन्नाथ;-सामी,-स्वामी ।
जगरूप सं० पुं० विवाहों में प्रयुक्त एक खंभ, काठे क-, जिसे कहीं-कहीं "मानिक खंभ" भी कहते हैं और जो व्याह के मंडप में खड़ा किया जाता

है। मु० निर्जीव नेता, दीपक रखने का लकड़ी का।
जगहा सं० स्त्री० जगह, स्थान; संपत्ति, चौका; -देब, चौका लगाना; लघु०-ही, फ़ा० जाय, बं० जायगा; यू० गगई।
जगाइब क्रि० स० जगाना, अमावश-,दिवाली के दिन मंत्रादि जगाना, भा० ई, जागने की क्रिया।
जगीर सं० स्त्री० जागीर,-दार।
जगैआ सं० पुं० जगनेवाला, वै०-या,-गवैआ।
जग्गि सं० स्त्री० यज्ञ,-करब,-ठानब, सं०।
जङरइत वि० पुं० ताकतवाला, दे० जाङर, वै० -रैत; जाङर+ऐत।
जङला सं० पुं० छोटी खिड़की, जँगला।
जचब क्रि० अ० देखने में सुंदर लगना, वै० जँ-, प्रे०-चाँ-,-वाइब।
जच्छार वि० पु० रुष्ट, अत्यंत क्रुद्ध,-होब, यह शब्द "जरि छार" (जल कर राख) का बिगड़ा रूप है।
जजाति सं० स्त्री० सम्पत्ति, फ़ा० जायदाद, वि० -ती,-तिहा, जायदादवाला।
जज्ज सं० पुं० जज, न्यायाधीश; भा०-ज्जी, अं०।
जटब क्रि० अ० ठगना, ठगा जाना; शायद 'जाट' से।
जटा सं० स्त्री० जटा,-रखाइब,-राखब।
जट्ट वि० पुं० उजड्ड; जाट की भाँति असभ्य, प्र०-ट्टा।
जट्टी सं० स्त्री० स्टीमर से उतरने का स्थान जो लकड़ी रखकर बनाया जाता है, अं० जेटी, लै० जोसिओ, फेंकना।
जट्ठाहिन वि० पुं० जले हुए गुड़ के स्वाद सा स्वाद-वाला,-आइब, ऐसा स्वाद या सुगंध देना।
जठानि दे० जेठ।
जड़काला सं० पुं० जाड़े की ऋतु,-वै०-डि-, जा० विरहकाल भयउ जड़काला, जाड़+काल।
जडइब क्रि० अ० जाड़ा लगना, ठंड पड़ना; प्रे० -वाड्ब।
जडहन सं० पुं० अधिक पानी में होनेवाला अच्छा धान,-निआ, वह खेत जिसमें यह धान होता हो। वि०-नाउ, जडहनवाला (खेत)।
जड़ाऊ वि० जिसमें कुछ ऊपर से जड़ा हो।
जडाब क्रि० अ० ठंड या जाड़ा लगना, प्रे०-ड़वाइब, जाड़ (दे०) से, जडान, पुं० जिसे जाड़ा लगा हो, स्त्री०-नि।
जडावरि सं० स्त्री० जाड़े के कपड़े।
जड़ि सं० स्त्री० दे० जरि।
जढी वि० जिद करनेवाला, जो दूसरे की न माने, सं० जड़, वै० जि-; शायद 'जिरही' का विकृत रूप, दे० जिरह।
जतन सं० पुं० यत्न, तरकीब;-करब,-होब।
जतिगर वि० पुं० अच्छे प्रकार का (बीज, पौदा आदि), सं० जाति+गर।
जतिहा वि० पुं० जातिवाला, अच्छी जाति का, सं० जाति+हा।
जती सं० पु० यती; जोगी-, संन्यस्त व्यक्ति;-सती, अच्छे लोग।
जथा उचित क्रि० वि० यथोचित्त।
जद्द-बद्द वि० बुरा-भला (शब्द);-कहब,-बोलब, -बक्कब, फ़ा० बद।
जन स० पुं० व्यक्ति; यह शब्द संख्यावाचक शब्दों या दूसरों के साथ प्राय: बोला जाता है, यक-, दुइ-, मेहरारू-, स्त्री-, बहुवचन में रूपांतर "जने" हो जाता है। स्त्री०-नी; बहुवचन "जने" (दे०)।
जनखा सं० पुं० नपुंसक, भा०-खई।
जनम सं० पुं० जन्म,-करम, सारा जीवन,-देब, -होब,-भर, सारा जीवन;-जनम, कई जन्म तक, सं०, वै०-लम।
जनमब क्रि० अ० जन्म लेना; प्रे०-माइब,-उब, उत्पन्न करना।
जनाइब क्रि० स० बतलाना, घोषित करना, प्रे० -नवाइब,-उब।
जनारव सं० पुं० जानवर, जीव, पहेली-"हाथ न गोड़ पहाड़ चढ़ा जात है, देखो त बरखंडी बाबा कौन जनारव जात है" (धुँआ), फ़ा० 'जानवर' का विपर्यय।
जनाही सं० स्त्री० व्यक्ति के हिसाब से चंदा,-लेब, -उगहब (दे०), सं० जन+आही।
जनुका सं० पुं० ज्ञाता, जाननेवाला (प्राय: मंत्र तंत्र का), वि० होशियार, भा०-कई, प्र० जा-।
जने सं० पुं० जन का बहुवचन अथवा आदर-प्रदर्शक रूप, कै-, कितने व्यक्ति ?,-जने, प्रत्येक व्यक्ति, दे० जन।
जनेव सं० पुं० जनेऊ,-पहिरब,-कातब, सं० यज्ञोपवीत।
जनेवा सं० पुं० एक घास।
जनैया सं० पुं० जाननेवाला, प्रे०-नवैया।
जनौं क्रि० वि० शायद, जहाँ तक ज्ञात है या होता है, वै० जा-, म-, सं० ज्ञा (जानामि)।
जप सं० पुं० जपने का क्रम, वै० जाप,-तप।
जपब क्रि० स० जपना, मु० नष्ट कर देना, प्रे० जापब (दे०)-पाइब,-पवाइब,-उब; भा०-पाई।
जपाट वि० बिलकुल;-मूर्ख,-बहिर।
जपान सं० पुं० जापान, वि०-नी, जापान का बना हुआ।
जपैया सं० पुं० जपनेवाला, वै०-आ,-पवैया।
जब क्रि० वि० जब,-जब, जब कभी प्र०-ब्बै, -ब्बौ,-बै,-कबौं,-कभौं, चाहे जब।
जबजब वि० पुं० संदेहपूर्ण, मुँह-अस्पष्ट।
जबर वि० पुं० हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली, स्त्री०-रि,

प्र०-रा, भा०-ई,-नीवर, बड़ा छोटा, अर० जब्र, अत्याचार, क्रि० वि०-न, ज़बरदस्ती से, वै० जबु-रन।
जबरदस्त वि० पु० मज़बूत, भा०-स्ती,-करब, शक्ति का दुरुपयोग करना, फ़ा०
जबरा सं० पु० छोटा पर चौड़ा डेहरा (दे० डेहरी) जिसमें नाज रखा जाता है और जो कच्ची मिट्टी का बना होता है।
जबराब क्रि० अ० मोटा या मज़बूत होना।
जबहा सं०पु० शक्ति, अधिकार, अर० जबी (मुँह), जहब (सोना)।
जबान सं० स्त्री० जीभ, भाषा, यक-,एक शब्द, सूक्ष्म कथन, वि०-नी, मौखिक, ..की-, अमुक के मुख से; फ़ा०।
जबाना सं० पु० ज़माना, स्थिति, फ़ा० ज़मानः।
जबाब सं० पु० उत्तर,-देब,-करब,-लगाइब, कचहरी में किसी पक्ष का लिखित उत्तर देना, वि० -बी,-देह, उत्तरदायी,-देही, उत्तरदायित्व, फ़ा० -वाब।
जबुर वि० बुरा, भारस्वरूप,-लागब, क्रि० वि०-रन, दबाव में पड़कर; अर० ज़ब्र।
जबून वि० ख़राब।
जबै क्रि० वि० चाहे जब, प्र०-ब्बै।
जम सं० पु० यम,-राज, प्र०-म्म;-दूत, यम के दूत,-पुरी,-दुतिआ, यमद्वितीया, स० यम।
जमइका सं० जमाइका द्वीप जहाँ भारतीय मजदूर भेजे जाते थे।
जमइब क्रि० स० जमाना, दे०-माइब।
जमकब क्रि० अ० भली-भाँति स्थापित हो जाना, प्रे०-काइब,-उब।
जमघट सं० पु० भीड़ -लागब,-करब; प्र०-टा सं० यम (यमराज के यहाँ की की भाँति होनेवाली भीड़)।
जमपर सं० पु० स्त्रियों के पहनने का जंपर, वै० -फर।
जमब क्रि० अ० जम जाना, डटना; घोड़े का सीधा खड़ा हो जाना।
जमबड़ा सं० पु० भीड़,-होब,-करब।
जमा सं०.स्त्री० थाती, सुरक्षित आय; वि०-करब, -होब, फ़ा० जम्अ।
जमाइब क्रि० स० जमाना, प्रे०-मवाइब,-उब।
जमादार सं० पु० पुलीस आदि विभागों में एक छोटा पद, भा०-री,-दरई, फ़ा जमअ+दार (एकत्र करनेवाला)।
जमाबंदी सं० स्त्री० कर या लगान की सूची; फ़ा०।
जमामर्द वि० पु० मुस्तैद; फ़ा० जवाँ+मर्द; भा० -र्दी,-र्दई।
जमालगोटा सं० पु० एक दवा।
जमाब सं० पु० भीड़, वै०-वा।

जमीकंद सं० पु० सूरन; दे० कान; फ़ा० ज़मी +कंद (मूल), भूमि के भीतर होनेवाला कंद।
जमीदार सं० पु० भूमि का स्वामी, भा०-री, पं०-रा।
जमीन सं० स्त्री० पृथ्वी, भूमि, फ़ा०।
जमुआ सं० पु० जामुन का एक भेद; उसका छोटा पेड़;-रि,-रि, जमुए के पेड़ों का समूह या जंगल।
जम्म वि० पुं० स्थायी न हटनेवाला;-होब, डटा रहना।
जय सं० स्त्री० जीत,-हो,-होय,- ब्राह्मणों द्वारा दिया आशीर्वाद, वै० जै,-जयकार, जय जय की ध्वनि।
जयफर दे० जाय-।
जययद वि० बहुत बड़ा; शक्तिशाली व्यक्ति, अर० जैयद (अच्छा)।
जयरामजी सं० ब्राह्मणेतर जातियों का नमस्कार करने का शब्द, इसका संक्षेप रूप "राम राम" हो जाता है।
जरई सं० स्त्री० धान बोने की एक विधि,-करब, -होब, इसमें धान भिगोकर किसी बर्तन, बोरे आदि से ढक दिया जाता है और उसमें अंकुर निकल आते हैं।
जरखुराही सं० स्त्री० जड़ खोदने की क्रिया;-करब, ईर्ष्या करना, जरि+खुर(खुर से खोदना)+आही; वै०-रि-।
जरजर वि० पुं० निर्बल; सं० जर्जर।
जरतै वि० पुं० गर्मागर्म,-जर्त (जलता हुआ); दे० जरब।
जरदा सं० स्त्री० बढ़िया सुर्ती; फा० ज़र्द (पीला) से, क्योंकि इसमें रंग डाला जाता है।
जरदी सं० स्त्री० पीलापन, फ़ा०।
जरनि सं० स्त्री० जलने की क्रिया, मानसिक कष्ट; -होब,-करब, ऐसा कष्ट देना; 'जरब' से।
जरब क्रि० अ० जलना; प्रे०-राइब,-उब,-राइब।
जरबन्द सं० पुं० इजारबंद, फ़ा०।
जरबनी सं० पुं० जर्मनी, अं०; वि०-क,-चन कै।
जरलहा वि० पुं० जला हुआ, स्त्री०-ही वै०-ल-; -लाहिन, जिसमें जल जाने की सी दुर्गंध आती हो।
जरवना सं० पुं० जलाने के लिए लकड़ी, कंडा आदि, वै०-रौ-:
जरवनी वि०स्त्री० जलानेवाली (लकड़ी); वै०-रौ-।
जराइब क्रि० स० जलाना, प्रे०-रवाइब, वै०-उब।
जरामपेसा सं० पु० अपराधशील जाति; फ़ा० जरायमपेशः।
जरि सं० स्त्री० जड़; मु० बात, मुख्य प्रश्न,-करब, -धरब, वि०-दार,-गर।
जरिआव क्रि०अ० (फल का) गुठलीदार हो जाना (विशेष कर आम का), वै०-लि-।

जरिकरा सं० पुं० जड़ के पास का भाग (गन्ने आदि का); जरि+कर (का); वै०-का-।
जरी वि० पुं० सोने का, सुनहला, फ़ा० ज़र (सोना)।
जरीब सं० स्त्री० नाप का एक प्रसिद्ध पैमाना।
जरीबाना सं० पु ० जुर्माना।
जरूर क्रि० वि० अवश्य, वि०-री, आवश्यक, सं० -ति, आवश्यकता; फ़ा०।
जरैआ सं० पुं० जलनेवाला, प्रे०-रवैआ।
जरौनी वि० स्त्री० जलाने की (लकड़ी), दे० जर-वनी,-ना (सं०)।
जर्राह सं० पुं० हकीम जो चीड़फाड़ करे;-ही, ऐसा पेशा,-करब।
जल सं० पुं० पानी, गंगा-,-पान।
जलकर सं० पुं० पानीवाला भाग (गाँव का), -वनकर, तालाव, जंगल आदि, ये दोनों शब्द कचहरी के कागज़ों में प्रयुक्त होते हैं।
जलखरि सं० स्त्री० जाल की बनी थैली जिसमें पेड़ पर से फल तोड़े जाते हैं; जाल+खर।
जलजल वि० पुं० कमज़ोर, पुराना, सं० जर्जर, प्र० जुलजुल।
जलथल सं० पुं० पानी से भरा हुआ लंबा चौड़ा पृथ्वी का भाग, सं०-स्थल।
जलम सं० पुं० जन्म,-भर,-लेब,-देब,-होब, क्रि० -ब (जन्म लेना), सं०; दे० जनम।
जलमय वि० पानी से भरा हुआ, स्त्री०-यी।
जलूस सं० पुं० जुलूस,-निकरब,-निकारब, अर० जुलूस।
जल्द सं० पुं० गर्मी,-करब (पेट आदि में खाद्य का गर्म करना);-बाजी,-बजई, शीघ्रता।
जल्दी सं० स्त्री० शीघ्रता; क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक, -जल्दी, बहुत शीघ्र।
जल्लहा वि० पुं० दे० जरलहा।
जल्लाद वि० निर्दय, सख्त, भा०-ल्लदई,-पन।
जव सं० पुं० जौ,-केराई, जौ और मटर मिला हुआ,-जव आगर, एक एक से बढ़कर चतुर,-भर, तनिक सा।
जवन वि० पु० जो, स्त्री०-नि; दे० जौन।
जवनार सं० पुं० किसी देवता को चढ़ाया हुआ दूध चावल,-देब,-चढ़ाइब, दे० जेव-।
जवरा सं० पुं० नाज जो नाई, लुहार आदि को प्रतिवर्ष दिया जाता है, सं० 'यव' से;-देब,-पाइब, -लेब।
जवरिहा वि० पुं० जवार (दे०) का, पड़ोसी, फ़ा० जवार+इहा,-भाई,-मनई।
जवलाई सं०पुं० जूलाई, वै० जौ-।
जवहर सं० पुं० गुण, भेद,-खुलब, भेद ज्ञात होना,-खोलब, प्र०-द, वै० जौ-।
जवाई सं० स्त्री० जाने की क्रिया, पद्धति आदि, अवाई-, आना-जाना।
जवान सं० पुं० युवक, सिपाही, वि० युवा, स्त्री० -नि; भा०-नी, फ़ा० जवाँ, सं० युवान्; दे० जुआन।
जवार सं०पुं० गाँव का पड़ोस, कुरुब-, आसपास; अर०, फा० कुर्ब; वि०-री।
जवासा सं० पुं० एक जंगली पौदा जो वर्षा में सूख जाता है, तुल० अर्क जवास पात बिनु भयऊ।
जस सं० पुं० नाम, वि०-सी, यशस्वी; अप-,बद-नामी; सं०।
जस वि० पुं० जैसा, स्त्री०-सि, वै० ज्य-, जइस, जे-, प्र०-जस, जैसा-जैसा,-तस, जैसे-तैसे।
जसस क्रि० वि० जैसे जैसे, ज्यों ज्यों।
जसूस सं० पुं० जासूस,-लागब, भा०-सी,-करब, वै०-सुसई,-सुसपन, अर० जासूस।
जसोदा सं० स्त्री० यशोदा, वै०-द्दा,-जी; सं० यशोदा।
जसोमति सं० स्त्री० यशोदा,-माता, प्राय: गीतों में प्रयुक्त।
जहँतहँ क्रि० वि० कहीं-कहीं, जहाँ-तहाँ।
जहँडाइब क्रि० स० खतरे में डालना, नष्ट करना, खो देना।
जहकब क्रि० अ० ज़ोर ज़ोर से बकना, व्यर्थ की बातें करना।
जहन्नुम स० पुं० नरक, नाश;-म जाव, नष्ट हो जाना; अर०।
जहमति सं०स्त्री० आफत, परेशानी, ज़हमत, वि० -हा, झगड़ालू,-ती, जिसमें आफ़त हो सके। -करब,-होब।
जहर स० पु ० विष;-देब,-खाव;-करब, शब्दों द्वारा विषमय बना देना,-उगिलव,-बोलब।
जहलि सं० स्त्री० जेल, वि०-ली, जेल काटा हुआ, अं० जेल।
जहाँ क्रि० वि० जहाँ, प्र०-हैं।
जहिआ क्रि० वि० जब।
जहुआ वि० मूर्ख, अज्ञान, क्रि०-ब, भूल जाना।
जाँच सं० स्त्री० जाँच करने की क्रिया,-परताल, पूरी पूछताछ;-करब, क्रि०-ब।
जाँचब क्रि० स० पता लगाना, निश्चय करना; प्रे० जँचाइब,-वाइब।
जाँत सं०पुं० पीसने का जाँता, स्त्री० जँतिया,-ती, वै०-ता।
जाउरि सं० स्त्री० खीर।
जाकड़ वि० पुं० अधिक, निश्चित मूल्य से अधिक, -परब,-देब,-लेब।
जाकर दे० जेकर।
जाखि सं० स्त्री० यक्षिणी, कुश की बनी छोटी सी यक्षिणी की गुड़िया जो अनाज की डेहरी (दे०) में डाल दी जाती है। विश्वास यह है कि जहाँ यह होगी अनाज घटेगा नहीं।

जाग सं० पुं० जगने का क्रम; जागरण।
जागब क्रि० अ० जगना, चेतना, प्रे० जगाइब, -वाइब, सं० जाग्र।
जाजिम सं० पुं० कपड़े का लंबा-चौड़ा बिछौना।
जाट सं० पुं० पश्चिम की एक जाति के लोग।
जाड़ सं० पुं० जाड़ा, ठंडक;-होब,-लागब।
जारी वि० जारी;-करब,-होब, होलिया-,हुलिया-, विज्ञापन।
जाति सं० स्त्री० जाति,-पाँति,-बिरादरी; वि० जतिहा, जतिगर, अच्छी जातिवाला; सं०।
जाद वि० अधिक; वै०-दा,-दें, फा० ज्यादः।
जादू सं०पुं० जादू,-टोना,-मंतर;-करब; वि० जदुहा, -ही, फा० (जादू करनेवाला व्यक्ति)।
जान सं० स्त्री० प्राण;-वर, प्राणी, फा०।
जानकार वि० पुं० चतुर, विज्ञ, स्त्री०-रि भा० -री, वै०-नु-।
जानब क्रि० स० जानना; प्रे० जनाइब,-नवाइब, -उब, कहलाना, बतलाना; सं० ज्ञा।
जाना सं० पुं० जान जाने की क्रिया, विशेषतः रात को चोरों के आने के संबंध में;-परब।
जानी सं० स्त्री० प्रिया, प्रेमिका; प्रायः गीतों में प्रयुक्त; फा० 'जान' से (जिसमें प्रेमी का हृदय अथवा प्राण लगा हो) या 'जानातः' से।
जानुका दे० जनुका।
जानौं क्रि० वि० शायद, मैं जानता हूँ, मेरा अनुमान है सं० ज्ञा; दे० जनौं।
जाप सं० पुं० मंत्र का पाठ;-करब,-होब; क्रि०-ब, किसी का भूत, पिशाच आदि जाप द्वारा दूसरे पर डाल देना।
जाफ सं० पुं० वेहोशी का क्षणिक रूप;-आइब; फा० ज़ोफ।
जाब क्रि० अ० जाना, भीतर घुसना, आइब-, -आइब।
जाबा सं० पुं० जानवरों के मुँह पर बाँधने का रस्सी का जाल,-देब,-लगाइब, मु० मुँह माँ-देब, बोलना बंद कर देना।
जाबिर वि० पुं० प्रभावशाली, शक्तिवाला; भा० जबिरई, अर०।
जाम सं० पुं० भीड़, रुकावट,-होब,-धरब, अं० जैम।
जामब क्रि० अ० जमना, प्रे० जमाइब,-मवाइब, -उब।
जामा सं० पुं० ब्याह में दुलहे के पहनने का ऊपर का विशेष कपड़ा, जोड़ा-; अर० जामः (कपड़ा)।
जामिन सं० पुं० जमानत लेनेवाला; भा० जमिनई।
जामुनि सं० स्त्री० जामुन।
जायँ वि० उचित, बे-, बेजा, अनुचित, फ़ा० जा, वै० जाई,-हिं।
जायज वि० पुं० उचित,-होब, जायज़।
जायफर सं० पुं० जायफल; वै०जय-, जै-।
जायल वि० नष्ट, समाप्त (अधिकार आदि के लिए); यह कानूनी शब्द है। अर०।
जायस सं० पुं० प्रसिद्ध स्थान जहाँ महाकवि जायसी जन्मे थे और जो रायबरेली जिले में है।
जायाँ वि० नष्ट, बरबाद,-करब,-होब; ज़ायः।
जारन सं० पुं० जला हुआ भाग।
जारब क्रि० स० जलाना; प्रे० जराइब,-रवाइब, -उब; सं० ज्वालय।
जाल सं० पुं० जाल;-करब,-फैलाइब; वि०-लिया, -ली, नकली,-फउरेब, अर० जअल।
जाला सं० पुं० (मकड़ी का) जाला; पेड़ों की छाल में पड़ा जाला, आँख का एक रोग;-होब, -परब।
जालिआ वि० पुं० जाल करनेवाला।
जालिम वि० पुं० अत्याचारी, भा० जलिमई, अर०।
जाली सं० स्त्री० झँझरी,-दार,-काटब।
जावत वि० चाहे जितना; सं० यावत।
जावन सं० पुं० दूध में डालने के लिए थोड़ा दही जो जमाने के वास्ते डाला जाता है; वै०-मन; -डारब,-छोड़ब,-देब।
जासूस दे० जसूस।
जाहिर वि०प्रगट, स्पष्ट; फा०;-होब,-करब, प्र०-री।
जाहिल वि० मूर्ख;-जपट्ट, महामूर्ख; अर०।
जिंदा वि० पुं० जीवित; स्त्री०-दी,-करब,-रहब; -होब फ़ा० ज़िंदः।
जिअब क्रि० अ० जीना प्रे०-आइब,-उब; मरब -,-खाब, किसी प्रकार जीवन व्यतीत करना। वै० -य-, प्र० जी-।
जिअरा सं० पुं० प्राण, जी; वै०-उ; प्रायः कविता एवं गीत में प्रयुक्त।
जिउ सं० पुं० प्राण; शक्ति;-जाब,-देब,-लेब,-लागब -लैके भागब; कच्चे अन्न की तौल से उसके भुन जाने के बाद उसी की कम तौल का अंतर जिसे अन्न के प्राण की तौल कहते हैं। भुनने पर उतना "जिउ" चला जाता है। सं० जीवित; दुइ-सँ, गर्भिणी, नै० दोजिया।
जिउका सं०स्त्री० रोजी, जीविका; सं०;-लेब।
जिउकिआ सं० पुं० जीवित प्राणियों को पकड़ने या शिकार करनेवाला।
जिउतिआ सं० स्त्री० क्वार के नवरात्रों में पुत्रवती स्त्रियों द्वारा पहना एक धागा जो साल भर सुरक्षित रखा जाता है।
जिउधर सं० पुं० जीवधारी; वै०-धारी।
जिकिर सं० स्त्री० उल्लेख, जिक्र;-करब,-होब; प्र०-रा।
जिजिआ सं० स्त्री० बहिन।
जिठउत दे० जेठउत।
जिठानि दे० जे-।

जितवाइब क्रि० स० जिताना; 'जीतब' का प्रे० रूप, वै०-उब।
जिद्दि सं० स्त्री० ज़िद, हठ;-करब,-ठानब, वि०-द्दी, हठी; -क्रि०-द्दाब,-दिआब, हठ करना।
जिनगी सं० स्त्री० जीवन,-भर, प्र०-न्न-, ज़िंदगी, वै०-गानी।
जिन्न सं० पुं० प्रेत;-लागब; वै०-न्द।
जिब्भा सं० स्त्री० जीभ, "खाली-कौने काम?" सं० जिह्वा; दे० जीभि।
जिब्भी सं० स्त्री० जीभ साफ करने का धातु का बना एक धनुषाकार औज़ार, वै० जीभी।
जिमि क्रि० वि० जैसे; ज्यों।
जिम्मा स० पुं० उत्तरदायित्व,-लेब,-उठाइब, वि० -म्मेदार, अर० ज़िम्मः।
जियत क्रि० वि० जीते हुए, अपने-, वनके-, तोहरे- हमरे-।
जियब दे० जिअब।
जियरा सं० पुं० हृदय; जी, प्राय: गीतों में प्रयुक्त, वै० हि-।
जिरवानी सं० स्त्री० चावल और दही का एक पकवान जिसमें ज़ीरा डाला जाता है।
जिरह सं० स्त्री० तर्क-वितर्क,-करब,-लेब (अदालत का),-होब; अर० जिर्ह, वि०-ही।
जिराब क्रि० अ० (मक्के आदि का) ज़ीरा लेना, फूल लेना, दे० जीरा।
जिलेबी सं० स्त्री० जलेबी, पुं०-बा (हास्यात्मक एवं घृ० रूप)।
जिव दे० जिउ।
जिवरी दे० जेवरी।
जिवहत्या सं० स्त्री० जीवहत्या;-करब,-होब, सं०; वै०-उ-।
जिहिन सं० स्त्री० बुद्धि, समझ, वै०-हन, नेह-, ज़ेह्न,-म आइब,-बैठब,-समाव; वि०-दार।
जीअब दे० जिअब।
जीजा सं० पुं० बहनोई; स्त्री०-जी, बहिन।
जीतब क्रि० अ० बढ़ जाना (रोग का), जीतना; स०जीत लेना, प्रे०जिताइब,-उब,-तवाइब, सं०जी।
जीता वि० पुं० (वह ब्याह) जिसमें पहली विवाहिता स्त्री जीवित हो, वै० जियता।
जीभि सं० स्त्री० जीभ;-सवादब, स्वाद के लिए खाना,-दागब, चीख लेना (भोजन, मिठाई आदि); सं० जिह्वा, हास्य या घृ० व्यवहार में "जीभादाई" (लालची की बड़ी जीभ) कहते हैं।
जीरा सं० पुं० ज़ीरा; फूल, स्त्री०-री, काली जीरी, एक जंगली जीरा जो काला होता और फोड़ों पर दवा के काम आता है।-लेब, फूलना।
जीव सं० पुं० आत्मा, प्राण, पं०,-हत्या।
जुअठा दे० जुआठा।
जुआँ सं० पुं० सिर में पड़ जानेवाले छोटे छोटे जीव;-परब, दे० ढीलौ।
जुआ सं० पुं० जूआ,-खेलब,-होब, वि०-री,-ड़ी, प्र० जू- सं० द्यूत।
जुआठा सं० पुं० लकड़ी का ढाँचा जिसमें दो बैल नधते हैं, वै०-अ-, जोठा, सं० युज्।
जुआन वि० पुं० युवक, हट्टा कट्टा, स्त्री०-नि, भा० -नी, वै०-वा।
जुआर सं० स्त्री० मक्का, ज्वार, वै०-री (ज्वार की फसल)।
जुइ संबो० गाय एवं भैंस को खड़ा करने या पुचकारने का शब्द, प्राय: प्रत्येक जानवर के लिए इस प्रकार के अलग-अलग शब्द हैं।
जुइना सं० पुं० पुआल, मूजा आदि की बनी लंबी पतली चटाई जो पानी रोकने या बोझ बाँधने आदि में सहायक होती है,-बनइब, बान्हब, सं० युज (जोड़ना, बाँधना)।
जुइनि सं० स्त्री० योनि (प्राय: पशुओं के लिए), सं०।
जुकुती सं० स्त्री० युक्ति, तरकीब, वै०-गुति,-ग्ती, सं०।
जुग सं० पुं० युग, विलंब,-लगाइब,-बिताइब; प्र० -ग्ग,-ग्गि, सं०।
जुगइब दे० जोगइब।
जुगुनी सं० स्त्री० जुगुनू।
जुग्ग-जुग्ग क्रि० वि० धीरे-धीरे (चमकना, जलना), -करब,-होब, प्राय: दीये के लिए, अनु०, प्र० -गुर-गुर।
जुजबी वि० बिरला, कोई;-मनई; वै०-जु-।
जुझवाइब क्रि० स० लड़ा देना, जुझाना, दे० 'जूझब' जिसका प्रे० रूप यह है, वै०-उब, सं० युध् (योधय)।
जुटब क्रि० अ० जुटना, एकत्र होना; प्रे०-टाइब, -उब, भा०-टानि, एकत्र होने की क्रिया, जमाव (व्यक्तियों का)।
जुटूा सं० पुं० छोटा समूह (घास आदि का), स्त्री० -टी, कान (दे०) की जूरी (दे०)।
जुठहा दे०-ठिहा।
जुठारब क्रि० स० जूठा करना; मुँह-, थोड़ा सा खा लेना; प्रे०-ठरवाइब,-उब।
जुठिहा वि० पुं० जूठा, स्त्री०-ही,-ठही, वै०-ठहा, जूठ+हा।
जुडवाइब क्रि० स० ठंडा करना, सुख देना, वै-उब।
जुड़ाब क्रि० अ० ठंडा होना, शांति पाना, दे० जूड़।
जुड़िहा वि० पुं० जिसे जूड़ी (दे०) आती हो, स्त्री० -ही।
जुतिआइब क्रि० स० जूते से मारना; प्रे०-वाइब, -उब।
जुदा वि० पुं० अलग,-करब,-होब; स्त्री०-दी, वै० -दाँ, फ़ा० जुदः।
जुद्ध सं० पुं० झगड़ा, ज़ोर की लड़ाई,-करब,-होब, वै०-द्धि (स्त्री०), स०।

जुनवधव क्रि० अ० अपने (खाने, पीने आदि के) समय पर भूख, प्यास आदि का अनुभव करना, दे० जूनि ।
जुन्हरी सं० स्त्री० मक्का, वै० जो-, ज्व- वि० -रिहा, जिसमें मक्का बोई जाय या जहाँ वह फसल हो ।
जुन्हाई सं० स्त्री० चाँदनी, कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त, वै० जो-,सं० ज्योत्स्ना ।
जुब्ली दे० जिबुली ।
जुमिला वि० सारा, कुल, मिन-, सब मिलाकर अ० जुम्लः ।
जुरका सं० पुं० घास या मूजा (दे०) का एक मुट्ठी भर टुकड़ा ।
जुरते क्रि० वि० तुरंत ही, वै०-तैं,-तें; सं० त्वरितं ।
जुरब क्रि० अ० जुटना, अँटना, प्राप्त होना ।
जुरवाना सं० पुं० जुर्माना, दंड;-करब,-देब,-होब, वै० जरी-,-ल-; फ़ा० जुर्मानः ।
जुरति सं० स्त्री० हिम्मत, जुरअत,-होब,-करब, वै० जो- ।
जुराव सं० पुं० मोजा ।
जुलाब सं० पुं० दस्त होने की दवा -लेब,-देब, प्र० -ह्वा- ।
जुलुम सं०पुं० जुर्म, अपराध, अत्याचार; अर० जुर्म इस शब्द में "जुल्म"(निर्दय व्यवहार) भी सम्मिलित है ।-होब,-करब ।
जुवा सं० पुं० जुआठा (दे०) ।
जुवान दे०-आन; भा०-वनई ।
जुसगर वि० पुं० रसेदार, जूस (दे०)+गर ।
जुहवाइब क्रि० स० एकत्र करना, बटोरना (वस्तुओं का), वै०-उब ।
जुहाब क्रि० अ० इकट्ठा हो पाना, जुटना, अँटना, प्रे०-हाइब,-हवाइब,-उब ।
जुहार सं० पुं० नमस्कार; सलाम; क्रि०-ब, केवल कविता में प्रयुक्त ।
जूँठ सं० पुं० जूठा, वि० स्त्री०-ठि, क्रि० जुठारब, वै०-न ।
जूझब क्रि० अ० लड़ना, लड़ कर मर जाना, प्रे० जुझाइब, सं० युध् ।
जूड़ वि०पुं० ठंडा, तृप्त,स्त्री०-ड़ि, क्रि०-जुड़ाब, क्रि० वि०-ड़े, ठंडे में, छाया में, ठंडा होने पर ।
जूड़ी सं० स्त्री० ठंड देकर आनेवाला ज्वर;-आइब, -होब।
जूता सं० पुं० जूता, स्त्री० जूती, क्रि० जुतिआइब (जूते से मारना) ।
जूनि सं० स्त्री० समय, निश्चित समय (खाने-पीने आदि का);-होब, क्रि० जुनवधब (दे०) ।
जूरा सं० पुं० सिर के बालों का बँधा जूड़ा,-बान्हब, -खोलब ।
जूरी सं० स्त्री० कान (दे०) के बँधे नये पत्तों की पकौड़ी, 'जुरब' से ।
जूवा दे० जुआठा ।
जूस सं० पुं० वह संख्या जो २ से विभाजित हो जाय; 'ताख' का उलटा; जूस-ताख (दे० ताख); सं० युग ।
जूस सं० पुं० रस; वि० जुसगर, अं० जूइस ।
जेइब क्रि० अ० भोजन करना; प्रे०-वाँइब,-उब ।
जे स० जो,-केय, जो कोई,-केऊ, कोई भी; सं० यः ।
जेई स० जो भी; सं० यः ।
जेई वि० सर्व० जोही; चहै-, चाहे जो,-केव, जो कोई, सं० यः ।
जेकर सर्व० जिसका; स्त्री-रि, प्रे०-हि-,-का ।
जेठ वि० बड़ा; सं० पति का बड़ा भाई; वैशाख के बाद का महीना; असाढ़ी, जेठ एवं असाढ़ का समय;-उत, जेठ का पुत्र,-ठानि, जेठ की स्त्री ।
जेठीमधु सं० स्त्री० मुलेठी; यह नाम इसलिए दिया गया जान पड़ता है कि मुलेठी जेठ के महीने में होती है ।
जेतना वि० पुं० जितना; स्त्री०-नी; वै०-रा,-री, ज्य-।
जेतिक वि० चाहे जितना, दे० केतिक, वै० ज्य-।
जेथुआ स० जिस (वस्तु), वै०-थिआ,-थी ।
जेब सं० पुं० थैली, वै०-वा,-वि; वि०-वी, छोटा जो जेब में रखा जा सके ।
जेल सं० स्त्री० कैदखाना, दे० जेहलि, अं० ।
जेवनार सं० पुं० सुन्दर भोजन, भोजन का स्थान, 'जेंइब' (दे०) से ।
जेवर सं० स्त्री० आभूषण, वै०-रि; ज़े-।
जेवरी सं० स्त्री० रस्सी वै० ज्यो-, ज्य-, जि-।
जेस वि० पुं० जैसा, स्त्री०-सि -कुछ,-तेस, वै० ज्य-, जइ- प्र० जइसन, जेसस (जैसे-जैसे) ।
जेह स० जिस, जो, वै०-हि,-का,-कर, 'जे' (दे०) का प्र० रूप ।
जेहनि दे० जिहिन, वै०-न ।
जेहलि सं० स्त्री० जेल, वि०-ली, जो कई बार जेल गया हो, अं० जेल ।
जै वि० जितने, जितनी,-यूँ,-ठें,-ठ्वर,-ठवर; संख्या-वाचक वि०में 'ठ्वर' लगाकर निश्चित संख्या प्रकट की जाती है ।
जोंकि सं० स्त्री० जोंक,-लागब,-लगाइब ।
जोइ सं० स्त्री० पत्नी; वै०-य, सं० युग्म (दो) ।
जोखब क्रि० स० तौलना, प्रे०-खाइब,-उब,-खवाइब, नापब-, नाप-जोख करब ।
जोखरब क्रि० स० (बैल) नाधना, प्रे०-राइब, -उब,-रवाइब,-उब, वै० ज्व- सं० युज् (योज्) ।
जोखिम सं० पुं० खतरा;-होब,-रहब; वै०-खम ।
जोग सं० पुं० टोटका (स्त्रियों का),-करब,-कराइब; मौका, संयोग,-बैठब,-लागब,-लगाइब,-जुगुति, तरकीब ।
जोगइब क्रि० स० बचाना, सुरक्षित रखना; प्रे० -गवाइब; तुल० दीप बाति जस ''।

जोगिन सं० स्त्री० महिला योगी;-होब,-बनब; वै० -नि,-नी, मुहूर्त विशेष जिसमें "जोगिनी दाहिने" रहती है।
जोगी सं० पुं० योगी, एक जाति और उसके व्यक्ति जो गेरुआ वस्त्र पहनकर और गीत गाते सारगी बजाते भीख माँगते हैं।
जोगीड़ा सं० पुं० एक प्रकार का नाच जिसमें कई लोग भाग लेते हैं, वै० ज्ब-।
जोट सं० पुं० जोड़ा, जोडी; वै०-टा,-टी, यक-टा, दुइ-, एक जोड़ा, दो-; सं० युग।
जोठा सं० पुं० दे० जुआठा।
जोड सं० पुं० जोड़ा, बराबरी का व्यक्ति,-मिलब, -मिलाइब;-खाब, उपयुक्त जोडा (संभोग के लिए) पाना, जोडने का क्रम, स्त्री०-डी।
जोत सं० स्त्री० (किसान के) जोते हुए खेत का परिमाण, यक हर कै-,दुइ.. ; वि०-तारा, जोतने-वाला; वै०-ति।
जोतब क्रि० स० जोतना, दुहराते रहना (बात); प्रे०-ताइब,-तवाइब,-उब।
जोतानि सं० स्त्री० जोते जाने की योग्यता (खेत या भूमि की), वै०-तनी,-नि, ज्व-।
जोति सं० स्त्री० ज्योति, सं०।
जोतिस सं० पुं० ज्योतिष, सं०,-सी।
जोती सं० स्त्री० पतली रस्सी जिससे तराजू के पलड़े लटकते हैं।
जोधा सं० पुं० योद्धा, बहादुर व्यक्ति, सं०।
जोऽधाजी सं० पुं० अयोध्याजी; वै० जुध्याजी, -द्धाजी, सं०।
जोन्हरी सं० स्त्री० मक्का, भुट्टा,-क बालि, भुट्टे की बाली।
जोबन सं० पुं० कुच, छाती, जवानी, गीतों में '-ना' हो जाता है, सं० यौवन।
जोम सं० पुं० जोश, रोब,-से,-मँ।
जोय सं० स्त्री० स्त्री, पत्नी; प्राय गीतों में प्रयुक्त, जिनमें कभी कभी रूप "जोइया, ज्वइया तथा जोइ" हो जाता है। सं० योषित् कहा० "न तोहरे मर्द न हमरे जोय, अस कुछ करौ कि लरिका होय।"
जोर सं० पुं० शक्ति, बल;-लागब,-लगाइब,-पाइब, -देब,-मारब, क्रि० वि०-रें, वि० गर;-जुलुम, प्रभाव, फ़ा०।
जोरब क्रि० स० जोड़ना, परवा करना, प्रे०-राइब, -रवाइब,-उब, सं० योज्।
जोलहटिया सं० स्त्री० जुलाहों के रहने का भाग, वै० ज्व-, दे०-हा।
जोलहपन सं० पुं० जुलाहे का व्यवहार, स्वभाव आदि,-करब।
जोलहा सं० पुं० जुलाहा, स्त्री०-हिनि।
जोवा सं० पुं० बारी (पानी चलाने आदि की), -लागब, अपनी पारी पर काम करने आ जाना, -री, जोवा का साथी; सं० योज्।
जोस सं० पुं० उत्साह,-आइब, क्रि०-साब, जोश में आना, वि०-हा,-सीला,-इल; फ़ा०-श (गर्मी), सं० उष्ण।
जौ सं० पुं० अन्न विशेष,-केराई, जौ तथा मटर मिला हुआ;-जौ आगर (दे० जव), क्रि० वि० जो, यदि।
जौन वि० सर्व० जो;-जौन, जो-जो, प्र०-नै, जो ही, सं० यः।
जौलाई दे० जवलाई।
जौहर दे० जवहर।

झ

झँकोर सं० पुं० झोका; वै०-रा; जा० फागुन पवन झकोरा बहा।
झँझरी सं० स्त्री० लकड़ी अथवा पत्थर में कटी बेल आदि,-काटब, वि०-दार।
झँटिहा वि० पुं० झिकझिक करनेवाला, बदमाश; स्त्री०-ही।
झँटुल्ली वि० छोटा, छोटी।
झँटोर वि० पुं० वही अर्थ जो "झँटिहा" का है; "झाँटि" से, ऐसे बालों की तरह उलझा हुआ, स्त्री०-रि, भा०-ई,-पन।
झँडूल सं० पुं० बालक जिसके सिर पर बड़े-बडे बाल हो (प्यार का शब्द); स्त्री०-ली, प्र०-ल्ला, -ल्ली; गीतों में प्रयुक्त।
झँसाई सं० स्त्री० नीचता, दे० झास।
झउँझउँ दे० झवँ-।
झउँसब क्रि० स० सीधे आग में भूनना, खडे भूनना, मु० फटकारना, मुँह पर गाली देना, प्रे०-साइब,-उब, वि०-हा (दे०)।
झउँसहा वि० पुं० निंदनीय, स्त्री०-ही; यह प्रायः स्त्रियों द्वारा गाली देने के काम आता है।
झउआ सं० पुं० टोकरा, स्त्री०-ली, वै०-वा, झौ-।
झकझक सं० पुं० व्यर्थ शब्दों का विनिमय; वक-वाद (दो ओर से);-करब,-होब, प्र०-का-।
झकसा सं० पु० झंझट,-करब,-उठब,-होब।
झकड़ी सं० स्त्री० निरंतर और धीरे-धीरे होनेवाली वर्षा,-करब,-होब।
झकाब दे० झाकू।

झख सं० पुं० मछली; मु०-मारव, पछताना; कुछ न कर सकना, मुँह ताकते रहना (निराशा में); क्रि० झंखव (दे०)।
झगरा सं० पुं० झगड़ा -करव,-लगाइव,-मोल लेव; वि०-ऊ;-कल्ला, तरह-तरह के झगड़े।
झझक सं० स्त्री० थोड़ा-सा पागलपन, क्रि०-व, पागलपन की-सी बातें करना, व्यर्थ बकना; प्रे० -काइव; वि०-हा,-ही।
झझकोरव दे० झिझकोरव।
झटपट क्रि० वि० बहुत जल्द; प्र०-ट्ट-ट्ट, झटा-पट।
झट्टै क्रि० वि० तुरंत ही; प्र०-ट्टै।
झडी सं० स्त्री० वर्षा का ताँता;-लागव।
झनक सं० स्त्री० दर्द का शेषांश, धीमी आवाज़, मिज़ाज की थोडी तेज़ी या गर्मी; क्रि०-व, दर्द करना, आवाज़ करना।
झनकाइव क्रि० स० नाराज़ कर देना; वै० -उव।
झन्ना सं० पुं० नाज झारने (दे० झारव) की बड़ी चलनी।
झपकी सं० स्त्री० हल्की नींद;-लागव,-लेव।
झपसा दे० झापस।
झबिआ सं० स्त्री० छोटा झावा; वै०-या।
झब्बा सं० पुं० फूलदार आभूषण;-लागव,-लगा-इव।
झमाझम सं० पुं० पानी में कूदने या पानी भरने की निरंतर आवाज़; क्रि० वि० ऐसी आवाज़ के साथ।
झम्म् सं० पुं० पानी में गिरने या जल्दी कूद पड़ने की आवाज़;-से,-दें (कूदव)।
झरखर वि० पुं० (मौसम) जिसमें पानी बरसना बंद हो जाय;-होव,-करव।
झरन्हा वि० पुं० (अन्न) जो कच्चा ही सूख गया हो और बीज के काम का न हो, विशेषकर चना।
झरन सं० पुं० झरा हुआ टुकड़ा;-झुरन, बचा-खुचा भाग।
झरव क्रि० अ० झड़ना, गिर जाना, प्रे० झारव, झराइव,-उव,-रवाइव; जा० तरिवर झरहिं, झरहिं बन ढाखा।
झरबइरि सं० स्त्री० छोटी-छोटी जंगली बेर; वै० -री,-रिया।
झरवता सं० पुं० (फसल का) अंतिम समय या ढंग -होव; 'झरव' से; वै०-रौता।
झरसव क्रि० अ० लपट से थोड़ा जल जना; प्रे० -साइव,-उव।
झरहा वि० पुं० झार (दे०) वाला, शीघ्र रुष्ट हो जानेवाला; स्त्री०-ही।
झरा-झुरा वि० पुं० बचा हुआ, गिरा पड़ा (भोजन आदि)।
झराहिन वि० पुं० मिर्चे की-सी जिसमें झाँक हो; -आइव; दे० झाँक, झार. झार+हिन।
झरोखा सं० पुं० छोटी खिड़की।
झरौता दे० झरवता।
झलकव क्रि० अ० झलकना, चमकना; प्रे०-काइव, मल या माँजकर चमका देना।
झलका सं० पुं० फफोला;-परव, फफोला हो जाना; मु०-बोलव, बहुत लगनेवाली बात बोलना।
झलकारव क्रि० स० थोडे से घी या तेल में सेंक लेना. प्रे०-कराइव.-करवाइव।
झलकुट्टी सं० स्त्री कँटिदार झाडियों का समूह; दे० झालि; झालि+कुटी।
झल-झल क्रि० वि० चमक के साथ: प्र० -लाझल्ल।
झलमल क्रि० वि० भूमि पर घसिटता हुआ (कपड़ा), प्र०-लामल्ल।
झलरा सं० पुं० मूली एवं सरसों के पत्तों को एक साथ कूटकर लहसुन आदि डालकर बनाई हुई चटनी,-करव,-होव, थका डालना या थक जाना (चिंताओं के कारण)।
झलुआ सं० पुं० झूला,-झूलव, मु०-होव, (व्यक्ति का) परेशान हो जाना, दुबला-पतला होना।
झलूसा सं० पुं० दिखावा, तमाशा, अ० जुलूस।
झल्लाव क्रि० अ० बहुत क्रोध करना, क्रुद्ध होना।
झवँ-झवँ सं० पुं० झगड़े की आवाज़;-करव, चिल्लाना, वै० झाँ-।
झवँव क्रि० अ० कम हो जाना, नष्ट होते जाना; वै०-वाव।
झवाँझार वि० परेशान,-होव।
झहरव क्रि० अ० ऊपर उठकर उड़ते या हिलते रहना; प्रे०-राइव,-उव।
झहराइव क्रि० स० ऊपर उठाकर झाड़ देना; वै० -उव।
झाँ सं० बच्चों के खेलते समय एक दूसरे को बुलाने का शब्द· इसे कहते समय मुँह टेढ़ा करके दूसरे की ओर झाँकते हैं। "झाँकव" से।
झाँक सं० स्त्री० विशेष प्रकार की गंध,-आइव वै०-कि, क्रि० झँकाव, ऐसी गंध देना।
झाँकव क्रि० अ० झाँकना;-झूँकव, छुपके से देखना; प्रे०-झँकाइव,-उव।
झाँकी सं० स्त्री० सुंदर दृश्य; देवता की सजी मूर्ति,-देखव।
झाँखर सं० पुं० कँटिदार पतली-पतली झाड़ी, झंखट।
झाँझ सं० पुं० एक छोटा बाजा, वै०-झि,-करताल, जो दोनों साथ बजाये जाते हैं।
झाँटि सं० स्त्री० गुप्त स्थान के बाल,-उखारव, कुछ न कर सकना,-न देव, कुछ भी न देना;-जरव, बहुत ही बुरा लगना;-यस, ज़रा सा, बहुत छोटा।

झाँटू वि० पुं० झंझटी, दे० झँटिहा; स्त्री० में भी यह इसी रूप में प्रयुक्त होता है।
झाँप सं० पुं० ऊपर से ढकने का कपड़ा; क्रि०-व, ढक देना, दे० ढाँपब।
झाँवरि सं० स्त्री० बेहोशी का झोंका,-आइब; क्रि० झँवरियाब, बेहोश सा हो जाना।
झाँस वि० पुं० हलका, बुरा, नीच; स्त्री०-सि, भा० झँसाई।
झाँसा सं० पुं० धोखा;-देब;-पट्टी,-पढ़ाइब।
झाईं सं० स्त्री० हल्की परछाईं;-परब।
झाऊ सं० पुं० एक जङ्गली पेड़ जो नदियों के किनारे बालू में होता है, कहा० "जहाँ बाभन तहाँ नाऊ, जहाँ गंगा तहाँ झाऊ"।
झाग स० पुं० फेना, मुँह का सफेद पानी; साबुन आदि का गाज,-निकरब,-देब।
झाड़न सं० पुं० कपड़ा जिससे कुछ झाड़ा जाय।
झाड़-फन्नूस सं० पुं० दिखावटी रोशनी के सामान, अर० फ़ानूस।
झाडा सं० पुं० टट्टी,-फिरब, वै०-ड़े।
झाबा सं० पुं० बड़ा टोकरा; स्त्री० झबिया, -आ।
झाम सं० पुं० कुआँ साफ़ करने की लोहे की मशीन;-लगाइब।
झायँ-झायँ क्रि० वि० व्यर्थ (बकना),-करब; वै० -वँ-वँ।
झार स० पुं० द्वेषपूर्ण क्रोध; झुँझलाहट, कड़ुआहट की बू; वि० झरहा,-ही, क्रि० वि०-न-रें, दूसरे की ईर्ष्या से।
झारब क्रि०स० झाड़ना; कुआँ, तालाब आदि साफ़ करना, मु० चुरा लेना, खूब डटकर खाना; प्रे० झरवाइब,-उब।
झारा सं० पुं० तलाशी,-लेब,-देब।
झालरि सं० स्त्री० झालर।
झालि सं० स्त्री० घने जंगल का टुकड़ा, काँटेदार झाड़ी; मु० फँसा हुआ मामला, झंझट; हिं० झाडी।
झावाँ सं० पुं० ईंट जो पककर काली हो गई हो, क्रि० झँवाब।
झिंगवा सं० पुं० झींगा, एक प्रकार की मछली; वै०-ङ-।
झिकझिक सं०पुं० ज़िद, बकवास, व्यर्थ का विवाद, -करब,-होब।
झिझकब क्रि० अ० संकोच करना, हिचकना।
झिझकारब क्रि० स० झटक देना, हटा देना; वै० -ट-।
झिझकोरब क्रि० स० हाथ से पकड़कर हिलाना; भा०-रा।
झिटकब क्रि० स० झिटकना; मु० चुरा लेना; प्रे० -काइब,-कवाइब,-उब, भा०-कवाई।
झिटकारब दे०-झ-।
झिड़कब क्रि० स० थोड़ा सा डाँटना; भा०-की।
झिनकई वि० स्त्री० छोटी, वै०-की; दे० झीन, प्र० -नी।
झिनकऊ वि० पुं० छोटा (चाचा बेटा आदि), 'झिनका' का आदर प्रदर्शक रूप; यह शब्द केवल व्यक्तियों के लिए ही प्रयुक्त होता है। प्र०-नू, वै०-कू।
झिनझिनाइब क्रि० स० दाँतों से पकड़कर इधर उधर करना; काटने की कोशिश करना।
झिनवाँ सं० पुं० महीन चावल; छोटे-छोटे चावल।
झिमिर-झिमिर क्रि०वि० निरंतर (बरसते रहना), वै० झिम-झिम।
झिलँगा सं० पुं० खाट जिसकी बिनावट पुरानी हो गई हो।
झिसिआब क्रि० अ० छोटी-छोटी बूँदें पड़ना, दे० झीसी; वै०-याब।
झींक सं० पुं० अनाज जो एक मूठी में चक्की या जाँत में डाला जाय, वै०-का।
झींकब दे० झंखब; शायद इसका संबंध "झींक" से हो, अर्थात् थोड़ा-थोड़ा पीसते रहना, थकना आदि।
झींगुर सं० पुं० छोटा कीड़ा जो कपड़ों में छेद कर देता है।
झीटब क्रि० स० चुरा लेना, दे० झिटकब।
झीन वि० पुं० बारीक, छोटा; स्त्री०-नि; कबीर -"झीनी झीनी बीनी चादरिया"।
झीरी सं० स्त्री० बारीक चूरा।
झीलि सं० स्त्री० झील।
झीसा सं० पुं० छोटी छोटी पतली बूँदों का ताँता; -परब; क्रि० झिसियाब,-आब; स्त्री०-सी।
झुँकब क्रि० अ० झुकना, प्रे०-काइब,-उब।
झुँट्टा वि० बड़ा झूठा, स्त्री०-ट्टी।
झुठना वि० पुं० झूठा (व्यक्ति), स्त्री०-नी, भा०-नई,-नाई।
झुन्ना सं० पुं० बहुत पतला कपड़ा।
झुरडा वि० पुं० सूखा हुआ, बहुत दुबला-पतला, स्त्री०-ठी, 'झुराब' से।
झुरकब क्रि० अ० (हवा का) धीरे-धीरे चलना या बहना।
झुरगर वि० पुं० कुछ सूखा हुआ, अधिक सूखा, स्त्री०-रि; झूर+गर, वै०-खर।
झुरझुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (वायु के बहने के लिए), कविता में 'झुरिझुरि', प्र०-रुर-रुर।
झुरवाइब क्रि० स० सुखाना।
झुरान वि० पुं० सूखा, स्त्री०-नि,-लकड़ी, बहुत दुबला पतला (व्यक्ति)।
झुराब क्रि० अ० सूखना, मु० बिना खाये-पिये पड़ा रहना; प्रे०-रवाइब,-उब, "झूर" से [जा० हौं झुराँव बिछुरी मोरि जोरी।]

झुरिझुरि दे० झुरझुर (झुरिझुरि बहति बयरिया पवन रस घोलै हो ''गीत)।
झुलनी सं० स्त्री० नाक में पहनने का एक छोटा आभूषण जो झूलता है। 'झूलब' से।
झुलफुज़ार सं० पुं० सूर्योदय के पूर्व का समय, -होब,-रहब, प्र०-रै; वै० झल-।
झुलवा सं० पुं० स्त्रियों का अँगिया,-पहिरब, स्त्री० -लिया, छोटी बच्ची का झुलवा।
झुलसब क्रि० अ० गर्मी से जल जाना; प्रे० -साइब,-सवाइब,-उब।
झुलाइब क्रि० स० झुलाना, लटकाना, मु० (दूसरे का) काम न करना, तंग करना, वै०-उब।
झुलिया दे० झुलवा।
झुल्ल सं० पुं० हाथी के ऊपर से लटकनेवाली रंगीन नक्काशीदार चद्दर।
झूँखी सं० स्त्री० पतली-पतली लकड़ी, मु०-यस, बहुत दुबला-पतला, स्त्री०-यखि।
झूड़ा सं० पुं० पतली काँटेदार झाड़ियों का ढेर, स्त्री०-ड़ी।
झूँठ सं०पुं० झूठ; वि० असत्य, प्र०- ठै,-ट्टे (क्रि० वि०) भा०झुँठई।
झूमब क्रि० अ० झूमब, प्रे० झुनाइब,-उब।
झूर वि० पुं० सूखा; स्त्री०-रि, प्र०-रै, क्रि० झुराब, -झार, बिना भोजन या वस्त्र का वेतन, क्रि०वि० -रें-रें, सूखे मार्ग से;-रै झूर,बिना पैसे के,-रै जवाब, सूखा उत्तर।
झूरा सं० पुं० सूखा; समय जब पानी न बरसे, -परब,-रेहनि, निरंतर सूखा ही सूखा स्थान अथवा समय।
झूलब क्रि०अ०झूलना, प्रे०झुलाइब,-लवाइब,-उब।
झूला सं०पुं० झूला,-परब,-झूलब,-झुलाइब,-डारब।
झेंप सं० पुं० लज्जा;-मिटाइब, क्रि०-ब, झेंपना, शर्म करना; वि०-पू, लजानेवाला।
झेलब क्रि० स० झेलना, सहना, प्रे०-लाइब,-उब।
झोंक सं० पुं० झोंका; देवी को चढाने के लिए लाल धागे का बना छोटा झूला, कहारों द्वारा भार ढोने का रस्सी और बाँस का बना।
झोंकब क्रि० स० झोंकना, मु० बोलते या खाते जाना; प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब।
झोंझ सं० स्त्री० घोंसला, वै०-झि।
झोंझर सं० पुं० पोल, खाली स्थान (रजाई, गद्दे आदि में), क्रि०-राब, वै०-झि।
झोंटा सं० पुं० सिर के बड़े-बड़े बाल (प्राय: स्त्रियों के); बुरी तरह रखे हुए बाल, स्त्री०-टी, थोड़े से बड़े बालों का समूह (घृ०), क्रि०-टिआइब, एकत्र पकड़ कर उखाड़ना (बालों की भाँति)।
झोरब क्रि० स० डंडे या ढेले से फल तोड़ना; प्रे० -राइब,-रवाइब,-उब, भा०-राई।
झोरा सं० पुं० झोला; स्त्री०-री; क्रि०-रिआइब, झोले में रख लेना, ले जाना आदि।
झोला सं० पुं० ठंड से उत्पन्न लकवा,-मारब, ऐसा लकवा लगना, जा० बिरह पवन मोहिं मारै झोला।
झोहर वि० पुं० आवश्यकता से बड़ा या लंबा (कपड़ा), झक-, खूब लंबा-चौड़ा, क्रि०-राब, सीने में बड़ा या चौड़ा हो जाना।
झौं-झौं सं० स्त्री० झगड़े की आवाज -करब,-होब, क्रि०-झिआब, चिल्लाना, व्यर्थ बोलना।
झौंसब दे० झउँसब।
झौवा दे० झउआ।

ट

टंक सं० पुं० तोला;-भर, तोला भर।
टंकार सं० पुं० टनकार, ज़ोर की आवाज़।
टंकी सं० स्त्री० (तेल या पानी का) हौज; अं० टैंक।
टंच वि० पुं० तैयार;-रहब,-होब,-करब।
टंट-घंट सं० पुं० (पूजा पाठ का) दिखावा;-करब· टंट = टन टन + घंट = घंटा बजाना।
टंटनाब क्रि० अ० टन-टन बजना; (शरीर) ठीक हो जाना; प्रे०-नाइब।
टंटा सं०पुं० झगड़ा, झंझट;-बखेड़ा, झगरा-;-करब, -होब, वि०-टहा।
टँड़ाब क्रि० अ० टाँड़ा (दे०) लगकर खराब होना।
टँहिआ सं० स्त्री० हाथ के ऊपरी भाग में पहनने का गहना,-पछेला, कलाई पर पहने जानेवाले आभूषण को पछेला कहते हैं।
टइनी सं० स्त्री० टहनी; वै०-टै-,-नि।
टकटोरब क्रि० स० तलाश करना, अँधेरे में ढूँढ़ना, हाथ पसारकर ढूँढ़ना।
टकसार सं० स्त्री० टकसाल, ख़ज़ाना।
टका सं० पुं० दो पैसा; पैसा, द्रव्य; वि०-यस, कोरा (जवाब)।
टकुआ दे० टे-, सं० तर्कुः।
टक्कर सं० पुं० टक्कर,-लागब, क्रि० टकराब, -राइब।
टघरब क्रि० अ० पिघलना; प्रे०-रवाइब,-राइब, वै० टे-।
टक्री सं० स्त्री० टाँग, क्रि०-रिआइब, टाँग पकड़

कर उठा लेना, वै० टे-, पुं० टङरा (घृ०),-पसारब, अनधिकार चेष्टा करना।
टङवाइब क्रि० स० टँगवाना, फाँसी दिलाना, वै० -उब,-ङाइब।
टच्च सं० पुं० कसर, ऐब;-परब, ऐब निकलना; वै० त-।
टट सं० पुं० तट, सं० तट।
टटकै वि० ताजा ही, दे० टाटक।
टढ़ुआब दे० टेढ़आब।
टढ़ुई दे० टेढ़ुई।
टनँकब क्रि० अ० दर्द करना, थोड़ा-थोड़ा दर्द होना (सिर में), प्रे०-काइब, वै० ठ-।
टपंखा वि० पुं० जिसकी आँख में टेढ़ापन हो, स्त्री० -खी।
टपकब क्रि० अ० टपकना, प्रे०-काइब,-उब,-कवाइब,-उब।
टपका सं० पुं० पककर गिरा हुआ आम, वि० डाल का पका (आम)।
टपटप क्रि० वि० निरंतर, बूँद बूँद (चूना), प्र० -पाटप्प।
टपर-टपर क्रि० वि० गुस्ताखी से और जल्दी-जल्दी (बोलना), दे० टेपर।
टपवाइब क्रि० स० 'टापब' का प्रे० रूप, वै० -पाइब।
टम-टम सं० स्त्री० छोटी घोड़ागाड़ी।
टमाटर सं० पुं० प्रसिद्ध फल, अं० टोमैटो; वै० टि-।
टयरा सं० पुं० हाथी के खाने के लिए पत्ते समेत पीपल, बरगद आदि की डालें,-काटब,-लाइब, -लादब, वै० टै-।
टयरी सं० स्त्री० छोटी-छोटी डालें; वै०-इ-,टै-।
टरकब क्रि० अ० हट जाना, चल देना, चुपके से भागना, प्रे०-काइब,-उब, टालना, हटाना।
टरब क्रि० अ० हट जाना, टलना, चुरा जाना, प्रे० टारब,-वाइब।
टर्र-टर्र क्रि० वि० ज़ोर-ज़ोर से और गुस्ताखी के साथ (बोलना), क्रि०-र्राब।
टर्रा वि० अकड़कर गुस्ताखी से बोलनेवाला; क्रि० -ब, अकड़ जाना, बेहूदा बातें करना, स्त्री०-र्री, यद्यपि मूल शब्द दोनों लिंगों में बोला जाता है। "टर्र-टर्र" से।
टसकब क्रि० अ० खिसकना, थोड़ा सा भी हटना, प्रे०-काइब,-उब, 'टस्स' (दे०) से।
टसाइब क्रि० स० बर्तन के छेद को बंद कराना, वै०-सवाइब, टँ-।
टस्स सं० पुं० कल्पित स्थान,-होव, हटना,-से मस होब, जरा सा हिलना।
टहकब क्रि० अ० पिघलना, प्रे०-काइब,-उब, -कवाइब,-उब।
टहरब क्रि० अ० टहलना, प्रे०-राइब,-उब, हटाना, इधर-उधर करना, चुरा लेना,-वाइब, -उब।
टहल सं० स्त्री० सेवा, काम, परिश्रम,-करब।
टहलुआ सं० पुं० नौकर, वै०-लू, स्त्री०-लुई।
टाँकब क्रि० स० टाँका लगाना; सीना, प्रे०टँकाइब, -कवाइब,-उब, भा० टँकाई।
टाँका सं० पुं० टाँका,-लागब,-मारब,-लगाइब, स्त्री० -की, हलका टाँका, लिखावट; बरम्हा क-, ब्रह्मा का लिखा (भाग्य)।
टाँगब क्रि० स० टाँगना, लटकाना, जिउ-, हृदय में चिंता उत्पन्न करना, प्रे० टँगाइब,-उब,-वाइब, -उब, वै० टाङब।
टाँगा सं० पुं० ताँगा।
टाँगुन सं० स्त्री० एक अन्न जिसका भात बनता है, वै०-नि,-ङु-।
टाँच सं० पुं० नस का तन जाना,-लागब, ऐसा तनना, नि०-ब, चुरा लेना।
टाँड़ सं० पुं० डंडे से गुल्ली (दे०) पर की हुई चोट,-मारब।
टाँड़ना सं० स्त्री० ताड़ना, दुःख, निरंतर यातना, -करब,-देब,-होब, सं० ताड् (मारना)।
टाँड़ा सं० पुं० लकड़ी में छेद करके रहनेवाला सफ़ेद मोटा कीड़ा,-लागब, क्रि० टँड़ाब (दे०)।
टाँय-टाँय सं० स्त्री० व्यर्थ की और बार-बार कही हुई बात,-करब,-होब।
टाँस सं० स्त्री० नस का तनाव,-लागब।
टाँसब क्रि० स० बर्तन का छेद बंद करना, धातु के बर्तनों की मरम्मत करना, प्रे० टँसाइब,-वाइब, -उब, भा० टँसाई।
टाघन सं० पुं० छोटा सा जवान घोड़ा।
टाट सं० पुं० टाट।
टाटी सं० स्त्री० टट्टी (जो फूस आदि की बनती है),-बान्हब;-देब, द्वार बंद करना।
टाठी सं० स्त्री० थाली, सं० स्थाली।
टाप सं० पुं० टाप,क्रि० टापब,-सहब, बातें सुनना, सहन करना, रोब मानना।
टापब क्रि० अ० टापना, फिरते रहना, प्रे० टपाइब, -पवाइब,-उब।
टापू सं० पुं० द्वीप, मु०-मँ, बहुत दूर।
टार-टूर सं० पुं० स्थगित करने की इच्छा,-करब, -होब, वै०-मटूर,-मटोर।
टारब क्रि० स० टालना, हटाना, स्थगित करना, प्रे० टरवाइब,-उब।
टिउआ सं० पुं० स्त्रियों की बिदाई का निश्चित दिन,-जाब,-आइब,-धरब।
टिउका दे० टेउका।
टिकइत वि० पुं० टीकाधारी, मालिक, स्त्री०-तिनि, वै०-कैत।
टिकठ सं० पुं० टिकट,-ल्लेब,-लागब,-लगाइब, वै० टी-, टिकस, टिक्स, टेक्स।

टिकठी सं० स्त्री० मुर्दा ले जाने की अर्थी;-निकरब, स्मशान जाना, स्त्रियों द्वारा कहा शाप। उ० तोर टिकठी निकरै ! तू स्मशान जा !
टिकब क्रि० अ० टिकना, ठहरना, रहना, प्रे० -कइब -काइब,-उब,-कवाइब,-उब।
टिकरी सं० स्त्री० छोटी सी रोटी; पुं०-करा,-कर, मोटी रोटी।
टिकानि सं० स्त्री० टिकने की आदत, परम्परा, -करब,-परब, वै०-ई दे० टिकब।
टिकिआ सं० स्त्री० टिकिया।
टिकुई सं० स्त्री० सूत कातने की तकली -कढ़ाइब, प्रारंभ करना, सं० तर्कुः।
टिकुरई सं० भा० समतल होने का गुण, दे० टीकुर।
टिकुली सं० स्त्री० टिकली, पुं०-ला,-ल्हा (घृ०), वि०-लिहा,-ही, सं० त्रिकुटी।
टिकोरा सं० पु० छोटे-छोटे आम के फल -यस (आँखि) सुंदर, स्वच्छ; स्त्री०-री।
टिचन वि० ठीक, तैयार,-होब,-करब।
टिटकोरब क्रि० अ० मज़ा करना, हर्ष मनाना।
टिटिहिरी सं० स्त्री० एक चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है; पुं०-रा,-हा, मु०-यस,-क टाँगि, दुबला पतला,-होब, दुबला हो जाना; सं० टिटिभ।
टिड़िकब क्रि० अ० व्यंग बोलना, कटाक्ष करना।
टिनुकब क्रि अ० रूठ जाना (प्रायः बच्चों का), प्रे०-काइब,-उब, वै० टिन्नाब।
टिपना सं० पुं० टिप्पणी, नोट, जन्म, विवाह आदि के संबंध के विवरण, स्त्री०-नी क्रि० टीपब, सं०।
टिपवाँस सं० स्त्री० आडंबर,-करब,-लगाइब।
टिप्पा सं० पुं० लिंग,-लेब, कुछ न पाना।
टिमटिमाब क्रि० अ० धीरे-धीरे जलना, बुझने के लगभग होना।
टिमाटर दे० टमाटर।
टिर-टिर सं० पुं० व्यर्थ के शब्द,-करब, वै०-रिर-रिर।
टिहटब क्रि० अ० ठहरना, स्थायी होना; सं० तिष्ठ।
टिहुँकब क्रि० अ० चिल्लाना, रोना।
टिहूँका सं० पुं० चिल्लाने या रोने की आवाज, -होब,-बाजब।
टीँटीं सं० स्त्री० टींटीं की आवाज़, धीरे-धीरे की हुई दुःख को आवाज़;-करब,-होब।
टीकठ सं० पुं० टिकट, दे० टिकठ।
टीकब क्रि० स० टीका (तिलक) लगाना (व्यक्ति को), चिह्न करना (बर्तनों पर), प्रे० टिकाइब, -कवाइब,-उब।
टीकमटीक सं० पुं० अनावश्यक आडंबर, टीम-टाम आदि।
टीकस सं० पुं० टैक्स;-देब,-लागब,-लगाइब।
टीका सं० पुं० (माथे में लगा) टीका, (प्लेग आदि का) टीका,-देब,-लगाइब,-लेब,-लगवाइब।
टीकाधारी सं० पुं० टीकावाला; वि० जिसे टीका लगाया गया हो,-राजा, जिसका तिलक किया गया हो, विन-क राजा, अत्यंत धनाढ्य एवं प्रभाव-शाली।
टीकुर वि० पुं० सूखा मैदान, टिकुरें क्रि० वि० सूखी भूमि पर।
टीपब क्रि० स० उड़ा देना, चुरा लेना, प्रे० टिपा-इब,-पवाइब; नोट करना, लिख लेना।
टीस सं० स्त्री० दर्द, ज़ोर का दर्द; क्रि०-ब, दर्द करना।
टीहा सं० पुं० स्थान, ठिकाना; दे० ठेहा, सं० तिष्ठ।
टुकरा सं० पुं० टुकड़ा -माँगब, भीख माँगना, -देब वि०-रहा, दरिद्र, भा०-राही, भिखमँगाई, -करब।
टुकारब क्रि० स० 'तू' कह कर पुकारना या संबो-धन करना।
टुकुर-टुकुर क्रि० वि० धीरे-धीरे और बिना कुछ बोले (देखते रहना), प्र०-कुर।
टुङवाइब दे० टूङब।
टुच्चा वि० पुं० नीच; स्त्री०-ची भा०-च्चई, -पन।
टुटब क्रि० अ० टूटना, वै० टू-, प्रे० तूरब, तुरा-इब, तुरवाइब।
टुटरूँटूँ वि० रद्दी, किसी तरह काम देनेवाला, वै० टुरु-।
टुटहा वि० पुं० टूटा हुआ, स्त्री०-ही।
टुड़हा वि० टूँड़ (दे०) वाला।
टूँड़ सं० पुं० (गेहूँ या जौ की बाल का) पतला काँटा।
टूँड़नि सं० स्त्री० मुंडन की तरह का एक संस्कार, -करब,-होब।
टूँसी सं० पुं० पतला टुकड़ा,-यस, दुबला-पतला (व्यक्ति)।
टूक सं० पुं० टुकड़ा, हिस्सा, वै०-का, आधी-टूका, थोड़ा-बहुत (भोजन), टूक-टूक होब, नष्ट हो जाना।
टूङब क्रि० स० धीरे-धीरे खाना, एक-एक दाना उठाकर खाना, प्रे० टुङाइब,-ङवाइब।
टूट वि० पु० टूटा, स्त्री०-टि।
टूटन सं० पुं० टूटा भाग, टुकड़ा।
टूटब क्रि० अ० टूटना, प्रे० तूरब; दे० टुटब।
टेंट सं० पुं० अंटी, क्रि०-टिआइब, टेंट में रख लेना, ले लेना।
टेसू सं० पुं० प्रसिद्ध फूल।
टेइब क्रि० स० हाथ लगाना, मदद करना, नीचे से सहारा देना, वै०-उब।

टेउका सं० पुं० लकड़ी जो किसी दूसरी चीज़ को नीचे गिरने से बचावे,-लागब,-लगाइब,-देब; स्त्री० -की।
टेक सं० स्त्री० गीत का अंतिम पद जो बार-बार गाया जाय; प्रतिज्ञा, हठ, यक्टेकी, हठीला,-की, अपनी बात पर अड़ा रहनेवाला, अपन-।
टेकुआ सं० पुं० तकुआ, वै० व्य-,सं० तर्कुः स्त्री० टिकुई (दे०)।
टेघरब क्रि० अ० पिघलना; प्रे०-राइब,-उब, वै० व्य-।
टेङना सं० पुं० एक प्रकार की मछली जो ऊपर तैरती है और डंडे से जल्दी मर जाती है,-यस (छटपटाब, मरब), जल्दी ही, वै० व्य-।
टेडारा सं० पुं० कुल्हाड़ा, स्त्री०-री; वै० व्य-; -लागब,-गिरब, आफ़त आना।
टेटाब क्रि० अ० अकड़ना (व्यक्ति का), (लिंग का) खड़ा होना, सख्त होना, प्रे०-वाइब।
टेढ़ वि० पुं० टेढ़ा, स्त्री०-ढ़ि, क्रि०-ढ़ाब,-वा, छोटा डंडा जिसका सिरा टेढ़ा हो, स्त्री०-ढ़िआ; टेढ़-बाँकुर, टेढ़ा-मेढ़ा, जैसा-तैसा।
टेढिआ सं० स्त्री० छड़ी, वै०-या,-ढुई।
टेढ़आ सं० पुं० डण्डा, वै०-ढ़वा, क्रि०-ब, अकड़ना, मिज़ाज करना, स्त्री०-ई, छोटा डंडा।
टेपर वि० पुं० गुस्ताख़, मुँहलगा, स्त्री०-रि, भा०-ई।
टेम सं० स्त्री० जलती हुई बत्ती; वै०-मि।
टेर सं० स्त्री० पुकार, क्रि०-ब, पुकारना।
टेव सं० स्त्री० आदत,-परब,-लगाइब।
टैवा दे० टिउआ।
टैनी दे० टइनी।
टैप सं० पुं० टाइप;-करब,-होब;-बाबू, टाइपिस्ट, अं० टाइप।
टैरा दे० टयरा।
टोंक स० स्त्री० रोक, क्रि०-ब, टोंकना।
टोइब क्रि० स० हाथ लगाकर देखना, मु० दिल की बात की थाह लेना, प्रे०-वाइब, वै०-उब।
टोइयाँ सं० पुं० एक प्रकार का तोता जो बहुत मीठा बोलता है। वै०-आँ, टु-।
टोक स० पुं० शब्द, अक्षर, संक्षेप बात, यक -कहब, सुनब, ज़रा-सी बात कहना, सुनना...।
टोकना सं० पुं० टोकरा, स्त्री०-नी, वै० टुव-।
टोङ स० पुं० कोना, किनारा, वै०-ङा।
टोना सं० पुं० जादू,-लागब,-लगाइब,-टापर, क्रि० -ब, टोने में ग्रस्त होना।
टोप सं० पुं० बड़ी टोपी, कन-(दे०), स्त्री०-पी, व्यं०-पा।
टोला सं० पुं० मुहल्ला,-महल्ला।
टोली सं० स्त्री गिरोह, समूह।
टोह सं० स्त्री० खोज;-लागब,-लगाइब,-करब, क्रि०-हिआब (ज्ञात होना),-आइब, पता लगाना; वि०-ही, खोजी।
टौन सं० पुं० टाउन स्कूल, बड़ा स्कूल, अ० टाउन।

ठ

ठंठनगोपाल सं०पुं० प्राप्तिहीन व्यक्ति,-होब,-करब, बिना भोजन के रह जाना।
ठंठनाब क्रि० अ० ठंठन करना, प्रे०-नाइब।
ठंढ वि० पुं० ठंढा; सं० ठंढक,-परब, ठंढक पड़ना, क्रि०-ढाब, ठंढा होना, प्रे०-वाइब, ठंढा करना, स्त्री०-ढि।
ठइआँ-भुइआँ सं० स्त्री० पृथ्वी, स्थान विशेष की देवी, ये शब्द प्रायः गीतों के प्रारंभ में प्रार्थना स्वरूप यों आते हैं—" ' धरम तुहार" अर्थात् हे पृथ्वी माता, तुम्हारे धर्म (का हमें बल है)।
ठउकब क्रि० अ० ज़ोर-ज़ोर से बोलना, प्रे० -काइब।
ठउरिग वि० पुं० स्थिर, निश्चित, स्त्री०-गि,-रहब, -करब,-होब, वै०-व-, 'ठवर' (दे०) से।
ठकचा दे० ठोकचा।
ठकठक सं०पुं० विशेष स्थान, रोब, अच्छी स्थिति।
ठकठकाइब क्रि० स० ठकठक आवाज़ करना, भा० -कहटि।
ठकर-ठकर क्रि० वि० व्यर्थ (बोलना),-करब, -होब।
ठकहरब दे० ठेकहरब।
ठकाठक वि० बिना भोजन के,-रहब, प्र०-क्क।
ठकुरई सं० स्त्री० ठाकुर का रोब, स्वभाव आदि, -करब,-देखाइब, वै०-राई,-पन, सं० ठाकुर, ठक्कुर।
ठकुरसोहाती सं०स्त्री० बात जो मालिक को सुहाय, खुशामद, तु०।
ठग सं० पुं० ठग, भा०-ई, क्रि०-ब, ठगना,-गाब -गाइब, ठगा जाना।
ठगई सं० स्त्री० ठगी,-करब,-होब।
ठटब क्रि० अ० ठाट से कपड़ा पहनना, तैयारी करना, प्रे० ठा-,-टाइब।
ठटरी सं० स्त्री० शरीर की हड्डियाँ (मांस बिना), -रहि जाय, बहुत दुबला हो जाना।
ठट्ठा सं० पुं० हँसी,-मारब,-करब, हँसी-, खिलवाड़, लघु०-ठोली।

ठठाइब दे० ठेंठाइव।
ठठेर सं० पुं० धातु के बर्तनों का काम करनेवाला, ठठेरा; स्त्री०-रिनि, भा०-रई,-पन; वै० ठँ-।
ठठोली सं० स्त्री० हँसी,-करब; हँसी-।
ठड़ा वि० पुं० खड़ा, स्त्री०-ढी, दे० ठाढ़।
ठढवाइब क्रि० स० खड़ा करना; वै०-उब; दे० ठाढ़।
ठनक सं० स्त्री० ठनकने की आवाज थोड़ी पीड़ा क्रि०-ब, थोडा-थोड़ा दर्द करना (सिर का), दे० टनकब, प्रे०-काइब, रुपया गिनना, कमाना -कउआ, बहुत सा रुपया,-लेब, वसूल करना (दहेज आदि)।
ठनगन सं० पुं० हठ, आग्रह (दान दहेज में) -करब, -होब।
ठनन-ठनन सं० पुं० ठन-ठन की वार-वार की आवाज,-होब,-करब, क्रि०-नाब, (घंटा) वजना, प्रे०-नाइब।
ठनब क्रि० अ० ठनना, मचना, प्रे० ठानब,-नाइब, -उब,-वाइब,-उब।
ठप सं० पुं० गिरने की आवाज -दें,-सें -होब, बंद हो जाना,-करब, बंद कर देना, अनु० ध्व०।
ठप्पा सं० पुं० छापने का साँचा या मुहर,-लगाइब, -लागब, स्त्री०-पी।
ठरब क्रि० अ० ठंडक अधिक पडना; दे० ठारी।
ठर्रा सं० स्त्री० देहात की बनी हुई शराब,-पियब, वि० मोटी एवं मज़बूत (रस्सी), स्त्री०-र्री।
ठल-ठेपा सं० पुं० रहने का स्थान, ठिकाना,-होब, -करब,-रहब, सं० स्थल।
ठलुआ वि०पुं० खाली, बेकार (व्यक्ति), स्त्री०-ई।
ठवर सं० पुं० स्थान,-पाइब,-मिलब, वै०-उर, ठौर (दे०)।
ठवरिग वि० पुं० दे०-उरिग।
ठसक सं० स्त्री० गर्व, गर्वपूर्ण उक्ति या व्यवहार।
ठसरा सं० पुं० गर्व, नखरा,-करब, वै०-र।
ठसाइब क्रि० अ० ठसवाना (दे० ठासब), भीतर भरवाना; खुदवाना या अप्राकृतिक व्यभिचार कराना· वै०-सवाइब।
ठस्स वि० पुं० गंभीर; भीतर से भरा हुआ (पोला नहीं), मज़बूत (वर्तन आदि), स्त्री०-स्सि।
ठहकब क्रि० अ० चोट की आवाज़ होना गंभीर शब्द होना, भा०-हाका, प्रे०-काइब,-उब।
ठहकाइब क्रि० स० मार देना, ज़ोर से पीटना, वै० -उब।
ठहर सं० स्त्री० बैठने या रहने का स्थान;-मिलब, -पाइब, क्रि०-ब, वै०-उर,-वर।
ठहरब क्रि० अ० ठहरना, निश्चित होना, देर तक चलना, गर्भ धारण करना, प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब, -उब।
ठहाक सं०पुं० किसी भारी चीज़ के गिरने या लगने का शब्द;-दें,-सें।
ठहाका सं० पुं० ज़ोर की हँसी;-मारब,-होब।
ठहिकै क्रि०वि० ज़ोर से, तानकर (बेधना, काटना); यद्यपि यह पूर्वकालिक रूप है, पर 'ठहब' कोई क्रिया नहीं है।
ठाँठि वि० स्त्री० जो दूध न दे; सूखी।
ठाउँ सं० पुं० स्थान, प्रारंभ,-से, पहले ही से, प्र० -वें,-वें से; वै०-वँ; ठावें-, स्थान-स्थान पर, सं० स्थान।
ठाकुर सं० पुं० मालिक, क्षत्रिय; स्त्री० ठकुराइनि, भा० ठकुरई,-राई,-ठकार, बड़े लोग,-बाबा, भगवान, सं०।
ठाट सं० पुं० साजबाज, दिखावा;-बाट; क्रि०-ब, पहन लेना, ऊपर से छवाने की तैयारी करना, -पलान, छप्पर या खपरैल की छत की ठटरी या लकड़ी, बाँस आदि, वि०-दार,-टी।
ठाढ़ वि० पुं० खड़ा,-करब,-होब, स्त्री०-ढ़ि, प्र०-ढ़ै, बिना तोड़े या टुकड़े किये (भोजन आदि); वै० ठड़ा,-ढ़ी।
ठान सं० पुं० निश्चय;-ठानब, प्रतिज्ञा कर लेना, डटा रहना।
ठानब क्रि० स० निश्चय करना, प्रबंध करना, प्रे० ठनाइब,-नवाइब,-उब, सं० स्था (तिष्ठ)।
ठायँ सं० पुं० चोट की आवाज़,-से;-ठायँ, ज़ोर-ज़ोर से और व्यर्थ (बोलना) -ठायँ करब,-होब।
ठारी सं० स्त्री० ज़ोर की ठंढ,-होब,-परब; क्रि० ठरब (दे०)।
ठावें क्रि० वि० तत्काल ही, उसी स्थान पर, प्रारंभ में ही,-ठावें, यत्र-तत्र; दे० ठाउँ।
ठासब क्रि० स० भीतर घुसेड़ देना, खूब भर देना; बाध्य करना, प्रे० ठसाइब,-सवाइब,-उब।
ठिकरा सं० पुं० खपड़े का टुकड़ा, स्त्री०-री; मु० पैसा, थोड़ा साधन।
ठिकवाइब क्रि० स० ठीक कराना; वै०-उब।
ठिकान दे० ठे-।
ठिकाब क्रि० अ० ठीक होना, प्रे०-कवाइब,-उब।
ठिठकब क्रि० अ० ठिठकना।
ठिठुरब क्रि०अ० ठिठुरना, प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब।
ठिठोली सं० स्त्री० हँसी,-करब,-मारब, वै०-री।
ठिलिया सं० स्त्री० छोटा बड़ा; वै०-आ।
ठिहरी दे० ठे-।
ठीक वि० पुं० दुरुस्त, स्त्री०-कि,-ठाक;-करब,-होब, -रहब प्र०-कै, क्रि०ठिकाब (दे०)।
ठीका सं० पुं० ठेका;-देब,-करब;-केदार, जो ठीका ले, -री, ठीकेदार का काम।
ठीस सं० स्त्री० गर्व, रोब,-करब,-देखाइब, वै० -सि।
ठीहा सं० पुं० ठहरने का स्थान।
ठुनकब क्रि० अ० धीरे-धीरे रोना किसी चीज़ के लिए मचलना; प्रे०-कियाइब,-काइब, मार देना (बच्चे को)।

ठुमुकब क्रि० अ० धीरे-धीरे चलना, अड़-अड़ के चलना; तुल० ठुमुकि चलत रामचंद्र··· ।
ठुस्स सं० पुं० पादने की धीरे के आवाज़,-सें,-दें, धीरे से ।
ठूँठ वि०पुं०जिसमें पत्ती, डाल आदि न हो, स्त्री०-ठि ।
ठेंगा सं० पुं० डंडा; क्रि०-गब, डंडे के सहारे चलना; वै० ठेंघब ।
ठेंठी सं० स्त्री० शीशी या बोतल का मुँह बंद करने की लकड़ी,-देब,-लगाइब ।
ठेठ वि० पुं० शुद्ध, स्त्री०-ठि ।
ठेना सं० पुं० शरारत;-करब, स्त्री०-नी,-नी जगाइब, गड़बड़ शुरू करना, वि०-नहा,-ही, शरारती ।
ठेप वि० पुं० कुछ छोटा स्त्री०-पि ।
ठेस सं० स्त्री० पैर की उँगलियों में लगी चोट; -लागब ।
ठेहा सं० पुं० कोयर (दे०) काटने का स्थान, लकड़ी का टुकड़ा जिस पर गँडासे से कुट्टी काटी जाती है; स्त्री०-ही ।
ठेंठें सं० स्त्री० व्यर्थ की बातें, झिकझिक;-होब, -करब, बक-; वै० ठयँ-ठयँ ।
ठोंक-ठाँक सं० पुं० मारपीट,-होब,-करब ।
ठोंकब क्रि० स० ठोंकना, मारना, प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब ।
ठोंकानि सं० स्त्री० ठोंकाई, ठोंकने की क्रिया, पद्धति आदि, वै०-ई ।
ठोंठी सं० स्त्री० अन्न के दाने के ऊपर का खोल, रद्दी भाग ।
ठोंड सं० पुं० चोंच;-मारब,-लगाइब; क्रि०-ड़िआइब,-ढ़ि-, वैं०-ढ़ ।
ठोंडिआइब क्रि० स० ठोंड़ से थोड़ा काट देना (फल आदि); कुछ काटना, जूठा कर देना, वै० -ढ़ि-,-या- ।
ठोंढ़ी सं० स्त्री० ठुड्डी,-बनाइब, दाढ़ी बनाना ।
ठोकचा सं० स्त्री० आम की सूखी खटाई,-होब, सूख जाना (व्यक्ति का) ।
ठोकर सं० पुं० चोट;-खाब, मारा-मारा फिरना; -लागब,-लगाइब ।
ठोकवा सं०पुं० महुवे और आँटे की बनी हुई मोटी पूरी,-बनाइब,-पोइब (दे०), 'ठोंकब' से, क्योंकि इसे ठोंक-ठोंक कर बनाते हैं ।
ठोप सं० पुं० बूँद,-ठोप, बूँद-बूँद; यक-, दुइ- ।
ठोर्रा सं० पुं० भुना हुआ मक्के का वह दाना जो खिला न हो; स्त्री०-र्री, क्रि०-र्राब,-र्रिआब, वै० ठर्रा ।
ठोस वि० पुं० ठोस, स्त्री०-सि, भा०-पना ।
ठौकब दे० ठउकब ।
ठौर सं० पुं० स्थान,-देब, (बैठने, सोने आदि का) स्थान देना, वि०-रिग, दे० ठउरिग ।
ठौरिग दे० ठउरिग ।

ड

डंका सं० पुं० ढिंढोरा, युद्ध का बाजा,-पीटब -बाजब,-बजाइब, विज्ञापन होना या करना ।
डकिनी वि० डंकिन साइब का, इस्तमरारी (भूमि का बंदोबस्त जो उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में अभी तक चलता है ।)
डँगराब क्रि० अ० दुबला हो जाना, दे० डाँगर, वै० डहराब ।
डँटब क्रि० अ० डटना, प्रे०-टाइब, डाटब ।
डँटवाइब क्रि० स० डँटवाना; वै०-उब ।
डँटाइब क्रि० स० डाँट दिलाना, भा०-ई ।
डँठहा वि० पुं० जिसमें 'डाँठ' (दे०) बहुत हो, स्त्री० ही ।
डंड सं०पुं० दण्ड,-देब, होब, व्यर्थ जाना,-लगाइब, -कवंडल, दंड-कमंडल, सारा सामान ।
डंड-कवंडल सं० पुं० दंड एवं कमंडलु (दो मुख्य वस्तुएँ जो संन्यासी लेकर चलते हैं), सारा सामान ।
डडहिआ सं० स्त्री० बेदी जिसमें डंडा लगा हो, -लगाइब,-डारब,-छोड़ब ।
डंडा सं० पुं० डंडा,-मारब,-लगाइब,-डारब ।
डंडी सं० स्त्री० लिंग, तराज़ू की डण्डी;-मारब; पुं० सन्यासी जो दण्ड लिये हो;-स्वामी,-महराज ।
डंडेबाजी सं० स्त्री० कड़ी मार,-करब,-होब ।
डँड सं० पुं० डंड;-करब,-पेलब,-बइठक, डंड-बैठक ।
डँडकारब क्रि० अ० भाग जाना, धीरे से या चुपके से भागना ।
डँड़या वि० 'डाँड' (दे०) पर रहनेवाला, जंगली ।
डँडवार सं० पुं० दो घरों के बीच की दीवार; -छोड़ब,-डारब ।
डँडहा वि० पुं० डाँड (किनारे) का रहनेवाला, स्त्री०-ही, वै०-या ।
डँड़ाही सं० स्त्री० दंड, जुर्माना,-देब,-लेब, सं० दंड + आही ।
डँड़िआइब क्रि० स० निकालना, किनारे करना, 'डाँद' से; प्रे०-वाइब,-उब ।

डँड़िआव क्रि० अ० बाहर निकलना; प्रे०-इब, -उब।
डँड़ोई सं० स्त्री० छोटे-छोटे कच्चे फल।
डंफ सं० पुं० खूब फूला हुआ ढोल,-लागब, खूब फूल जाना, प्र०-फा,-भ, डम्म।
डँवरा सं० पुं० एक घास जो धान के खेत में होती है। क्रि०-राब, धान की फ़सल का ख़राब हो जाना।
डँसब क्रि० स० काट लेना (साँप आदि का), प्रे० -साइब, डँसवाइब, सं० दंश।
डँसा सं० पुं० एक बड़ी मक्खी जो वर्षा में होती और पशुओं को कार्तिक तक काटती है। सं० दंश।
डउँगी सं० स्त्री० टहनी।
डउआव क्रि० अ० अकेले रहकर (भूत प्रेतादि से) डरते रहना।
डउकब दे० चउँकब।
डउकाइब क्रि० स० चौंका देना, धोका देना, वै० -उब।
डउल सं० पुं० तरकीब, प्रबंध;-करब,-लागब, -लगाइब, वै० डौल।
डउवाब क्रि० अ० व्यर्थ में किसी अनुपस्थित व्यक्ति को पुकारते रहना; वै०-आव, दे० कउआव, बउआव।
डकडक व्यर्थ में घूमते रहने का क्रम,-करब, प्र० -क्क-।
डकवा दे० ढोकवा।
डकार दे० डेकार।
डक्कडक्क क्रि० वि० व्यर्थ में (घूमते रहना), धूप में निरर्थक (फिरते रहना);-करब, क्रि०-कडकाव।
डखना-पखना सं० पुं० अंग-प्रत्यंग,-उखरब, अंग-भंग हो जाना।
डखुरहा वि० पुं० द्वेषकरनेवाला, स्त्री०-ही, भा० -राही, द्वेष, ईर्षा।
डग सं० पुं० क़दम, पग,-भरब, जल्दी-जल्दी चलना; क्रि०-ब, हटना; प्रे०-गाइब,-उब, वै० डि-।
डगमग वि० अनिश्चित, गिरनेवाला, क्रि०-माब, प्रे०-गाइब, हिलना, हिलाना।
डगर सं० स्त्री० राह, पगडंडी, पुं०-रा, क्रि०-रब, -राब, रास्ता पकड़ना।
डगर-मगर क्रि० वि० इधर से उधर (हिलना), -होब,-करब।
डङरहा वि० पुं० दुबला पतला, स्त्री०-ही।
डङराब क्रि० अ० दुबला हो जाना, दे० डाङर।
डट्टा सं० पुं० डाट, शीशी या बोतल बंद करने की ठेंठी, स्त्री०-ट्टी,-देब,-लगाइब।
डढ़िआइब क्रि० स० जलाना; (व्यंग में) कर डालना, समाप्त करना; दे० डाढ़ा।
डढ़िआरा वि० पुं० दाढ़ीवाला, वै० द-,-यारा; कहा० बर भर-चूल्हा के फूँकै?
डपट सं० पुं० ज़ोर से बोलने की आदत;-राखब; क्रि०-ब,-टाइब।
डपकोरब दे० डभकोरब।
डपोर वि० पुं० मूर्ख,-संख, महामूर्ख; भा०-रई।
डपोरसंख वि० मूर्ख।
डफला सं० पुं० एक बड़ा बाजा जो लकड़ी से बजाया जाता है। इसे 'डफ' भी कहते हैं और इसके बजानेवालों को 'डफाली' (दे०), स्त्री०-ली -बाजब,-बजाइब।
डफाली सं० पुं० डफला बजानेवाला।
डबडबाब क्रि० अ० डबडबाना (आँखें), ऊपर तक भर जाना।
डबरा सं० पुं० लंबा चौड़ा मैदान जिसमें पानी भरा हो या भर जाता हो।
डबल वि० पुं० बहुत, तगड़ा, अं०।
डबिआ सं० स्त्री० डिबिया।
डब्बल सं० पुं० पैसा,-भर, ज़रा सा; अं० डबल।
डब्बा सं० पुं० डिब्बा, स्त्री०-बी;-ब्बी चढ़ाइब, अलग भोजन बनाना।
डभकउआ सं० पुं० डूबने की क्रिया; खूब पानी के नीचे पहुँच जाने की स्थिति,-मारब, वै० -कोर, कौवा।
डभका सं० पुं० धान या जड़हन जो पकनेवाला हो; अधपका।
डभकोरब क्रि० स० (लोटा या पानी को) खूब ज़ोर से धक्का देकर पानी भरना; प्रे०-राइब, भा० -कौआ।
डभकौवा दे०-कउआ।
डभक्का सं० पुं० पानी में डभ से गिरने या डूबने का शब्द,-मारब।
डभ्भ सं० पुं० पानी में गिरने का शब्द;-सें,-दें, वै०-म्भ।
डमकब क्रि० अ० डम-डम करना, प्रे०-काइब, -उब, बजाना।
डमकाइब क्रि० स० ज़ोर ज़ोर से पीटना या बजाना, वै०-उब, 'डम-डम' का शब्द करना।
डमडमाब क्रि० अ० डम-डम शब्द करना; प्रे० -माइब,-उब।
डमरा सं० पुं० प्रसिद्ध टापू अंडमन जहाँ जन्म कारावास के लिए लोग भेजे जाते थे; वै० डामर; -होब,-करब, ऐसा दंड होना, देना।
डमरू सं० पुं० पुराना बाजा जो शिवजी को प्रिय है,-बाजब,-बजाइब।
डमाडम्म क्रि० वि० ऊपर तक (भरब)।
डयरी सं० स्त्री० डायरी, रोज़नामचा;-भरब,-लिखब, अं० डायरी।
डर सं० पुं० भय,-करब,-लागब, क्रि०-राब,-राइब, -ब, वै० डेर,-रि,-भुताब, भूत के डर से आक्रांत हो जाना,-राँकुल, डरनेवाला, डरपोक, भयभीत, वै० डेराँ-।
डरवाइब क्रि० स० डराना, वै०-उब, डेर-।

डराव क्रि० स० डरना, घबराना; प्रे०-वाइब, डेरवाइब; वै० डे-।
डरैबर सं० पुं० (रेल या मोटर का) चलानेवाला; भा०-री,-रई, अं० ड्राइवर।
डलिआ सं० स्त्री० छोटी सुंदर टोकरी; वै०-या।
डली सं० स्त्री० छोटा टुकड़ा, सुपाड़ी (कटी हुई), -कत्था, पान का सामान।
डहकब क्रि० अ० तरस-तरस कर रोते रहना; प्रे० -काइब।
डहरब क्रि० अ० धीरे-धीरे चलना (पशुओं का), प्रे०-राइब; 'डहरि' से।
डहरि सं० स्त्री० पगडंडी; क्रि०-रब,-राइब,-रिआब।
डाँक सं० पुं० कै करने की इच्छा,-लागब, क्रि० -ब, कै करना,-ब- पोकब, बीमार पड़ना।
डाँट सं० स्त्री० भर्त्सना,-फटकार, क्रि०-ब, डाँटना
डाँटब क्रि० स० डाँटना, प्रे० डँटाइब,-टवाइब,-उब।
डाँठ सं० पुं० नाज समेत पौदा।
डाँड सं० पुं० हत्था, वै०-ड़ा, स्त्री०-ड़ी; सं० दंड।
डाँड सं० पुं० गाँव के बाहर का स्थान,-मेड़, सीमा, -काढब, कपड़े का फटा अंश काट कर शेप को फिर से सी देना।
डाँड़ सं० पुं० दंड,-देब,-लेब,-परब, सं० दंड।
डाँडी सं० स्त्री० तराज़ू का डंडा,-मारब, कम तौलना।
डाँड़े क्रि० वि० बाहर, मैदान में, घर से दूर, -ढाँड़े।
डाइनि सं० स्त्री० भूत की स्त्री, डायन,-लागब।
डाकखाना सं० पुं० पोष्ट आफिस, वै०-घर, डाक, चिट्ठी आदि+ख़ानाः (फ़ा०) घर।
डाकट सं० पुं० महत्पूर्ण काग़ज़,-आइब,-लाइब, अं० डाकेट।
ढाकमुंसी सं० पु० पोष्टमास्टर, डाक+मुंशी, लेखक।
डाका सं० पुं० लूटने का क्रम,-डारब,-परब, वै० डाँ-।
डाकिआ सं० पुं० पत्र लानेवाला, डाक ढोनेवाला, वै०-या।
डाकिनि सं० स्त्री० एक प्रकार की चुड़ैल, वै० -नी।
डाकू सं० पुं० डाका डालनेवाला।
डाङर सं० पुं० मरा हुआ जानवर, वै० डाँगर; क्रि० डङराब।
डाट सं० शीशी बोतल का कार्क, क्रि०-ब, भर लेना, खूब खा लेना।
डाट सं० पुं० इमारत में लगा हुआ डाट,-लागब, -लगाइब,-देब।
डाढब क्रि० स० जलाना, तग करना, प्रे० डढ़िआइब,-वाइब।
डाढा सं० पुं० आग;-लागब,-लगाइब, क्रि०-ढब।
डाबर सं० पु० लंबा चौड़ा मैदान जिसमें पानी भरता हो, वै० डबरा; वि० मटमैला, तुल० भूमि परत भा-पानी।
डाभी सं० स्त्री० नई जमी हुई फ़सल, अकुर, वै० डी-।
डामर सं० पुं० कालापानी,-होब,-करब, वै०-ल।
डायर वि० दाखिल,-करब,-होब, दायर।
डारब क्रि० स० डालना, छोड़ना, प्रे० डराइब, -रवाइब,-उब।
डारि सं० स्त्री० डाल;-पात, (डाल-पत्ता) सब कुछ, -रीं-डारीं, डाल डाल।
डाल सं० पुं० बाँस का टोकरा जिसमें विवाह के समय बधू के कपड़े, गहने आदि आते हैं। स्त्री० -ली।
डाली सं० स्त्री० उपहार;-लगाइब, उपहार सजाकर ले जाना,-लेब, -देब,-लाइब।
डावाँडोल वि० अनिश्चित,-करब,-होब, वै० डवाँ-।
डासब क्रि० स० बिछाना; प्रे० डसाइब,-उब, दे० उड़ासब।
डाह सं० स्त्री० ईर्ष्या,-करब, क्रि०-ब, वै०-हि, वि० -ही, सौतिया-, सौतों का सा ईर्ष्या-द्वेष।
डिउहार सं० पुं० डीह का देवता, ग्रामदेव,-होब, -बनब, पूज्य बन जाना, डटा रहना, डीह (दे०)+वार।
डिगंबर वि० पुं० नंगा, वस्त्रहीन, दिगंबर।
डिगना सं० पुं० मिट्टी का ठप्पा जिससे कुम्हार अपने कच्चे बर्तन पीटता है, वै०-वा, कोंहरडिगवा।
डिगब क्रि० अ० डिग जाना, गिरना, प्रे०-गाइब, -वाइब,-उब।
डिगर दे० नवडिगर।
डिगरी सं० स्त्री० मुकदमे में जीत;-होब,-करब,-देब, अं० डिक्री;-दार, जिसकी डिगरी हुई हो, वै० -गिरी।
डिग्ग सं० पुं० ऊँचा भाग या स्थान।
डिठवन सं० पुं० देवोत्थानी एकादशी का दिन, सं० देवोत्थान;-करब,-होब।
डिठिआँता वि० आँख से दूर;-होब, सं० दृष्टि+अंतर।
डिठिआर वि० पुं० देखनेवाला, दृष्टिवाला, सं० दृष्टि+वार, स्त्री०-रि।
डिठिबन्हवा सं० पुं० जादूगर; डीठ बाँध देनेवाला भा०-न्हई, सं० दृष्टि+बन्ध।
डिठोहरी सं० स्त्री० एक पेड़ और उसका फल जिसका तेल दवा के काम आता है।
डिडिआव क्रि० अ० व्यर्थ चिल्लाना या प्रार्थना करना, डीं-डीं करना, वै०-याब।
डिढ वि० पुं० हिम्मतवाला, दृढ़, भा०-ई,-ढाई; स्त्री०-ढ़ि; क्रि०-ढ़ाब, सं० दृढ।
डिढ़ाव क्रि० अ० धीरे-धीरे, हिम्मत करना, दृढ़ होना, प्रे०-ढ़वाइब,-ढब।

डिपाट सं० पुं० विभाग, महकमा, अं० डिपार्टमेंट।
डिब्बा सं० पुं० डिब्बा· स्त्री०-बी,-बिया, डिब्बी चढ़ाइब, अलग खाना पकाना।
डिभिआब क्रि० अ० अंकुर निकलना; दे० डीभी।
डिल्ल सं० पुं० बैल के गर्दन पर का ऊँचा मांसल भाग प्र०-ल्ला।
डिल्ली सं० स्त्री० दिल्ली मु० बहुत दूर स्थान; सं० देहली, दिल्ली।
डिवटी सं० स्त्री० नौकरी, काम,-देब, काम करना, हाजिरी देना अं० ड्यूटी।
डिवठी सं० स्त्री० दीया रखने का मिट्टी या लकड़ी का जगरूप (दे०) वै०-ड-।
डिसकूट दे० दिसकूट।
डिसमिस वि० अस्वीकृत, बरख़ास्त,-होब,-करब. प्र० डि-, अं०।
डिहरी दे० डेहरी,-रा।
डिहुली सं० स्त्री० छोटा डीह।
डीड सं० स्त्री० गर्वभरी बात,-मारब,-हाँकब।
डीठि सं० स्त्री० नज़र, दृष्टि, अनुभव, सं० दृष्टि।
डील सं० पुं० व्यक्ति ऊँचाई, व्यक्तित्व -लें-डीलें, प्रत्येक व्यक्ति पर.-डौल, लंबाई-चौड़ाई (व्यक्ति विशेष की) (अपने, उन के)-न, (अपने, इनके) निज बूते पर, व्यक्तित:।
डीह सं० पुं० खँडहर; खेत नहीं आबादी के भीतर का भाग;-डाबर, गाँव का कोई भी भाग,-होब, गिर जाना (मकान का), नष्ट होना (गाँव का), मूल स्थान (ब्राह्मण का)।
डुकवा दे० डोकवा।
डुगडुगिआ वि० स्त्री० गाय जिसके सींग हिलते हों, वै०-या।
डुगडुगी सं० स्त्री० बच्चों के खेलने का छोटा बाजा अनु० डुग-डुग, प्र०-ग-गा।
डुगुर-डुगुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (हिलना, चलना)।
डुगुरब क्रि० अ० धीरे-धीरे चलना; प्रे०-राइब, -टब, वै०-हुरब।
डुग्गी सं० स्त्री० छोटी ढोल,-पीटब, विज्ञापन करना -पिटाइब;-होब;-मुनादी, सरकारी विज्ञापन।
डुडुआ सं० पुं० कबड्डी का खेल;-खेलब,-होब।
डुड़ही सं० स्त्री० छोटी मछली।
डुपटा सं० पुं० दुपट्टा;-ओढ़ब।
डुबुक्की दे० डुबकी।
डुभकी सं० स्त्री० कढ़ी में डाली हुई उड़द की पकौड़ी।
डुमुक्क सं० पुं० डूबने का शब्द,-दें, ऐसे शब्द के साथ (डूबना), प्र०-क्की,-मारब,-खाब, डूबना।
डुमुर-डुमुर सं० पुं० डूबने उतराने की क्रिया, -होब,-करब।
डुहकब क्रि० अ० अकेले पड़े-पड़े लालायित होते रहना. वै०-हु-, प्रे०-काइब।
डूँड़ वि० पुं० (पौदा या पेड़) जिसका सिर कट गया हो, (पशु) जिसके सींग टूटे हों स्त्री०-ड़ी, -ढ़ि, क्रि० डुँडाब।
डूम-डाम दे० ऊम-डाम।
डेवढ़ी सं० स्त्री० घर के भीतर प्रवेश करने के पूर्व का स्थान जहाँ पहरेदार आदि बैठते हैं;-दार,ड्योढ़ी पर पहरा देनेवाला।
डेग सं० पुं० बड़ा पतुला (दे०), स्त्री०-ची।
डेड सं० पुं० बड़ा अनगढ़ बाँस का डण्डा· प्र० -डा।
डेढ वि० पुं० एक और आधा; प्र०-बढ़,-ढ़ा, डेढ़-गुना, स्त्री०-ढ़ि।
डेढ़ी सं० स्त्री० अनाज उधार देने की पद्धति जिसमें लेनेवाले को एक सेर का डेढ़ सेर देना पड़ता है। -बिसार, नाज का लेन-देन, दे० बिसार।
डेरा सं० पुं० टिकने का स्थान, समूह (नाचवालों का), घर-बार का सामान (चलने-फिरनेवाले लोगों का);-डारब, रहने के लिए सामान लगाना।
डेवढ़ सं० पुं० डेढ़ गुना;-ढ़ा, रेल का ऊँचे दर्जे का डिब्बा, क्रि०-ढब, डेढ़ा होना, रोटी का फूल जाना।
डेहरा सं० पुं० बड़ी डेहरी जो मिट्टी की बनाई जाती है और जिसमें नाज रखा जाता है। स्त्री० -री;-री-कोठिला, नाज का भंडार।
डैरी सं० स्त्री० डायरी (पुलीस आदि की),-भरब, खानापुरी करना, अं०।
डोंगा सं० पुं० नाव, स्त्री०-गी,-बोर, अयोग्य (जो -बोरे या डुबो दे), वै०-ङा।
डोभ सं० पुं० टाँका (कपड़े में लगा हुआ)-डारब; क्रि०-ब,-वाइब,-भै-डोभ, एक-एक डोभ, धीरे-धीरे (सीना या उधेड़ना)।
डोम सं० पुं० मेहतर, स्त्री०-मिनि।
डोरा सं० पुं० धागा -डारब,-परब स्त्री०-री, पतली रस्सी जिससे कुएँ में लोटा भरते हैं; क्रि०-रिआइब, रस्सी में बाँधकर (व्यक्ति को) ले जाना, सुई-, लोटा-डोरी लेब,-उठाइब, भीख माँगना।
डोरि दे०-लि।
डोलब क्रि० अ० हटना, चला जाना, प्रे०-लाइब, -उब,-लवाइब।
डोला सं० पुं० दुलहिन की सवारी,-निकारब, ज़बरदस्ती स्त्री को ले जाना, स्त्री०-ली।
डोलि सं० स्त्री० बाल्टी।
डौंकब क्रि० अ० चौंकना; प्रे०-काइब,-उब, वै० डउँ-, चउँ-।
डौंगी दे० डउँगी।
डौंरा दे० डँवरा।
ढौल सं० पुं० सिलसिला, तरकीब, प्रबंध,-लागब, -करब।

ढ

ढँचर-ढँचर क्रि० वि० ढीले-ढाले लकड़ी के सामान के हिलने की आवाज़ की भाँति,-करब,-होब।

ढँसाई सं० स्त्री० खाँसने की क्रिया, दे० ढाँसब।

ढउकब क्रि० स० मुँह बनाकर डाँटना, दे० ठउ-कब।

ढकचब क्रि० अ० बुरी तरह खाँसना, खाँस कर उलटी करना, वै० ढचकब।

ढकढक सं० पुं० ढीले हो जाने का शब्द, प्र० -क्क-क्क, ढकाढक्क,-करब,-होब, क्रि०-काब।

ढकढोरब क्रि० स० (कुएँ या तालाब को) मथना गंदा करना, वै०-ग-।

ढकना सं० पुं० ढक्कन; वि०-दार।

ढकब क्रि० अ० छिपना, ढकना, प्रे० ढा-, ढकाइब -उब,-वाइब।

ढकर-ढकर सं० पुं० (पहिये आदि की) ढीला होकर हिलने की आवाज;-करब,-होब, मु० बूढ़ा या बीमार होकर जर्जर हो जाने की अवस्था, वै० -पचर,-पहँच (पहले अर्थ में) ढचर-ढचर।

ढकवा सं० पुं० मूँज की बनी बड़ी टोकरी;-मउनी, छोटी बड़ी ऐसी टोकरियाँ, दे० मउना,-नी, वै० ढाका, स्त्री०-किआ।

ढकोलब क्रि० स० जल्दी-जल्दी और अधिक पी लेना, प्रे०-लाइब,-लवाइब।

ढकोसला सं० पुं० अंधविश्वास, व्यर्थ की बात; वि०-लहा,-ही।

ढक्कन सं० पुं० ढकना,-देब,-लगाइब, वि० -दार।

ढङ सं० पुं० ढंग, वि०-ङी, ढङी-गुनी, होशियार, गुन-ढङ, होशियारी, प्र० ढंग।

ढचरा सं० पुं० बुरा तरीका, व्यर्थ का नियम, वै० ढँ-।

ढड्ढा-पसार वि० पुं० इतना लंबा-चौड़ा कि सँभल न सके, स्त्री०-रि।

ढड्ढू सं० पुं० लंगूर;-यस, काला मुँह बनाये हुए, कुरूप, वै०-ढ्ढू।

ढनगब क्रि० अ० लुढ़कना, प्रे०-गाइब,-उब।

ढपना सं० पुं० ढकना।

ढपब क्रि० अ० मुँदना, बंद होना (आँख का), प्रे० ढापब, वै० ढँ-, ढाँ-।

ढपुनी दे० ढे-।

ढब सं० पुं० तरीका, हुनर, वि०-दार, बेढब, अनि-यमित, स्वतंत्र, विचित्र, अच्छा, अद्भुत।

ढबइल वि० गंदा (पानी), कीचड़वाला, मिट्टी भरा, वै० ध-।

ढबढभाब क्रि० अ० ढभढभ आवाज़ करना, प्रे० -इब, पीटना; अनु०।

ढरकब क्रि० अ० (द्रव का) गिर पड़ना, आकृष्ट होना प्रे०-काइब,-उब,-कवाइब,-उब।

ढरका सं० पुं० बाँस की पोंगी जिसका सामना कलम की भाँति कटा होता है और जो जानवरों को दवा पिलाने आदि के काम आता है, स्त्री०-की, -देब,-पिआइब।

ढरकावन सं० पुं० पानी जो किसी आगंतुक के कल्याणार्थ देवी-देवता को चढ़ाया जाता है, ढर-, धारि-(दे० धारि)।

ढरब क्रि० अ० ढलना, प्रे० ढारब, ढराइब,-वाइब, -उब भा०-राई।

ढरहर वि० स्त्री० गोल एव चिकनी; स्त्री०-रि।

ढर्रा सं० पुं० रास्ता, दस्तूर, नियम,-निकरब,-निका-रब,-धरब,-खुलब।

ढलढल वि० पुं० पतला (सना हुआ पदार्थ), स्त्री०-लि, क्रि०-लाइब, पतली सनी हुई वस्तु उँड़ेल देना; बुरी तरह एव अधिक हग देना।

ढलब क्रि० अ० उतरना, नीचे आना (आयु, जवानी), ढलना।

ढलर-ढलर क्रि० वि० फैला हुआ (द्रव या भोज-नादि);-करब,-होब।

ढलवाँसि दे० ढेल-।

ढलानि सं० स्त्री० ढाल की उतराई।

ढहब क्रि० अ० ढहना, गिर जाना (इमारत का), नष्ट होना, प्रे० ढाहब, ढहाइब,-उब।

ढहरब क्रि० अ० धीरे-धीरे सरक कर गिरना (मटर आदि का), प्रे०-राइब,-उब, भा०-राई, दे० ढहरब।

ढहराइब क्रि० स० सूप में रखकर साफ़ करना (चने, मटर आदि नाजों का), वै०-उब, प्रे०-रवाइब, भा० -राई।

ढाँका-तोपा वि० पुं० छिपा-छिपाया, दे० तोपब।

ढाँचा सं० पुं० ढाँचा,-च-पञ्जान, प्रारंभिक तैयारी।

ढाँसब क्रि० अ० बुरी तरह खाँसना, कभी-कभी 'ठासब' (दे०) के अर्थ में भी प्रयुक्त।

ढाँसी सं० स्त्री० ज़ोर की खाँसी,-आइब।

ढाइब क्रि० स० गिरा देना (दीवार आदि), प्रे० ढहाइब,-हवाइब,-उब।

ढाक सं० पुं० पलाश, वै०-ख।

ढाकब क्रि० स० ढकना, छिपाना, प्रे०-काइब,-कवा-इब, वै० ढाँ-।

ढाका सं० पुं० बंगाल का प्रसिद्ध नगर,-बगाला, दूर देश; वै०-खा।

ढाका सं० पुं० टोकरा, स्त्री० ढकिआ, वि०-यस, बड़ा भारी (मुँह),-यस मुँह बाइब।

ढाठी सं० स्त्री० आदत, खराब आदत,-परब ।
ढाढ़स सं० पुं० हिम्मत,-करब,-होब,-धरब ।
ढारब क्रि० स० ढालना, डाल देना (उत्तरदायित्व, तुहमत), प्रे० ढराइब,-रवाइब,-उब, भा० ढराई ।
ढाल सं० पुं० नीचापन (भूमि का), वि०-लू ।
ढालि सं० स्त्री० ढाल,-तरवारि, ढाल और तलवार; -बान्हब ।
ढाही सं० स्त्री० बच्चों के खेल में कौड़ी का ढेर; निधि, माल;-मारब, सारा माल उड़ा देना ।
ढिठाई सं० स्त्री० धृष्टता,-करब ।
ढिठाव क्रि० अ० हिम्मत करना, ढीठ होना, प्रे० -ठवाइब ।
ढिपुनी सं० स्त्री० चूँची (दे०) का मुँह फल का वह भाग जो पेड़ से जुड़ा रहता है; वै० ढे-।
ढिबढिबाव क्रि० अ० ढिब-ढिब की आवाज़ होना या करना; प्रे०-इब ।
ढिबरी दे० ढेबरी ।
ढिलढिल वि० पुं० कुछ-कुछ ढीला; स्त्री०-लि; -पुलपुल, ढीला-ढाला ।
ढिलवाही सं० स्त्री० ढीलापन;-करब,-होब ।
ढिलाव क्रि० अ० ढीला होना, लापरवाह हो जाना; प्रे०-लवाइब, ढीलब ।
ढिसमिस वि० समाप्त, विपरीत;-करब,-होब, अं० डिसमिस ।
ढींढ़ा सं० पुं० गर्भ; फूला हुआ पेट (गर्भ का) ।
ढीठ वि० पुं० हिम्मतवाला; स्त्री०-ठि, क्रि० ढिठाय (दे०) भा० ढिठाई ।
ढील वि० पुं० ढीला; क्रि० ढिलाव,-ब, स्त्री०-लि, -ढाल, बहुत ढीला ।
ढीलब क्रि० स० ढीला करना, छोड़ देना, त्याग देना, स्वतंत्र कर देना, नियंत्रण कम कर देना; प्रे० ढिलवाइब ।
ढीला दे० ढेला ।
ढीलो सं० पुं० जूँ,-परब ।
ढुकब क्रि० अ० छिपकर खड़ा रहना; कुछ पाने की आशा में खड़े रहना, प्रे०-काइब ।
ढुकानी सं०स्त्री० 'ढुकने' की आदत,-लागब, छिपा रहना,-देब ।
ढुनुकब क्रि० अ० गिर पड़ना; मर जाना, धीरे से या अकस्मात् मर जाना ।
ढुनुमुनी सं०स्त्री० गिरकर लोटने की क्रिया;-खाब, गिरना; वै०-न- ।
ढुरकब क्रि० अ० लालच में खड़े या बैठे रहना, दूसरे के यहाँ पड़े रहना; प्रे०-काइब ।
ढुरब क्रि० अ० झुकना, आकृष्ट होना, प्रे० -राइब ।
ढुरढुर वि० पुं० चिकना एवं गोल (नाज या फल), स्त्री०-रि ।
ढुरहुरी सं० स्त्री० पतला रास्ता,-लागब, रास्ता लगा रहना, होना, वै०-र- ।
ढुसकट दे० धुसकट ।
ढुहिआइब क्रि० स० ढूह (दे०) लगाना, एकत्र कर देना ।
ढूँढ़ब क्रि०स० तलाश करना; प्रे० ढुँढ़ाइब-ढ़वाइब, -उब ।
ढूँढ़ी सं० स्त्री० चावल के आँटे के बड़े-बड़े लड्डू जो प्रायः देहात में स्त्रियों की विदाई पर दिये जाते हैं ।
ढूँह सं०पुं० ढेर; प्र०-हा स्त्री०-ही, क्रि० ढुहिआइब; -लगाइब; वै० धूह ।
ढेंकी सं० स्त्री० चावल कूटने की लकड़ी की मशीन जो पैर से चलाते हैं,-चलब ।
ढेंकुरि सं०स्त्री० ढेकली पानी निकालने की तरकीब जिसमें दो लंबी लकड़ियों द्वारा काम लिया जाता है,-चलब,-चलाइब ।
ढेंपी सं० स्त्री० फल का वह भाग जो पेड़ से लगा रहता है । दे० ढिपुनी ।
ढेंसर वि० पुं० पकनेवाला (फल), अधपका; स्त्री० -रि, क्रि०-राब, अधपका होना ।
ढेबरी सं० स्त्री० मशीन का वह पुर्जा जिसमें तेल दिया जाय; दीया जिसमें मिट्टी का तेल जले ।
ढेर वि० पुं० अधिक, स्त्री०-रि; क्रि०-राब, अधिक होना, वै०-का,-की, प्र०-रै ।
ढेरा सं० पुं० एक जंगली फल ।
ढेरी सं० स्त्री० समूह, राशि (फल आदि की); क्रि०-रिआइब, ढेरी लगाना ।
ढेलवाँसि सं० स्त्री० रस्सी की बनी एक 'फँसरी' (दे०) जिससे ढेला दूर तक फेंका जाता है ।
ढेलहा वि० पुं० जिसमें ढेला बहुत हो (खेत), स्त्री०-ही ।
ढेला सं० पुं० मिट्टी का छोटा 'ढेर' जो उठाकर पत्थर की भाँति फेंका जा सके,-रौ, ढेलों द्वारा एक दूसरे को मारने की कार्रवाई, स्त्री०-ली ।
ढोंका सं० पुं० ढला, टुकड़ा; आँख का ढक्कन;-देब; -लगाइब; व्यं० चश्मा ।
ढोंढ़ी सं० स्त्री० नाभि ।
ढोइब क्रि० स० ढोना, ले चलना, प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब;-मूसब, जल्दी-जल्दी उठा ले जाना; चुरा लेना ।
ढोङ सं० पुं० ढोंग;-करब; वि०-ङी, ढोंग करनेवाला ।
ढोटा सं० पुं० लड़का ।
ढोल सं० पुं० ढोलक;-पीटब,-बजाइब, विज्ञापन करना; लघु०-क, वै०-लि ।
ढोवा सं० पुं० बोझ जो एक बार में जा सके, चक-, ढुइ-;-मूसा, जल्दी-जल्दी ले जाने या चुराने की क्रिया,-लागब,-करब ।
ढौकब दे० ढउकब ।

त

तइकै क्रि० वि० तब फिर, तदनतर, वै० तउकै।
तइसै क्रि० वि० तैसे, प्र०-सनै।
तउआब क्रि० अ० ताव में आना, आवश्यकता अनुभव करना; दे० ताव।
तउजा सं० पुं० उधार,-लेब,-देव,-करब, स्त्री० -जी।
तउर दे० तवर।
तउल सं० पुं० तौल, वज़न; क्रि०-ब, तौलना, परीक्षा करना, प्रे०-लाइब,-लवाइब,-उब,-ला, तौलनेवाला जो बाजार में बैठता हो, सं० तोलू, तुला।
तउलिया सं० स्त्री० तौलिया।
तउहीन दे० तवहीन।
तऊ क्रि० वि० तोभी, तिसपर भी।
तऊन दे० तमून।
तक अव्य तक, यहँ-, यहाँ तक, जहँ-, जहाँ तक, तहँ-, तहाँ तक,...।
तकतकाइब क्रि० स० चेतावनी देना, प्रोत्साहित करना, उकसाना; वै०-उब।
तकताल सं० पुं० खेल, व्यर्थ का काम,-करब।
तकथा सं० पुं० तख्ता; स्त्री०-थी,-थाँ, सदृश, बराबर, योग्य; तोहरे-, तुम्हारे सरीखा।
तकदमा सं० पुं० प्रमुत्व, अधिकार, वै०, -ग-।
तकदीर सं० स्त्री० भाग्य,-री, भाग्य संबंधी, भाग्यशाली; वै०-ग-।
तकधिन सं० पुं० तबले का शब्द, प्र० तकाधिन, ताक धिनाधिन, वै० तग-।
तकमा सं० पुं० तमग़ा,-लगाइब,-पाइब, वै० तगमा।
तकब क्रि० अ० ताकना; दे० ताकब।
तकरार सं० स्त्री झगड़ा, बहस,-करब,-होब, वह खेत जो बिना जोता पड़ा हो; वि०-री, तकररिहा।
तकरुरी सं० स्त्री० नियुक्ति,-होब,-करब।
तकलीफ सं० स्त्री० कष्ट, दुःख,-देब,-पाइब।
तकसीर सं० स्त्री० गलती, अपराध;-होब, -करब।
तकाइब क्रि० स० तकाना, ताकने की प्रेरणा करना, ताकने में सहायता करना, वै०-उब, प्रे० तकवाइब।
तकाई सं० स्त्री० ताकने की क्रिया, आदत आदि, वै० तकवाई।
तकादा दे० तगादा।
तकिआ सं० स्त्री० तकिया,-लगाइब।
तकुआ दे० टेकुआ।
तकैया सं० पुं० ताकनेवाला, रखवाली करनेवाला; प्रे०-कवैआ।
तक्कर वि० परेशान,-करब,-होब, सं० तक्र।
तखत सं० पुं० तख्त, स्त्री०-ती; वै०-ता, तकथा।
तखरी सं० स्त्री० दे० थकरी।
तगड़ा वि० पुं० बलवान, स्त्री०-ड़ी, क्रि०-ब, तगडा होना।
तगदीर दे० तकदीर।
तगमा दे० तमगा।
तगाइब क्रि० स० तागा लगवाना, सिलाना, प्रे० तगवाइब, वै०-उब।
तगादा सं० पुं० तकाज़ा,-करब,-लेब; वि०-दगीर, तकाज़ा करनेवाला।
तगार सं० पुं० कड़ाही, बडी थाली, स्त्री०-री, प्र० -रा।
तग्गी सं०स्त्री० पतला तागा या रस्सी,-लगाइब।
तच्च दे० टच्च।
तज सं० पुं० एक जंगली पेड़।
तजब क्रि० स० छोड़ना, त्याग देना; प्रे०-जाइब, -उब; सं० त्यज्।
तजबिज सं० पुं० फर्क; अंतर,-होब,-परब।
तजबीज सं० स्त्री० प्रस्ताव, मुकदमे का फैसला, -करब, क्रि०-ब, निश्चय करना; अर० तजवीज़ (प्रस्ताव)।
तजरबा सं० पुं० अनुभव;-करब,-होब, वि०-कार, अनुभवी, वै०-जु-।
तट दे० टट।
तड़कब क्रि० अ० टूट जाना, जोर-ज़ोर से बोलना, डाँटना, प्रे०-काइब,-उब, तोड़ देना (लकड़ी को बीच से), मार देना।
तड़क-भडक सं० पुं० आडम्बर;-की-की देव, धमकाना।
तड़का सं०पुं० बघार;-देब,-लगाइब, बड़ा सवेरा, -कें, बड़े सवेरे।
तड़कि सं० स्त्री० छत में लगनेवाली लकड़ी, कटी हुई लंबी लकड़ी।
तड़कुल दे० तरकुल।
तडक्की सं० स्त्री० नामवरी, शाबासी, शोहरत; -होब,-करब।
तड़खर वि० पुं० गर्म (व्यक्ति),-परब,-होब; वै० -र-।
तडतड़ वि० पुं० तेज़, बोलने में चतुर, फुर्त, स्त्री० -ड़ि।
तड़ातड़ क्रि० वि० बिना रुके (मार आदि के लिए); बं० ताड़ाताड़ि।

तत संबो० बैलों को दाहिने घूमने का आदेशात्मक शब्द; क्रि०-कारब, आगे बढ़ाना, घुमाना, दे० बहकारब, वै० तता, बायें ओर घुमाने के लिए 'ब' बोलते हैं।

ततइब क्रि० स० (नाज को) हलका और बिना तेल, घी आदि के भूनना, 'तात' (दे०) से प्रे० -वाइब,-उब।

ततकारब क्रि० स० हाँकना, बैलों को तेज़ करना; दे० बहकारब।

ततकाल क्रि० वि० तुरंत, प्र०-लै, तुरंत ही सं० तत्काल।

ततबीर सं० स्त्री० तदबीर, योजना,-करब,-लगाइब,-लागब; वि०-री,-बिरिहा, तदबीर करनेवाला।

ततलामतूल संबो० लड़कों के खेल में प्रयुक्त एक शब्द जिसे ज़ोर-ज़ोर से कहकर वे एक दूसरे का हाथ पकड़े घूमते हैं, वै०-लम-; इसके आगे 'भाई' और जोड़ देते हैं, उदा०-भाई-।

ततारब क्रि० स० खूब गर्म करना (नाज का), तङ्ग करना, कष्ट देना तात (दे०) से, शायद दूसरे अर्थ में 'तातार' से (?)।

तदारुक सं० स्त्री० दंड, काट,-करब,-देब, वै० -कि।

तन सं० पुं० शरीर;-मन धन, सब कुछ।

तनगब क्रि० अ० कूदना, झट से उचक जाना; किसी बात पर राज़ी न होना; प्रे०-गाइब।

तनदेही सं० स्त्री० तत्परता,-करब।

तनब क्रि० अ० तन जाना, अकड़ जाना; प्रे० तानब, तनाइब, तनवाइब,-उब।

तनिआब क्रि० अ० अकड़ के खड़ा होना; प्रे० -वाइब (छाती-, छाती निकाल के खड़ा होना) 'तन' से ?

तनिक वि० पुं० थोड़ा, प्र०-का,-कै,-कौ,-भर, थोड़ा सा, वै०-नी,-नुक।

तनी क्रि० वि० ज़रा, उदा०-सुनौ,-बैठौ,-तुनी, थोड़ा-बहुत, थोड़ा-थोड़ा।

तन्नाब क्रि० अ० अकड़ना, टेढ़ा बोलना, 'तनब' का प्र० रूप।

तप सं० पुं० तपस्या,-करब, सं०।

तपनि सं० स्त्री० गर्मी,-होब,-करब, सं० तप्।

तपब क्रि० अ० प्रभाव दिखाना (व्यक्ति का), सख्ती करना।

तपवाइब क्रि० स० तापने में मदद करना, लकड़ी आदि जलाकर किसी को गर्म करना, दे० तापब वै०-पाइब,-उब।

तपसी सं० पुं० तप करनेवाला;-क काँटि यस, दुबला-पतला (व्यक्ति), सं० तपस्वी।

तपहा सं० पुं० एक नदी जो अयोध्या के पास बहती है।

तपाइब दे० तपवाइब।

तपिस्या सं० स्त्री० तपस्या, वै०-स्सा, वि०-स्सी, तपस्वी; सं०।

तपोभूमि सं० स्त्री० तपस्वियों का स्थान; सं०।

तब क्रि० वि० उस समय फिर, प्र०-बै,-बौ,-हुँ, -ब्बै,-ब्बौ, तब भी,-कै, उस समय का।

तबदील सं० पुं० परिवर्तन, बदली, भा०-ली।

तबय क्रि० वि० तभी, वै०-बै, प्र०-ब्बै।

तबलची सं० पुं० तबला बजानेवाला।

तबला सं० पुं० प्रसिद्ध बाजा,-बजाइब।

तबा सं० पुं० हृदय, जी, जेस-कहै, जैसा मन कहे, जेस-होय, जैसी इच्छा हो।

तबालति दे० तवालति।

तबाह वि० परेशान, नष्ट;-करब,-होब, भा० -ही।

तबियत सं० स्त्री० मिजाज़, इच्छा;-दार, शौकीन; प्र० तबीयत।

तबीज सं० स्त्री० सोने या चाँदी का एक गहना जो गले या कलाई में पहनते हैं, तावीज़।

तबेला सं० पुं० अस्तबल।

तबै दे० तबय।

तबो क्रि० वि० तब भी; प्र०-बौ,-ब्ब,-ब्बौ; कविता में "तबहुँ, तबहूँ"।

तमंचा सं० पुं० पिस्तौल;-दागब,-चलाइब,-मारब।

तमकब क्रि० अ० गर्म होना, क्रोध में आना।

तमकुहा वि० पुं० तम्बाकू का अभ्यस्त; स्त्री०-ही; वै०-खु-।

तमगा सं० पुं० दे० तकमा।

तमतमाब क्रि० अ० गर्म हो जाना, क्रुद्ध होना।

तमस्सुक सं० पुं० ऋण संबंधी अदालती काग़ज़; -लिखब,-धरब।

तमहा सं० पुं० ताँबे का छोटा बर्तन, लोटा; सं० ताम्र+हा (वाला)।

तमाकू सं० स्त्री० तंबाकू; वै०-खू, वि० तमकुहा, -ही (दे०)।

तमाचा सं० पुं० चपत;-मारब,-लगाइब; मु० -लागब, बड़ा दुःख एवं आश्चर्य होना।

तमाम वि० पुं० सारा, बिलकुल; मु०-होब, समाप्त होना, थक जाना, नष्ट होना;-मी, अंतिम (रसीद आदि) प्र०-मै,-मो; साल-तमामी, सालभर का (देना, किराया आदि)।

तमासबीन सं० पुं० दर्शक, तमाशा देखनेवाला।

तमासा सं० पुं० तमाशा, दृश्य;-होब,-करब।

तमीज़ि सं० स्त्री० विवेक, सद्व्यवहार; वि०-दार।

तमून सं० पुं० ताऊन; प्लेग;-परब; वि० तमुनहा (जिसे ताऊन हुआ हो);-ही, वै० ता-,ताउन, तऊन।

तमूरा सं० पुं० तंबूरा,-बजाइब।

तमेर सं० पुं० ताँबे का काम करनेवाला, बर्तनों की मरम्मत करनेवाला, वै०-रा, स्त्री०-रिनि; सं० ताम्र+एर, जैसे काम से कमेरा (दे०)।

तमोली सं० पुं० पान बेचनेवाला, स्त्री०-लिन; सं० तांबूल (पान)।
तय वि० निश्चित, समाप्त,-करब,-होब, वै० तै,-यँ।
तयार वि० पुं० तैयार;-करब,-होब,-रहब, स्त्री० -रि, भा०-री, प्र० तइयार।
तरंतार सं० पुं० मुक्ति,-करब,-होब।
तर अव्य०नीचे,-परब, कम होना;प्र०तरें,-हुँत,-ऊपर, ऊपर नीचे,-उँछी, जुए (दे० जुआ) के नीचे लगी हुई लकड़ी।
तरई सं० स्त्री० तारा; नरई-, कोई भी (वंशवाला); सं० तारा।
तरकिहार सं० पुं० तरकी बनानेवाला; एक जाति; स्त्री० रिनि।
तरकी सं० स्त्री० स्त्रियों के कान में पहनने का एक आभूषण जिस पर तारे का आकार बना होता है; सं० तारा + की।
तरकीब स० स्त्री० उपाय;-करब,-लगाइब; वै०-बि।
तरकुल स० पुं० ताड़ का पेड़;-यस, बहुत लंबा।
तरक्की स० स्त्री० उन्नति; प्र०-इ-।
तरखर वि० पुं० बात करने में तेज़ या गर्म; -परब, गर्म बात करना, धमकी देना।
तरछट सं० पुं० किसी पेय पदार्थ के नीचे का भाग, तर (नीचे)+छूँटब (दे०), वि०-हा, जिसमें तरछट हो।
तरज सं० पुं० विधि, प्रणाली, तर्ज़; वि०-दार।
तरजुमा सं० पु० अनुवाद;-करब,-होब।
तरफ सं० पु० ओर;-दार, पक्ष करनेवाला;-दारी पक्षपात।
तरब क्रि० अ० तरना; प्रे० तारब, घी या तेल में भूजना; प्रे०-वाइब।
तरमीम सं० स्त्री० परिवर्तन,-करब,-होब, यह शब्द मुकदमों के संबंध में प्रयुक्त होता है।
तरवा सं० पु० तलवा, वै० तरुआ;-क धूरि, तुच्छ, सं० तल।
तरवारि स० स्त्री० तलवार, "जहाँ काम आवै सुई कहा करै तरवारि ?", सं० तर्वार।
तरस सं० पुं० दया,-करब,-खाब, प्र० तरास।
तरसब क्रि० अ० तरसना; प्रे०-साइब,-उब; सं० तृष् (प्यासा रहना)।
तरह अव्य० भाँति।
तराई सं० स्त्री० पहाड़ के नीचे का देश; वि० तरइहा, ऐसे प्रांत का, तर (दे०) से, स० तल।
तराजू स० पुं० तराज़ू।
तराव क्रि० अ० नीचे जाना, 'तर' (दे०) से।
तरायल वि० नीचे रहनेवाला; अधीन।
तरावट सं० स्त्री० तर होने का गुण।
तरास सं० पुं० कष्ट, दया, तर्स,-देब,-खाब,-करब, सं० 'त्रास' तथा 'तर्स' दोनों को एक कर दिया है।
तरासब क्रि० स० काटना।
तरिवर सं० पुं० पेड़; फलवाला पेड़, सुंदर पेड़; सं० तरुवर।
तरी सं० स्त्री० पुराना एकत्रित किया हुआ धन; निधि;-होब,-रहब; 'तर' (नीचे) से=नीचे गड़ा हुआ धन,-तापड़ी; बचा खुचा धन, वै० तड़ी-।
तरीख सं० स्त्री० तारीख;-परब,-डारब, वै० ता-।
तरे क्रि० वि० नीचे; प्र० तरें (नीचे ही), तरेंतर, नीचे ही नीचे;-परब, कम महत्त्वपूर्ण होना।
तरेरब क्रि० स० घूर-घूर कर ताकना, क्रोध से देखना।
तरैहा वि० पुं० तराई का रहनेवाला, वै० तरइहा (दे० तराई)।
तरोई सं० स्त्री० भिंडी, तरोई, जल-, मछली।
तरौंछी सं० स्त्री० जुआठा (दे०) के नीचे लगी हुई लकड़ी, वै० तरउछी (दे० तर), 'तर' से।
तलख वि० पुं० तेज़ (नमक), अधिक खट्टा या मीठा;-होब।
तलफब क्रि० अ० किसी व्यक्ति या वस्तु के अभाव में कष्ट पाना, प्रे०-फाइब।
तलब सं० स्त्री० वेतन, बुलावा,-तनखाह, प्राप्ति, -होब, बुलाया जाना, प्र०-बी (दूसरे अर्थ में)।
तलबाना सं० पुं० किसी को कचहरी में बुलाने की फीस; चपरासी की उजरत।
तलबी सं० स्त्री० आवश्यक बुलावा, क्रि०-बिआइब, आज्ञा देना।
तलरी सं० स्त्री० तलैया, छोटा तालाब, ताल-, छोटे-बड़े सभी गड्ढे।
तलसवाइब क्रि० स० तलाश कराना; 'तलासब' का प्रे० रूप; भा०-ई, तलाश कराने की क्रिया, उसका ढंग, पारिश्रमिक आदि।
तलहा सं० पुं० वह जानवर जो ताल या नदी में घोंघे (दे० घोंघा) के भीतर पाया जाता है, 'ताल' से (ताल+हा=ताल वाला)।
तलातल सं० पुं० पृथ्वी के नीचे का एक काल्पनिक भाग जो रसातल के ऊपर है।
तलाव सं० पुं० तालाब, स्त्री० ई, तुल० सिमिटि -सिमिटि जल भरै तलावा।
तलास सं० स्त्री० खोज,-करब, क्रि०-ब, खोजना, -सी, घर या व्यक्ति की तलाशी जो चोरी के संदेह में होती है,-सी लेब,-करब,-देब,-होब।
तलिआ सं० स्त्री० छोटा सा ताल; वै०-या।
तलीका सं० पु० तलाशी;-लेब।
तलीन वि० पुं० तैयार (प्रबंध आदि),-होब, करब, वै०-म।
तलैआ सं० स्त्री० दे० तलिया, वै०-या।
तव अव्य० तो, वै० तौ।
तवन वि० पुं०वही; स्त्री०-नि, प्र०-नै,-नौ, 'जवन' (जो) के साथ प्रयुक्त।
तवर सं०पुं० तरीका, तौर, वै०-उर।

तवान सं० पुं० दण्ड के रूप में लिया गया द्रव्य; -देव,-परव।
तवायफ सं० स्त्री० वेश्या।
तवालति सं० स्त्री० तकलीफ, कष्ट;-करव,-होव।
तस वि० पुं० तैसा जस . तस; प्र० तइसन,-सै, -सनै,-सस (वैसे वैसे)।
तसवीर सं० स्त्री० चित्र, वै०-रि।
तसमई सं० स्त्री० खीर; यह शब्द साधुओं द्वारा ही प्रयुक्त होता है।
तसला सं० पुं० बड़ा सा कटोरा; स्त्री० ली।
तह सं० पुं० तह; पर्त, रहस्य;-परव,-रहव, भेद होना, रहस्य रहना; तहैं-तह, एक-एक पर्त।
तहदर्द वि० पुं० ताज़ा, नया (कपड़ा या कागज़); प्र०-र्दै।
तहवील सं० स्त्री० कोष; जमा किया हुआ धन; -दार, तहसील का वह कार्यकर्त्ता जो जमा का हिसाब रखता है।
तहरी सं०स्त्री० हरे मटर, आलू आदि की खिचड़ी, -चढ़ाइब, भोजन का अनावश्यक प्रबंध करना।
तहवाँ क्रि० वि० वहीं; प्र०-वैं।
तहस-नहस वि० नष्टप्राय, परेशान,-करव,-होव।
तहाँ क्रि० वि० वहाँ; प्र०-हैं,-हौं।
तहाइब क्रि० स० तह करना; प्रे०-हवाइब, वै० हिआइब,-याइब,-उब।
तहिआ क्रि० वि० ताकि, तिस दिन, उस रोज; जहिआ ..तहिआ, जिस दिन ..उस दिन, प्र० -यै।
तहैं क्रि० वि० वहीं, उसी स्थान पर;-हौं, वहाँ भी, वै०-हवैं।
ताइब क्रि० स० मिट्टी से बंद करना, गीली मिट्टी या आटे से बर्तन या 'डेहरी' (दे०)का मुँह बंद कर देना,-तोपब,-मूनब, सुरक्षित करना, बचाकर रखना प्रे० तवाइब,-उब; वै०-उब।
ताउन सं० पुं० दे० तमून।
ताक सं० पुं० घात,-मेँ रहब, ताक में रहना।
ताकति सं० स्त्री० ताक़त, शक्ति, वि०-दार, वै० -गति।
ताकब क्रि० अ० ताकना, देखना, रखवाली करना, प्रे० तकाइब।
ताक-तूक सं० पुं० एक दूसरे की प्रतीक्षा (किसी काम के प्रारम्भ करने में), ढील-ढाल, टालमटोल, -करव,-होव।
ताख सं०पुं० ताक; संख्या जो असम हो, जैसे ३, ५, ७, जूस-ताख, खेल जिसमें बच्चे कौड़ियाँ हाथ में छिपाकर एक दूसरे को बुझाते हैं, दे० जूस, पहले अर्थ में वै० ताखा।
ताखा सं० पुं० ताक, आला जो दीवार में बना हो।
ताग सं० पुं० धागा; पतला भाग (कपड़े या डंठल आदि का); तागै-ताग, एक-एक करके, थोड़ा-थोड़ा (एकत्र करना),-पाट, वह रंगीन धागा जो ब्याह में जेठ वधू के ऊपर डालता है,-डारब; ताग+पाट (वस्त्र)।
तागति दे० ताकति।
तागब क्रि० स० धागा डालना, सीना, प्रे० तगाइब,-उब।
ताजा वि० पुं० ताज़ा स्त्री०-जी; प्र०-जै।
ताजिया सं० पुं० ताजिया जो मुसलमान मुहर्रम में सजाते हैं;-उठब,-बैठब, दे० दाहा।
ताजी सं० स्त्री० कुत्तों की एक जाति।
ताजुक सं० पुं० ताज्जुब, आश्चर्य, वै०-ब।
ताड़ सं० पुं० ताड़ का पेड़।
ताडका सं० स्त्री० प्रसद्धि राक्षसी जिसका राम ने वध किया था, वै०-ड़ुका।
ताडब क्रि० स० ताड़ लेना, भाँप जाना।
ताड़ी सं० स्त्री० ताड़ के पेड़ से निकलनेवाला रस, हथेली से बाँह ठोंकने की क्रिया,-ठोंकब;-चुआइब, -पियब।
तात वि० गर्म (भोजन का पदार्थ), प्र०-तै, तातै-तात-गर्मागर्म।
ताधिन सं० पुं० तबले का शब्द;-ताधिन होब, ऐसी ध्वनि होना प्र० ताकधिनाधिन।
तान सं० स्त्री० गीत की वह पंक्ति जो बार-बार दुहराई जाय -लगाइब, बात को बढ़ाना,-बीन करब, प्रयत्न करना,-तून, तरकीब, वि०-नी, व्यर्थ का आंडबर करनेवाला।
तानब क्रि० स० तानना, सख्ती करना, दण्ड देना; प्रे० तनाइब,-नवाइब।
ताना सं० पुं० व्यङ्ग,-मारब, कटाक्ष करना।
तानी वि० तानवाला, व्यर्थ के लिए बात बढ़ानेवाला; दोनों लिंगों में यह एक सा रहता है। दे० तान।
ताप सं० पुं० मछली पकड़ने का टोकरा जिसमें दोनों ओर छेद होते हैं; वै०-पा,-लगाइब, ताप की सहायता से मछली पकड़ना।
तापब क्रि० अ० तापना, शरीर को गर्म करना, प्रे० तपाइब,-पवाइब,-उब।
तापस सं० पुं० संन्यासी।
ताफता सं० पुं० एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा (सा०)।
ताब सं० पुं० बल, शक्ति (शारीरिक), आब-, काम करने की शक्ति, आब-सें, सशक्त।
ताबा सं० पुं० अधिकार, प्रभाव,-बे में, अधीन।
ताबीज दे० तबीज।
ताम सं०पुं० ताँबा, प्र०-मा, सं०ताम्र, दे०तमहा।
तामून दे० तमून।
तार सं० पुं० धागा; किसी धातु का पतला लंबा टुकड़ा; तार द्वारा भेजा समाचार,-पठइब,-देब -मारब,-लगाइब;-भाठ, किसी प्रकार निर्वाह; कठिनता का जीवन,-भाठ करब, होब।

तारब क्रि० स० तारना,-गारब, किसी प्रकार पूरा करना, नुकसान भरना, कसके काम लेना, दुःख देना, प्रे० तराइब,-रवाइब,-उब।
तारू सं० पुं० तालू, सं० तालु।
ताल सं० पुं० तालाब, सङ्गीत का ताल;-तलरी (दे०), सुर-,-सुर,-बैठब, ठीक प्रबन्ध हो जाना, -बैठाइब,-करब, नष्ट कर देना (घर, गाँव आदि)।
ताला सं० पुं० ताला, कुंजी-, ताला-कुंजी;-क भित्तर, बंद, सुरक्षित,-मारब,-लगाइब,-देब।
ताव सं० पुं० आवश्यकता, पकने या तैयार होने की स्थिति, कागज़ का पर्त,-पाइब,-मिलब,-लागब, क्रि० तउआब, यक-, दुइ-।
तावा सं० पु० तवा, वि० ढका या बंद,-तोपा, सुरक्षित।
तावान सं० पु० जुर्माना, वह मूल्य जो निश्चित समय के बाद देना पड़े,-देब,-लेब,-लागब।
तास सं० पु० ताश, तिन-तसवा, इधर का उधर, -लगाइब, इधर का उधर लगाना।
तासा सं० पुं० एक बाजा जिसमें एक ओर चमडा लगा होता है।
ताहम क्रि० वि० तब भी, तिस पर भी, ऐसा होने पर भी।
तिउरा सं० पुं० एक प्रकार की सरसों जिसका तेल खाने के काम में नहीं केवल लगाने या जलाने में प्रयुक्त होता है।
तिउराइन सं० स्त्री० तिवारी की स्त्री, वै०-नि।
तिकड़म सं० पुं० चाल, तरकीब, वि०-मी।
तिकतिक सं० पुं० "तिक-तिक" शब्द, जानवर को हाँकने का शब्द, वै०-ग-ग।
तिकतिकाइब क्रि० स० तिकतिक करना; हाँकना, उत्तेजित करना; वै०-ग-गाइब।
तिक्की सं० स्त्री० ताश जिस पर तीन चिह्न हों, वै० -ग्गी।
तिखरब क्रि० अ० स्पष्ट होना प्रे०-खारब, स्पष्ट करना (बात का); भा० तिखार।
तिखार सं० पुं० स्पष्टीकरण,-करब,-होब, क्रि० -ब, प्रे०-खरवाइब, प्र०-ड़।
तिगुना वि० पुं० तीन गुना, स्त्री०-नी; सं० त्रिगुण।
तिग्गी दे० तिक्की।
तिजरा सं० पुं० ज्वर जो तीसरे दिन चढ़े, वै० -रिआ, सं० त्रि+ज्वर।
तिडकाइब क्रि० स० हटा देना (व्यक्ति को), प्रे० -कवाइब।
तितऊ वि० पुं० कड़वा (फल), इसी प्रकार 'मिठऊ' भी फल के लिए आता है।
तितलौकी स० स्त्री० कडुई लौकी; तीत (दे०)+ लौकी।
तितवाइब क्रि०स० कड़वा कर देना, वै०-ढब; सं० तिक्त।
तिताब क्रि० अ० कडुआ होना,-लगना, 'तीत' से; सं० तिक्त; प्रे०-तवाइब।
तितिला सं० पुं० एक गीत जो प्रायः जाँत चलाते समय स्त्रियाँ गाती हैं।
तितिली सं० स्त्री० तितली, एक छोटा जगली पौदा जो गर्मियों में प्रायः खेतों में उगता है। इसके बीजों से तेल निकालकर जलाने के काम में लाते हैं।
तिती-तिती सं० स्त्री० निंदा के शब्द; निंदा,-होब, -करब।
तित्तिर सं० पुं० तीतर; वै० तीत्तिर, तित्तिल; पहे०-तित्तिर के दुइ आगे-, तित्तिर के दुइ पाछे-, बूझौ कुलि कै तित्तिर ? (तीन) सं०।
तिदरा वि०पुं० तीन दरवाला (घर), सं०त्रि+दर।
तिथा सं० पुं० विश्वास, निश्चय,-परमान, ठिकाना, भरोसा,-होब,-करब।
तिथि सं०स्त्री० महीने का दिन (चंद्रमा की गणना से), किसी मृत व्यक्ति की स्मृति में किया भोजन, -खाब,-खवाइब; सं०।
तिनका स० पुं० घास का तिनका।
तिन्ना सं० पुं० एक प्रकार का चावल जो तालाब में होता है, स्त्री०-न्नी,-क चाउर, फलाहार का चावल।
तिपाई सं० स्त्री० तिपाई, तीन पैरवाली बेंच, स० त्रिपाद।
तिय सं० स्त्री० स्त्री; वै०-या (कविता में प्रयुक्त), प्र० ती-,सं० स्त्री।
तियाला सं० पुं० तीसरा व्यक्ति, प्र०-लै,-यलवै।
तिरखा सं० स्त्री० प्यास,-होब,-लागब; सं० तृषा, मा० तीस।
तिरछा वि०पुं०तिर्छा, स्त्री०-छी, क्रि०-ब,-इब,-उब, तिरछा होना,-करना।
तिरवाइब दे० तिराब।
तिरवाह सं० पुं० नदी के किनारे का क्षेत्र, गाँव आदि;-वहा, ऐसे क्षेत्र का रहनेवाला, सीधा-सादा, सं० तीर+वाह,-हें, ऐसे क्षेत्र में।
तिरसठि सं० स्त्री० तिरसठ, सं० त्रिषष्ठि।
तिरसुति सं० स्त्री० जनेऊ के तीन सूत, एक जनेऊ (जोड़ा नहीं); सं० त्रिसूत्र।
तिरसूल सं० पुं० त्रिशूल; सं०।
तिरहुत सं० पुं० तिरहुत का क्षेत्र,-तिआ, वहाँ का निवासी; सं० तीर-भुक्त।
तिराब क्रि० अ० किनारे पहुँचना, मु० समाप्त करना, पूरा कर डालना; प्रे०-रवाइब,-उब,पैसे का नुकसान पूरा करना, दे० तीर, स०।
तिरिआ सं० स्त्री० स्त्री, महिला, पहे० पुरुब देस से आई-, अन्न खाय पानी कै किरिआ।
तिल सं० पुं० तिल, स्त्री०-ली, क्रि० वि०-लै-तिल, थोड़ा-थोड़ा; माघ तिलै-बाढ़ै, फागुन गोड़ा काढ़ै; सं०।

तिलक सं० पुं० टीका (मत्थे का); स्त्री० शादी के पूर्व का कृत्य जिसमें ससुराल के लोग भावी वर को द्रव्य, नारियल आदि समर्पित करते हैं; इस दूसरे अर्थ में वै०-कि;-हरु, जो लोग तिलक लेकर आवें,-लगाइब,-देब; दूसरे अर्थ में,-चढ़ब,-चढ़ाइब, -लाइब,-धरब,-आइब।

तिलमिलाव क्रि० अ० तिलमिलाना; दुखित होना।

तिलरव क्रि० स० तीन लड करना; प्रे०-राइब, -रवाइब,-उब,-री, तीन लड का एक आभूषण जो स्त्रियाँ पहनती हैं।

तिलवा सं० पुं० तिल का लड्डू।

तिलहन सं० पुं० तेल देनेवाले अन्न जैसे सरसों आदि; सं० तिल।

तिलैंठा सं० पु० तिल का डाँट (दे०); दाने निकालने के बाद तिल का सूखा पेड़।

तिल्लोक सं० पुं० त्रिलोक; तीनि-, सारा त्रिभुवन, प्र० तीनिउ-,तीनिउ-सूझब, परम आनंद आभा, सं० त्रिलोक।

तिल्लोकीनाथ सं० पुं० भगवान् सं० त्रि-।

तिवहार सं० पुं० त्योहार,-री, भोजन मिठाई या द्रव्य जो त्योहार पर दिया जाय, वै०-उ, तेव-।

तिवारी सं० पुं० ब्राह्मणों की एक शाखा, त्रिपाठी; स्त्री०-वराइनि,-उराइन।

तिसकुट सं० पुं० अलसी का कुटा हुआ डंठल; खलिहान का चूरा; वि०-कुटहा, तीसी (दे०) + कूटब।

तिसरा वि० पु० तीसरा, तिहाई, सं० अन्य; स्त्री० -री, तीसरी, तीसरा भाग, क्रि० वि० तिसरौवाँ, तीसरी बार।

तिसाला क्रि० वि० तीसरे साल, स० त्रि+फ़ा० साल।

तिसिहा वि० पुं० जिसमें तीसी या अलसी हो, तीसीवाला (खेत), तीसी मिला हुआ (अन्न)।

तिहत्तरि वि० सं० सत्तर और तीन,-वां।

तिहाई सं० पुं० तीसरा भाग, स्त्री० फ़सल।

तीजि सं० स्त्री० पाख का तीसरा दिन; स्त्रियों का त्योहार जो भादों की तीज को पड़ता है;-होब, -पठइब,-जाब,-आइब, सं० तृतीय।

तीत वि० पुं० कड़वा, स्त्री०-ति, मु० बैरी,-होब, -मीठ, सभी प्रकार के अनुभव,-मीठ जानब, खूब परिचित होना, क्रि० तिताब, कड़वा लगना, सं० तिक्त।

तीनि वि० सं० तीन,-तेरह, ब्राह्मणों के कई भेद, -तेरह होब, अलग हो जाना।

तीय सं० स्त्री० स्त्री कविता में प्रयुक्त, सं० स्त्री, दे० तिय, प्र०-या।

तीर सं० स्त्री० बाण, मु०-मारब,-छोड़ब, तरकीब लगाना, कहा० लागै त-नाहीं तुक्का, वै०-रि।

तीर सं० पुं० किनारा, नदी का किनारा,-रें, तीर पर, किनारे, क्रि० तिराब; तीरें-तीरें, किनारे-किनारे।

तीली सं० स्त्री० लंबी कील जो छतरी आदि में लगी होती है।

तीस वि० सं० तीस, सं० त्रिंशति।

तीसमार वि० पुं० जो बहादुरी का गर्व करे, पर वास्तव में डरपोक हो,-खाँ।

तीसर वि० पुं० तीसरा, अन्य, दे० तिसरा।

तीसी सं० स्त्री० अलसी।

तीहा सं० पुं० धीरज,-धरब,-देब,-होब, वै० ते-,सं० तीष्टु।

तुक सं० पुं० तुक, औचित्य,-रहब,-होब।

तुक्का सं० पुं० मौका, अवसर,-लागब, अच्छा अवसर हाथ लगना, दे० तीर।

तुचई सं० स्त्री० तुच्चापन, नीचता,-करब, प्र० तु-।

तुच्चा वि० पुं० नीच, संकीर्ण-हृदय, स्त्री०-च्ची; प्र० तु-;सं० तुच्छ।

तुनि सं० स्त्री० एक पेड़ जिसके फूल से रंग बनता है।

तुपक सं० स्त्री० तोप, छोटी तोप, वै०-कि, तीर-, लड़ाई के सामान।

तुफ़ान सं० पुं० तूफ़ान, आँधी, आफ़त,-आइब, -होब,-चलब, वि०-नी, झंझट करनेवाला।

तुम दे० तूँ।

तुम्मी सं० स्त्री० भिक्षुक का बर्तन, लौकी का बना बर्तन, पुं०-म्मा, तुमड़ा,-ड़ी, कहा० भीखि न देय त-न फोरै;-लगाइब, खराब खून निकालने के लिए किसी अंग में-लगना।

तुम्हार दे० तुहार।

तुरंग सं० पुं० घोड़ा, कविता में 'तुरग' भी प्रयुक्त; कहा० चलि-चलि मरैं बरदवा बइठे खायँ तुरंग।

तुरत क्रि० वि० तुरंत, प्र०-तै,रंतै।

तुरपब क्रि० स० कच्ची सिलाई करना; जल्दी-जल्दी सीना, भा०-पाई, प्रे०-पाइब,-पवाइब,-उब।

तुरवाइब क्रि० स० तुड़वाना, तोड़ने में सहायता करना, 'तूरब' का प्रे० भा०-ई, वै०-उब।

तुरसी सं० स्त्री० खटाई, खट्टापन।

तुरही सं० स्त्री० भोंपू की तरह का बाजा जो मुँह से बजाते हैं, वै०-रु-।

तुराइब क्रि० अ० (पशु का) रस्सी तोड के भागना, -फनाइब, खूँटा छोड़कर अन्यत्र जाने का प्रयत्न करना मु० (व्यक्ति का) घबराकर भागना, उकताना, तोड़ने में मदद करना, तुड़वाना, प्रे० -रवाइब, पुं० वि० तुरान, रस्सी तोडकर भागा हुआ (पशु), स्त्री०-नि।

तुरुक सं० पुं० तुर्क, मुसलमान, वि०-रकिया, मुसलिम,-नाऊ, मुसलिम नाई (हिंदू से भिन्न), भा०-ई, स्त्री०-किनि।

तुलतुलाव क्रि० अ० साफ़-साफ़ न बोलना, सीधी भाषा न निकलना।

तुलब क्रि० अ० समता करना, बराबर होना, स० तुल, प्रे० तउलब (दे०)।
तुलवाई सं० स्त्री० तैयारी,-करब,-होब, फ़ा० तूल (चौड़ा)।
तुलसी सं० स्त्री० प्रसिद्ध पौदा जिसकी पूजा होती है,-माता,-जी,-दास, प्रसिद्ध कवि, वै०-महराज, कभी-कभी प्रेमपूर्वक महत्व दिखाने के लिए 'तुलसा' (प्र०) बोलते हैं, तुलसाजी,-माता।
तुला सं० स्त्री० तराजू; कविता में प्रयुक्त,-दान, दान जिसमें व्यक्ति को तौला जाता है। सं०।
तुव सर्व० तुम्हारा (कविता में), सं०।
तुसार स० पुं० पाला, ज़ोर की ठंड,-परब,-गिरब, सं० तुषार।
तुहार सर्व० पुं० तुम्हारा, स्त्री०-रि, वै० तो-;-मार, -म्हार (सी०), प्र० तोहरै,-रौ।
तुहीं सर्व० तुम्ही।
तुहूँ सर्व० तुम भी।
तुहे सर्व० तुमको।
तूँ सर्व० तुम, सं० त्व, पं० तुसी, ब० तुमि।
तूति सं० स्त्री० तूत, शहतूत।
तूती सं० स्त्री० एक चिड़िया, मु०-बोलब, नाम होना, रोब रहना।
तूट-फार सं० पुं० काट-कूट, कमीबेशी (विशेषतः तिथि में),-होब।
तूरब क्रि० स० तोड़ना,-तारब,-फारब।
तेइस वि० सं० बीस और तीन,-वाँ,-ईं, २३वाँ, २३वीं, सं० त्रिविंशति।
तेई सर्व० वही,-ऊ, वह भी; कहा० तेऊ तइसै, तेऊ तइसै, दोनों ही एक से (बुरे)।
तेकर सर्व० पुं० उसका, स्त्री०-रि,-रे, उसके, कविता में "तेहिंकर", प्र०-हकर।
तेकाँ सर्व० उसको, प्र०-हिकाँ।
तेग सं० पुं० तलवार, डण्डा,-गा, बड़ा डंडा।
तेज सं० पुं० प्रकाश, चमक, सं०।
तेज वि० पुं० तीक्ष्ण, चतुर, होशियार, जल्दी काम करनेवाला, स्त्री०-जि।
तेनु सं० स्त्री० एक जङ्गली पेड़ और उसका फल, वै० बन-।
तेरज सं०पु० आपत्ति, बाधा,-करब, बाधा डालना, आपत्ति करना, एतराज।
तेरह वि० सं० दस और तीन,तीन-,भिन्न-भिन्न (ब्राह्मणों के ३ और १३ मुख्य गोत्रों से) ही, सं० स्त्री० मरने के तेरहवें दिन का कृत्य, ब्राह्मण भोज आदि,-करब,-होब।
तेल सं०पु० तेल;-पेरब,-पेराइब, क्रि०-वाइब,गाड़ी के पहियों में तेल डालना,-वानि, विवाह के पहले एक कृत्य जिसमें स्त्रियाँ तेल लगाती हैं। सं०तैल।
तेलिआ सं० पुं० एक प्रकार का तेल जो वर्षा में पृथ्वी से निकलता है,-चुअब, ऐसे तेल का निकलना।
तेलिया कोल्हू स० पं० तेल पेरने का कोल्हू।
तेली सं० पुं० तेल पेरनेवाला, एक जाति, स्त्री० -लिनि।
तेवरी सं० स्त्री० तेवर, वै०-उ-,-बदलब, दूसरी ओर ताकना,-फेरब।
तेस वि० पुं० तैसा, वैसा, स्त्री०-सि, क्रि० वि० तेसस, तैसा तैसा, वै० त्यस।
तेसे सर्व० उससे, प्र०-हसें।
तेहकर सर्व० पुं० उसका, 'तेकर' का प्र० रूप, स्त्री-रि।
तेहरा वि० पुं० तीन पर्त का (कपड़ा आदि), स्त्री० -री, क्रि० तेहरब, तीन पर्त करना,-इब, तीसरी बार करना, देना आदि, दोहरा-।
तेहलाँ क्रि० वि० तीसरी बार (पशु का गाभिन होना या ब्याना), वि० तीसरी बार ब्याई हुई।
तेहवार दे० तिवहार।
तेहसें दे० तेसें।
तेहा दे० तीहा।
तैं दे० तय।
तैकै क्रि० वि० तब फिर, तुरंत ही फिर, वै० तइकय, -उ-, तइकै, तौ-।
तैस सं० पुं० क्रोध,-आइब,-मैं आइब।
तैहा दे० तहिया।
तोई सं० स्त्री० लहँगे, कुर्ते आदि का किनारा, -लागब,-लगाइब,-नेफा (दे० नेफा)।
तोख सं० पुं० संतोष,-होब,-करब, सं० तुष्।
तोड सं० पुं० जोर, प्रवाह,-करब,-मारब।
तोड़ा सं० पुं० रुपया पैसा रखने की लंबी थैली, यक-, दुइ-रुपया, प्र०-ही।
तोतरि वि० स्त्री० तुतलाहटवाली, तोतली, अस्पष्ट (बात), तुल०तोतरि बाता।
तोनारा वि० पुं० जिसकी बड़ी तोंद हो, स्त्री०-री, वै०-निआर,-नार।
तोनि सं० स्त्री० तोंद; उँगली का सिरा (भीतर की ओर का), क्रि०-आब, वि०-हा।
तोप सं० स्त्री० तोप, तुपक।
तोपना सं० पुं० ढकना, वस्तु जिससे कुछ ढका जाय, वै० त्वपना।
तोपब क्रि० स० ढकना, मूँदना,-ढाकब, प्रे० तोपाइब,-पवाइब।
तोफाँ वि० उम्दा, यह शब्द दोनों लिंगों में एक-सा रहता है। फ़ा० तोहफ़ा?
तोबड़ा सं० पुं० घोड़े के खिलाने के लिए मोमजामा का बर्तन जिसमें चना आदि रखकर उसकी गर्दन में टाँग देते हैं।
तोवा स० पुं० किसी काम के न करने का प्रण, -करब, ऐसा प्रण करना, तोय.।
तोमड़ा सं० पुं० बड़ा तुम्मा या तुमड़ा, दे० तुम्मा।

तोर सर्व० पुं० तुम्हारा, स्त्री०-रि,-मोर करब, परस्पर स्वार्थ की बातें करना,-होब।
तोला सं० पुं० रुपये भर का तोल, यक-, दुइ-।
तोसा सं० पुं० गृह देवता को चढाने के लिए कई अन्नों का बना हुआ मोटा मीठा रोट· न्योरा (दे०)-।
तौ अव्य० तो· जौ-, यदि,-कै, तो फिर, तब, तत्पश्चात्।
तौर दे० तउर।
तौवाब क्रि० अ० ताव (दे०) का अनुभव करना, ताव में आना।
तौहीनी सं० स्त्री० अपमान,-करब,-होब।

थ

थइला सं० पुं० थैला स्त्री०-ली।
थइहाइब क्रि० स० थाह लेना, पता लगाना, वै० -हिआइब।
थई सं० स्त्री० विश्वास, भरोसा-होब, दे० थया. सं० आस्था।
थउना दे०-वना।
थकब क्रि० अ० थकना, असमर्थ होना, प्रे०-काइब, -कवाइब,-उब।
थकरी सं० स्त्री० स्त्रियों के बाल साफ करने की कूची, क्रि०-रिआइब, थकरी से साफ़ करना।
थकहर वि० पुं० थका हुआ, वृद्ध; स्त्री०-रि।
थका सं० स्त्री० थकावट· वै०-नि;-मिटब,-मिटाइब, -लागब।
थकानि सं० स्त्री० थकावट।
थन सं० पुं०. स्तन, गाय, भैंस आदि का थन; प्र०-न्ह,-काढ़ब, (ब्याने के पहले) बड़े-बड़े थन निकालना; ब्याने के निकट होना. सं० स्तन।
थनइली सं० स्त्री० स्तन की एक बीमारी जिसमें वे पक जाते हैं; प्र०-न्ह-, 'स्तन' से।
थपकियाइब क्रि० स० थपकी लगाना, वै० -आ-।
थपकी सं० स्त्री० थपकी, पुं०-क्का।
थपथपाइब क्रि० अ० थपथप करना।
थप्पड़ सं० पुं० तमाचा;-मारब,-लगाइब।
थबरा सं० पुं० तमाचा;-मारब, क्रि०-रिआइब, मारना, चपत लगाना।
थमब क्रि० अ० रुकना, गर्भवती होना; प्रे० -माइब, थामब, वै०-म्हब, सं० स्तंभ।
थम्हना सं० पुं० हत्था, जिससे कोई वस्तु थामी या पकड़ी जाय।
थम्हाइब क्रि० स० रोकना (व्यक्ति को), पकड़ाना, हाथ में देना, प्रे०-वाइब।
थया सं० स्त्री० विश्वास, प्र० थाया;-परमान, भरोसा, ठिकाना,-रहब सं० आस्था।
थरथर क्रि० वि० बार-बार,-काँपब क्रि०-राब, बुरी तरह काँपना:-राइब, कँपवाना, कँपाना।
थरिआ सं० स्त्री० थाली वै०-या यक-, दुइ-, थाली भर (भात आदि), सं० स्थाली।
थरुहट सं० पुं० थारुओं की बस्ती, थारुओं का पुराना डीह वै०-टि।
थरांब क्रि० अ० काँप उठना, प्रे०-इब,-रवाइब, घबरवा देना।
थल सं० पुं० खुली भूमि. जल-;-ठेपा, रहने का स्थान, स्थायित्व,-होब,-रहब,-करब; सं० स्थल।
थलहकब क्रि० अ० (गाय या भैंस का) ब्याने के निकट होना· प्रे०-काइब।
थवई सं० पुं० राज, ईंटे गारे का मिस्त्री, भा० -थपन,-गीरी।
थवना सं० पुं० घड़ा रखने के लिए मिट्टी की बनी गोल चीज़; सं० स्था।
थहवाइब क्रि० स० थाह लेने के लिए कहना, मदद करना आदि।
थहाइब क्रि० स० थाह लेना, प्रे०-वाइब।
थाकि सं० स्त्री० सिवाने का पत्थर, सीमा का चिह्न।
थान सं० पुं० कपड़े का थान, मूले या गन्ने का का समूह; गहने का पूरा सेट,-थारा, तिलक में दिया हुआ थाल, कपड़े आदि; वै०-न्ह।
थान्ह सं० पुं० स्थान; देवता का स्थान,-पवान, उचित स्थान.-ने-पवाने, अपने स्थान पर (व्यक्ति या देवता का), सं० स्थान।
थान्हा सं० पुं० पुलिस स्टेशन;-पुलुस, पुलिस की कार्रवाई;-करब,-होब, ऐसी कार्रवाई करना, होना।
थान्हेदार सं० पुं० दरोगा; सबइंस्पेक्टर, भा० -री।
थाप सं० पुं० स्थापना, क्रि०-ब, (देवता को किसी स्थान या व्यक्ति पर) स्थित कर देना, प्रे० थपाइब,-वाइब सं० स्थाप्।
थाम सं० पुं० लकड़ी का खंभा जिसपर छप्पर रखा जाय या ढेकुर (दे०) खड़ी हो, वै०-न्ह; -थूनी (दे०)।
थामब क्रि० स० पकड़ना, सहायता करना; वै० -म्ह-, प्रे० थमाइब,-म्हा-,-म्हवाइब,-उब, सं० स्तंभ्।
थाया दे० थया।

थार सं० पुं० बड़ा थाल; प्र०-रा, स्त्री०-री; वै० थरवा सं० स्था।
थारी सं० स्त्री० थाली,-परसब,-टारब, खाना देना,-टारि लेब, रखा हुआ खाना उठा लेना।
थारु सं० पुं० एक पहाड़ी जाति जो जादू टोना करती है, स्त्री०-रुनि, झगड़ालू स्त्री।
थाह सं० स्त्री० गहराई की नाप,-लेब, पता लगाना,-पाइब, पता पाना, क्रि० थहाइब।
थाहि सं० स्त्री० डाल।
थिर वि० स्थायी,-करब,-होब, वै० अह- (दे०), भा० अहथिरई, तुल० खल की प्रीति जथा-नाहीं, सं० स्थिर।
थिरकब क्रि० अ० थिरकना, प्रे०-काइब,-कवाइब।
थिराब क्रि० अ० (पानी का) स्थायी होकर साफ़ हो जाना, (पशु का) गर्भ धारण के लिए स्थिर होना, प्रे०-रवाइब,-उब, सं०स्थिर।
थुआ दे० थुवा, थुड़ी।
थुक सं० पुं० थूक, क्रि०-ब।
थुकब क्रि० अ० थूकना, स० निंदा करना, प्रे० -काइब,-कवाइब, भा०-काई,-कासि।
थुकरब क्रि० स० पीटना, खूब मारना, प्रे०-करवाइब, वै० थुरब।
थुकलहा वि० पुं० थूका हुआ, स्त्री०-ही, वै०-हका, -की।
थुक्का-फजिहति सं० स्त्री० दुर्दशा, बदनामी, -करब,-होब, दे० फजिहति।
थुड़ी सं० स्त्री० निंदा,-थुड़ी करब, धिक्कारना, -है, धिक् है।
थुथुना सं० पुं० थूथुन, (सूअर का) मुँह, क्रि० -निआइब, थूथुन से चबाना या गोड़कर ख़राब करना, वै० थूथुन।
थुरब क्रि० स० मारना, प्रे०-राइब,-रवाइब; भा० -राई, दे०-करब।
थुवा अव्य० निंदावाचक शब्द,-थुवा करब, धिक्कारना, वै०-आ।
थूक दे० थुक, थुकब।
थून्ही सं० स्त्री० वह लकड़ी जिसे छप्पर आदि के नीचे रोक के लिए रखा जाय,-थाम, ऐसी छोटी-बड़ी लकड़ियाँ।
थूह सं० पुं० ढेर, गड्ड,-लागब,-लगाइब, वै० ढू-, प्र०-हा।
थेंथर वि०पुं० परेशान, व्यग्र;-होब, चिंताओं अथवा अधिक परिश्रम के कारण थक जाना, स्त्री० रि।
थेई-थेई विस्म० वाह! वाह! यह शब्द कह-कहकर ताली बजाते हैं और छोटे छोटे बच्चों को नचाते हैं, तबले की ध्वनि का अनुकरण सा है। ध्व०।
थोंथी स० स्त्री० मटर आदि फलीदार नाजों का सूखी फलीवाला भाग, वै० ठोंठी।
थोक सं० पुं० पूरा हिस्सा, ढेर, गाँव का हिस्सा; -इत, एक थोक का हिस्सेदार -कै थोक, एक-एक थोक का।
थोपब क्रि० स० लाद देना, उत्तरदायित्व देना, प्रे० -पाइब।
थोर वि० पुं० थोड़ा, कम, प्र०-रै,-रौ, क्रि०-राव, कम हो जाना,-रवाइब, कम कर देना,-का, छोटा (भाग),-रै थोर, थोड़ा ही थोड़ा, स्त्री०-रि।
थोरि सं० स्त्री० निंदा,-करब,-होब, वै०-राई।
थौना दे० थवना।

द

दंगा सं० पुं० दंगा।
दँतइल सं० पुं० बड़े दाँतवाला हाथी, वि०-ला (-सूअर)।
दइआ विस्म० अरे दैव! दैव रे! बाप रे-, अरे-; सं० दैव, वै०-या, दै-।
दइउ सं० पुं० भगवान्,-राजा, ईश्वर एवं सरकार, -राजाबादि, यदि परमेश्वर और शासन ने कुछ रोक न की तो,-क दूसर, परम पराक्रमी, दूसरा ईश्वर,-लागब, ईश्वर ही विरुद्ध होना, वै०-व सं० दैव।
दइजा दे० दयजा।
दइत सं० पुं० दैत्य, व्यं० लंबा-चौड़ा एवं बहुत खानेवाला व्यक्ति, प्र०-इंत्र, सं० दैत्य।
दइबी सं० स्त्री ख़तरा; दैवी विपत्ति; हइबी-, आकस्मिक घटना,-होब,-रहब; सं० दैवी।
दउना दे० दवना।
दउरब क्रि० अ० दौड़ना, दौड़धूप करना, प्रे० -राइब,-रवाइब; भा०-राई,-रवाई,-पाइब, दौड़कर पकड़ लेना।
दउरा सं० पुं० टोकरा, स्त्री-री,-मउना (दे०), -री-मौनीं।
दउराल सं० पुं० दौड़-धूप,-परब,-करब, वै० -लि।
दकब क्रि० वि० कब? न जाने कब।
दकवन वि० पुं० कौन? न जाने कौन, वै० दके, स्त्री०-नि।
दकस वि० पुं० कैसा? न जाने कैसा, वै०-क्यस, स्त्री०-सि, प्र०-कस।

दकहाँ क्रि० वि० कहाँ ? न जाने कहाँ, कहीं, वै० -हुँ,-हूँ ।
दका सर्व० क्या ? न जाने क्या, प्र०-व, वै० दव-,प्र० धौंका ?
दकिआनूस वि० पुं० देहाती, पुरानी तरह का, प्र०-सी ।
दके वि० न जाने (?) कौन,-दके, न जाने कौन-कौन ।
दखल सं० पुं० प्रवेश, अधिकार, अमल-, पूरा अधिकार,-करब,-होब (२) प्रभाव, बुरा प्रभाव (भोजन, दवा आदि का),-करब, गड़बड़ करना ।
दखाव दे० देखाव, वै० द्य- ।
दखार दे० देखार।
दखिनहा वि० पुं० दक्षिण का; सरयू के दक्षिण का रहनेवाला (व्यक्ति, प्रायः ब्राह्मण); स्त्री०-ही; सं० दक्षिण ।
दखिलकारी सं० पुं० वह खेत जो किसान बहुत दिनों से जोते हों, प्र०-खी-;-र, ऐसा किसान ।
दखुराही दे० डखुराही ।
दगब क्रि० अ० दगना; प्रे० दा-, दगाइब, दग-वाइब ।
दगरा सं० पुं० मैले पानी या कीचड़वाला गढ्ढा, तालाब आदि ।
दगल-फसल सं० पुं० धोखे का मामला; धोखा; -करब,-होब ।
दगहा वि० पुं० दागवाला ।
दगहिल वि० पुं० जिसमें दाग पड़ा हो, (फल) जो सड़ने लगा हो, स्त्री०-लि दाग + हिल ।
दगा सं० स्त्री० धोखा,-करब,-देब वि०-बाज ।
दगावाल वि०पुं० धोखा देनेवाला स्त्री०-लि, भा० -ली ।
दग्ग वि० पुं० प्रकाशमय, दगा-, उज्ज्वल, खूब साफ;-सें, अकस्मात् प्रकाशपूर्वक (दिखना) ।
दड़्ड वि० पुं० चकित,-होब, स्त्री-ड्डि, वै०-ड्ड ।
दड़्ड़ा सं० पुं० दंगा, शोर,-करब,-होब, वै०-ड्डा ।
दतुइनि सं० स्त्री० दतौन;-करब,-कुंड, अयोध्या का एक प्रसिद्ध स्थान; वै०-अन ।
ददई संबो० दादा, हे दादा, अरे बाप ।
ददरी सं० पुं० प्रसिद्ध स्थान जहाँ ददरी क्षेत्र का मेला लगता है,-क मेला ।
ददिआ ससुर सं० पुं० ससुर का बाप स्त्री० -सासु, सास की सास ।
ददुआ संबो० हे दादा, अरे दादा ।
ददोरा सं०पुं० खाल के ऊपर निकला हुआ चकत्ता दादा का सा बड़ा दाना;-परब,-होब, सं० दद्रु ।
दद्दा सं० पुं० बड़ा भाई, दादा, वै०-द्दू ।
दधकब क्रि० अ० दहकना, वै० दहकब, प्रे०-काइब, -उब ।
दधि सं०पुं० दही, गीतों में ही प्रयुक्त, दे० दहिउ, सं० ।
दधिकंदो सं० पुं० एक त्योहार जिसमें लोगों पर दही छिड़का जाता है, दधि+कंदो (कीचड), वै० -काँ-,-न्दो ।
दनकब क्रि० अ० (गोली, पत्थर आदि का) जल्दी-जल्दी छूटना. भागना; प्रे०-काइब,-उब 'दन्न' (दे०) से ।
दनकाइब क्रि० स० मारना; झट से मार देना, वै० -उब, भा०-नाका, झट से मार देने की क्रिया ।
दनगर वि० पुं० दानेवाला, जिसमें खूब दाना पड़ा हो (फली, बाल आदि) स्त्री०-रि ।
दनाई सं० स्त्री० समझ, होशियारी,-करब ।
दनाका दे० दनकाइब ।
दनादन्न क्रि० वि० निरंतर, बिना रुके ।
दनाब क्रि० अ० दाना खाना, दाना करना नाश्ता करना ।
दपाई सं० स्त्री० छिपने या चुप रहने की क्रिया; -मारब, चुपके से सुनना; वि०-न,-न रहब; क्रि० दपाब ।
दपादप वि० पुं० साफ, चमकदार प्र०-प्प ।
दपाब क्रि० अ० छिप जाना, चुप खड़ा रहना ।
दफा सं० पुं० बार; यक-, एक बार; कानून की एक संख्या, वै०-फाँ (पहले अर्थ में),-फें, कइब दफें, कई बार ।
दफादार सं० पुं० जमादार की तरह का एक फौजी या पुलिस का एक छोटा अफसर, स्त्री०-रिन, वै० -फे-, भा०-री ।
दबंग वि० प्रभावशाली, भा०-ई ।
दबकब क्रि० अ० दुबक जाना, प्रे०-काइब,-उब ।
दबदबा सं० पुं० रोब, प्रभाव, मान,-होब, -रहब ।
दबब क्रि० अ० दबना, डरना, अदब करना; प्रे० -वाइब,-वाइब, प्र० दबाब ।
दबवाइब क्रि० स० दबवाना, मु० चुदाना, वै० -उब ।
दबाइब क्रि० स० दबाना, दाबना (पैर आदि), दबा देना, प्रे०-बवाइब, वै०-उब ।
दबाव सं० पुं० प्रभाव,-परब ।
दबाहुर वि० पुं० (सवारी) जो आगे दबी हो, -रहब,-पाइब,-होब; दे०-उल्ल ।
दबिला सं० पुं० पकती हुई वस्तु को चलाने के लिए लकड़ी का बना बड़ा चम्मच या करछुल ।
दबीज वि० पुं० भारी, मोटा (कपड़ा आदि); स्त्री० -जि ।
दबोट सं० पुं० दबाव, क्रि०-ब, दबाना, प्रभाव डालना प्र० डपोट,-च ।
दबौला सं० पुं० बड़ा दबाव, अनुचित दबाव;-म, अत्यधिक प्रभाव में ।
दब्ब वि० पुं० जो (सवारी) एक ओर दबी हो, -होब,-रहब; दे० उल्ल (दब्ब का उलटा) ।
दब्बू वि० दबनेवाला, डरपोक ।

दम सं० पुं० शक्ति, जीवन,-म-, जान में जान, बे -, थका, विह्वल,-ढंकार, होश।
दमक सं०स्त्री० विशेष चमक, गर्मी,-आइब, चमक -, क्रि०-ब, खूब चमकना,-काइब, वै०-कि।
दमकल सं० पुं० पानी डालने की पिचकारी; वै० -ला।
दमगर वि० पुं० मजबूत, प्रभावशाली, स्त्री०-रि, भा०-ई।
दमडी सं० स्त्री० बहुत कम मूल्य, कहा०-क मुर्गी टका पकराई, 'दाम' से।
दमदमाब क्रि० अ० झट से पहुँच जाना।
दमा सं० पुं० यक्ष्मा।
दमाद सं० पुं० दामाद, सं० जामातृ।
दया दे० दाया;-धरम, पुण्य करने की प्रवृत्ति।
दरइची सं० स्त्री० छोटी खिडकी, वै०-रै-।
दरउनी सं० स्त्री० दलने की मजदूरी, वै०-रौ-।
दरकब क्रि० अ० दरक जाना, कुछ फट जाना, प्रे० -काइब,-उब।
दरकिनार वि० अलग,-रहब,-करब।
दरखत सं० पु० पेड़; प्र०-क्खत।
दरखनी सं० स्त्री० भूमि में छेद या गड्ढा करने का एक औज़ार, फा० दर (जगह)+सं० खन (खोदना); प्र०-न्नी।
दरगाह सं० स्त्री० मुसलमानों का पवित्र स्थान, वै०-हि।
दरज सं०पुं०लिखने का काम,-करब,-होब,वै०-र्ज।
दरजा सं० पुं० कक्षा, उच्च स्थान,-पाइब, पद प्राप्त करना।
दरजाइब क्रि०स० स्पष्ट करना, निश्चित कर देना, वै०-उब।
दरजि सं० स्त्री० दीवार या लकडी आदि में फटने का चिह्न।
दरजी सं० पु० दर्जी, स्त्री०-जिनि, भा०-जिआई, -आई।
दरद सं० पु० दर्द;-करब,-होब; दुख-,कष्ट, वै०-र्द; गीतों में "दरदिया" भी होता है।
दरदर क्रि० वि० दरवाजे-दरवाजे, स्थान-स्थान पर, -घूमब,-फिरब।
दरदराइब क्रि० स० जल्दी के चबा डालना।
दरपनी सं० स्त्री० छोटा दर्पण, सं० दर्पण।
दरब क्रि० स० दलना, प्रे०-राइब,-रवाइब, मु० छाती प कोदो-, अपमान करके तंग करना; भा० -उनी,-राई।
दरब सं० पु० द्रव्य, तत्त्व; महत्त्व, मूल्य, वि०-दार, जिसके पास कुछ हो, मालदार; वै०-बि, सं० द्रव्य।
दरबर वि० पुं० मोटा पिसा हुआ (आटा आदि); स्त्री०-रि।
दरबा सं० पु० कबूतरों के रहने का घर, छोटा गिचपिच मकान।
दरबार सं० पु० दरबार,-करब,-लागब,-होब,-री, दरबार में बैठनेवाला।
दररब क्रि० स० रगड़ना; प्रे०-राइब,-रवाइब; मु० गाँडि-, व्यर्थ प्रयत्न करना।
दरसन सं० पु० दर्शन,-करब,-पाइब,-देब; वि० -निहा, दर्शन करनेवाला; सं० दर्शन।
दरि सं० स्त्री० जगह, स्थान; क्रि० वि०-री, स्थान पर, यही दरीं, इसी स्थान पर।
दरिआ सं० पु० दलिया,-दरब।
दरिआव सं० पु० नदी, बडी नदी, वै०-या-, लबे -, खूब भरा हुआ (पानी से, तालाब आदि); दरियः (समुद्र)।
दरिद्दर सं०पुं० दरिद्रता, वै० प्र०-लि-, वि० दरिद्र, -खदेरब; गन्ने से पुराने सूप को पीट-पीटकर 'ईसर आवैं, दरिद्दर जाय" कहते हुए स्त्रियों द्वारा कार्तिक की रात को किया हुआ एक वार्षिक उपचार। भा०-ई,-पन।
दरिनई सं० स्त्री० वृद्धता; दे० दरीना, वै०-पन।
दरिवान सं० पु० दरवान, दरवाज़े पर रहनेवाला नौकर, भा०-वनई,-वानी, वै० दरवान।
दरी सं० स्त्री० दरी (बिछाने की);-गलैचा अच्छा-अच्छा बिछौना।
दरीना वि० वृद्ध, अनुभवी,-पुरनिया, बड़ा (घर का), भा०-रिनई,-पन।
दरेंती सं० स्त्री० लोहे का औजार जिससे दीवार आदि में छेद किया जाता है, वै०-सी।
दरेग सं० पु० दया, तर्स;-लागब,-करब।
दरेरब क्रि० स० रगड़कर चलना; प्रे०-रवाइब, वै० -रो-।
दरेस सं० पु० वर्दी, अं० ड्रेस।
दरैची दे० दरइची।
दरोगा सं० पु० दारोग़ा, स्त्री०-गाइन,-नि।
दरोरब क्रि०स० रगड़ना, ऊपर से दबा कर फोड़ना, दे० दरेरब।
दरौनी दे० दरब, वै० दरउनी,-राई, दलने की मज़दूरी, पद्धति आदि।
दर्रा सं० पु० मोटा पिसा हुआ आटा, दला हुआ (गेहूँ, जौ आदि)।
दर्राइब क्रि० स० चिल्लाकर हाँकना।
दर्राक वि० पु० चालाक, स्त्री०-कि।
दल सं० पुं० पत्ता, तुलसीदल, निमंत्रण (कथा का), -जाब,-पठइब, स०।
दल सं० पु० गिरोह,-बल, पूरी शक्ति; भीतर का गूदा, वि०-गर, गूदेदार।
दलकब क्रि० अ० (भूमि का) भीगकर गल जाना, प्रे०-काइब।
दलगर वि० पुं० गूदेदार (फल आदि), स्त्री० -रि।
दलदल सं० पुं० दलदल।
दलानि स० स्त्री० दालान; प्र०-ल्हान।

दलामलि सं० स्त्री० ज़ोर की भीड़, रेलपेल प्रायः गीतों में।
दलाल सं० पुं० दलाली का काम करनेवाला, धूर्त व्यक्ति; वि० बेईमान, भा०-ललई, प्रे०-लाल।
दलिद्र दे० दरिद्दर।
दलिहा वि० पुं० दालवाला, दाग लगा हुआ, स्त्री०-ही।
दलील सं० पुं० तर्क, कारण,-करब,-देब,-होब।
दले संबो० महावत द्वारा प्रयुक्त शब्द जिससे हाथी पानी में चलने एवं पानी-पीने के लिए आदेश लेता है।
दलेल सं० पुं० दण्ड (प्रायः पुलिसवालों का); -करब,-बोलब,-होब; वै०-लि।
दवँगरा सं० पुं० हल्की वर्षा;-परब, ऐसी वर्षा होना।
दवँतरी सं० पुं० एक आयु के व्यक्ति वै०-रिया।
दवँरी स० स्त्री० बैलों को एक साथ बाँधकर कटे हुए नाज के डाँठ पर घुमाने की क्रिया;-हाँकब, -नाधब,-चलब. 'दवर' (दे०) से।
दवना सं० पुं० एक सुगंध देनेवाला पौदा जिसकी पत्तियाँ देवताओं को चढ़ती हैं,-मड़वा, दो ऐसे सुगंध देनेवाले पौदे जिनका उल्लेख प्रायः स्त्रियाँ गीतों में करती हैं।
दवर सं० पुं० चारों ओर का नाप; पहुँच, दौर।
दवरब दे० दउरब।
दवरा सं० पुं० दौरा;-करब।
दवाँइब क्रि० स० दाँइब (दे०) का प्रे० रूप।
दवाइति सं० स्त्री० दावात वै० दु-।
दवाई सं० स्त्री० दवा, औषधि;-करब,-होब।
दस वि० स० दस,-वाँ,-ईं, दसवाँ, दसवाँ भाग।
दसउन्ही सं० पुं० एक जाति जिसके पुरुष कविता गाकर जीवन यात्रा करते हैं;-बाभन, ऐसे ब्राह्मण।
दसखत सं० स्त्री० हस्ताक्षर,-करब,-होब, वै०-ति, वि०-ती, जिस पर दस्तख़त किया हुआ हो, फ़ा० दस्त (हाथ)+ख़त (अक्षर)।
दसगर्दा सं० पुं० हल्का मुकदमा, छोटा मामला, फ़ा० दस्तगर्द।
दसगात्र सं० पुं० मृत्यु के बाद की एक क्रिया।
दसनामी सं० पुं० एक प्रकार के साधू।
दसमी सं० स्त्री० पक्ष का दसवाँ दिन; सं० दशम।
दसमूल सं० पुं० प्रसिद्ध औषधि दशमूल।
दसरथ सं० व्य० राम के पिता महाराज दशरथ; सं०।
दसवरदार वि० पुं० (कानूनी अधिकार से) अलग; -होब, हट जाना भा०-री फ़ा० दस्त (हाथ)।
दसवाँ सं० पुं० मृत का दसवें दिन का संस्कार, वि० पुं० दसवाँ· स्त्री०-ईं; सं० दश।
दसहरा सं० पुं० गंगा दशहरा जो जेठ में पड़ता है; क्वार शुक्ल का दसवाँ दिन जिसे "विजय दसमी' भी कहते हैं।
दसहरी सं० पुं० एक प्रकार का बढ़िया आम।
दसा सं० स्त्री० हालत, ज्योतिष में ग्रहों की दशा, गरह-, ग्रहों की स्थिति (जन्मपत्री में)।
दसाइब क्रि० स० बिछाना (पलँग); प्रे०-सवाइब; वै० ड-,-उब।
दस्त सं० पुं० टट्टी -होब,-लागब।
दस्ता सं० पुं० २४ ताव (काग़ज़)।
दस्तावेज सं० पुं० कचहरी का प्रमाणित काग़ज़; किसी का लिखा हुआ मुकदमे का काग़ज़ फ़ा० दस्त (हाथ)+,वै०-दता-।
दस्ती वि० पुं० हाथ से लाया हुआ (समन, पत्र आदि); फ़ा० दस्त (हाथ)।
दस्तूर सं० पुं० कायदा, रिवाज।
दस्तूरी सं० स्त्री०. फीस; (व्यक्ति-विशेष की) उज-रत -देब,-लेब।
दरसा सं० पुं० बनियों की एक उपजाति।
दहँजब क्रि० स० कुचलना, नष्ट करना· प्रे० -जाइब दे० अहँजब।
दहकच्चरि सं० स्त्री० बड़ी भीड़; शोर गुल,-मचब, -मचाइब।
दहकब क्रि० अ० ख़ूब जलना या गर्म होना (आग का) प्रे० -काइब,-उब।
दहकारब क्रि० स० पानी छिड़कना, ख़ूब भिगोना, प्रे०-करवाइब,-उब; दे० दहाइब।
दहतावेज दे० दस्तावेज़।
दहपट्ट वि० पुं० हट्टा-कट्टा, बहादुर, स्त्री०-ट्टि।
दहपेल वि० पुं० जो कठिन काम कर डाले, परि-श्रमी, धैर्यवान।
दहलब क्रि० अ० दहलना, घबरा जाना, प्रे०-लाइब, -उब।
दहला सं० पुं० नदी के किनारे का मैदान या जंगल।
दहवाइब क्रि० स० दहाने में सहायता करना, दे० दहाइब, दहकारब।
दहसति सं० स्त्री० डर, भय।
दहाइब क्रि० स० ख़ूब भिगोना; 'दह' (दे०) से, सं० ह्रद; वै०-उब।
दहाई सं० स्त्री० किनारा, खड़ी फ़सल का एक भाग।
दहिआ सं० पुं० लकड़ी या पौदों में लगनेवाला एक रोग,-लागब।
दहिउ सं० पुं० दही दूध-, दूध-दही· सं० दधि।
दहिजरा वि० पुं० जिसकी दाढ़ी जली हो, बद-माश; दहि (दाढ़ी)+जरा (जला हुआ), भा०-रू; वै० दाढ़ीजार द+हिजरा ? (दु हिजरा=भग हिजड़े) यह शब्द गाली के ही लिए स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है,-क पूत (दाढ़ीजार का बेटा) भी इसी अर्थ में बोला जाता है।
दहिना वि० पुं० दाहिना; स्त्री०-नी,-बावाँ, बुरा भला; दाहिन (दे०) बावँ, सं० दक्षिण, वै०दाहिन।

दहु अव्य० कि, शायद, संदेह-सूचक शब्द है, वै० -हुँ, ब्र० धौं।
दहेज सं० पु० लड़की के ब्याह में दिया गया उपहार;-देब,-लेब, वै० दैज़ा, दायज।
दाँइब क्रि० स० दँवाई करना; वै०-उब, प्रे० दँवाइब,-उब; काटब-, फ़सल का प्रबंध करना, गृहस्थी करना।
दाँत सं० पु० दाँत, क्रि०-ब, पशु का दाँत हो जाना, पूरी आयु प्राप्त करना,-ती, मशीन या औज़ार के दाँत।
दाई सं० स्त्री० बूढ़ी स्त्री; बाबा की पत्नी, दादी; किसी भी बुढ़िया को संबोधित करने का शब्द; बाबा-,कोई भी।
दाई-जोटिया सं० पु० साथी, सक-वयरक, दे० जोटी।
दाउँ दे० दाँव।
दाउति सं० स्त्री० दावत,-देब,-खाब; वै०-वति।
दाखिल वि० प्रविष्ट, जमा,-करब,-होब, सं०-ला, प्रवेश,-खारिज, पटवारी के कागज़ों में एक व्यक्ति के स्थान में दूसरे नाम का प्रवेश।
दाग सं० पु० धब्बा, चिह्न,-परब,-डारब, क्रि०-ब, जलाकर चिह्न करना; जला देना (किसी अंग को), मु० ताना मारना, व्यग कसना, बंदूक, पिस्तौल आदि चलाना; गोली-, बंदूक-,प्रे० दगाइब।
दागी वि० जिस पर दाग पड़ा हो, दूषित, जो जेल काट आया हो।
दाता सं० पु० दान देनेवाला, "दास मलूका कहि गये सब के-राम"।
दादरा सं० पु० प्रसिद्ध राग और गीत,-गाइब।
दादा स० पु० पितामह, पिता के बड़े भाई या अन्य बडे व्यक्ति को संबोधित करने का शब्द; दे० ददई, ददुआ, स्त्री०-दी।
दादु स० स्त्री० दाद, सं० दद्रु।
दान सं० पु० दान,-देब,-लेब, वि०-नी,-निया।
दानव सं० पु० राक्षस; वै०-नौ, स०।
दाना सं० पु० नाज का बीज, हार में का एक (मोती, सोने का टुकडा आदि), यक-,दुइ-,चार -क हवेलि (दे०),-दाना क तरसब, दाने-दाने के लिए तरसना।
दानी सं० वि० उदार, देनेवाला, वै०-निया,-आँ, दानशील।
दाब सं० पु० दबाव, प्रभाव,-दहसति, डर या प्रभाव।
दाबब क्रि० स० दबाना, तंग करना, मजबूर करना, प्रे० दबवाइब,-उब।
दाबस सं० पु० दबाव, ज़ोर; डर-,भय।
दाम सं० पु० मूल्य;-करब, मोल करना, भाव ठीक करना,-पूछब,-लगाइब,-होब।
दाया सं० पु० दया,-लागब,-करब,-होब, राम खबरिया लेवै करिहैं, दाया लागी देबै करिहैं।
दार वि० पु० उपजाऊ, मालदार; स्त्री०-रि।
दारू सं० पु० शराब, दवा-, उपचार,-पियब।
दालि सं० स्त्री० दाल,-भात, दाल-भात, भोजन, कहा० सहर क राम-राम गँवई क दालिभात, दे० पहिती।
दालहब क्रि० स० व्यंग कह-कह कर दुःख देना।
दावँ सं० पुं० दावँ, चाल, बदला,-लेब,-करब, -पाइब।
दावति दे० दाउति।
दावा सं० पुं० अधिकार, मुकदमा, शिकायत,-होब -करब, वि०-गीर, दावा करनेवाला,-दार।
दास सं० पुं० नौकर, स्त्री०-सी; साधुओं एवं पण्डितों द्वारा प्रयुक्त, चरनदासी, जूती (व्यं०), सं०।
दासा सं० पुं० मकान की खँभियों (दे० खम्हिया) के ऊपर रखी हुई लंबी लकड़ी।
दाह स० पुं० जलन, मुर्दा जलाने की क्रिया,-देब, शव को जलाना, स०।
दाहा सं० पुं० ताजिया,-रोइब, मुहर्रम के शोक-पूर्ण गीत-गाना, मु० लाँड पकरि कै दाहा रोइब, कुछ न कर सकना, हाथ पर हाथ धरे बैठना, मै०।
दिअना स० पुं० दीया, दीपक,-लेसब,-बारब; यह रूप सु०, प्र०, रा० ब० जिलों में ही बोला जाता है, वै० दिआ, दीआ एवं दिया, सं० दीप, मै० दिया।
दिउँका सं० पुं० दीमक,-लागब, वै० देवकि, क्रि० -काब, दीमकों द्वारा आक्रांत होना; वि०-कहा।
दिउठी सं० स्त्री० लकड़ी या मिट्टी का बना छोटा स्तंभ जिस पर दीया रखा जाता है। वै० डि-, मै० दिवठ, सं० दीप।
दिउली सं० स्त्री० छोटा मिट्टी का कटोरीनुमा बर्तन जिसमें दीया जलाया जाय, पुं०-ला।
दिक वि० पुं० बीमार, परेशान,-करब,-होब, तपे-, यक्ष्मा।
दिक्कति सं० स्त्री० परेशानी, कष्ट;-उठाइब,-होब।
दिखउआ सं० पुं० दिखावा, मुँह-, नई दुलहिन को देखने का रस्म, उसमें उसे दिया गया उपहार -देब,-पाइब, वै० दे-; मै० देखना।
दिखब क्रि० अ० दिखना, प्रे०-खाइब,-खवाइब।
दिगर वि० पु० दूसरा, स्त्री०-रि, वै० प्र० दी-;नौ -, परिवर्तन, आकस्मिक घटना, फा० नौ (नया) +दीगर (दूसरा)।
दिमाग सं० पु० मस्तिष्क, गर्व,-देखाइब, गर्व-पूर्ण बातें करना,-होब,-करब, झारब, गर्वचूर्ण करना वि०-गी,-दार।
दियना दे० दिअना।
दिया सं० पु० दीपक, वै०-आ, स्त्री० दिउली, सं० दीप।
दिरघौं वि० दीर्घ (मात्रा), बच्चों को रटाया जाता था-"रेसौं (हस्व) कि, दिरघौं की...।"
दिल सं० पु० हृदय, वि०,-ली, हृदय का, हार्दिक,

-जानी, प्रेमिका,-वर, प्रेमी,-दार, स्नेही -जमई, पूरा भरोसा ।
दिलावर वि० पुं० बहादुर स्त्री०-रि, भा०-री ।
दिलासा सं० पुं० भरोसा, ढाढ़स,-देव; फ़ा० दिल +सं०आशा ।
दिलेर वि० पुं० निर्भय, स्त्री०-रि, भा०-री,-रई ।
दिवला सं० पुं० बड़ा दिया, स्त्री०-ली,-उली; दे० दिअना ।
दिवाइब क्रि० स० दिलाना, वै० दे-,-उब ।
दिवान सं० पुं० थान्हे का बड़ा मुहर्रिर; वै० दे-, -जी; मंत्री, प्रधान सचिव; कहा० लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान ।
दिवानी सं० स्त्री० दीवानी (कचहरी),-करब, दीवानी का मुकदमा लड़ना ।
दिवार दे० देवालि ।
दिसकूट सं० पुं० पहेली;-कहब ।
दिसा सं० स्त्री० पाखाना,-होब, टट्टी जाना;-फरा-कति, शौचादिक,-फिरब,-करब,-लागब ।
दिसा सं० स्त्री० दिशा -भरम, स्थिति जिसमें मनुष्य को दिशा का ज्ञान न रह जाय -सूल, दिन जब किसी विशेष दिशा में यात्रा वर्जित हो ।
दिसाउर दे० देसाउर ।
दिसटांत सं० पुं० दृष्टांत,-देव,-पाइब ।
दिहात सं० पुं० गाँव,-ती, ग्रामवासी, गाँव का, वै०-ति; देह (गाँव) ।
दीठि सं० स्त्री० दृष्टि वै० डी-, दिठिआँवर, दृष्टि का हटाना, आँख का ओझल, सं० ।
दीदा सं० पुं० आँख, हिम्मत,-क चप्पर, वेशर्म एवं हिम्मती, दीद + सं० चपल (चंचल) ।
दीदी सं० स्त्री० बहिन, बड़ी बहिन; बहिन या जिठानी को संबोधित करने का शब्द ।
दीन सं० पुं० धर्म, बे-, बेधर्म, धर्मच्युत,-यकीन, ईमानदारी ।
दीप सं० पुं० द्वीप; सं० ।
दीया दे० दिअना ।
दुँदुआब क्रि० अ० मस्ती की बातें करना, 'दूँदूँ' करना ।
दु संबो० धत, हट जा,-मरदवा, धत तेरे की,-राजू ; प्र० दू, दुअ ।
दुआर सं० पुं० द्वार, घर के सामने का भाग, स्त्री०-रि,-री, प्र०-रा,-करब, मातमपुर्सी करना, -ताकब,-झाँकब, क्रि०वि०-रें, अं० डोर, वै०-वार ।
दुआसि दे०-वासि ।
दुइ वि०सं० दो,-चंद, दुगना,-ठूँ,-ठें,-ठी, केवल दो, प्र०-औ, दूऔ, दूअउ (ला०) दूनौ,-नौं,-अै, दुई, -तरफा, दोनों ओरवाला,-ली (कार्रवाई आदि) ।
दुकड़ा सं० पुं० पैसे का एक भाग, स्त्री०-ड़ी वै० -री ।
दुकान सं० स्त्री० दूकान,-कंदार, दूकानदार, वै० -नि ।
दुकाव वि० न जाने क्या कुछ; वै० दुका, दौं+ का ? दे० दहु ।
दुकेस वि० पुं० न जाने कैसा स्त्री०-सि, वै० -क्यस ।
दुकैसे क्रि० वि० न जाने कैसे वै०-सै ।
दुकैहा क्रि० वि० न जाने किस दिन वै०-कहिआ (दे० कहिआ) ।
दुक्का सं० पुं० दो चिह्नवाला ताश, वै०-क्की, यक्का -क्रि० वि० एक या दो के साथ ।
दुख सं० पुं० दुःख, क्रि०-ब,-खाव, दुखना, दर्द करना;-दर्द, कष्ट, वि०-हिल,-लहल, घाववाला (अंग) ।
दुखइब क्रि० स० दुखा देना, छूकर दर्द पैदा कर देना, प्रे०-वाइब, वै०-खा- ।
दुखड़ा सं०पुं०दुःख का हाल,-गाइब,-कहब,-रोइब, -सुनब,-सुनाइब वै०-रा ।
दुखतरी वि० लड़की का (अधिकार), (जायदाद पर) कन्या का (कानूनी हक़), फ़ा० दुख़्तर (कन्या) ।
दुखब क्रि० अ० दर्द करना, प्रे०-खाइब,-खइब, प्र० -क्खब, वै०-खाव ।
दुखलहल वि० (अङ्ग) जिसमें घाव या फोड़ा आदि हो, जो शीघ्र दुख सके, वै०-हिल ।
दुखाइब क्रि० स० दुखाना, दर्द पहुँचाना, दे० दुखइब ।
दुखारी वि०दुखी, प्रायः कविता में प्रयुक्त तुल०जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
दुखिआ सं० दुखी व्यक्ति, वै०-या ।
दुखी वि० दुखपूर्ण, दुख से ग्रस्त ।
दुगुना वि० पुं० दोगुना, स्त्री०-नी ।
दुग्गी सं० स्त्री० ताश जिसमें दो का चिह्न बना हो ।
दुत विस्म० डाँटने का शब्द प्र०-त्तोरे के !,-त्त, धत (दे०), सं० दुतकार, दुत कहने का अवसर आदि, दे० दु ।
दुतकारब क्रि० स० दुतकारना, 'दुत-दुत' कहना, फटकारना, भगा देना ।
दुतरफा वि० जिसमें दोनो की बात रहे; दोनो को खुश या नाखुश करनेवाली (बात, कार्रवाई आदि) वै० दुइ- ।
दुतल्ला वि०पुं० जिसमें दो तल्ले हों ।
दुताई सं० स्त्री० दूत का कार्य, चुँगली,-करब, इधर का उधर लगाना ।
दुतिआ सं० स्त्री० द्वितीय, द्वितीया का चंद्रमा, वै०-या ।
दुदहँड़ि सं० स्त्री० हंडी जिसमें दूध गर्म होता हो, दूध+हाँडी (सं० दुग्ध+भांड); वै०-ध- ।
दुद्धी सं० स्त्री० खरिया. एक बूटी जिसमें दूध होता है और जो कई दवाओं में काम आती है । सं० दुग्ध ।

दुद्धू दे० दूधू।
दुधारि वि० स्त्री० खूब दूध देनेवाली।
दुनवढ वि० पुं० दुगुना, क्रि०-ब, दूना हो जाना; स्त्री०-ढ़ि।
दुनाली सं० स्त्री० दो नालवाली बंदूक।
दुनिआ सं० स्त्री० संसार,-भर, बहुत सा, वै० -या।
दुनी सं० स्त्री० कविता में प्रयुक्त 'दुनिया' का रूप।
दुनौ दे० दुइ।
दुपट्टा दे० डुपट्टा।
दुपदुपाब क्रि० अ० दुप दुप करना, काँपते रहना।
दुपल्ला वि० पुं० जिसमें दो पल्ले हों, स्त्री०-ल्ली, -लिया (टोपी)।
दुपहर सं० पुं० दोपहर, स्त्री०-री,-रिआ, इस नाम का एक फूल भी होता है जो दोपहर को फूलता है, दुइ+पहर, सं० प्रहर।
दुपहरिया सं० स्त्री० दोपहर का भोजन, ऐसे भोजन का कच्चा सामान, दाना-, खाना,-देब।
दुपहरी सं० स्त्री० दोपहर का समय, गर्मी का वक्त, खड़ी-, दिन का वह समय जब बहुत गर्मी पड़ती है।
दुपाब दे० दपाई, दपाब।
दुबकब दे० दबकब।
दुबकड़ सं० पुं० दुबे (दे०) का घृ० रूप, कहा० दुबे दुबक्कड़ तीबे नबाब, तिवारी हरजोतना चौबे चमार।
दुबचउर वि० पुं० जहाँ दूब की हरियाली और भूमि चौरस हो, सुन्दर (स्थान), क्रि० वि०-रें, ऐसे स्थान पर।
दुबरई सं० स्त्री० गरीबी, धनहीनता, वै०-पन, सं० दुर्बल।
दुबराब क्रि० अ० दुबला हो जाना, प्रे०-रवाइब, सं० दुर्बल।
दुबाइनि सं० स्त्री० दुबे की स्त्री।
दुबाढ़ा वि० पुं० दुगना, अधिक,-देब,-लागब।
दुबारा क्रि० वि० दूसरी बार; फिर।
दुब्बक सं० पुं० अड़चन,-लगाइब।
दुमडब क्रि० स० दुमड़ देना, दो तह कर देना, प्रे० -डाइब।
दुमना वि० पुं० जो (पशु) खड़े-खड़े हिलता हो, स्त्री०-नी, ऐसे पशु कुलक्षणी माने जाते हैं।
दुम्मा सं० पुं० मोटी दुमवाली भेड़,-भेड़ा, ऐसी भेड़।
दुरदुराइब क्रि० स० कुत्ते को दुतकारना, हटाना या मारना 'दुर दुर' कहना।
दुरपती सं० स्त्री० द्रौपदी जी,-जी,-महरानी, सं०।
दुरबल वि० पुं० कमजोर, स्त्री०-लि; सं०।
दुरमुस सं० पुं० सड़क पीटने का औज़ार।
दुरिआइब क्रि० स० अपमानपूर्वक भगा देना, प्रे०-वाइब।
दुर्रे संबो० बच्चों के चुप करने या सुलाने का शब्द जो बार बार राग से दुहराया जाता है,-दुर्रे, माता बच्चे को कल्पना कराती है कि कोई कुत्ता, बिल्ली आदि उसके पास से 'दुरदुर' कहके भगाया जा रहा है।
दुलकब क्रि० अ० ठुमुक-ठुमुक कर चलना, वि० -कन, जो दुलकता हुआ चले।
दुलकी सं० स्त्री० घोड़े की एक प्रसिद्ध चाल, -चलब,-चलाइब, तु० दुलदुल (प्रसिद्ध घोड़ा)।
दुलत्ती सं० स्त्री० (पशुओं और विशेषकर घोड़े या गदहे के) पीछे के दो लात, पैर की मार, -मारब,-फेंकब,-लगाइब।
दुलराब क्रि० अ० (बच्चों या स्त्रियों का) दुलार से बिगड़कर ऐंठी ऐंठी बातें करना, प्रे०-रवा-इब।
दुलरुआ सं० पुं० दुलारा, प्रेमपात्र, स्त्री०-ई, जा० (पदु० १२, १) वै०-ले-।
दुलहा सं० पुं० वर, पति, स्त्री०-हिन,-नि, कविता में-ही, स्त्रियों को संबोधित करने के लिए भी 'दुलहिन' कहते हैं।
दुलाई सं० स्त्री० हलकी रज़ाई।
दुलार सं० पुं० प्रेम का व्यवहार जो बड़े छोटों से करें, वि०-रा,-री, जो दुलार से पाला गया हो; क्रि०-ब, प्रेम भरे शब्दों से बार-बार पुकारना, उछालना आदि (जैसा बच्चों के साथ प्रायः होता है)।
दुवा सं० स्त्री० आशीर्वाद,-देब,-भभूति, आशीर्वाद एवं प्रसाद,-लागब, वै०-आ।
दुवाइति सं० स्त्री० दावाद, दे० दवा-।
दुवारा सं० पुं० दरवाजा,-करब, मृत्यु के बाद उसके घर मातम के लिए जाना, स्त्री०-रि,-री, वै०-आ-, सं० द्वार, क्रि० वि०-रे, दरवाजे पर, बाहर।
दुवासि सं० स्त्री० द्वादशी, वै०-दसी,-आ-, सं०।
दुवौ दे० दुइ,-जने, दोनों जने,-जनी, दोनों स्त्रियाँ।
दुसमन सं० पुं० वैरी, भा०-नाय,-नई,-नी, दुश्मन।
दुसरा वि० पुं० दूसरा, स्त्री०-री, सं० दूसरा चर्प, प्र०-रै,-रौ, दे० दूसर।
दुसराइब क्रि० स० दुहराना, फिर से या और परोसना, देना आदि।
दुसवार वि० पुं० कठिन,-करब,-होब, वै०-सु-, दुश्वार।
दुसाला सं० पुं० दुशाला।
दुस्ट वि० पुं० दुष्ट, स्त्री०-ष्टि, भा०-ई,-हटई, वै०-हुट, सं०।
दुस्टई सं० स्त्री० दुष्टता,-करब, वै० -ह-।

दुहब क्रि० स० दुहना; वसूल करना, खूब ले लेना, प्रे०-हाइब,-उब, सं० दुह्।
दुहरब दे० दोहरब।
दुहराइब दे० दो-।
दुहाई दे० दोहाई।
दूअउ दे० दुइ।
दूजि सं० स्त्री० द्वितीया, जम-, भाई दूज, यम द्वितीया. वै० दुइज।
दूत सं० पुं० संदेश ले जानेवाला, शीघ्र जानेवाला भा० दुताई (दे०); स्त्री०-ती।
दूध सं० पुं० दूध -गारब, दूध निकालना,-पूत, सब कुछ (आशीर्वाद स्वरूप) सं० दुग्ध कहा० दूधे (दूधन) नहाव (पूतन) पूलें फरौ, खूब खुशी रहो।
दून वि० पुं० दूना, दूनै-, बराबर दूना (बढ़ना)।
दूनौ वि० दोनों ही, दे० दुइ।
दूबर वि० पुं० दुबला, कम पैसेवाला, स्त्री०-रि, क्रि० दुबराब, भा० दुबरई, सं० दुर्बल।
दूबा स० पुं० बड़ी-बड़ी दूब सं० दूर्वा।
दूबि सं० स्त्री० दूब।
दूबे सं० पुं० ब्राह्मणों की एक उपजाति, दुबे; स्त्री० दुबाइन,-नि, वै० दुबे; सं० द्वि + वेद।
दूभर वि० पुं० दुष्प्राप्य, कठिनता से प्राप्त होने वाला,-होब सं० दुर्लभ का विकृत रूप।
दूमब क्रि० अ० खड़े-खड़े हिलना (पशुओं का)।
दूरि वि० दूर; प्र०-हि,-रैं सं० दूर।
दूलभ वि० दुर्लभ,-दास, प्रसिद्ध संत;-होब,-रहब, सं० दुर्लभ।
दूलह सं० पुं० दुलहा, दूल्हा; तुल० जस-तस बनी बराता; कविता में ही प्रयुक्त, स्त्री० दुलही, दे० दुलहा।
दूवौ दे० दुइ।
दूसब दे० धूसब।
दूसर वि० पुं० दूसरा पराया, स्त्री०-रि प्र० दुसरैं, दैवक-, बड़ा शक्तिशाली दे० दइउ।
देह सं० स्त्री० शरीर,-दसा, शकल-सूरत, वि० -गर, अच्छे शरीरवाला।
देउँका सं० पुं० दीमक,-लागब, वै० देवँकि, क्रि० -काब, दीमकों से प्रभावित होना।
देखब क्रि० स० देखना, प्रे०-खाइब,-खवाइब, -उब,-सुनब, जाँच करना, समाचार लेना।
देखवार सं० पुं० देखनेवाला, वर देखनेवाला; वै० द्य-।
देखा-देखी क्रि० वि० दूसरे को देखकर।
देखार वि० पुं० स्पष्ट; दिखाई पड़नेवाला;-प्रगट -होब, (छिपी बात का) प्रगट हो जाना, व्यवहार से स्पष्ट हो जाना; वै० द्य-।
देखैया सं० पुं० देखनेवाला, रक्षा करनेवाला वै० -खवैया, द्य-।
देन सं० पुं० जो कुछ दिया जाय,-दार, देनेवाला; वै०-नी,-नि।
देना सं० पुं० बाकी जो किसी को देना हो वार्षिक चंदा, पोत, किराया आदि,-लेना।
देनी सं० स्त्री० जो कुछ दूसरे से या भगवान से प्राप्त हो, आशीर्वाद अथवा कृपास्वरुप प्राप्त वस्तु।
देब क्रि० स० देना,-लेब, देनालेना; प्रे० देवाइब, भा० देन,-ना,-नी।
देबी सं० स्त्री० देवी;-देवता -जी, कोई भी सभ्य स्त्री कभी-कभी व्यंग रूप में साधारण स्त्रियों के लिए भी प्रयुक्त, पुत्र की समानता करते हुए पुत्री के लिए भी यह शब्द आता है।
देर दे० बेर।
देवँकि सं० स्त्री० दीमक;-लागब, वै०-उँका, वि० -हा,-कही, दीमकवाला, दीमक लगा हुआ।
देवकी सं० व्य० कृष्ण की माता,-नंदन, कृष्ण।
देवखरी सं० स्त्री० देवताओं का समूह; देव-, देवता भवानी आदि, वै० द्य-।
देवदार सं० पुं० प्रसिद्ध पेड़ और उसकी लकड़ी, सं०-रु।
देवपख सं० पुं० पितृपक्ष के साथवाला पक्ष जो देवताओं की पूजार्थ विशिष्ट है।
देवर सं० पु० पति का छोटा भाई, स्त्री०-रानि; गीतों में ''देवरा'; सं०।
देवल सं० पुं० मंदिर।
देवाई सं० स्त्री० देने का ढङ्ग, क्रिया आदि।
देवान दे० दिवान।
देवाना वि० पु० पागल, स्त्री०-नी, दीवानः।
देवारी सं० स्त्री० दिवाली, दिया-, दीपावली।
देवाला सं० पु० दीवाला,-निकारब,-काढ़ब।
देवालि सं० स्त्री० दीवार, वै० दिवालि -गीर, लालटेन जो दीवार के सहारे रखी जाती है।
देवैया सं० पु० देनेवाला कहा० अजगर कहँ भक्ख राम देवैया।
देस सं० पु० देश -साउर, दूर का स्थान जहाँ से माल आवे या जहाँ जाय;-सी, वि० अपने देश या देहात का;-देसांतर,-परदेस, चारों ओर, सारे संसार में सं०।
देसनी सं० स्त्री० देश का अज्ञात भाग;-क ओरें, बहुत दूर, सं० देश + नी (दूरी एवं लघुत्वद्योतक प्रत्यय)।
देसवरिआ सं० पु० सफ़ेद कुम्हड़ा जिसका मुरब्बा आदि बनता है, वै०- कोहड़ा।
देसाउर सं० पु० व्यापार का स्थान, बाहरी मंडी, वि०-री, बाहर का (माल), दे० देस।
देसाचार स० पु० देश का रिवाज, सं० देश + आचार।
देसी वि० अपने देश का, बाहर का नहीं, कहा० देसी कौवा मराठी भाखा।
देहाति दे० दिहात।
दैजा स० पु० दहेज, वै० दयजा, दायज,-देब,-लेब, -माँगब,-पाइब।

दैया दे० दइआ।
दैव दे० दइउ।
दौंदब क्रि० स० इनकार करना (बात को), विरोध करना, सं० द्वन्द्व।
दोख सं० पुं० दोष, पाप,-देव,-लागव,-लगाइव, -होव, वि०-खी, दुर्गुणी, ऐबी (व्यक्ति),-पाप, सं०।
दोगा सं० पुं० रजाई का छपा हुआ कपड़ा।
दोड सं० पुं० व्याह के बाद की दूसरी विदाई जो गौने (दे० गवन) के कुछ दिन पीछे होती है;-देव, -लाइब, वै० दोंग।
दोचा सं० पुं० हिसाब में कमी, नुकसान,-परब, कहा० गदहा कि गाँठी म नव मन दोचा?
दोना सं० पुं० पत्तों का बना पात्र, स्त्री०-निआ, -काढ़व, मृत्यु के दूसरे दिन दोने में रखकर भात, उड़द की दाल आदि दाहकर्त्ता द्वारा रास्ते पर रखवाना, लघु०-नका।
दोपच स० पुं० अड़चन, दुविधा,-परब,-डारब।
दोब सं० पुं० रोक, नियंत्रण क्रि०-व, रोकना, मना करना, हाँकना, प्रे०-बाइव,-बवाइव।
दोमट वि० स्त्री० अच्छी (भूमि), उपजाऊ, दु-, दो (दोहरी, मोटी)+मट (मिट्टी)।
दोयँ सं० पुं० मारने की आवाज,-से, ज़ोर से, भो० गोयँ।
दोसन वि० द्वेष करनेवाला, विरोधी, सं० द्वेष।
दोहरस वि० स्त्री० उपजाऊ (मिट्टी या भूमि), वै० -सि।
दोहराइव क्रि० स० दुहराना, प्रे०-रवाइव।
दोहरि सं० स्त्री० दुहरी चादर खलनेवाली बात, -देव, अनुमोदन करना,-बोलव, ऐसी बात बोलना, फबती कसना; भो०, मै०।
दोहा सं० पुं० दो पंक्तिवाला प्रसिद्ध छंद,-चउपाई, दो छंद जिनमें रामायण लिखी गई है।
दोहाई सं० स्त्री० सहायता की आशा में की गई पुकार,-देव, संबो०-सरकार कै!, सरकार (आप) बचावें!, राम-, रामजी की शपथ! भो० मै० तुल०।
दोहान सं० पुं० जवान बैल, भो०, मै -हरा।
दौंडरा दे० दवँगरा।
दौना सं० पुं० एक छोटा पौदा जिसकी पत्तियाँ सुगंधित होती और देवी को चढ़ाई जाती हैं, -मडुवा जिसका गीतों में उल्लेख है। दे० दवना, मै०, भो०।
दौराई दे० दउराई।
दौरी दे० दउरी।
दौलति सं० स्त्री० सम्पत्ति, वै० दउ-'।

ध

धधा सं० पुं० खूब जलता हुआ अलाव,-बारब, धंधा जलाना, साधारण या नित्य प्रति का काम, काम-, व्यापार।
धँवर वि० पुं० सफेद (पशु), स्त्री०-रि,-री, वै० -रा; सं० धवल।
धँसनि स० स्त्री० धँसने की स्थिति, वै०-सानि।
धँसब क्रि० अ० धँसना, पतन होना, समझ में आना, प्रे०-साइव,-उब।
धउँकनी सं० स्त्री० धौंकनी।
धउँकव क्रि० स० धौंकना, (धातु) गर्म करना, प्रे० -काइव,-कवाइव, भा०-काई,-कवाई।
धउँधिआव क्रि० अ० जल्दबाज़ी करना, व्यर्थ की शीघ्रता करना।
धकधकाव क्रि० अ० धकधक करना।
धकाधक क्रि०वि० खूब तेज़ी से, निरंतर, प्र०-क।
धकापेल क्रि० वि० बहुतायत से, धक्का+पेल (दे० पेलब); वै०-पइँच।
धक्का स० पुं० धक्का, क्रि०-किआइव, धक्का देना।
धगरिन स० स्त्री० (गीतों में) धोबिन; इसका पुं० शब्द नहीं बोला जाता।
धचका दे० हचका।
धड़ंग दे० नंग-धड़ंग।
धडकब क्रि० अ० धड़कना, प्रे०-काइव।
धडका सं० पुं० धड़कने की क्रिया; डर, संदेह, प्र० -डाका,-का।
धडक्का सं० पुं० ज़ोर का शब्द, धूम-, चहल-पहल, भीड़-भाड़।
धतुरा सं० पुं० प्रभावशाली व्यक्ति।
धधकब क्रि० अ० धधकना, खूब जलना, प्रे० -काइव।
धधाव क्रि०अ०प्रज्वलित होना, तीव्रइच्छा करना।
धन सं० पुं० द्रव्य,-छय, धन की बरबादी,-करव, -होव, वि०-इत, धनाढ्य।
धनइत वि०पुं० धनवाला, स्त्री०-तिन, गीत-"बहिनि धनइतिनि भइया निर्धन" वै०-नैत।
धनकोदया सं० पुं० धान एवं कोदो (दे०) मिला हुआ अन्न, स्त्री०-दई (दे० कोदई), भो०।
धनखर सं० पुं० धान का खेत।
धनगर वि० पुं० धान उत्पन्न करनेवाला (खेत), स्त्री०-रि, भो० मै०-हर।
धनछय सं० पुं० दे० धन, सं० धनक्षय, वै० धन्छय।

धनिश्रा सं० स्त्री० धनिया,-मेथी, दो प्रसिद्ध साग।
धनिया सं० स्त्री० युवा स्त्री, दुलहिन; मालवी में 'धनी' पति या मालिक के लिए आता है।
धनी वि० धनाढ्य, धनवाला या धनवाली, सं०।
धनुख सं० पुं० धनुष, सं०।
धनुहा सं०पुं० बड़ा धनुष,स्त्री०-ही, तुल०बहु धनुहीं तोरेउँ लरिकाईं।
धनेचि सं० स्त्री० एक बड़ी चिड़िया जिसका मांस खाया जाता है; वै०-स,-सि।
धनैत दे० धनइत।
धन्ना सं० पुं० धरना,-देब, वै० धर्ना; क्रि०-ब।
धन्नासेठ वि० बहुत धनाढ्य।
धन्नि सं० स्त्री० धरनि, मोटी लकड़ी जो कुँए पर या दीवार पर रखी जाती है, सं० धृ।
धन्नि वि० धन्य, प्रशंसनीय,-होब,-भागि, धन्यभाग्य; -धन्नि, धन्य धन्य।
धपक्का सं० पुं० ज़ोर की थपकी;-मारब -लगाइब।
धपाधप वि० बहुत साफ, उज्ज्वल; प्र०-प्प।
धपाप सं० पुं० प्रसिद्ध स्थान जो सुलतान पुर प्रांत में है और जहाँ स्नानार्थ मेला लगता है। वै० धौ-।
धपैया सं० पुं० धाप; कोस का आधा, एक मील की दूरी।
धबइल दे० ढबइल।
धब्बा सं० पुं० दाग,-परब,-डारब।
धमक सं० स्त्री० धमकने की आवाज़; क्रि०-ब, मारना, धमक की आवाज़ देना।
धमकाइब क्रि० स० धमकाना; भा०-की।
धमकी सं० स्त्री० धमकी;-देब, क्रि०-किआइब।
धमक्का सं० पुं० धक्का; स्त्री० मोटी स्त्री।
धमधमाब क्रि० अ० धमधम शब्द होना; प्रे० -माइब।
धमसा सं० स्त्री० छोटी चेचक,-निकरब,-होब।
धमाक सं० पुं० 'धम' का शब्द; प्र०-का,-से, ज़ोर से (गिरना)।
धमार सं० पुं० प्रसिद्ध गीत।
धमिना सं० पुं० एक प्रकार का साँप, धामिन।
धमी-धमा सं० पुं० मारपीट, प्र०-म्मी-म्मा; वै० धमा-धमी,-होब,-करब।
धरउआ सं० पुं० बिना ब्याह के ऐसी स्त्री का लाना जिसका ब्याह पहले हुआ हो,-बइटाइब -लाइब।
धरकब क्रि० अ० धड़कना प्रे०-काइब, वै०-ड-।
धरता सं० पुं० ऋण -रहब, ऋणी रहना।
धरती सं० स्त्री० पृथ्वी, भूमि।
धरनि सं० स्त्री० दे० धन्नि।
धरब क्रि० स० पकड़ना, रखना, प्रे०-राइब,-वाइब, -उब -टठाइब, उपयोग में लाना, सँभालना।
धरम सं० पुं० धर्म; वि०-मी, धर्म करनेवाला, -करम, आचार-विचार, सं०।
धरमातमा वि० धर्म करनेवाला।
धरमारथ क्रि० वि० निःस्वार्थ, धर्म के लिए, सं०।
धरहरिया सं० स्त्री० पकड़ने की कोशिश, बाध्य करने का प्रयत्न,-होब; -करब सं० धृ + हृ (धरब + हरब)।
धराई सं० स्त्री० पकड़ने की क्रिया,-पाइब, पकड़ पाना; सं० धृ०।
धराऊ वि० सुरक्षित (कपड़ा आदि), विशेष अवसरों पर पहनने के लिए रखा हुआ,-धरब, वै० -ऊँ; सं० धृ।
धरिकार सं० पुं० बाँस की टोकरी आदि बनानेवाला, स्त्री०-रिन।
धरोहरि सं० स्त्री० थाती, जो वस्तु दूसरे के लिए रखी हुई हो,-धरब।
धरौआ दे० धरउआ।
धवरहरा सं० पुं० टीला, ऊँची इमारत, मीनार।
धहर-धहर दे० भहर-भहर।
धाइब क्रि० अ० दौड़ना,-धूपब, दौड़-धूप करना; सं० धा, वै०-उब।
धाकड़ सं० पुं० निकृष्ट ब्राह्मण।
धागा सं० पुं० डोरा, तागा।
धातु सं० स्त्री० वीर्य।
धान सं० पुं० चावल का पेड़, उसका दाना; सं० धान्य।
धानी सं० पुं० एक प्रकार का रंग।
धाम सं०पुं० पवित्र स्थान; चारों धामों में से एक, द्वारका,बदरीनाथ, पुरी एवं रामेश्वरम्; चारिउ-; सं०।
धार सं० स्त्री० चाकू या तलवार की धार; वै० -रि।
धारा सं० पुं० बहाव; गहरा पानी, दशा, बुरी हालत;-क पहुँचब,-होब, बुरी दशा हो जाना, सं०।
धारि सं०स्त्री० देवी को चढ़ाई हुई वह पानी की धार जिसमें लौंग, गुड़ आदि डाला हो -ढरकावन (दे०); -देब,-चढ़ाइब, सं०।
धारौं-धार क्रि० वि० बेरोक-टोक (बह जाना, पतित होना), एकदम, निरंतर; बीच धारा में पड़कर।
धाह सं० पुं० जलन, जलती हुई आग की दूर से लगती गर्मी;-मारब,-लागब, सं० दह्।
धिक्कारब क्रि० स० बुरा कहना, सं० धिक्।
धिड़रा वि० पुं० सुस्त, लुच्चा, जिसे कोई काम न हो, भा०-रई,-रपन, दे० धींढधींढा।
धिया-पूता सं० पुं० बाल-बच्चे; धी (कन्या) + पूत (पुत्र) 'धिया' स्त्रियों द्वारा अलग भी संबोधन रूप में बोला जाता है। बराबर अवस्थावाली स्त्री को 'बहिनी' और छोटी को 'धिया' कहा जाता है।
धिरइब क्रि० स० धमकाना, प्रे०-वाइब।

धींकब क्रि० अ० गर्म होना, प्रे० धिकइब,-चाइब, -उब ।
धीङ-धीङा सं०पुं० अस्तव्यस्तता,-करब,-मचाइब, शायद इसी से 'धिङरा' बना है ।
धीम वि० पुं० धीमा, स्त्री०-मि, क्रि०वि०-में,-में -धीमें, धीरे-धीरे, मज़े में ।
धीया दे० धिया- ।
धीरज सं० पुं० धैर्य,-धरब, धैर्य करना, सं० धीर ।
धीरपूर वि० पुं० शांत एवं धैर्यवान्, भा० धिर-पुरई ।
धीरा सं० पुं० धीरज,-धरब, ठहरना, शांत रहना; -गम्हीरा, धैर्य एवं गांभीर्य ।
धीरें क्रि० वि० शांत होकर,-धीरें, शनैः शनैः ।
धीवर सं० पुं० कहार ।
धुआँठब क्रि० अ० धुएँ से काला पड़ जाना, प्रे० -ठाइब, दे० धुवाँ; वै०-वँ- ।
धुइँहर सं० पुं० धुआँ करने के लिए जलाई हुई आग;-करब, ऐसी आग जलाना (प्रायः मच्छड़ों को भगाने के लिए) ।
धुकुनब क्रि०स० मारना, पीटना, खूब पीटना, प्रे० -नाइब, वै०-नकब ।
धुकुर-धुकुर क्रि०वि० धक-धक (हृदय का चलना), वै० धुकुर-पुकुर,-करब,-होब ।
धुचब क्रि० अ० हठ करना, सं०-च्चि (दे०), प्र० -च्चाब ।
धुच्चि सं० स्त्री० हठ, व्यर्थ की जिद,-करब, क्रि० -चब,-च्चाब; वि०-च्ची ।
धुनकब दे० धुकुनब ।
धुनकी सं० स्त्री० छोटी सी डेहरी (दे०),-यस, छोटा एवं मोटा, व्यं० पेट (प्रायः छोटे बच्चों का) ।
धुनब क्रि० स० धुनना; बार-बार कहते रहना, हठ करना, प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब ।
धुनाई सं० स्त्री० धुनने की विधि अथवा मज़दूरी ।
धुनि सं० स्त्री० ध्वनि, धुन, रट,-लगाइब, क्रि० -आब, जिद करना, व्यर्थ काम करने के लिए इच्छुक होना ।
धुनिआँ सं० पुं० धुननेवाला, स्त्री०-निनि ।
धुनिनि सं० स्त्री० एक चिड़िया जो रुई के रंग की होती है ।
धुपाइब क्रि० स० धूप से (टोकरी को) पुताना, प्रे० -पवाइब; दे० धूपब ।
धुपुर-धुपुर दे० धुकुर-धुकुर ।
धुमिल वि० पुं० मटमैला, स्त्री०-लि, क० "नैहरे म चुनरी धुमिलि भइ", वै० धू- सं० धूम्र (धुएँ के रंग का) क्रि०-लाब ।
धुर सं० पुं० धुरा, स्त्री०-री, वै० प्र०-रा ।
धुरिआधाम सं० पुं० नाश की ओर, धूल का घर; -म जाब, नष्ट होना ।
धुरिआब क्रि० अ० धूल लग जाना, प्रे०-वाइब ।
धुवाँ सं० पुं० धुआँ, वि०-मिल, क्रि०-ब, धुआँठब, -वँठब; मु० मुँह-होब, आश्चर्य या शर्म से मुँह फक हो जाना, सं० धूम्र ।
धुस्स सं० पुं० ढेर (बालू का),-होब,-परब, प्र० धु-, धुसकट, बालू से भरी भूमि ।
धुस्सा सं० पुं० गर्म चादरा, हाथ से बुना पुराने समय का गर्म ओढ़ना ।
धूईं सं० स्त्री० धूनी,-रमाइब, (साधु संन्यासी का) मस्त होकर रहना, सं० धूम्र ।
धूप सं०पुं० एक पेड़ और उसकी लकड़ी जो सुगंध देती है,-दीप, पूजा का सामान, सं० ।
धूपब क्रि० स० धूप या करायल (दे०) से (टोकरी आदि को) पोतना, प्रे० धुपाइब,-पवाइब ।
धूम स० स्त्री० चहल-पहल,-धाम,-मचब,-मचाइब ।
धूमिल दे० धुमिल ।
धूरि सं० स्त्री० धूल, वि० धुरिहा,-माटी ।
धूह दे० ढूह ।
धेनु सं० स्त्री० दूध-देती हुई गाय; सं० ।
धोंधा वि०पुं० मोटा एवं सुस्त, सं० निर्जीव पदार्थ, सं० ढुंढि ।
धोइब क्रि० स० धोना, पीटना, खूब मारना, प्रे० -वाइब,-उब, वै०-उब ।
धोकर-कसा सं० पुं० काल्पनिक व्यक्ति जो अपनी 'धोकरी' (दे०) में बच्चों को भर के उठा ले जाय, इस शब्द से छोटे-छोटे बच्चे डराये जाते हैं । धोकर+कसब ।
धोकरी सं० स्त्री० बड़ी थैली, क्रि०-रिआइब, थैले में कसकर बाँध लेना ।
धोखा सं० पुं० धोका;-खाब,-देब, करब,-कमाब; वि०-बाज,-खेबाज, क्रि० वि० धोखी-धोखाँ, धोखे से ।
धोती सं० स्त्री० स्त्री या पुरुष की धोती,-लूगा, कपड़ा, सं० धौत (धुला हुआ), घृ०-ता ।
धोबिनि सं० स्त्री० धोबी की स्त्री ।
धोबी सं० पुं० धोबी,-घट्टा, धोबी का घाट (स्नान-वाला नहीं) ।
धोव सं० पुं० धोने की बारी, यक-, दुइ-, पहिला -, दुसरा-, (२) नाश, तोर-होय, तेरा नाश हो ! दूसरे अर्थ में यह शब्द शाप देने के ही लिए आता है । प्र०-वा ।
धोवन सं० पुं० धोने के बाद गिरा हुआ पानी, निकृष्ट अंश, गोड़े क-, तुच्छ (दूसरे की तुलना में) वै०-नारी ।
धोवाई स०स्त्री० धोने की पद्धति, क्रिया या उसकी मज़दूरी ।
धौं दे० दहुँ ।
धौंकनी दे० धउँकनी ।
धौरा वि०पुं० सफेद (बैल), स्त्री०-री, सं० धवल, दे० धँवर ।

धौलागिर सं० पु० धवलागिरि (चोटी)।
धौस सं० स्त्री० रोब, गर्वपूर्ण व्यवहार, वै० धउस, -सहब,-मानव।
धौसा सं० पु० बड़ा नगाड़ा,-बाजव,-बजाइब।

न

नंगई सं० स्त्री० निर्लज्जता एवं हठ,-करब, क्रि०-गाव।
नंगधड़ंग वि० पु० एकदम नङ्गा; प्र०-गै।
नंगबाँड़िया वि० पु० (बच्चा) जो अपनी बात पर मचला रहे, जिद्दी, नंगा (दे०)+बाँड़ा (दे०) वै०-आ।
नंगा वि० पुं० बेशर्म एवं झगड़ालू, स्त्री०-गिनि, क्रि०-व, हठ करना, वै०-ड्डा, भा०-गई,-लुच्चा, अत्यन्त नीच, सं० नग्न।
नंगानंग वि० पुं० बिलकुल नङ्गा, सं० नग्न, वै० नि-।
नंगाव क्रि० अ० अनुचित हठ करना।
नंद सं० पु० यशोदा के पति;-दुलारे, श्रीकृष्ण।
नंदि दे० ननदि।
नंदोई दे० ननदोई।
नइकी वि० स्त्री० नई, पुं०-वका (दे०)।
नइचा सं० पुं० हुक्के का नैचा।
नइनी सं० स्त्री० एक प्रकार की मछली जिसका उल्लेख गीतों में मिलता है, "कूदै मल्लाह पकरै-मछरी"-गीत।
नइया सं० स्त्री० नाव।
नइहर सं० पुं० (स्त्री के) पिता का घर या गाँव; क० "नइहरे म चुनरी धुमिल भइ"।
नई वि० स्त्री० नई, ताज़ा; सं० नव।
नउअई सं० स्त्री० नाई का काम, नीचतापूर्ण खुशामद,-करब, वै०-वई।
नउआझकोर सं० पुं० नाइयों की लबी पञ्चायत; झंझट; वै०-झाकडि।
नउज क्रि० वि० कोई हर्ज नहीं।
नउटंकी दे० नवटंकी।
नउहड़िआ दे० नवहडिया।
नकचवाइब क्रि० स० निकट पहुँचा देना, वै०-ग।
नकचाव क्रि० अ० निकट पहुँचना, वै० नग-, दे० नगीच।
नकछिकनी सं० स्त्री० एक घास जिसको मलकर सूँघने से छींकें आने लगती हैं।
नकटा सं० पु० व्यक्ति जिसकी नाक कट गई हो; स्त्री०-टी; एक छोटा गीत जो स्त्रियाँ गाती हैं।
नकटी सं० स्त्री० नाक की मैल।
नकदर वि० खराब, रद्दी, फ़ा० ना+कद्र।
नकनकाव क्रि० अ० नाराज़ होकर बोलते रहना।
नकबेसरि दे० बेसरि,-उतारब।
नकल सं० पुं० अनुकरण,-करब,-उतारब-बनाइब, वि०-ली, फ़ा०।
नकसा सं० पु० नक्शा,-खींचब,-उतारब,-बनाइब।
नकारब दे० नहकारब।
नकारा सं० पुं० इनकार, क्रि०-रारब,-हकारब।
नकासब क्रि० स० नक्कासी करना, प्रे०-कसवाइब, फा० नक्श।
नकिदर्रा सं० पुं० परेशानी, कष्ट; नाकि+दररब (नाक रगड़ना), वै०-कदर्रा,-करब,-होब।
नकिष्ट वि० निकृष्ट, रद्दी, सं०।
नकुना सं० पुं० नाक वै०-रा, ने-, न्य-।
नक्कू वि० मुँह छिपानेवाला;-बनब।
नक्कटई सं० स्त्री० बदनामी;-करब,-होब; नाक+कटाई।
नखड़ा सं० पु० नखरा,-करब, वि०-ड़हा,-ही, नखर:।
नखत सं० पुं० नक्षत्र, वै०-छत्र, सं०।
नखून सं० पुं० नाखून, वि०-नी, बारीक (किनारा), दे० नह।
नग सं० पु० बहुमूल्य पत्थर; आभूषण में जड़ा हुआ पत्थर या शीशा।
नगद सं० पु० नकद, बढ़िया, सं०-दी, नकद रुपया, प्र०-दै,-दौं,-नरायन, नकद रुपया।
नगर सं० पु० शहर; सहर-, देहात नहीं, वै०-अ, सं०।
नगाउरी सं० पु० एक प्रकार का बैल तथा गाय, नागौर (स्थान) से।
नगारा सं० पु० नगाड़ा;-बाजव,-बजाइब, विज्ञापन करना, नक्कार:।
नगिरही सं० स्त्री० स्त्रियों का एक आभूषण जिसमें नौ दाने होते हैं। सं० नवग्रह+ई।
नगीच वि० पु० निकट,-ची, निकट का सम्बन्धी क्रि० वि०-चें, क्रि०-गिचाव,-गचाव,-कचाव।
नगीना सं० पु० अँगूठी का पत्थर वि० सुन्दर, बहुमूल्य।
नगेसरनाथ सं० पु० अयोध्या का प्रसिद्ध शिव-मंदिर; बाबा-।
नघाइब क्रि० स० कुदा देना; 'नाघब' (दे०) का प्रे० रूप, प्रे०-घवाइब।
नघ्घन सं० पु० किसी रोगी के मलमूत्र को लाँघने से मिला रोग;-पाइब, दे० नाघब, सं० लंघ्।
नचना सं० पु० बारात में मित्रों एवं नातेदारों

द्वारा नाचनेवाले को दिया गया रुपया,-देब, -पाइब, सं० नृत्।
नचनिआ सं० पुं० नाचनेवाला, सं० नृत्।
नचवाइब क्रि० स० नचवाना, वै०-उब,-चाइब।
नचाइब क्रि० स० नचाना, परेशान करना।
नचाई सं०स्त्री० नाचने की क्रिया, सुन्दरता आदि।
नछरोहब दे० निछरोहब।
नजर सं० स्त्री० दृष्टि;-करब,-लागब,-लगाइब, -मारब, रिश्वत;-देब,-लेब, क्रि०-राइब,-राब, वै० -रि; फ़ा०।
नजरा सं० पुं० आगे के बड़े-बड़े बाल, जुलफी, -राखब।
नजराना सं० पुं० वह रुपया जो किसी को प्रसन्न करने के लिए दिया जाय,-देब,-लेब, फ़ा०।
नजराब क्रि० अ० टोना लगना; दूसरे की दृष्टि से प्रभावित हो जाना,-राइब, टोने की दृष्टि डालना, वै०-रिआब, फ़ा०।
नजरिआब दे० नजराब।
नजाकति सं० स्त्री० नज़ाकत, फ़ा०।
नजारा सं० पुं० प्रेम की दृष्टि, प्रेमियों का परस्पर देखना,-मारब, फ़ा०।
नजीर सं०स्त्री० उदाहरण, दृष्टांत (प्रायः मुकदमों का),-देब,-पेस करब, फ़ा०।
नजूल सं० पुं० भूभाग जो जोता-बोया न जाय।
नजोर वि० पुं० कमज़ोर;-होब, वै० निजोड़।
नट सं० पुं० खेल-कूद करनेवाली एक जाति के पुरुष, स्त्री०-टिनि,-टिनी,-न, सं०।
नटई सं० स्त्री० गला, गर्दन, वै० गटई,-फारब, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना।
नटारम सं० पु० प्रारंभिक तैयारी, पूरा प्रबंध, -करब,-होब; सं० नटारंभ।
नट्ठुला सं० पुं० नाटा व्यक्ति, स्त्री-ली, म०-ल्ला, -ल्ली।
नतअभेर सं० पुं० रिश्तेदारी का सिलसिला, नात+अभेर, दूसरा शब्द अलग नहीं बोला जाता।
नताइति सं० स्त्री० रिश्तेदारी।
नतोह सं० स्त्री० नाती (दे०) की स्त्री, सं० नप्तृ+वधू।
नतौ क्रि० वि० नहीं, दो बातों को नहकारने के लिए यह यों प्रयुक्त होता है:-न तौ अपुना आय न लरिका पठइस, न स्वयं आया, न लड़के को भेजा। कविता में "नतरु"।
नथब क्रि० अ० नथ जाना, प्रे० नाथब।
नथवाई सं० स्त्री० नाथने की क्रिया, ढंग या मज़दूरी।
नथाइब क्रि० स० नथवाना, नाथब (दे०) का प्रे० रूप।
नथिआ सं०स्त्री० नथ,-पहिरब,-झुलनी, दो प्रसिद्ध आभूषण जो नाक में पहने जाते हैं।
नथुनी सं० स्त्री० छोटी नथ,-गढ़ब,-गढ़ाइब।
ननदि सं० स्त्री० पति की बहिन, वै०-न्दि; गीतों में "ननदी, ननदिया"।
ननदोई सं० पुं० पति का बहनोई; ननद का पति, गीतों में "ननदोइया", वै० नदोई।
ननिआउर सं०पुं० नाना का घर, गाँव जहाँ नाना आदि रहते हों, क्रि० वि०-अउरें, ननिहाल में; सी०-हार।
ननिआससुर सं० पुं० पति या पत्नी का नाना।
ननुआ दे० ने-।
नन्हका वि० पुं० छोटा, स्त्री०-की, दे० नान्ह।
नपना सं०पुं० नापने की वस्तु, बर्तन आदि, स्त्री० -नी, स० माप।
नपहँड़ सं० पुं० नापने का बर्तन, नाप+हाँडी (भांढ)।
नपाइब क्रि० स० नपाना, प्रे०-पवाइब,-उब, वै० -उब, भा०-ई,-पवाई।
नपाक वि० पुं० अपवित्र, स्त्री०-कि, फ़ा० ना-, भा० नपकई।
नपान वि०पुं० प्रतीक्षा में, लालच में,-रहब, स्त्री० -नि, वै० न्य-।
नपाब क्रि० अ० (प्रायः खाने पीने की) लालच में रहना, वै० न्य-, ने-।
नपैया सं० पुं० नापनेवाला, प्रे०-पवैया, सं० माप्।
नफगर वि० पुं० नफा देनेवाला, फ़ा० नफ़ः+गर, स्त्री०-रि।
नफा सं० पु० लाभ,-मुनाफा, आय,-लेब,-करब, -पाइब, नफः।
नबाब सं० पुं० धनी व्यक्ति, अधिकारप्राप्त पुरुष, व्यं० व्यर्थ में गर्व अथवा अत्याचार करनेवाला, स्त्री०-बिन,-नि, भा०-बी, अराजकता, नव्वाब।
नबिस्सासी वि० विश्वास न करने योग्य, न+विस्सास (दे०), सं० विश्वास।
नबुला दे० नेबुल।
नबूझ वि० पुं० न समझनेवाला, स्त्री०-झि, वै० अ-, तुल० अबहुँ न बूझ अबूझ, न+ सं० बुद्धि, भा०-बुझई; दे० कमबुझ।
नबूद वि० पुं० नष्ट, स्त्री०-दि,-करब,-होब, फ़ा० नाबूद।
नबेली वि० स्त्री० नई, जवान (स्त्री), सुन्दर, शौक़ीन।
नबोल वि० पुं० बेहोश, जो न बोल सके, स्त्री० -लि, वै० अ-।
नब्बे वि० ९०, कहा० जइसै-तइसै छब्बे।
नमो नरायन संबो० गुसाइँ लोगों को नमस्कार करने का शब्द।
नमोसी सं० स्त्री० बदनामी,-करब,-होब।
नयका वि० पुं० नया; स्त्री०-की; वै०-व-।

नयचा सं० पुं० हुक्के की नली, वै०-इ-, नै- ।

नयन सं० पुं० आँख, दृष्टि, अपने-से, अपनी ही आँखों; कवि० में-ना,-नन,-नवा (गीत) ।

नयपाल सं० पुं० नैपाल,-ली, नैपाल देश का निवासी, वै० नै- ।

नयबई सं० स्त्री० नायब का पद या काम;-करब, -लेब,-पाइब ।

नर सं० पुं० पुरुष, मादा नहीं, सं० ।

नरई सं० स्त्री० एक घास जो पानी में होती है और जिसमें पत्ते नहीं होते,-तरई, (कुल का) कोई भी व्यक्ति, छोटे से छोटा सदस्य (परिवार का); प्राय: ये दोनो शब्द किसी कुल में निर्वंश होने पर प्रयुक्त होते हैं ।

नरक सं० पुं० स्वर्ग का उलटा,-कें जाब, नरक में पडना, वि०-हा,-ही, नारकीय,-करब,-होब, संकटपूर्ण करना या होना ।

नरकासुर सं० पुं० प्रसिद्ध राक्षस ।

नरकुल सं० पुं० जंगली पौदा जिसकी लकड़ी से कलम बनाते हैं ।

नरगह सं० पुं० दु:खमय स्थिति,-करब,-होब, सं० नृग । (?)

नरजई सं० स्त्री० अप्रसन्नता, नाराज़ी, वै० -राज़ी; दे० नराज ।

नरदई सं० स्त्री० नारद का काम, इधर-उधर लगाने की आदत, दे० नारद ।

नरदहा सं० पुं० नाबदान ।

नरनराब क्रि० अ० जोर जोर से बोलना, झगड़ा करना; नार:, वै० नरीब ।

नरबदा सं० स्त्री० प्रसिद्ध नदी,-करब,-होब, बहुत कीचड़ कर देना या होना; सं० नर्मदा ।

नरबदेसर सं० पुं० नर्मदेश्वर शिव ।

नरम वि० पुं० नर्म-गरम, सभी प्रकार का वातावरण, क्रि०-माब, नर्म होना, भा०-माई, नर्मी ।

नरमा सं० पुं० एक प्रकार की रुई और उसका पेड़ ।

नरा सं० पुं० पेट के भीतर का नाभि के पास का भाग जिसमें दर्द होता है;-उखरब,-बैठाइब, ऐसा दर्द होना और उसको शांत करना, प्र० नारा ।

नराज वि० पुं० रुष्ट; स्त्री०-जि, भा०-जी; नाराज़ ।

नरिअर सं० पुं० नारियल, वै०-यर ।

नरिआ सं० स्त्री० छत पर खपड़े के साथ रखी जानेवाली मिट्टी की बनी वस्तु, खपड़ा-, यह दोनों सामान, वै०-या ।

नरिआब क्रि० अ० चिल्लाना, व्यर्थ चिल्लाना, नार:; कहा० धिढ देत बाभन नरिआय, वै० नरांब ।

नरी सं० स्त्री० सूत लपेटने की लकड़ीवाली पोली चीज़,-दार, एक प्रकार का जूता, वै० नल्लीदार सं० नलिका ।

नरेस सं० पुं० राजा; कहा० परदेस कलेस नरेसहु को ।

नरोई सं० पुं० घुटने के नीचे का सामनेवाला भाग जिसमें ऊपर हड्डी होती है ।

नल सं० पुं० राजा नल, पानी का कल; स्त्री०-ली, सं० ।

नलायक वि० पुं० अयोग्य; भा०-लयकी, नालायक ।

नल्ला सं० पुं० हथेली एवं बाँह को जोड़नेवाला भाग स्त्री०-ल्ली, यकनल्ली, जिसके एक ही नल्ली हो, ऐसे लोग बड़े बलवान् होते हैं । नल्लीदार, एक प्रकार का जूता, दे० नरी ।

नव त्रि० नौ, क्रि०-तता, दाहिनी ओर घूमने के लिए हलवाहे का बैलों को निर्देश,-वाइब, मोड़ना; -गीर, नया ।

नवा सं० पुं० नये अन्न का ग्रहण,-करब,-होब, वर्ष में दो बार यह रस्म गाँवों में होती है, सं० नव (नया) वि० नया, कहा० नवा नौ दिन पुराना सब दिन ।

नवाइब क्रि० स० मोड़ना, सं० नम. ।

नवाई सं० स्त्री० नवीनता,-कै, नई बात; सं० नव +ई ।

नवारा सं० पुं० नाव पर चढ़कर खेला जानेवाला एक पुराना खेल, गीत—"सरजू मैं खेलत राम नवारा"; वै० ने- सं० नौ ।

नसइल वि० पुं० नशेवाला, मस्त, खतरनाक स्त्री० -लि, प्र०-ला; नश: ।

नसकट वि० जो नस काटे, घाव-"नसकट खटिया बतकट जोय... ..।"

नसकटा सं० पुं० मुसलमान, नस+कटा (जिसकी नस कटी हो अर्थात् मुसलमानी हुई हो) ।

नसल सं० स्त्री० जाति ।

नसहा वि० पुं० नशेवाला, स्त्री०-ही नश:+हा ।

नसा सं० पुं० नशा,-चढ़ब,-करब,-होब,-पानी, वक्त पर खाने या पीने का क्रम; वि०-सइल,-हा, -सेवाज ।

नसाइब क्रि० स० नशा करना, खोना; सं० नाश, वै०-ब्ब, प्रे०-सवाइब ।

नसि सं० स्त्री० नस;-नसि, प्रत्येक नस, रग-रग ।

नसी सं० स्त्री० हल से जुती एक पंक्ति, फार (दे०) का अग्रिम भाग;-घूमब, हल चलना ।

नसीहति सं० स्त्री० उपदेश, चेतावनी,-देब, -करब ।

नसुहा सं० पुं० लकड़ी का टुकड़ा जिसका आधा भाग भूमि में गाड़कर ऊपर चारा काटा जाता है ।

नसूर सं० पुं० फोड़ा जो अच्छा न हो, नासूर ।

नसेबाज वि० पुं० नशा करनेवाला, दे० नसा।
नस्ट वि० पुं० नष्ट, बहुत खराब;-भ्रस्ट, गया बीता, बुरी-बुरी गाली, सं०।
नह सं० पुं० नाखून,-न्नी, नाखून काटने का हथियार, नहे नह, प्रत्येक नख में,-नह टाँइना, बड़ा दंड; स० नख।
नहकारब क्रि० स० इनकार कर देना, "न" कह देना।
नहकै क्रि० वि० नाहक, व्यर्थ ही; प्र०-कौ, यों ही; ना+हक़ (सत्य)।
नहछू सं० पुं० विवाह के पूर्व वर एव वधू के नाखून काटकर पैर में महावर (दे०) देने आदि का रस्म,-करब,-होब वै० ने-।
नहट वि० पुं० नष्ट,-होब;-भरहट, नष्ट-भ्रष्ट।
नहनह वि० नाना प्रकार का (दुःख)।
नहन्नी दे० नह।
नहरूम वि० पुं० जिससे कुछ छीन लिया गया हो,-करब,-होब, महरूम।
नहवनिया सं० पुं० स्नान के लिए जानेवाला यात्री।
नहवाइब क्रि० स० नहलाना, वै०-उब, भा०-ई, नहाने की क्रिया, सं० स्ना।
नहसुति सं० स्त्री० एक पेड़ जिसकी लकडी लाल होती है। वै० ने-।
नहान सं० पुं० स्नान,-लागब, स्नान का मेला लगना, भीड़ होना, सं० स्नान।
नहारी सं० स्त्री० नाश्ता,-करब, सबेरे कुछ खाना।
नहिंआइब क्रि० स० इनकार कर देना, 'नहीं' कह देना, दे० नहकारब।
न हो ! सवो० क्यों ! सुनो !
नहोस वि० पुं० अजान, छोटा (उम्र में), नादान; न+होश, स्त्री०-सि, भा०-सी।
नाइब क्रि० स० डालना, प्रे० नवाइब, वै० -उब।
नाउनि स० स्त्री० नाई की स्त्री;-ठकुराइनि, नाइन का आदर प्रदर्शक संबोधन।
नाऊ सं० पुं० नाई;-बारी, नौकर,-ठाकुर, नाई को संबोधित करने का आदर प्रदर्शक रूप, भा० नउअई।
नाका सं० पुं० प्रवेशद्वार,-बंदी, प्रवेश पर नियंत्रण,-करब।
नाकि स० स्त्री० नाक, पानी में रहनेवाला भैंस की भाँति का एक बडा जानवर,-काटब, घोर अपमान करना।
नाकेदार सं० पुं० कर्मचारी जो नाके का नियंत्रण करता है। स्त्री०-रिनि, भा०-री।
नाग सं० पुं० साँप; करिया-,-नाथ, स्त्री०-गिनि; सं०; कहा० जइसे नाग नाथ तइसे साँप नाथ।
नागरी सं० स्त्री० हिंदी।
नागा स० पुं० अनुपस्थिति,-होब,-करब, अर० नागः।
नागिनि सं० स्त्री० छोटी विषैली सर्पिणी; ईर्ष्यापूर्ण बुरी स्त्री, दे० नाग।
नाघब क्रि० स० कूदना, पार करना; प्रे० नघाइब, -उब; सं० लंघ्, वै० नाँ-।
नाचब क्रि० स० नाचना, घबरा के इधर-उधर फिरना, प्रे० नचाइब,-उब, नचवाइब,-उब, सं० नृति।
नाचि सं० स्त्री० नाच;-खडी करब, नृत्य की पूरी पार्टी जुटाना; व्यं० व्यर्थ का फज़ीता करना, सं० नृत्य।
नाजो सं० स्त्री० (गीतों में) नाज़ करनेवाली सुंदरी, नायिका।
नाटक सं० पुं० तमाशा, खेल,-करब,-होब; सं०।
नाटा वि० पुं० कद में छोटा; स्त्री०-टी, सं० छोटा बैल, स्त्री० आदर प्रदर्शक रूप "नाटी"।
नात सं० पुं० रिश्तेदार,-हित,-बाँत, हित-मित्र, रिश्ता;-तूरब, रिश्ता तोड़ना; भा० नताइति, नाता।
नाती सं० पुं० पौत्र, स्त्री०-तिनि, व्यं० बेचारा, कोई व्यक्ति जिसे नीचा दिखाना हो, सं० नप्तृ; छोटे पौत्र को "नाती बाबा" भी कहा जाता है।
नातेदारी सं० स्त्री० रिश्ता,-करब,-तूरब।
नाथ सं० पुं० मालिक, प्रायः गीतों मे प्रयुक्त, सं०।
नाथब क्रि० स० नाथना, फँसाना, प्रे० नथाइब, नथवाइब।
नाथि सं० स्त्री० जानवरों की नाक मे बाँधने की रस्सी,-लगाइब,-पगहा।
नाधब क्रि० स० नाधना, जोतना, प्रे० नधाइब, -धवाइब,-उब, सं० नध्।
नाधा सं० पुं० रस्सी जो नाधने के काम आती है, -पैना क भीखि, देहात में प्रचलित एक भिक्षा जो जानवरों में बीमारी होने के समय किसान नाधा-पैना (दे०) लेकर माँगते हैं।
नाना सं० पुं० माँ का पिता; स्त्री०-नी, ये दोनो शब्द व्यं० स्वरूप छोटों के लिए क्रोध में प्रयुक्त होते हैं।
नान्ह वि० पुं० छोटा-सा, स्त्री०-न्हि, क्रि० वि० -न्हें, छुटपन में,-न्हे क मिलनियाँ, छुटपन का मित्र (गीतों में)।-भरे कै, बहुत छोटा सा।
नाप सं० पुं० माप,-लेब,-देब, क्रि०-ब, नापना।
नापब क्रि० सं० नापना, प्रे० नपाइब, नपवाइब, -उब, मु० गटई-,दंड देना,-जोखब, तौलना, जाँच पड़ताल करना, सं० माप्।
नाफा•दे० नेफा।
नाबदि सं० स्त्री० न होने की स्थिति, अस्वीकृति,

-होव,-करव, अस्वीकार करना, न+वदव (दे०)।
नाभी सं० स्त्री०बीच का भाग (भूमि या नदी का); सं०।
नाम दे० नावँ।
नाय सं० स्त्री० नाव; सं० नौ।
नायक सं० पुं० नेता, स्त्री०-का, प्रभावशाली स्त्री, व्यं० ,खराब स्त्री, गी० कुल्या क नायक, कुल का अगुआ, सं०।
नायब सं० पुं० सहायक भा०-बी।
नार सं० पुं० नाभी से जुड़ा लंबा चमड़ा जो बच्चे के जन्म पर काटा जाता है,-छिनब (दे०),-गाड़ब, इसके काटने को 'छिनब' (सं० छिद्) कहते और उसे काटकर तुरंत ही जन्म के स्थान पर ही गाड़ देते हैं।
नारद सं० पुं० प्रसिद्ध पौराणिक व्यक्ति,-मुनि; स्त्री०-दा, झगड़ालू स्त्री, इधर-उधर लगानेवाली स्त्री· दे० नरदई।
नारा दे० नरा, (२) नाला, नदी-।
नारायन सं० पुं० भगवान् वै० नरा-, स्त्री०-नी, -माई।
नारि सं० स्त्री० स्त्री, कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त; सं०-री।
नारी सं० स्त्री० नाड़ी;-देखव,-देखाइव, सं० नाड़ी, (२) नाली;-खोदव,-बनाइव।
नालि सं० स्त्री० नाल;-ठोंकव,-ठोकाइव,-वन्हाइव।
नाली दे० नारी।
नावँ सं० पुं० नाम, यश;-गाँव, विवरण,-वाँ-रासी, उसी नाम का दूसरा व्यक्ति, कहा० मर्द मरै नावँ कँ निमर्द मरै पेट कँ,-करव,-होव।
नास सं० पुं० नाश,-करव,-होव,-सैं, (शाप का रूप) तू ने नाश कर दिया! क्रि० नसाइव।
नासि सं०स्त्री० नाक में घी आदि डालने की क्रिया, -देव,-लेव।
नाहक क्रि० वि० व्यर्थ; प्र० नहकै, व्यर्थ ही।
नाहर वि० पुं० बहादुर; कहा० जरदार मर्द नाहर चहै घर रहै चहै बाहर,=शेर, वै०-रु, तुल० मारेसि गाय नाहरू लागी।
नाहाँ सं० पुं० इनकार,-करव।
नाहीं क्रि० वि० नहीं. सं० इनकार,-करव।
निकरव क्रि० अ० निकलना; प्रे०-कारव,-करवाइव, वै०-सव;-पइठव, आना जाना; सं० निष्क्रि-।
निकाई सं० स्त्री० अच्छाई।
निकार सं० पु० चेचक; (२) निकलने का ढंग, -पइठार, आना जाना;-होव; वै०-स।
निकोलव क्रि० स० छिलका उतारना, चमड़ा उतारना प्रे०-वाइव,-टव, निकोला मूस यस, दुबला पतला, मरियल सा।
निखरव क्रि० अ० निखरना, प्रे०-खारव, साफ़ करना,-चाइव,-टव।
निखार सं० पु० सफ़ाई,-करब, वै० ति-।
निखोरव क्रि० स० नाखून से छिलना, प्रे० -वाइव।
निगराइव क्रि० स० स्पष्ट कर लेना, वै० -ङ-, सं० निर्णय (?)
निगाह सं० स्त्री० दृष्टि, कृपा;-करव,-होव।
निगोड़ा वि० पुं० जिसके संतान न हो; वै०-ढ़ी, -ड़िया; नि+गोड़ (बे पैर=जिसका वंश आगे न चले)।
निघारव क्रि० स० (जाँत में कुछ न छोड़कर) पीसना; अच्छी तरह पीसना।
निङानिंग दे० नङानङ्ग।
निचला वि० पुं० नीचेवाला; स्त्री०-ली।
निचाट वि० सुनसान, निर्जन; क्रि० वि०-टें, निर्जन स्थान में, खुले में छत के नीचे नहीं।
निचाव क्रि० अ० नीचे आना, प्रे०-चवाइव,-उब।
निचोर सं० पुं० संक्षेप, असल रहस्य; क्रि०-व, निचोड़ना. प्रे०-रवाइव।
निछरोइव क्रि० स० नाखून से काट लेना।
निछान वि० पुं० केवल, जिसमें कुछ और न मिला हो, प्र०-नै, नि+छान (बिना छना हुआ, ज्यों का त्यों); निछान चाउर,-गुड़।
निज वि० पुं० बिलकुल, वै०-जु, स्त्री०-जि;-उल्लू; सं० निर्ज (निर्दिष्ट) (२)-कै, अपना, क्रि० वि० खूब, बिलकुल, एकदम; सं० निज, अपना।
निजड़ वि० पुं० कम या कुछ न जाड़ेवाला (दिन, मौसम),-होव,-रहव; नि+जाड़ (दे०)।
निजी वि० अपना, दूसरे का नहीं,-घर,-रुपया।
निजोड़ दे० नंजोर।
निठाह वि० (समय) जब कोई फ़सल आदि तैयार न हो;-महीना; भा०-ही;-ही मारिकै, मुँह पर बिना कोई भाव प्रदर्शित किये।
निठुर वि० पुं० निष्ठुर, स्त्री०-रि, भा०-ई।
निडर वि० पुं० निर्भय; स्त्री०-रि।
नित क्रि० वि० नित्य, प्र०-त्ति,-नित, प्रतिदिन, वै० -ति, सं० नित्य।
निथरव क्रि० अ० साफ़ हो-जाना (पानी आदि द्रव का), प्रे०-थारब,-थो-।
निदरव क्रि० स० निरादर करना, प्रे०-राइव।
निदाग वि० पुं० बेदाग, साफ़; लांछन-रहित;-रहव, -होव; स्त्री०-गि, प्र०-दगा।
निदोख वि० पुं० निर्दोष।
निधरक वि० बेफ़िक्र, प्र०-ड़क।
निधि सं० स्त्री० संपत्ति;-पाइव, अति प्रसन्न होना; प्र०-द्धि, न्यामत अलभ्य पदार्थ।
निधुआँ वि० जिसमें धुआँ न हो; वै०-रधूँ,-आगि, -आँचि; सं० निर्धूम।
निनार वि० अलग, स्पष्ट,-होव।
निनिआ सं० स्त्री० नींद, दे० नीनि; शब्द का यह रूप लोरियों में प्रयुक्त होता है।
निनुआ दे० नेनुआ।

निपट वि० एकदम, बिलकुल;-अनारी, क्रि०-ब, समाप्त करना, मिटाना (झगड़ा), प्रे०-टाइब।
निपुन वि० पुं० चतुर, होशियार, स्त्री०-नि; सं०-ण।
निपोर सं० पुं० कुछ नहीं, शून्य, क्रि०-ब, (मुँह) खोल देना, कुछ न कह सकना।
निफरब क्रि० अ० पार करना, पूरा कर लेना, प्रे० -फारब।
निबकब क्रि० अ० निकल जाना, अलग होना, छुट्टी ले लेना; प्रे०-काइब, वै०-बु-।
निबटब दे० निपट।
निबरई सं० स्त्री० निर्बलता, धनहीनता,-आइब।
निबराब क्रि० अ० निर्बल हो जाना, गरीब हो जाना।
निबहब क्रि० अ० निर्वाह होना, प्रे०-वाहब; सं० निर्वह।
निबहुर सं० पुं० एक काल्पनिक स्थान जहाँ जाकर कोई लौट न सके,-क कोलिया, ऐसे स्थान की गली; स्वर्ग,-रें जाब, मर जाना, नि (न)+बहुरब (लौटना)।
निबाजि सं० स्त्री० नमाज़,-पढ़ब, वै०-मा-।
निबाह सं० पुं० निर्वाह,-होब,-करब, क्रि०-ब, निर्वाह करना; सं०।
निबि सं० स्त्री० निब, अं० निब।
निबिआहिन वि०पुं० नीम की सुगंधवाला,-आइब, स्त्री०-नि।
निबुसब क्रि० अ० वर्षा बंद होना, नि (न)+ बरिसब (बरसना), वै०-बसब।
निबेरब क्रि० स० रोकना, प्रे०-रवाइब, सं० निवार।
निबौरी सं० स्त्री० नीम का फल, वै०-मौरी, -मकौरी।
निभोटब क्रि० स० नाखून से काटना, नोचना, प्रे०-टवाइब।
निमक सं० पुं० नमक, दे० नोन।
निमकउरी दे० निबौरी।
निमटब क्रि० अ० टट्टी जाना, झगड़ा करना, तै करना, दे० निपटब।
निमनाब क्रि० अ० मजबूत होना (नाज आदि का)।
निम्मन वि० पुं० मजबूत; क्रि०-मनाब, वै०नीमन।
निरकेवल वि० पुं० साफ़ (अकाश, जल आदि), -होब, स्त्री०-लि।
निरखब क्रि० स० देखना, ताकना, सं० निरीक्ष, "निरखत जात जटायू"।
निरगह वि० पुं० बिलकुल, अमिश्रित (पानी, दूध); -पानी, (पानी मिलाया हुआ दूध) एकदम पानी।
निरगुन वि० पुं० निर्गुण, सगुण का प्रतिकूल।
निरगुनिया वि० गुणहीन, सीधा।
निरघिति सं०स्त्री० दुःख, दुःखपूर्ण स्थिति,-भोगब, -भूजब,-दुख भोगना।
निरजँ वि० कमजोर, जिसमें जान न हो, सं० निर्जीव।
निरधुँ वि० जिसमें धुआँ न हो -आगि।
निरफल वि० फलहीन,-जाब,-होब।
निरबल वि० पुं० बलहीन, भा०-ता; दे० नीबर।
निरबीज वि० पुं० नष्ट, जिसका बीया भी न मिले, सं०।
निरभय वि० निडर, सं०।
निरमल वि० पुं० निर्मल।
निरमोही वि० जिसे मोह या प्रेम न हो।
निरवाइब क्रि० स० निरवाना, भा०-वाही, निराने की मजदूरी, पद्धति आदि, दे० निरौनी।
निरहा वि०पुं०अकेला,-हे क, केवल एक (पुत्र आदि)।
निराइब क्रि० स० निराना, घास निकालना, साफ़ करना, प्रे०-वाइब, वै०-उब।
निराल वि० पुं० बिलकुल, बहुत से, एकदम, प्र० -लै,-जौ, बिलकुल जौ (गेहूँ नहीं),-मनई बहुत से मनुष्य।
निरास वि० पुं० निराश,-होब,-करब, सं०।
निरौनी सं० स्त्री० निराने की मजदूरी,-देब,-लेब।
निर्छल वि० पुं० निश्छल, स्त्री०-लि, भा०-ई, सं०।
निर्जल वि० पुं० जिस (व्रत) में जल भी न ग्रहण किया जाय; स्त्री०-ला (एकादशी)।
निर्नय सं० पुं० निर्णय;-करब,-देब,-होब, सं०।
निवार दे० नेवार।
निवारब क्रि० स० मिटाना, दूर करना, थका-, थकान मिटाना, वै० ने-।
निवाला सं० पुं० कौर, ग्रास; यक-, दुई-, वै० ने-; प्रायः मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त।
निसचय दे० निहचय।
निसतार सं० पुं० निर्वाह,-होब,-करब; सं० निः+ तर (पार होना या करना); वै०-ह-।
निसरब क्रि० अ० निकलना;-पइठब, आना-जाना, प्रे०-सारब,-सरवाइब; सं० नि+सृ।
निसान सं० पुं० चिह्न, झंडा, स्त्री०-नी;-देही, गाँव या खेत की सीमा निर्धारित करने की कानूनी कार्रवाई।
निसुहा दे० नेसुहा।
निसोख वि० पुं० शुद्ध, स्त्री०-खि।
निहचय सं० पुं० निश्चय,-करब,-होब, सं०।
निहतार दे० निस्तार।
निहतूक वि० पुं० पक्का, ठीक, निश्चित, एक (दो नहीं); प्र०-की,-कै, नि+टूक (बिना टुकड़ेवाली बात), दे० टूका।
निहल वि० पुं० कमजोर, छोटा, स्त्री०-लि, भा० -ई।
निहाइति वि० एकदम, बिलकुल, प्र०-हइतिह।
निहारब क्रि० अ० देखना, देखते रहना।
निहाल वि० पुं० प्रसन्न,-करब,-रहब,-होब; स्त्री० -लि।

निहुरब क्रि० अ० झुकना; प्रे०-राइब,-उब; कहा० ऊँट चरावे निहुरें-निहुरें ?
निहोर सं० पुं० कृतज्ञता, एहसान; वै०-रा; जौ कविरा कासी मरें रामहिं कौन निहोर ?
नीक वि० पुं० अच्छा, सुन्दर; स्त्री०-कि,-निकरब, -लागब,-करब, चंगा करना,-होब; फ़ा०नेक; प्र०-कै।
नीकसूक क्रि० वि० बिना किसी के कहे, बिना आपत्ति के, वै०-सु-, सि-।
नीचे वि० पुं० छोटा, निम्न श्रेणी का, स्त्री०-चि, क्रि० वि०-चे, प्र० निचवैं।
नीनि सं० स्त्री० नींद;-आइब; गीतों एवं लोरियों में "निनिया"।
नीवर वि० पुं० निर्बल, स्त्री०-रि, क्रि० निवराब।
नीवि सं० स्त्री० नीम; सं० निम्ब।
नीमन वि० पुं० दे० निम्मन।
नीयति सं० स्त्री० नीयत कहा० जइसन-तइसन बरक्कति।
नीरस वि० पुं० निरस, सूखा; स्त्री०-सि।
नीवाँ वि० पुं० कड़ी (धूप); बिना हवा का (घाम); वै० निउआँ, नेवाँ।
नुकसान सं० पुं० हानि,-करब,-होब,-पाइब (हो जाना); वै०-सान।
नुकुस सं० पुं० ऐब, दुर्गुण· नुक्स; वि०-सिहा; -निकारब।
नुनखार दे० नोनखार।
नूनी सं० स्त्री० लिंग;-देखाइब, मूर्ख बना देना, -लेब, कुछ न पाना।
नेउर सं० पुं० नेवला -यस, डरपोक एवं दुबला-पतला; क्रि०-राब, दबे-दबे रहना, छिपे खड़े रहना; सं० नकुल।
नेउसा सं० पुं० सेवार (दे०) की पूली जिसका स्वादिष्ट साग बनता है।
नेकी सं० स्त्री० भलाई;-करब, कहा० नेकी औ पूछि-पूछि ?
नेग सं० पुं० मान्यों या नौकरों आदि को दिया उपहार,-हरु, ऐसे उपहार पानेवाले लोग,-देब, -पाइब।
नेटा सं० पुं० नाक के भीतर का मैल,-पोटा, शरीर की गन्दगी; वि०-टहा,-ही।
नेति सं० स्त्री० नीयत, इरादा, इच्छा;-करब,-धरब।
नेनुआ सं० पुं० एक तरकारी; नै० न्य-।
नेपाव क्रि० अ० पास आना, चुपके से खड़े रहना, लालच में खड़ा रहना; वै० न्य-।
नेफा सं० पुं० लहँगे के किनारे का भाग जो ऊपर से जोड़ा जाता है।
नेबुआ सं० पुं० नींबू, "गलगल नेबुआ औ विट-तात"; गीतों में "-बुल,-ला";-नोन चटाइब, मूर्ख बनाना।
नेम सं० पुं० नियम,-धरम, सं० वि०-मी, नियम का पालन करनेवाला।
नेर वि० पुं० निकट; क्रि०-राब, नियराब; भा० -राई. अं० नियर, सं० निकट।
नेवँ सं० स्त्री० नीवँ;-देब।
नेवतब क्रि० स० निमंत्रित करना; सं०-ता, निमंत्रण,-तउनी, निमंत्रण लानेवाले को दी गई मज़दूरी या उपहार;-तहरी, निमंत्रित व्यक्ति।
नेवाँ दे० नीवाँ।
नेवाब क्रि० अ० पहुँचना (दर्द, आवाज़) वै० नि-।
नेवार सं० पुं० सूत की पट्टी जिससे पलंग बुनते हैं।
नेवारा दे० नवारा।
नेवारि सं० स्त्री० कुएँ में नीचे देने के लिए गूलर की बनी गोल पहिया की तरह एक चीज़;-छोड़ब, -परब।
नेवासा सं० पुं० दौहित्र का अधिकार, ऐसे अधिकार से प्राप्त धन, भूमि आदि,-पाइब,-लेब, अर० नवासः (दौहित्र)।
नेसुहा सं० पुं० लकड़ी का मोटा ज़मीन में गड़ा टुकड़ा-जिस पर कोयर (दे०) काटा जाता है। सं० न्यस्।
नेह सं० पुं० प्रेम, स्नेह;-करब,-होब; वि०-ही, प्रेमी, स्नेही; सं०।
नेहसुति सं० स्त्री० एक पेड़ जिसकी डाल लगती है और जिसकी लकड़ी पीले रंग की होती है।
नेहा सं० पुं० ध्यान, हठ,-धरब; सं० स्नेह।
नैहर दे० नइहर।
नोक सं० पुं० नोक, वै०-कि।
नोकर सं० पुं० नौकर;-चाकर, भा०-री; स्त्री० -रानी।
नोखे क वि० गर्वपूर्ण, अनोखा; कहा०-नाउनि बाँसे क नहन्नी।
नोचब क्रि० स० नोचना,-चोथब, चुरा कर खाना (खेत की फ़सल), प्रे०-चाइब,-चवाइब,-उब।
नोट दे० लोट।
नोन सं० पुं० नमक,-खार, नमक का स्वादवाला; -छटही, (दीवार, ईंट आदि) जो मिट्टी के खार से कट गई हो,-पानी से, अच्छे स्वास्थ्य में (रहब), नोनेक बोरा यस, सुस्त एवं मोटा;-हरामी, नमक-हराम।
नोनछटब क्रि० अ० स्वाभाविक खारी से कटना (दीवार, ईंट आदि का), दे० नोन।
नोनी दे० लोनी।
नोहर वि० पुं० अप्राप्य, दुष्प्राप्य; बढ़िया,-होब; भा०-ई, कमी; नीक-, अच्छा-अच्छा।
नौ वि० नव,-दुइ ग्यारह होब, भाग जाना;-डीगर होब, गड़बड़ होना, फा नव+दीगर।
नौड़ब क्रि० अ० नया हो जाना (चमड़ा आदि)।
नौहड़िया सं० पुं० व्यक्ति जो अलग भोजन बनावे, वै०-हा,-हैं-।

प

पँगुला सं० पुं० पंगुल (दे०) व्यक्ति, स्त्री०-ली, सं० पंगु।
पँगुलाब क्रि० अ० लँगड़े-लँगड़े चलना, सं० पंगु।
पघति सं० स्त्री० (भोजन के समय की) पंक्ति या जनता,-उठब,-उठाइब, सं० पंक्ति।
पंच सं० पुं० पञ्च,-बदब,-मानब,-चाइति, पंचायत,-करब,-होब, सं०।
पछा सं० पुं० किसी अंग से बहनेवाला पानी, -बहब,-निकरब।
पछी सं० पुं० चिड़िया, व्यं० व्यक्ति, अताय-,दुख का मारा हुआ व्यक्ति।
पछोप सं० पुं० पानी का किनारा।
पजा सं० पुं० हाथ की पाँचों उँगलियों का समूह, -लड़ाइब, हाथ की उँगलियों से दूसरे के पंजे को मरोड़ना; (२) पाँच (रुपयों आदि) का समूह, यक-, दुइ-; सं० पंच, फा० पंज, स्त्री०-जी।
पंजाब सं० पुं० प्रसिद्ध प्रांत,-बी, पंजाब का रहनेवाला,-बिनि, पंजाबी स्त्री।
पडब्बा सं० पुं० पान का डिब्बा।
पडा सं० पुं० पंडा, स्त्री०-इनि, पंडे की स्त्री,-गिरी, -इँपन, पंडे का पेशा।
पडुब्बी सं० स्त्री० पानी में डुबकी लगानेवाली एक जगली चिड़िया।
पडोह सं० पुं० नाबदान, घर के भीतर का वह स्थान जहाँ गदा पानी गिराया जाय।
पँड़खी सं० स्त्री० एक चिड़िया, पंडुख, फाख्ता; वै० पे-।
पँडवा सं० पुं० भैंस का बच्चा; स्त्री०-ड़िआ,-या।
पथ सं० पुं० रास्ता,-सूझब, (२) बीमार का भोजन, -देब,-लेब,-पानी, बीमारी में दिया गया द्रव भोजन आदि।
पदरह वि० पंद्रह, वै०-न्नरह।
पइँट सं० पु० पक्ष, दृष्टिकोण;-प रहब, पक्ष करना; वै०-यँट, पैंट, अं० प्वाइंट।
पइआ सं० स्त्री० वह अनाज जो मारा गया हो, जिसमें तत्व न हो,-होब, व्यक्ति का किसी काम का न होना, महत्वहीन हो जाना; क्रि०-आब, वै० -या, कहा० जन्म्यो पूता लोलक लइआ बोयो धान पछोरयो पइआ।
पइजनिया दे० पयजनिआ।
पइती सं० स्त्री० कुश की गाँठ दी हुई रस्सी जो पूजा आदि के समय दाहिने हाथ की अनामिका में धारण की जाती है,-पहिरब।
पइरि सं० स्त्री० खलियान में दाँने (दे० दाँइब) के लिए फैलाई कटी फसल।
पइरुख सं० पुं० बल, शारीरिक शक्ति;-पुरइब, बल पहुँचना,-करब, सं० पौरुष, वि०-खी, वै०पौ-, पय-।
पइली सं० स्त्री० मिट्टी का छोटा प्याला।
पइसा सं० पुं० पैसा, द्रव्य, वि०-सहा, धनवान्।
पई सं० स्त्री० छोटे कीड़े जो नाज में लगते हैं, क्रि० -इआब, वै० पाई।
पउआ सं० पुं० सेर का ¼ भाग, वै०-वा।
पउनी सं० पुं० सेवक जैसे बढ़ई, लुहार आदि, -परजा, काम करनेवाले लोग जिन्हें स्वामी से कुछ मिले, पाइब (दे०) से = पानेवाला।
पउरुख दे० पइरुख।
पउला सं० पुं० खड़ाऊँ की तरह का लकड़ी का बना पदत्राण जिसमें खूँटी के स्थान पर रस्सी लगती है।-पहिरब; सं० पद।
पउली सं०स्त्री० पाँव का वह भाग जो चलते समय भूमि पर पड़ता है।
पउसाला सं० पुं० वह स्थान जहाँ जनता को पानी पिलाया जाय;-चलब,-बैठब,-बैठाइब; सं० पय + शाला, वै० पव-, पौ-।
पउहारी दे० पवहारी।
पकइब क्रि० स० पकाना (गुड या ईंट आदि, भोजन नहीं); प्रे०-वाइब; भोजन की सामग्री पकाने के लिए 'रीन्हब' आदि अन्य शब्द हैं।
पकना सं० पुं० सहुए का पका फल; बच्चों का गीत—"बूढ़ी दाई-दाई पकना खायँ, बुढ़वा भतार लैकै बँगला जायँ", वै० पो-।
पकसाइब क्रि० स० (फल को) कच्चा तोड़कर पकाना।
पकहा वि० पुं० पाका (दे०) वाला, जिसके फोड़ा हुआ या प्रायः होता हो; स्त्री०-ही।
पकुसब क्रि० अ० गर्मी से (फल का) समय के पूर्व ही सूखकर पक जाना, प्रे० पकसाइब।
पकेठ वि० पुं० अनुभवी एवं चालाक, स्त्री०-ठि, भा०-ई,-पन।
पक्कन वि० पुं० पकानेवाला (दिन का मौसम), -महीना, बरसात का दिन (जब फोड़े फुंसी पकते हैं)।
पक्कपक्क क्रि० वि० व्यर्थ में एवं जल्दी-जल्दी (बोलना); क्रि० पकपकाब, इस प्रकार बोलना; वै० प्र० पकर-पकर।
पक्का सं० पुं० पक्का मकान पक्का आम वि० खूब मजबूत, अनुभवी, स्त्री०-क्की, कच्ची-पक्की, गाली।
पख सं० पुं० कमी, दुर्गुण,-लगाइब,-लागब, नुक्स निकालना,-निकरना, सं० पक्ष।
पखना सं० पुं० पंख, डखना-, अंग प्रत्यंग,-पानी

न लागब, साफ़-साफ़ बच जाना; ऊँची-ऊँची बातें करना; सं० पक्ष।
पखवाज सं० पुं० एक बाजा, वैं० पखावज।
पखवारा सं० पुं० १५ दिन की अवधि; पक्ष, यक-, दुइ-, सं० पक्ष।
पखारब क्रि०स० धोना (हाथ पाँव), प्रे०-खरवाइब, सं० प्रक्षालय।
पखिआब क्रि० अ० मचलना, प्रे०-वाइब; सं० पक्ष (एक बात), किसी बात पर हठ करना।
पखुरा सं० पुं० बाँह और कंधे का जोड़ डखुरा-(टूटब, टूटब), अंग-प्रत्यंग सं० पक्ष।
पखेरू सं० पुं० पक्षी, मानरूपी पक्षी,-(उड़ब); सं० पक्षधर।
पग सं० पुं० पाँव, कदम -पग पर, कदम-कदम पर; पगै-पग, कदम-कदम सं० पद।
पगड़ी सं० स्त्री० पगड़ी -बान्हब;-उतारब, अपमान करना;-धरब (गोड़े पर), पाँव पर पगड़ी रख देना (विनय करने के लिए)।
पगहा सं० पुं० पशु को बाँधने की रस्सी, स्त्री०-ही; -लागब,-लगाइब।
पगाइब क्रि० स० पाग (दे०) में डालना; रस में उबालना; प्रे० पगवाइब, वै०-उब, दे० पागि।
पगिआ सं० स्त्री० पगड़ी;-बान्हब,-उतारब,-गोड़े पर धरब, दे० पगड़ी।
पगुराइब क्रि० स० पागुर करना; खा जाना; व्यं० बैठे-बैठे खाना।
पचइब क्रि० स० पचाना, हजम करना; व्यं० बेई-मानी से दबा लेना. प्रे०-वाइब, वै०-चा-,-उब; सं० पच्।
पचइखा सं० पुं० पाँच ईखों का प्रसाद जो बसियार (दे०) में प्रत्येक हिस्सेदार को दिया जाता है। वै० -चौ।
पचकल्यानी वि० इधर-उधर का. साधारण; यह शब्द भी 'गुरु' की भाँति बुरे अर्थ में आने लगा है।
पचकब क्रि० अ० (धातु के बर्तन का) कोई भाग दब जाना; प्रे० काइब।
पचखा सं० पुं० पंचक;-लागब, सं०; पंचक प्रत्येक मास के प्राय: अंत में पाँच दिनों तक रहता है जिसमें सभी शुभ कर्म वर्जित हैं, यहाँ तक कि इस समय में मृत व्यक्ति का दाह संस्कार भी स्थगित रहता है।
पचरा सं० पुं० देवी को प्रसन्न करने के लिए गीत जो ओझाई (दे०) एवं डिहवन्हई (दे०) में गाया जाता है। वै०-ड़ा।
पचहँड़ सं० पुं० पाँच मिट्टी के बर्तन जो किसी के मरण के १०वें दिन घर से निकालकर दूर बाहर रखे जाते हैं।-काढ़ब, तोर-निकले, तेरा-निकले, स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त शाप के शब्द; सं०पंच + भांड।
पचहत्था वि० पुं० पाँच हाथ का; लंबा-चौड़ा (व्यक्ति);-जवान।
पचाइब दे० पचइब।
पचाड़ी सं० स्त्री० जोठे (दे० जोठा) में लगी छोटी लकड़ी।
पचास वि० ५०,-न, पचासों;-सी, ८५;-चसवाँ,-ईं, ५० वाँ भाग, प्र०-सौ,-सै,-च्चास।
पचिसई सं० स्त्री० पचीसवाँ भाग; वि० पच्चीसवीं।
पचीस वि० २५; प्र०-च्ची-,-सौ,-न, पचीसों,-सी, जुये का एक खेल; "रतियाँ परी सवन की फाँसी पिय सँग खेलौं पचीसी नायँ"—झूले का गीत।
पचेड़ी सं० स्त्री० गन्ने के पेड़ के नीचे निकली हुई छोटी सी ईख जो चूसने योग्य नहीं होती।
पचौखा दे० पचइखा।
पचौवाँ क्रि० वि० पाँचवीं बार; वि० पाँचवाँ भाग।
पच्चड़ सं० पुं० किसी भारी वस्तु को रोकने के लिए ठोंका हुआ लकड़ी का टुकड़ा;-ठोंकब; गाँड़ी म-परब, बड़ी बाधा आ जाना।
पच्छ सं० पुं० पक्षपात,-करब,-होब, सं०।
पच्छाँह सं० पुं० पश्चिम का प्रांत।
पछरब क्रि० अ० पिछड़ जाना; प्रे०-छारब।
पछवाँ क्रि० वि० पीछे, प्र०-वें।
पछाड़ी सं० स्त्री० घोड़े के पीछे के पैर बांधने की रस्सी वै० पि-।
पछार सं० पुं० पछाड़-खाब, पीछे गिर जाना, अकस्मात् गिर पड़ना (शोकादि के कारण)।
पछारब क्रि० स० पीछे कर देना, फींच देना, कचारना (कपड़ा); प्रे०-छराइब, वै० पि-।
पछारी सं० स्त्री० पीछे बांधने की रस्सी; अगारी-, दो रस्सियाँ जिससे घोड़े बँधते हैं।
पछिताब क्रि० अ० पछताना।
पछिला वि० पु० पिछला, वैं० पाछिल; स्त्री० -ली।
पछुआँ सं० पुं० पच्छिम की हवा;-चलब,-बहब।
पछुआइब क्रि० स० पीछे-पीछे चलना।
पछुबहाँ वि०पुं० पश्चिम का (रहनेवाला); पश्चिम में पैदा होनेवाला, स्त्री०-ही, वै०-अहाँ।
पछुवा सं० पुं० अनुयायी; अगुआ के पीछे चलनेवाला; स्त्रियों का एक आभूषण जो कंकण के पीछे पहना जाता है। वै० पछेला।
पछुवाइब क्रि०स० पीछे-पीछे दौ लेना, पीछा करना; वै०-छिआ-।
पछेड़ सं० पुं० पीछे पड़ने की क्रिया या आदत; -करब, तंग करना।
पछोरन सं० पुं० नाज का निकृष्ट अंश जो पछोरने के बाद रह जाता है।
पछोरब क्रि० स० सूप की सहायता से (नाज आदि) साफ करना, प्रे०-रवाइब,-उब।
पछूँ क्रि० वि० पश्चिम में;-ओर, पश्चिम की तरफ।

पजरीं क्रि० वि० बगल में, सट कर (बैठना); दे० पाँजरि।
पजावा सं० पुं० छोटा भट्टा।
पजिआब क्रि० अ० पाजीपन करना।
पजिरिहा वि० पुं० पजीरीवाला, जिसे पजीरी का शौक हो, स्त्री०-ही, वै० पँ-।
पजीरी सं० स्त्री० आटे और शक्कर की बनी हुई बुकनी जो प्रसाद रूप में प्राय: बाँटी जाती है। वै० पँ-।
पटइब क्रि० स० पटाना (सौदा आदि), चुकाना (ऋण) ठीक करना, मैत्री कर लेना, 'पटब' का प्रे० रूप, वै०-टा-,-उ-, प्रे०-टवाइब।
पटऊ सं० पुं० कपड़े का थान जो कुल देवता को चढ़ाया जाता है। सं० पट, वै०-टू।
पटकउअलि सं० स्त्री० बार-बार पटक देने की क्रिया;-करब,-होब; वै०-कौ-।
पटकन सं० पुं० डंडा।
पटकनी सं० स्त्री० वर्षा के पीछे धूप का समय; सूखने का अवसर (फ़सल के लिए),-पाइब, -देब।
पटकब क्रि० स० पटकना, गिरा देना; प्रे०-काइब, -कवाइब, भा०-काई,-कवाई।
पटकी-पटका सं० स्त्री० एक दूसरे को पटक देने की क्रिया,-करब,-होब।
पटखाइनि सं० स्त्री० पाठक की स्त्री; दे० पाटख।
पटब क्रि०अ० पटना; मैत्री होना, प्रे०-टाइब; पाटब, दे० पटइब, पाटब, भा० पटानि।
पटरा सं० पुं० (लोहे या लकड़ी का बड़ा) टुकड़ा -करब,-होब, चौपट होना।
पटरिआइब क्रि०स० ठीक करना, तै करना।
पटरी सं० स्त्री० पट्टी, मैत्री,-बइठब, ठीक होना, -खाब।
पटहरई सं० स्त्री० पटहार का काम या पेशा, -करब।
पटहार सं० पुं० रंगीन सूत का काम करनेवाला, स्त्री०-हारिनि।
पटिअइती सं० स्त्री०बराबरी, स्पर्धा;-करब,-रहब।
पटिआ सं० स्त्री० पट्टी, बिरादरी का एक भाग, क्रि०-इब,-उब।
पटिआइब क्रि० स० अपनी ओर कर लेना, वै० -उब।
पटीलब क्रि० स० ले लेना, धूर्तता से प्राप्त कर लेना, प्रे०-टिलवाइब।
पटोर दे० लहर-।
पटौधन सं० पुं० पट जाने का हिसाब; ऋण का चुकता हो जाना;-करब,-होब, पटब (दे०)+धन; पटइब।
पट्ट वि० पुं० ठंढा, हलका, शांत,-परब, चूक जाना, स्त्री०-ट्टि, चट्ट-, झटपट।
पट्टा सं० पुं० बड़े-बड़े सिरके बाल (पुरुषों के) जिन्हें सँवार कर पीछे कर दिया जाय,-रखाइब, ठेके की भाँति दिया गया अधिकार; ठीका-,-देब, -करब,-लेब,-लिखब,-लिखाइब।
पट्टी सं० स्त्री० गाँव या भूमि का अंश;-दार, एक पट्टी के हिस्सेदार,-दारी, बराबरी, स्पर्धा; बिरादरी।
पट्टू दे० पटऊ।
पट्टै क्रि० वि० तुरन्त ही, प्र०-ह,-ट्टै।
पट्टे! संबो० तोते को बुलाने का शब्द।
पठइब क्रि० स० भेजना, प्रे०-वाइब, वँ० पाठाओ, वै०-उब।
पठउनी सं० स्त्री० भेजने की क्रिया; लड़की की विदाई; अनउनी-, (स्त्रियों के) लाने एवं विदा करने की प्रथा।
पठवनिया सं० भेजा हुआ व्यक्ति, सन्देशवाहक।
पठान सं० पुं० मुसलमानों की एक जाति; स्त्री० -निनि।
पठिआ सं० स्त्री० मोटी बकरी जो ब्याई न हो; व्यं० जवान तगड़ी स्त्री; वै०-या,-यनि, जवान एवं तगडी।
पठौआ सं० पुं० भेजने की बारी; एक-, दुइ-; वै० -ठउआ।
पठ्ठा सं०पुं० खूब हृष्टपुष्ट व्यक्ति; स्त्री०-ठिया, वै० -ट्ठा।
पड़रू सं० पुं० भैंस का पड़वा या बच्चा, वै० पँ-, यह शब्द पँड़वा एवं पँड़िया दोनों के लिए आता है।
पड़ाव सं० पुं० स्थान जहाँ डेरा डाला जाय,-परब, -डारब।
पड़िआ दे० पड़वा।
पड़िआब क्रि० अ० (भैंस का) गाभिन होना, प्रे० -वाइब, वैं० पँ-।
पड़आ सं० पुं० प्रतिपदा, वै०-रुवा।
पड़ेल सं० स्त्री० पड़िया जो गाभिन होनेवाली हो, बड़ी पड़िया; वै०-लि; क्रि०-ब, खूब खाना, दवा के गिरा देना।
पडोस दे० परोस।
पड़ौआ सं० पुं० विशेष पड़वा; अपना पड़वा; स्त्री० -ड़ियवा।
पढब क्रि० अ० पढ़ना, प्रे०-ढ़ाइब,-उब, सं० पठ्।
पतकी सं० स्त्री० छोटी हँड़िया, वै०-तु-।
पतकोरा सं० पुं० बड़ी पतकी; वै०-कउरा,-कोला।
पतझर सं० पुं० पतझड़, शिशिर।
पतर-पुक्का वि० पुं० दुबला-पतला, स्त्री०-की।
पतरवार वि० पुं० पतला-पतला, स्त्री०-रि।
पतराव क्रि० अ० पतला हो जाना; प्रे०-इब,-उब।
पतरी सं० स्त्री० पत्तल,-परब, कटु अनुभव होना, म छेद करब, लाभ उठाकर निंदा करना।
पतवार सं० पुं० पतवार।

पतहा वि० पुं० पत्तोंवाला; स्त्री०-ही; सं० पत्र।
पता सं० पुं० पता, ठिकाना,-ठेकान; एक गाना जो नाचनेवालों को उत्तेजित करने के लिए गाया जाता है,-बोलव,-पाइव।
पताई सं० स्त्री० पत्तियों का ढेर; स० पत्र।
पताव क्रि० अ० पत्ते देना (पेड़ का), दुःखी होना, अनुपस्थिति अनुभव करना, तोहरे बिना केव पतात वा? तुम्हारे बिना क्या कोई दुःखी हो रहा है? पहले अर्थ में वै०-तिआव, सं० पत्र।
पतिआइव क्रि० स० विश्वास करना।
पतिआव क्रि० अ० पत्ती देना, दे० पताव।
पतिगर वि० पुं० पत्तोंवाला, स्त्री०-रि।
पतित वि० पुं० नीच, जिसका पतन हो गया हो; भा०-ई, वेशरमी;-करव, वेशरमी से व्यहार करना; सं०।
पतिनास सं० पुं० अपकीर्ति वदनामी; प्र०-ती-; -होव,-करव।
पतिहा सं० पुं० पक्तिवाला; श्रेष्ठ ब्राह्मण जिन्हें अवध में पंक्तिपावन कहते हैं। वै० पँ-।
पतील वि० पुं० बहुत पतला; स्त्री०-लि।
पतुकी दे० पतकी।
पतुरपन सं० पुं० वेश्यापन,-करव।
पतुरिआ सं० स्त्री० वेश्या।
पतेली दे० भदेला,-ली।
पतोह सं० स्त्री० पुत्र की स्त्री, सं० पुत्र-वधू, प्र० -हू, पृ०-हा,-हिआ।
पथरा सं० पुं० पत्थर, पत्थर का टुकड़ा, क्रि०-व, पत्थर हो जाना,-ही, ओले पड़ने की हानि,-होव; दे० पत्थर, सं० प्रस्तर।
पथरी सं० स्त्री० मूत्राशय में छोटे-छोटे पत्थर जैसे टुकड़े हो जाने की बीमारी,-परव, (२) पत्थर की कटोरी, सं०।
पथाइव क्रि० स० पथाना (ईंट, कंडा), 'पाथव' का प्रे०, प्रे० थवाइव, भा०-ई, पाथने की क्रिया या मजदूरी, वै०-उव।
पद सं० पुं० रिश्ता,-लागव, (२) उचित वात, निर्णय,-करव,-सुपद, उचित बात का निर्णय, वि० -दी, जिसे वात या उचित अनुचित के निर्णय करने की शक्ति हो, (३) कविता की पंक्ति,-कहव, -बोलव।
पदगउँज सं० पुं० पाजामे का हास्यास्पद नाम, पद (पाद)+गउँजव (घूमना-फिरना)=जिसमें (पहननेवाले का) पाद (दे०) घूमता-फिरता रहे, वाहर न निकले।
पदनी वि० पादनेवाला (व्यक्ति), यह शब्द दोनों लिंगों में प्रयुक्त होता और फटकारने या गोली देने के लिए आता है। उ० दु पदनी! हत्तेरे पादनेवाले की!,-बोदी, वेकार बोलनेवाला व्यक्ति, कहा० जस मुकुंद तस पादनि बोदी...।
पदरौंकव क्रि० अ० दौड़-धूप करना, परेशान होना।
पदाइव क्रि० स० पदाना, तंग करना, दौड़ाना, वै०-उव, दे० पादव।
पदानि सं० स्त्री० परेशानी,-होव,-रहव।
पदारथ सं० पुं० अच्छी वस्तु; "सकल पदारथ हैं जगमाहीं"; सं०-र्थ।
पदिआइव क्रि० स० मूर्ख समझना; वार-वार व्यर्थ की आज्ञा देते रहना, वै०-उव।
पदी वि० पुं० पद करनेवाला, दे० पद सं०।
पदुम सं० पुं० एक पेड़,-क लकड़ी, जिसे बहुत पवित्र माना जाता है।
पदौअलि सं० स्त्री० पादने की निरंतर क्रिया।
पन सं० पुं० जीवन का एक भाग, वाला-,चउथा-; (२) मार्ग, जीवनयात्रा का उपाय।
पनरहिआ सं० पुं० १५ दिन का समय, यक-, दुइ-;-यन, कई सप्ताह।
पनहा सं० पुं० चौड़ाई (कपड़े की); अर्ज़; वि० -हगर, चौड़ा, ख़ूब चौड़ा।
पनही सं० स्त्री० जूता, देसी जूती, सं० उपानह।
पनारा सं० पुं० पनाला, स्त्री०-री।
पनिआइव क्रि० स० (वरहे में) पानी लाना, दे० वरहा।
पनिआव क्रि० अ० पानी (वरहे में) आ जाना; पानी से भर जाना।
पनिगर वि० पुं०/पानीवाला (कुँआ), वै०-यार।
पनिहा वि० स्त्री० पानी से भरा (रास्ता), पानी में रहनेवाला (साँप), पानी+हा, स्त्री०-ही।
पनिहारिन सं० स्त्री० पानी भरनेवाली स्त्री, वै० -नि।
पनुआ सं० पुं० पानी मिला हुआ गन्ने का रस जो खोइआ (दे०) को भिगोकर चुआया जाता है।
पनेहथी सं० पुं० मोटी रोटी जिसे पानी लगा-लगा कर हाथ से (चकला वेलन से नहीं) ही बनाते हैं। पानी+हाथ+ई, पुं०-था, बड़ी मोटी पनेहथी; वै०-नेथी।
पन्ना सं० पुं० पृष्ठ;-उलटव।
पन्नी सं० पुं० चमकदार अवरक का टुकड़ा,-लगाइव, वि०-दार, पन्नी लगा हुआ।
पन्हवाइव क्रि०स० (गाय, भैंस आदि को) दूध देने के लिए पुचकारना, थन छूते रहना, व्यं० मनाना, फुसलाना, पन्हाव (दे०) का प्रे०।
पन्हाव क्रि० अ० दूध देने के लिए तैयार होना; प्रे० -न्हवाइव।
पपरी सं० स्त्री० पतला पापड़ जैसा मिट्टी, दीवार या खेत आदि के ऊपर निकला भाग, क्रि०-रिआव, ऐसी पपरी निकालना या देना; वै० पो-।
पपिहरा सं० पुं० पपीहा।
पयखाना सं० पुं० विष्ठा, टट्टी जाने का स्थान, -करव,-जाव,-होव।

पयजनियाँ सं० स्त्री० बच्चों के पैर मे पहनाने का एक आभूषण जिसमें घुँघरू लगे रहते हैं। तुल० "ठुमुकि चलत रामचंद्र बाजति ···"
पयजामा सं० पुं० पाजामा, दे० पदगउँज, फ़ा० पा (पैर)+जामः (कपड़ा)।
पयट सं० पुं० पक्ष, बात,-बदलब,-पर रहब, तरफ-दारी करना, अं० प्वाइंट, वै०-यँ-, पैंट।
पयठारी सं० स्त्री० प्रवेश, स्थान,-पाइब, वै० पायठ (दे०), पैठारी।
पयतरा सं० पुं० पैंतरा,-बदलब।
पयताबा सं० पुं० मोज़ा, प्र० पा-।
पयदर क्रि० वि० पैर से;-चलब,-जाब,-आइब, प्र० -रै; फा० पाय (पैर)।
पयना सं० पुं० छोटा डंडा जिससे बैल हाँका जाता है, नाधा-क भीखि, जानवरों की बीमारी के समय माँगी जानेवाली भिक्षा, दे० नाधा।
पयमाइस सं० स्त्री० भूमि का नाप, हिसाब आदि; -करब,-होब।
पयमाना सं० पुं० नाप का आदर्श।
पयमाल वि०पुं० थका हुआ, गिरा, निर्बल, प्र०पा-।
पयरा सं० पुं० पुआल;-पालब, पुआल का गद्दा बनाना, बिछाना।
पयरुख दे० पहरुख।
पयरोकार सं० पुं० प्रतिनिधि (कचहरी में), कार्य-कर्त्ता, भा०-री।
पयल सं० पुं० पायल (दे०) के लिए गीतों में प्रयुक्त,-"-मोर भारी।"
पयलउँठी स० स्त्री० पहिली संतान,-क, पहला, वै०-इ-,-हि-।
पयसरम सं० पुं० परिश्रम, कष्ट,-करब,-परब, वि० -मी, सं०।
पयान सं०पुं० विदाई, रवानगी,-करब, चलना, सं० प्रयाण।
परई सं० स्त्री० मिट्टी की छोटी तश्तरी।
परकब क्रि० अ० आदी हो जाना, हिम्मत करना, प्रे०-काइब,-उब।
परकार सं० पुं० प्रकार, भोजन, व्यंजन, बरहौं-, बारह व्यंजन, वै०-ल, सं०।
परकाल सं० पुं० रेखागणित में प्रयुक्त एक औज़ार।
परकोसा सं० पुं० खलियान की भूमि का बटोरा हुआ भूसा, पुआल आदि का मिश्रित भाग।
परख स० पुं० परीक्षा, पहिचान, क्रि०-ब,-खैआ, परखनेवाला; सं० परीक्ष्।
परखी सं० स्त्री० बोरे के भीतर से नाज का नमूना निकालने के लिए लोहे का चम्मच।
परग सं० पुं० कदम, पग, यक-, दुइ-; क्रि०-आव, कदम रखना, चलना।
परगट वि० प्रकट,-होब, क्रि०-ब, फल देना (बुरे काम का)।
परचा सं० पुं० पर्चा, स्त्री०-ची, छोटा पर्चा।
परचाइब दे० परकाइब।
परचार सं० पुं० प्रचार,-होब,-करब, सं०।
परचि सं० स्त्री० पतला टुकडा, वै०-चि।
परचून सं० पुं० आटा, चावल आदि, वै० भा० -नी, वि०-निहा।
परचौ सं० पुं० परिचय, चीन्ह-,मुलाकात;-करब, -रहब,-होब, सं०।
परछब क्रि० स० पूजा करना, स्वागत करना (दूल्हे या दुलहिन का), प्रे०-छाइब,-छवाइब।
परजन सं० पुं० दूसरा व्यक्ति, बाहरी मनुष्य, "परजन, पुरजन, परिजन।"
परजलित वि० स्पष्ट, ज्ञात,-करब,-होब, सं० प्रज्वलित।
परजा सं० पुं० प्रजा,-पउनी (दे०); सं०।
परत सं० पुं० पर्त,-तै परत, एक-एक पर्त अलग करके।
परतल सं० पुं० मौका, अवसर;-परब।
परता सं० पुं० पड़ता, उचित दाम,-परब,-खाब।
परताप सं० पुं० प्रताप, इकबाल, पुन्य-, वि०-पी, प्रतापवाला, इक़बाली, सं०।
परतारब क्रि० स० बराबर करना, बराबर बाँटना।
परतिआइब क्रि० स० प्रत्यक्ष अनुभव से जानना।
परतिज्ञा सं० स्त्री० प्रतिज्ञा,-करब, सं०।
परतिष्ठा सं० स्त्री० इज्जत,-ष्ठित, प्रसिद्ध, सं०।
परती सं० स्त्री० भूमि जिसमें खेती न हो;-छोड़ब, -परब,-जोतब।
परतेजब क्रि०स० परित्याग करना, बलिदान करना; जिउ-,प्राणों की परवाह न करना, सं०परि+त्यज्।
परतैपरत क्रि० वि० एक-एक पर्त, दे० परत।
परथन सं० पुं० पलेथन, मु०-लगाइब, सच बात में कुछ और मिलाकर कहना, वै०-नी।
परथा स० स्त्री० प्रथा, रिवाज।
परदनी सं० स्त्री० धोती (पुरुष की), फ़ा० परदः +नी।
परदर सं० पुं० प्रदर रोग,-होब, सं०।
परदा सं० पुं० पर्दा,-करब,-उठाइब, पेट-, खाना कपड़ा, जीवनयात्रा,-चलब, खर्च चलना, फा० -दः।
परदेस सं० पुं० घर से दूर का देश,-सी, बाहर का व्यक्ति।
परदोस सं० पुं० द्वादशी का व्रत,-रहब।
परधन स० पुं० दूसरे का धन, कहा०-जोगवै मूरुख।
परधान वि० पुं० ईमानदार, सच्चरित्र, स्त्री०-नि।
परन सं० पुं० प्रण,-करब, सं०।
परनाम सं० पुं० प्रणाम,-करब, सं०।
परनि सं० स्त्री० ढेर, अधिक संख्या,-क परनि, बहुत अधिक (फसल, पशु आदि)।
परपराब क्रि० स० (किसी अंग मे) मिर्च सा

लगना; (२) पर-पर-पर-पर बोलना; किसी के विरुद्ध कुछ कहते रहना।
परब सं० पुं० पर्व,-लागब, प्र०-म, वै०-भी,-बी।
परब क्रि० अ० पड़ना, शुभ होना।
परबत सं० पुं० पहाड़;-लागब, ढेर का ढेर होना, खूब लंबा चौड़ा होना सं०।
परबतिआ सं० पुं० एक प्रकार की लाल मिर्च, -मर्चा, यह पहाड़ों में अधिक होता है, इसी से यह नाम पड़ा। एक पहाड़ी लौकी सं० पर्वत+इन्।
परबस्ती सं० स्त्री० पालन, परवरिश,-करब,-होब, वै०-वस्ती।
परबीन वि० प्रवीण, चतुर; सं०।
परबेस सं० पुं० प्रवेश, पहुँच,-होब,-रहब; सं०।
परमातमा सं० पुं० परमात्मा, भगवान्; सं०।
परमान सं० पुं० अंदाज़ा, आदर्श;-होब,-रहब; सं० प्रमाण।
परमेसर सं० पुं० परमेश्वर; स्त्री०-री, ईश्वरीय शक्ति, दुर्गा जी, सं०।
परमेह सं० पुं० प्रमेह; धातु-, प्रमेह का रोग।
परर-परर क्रि० वि० पर्र-पर्र (बकना, पादना आदि)।
परवर सं० पुं० प्रसिद्ध फल जिसकी तरकारी बनती है। कहावतों में "परौरा, परवरा।"
परवरिस सं० स्त्री० पालन, गुजर,-करब,-होब, फ़ा०-श।
परवाना सं० पुं० आज्ञापत्र,-पाइब,-देब।
परवाह सं० पुं० चिंता, ध्यान,-रहब,-करब,-होब, बे-, नि-।
परवाहब क्रि० स० नदी के प्रवाह में (शव) डाल देना, वै० परि-।
परसन्न वि० प्रसन्न, (२) सं० पसन्द, इच्छा, वै० पो-;-करब,-होब,-आइब।
परसब क्रि० स० परसना, परोस देना; प्रे०-वाइब, -साइब. वै०-रोसब।
परसहिजे क्रि० वि० सबके सामने; चोरी से नहीं, खुले आम; सं० प्रसिद्ध।
परसाद सं० पुं० प्रसाद,-देब,-लेब, स्त्री०-दी,-घी, -पाइब, भोजन करना, सं०।
परसौआ सं पुं० जितना एक बार में परोसा जाय; वै० परोसा।
परहाल सं० पुं० हिम्मत, शक्ति।
परहेज सं० पुं० रोक, नियंत्रण;-करब, वि०-जी, परहेजवाला।
परात सं० पुं० बड़ा थाल स्त्री०-ति, प्र०-ता।
परान सं० पुं० प्राण, जिउ-, पूरा हृदय, सं०।
परानी सं पुं० व्यक्ति, पति, परिवार का सदस्य; प्राणी, सं०।
परापति सं० स्त्री० प्राप्ति,-करब,-होब; सं०।
परावा वि० पुं० पराया; स्त्री०-ई; सं० पर।
पराम सं० पुं० पलाश, सं०।
परिच्छा सं० स्त्री० परीक्षा,-लेब, जाँचना; सं०।
परिवा सं० पुं० प्रतिपदा; वै०-रुवा; सं०।
परिहास सं० पुं० उपहास, बदनामी; वै०-री-; -करब,-होब, सं०।
परी सं० स्त्री० तेल या घी नापने का लोहे का चम्मच, यक-, दुइ-,सं० पल्ली, (२) सुन्दर स्त्री, स्वर्गीय स्त्री. फा०-।
परु क्रि०वि० पार साल; प्र०-औ,-रू, पार साल भी; -इ, पार साल ही।
परुआ दे० परिवा।
परुवा वि० पड़ा हुआ (माल),-पाइब, पड़ा हुआ (माल) पा जाना -धन, ऐसा धन, 'परब' (दे०) से।
परेट सं० पुं० बड़ा मैदान, ड्रिल;-परब, (भूमि का) बिना जोती पड़ी रहना -करब, ड्रिल करना; अं० पैरेड।
परेठा सं० पुं० पराठा।
परेम सं० पुं० प्रेम, वै० पि-, वि०-मी।
परेवा सं० पुं० एक चिड़िया; स्त्री०-ई।
परेसान वि० चिंतित, दुखित,-होब,-करब, भा० -नी, परीशान।
परोस सं०पुं० पड़ोस,-सी, पड़ोसी,-सें, पड़ोस में।
परोसब क्रि० स० परसना, प्रे०-वाइब; वै० पर-, भा०-सा, परसौआ; दे० परसौआ।
परोहन सं० पुं० काम की वस्तु।
परौं क्रि० वि० परसों, कालिह-, दो एक दिन में, कल-परसों।
पलँगरी सं० स्त्री० छोटी सी सुन्दर खाट, स० पर्यंक, पल्यंक।
पलँगा सं० पुं० पलँग, वै०-का,-बिछाइब,-बीनब; सं० पर्यंक, पल्यंक।
पल सं० पुं० क्षण;-भर,यक-, दुइ-, सं०।
पलई सं० स्त्री० पेड़ का सिरा, वै० पुलुई।
पलक सं० स्त्री० आँख की पलक;-मारब,-भाँजब।
पलका दे० पलँगा।
पलभब क्रि० अ० बड़े प्रयत्न के बाद मानना, रूठने के बाद देर में मानना, प्रे०-भाइब,-उब।
पलटनि सं० स्त्री० पलटन; वि०-हा, पलटनवाला; अं० प्लैटून।
पलटब क्रि० अ० पलट जाना, बदलना, स० पलट देना, बदल देना प्रे०-टाइब,-उब।
पलटा सं० पुं० एक लोहे या पीतल का बर्तन जिससे पकनेवाली वस्तु पलटी जाती है।
पलटू सं० व्यं० प्रसिद्ध भक्त कवि पलटूदास।
पलथी सं० स्त्री० पालथी,-मारब; पुं०-था, ज़ोर से या जल्दी मारी हुई-।
पलरा सं० पुं० पलड़ा, छोटा टोकरा, स्त्री०-री, मु० पत्र।
पलिवार सं० पुं० परिवार, कुल-, सं०।
पल्ला सं० पुं० दरवाजा, हलकी टोपी, एक धोती

(जोड़ा नहीं), बगल,-पकरब,-धरब, भरोसा करना।
पल्लें क्रि० वि० अधिकार में,-परब, हाथ लगना, प्राप्त होना।
पल्लौ सं० पुं० पल्लव, आम की पत्तियाँ; सं०।
पवँरब क्रि० अ० तैरना, मु० इधर-उधर भटकते रहना, प्रे०-राइब,-उब, वै०-इब।
पवदरि सं० स्त्री० (कोल्हू के चारों ओर) बैल के पैर से बना गोल रास्ता, पव (पैर)+दरि (स्थान), फ़ा० पाव+दर।
पवदा दे० पौधा।
पवन सं० पुं० वायु, कविता एवं गीतों में प्रयुक्त, -सुत, हनूमान (गीतों में)।
पवना सं० पुं० मिठाई आदि छानने के लिए हत्था लगी हुई चलनी, वै० पौना।
पवनारि सं० स्त्री० दे० पौनारि।
पवपुजी सं० स्त्री० पैर पूजने के साथ दिया गया द्रव्य, जो व्याह का एक अंग है; फ़ा० पाव+सं० पूजा; वै०-पुजाई।
पवबारा सं० पुं० सुंदर अवसर।
पवसाला सं० पुं० पानी पिलाने का स्थान,-बइठाइब, ऐसा स्थान बनाना, स० पय+शाला, दे० पउसाला।
पवहारी वि० पुं० केवल दूध पीनेवाला (साधु); सं० पय+आहारी, वै० पौ-।
पवाँरा सं० पुं० लंबी कथा;-गाइब, व्यर्थ की बात करना।
पवाई स० स्त्री० जूते या खड़ाऊँ की जोड़ी में का एक, फ़ा० पाव (पैर)।
पवित्तर वि० पुं० पवित्र,-करब,-होब।
पवित्री सं०स्त्री०घी (साधुओं की बोली में),सं०।
पसँघा सं० पुं० पासंग, वै०-संघा,-डा, फ़ा० पा (पैर)+संग (पत्थर)।
पसगइयत सं० स्त्री० एकान्तता;-मँ, पृथक्।
पसम सं० पुं० बाल; गुप्तांग के बाल,-बराबर, कुछ नहीं, परम।
पसर सं० पुं० फैली हुई हथेली (में जितना आ सके), यक-, दुई-भर, सं० प्रसर।
पसरब क्रि० अ० फैलना, लेट जाना, प्रे०-राइब, -सारब,-उब, सं० प्रसर।
पसवाइब क्रि० स० पसाइब (दे०) का प्रे०, सं० प्र+सर।
पसाइब क्रि० स० पानी निकालना, चुवाना; सं० प्र+सू।
पसार सं० पुं० फैलाव, उसार-, सामान का इधर-उधर फैला रहना, सं० प्र+सर।
पसावन सं० पुं० चावल का माड़,-पियब,-भात, सं० प्र+सू (बहना)।
पसिआइब क्रि० स० पासा (दे०) से फोड़ना, मारना (ढेला, मिट्टी आदि)।
पसिजवाइब दे० पसीजब।
पसिनहा वि० पुं० पसीने से भरा या भीगा; स्त्री० -ही।
पसीजब क्रि० अ० पसीजना, पिघलना, प्रे०-सिजवाइब।
पसीजर सं० पुं० मुसाफिर; मुसाफिर गाड़ी (माल गाड़ी नहीं); अं० पैसेंजर।
पसीना सं० पुं० पसीना, वि०-सिनहा,-ही, सीन-, पसीने से लथपथ, थका।
पसु सं० पुं० पशु।
पसुपति सं० पुं० नैपाल के प्रसिद्ध महादेव;-नाथ; सं०।
पसेरी सं० स्त्री० पाँच सेर की तौल, यक-, दुइ-; -ढमिलाइब, इच्छा करना, मनाना (कोई बुरी बात)।
पसेव सं० पुं० पसीना,-आइब, थक जाना, सं० प्र+सू।
पस्ट वि० पुं० गिरा हुआ (मकान);-होब,-करब; फ़ा० पस्त।
पस्त वि० पुं० थका हुआ, नष्ट;-करब, जीत लेना; भा०-ती।
पहँटब क्रि० स० तेज़ करना (छुरी आदि औज़ार), प्रे०-टाइब,-उब,-टवाइब,-उब।
पहँटा सं० पुं० खेत या फ़सल का सीधा भाग जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो,-धरब,-लेब।
पहट वि० पुं० गिरा हुआ;-होब, गिर जाना।
पहताब क्रि० स० अ० पछताना।
पहर सं० पुं० एक पहर जो ३ घण्टे का होता है, आठौ-, रात दिन, ज़माना, दे० पहरा।
पहरब क्रि० अ० (पशु का) ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ना (विशेषकर साँड़ का)।
पहरा सं० पुं० पहरा;-देब, समय, ज़माना।
पहरुआ सं० पुं० मूसल, बखरी-।
पहसुल वि० थकावट मिटा हुआ (अंग),-करब, (किसी अङ्ग की) थकावट मिटाना, सीधा करना।
पहाड सं० पुं० पर्वत,-यस, बहुत बड़ा, लंबा (दिन),-होब, न बितना, कठिन होना, न कट सकना (समय); स्त्री०-डी, वै०-र।
पहाडा सं० पुं० संख्याओं का पहाडा,-पढ़ब।
पहाड़िन सं० स्त्री० पहाड़ी स्त्री, पहाड़ी की पत्नी, वै०-नि।
पहाडी सं० पुं० पहाड़ का निवासी, (२) छोटा पहाड़, वि० पहाड़ों से भरा या घिरा (प्रांत)।
पहिआ सं० पुं० पहिया, वै०-या।
पहिचान सं० स्त्री० परिचय,-करब, क्रि०-ब, पहचान लेना, जान-,-होब, वि०-नी परिचयवाला।
पहिती सं० स्त्री० पकी दाल, दे० सगपहिता, सं० प्रहित (मसाला)+ई=मसालेवाली (वस्तु), प० पाइती।
पहिरब क्रि० स० पहनना, प्रे०-राइब,-उब।

पहिराव सं० पुं० जो कुछ पहना जाय; वै०-वा।
पहिला वि० पुं० प्रथम, स्त्री०-ली, वै०-ल,-लका, -की,-लाँ, (पशु का) प्रथम वार (बच्चा देना), क्रि० वि०-लें, पहले।
पहिलौठी सं० स्त्री० (स्त्री का) प्रथम वार गर्भ धारण,-क, प्रथम (संतान)।
पहुँच सं० स्त्री० पहुँचने की शक्ति।
पहुँचव क्रि० अ० पहुँचना, प्रे०-चाइब,-उब,-चवाइब,-उब।
पहुँचा सं० पुं० हाथ और बाँह के बीच का भाग, -ची, ऐसे भाग पर पहनने का एक आभूषण।
पहुँचानि सं० स्त्री० पहुँचने की फुरसत; कहीं जाने का मौका,-होब,-रहब।
पहुँची दे० पहुँचा।
पहुना सं० पुं० अतिथि, वै० पाहुन, भा०-ई, -नई।
पाँखी सं० स्त्री० पङ्खवाली चींटी;-उटब,-उधिराब सं० पक्ष (पङ्ख)+इन् (वाली)।
पाँच वि० पाँच, प्र०-चैं,-चौं, तीन-करब, चरका देना, तीन-आइब, चालाकी आना, सं० पञ्च।
पाँचा सं० पुं० किसानों का औज़ार जिसमें लकड़ी के पाँच टुकड़े आगे निकले होते हैं,-यस, लंबे-लंबे (दाँत)।
पाँजरि सं० स्त्री० पसली।
पाँड़ा सं० पुं० पँड़वा; भैंस का बच्चा, वि० हृष्ट-पुष्ट (नवयुवक) पर उजड्ड, दे० पँड़वा, पँड़रू।
पाँड़े सं० पुं० पांडेय, स्त्री० पँड़ाइनि, सं०।
पाँति सं० स्त्री० पंक्ति, सरवार के सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणों की श्रेणी जिन्हें पँतिहा एवं पंक्तिपावन भी कहते हैं।-क पाँति, कई पंक्तियाँ, वै० पाँती सं० पंक्ति।
पाइब क्रि० स० पाना, खाना, वै०-उब, सं० प्राप्।
पाई सं० स्त्री० पैसे का एक भाग, जुलाहे का सामान, -फइलाइब, सामान बिखेरे रहना।
पाक वि० पुं० पक्का, पका (फोड़ा), स्त्री०-कि, क्रि० -ब, पकना, सं० पक्व।
पाका सं० पुं० फोड़ा स्त्री० फोरिया;-फोरिया होब, फोड़ा-फुंसी होना।
पाकिट सं० पुं० जेब,-मार, जेब-कट; अं०-केट।
पाख सं० पुं० घर के किनारे की ऊँची दीवार, महीने का आधा भाग, पक्ष, अँजोर-, शुक्ल पक्ष, अन्हियार-, कृष्ण पक्ष, सं० पक्ष, कहा० एक पाख दुइ गहना, राजा मरै कि सहना।
पाग सं० स्त्री० पगड़ी; वै० पगिया,-गि; क्रि०-ब, पाग तैयार करके उसमें कुछ डालना; प्रे० पगाइब, पगवाइब।
पागल वि० पुं० विक्षिप्त, स्त्री०-लि, क्रि० पगलाब, भा० पगलई।
पागि सं० स्त्री० पाग, मिठाई की चाशनी;-उठाइब, क्रि० पागब, यक-,दुइ-, जितना गुड़ एक बार कड़ाह में बने।
पागुरि सं० स्त्री० जुगाली;-करब; क्रि० पगुराब, -राइब, कहा० भइँसि के आगे बेन बजावै, भइँसि खड़ी पगुराय। वै०-र।
पाचक सं० पुं० पाचन-शक्ति की सहायक वस्तु, दवा आदि।
पाचरि सं० स्त्री० गन्ने के कोल्हू का एक भाग जिसे ठोंक कर कोल्हू कसा जाता है।
पाछ सं० पुं० पीछे का भाग, आग-,आगा-पीछा; आग-करब, हिचकना; वै०-छा।
पाछब क्रि० स० चीरना (पोस्ते के फल या टीके के लिए मनुष्य की बाँह को); प्रे० पछाइब,-छवाइब।
पाछिल वि० पुं० पीछे का, स्त्री०-लि, दे० पछिला।
पाजी वि० दुष्ट. भा०-पन।
पाट सं० पुं० चौड़ाई (नदी की)।
पाटख सं० पुं० ब्राह्मणों का एक भेद, पाठक, स्त्री० पटखाइनि (दे०)।
पाटन सं० पुं० नेपाल की ओर का एक तीर्थ-स्थान जिसे देवी पाटन भी कहते हैं, यहाँ देवी का मेला लगता है।
पाटब क्रि० स० पाटना, प्रे० पटाइब,-उब, पटवाइब,-उब।
पाटी सं० स्त्री० तख्ती; सिर के बालों के दाहिने और बायें दोनों भाग;-परब (बाल सँवारना), (२) खाट की दोनों लंबी लकड़ी जो लेटने पर दायें-बायें रहती है। सिरई (दे०) पाटी; सं० पट्ट।
पाठ सं० पुं० (पुस्तक का) पाठ,-करब,-बैठब, -बैठाइब, वै०-ठि,-ठि बाँचब; सं०।
पाठा सं० पुं० हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति; स्त्री० पठिया (दे०), वि० बलवान।
पाठि सं० स्त्री० (किसी धार्मिक ग्रंथ का) पाठ, प्रायः दुर्गापाठ;-बाँचब,-बैठब,-बैठाइब, सं० पाठ।
पात सं० पु० पत्ता,-भर, पूरा पत्ता भर (भोजन); तुल० पात भरी सहरी (दे०)...स्त्री०-ती, प्र०पत्ती वै०-ता, सं० पत्र।
पातक सं० पुं० पाप,-लागब; सं०।
पातर वि० पुं० पतला, अनुदार, स्त्री०-रि।
पाता सं० पुं० पत्ता;-पूजब, चेचक का प्रकोप समाप्त होने पर देवी का पूजन करना,-पाव पूजब, विना कुछ द्रव्य दिये ही कन्या का पाँव पूजकर व्याह कर देना, सं० पत्र, दे० पात; स्त्री०-ती।
पाती सं० स्त्री० चिट्ठी; पत्ती, खर-, पहले अर्थ में गीतों एवं कविता में प्रयुक्त, सं० पत्र + ई।
पातुर सं० स्त्री० दे० पतुरिया।
पाथब क्रि० स० पाथना, प्रे० पथाइब,-उब, -थवाइब,-उब।
पाथर सं० पुं० पत्थर, ओला,-परब, ओला पड़ना,

दे० पथरा, "नैया मेरी तनक सी बोझी पाथर भार", सं० प्रस्तर।
पाथी सं० स्त्री० टोकरी जिसमें नाज रखा जाय; क्रि० पथिआइब।
पाद सं० पुं० पादने की क्रिया या उसकी दुर्गंध, क्रि० पादब।
पादनि वि० स्त्री० पादनेवाली, कमजोर, दे० पदनी।
पादब क्रि० अ० पादना, परेशान होना, प्रे० पदाइब,-उब।
पान सं० पुं० तांबूल।
पानी सं० पुं० जल; जलवायु, तेज, चमक, मान, "रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून," सं० पानीय।
पाप सं० पुं० पाप, वि०-पी, सं०।
पापड़ सं०पुं० पापड़,-बेलब, मारे-मारे फिरना, सब कुछ करना।
पापी वि० पुं० पाप करनेवाला, स्त्री०-पिनि।
पायठ सं० पुं० प्रवेश, गुजर; वै० पयठारी (दे०)।
पायल सं० पुं० पैर में पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।
पार सं० पुं० किनारा,-पाइब, जीतना,-करब,-होब, -लागब, हो सकना, लगाइब।
पारन सं० पुं० व्रत के बाद का भोजन,-करब, सं०।
पारब क्रि० स० लिटा देना (वस्तु को), बनाना (काजल), प्रे० पराइब,-उब।
पारस सं० पुं० प्रसिद्ध पत्थर जिसके छूने से लोहा सोना हो जाता है।
पारा सं० पुं० पारा (धातु);-चढ़ब, क्रोध आना, -गरम होब।
पारी सं० स्त्री० बारी,-परब,-लागब,-लगाइब, क्रि० वि०-पारीं, बारी-बारी से।
पारुस सं० पुं० भोजन का सामान।
पारें क्रि० वि० उस पार, अंत तक,-जाब, समाप्त होना, सकुशल संपन्न होना।
पालकी सं०स्त्री० प्रसिद्ध सवारी जिसमें चार कहार लगते हैं, (२) पालक का साग।
पालब क्रि०स० पालना, रक्षा करना; प्रे० पलाइब; -पोसब, पालन करना; सं०।
पालसी सं० स्त्री० नीति, कूटनीति, अं० पालिसी।
पाला सं० पुं० जमा हुआ पानी, कठोर जाड़ा, -परब;-पाथर, ठंढ तथा ओला।
पाव सं० पुं० सेर का ¼ भाग,-भर, वै० पउआ (दे०)।
पावजेब सं० पुं० पैर का एक आभूषण, फा० पा (पैर)+जेब (शोभा), वै० पौ-, दे० पयजनिया।
पावदान दे० पौदान।
पावर सं० पुं० शक्ति, अधिकार, अं०।
पावा सं० पुं० स्तंभ, खाट का पाया।
पास अव्य०अधिकार में, निकट, हाथ में, (२) सफल, होब,-करब, पहले अर्थ में सं० पार्श्व, दूसरे में अं०।
पासा सं० पुं० कुदाल का सिरा।
पासी सं० पुं० शूद्रों की एक उपजाति, भर-, -चमार।
पाहन सं० पुं० पत्थर, कविता में ही, सं० पाषाण।
पिंजरा सं० पुं० पिंजड़ा।
पिंड सं० पुं० मकान की लम्बाई-चौड़ाई मनुष्य का पीछा,-छोड़ब, पीछा छोड़ना, छुटकारा देना।
पिंडा सं० पुं० पिण्ड,-देब, (पितरों को) पिण्ड दान करना,-पानी, पिण्ड तथा तर्पण का जल, सं०।
पिंडिआ सं० स्त्री० छोटी पिंढी, सं० पिंड, दे० पींढ़ी।
पिउ सं० पुं० पति, प्रिय, सं०।
पिउबि सं० स्त्री० पीब;-बहब,-निकरब।
पिउरी सं० स्त्री० रुई की पूनी,-बनइब,-कातब, वै० -नी।
पिउसी दे० पेउस।
पिचकारी सं० स्त्री० पिचकारी,-मारब।
पिचास सं० पुं० पिशाच, स्त्री०-सिनि।
पिछउरी सं० स्त्री० दो पर्त की चादर, कहा० कंबर पर जब परै पिछौरी, जाड़ बेचारा करै चिरौरी, वै० -छौरी, पुं०-रा।
पिछवार सं० पुं० (घर के) पीछे का स्थान, अगवार -,-रें,पीछे, सं० पृष्ठ, वै०-रा।
पिछरब क्रि० अ० पिछड़ना, वै० पछ-, सं० पृष्ठ, प्रे०-छारब, पछा-।
पिछाड़ी दे० पछाड़ी।
पिछारब क्रि० स० पीछे कर देना, हरा देना, प्रे० -छराइब,-छरवाइब, सं० पृष्ठ।
पिछुआ सं०पुं० पीछे चलनेवाला व्यक्ति; अनुयायी, क्रि०-इब, दे० पछुआइब।
पिछौरी दे० पिछउरी।
पिटवाइब क्रि० स० पिटाना, वै०-उब, भा०-ई।
पिटाइब क्रि० स० पीटब का प्रे०, भा०-ई।
पिटारा दे० पेटारा।
पिटास सं० पुं० पीटने का क्रम या आधिक्य; -परब।
पिट्ठग सं० पुं० गुड़ में मसाला मिलाकर बनाई हुई बर्फी, वै० टि-।
पिटैया सं० पुं० पीटनेवाला, प्रे०-वैया।
पिटौनी सं० स्त्री० पीटने की (नाज आदि) मजदूरी।
पिट्ट-पिट्ट दे० गिटपिट।
पिट्टू सं० पुं० अनुयायी, चेला।
पिठांसा सं० पुं० पीछे का भाग, पीठ।
पिठिआइब क्रि० स० पीछे-पीछे हो लेना, पीठ के बल गिरा देना।

पिढ़ई सं०स्त्री० छोटा पीढ़ा (दे०), गाड़ी का वह भाग जिस पर पैर रखकर चढ़ा जाता है।
पितउँछब क्रि०अ० पित्त से क्लेश पाना; वै० -तौं-।
पितकोप सं० पुं० क्षोभ; वह भाव जो पिता को कुपुत्र पाने पर होता है; पित्त का कोप; अ०-ता-; -करब,-होब।
पितराब क्रि० अ० पीतल के बर्तन से (दही आदि) खराब होना।
पिता सं० पुं० बाप के लिए आदर प्रदर्शक शब्द; माता-,-माता; सं०।
पितिआउत वि० चाचा से उत्पन्न (भाई, बहिन)।
पितिआनि सं० स्त्री० चाची; वै०-या-।
पितिआसासु सं० स्त्री० पति की चाची, पत्नी की चाची।
पितु स०पुं० कविता में प्रयुक्त 'पिता' के लिए शब्द; -मात।
पित्त सं० पुं० पित्त;-चढ़ब; सं०।
पित्तरे सं० पुं० पितर लोग; सं०।
पित्ती सं० पुं० चाचा; (२) पित्त के कारण शरीर पर निकले बड़े-बड़े दाने; दे० जुड़पित्ती,-निकरब।
पिदिर-पिदिर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ (बोलना),-करब।
पिद्दी सं० पुं० छोटा सा महत्वहीन जीव,-यस।
पिन सं० स्त्री० आलपीन; वै०-नि।
पिनकब दे० मिनकब।
पिनसिन सं० स्त्री० पेंशन, (२)-नि, पेंसिल।
पिनाक वि० पुं० कठिन,-होब, धनुष।
पिपिहिरी सं० स्त्री० लकड़ी की बाँसुरी जो बच्चे बजाते हैं।
पिय सं० पुं० प्रिय व्यक्ति, पति; कविता में 'पिया'; वै०-उ; सं० प्रिय।
पियक्कड सं० पुं० शराबी, बहुत पीनेवाला।
पियनी वि० स्त्री० पीनेवाली,-तमाखू।
पियब क्रि० स० पीना, खाव-, खाना-पीना; प्रे० -याइब, सं० पिव्।
पियर वि० पुं० पीला, स्त्री०-रि, क्रि०-राब, भा०-ई, -पन, अ० पीयर. सं० पीत।
पियरी सं० स्त्री० पीली धोती;-देब,-पहिरब,-पहिराइब।
पिया दे० पिय।
पियाइब क्रि०स० पिलाना. भरना, दे० पियब; भा० -याई, पीने की क्रिया, मजदूरी के अलावा कहारों को पालकी ले चलने पर दिया इनाम।
पियाउक सं० पुं० पीनेवाला; शराबी।
पियाजि सं० स्त्री० प्याज, वि०-यजिहा (खेत)।
पियादा सं० पुं० पैदल चलनेवाला, सिपाही, सदेशवाहक।
पियार वि० पुं० प्यारा, सुखद, मीठा; स्त्री०-रि, "हाथ की साँकरि मुँह की पियारि, गरे लगि रोवै मउसी हमारि"—कहा०।
पियाला सं० पुं० प्याला; स्त्री०-ली।
पियासब क्रि० अ० प्यासा होना।
पियासा वि० पुं० प्यासा; स्त्री०-सी।
पियासि सं० स्त्री० प्यास;-लागब,-मारब।
पिरकी सं० स्त्री० फुड़िया, फुंसी, 'पीर'+की।
पिरथी सं०स्त्री० पृथ्वी, भूमि, ससार,-नाथ, स्वामी, भगवान्।
पिरवाइब क्रि० स० दर्द पहुँचाना, पीड़ा देना, सं० पीड्।
पिराब क्रि० अ० दर्द करना; प्रे०-रवाइब, सं० पीड्।
पिरीति सं० स्त्री० प्रीति, सं०।
पिरेम दे० परेम।
पिरोइब क्रि० स० पिरोना, दे० गुहब।
पिर्र-पिर्र क्रि०वि० व्यर्थ एवं जल्दी-जल्दी (बोलना)।
पिलवान दे० पीलवान।
पिलीहा सं० पुं० प्लीहा; दे० बरवट।
पिल्ला सं० पुं० कुत्ते का बच्चा, हरामी क-, नाबायक, स्त्री०-ल्ली, वै०-लवा।
पिवाई दे० पियाइब।
पिसनहरि सं०स्त्री० पीसनेवाली (स्त्री, मजदूरिन), सं० पिष्।
पिसनहा वि० पुं० जिसमें आटा हो, लगा हो या रखा जाता हो, स्त्री०-ही।
पिसना-कुटना सं० पुं० पीसना-कूटना; घर का काम; गृहस्थी, सं०।
पिसब क्रि० अ० पिसना।
पिसरान सं० पुं० पुत्र लोग, प्रायः कचहरी के कागज़ों में यह शब्द पहले प्रयुक्त होता था जिनमें पिता पुत्र के नाम लिखे जाते थे।
पिसाइब क्रि०स० पिसाना; वै०-उब; भा०-ई, पीसने की मजदूरी; सं० पिष्।
पिसाच दे० पिचास।
पिसान सं० पुं० आटा, सं० पिष्टान्न,-सानब, आटा गूँधना।
पिसुन सं० पुं० दुष्ट व्यक्ति; "पिसुन छल्यो नर सुजन को..."; सं० पिशुन।
पिसौनी सं० स्त्री० पीसने का धंधा,-करब,-कुटौनी।
पिहँकब क्रि० अ० जोर से चिल्लाना; सुरीला गाना गाना, वै०-हि-।
पिहाना सं० पुं० डेहरी (दे०) का ढक्कन जो मिट्टी का बनता है; स्त्री०-नी।
पीक सं०स्त्री० जितना एक बार में थूक दिया जाय; -दान, बर्तन जिसमें थूकते हैं। वै०-कि, पीग।
पीछा सं० पुं० पीछे का भाग,-करब, पीछे-पीछे दौड़ना,-छोड़ब, छेड़-छाड़ न करना; सं० पृष्ठ।
पीट-पाट सं० पुं० मार-पीट;-करब,-होब।
पीटब क्रि० स० पीटना, प्रे० पिटाइब,-टवाइब, -उब।
पीठा सं० पुं० थोड़ा सा आटा जो किसी देवता को

लौंग के साथ चढ़ाया जाता है,-लवँगि (दे०), स्त्री०-ठी ।
पीठि स०स्त्री० पीठ,-देखाइब; भाग जाना,-लगाइब, अखाड़े में हरा देना;-लागब, सं० पृष्ठ ।
पीठी सं० स्त्री० दाल का सना हुआ आटा जिसका बड़ा, पकौड़ा आदि बनता है । पिष् ।
पीड़ी सं० स्त्री० पिंडी ।
पीढ़ा सं० पुं० लकड़ी की छोटी चौकी जिस पर बैठकर प्राय: भोजन करते हैं, स्त्री०-ढ़ी, पिढ़ई (दे०) ।
पीढ़ी सं० स्त्री० पुश्त, यक-, दुइ- ।
पीतरि सं० स्त्री० पीतल, क्रि० पितराव (दे०); वै० पितरी ।
पीनस स० पुं० नाक का एक रोग ।
पीनसि सं० स्त्री० पालकी का एक सुंदर रूप ।
पीपर सं० पुं० पीपल, छाती परकै-,सदा का कष्ट, असाध्य कष्ट (क्योंकि पीपल को काट नहीं सकते)।
पीपरि सं० स्त्री० प्रसिद्ध औषधि जो खाँसी में शहद के साथ खाई जाती है; सं० पिप्पली ।
पीपा सं० पुं० कनस्तर, बड़ा डिब्बा, स्त्री०-पी, पिपिया ।
पीब सं० स्त्री० मवाद, वै०-बि,-प ।
पीया दे० पिय ।
पीरा सं० स्त्री० दर्द,-होब,-देब,-करब, सं० पीडा ।
पीलवान सं० पुं० महावत, भा०-नी; वै० पि-; फ़ा० फ़ील (हाथी) ।
पीव सं० पुं० पति, प्रिय, कविता में प्रयुक्त ।
पीसब क्रि० स० पीसना, प्रे० पिसाइब,-सवाइब, भा० पिसाई ।
पीहर सं० पु० लड़की के माँ का घर ।
पुँजिहा सं० पुं० पूँजीवाला; दुट-, जिसके पास थोड़ी पूँजी हो,-या ।
पुआइनि वि० दुर्गंधपूर्ण,-आइब,-वरब; वै०-वा- ।
पुइरा सं० पुं० पुआल; वै० पयरा (दे०) ।
पुइहट सं० पुं० भीतर भरा हुआ पुआल, रुई आदि,-निकरब, शक्ति समाप्त होना ।
पुकार सं० स्त्री० पुकार, क्रि०-ब ।
पुकेटब क्रि० स० पीछा करना, प्रे०-टवाइब ।
पुख्य सं० पुं० पुष्य नक्षत्र ।
पुछत्तर सं० पुं० पूछनेवाला, सहानुभूति करनेवाला ।
पुछल्ला सं० पुं० दुम में बँधी कोई चीज़,-लागब, -लगाइब ।
पुछवाइब क्रि० स० पुछवाना, पूछब का प्रे० रूप ।
पुछाइब क्रि० स० पूछब का प्रे० ।
पुजवाइब क्रि० स० पुजवाना; पूजब का प्रे० ।
पुजाइब क्रि० स० पूजब का प्रे० ।
पुजारी सं० पुं० पूजा करनेवाला, स्त्री०-रिनि ।
पुजाही सं० स्त्री० गठरी जिसमें पूजा का सामान हो; स० पूज् ।
पुट स० पुं० पुट;-देब ।
पुटकब क्रि० अ० मर जाना, चुपके से मरना; वै० -टु-,प्रे०-काइब ।
पुट्ट वि० पुं० पेट के बल लेटा हुआ, दे० चित, स्त्री०-ट्टि, क्रि० वि०-सें,-दें, धीरे से, विना बीमार पडे (मर जाना) ।
पुट्ठा सं० पुं० चूतड़ के ऊपर का भाग, स्त्री०-ट्ठी, पहिये के केंद्र का उभरा हुआ भाग ।
पुड़िआ सं० स्त्री० पुड़िया;-बान्हब,-बन्हाइब,-खाब ।
पुतरा सं० पुं० बदनामी का बहाना,-बन्हब, पुरानी बात कहते रहना,-टाँगब, तुहमत लगाना, सं० पुत्तलिका ।
पुतरी स० स्त्री० पुतली, आँखि क-, परम प्रिय, सं० पुत्तलिका ।
पुतवा दे० पूता ।
पुतवाइब दे० पोतब ।
पुदीना सं० पुं० पोदीना ।
पुदुर-पुदुर क्रि० वि० व्यर्थ में (बोलना) ।
पुद्दन वि० पुं० ख़राब, भद्दा, बच्चों द्वारा प्रयुक्त, स्त्री०-नि ।
पुनरगति सं० स्त्री० दुर्दशा,-होब,-करब, स० पुन: + गति (दूसरा जन्म) ।
पुनि क्रि० वि० फिर, प्राय: फै० प्र० सु० आदि में स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त, सं० पुनः ।
पुनीत वि० पवित्र ।
पुन्ना वि० पुं० पुराना, स्त्री०-न्नी,-हिन, पुरानेपन की गंध या स्वादवाला;-आइब ।
पुन्नि सं० स्त्री० पुण्य,-करब, दान देना,-दान, -खाता ।
पुन्यातमा वि० पुण्य करनेवाला, उदार; सं० ।
पुपुआब क्रि०अ० व्यर्थ में चिल्लाना, पूँ-पूँ (पों-पों) करना, दे० बुबुआब ।
पुरइनि स०स्त्री० कमल का पेड़,-पात, कमल पत्र ।
पुरइब क्रि० अ० पूरा करना, सहायता देना (गीत में), प्रे०-वाइब,- उब, वै०-उब;स पूर ।
पुरकाम वि० पुं० मज़बूत (वस्तु) ।
पुरखा सं० पुं० वृद्ध पुरुष, परिवार का बड़ा व्यक्ति, स्त्री०-खिनि, सं० ।
पुरजा सं० पुं० (मशीन आदि का) छोटा भाग, स्त्री०-जी, कागज़ का छोटा टुकड़ा जिस पर कुछ लिखा हो, दे० पर्चा ।
पुरबुज सं० पुं० पूर्व जन्म; वि०-जी, पूर्व जन्म का ।
पुरवा सं० स्त्री० पूरब की हवा; वै०-ई, (२) पुं० छोटा सा गाँव, पुरई-,वस्ती, सं० पुर ।
पुरहर वि० पुं० पूरा, स्त्री०-रि ।
पुरसा सं० पुं० पुरुष के हाथ उठाकर खड़े होने तक की ऊँचाई या गहराई; एक-,दुइ-;-भर (ऊँच, गहिर) सं० पुरुष ।
पुराइब क्रि० स० पूरने (दे० पूरब) में सहायता करना, प्रे० पुरवाइब ।

पुरातन वि० पुराना, बहुत प्राचीन, सं, तुल० प्रीति पुरातन।
पुरान वि० पुं० पुराना, स्त्री०-नि; (२) पुराण, कथा-, सं०।
पुरायठ वि० पुं० हृष्ट पुष्ट; पूरी अवस्था का; स्त्री० -ठि।
पुरिआ सं० स्त्री० गोली (भात की), यक-, दुइ-, देहात में भात पुरिआ बनाकर परसा जाता है, विशेषत मेहमानों को।
पुरिखा दे० पुरखा, बातचीत में दूसरे के लिए "दु पुरिखेव!" कहा जाता है जब उस व्यक्ति के मुँह से कोई ग़लत बात निकलती है।
पुरी सं० स्त्री० पुण्यस्थली, पवित्रनगरी; अजोध्या-, काशी-, सं०।
पुरुख सं० पुं० पति, प्रियतम, "केहि पर करौं सिंगार पुरुख मोर बाउर?"।
पुरुब सं० पुं० पूरब,-पच्छूँ, दिशाज्ञान;-जानब वि० -वहा, पूरब का रहनेवाला;-ही; वै० पुरबहा; पहे० -"पुरुब देस से आई तिरिया, अन्न खाय पानी कै किरिया"।
पुरुवा दे० पुरवा।
पुरोहित दे० उपरोहित।
पुरौआ दे० पुरवा।
पुलकब क्रि० अ० हर्षित होना, उचकना (हर्ष या गर्व के मारे), प्रे०-काइब,-कारब सं०।
पुलटिस सं० स्त्री० तीसी या आटे की गर्म-गर्म गोली जिससे सेंक की जाती है,-बान्हब, अं०।
पुलह सं० पुं० पुल; स्त्री०-ल्हिआ; भा०-लाही, पुल पार करने का कर;-लाही लेब,-देब,-लागब।
पुवा दे० मालपुवा।
पुस्ट वि० पुं० मजबूत, हिस्ट-,-ई, पुस्ट होने की दवा; सं०।
पुस्ति सं० स्त्री० पुश्त, यक-,दुइ-, वै० पुहुति; फ़ा० पुश्त (पीठ)।
पुस्तैनी वि० खानदानी (जायदाद आदि)।
पूछि सं० स्त्री० दुम, व्यं० अनुयायी; खुतरे म -डारब, दुम दबा लेना।
पूछब क्रि० सं० पूछना, प्रे० पुछाइब,-छवाइब।
पूजब क्रि० स० पूजना; प्रे० पुजाइब,-जवाइब, मु० प्रसन्न कर लेना, रिश्वत देना।
पूडी सं० स्त्री० पूरी,-तरकारी।
पूत सं० पुं० पुत्र;-ता, हे पुत्र! धिया-पूता, लड़के लड़कियाँ, सं० पुत्र।
पूती सं० स्त्री० गोल जड़, (आलू आदि का) दाना, यक-,दुइ-;-परब; सं० पुं+त्र (जो नाश से रक्षा करे वीज)।
पूर वि० पुं० पूरा, सारा -पूर, पूरा-पूरा,-पार, तौल में ठीक, क्रि०-ब, बनाना (सेवई-); सं० पूर्ण।
पूरन वि० पूर्ण,-होब,-करब, सम-, संपूर्ण; सं० पूर्ण।
पूरा सं० पुं० गट्ठर; स्त्री०-री (ईख की पत्ती, घास आदि का गट्ठर)।
पूस सं० पुं० पूस का महीना;-माघ, जाड़े के दिन, सं० पौष।
पूस-पूस सं० पुं० बिल्ली को बुलाने का शब्द;-करब, पुचकारना, मीठा बोलना, व्यर्थ बुलाते रहना (हठी व्यक्ति को), तु० अं० पूसी।
पेंग सं० पुं० झूले पर खड़े होकर पैर से दिया गया धक्का;-मारब; वै०-ङ।
पेंच सं० पुं० तरकीब, मशीन;-म परब, मुश्किल में पड़ना वि०-इत (पहलवान) जो लड़ने की तरकीब जाने,-चीदा, पेंचवाली (बात); फ़ा० पेच (टेढ़ापन)।
पेंचिस सं० स्त्री० बीमारी जिसमें बहुत दस्त हों।
पेउनी सं० स्त्री० एक प्रकार की बेर.-बइरि।
पेउस सं० पुं० गाय या भैंस के ब्याने के १० दिन के भीतर का दूध जिसकी इनरी (दे०) बनती है। सं० पीयूष? वै०-सी, वि०-सहा।
पेट सं०पुं० पेट, गर्भ, भेद, जीवन यात्रा,-रहब, गर्भ रह जाना,-काटब, कम खाना, रोज़ी लेना;-लेब, रहस्य जानने की कोशिश करना, वि०-टू,-टू,-टार्थू, -हा, जिसे खाने की ही चिंता हो -हा,-ही; मु० मुहीं पेट, कय तथा दस्त;-चलब, कय दस्त होना।
पेटरिआ सं० स्त्री० पिटारी, पुं०-टारा, वै०-टारी।
पेटी सं० स्त्री० छोटा बक्स, पेट पर बाँधने की पट्टी।
पेटुआ सं० स्त्री० एक पौदा जिसकी छाल से रस्सी बनती है, इनका दाना भूनकर खाया जाता है और इसके फूल की तरकारी बनती है।
पेटू वि० पुं० बहुत खानेवाला, प्र०-टू, जिसे खाने की ही चिंता हो; दे० पेट।
पेठा सं० पुं० सफेद कुम्हड़े का मुरब्बा,-बनाइब।
पेड़ सं० पुं० वृक्ष,-पालब, लता वृक्ष;-ड़ी, गन्ने का पेड़ जो खोदा न जाय और जिसकी जड़ में से कई बार गन्ना होता रहे;-राखब, ऐसे गन्ने का खेत रखना, मु० जड़, मूल कारण, क्रि०-ड़ाब, (पौदे का) बढ़कर पेड़ हो जाना।
पेड़ा सं० पुं० प्रसिद्ध मिठाई।
पेड़ार सं० पुं० एक जंगली पेड़ जिसके फल की तरकारी होती है।
पेड़ुरी सं० स्त्री० पेट के नीचे का भाग, दे० पेड़ू, -काँपब, बहुत डर लगना, भयभीत होना।
पेड़ू सं० पुं० पेट के ठीक नीचे का भाग।
पेंदी सं० स्त्री० पेंदी, मु० बेपेंदी क लोटा, जिसका भरोसा न हो (बिना पेंदी का लोटा)।
पेम सं० पुं० कमल; अं० पेन।
पेरना सं० स्त्री० प्रेरणा;-होब, प्रेरणा होना।
पेरब क्रि० स० पेलना; रस निकालना; तङ्ग करना; प्रे०-राइब,-रवाइब,-ठब, भा०-राई,-रवाई; सं० प्रेर्।

पेलब क्रि० स० ढकेलना, घुसेड़ना, प्रे०-लाइब, -लवाइब,-उब ।
पेला सं० पुं० अपराध; वि०-दार, अपराधी;-करब, -होब ।
पेलिआइब क्रि० अ० धक्का देकर आगे जाना; प्रे० -वाइब; वै०-उब ।
पेल्हर सं० पुं० अंडकोष ।
पेवना सं० पुं० पैबंद,-लगाइब,-लागब ।
पेस सं० पुं० सामना;-करब, सामने रखना;-होब, -पाइब,जीतना,-स्री,सामने रखने की क्रिया, तारीख आदि (मुकदमे की),-कार, कर्मचारी जो अफसर के सामने कागज पेश करे; फ़ा० पेश ।
पेसा सं० पुं० काम, कारबार, फ़ा० पेश: ।
पैंट सं० पुं० दे० पयट ।
पैकर सं० पुं० पैर बाँधने की जंजीर,-डारब, फ़ा० पा (पाय=पैर)+कर ।
पैखाना सं० पुं० विष्टा, टट्टी,-करब,-जाब,-होब, फ़ा० पा (पैर)+खाना (घर) ।
पैगम्मर सं० पुं० नेता, देवता; मुहम्मद, पैगम्बर (पैगाम+बर =संदेशवाहक) ।
पैगाम सं० पुं० संदेश,-देब,-लाइब,-भेजब, पैग़ाम ।
पैजनिया दे० पय-।
"पय" से प्रारम्भ होनेवाले प्रायः सभी शब्द "पै" से भी प्रारम्भ हो सकते हैं ।
पोंकब क्रि० अ० पतले दस्त करना; प्रे०-काइब, -उब ।
पोंगड़ा सं० पुं० घुटने से नीचे पैर का भाग, स्त्री० -ड़ी, वै०-डा,-ड्ड़ा ।
पोंछन सं० पुं० पोछा हुआ अंश,-पाँछन, मैल ।
पोंछब क्रि० स० पोंछना, प्रे०-छाइब,-छवाइब; -पाँछब, साफ करना ।
पोंपरा सं० पुं० गीली भूमि, दीवार आदि के ऊपर का सूखा भाग, स्त्री०-री, क्रि०-रिआब,-परब ।
पोंपला वि० पुं० जिसके मुँह में दाँत न हो, स्त्री० -ली ।
पोंपा वि० पुं० मुँह बानेवाला, मूर्ख,-दास,-राम ।
पोइ सं० स्त्री० एक बेल जिसके पत्ते की पकौड़ी बनती है और वे दाल में भी पड़ते हैं। वै०-ई, -य ।
पोइब क्रि० स० (रोटी) बनाना, पकाना, प्रे०-वाइब, वै०-उब ।
पोइसि सं० स्त्री० थकावट, परेशानी,-आइब, दुर्गति होना ।
पोई सं० स्त्री० गन्ने की प्रारम्भिक शाखा, वै०-य, कहा० जेकर बाप न देखी पोय, तेकरे घर गुरवाई (दे०) होय ।
पोखब क्रि० स० पोषण करना, प्रे०-खाइब,-उब, सं० पोष् ।
पोखरा सं० पुं० तालाब, स्त्री०-री, सं० पुष्कर ।
पोंगा सं० पुं० बाँस का खोखला टुकड़ा, स्त्री०-डी, जो पङ्खे के डंडे में लगती है, (२) वि० पुं० मूर्ख; भा०-पन ।
पोटा सं० पुं० नाक के भीतर से निकला द्रव मैल, नेटा-, गंदगी, वि०-टहा,-ही ।
पोटास सं० पुं० पोटाश, अं० ।
पोटी सं० स्त्री० पेट के भीतर की हड्डी, आँती-, अँतड़ी, हड्डियाँ आदि ।
पोढ़ वि० पुं० मजबूत, स्त्री०-ढ़ि, भा०-ढ़ाई, क्रि० -ढ़ाब, मजबूत होना (बीमार का), (२) सं० पुं० उँगली का एक भाग,-ढ़ै पोढ़, एक-एक अङ्ग ।
पोत सं० पुं० खेत का लगान;-देब,-लेब ।
पोतनहरि सं० स्त्रियों का गर्भाशय,-उखरब,-पिराब ।
पोतना सं० पुं० लत्ता जिससे चूल्हा, चौका आदि पोता जाय;-होब, (पेट का) नरम हो जाना, वै० प्व-,-नहरि, बर्तन जिसमें पोतना रखा रहता है ।
पोतब क्रि० स० पोतना; लीपब-, लीपना पोतना; सब एक में मिला देना, गड़बड़ कर देना, प्रे० -ताइब,-तवाइब, भा०-ताई, पुताई ।
पोता सं० पुं० पौत्र, नाती-, (२) अंडकोष,-बाढ़ब, -चिराइब,-चीरब, (१) सं० (२) फ़ा० फोत: ।
पोथा सं० पुं० बड़ी पोथी; स्त्री०-थी, बड़ी पुस्तक, पूज्य पुस्तक, "पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पण्डित भया न कोय"-कबीर ।
पोपटा सं० पुं० छीमी जिसका दाना मजबूत न हो; क्रि०-ब, दाना पड़ने लगना ।
पोय दे० पोइ ।
पोर दे० पोढ़ (२),-रै पोर, एक-एक उँगली, प्रत्येक अङ्ग ।
पोला सं० पुं० सूत का छोटा गुल्था, कहा० "मियाँ बटोरैं ताग-ताग औ बीबी उड़ावैं पोला ।"
पोसब क्रि० स० पोषण करना; पालब-, सं० ।
पोसाक सं० स्त्री० पहनावा, पोशाक, फ़ा० ।
पोसाब क्रि० अ० अच्छा लगना ।
पोहब क्रि० स० माला का एक-एक दाना पिरोना या गुहना, प्रे०-हाइब ।
पौंगब क्रि० अ० हाथ फैलाकर पहुँचने का प्रयत्न करना; वै०-ङब, पउँगब ।
पौंड़ब क्रि० अ० तैरना; इधर-उधर भटकते रहना, प्रे०-ड़ाइब, भा०-ड़ाई, वै०-रब ।
पौंढब क्रि० अ० लेटना, प्रे०-ढ़ाइब,-उब ।
पौंरब दे० पौंड़ब ।
पौ सं० पुं० प्रात:काल की लाली,-फाटब, सवेरे की लाली दिखना ।
पौआ सं० पुं० पाव, सेर का चौथाई,-भर, वै० पउआ ।
पौटब क्रि० अ० (द्रव का) गिरकर फैल जाना; प्रे०-टाइब, वै० पव-।
पौंड़ा सं० पुं० एक प्रकार का लंबा मोटा गन्ना, वै०-ढ़ा ।
पौढ़ा पुं० लेटा हुआ, स्त्री०-ढ़ी (२) दे० पौंड़ा ।

पौदरि दे० पवदरि ।
पौदान सं० पुं० सवारी का वह भाग जिस पर पैर रखा जाय; फा० पा (व)+दान ।
पौधा सं० पुं० छोटे पेड़, पौदा ।
पौना दे० पवना ।
पौनारि सं० स्त्री० कमल का पेड़, उसकी जड़ अथवा शाखा जिसका साग बनता है । सं० पद्म-नाल; वै० पव-।
पौवा दे० पउआ ।
पौवारा दे० पववारा ।
पौसाला दे० पउसाला, पव-।
पौहट सं० पुं० पड़ोस, जवार; प्र०-ट्ट, वै० पव-; तुल० चौहट्ट हाट्ट ।
पौहारी दे० पवहारी ।

फ

फँसनि सं० स्त्री० फँसान, व्यस्तता,-होव,-रहव; वै०-सानि ।
फँसव क्रि० अ० फँसना; प्रे०-साइव,-सवाइव ।
फँसरी सं० स्त्री० बाँधने की रस्सी, फाँसी,-लागव, -लगाइव,-डारव ।
फइँकव क्रि० स० फेंकना, व्यर्थ करना; प्रे० फेंका-इव,-वाइव,-ठव ।
फइँचि सं० स्त्री० बारीक लकड़ी का टुकड़ा जो काँटे की भाँति गड़ जाय, वि०-चहा,-चिहा ।
फइल वि० पुं० चौड़ा; स्त्री०-लि; प्र०-हर, क्रि० -व ।
फइलव क्रि० अ० फैलना, प्रे०-लाइव,-लवाइव; वि०-लहर ।
फइसन दे० फयसन ।
फइहाव क्रि० अ० चिल्लाना, व्यर्थ में रोना; वै० -हियाव,-याव ।
फउआरा सं० पुं० फौवारा ।
फउत वि० मरा हुआ,-होव,-ती, मृतक के संबंध की पुलिस रिपोर्ट,-लिखाइव; अर० फ़ौत (गुम) ।
फउदि सं० स्त्री० फ़ौज,-दी, फ़ौजवाला, सिपाही, -हा; फ़ौज का, अर० फ़ौज ।
फउरम क्रि० वि० तुरंत, दे०-वरम; अ० फ़ौर (जल्द) ।
फउरेव सं० पुं० जाल, षड्यंत्र,-करव,-रचव, वि० -बी,-विहा, वै० फरेव-बरेव; फ़ा० फ़रेब ।
फकना सं० पुं० पतला रद्दी कपड़ा, ग्रा० 'कफन' (अ०) का विपर्यय ।
फकफकाव क्रि० अ० व्यर्थ में बोलना; दे० बक-बकाव ।
फकर-फकर क्रि० वि० व्यर्थ एवं शीघ्र (बोलना) ।
फकली दे० फो- ।
फकीर सं० पुं० साधू, भिखमंगा,-होव; स्त्री० -रिनि, भा०-किरई,-कीरी, अर० फ़कीर ।
फक्क वि० बदरङ्ग, निस्तेज (चेहरा);-होव,-दें, झट से (काटना, फाड़ना आदि), फका-, जल्दी-जल्दी,-फक्क (वै०) ।
फक्कड़ वि० पुं० फक्कड़, स्त्री०-ड़ि, प्र०-ड़ी ।
फगुआ सं० पुं० होली (त्योहार);-करब,-होब; फागुन के महीने में गाया जानेवाला एकगीत; -गाइव; क्रि०-इव, रंग या होली का रंग डालना; वै०-वा, सं० फाल्गुन ।
फगुई सं० स्त्री० होली; करव,-मनाइव,-होव;-पंचमी, त्योहार; सं० फाल्गुन ।
फगुनहट सं० पुं० फागुन का मौसम; फागुन के कुछ दिन पूर्व तथा कुछ दिन पीछे के दिन;-टें, इस मौसम में; सं० फाल्गुन ।
फचफचहटि सं० स्त्री० 'फचफच' की आवाज़; -करव,-होव, अनु० ।
फचाफच क्रि० वि० फचफच आवाज़ करते हुए (अनु०), प्र०-च्च ।
फजरी सं० पुं० एक प्रकार का अच्छा आम ।
फजिर क्रि० वि० सूर्योदय के समय; बड़े-; अर० फ़ज्र ।
फजिहति सं० स्त्री० दुर्दशा, डाँट-फटकार;-करब, डाँटना;-ताचार, थुक्का-फजीता; अर० ।
फजूल क्रि० वि० व्यर्थ; वि० निरर्थक; वै० बे-, प्र० -लै; अर० फ़ुज़ूल ।
फज्झी सं० स्त्री० लकड़ी का पतला टुकड़ा; वै० फाझी ।
फटकव क्रि० स० साफ करना (नाज), पछोरना; अ० अलग हो जाना; प्रे०-काइब,-कवाइब ।
फटका सं० पुं० फाटक, दरवाजा ।
फटकारव क्रि० स० फटकारना; भा०-कार ।
फटहा वि० पुं० फटा; स्त्री०-ही ।
फट्टा सं० पुं० (बाँस का) चीरा हुआ लंबा टुकड़ा; स्त्री०-ट्टी ।
फट्टा वि० चालबाज; भा०-ट्टई ।
फठिआव क्रि० अ० हठ करना ।
फण सं० पुं० साँप का फन; वै०-यड ।
फतुही सं० स्त्री० सदरी; अर० फतह (खोलना) इसकी बाँह खुली रहती है ।
फतूर सं० पुं० धोका, षड्यंत्र;-करब,-रचब; वि० -री,अर० फितूर ।
फते सं० स्त्री० विजय;-करब,-होब; अर० फ़तह ।

फद्फदगोबरी सं० स्त्री गड़बड़, मिलावट,-करब, एक में मिलाकर ख़राब कर देना;-होब, फद्-फद्+गोबरी (गोबर तथा मिट्टी की मिलावट)।
फद्‌सें क्रि० वि० (गिरना) धमाक से।
फन सं० पुं० होशियारी, चालाकी, प्र०-न्न, बड़े-क, बहुत चतुर; अर० फ़न।
फनइब क्रि० स० आरंभ करना, आयोजन करना; वै०-ना-,-उब; प्रे०-वाइब।
फनकब क्रि० अ० दूर भागना, इनकार करना।
फनगब क्रि० अ० कूदना, उछलकर अलग हो जाना, ज़ोर से इनकार करना।
फनगाइब क्रि०स० उछालना (रुपया-पैसा), जल्दी कमा लेना, वै०-उब।
फनफनाब क्रि० अ० 'फन-फन' का शब्द करना; भागना, न करने का प्रयत्न करना।
फफदुदु सं० स्त्री० एक प्रकार की दाद, क्रि०-दब, दाद की भाँति फैल जाना, वै० बफ-।
फबब क्रि० अ० शोभा देना, अच्छा लगना (देखने में)।
फयँकट वि० पुं० धोकेबाज़, वै० फैं-, भा० ई।
फयर सं० पुं० गोली की आवाज़,-करब,-होब; अं० फ़ायर, वै० फैर।
फयसन सं० पुं० शौक; वि०-निहा,-नी, अं० फ़ैशन,-करब,-झारब।
फर स० पुं० फल, क्रि०-ब,-फरहार, फल एवं फलाहार, सं० फल।
फरक सं० पुं० अंतर;-कें, पृथक्, अर० फ़र्क़।
फरकब क्रि० अ० फड़कना, प्रे०-काइब,-उब, मु० (रुपये पैसे की) अधिकता होना।
फरका सं० पुं० छप्पर का एक भाग, अर० फ़र्क़।
फरकाइब क्रि० स० फड़काना, खूब कमाना, वै०-उब।
फरजी सं० पुं० (शतरंज का) वज़ीर, वि० काल्पनिक, झूठा, फ़ा०फरजी (वज़ीर) अर० फर्ज़ (तै)।
फरद सं० स्त्री० पर्त, हल्की रजाई, वै०-र्द,-र्दि, फ़ा० फ़र्द।
फरफर सं० पुं० फरफर की आवाज़,-करब,-होब।
फरब क्रि० अ० फलना, दाने पड़ जाना (चमड़े पर), सं० फल।
फरसा सं० पुं० कुल्हाड़ा, सं० परशु; फालसा।
फरसी सं० स्त्री० हुक्का जिसे फ़र्श पर रखकर पी सकें, फ़ा० फर्श।
फरा सं० पुं० एक व्यंजन जिसमें चावल का आटा और दाल की पीठी पड़ती है। इसे यम-द्वितीया को अवश्य खाते हैं।
फराइब क्रि० स० फड़वाना, (कपड़ा) खरीदना।
फराई सं० स्त्री० फलने का क्रम, नियम या शोभा, फाड़ने का तरीक़ा, प्रे०-वाई।
फराक सं० पुं० स्त्रियों का एक कपड़ा, अं० फ्राक।
फरार वि० पुं० भगा हुआ (अपराधी), स्त्री०-रि,-होब,-करब, अर० फ़रार।
फरिवाह सं० पुं० फरी मारनेवाला, अद्भुत खेल दिखानेवाला, भा०-ही।
फरी सं० स्त्री० कूदकर हाथों के बल चलने की कसरत;-मारब,-गतका, गतका-, इस प्रकार के खेल, दे० गतका।
फरुआ सं० पुं० फावड़ा,-चलाइब, स्त्री०-ही।
फरुही सं० स्त्री० लकड़ी का हथियार जिससे गोबर आदि बटोरते हैं।
फरेनि सं० स्त्री० फरेंद, जामुन।
फरेब दे० फउरेब।
फर्च वि० पुं० साफ, शुद्ध,-चैं, शुद्ध स्थान पर, भा०-ई, क्रि०-र्चाब,-र्चाइब स्त्री०-र्चि।
फर्स सं० पुं० जीत, विजय, मैदान या फ़र्श,-पाइब, जीतना, फ़ा० फर्श।
फल सं० पुं० फल, नतीजा,-पाइब,-होब,-देब; क्रि०-ब, अच्छा या बुरा फल देना (कर्म का), सं०।
फलकब क्रि० अ० (बर्तन में रखे द्रव का) छलकना, प्रे०-काइब।
फलनवा क्रि० पुं० अमुक, स्त्री०-निआ, दे० फलाने, फलान,-ना जिनका यह टुकारने का रूप है।
फलफल क्रि० वि० (खून के बहने के लिए) ज़ोर से, धार फूटकर, प्र०-ल्ल-ल्ल, फलल-फलल, वै० फल्ल से।
फलान वि० पुं० अमुक, स्त्री०-नि, फलाँ, वै०-ना,-ने (आ०)।
फलानैन सं० पुं० एक प्रकार का गर्म कपड़ा, अं० फ़लानेल।
फलास सं० पुं० जूआ जो ताश के साथ खेला जाता है, अ० फ़्लश।
फली सं० स्त्री० छीमी -लागब।
फवरम क्रि० वि० तुरंत, फवरन्, प्र०-ड्म।
फहरब क्रि०अ० फहरना, प्रे०-राइब,-उब; वै०-राब।
फहिआव दे० फइहाब, वै०-याब।
फाँक सं० पुं० टुकड़ा, स्त्री०-की; क्रि० फँकिआइब, टुकड़े करना।
फाँकब क्रि० स० फाँकना, प्रे० फँकाइब,-कवाइब,-उब।
फाँका सं० पुं० चबेना या अन्य वस्तु का उतना भाग जो एक बार में फाँका जा सके, यक-, दुइ-,-मारब, क्रि०-कब।
फाँट सं० पुं० काग़ज़ जिस पर हिस्सेदारों की भूमि का ब्योरा लिखा हो, अलग ब्योरा, क्रि० फँटिआइब।
फाँड़ सं० पुं० कमर के दोनों ओर का भाग; क्रि० फँड़िआइब,-में रख लेना।
फाँता वि० होशियार,-चनय, दोनों लिंगों में इसका यही रूप रहता है। अर० फातः।

फाँफी सं० स्त्री० पतली मलाई; पर्दा,-परब ।
फाँस सं० पुं० जिसमें कुछ फँसा हो, "बाँस फाँस औ मीसरी एकै संग बिकाय" ।
फाँसब क्रि० स० फँसाना; प्रे० फँसाइब, फँसवाइब, -उब ।
फाँसी सं० स्त्री० फाँसी,-लागब; बुरा लगना;-देब, -होब,-पाइब; सूरी-,सूली एवं फांसी ।
फागुन सं० पुं० चैत के पहले का महीना ।
फाजिल वि० पुं० अधिक, बढ़ा हुआ ।
फाफी दे० फज्झी ।
फाट वि० पुं० फटा, स्त्री०-टि ।
फाटब क्रि० अ० फटना; प्रे०-रब, फराइब,-उब, फरवाइब ।
फानब क्रि० स० बाँध देना; प्रे० फनाइब,-उब ।
फाना सं० पुं० डोरी या उबहन (दे०) का वह भाग जो बर्तन के चारों ओर बाँधा जाता है ।
फाफा सं० पुं० झूठ;-उड़ाइब ।
फायँ-फायँ क्रि० वि० व्यर्थ (बकना) ।
फायदा सं० पुं० लाभ,-होब,-करब,-देब, फा० फायद: ।
फार सं० पुं० हल का लोहेवाला भाग जो भूमि को "फाड़ता" है । 'फारब' से ।
फारखती सं० स्त्री० हिसाब चुक्ता होने की रसीद, -देब,-लेब,-होब; अर० फ़ारिग़+ख़त ।
फारन सं० पुं० फाड़ा हुआ भाग ।
फारब क्रि० स० फाड़ना; प्रे० फराइब, फरवाइब, -उब; चीरब-, तूरब-(दे० तूर-फार) ।
फालिज सं० पुं० रोग जिससे अंग विशेष संज्ञाहीन हो जाता है,-मारब,-गिरब, अर० फ़ालिज ।
फाहा सं० पुं० रुई या कपड़े का टुकड़ा जो घाव पर रखा जाय ।
फिकिर सं० स्त्री० चिंता;-करब,-होब,-रहब, वै० -रि, फा० फ़िक्र ।
फिचकुर दे० फेच- ।
फिचवाइब क्रि० स० फीचब (दे०) का प्रे० रूप ।
फिटकिरी सं० स्त्री० फिटकरी; वै०-टि- ।
फिट्ट वि० दुरुस्त, ठीक,-करब,-होब,-रहब, स० फुट, (दे०) अं० फिट ।
फिन क्रि० वि० फिर; वै०-नि,-नु, प्र०-नू; सं० पुन: ।
फिरंगी सं० पुं० विदेशी, अंग्रेज़; वै०-रिं-, फा० ।
फिरंता सं० पुं० लौटती या लौटाती बार,-मैं, लौटते समय, वै०-ता,-रौता, फे- ।
फिरकी सं० स्त्री० फिरकी; मु० पतली रोटी, वै० -रि- ।
फिरब क्रि० अ० फिरना, झाड़े-, टट्टी जाना, प्रे० फेरब, फिराइब,-वाइब, फे-,-उब ।
फिराक सं० पुं० चिंता, उद्योग,-मैं रहब, कोशिश करना, अर० ।
फिरार दे० फरार ।
फिरि-फिरि क्रि० वि० बार-बार; वै०- नि-नि ।
फिरू क्रि०वि० फिर; वै०-नू, फेरू ।
फिरैआ सं० पुं० फिरनेवाला, वै०-या ।
फिलपाव दे० पिलपावा; फा० फील+पा ।
फिलवान दे० पिलवान; फा०फील+वान ।
फिसड्डी वि० पुं० अयोग्य; वै०-सि- ।
फिसिहा वि० पुं० फ़ीसवाला, स्त्री०-ही ।
फिस्स वि० पुं० व्यर्थ;-होब,-करब, टायँ-टायँ-, बड़ी बक-बक के बाद कुछ नहीं ।
फीक वि०पुं० हल्का, कम महत्त्व का, नीरस (तुल० सरस होय अथवा अति फीका);-परब, कम महत्त्व-पूर्ण हो जाना ।
फीचब क्रि० स० पटक-पटक कर साफ़ करना, प्रे० फिचाइब,-चवाइब,-उब; दे० उपछब; सं० प्रक्षाल, भो० फे- ।
फीट सं० पुं० फुट; अं० ।
फीता सं० पुं० फीता ।
फीलखाना सं० पुं० घर जिसमें हाथी रहे; वै० पी-, फा० फ़ील (हाथी)+खान: (घर) ।
फीला सं० पुं० शतरंज के खेल में 'ऊँट' कहा जाने-वाला मुहरा, फा० फील ।
फीस सं० स्त्री० शुल्क;-लागब,-देब,-लेब; वै०-सि, अं० फी० का बहुवचन ।
फुआ दे०-वा ।
फुक्क सं० पुं० हवा या प्राण निकलने का शब्द,-सैं, झट से ।
फुचरा सं० पुं० लकड़ी आदि का किनारे का पतला भाग,-निकरब; क्रि०-ब, ऐसे टुकड़े हो जाना; खराब हो जाना ।
फुट सं० पुं० फुट का नाप; यक-, दुइ-, अं० ।
फुटकर वि० पुं० अनेक प्रकार का (व्यय, द्रव्य आदि) ।
फुटब क्रि० अ० फूटना, प्रे० फोरब, वै० फू- ।
फुटबाल सं० पुं० प्रसिद्ध खेल या उसका गेंद; -होब -खेलब ।
फुटमति सं० स्त्री० असहमति; वैमनस्य,-होब,-रहब, -करब ।
फुटहरा सं० पुं० भूना हुआ चना जिसका छिलका उतर गया हो, वै०-टे-, 'फुटब' से (जो खूब फूटा हो) ।
फुटहा वि० पुं० फूटा हुआ, स्त्री०-ही ।
फुट्टइल वि० पुं० अलग, असम्मिलित; वै-फायँ ।
फुदकब क्रि० अ० फुदकना, प्रे०-काइब; भा० -कवाई ।
फुनकब क्रि० अ०(पशु का) फुन्न-फुन्न करना, मारने का प्रयत्न करना ।
फुनगी सं० स्त्री० कोंपल; क्रि०-गिआब, कोंपल फूटना ।
फुनि क्रि० वि० फिर; वै० फिनु,-नू, पु-;-फुनि, बार-बार; सं० पुन: ।
फुपकार सं० पुं० एक चर्म रोग जो साँप के 'फु-प

कार' के कारण होता है; साँप या छिपकली आदि जंतुओं के मुँह की साँस;-छोड़ब; वै०-फ- ।
फुप्फा सं० पुं० फूफी का पति; वै०-फ्फा ।
फुफुआउर सं० पुं० गाँव या घर जहाँ फुआ ब्याही हो, क्रि० वि०-अउरें, फुआ के यहाँ ।
फुफुनी सं० स्त्री० स्त्रियों की धोती का वह चुना भाग जो पेट के ऊपर रहता है ।
फुर सं० पुं० सच;-कहब,-बोलब, वि० सत्य, स्त्री० -रि, क्रि०-वाइब (सत्य सिद्ध करना),-राब, सत्य होना (देवता का), क्रि० वि०-फुर, सचमुच प्र०-रै, -रै-फुरै ।
फुरमाइब क्रि० अ० आज्ञा देना; सं० फुरमाइस; -इस करब; फा० फरमाइश ।
फुरसति सं० स्त्री० छुट्टी,-पाइब,-रहब,-देब,-मिलब, (.फुर्सतवाला) .फा० फ़ुरसत ।
फुराब क्रि० अ० सत्य सिद्ध होना (देवी देवता का); फल देना, प्रे०-रवाइब ।
फुरिश्रा दे० फोरिया ।
फुरुर-फुरुर क्रि० वि० फुर्र-फुर्र आवाज़ के साथ ।
फुरेहरी सं० स्त्री० सींक में लपेटी हुई रुई (जिससे दवा या इत्र लगाया जाय), वै०-र-,-लगाइब, यक्-,दुइ- ।
फुर्र सं० पुं० चिड़ियों के शब्द;-दे,-से; क्रि० वि० -फुर्र ।
फुलगेनवा सं० पुं० गेंद जिसमें फूल लगा हो (गी०) ।
फुलझरी सं० स्त्री० फूलों की झड़ी ।
फुलरा सं० पुं० कृत्रिम फूल जिसमें लटकाने की रस्सी लगी हो ।
फुलवाइब क्रि० स० 'फूलब' का प्रे० रूप ।
फुवा सं० स्त्री० बाप की बहिन, वै०-आ, फू- ।
फुसकब क्रि० अ० फुस-फुस करना, धीरे-धीरे कहना ।
फुसरी सं० स्त्री० फुडिया,-फोरब, पुचकारते रहना ।
फुस्स सं० पुं० 'फुस' की आवाज़;-दें,-से, ऐसी आवाज़ के साथ ।
फुहरई सं० स्त्री० फूहड़पन ।
फुहरपन सं० पुं० फूहड़पन ।
फुहराब क्रि० अ० .खराब हो जाना, प्रे०-इब, खराब करना ।
फुहारा सं० पुं० पानी की हल्की बौछार ।
फूँक सं० स्त्री० फूँक, कि०-ब, फूँकना ।
फूँकब क्रि० स० जलाना,-तापब,-लाइब, नष्ट कर देना, प्रे० फुँकाइब,-कवाइब ।
फूआ दे० फुवा ।
फूट सं० स्त्री० बैर भाव; पकी ककड़ी, वै०-टि ।
फूटन सं० पुं० टूटा या फूटा हुआ भाग ।
फूटब क्रि० अ० फूटना, प्रे० फोरब,-वाइब,-उब ।
फूलब क्रि० अ० फूलना, सूजना, प्रे० फुलाइब, -वाइब,-सोंथब, मरणासन्न होना ।
फूहर वि० पुं० बेढंगा, स्त्री०-रि, सं० फूहड़ स्त्री, भा० फुहरई,-पन ।
फेंकब क्रि० स० फेंकना, प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब ।
फेंचकुर सं० पुं० मुँह से गिरा हुआ झाग जो रोग या बेहोशी का द्योतक है,-गिरब ।
फेंटब क्रि० स०.मिलाना, एक में घोंटना प्रे०-टाइब, -टवाइब ।
फेंटा सं० पुं० बड़ी पगड़ी,-बान्हब ।
फेटार सं० पुं० काला साँप, मु० दुष्ट व्यक्ति ।
फेकारे क्रि० खोले हुए, मूड़-,सिर खोले हुए, 'फेकारब' कोई स्वतंत्र क्रिया नहीं है, पर पूर्व-कालिक का यही रूप प्रयोग में है ।
फेदर सं० पुं० स्त्री० का गुप्तांग (केवल गाली में), उ० दु तोरे-में, वै०-रा ।
फेन सं० पुं० फेन, क्रि०-नाब, फेन देना, वि०-हा ।
फेफरा सं० पुं० गला, वै०-ना ।
फेर सं०पुं० परिवर्तन, पेंच,-म परब, ६६ क-, सोच-विचार, चिंता ।
फेरब क्रि० स० लौटाना, प्रे०-राइब,-रवाइब,-उब ।
फेरवटब क्रि० अ० बात को बदल कर दूसरे पहलू पर आ जाना; 'फेर' से; दे० घरवटब ।
फेल वि० पुं० असफल,-करब,-होब, स्त्री०-लि; अं० फ़ेल ।
फैंकट वि० पुं० शरारती, स्त्री०-टि ।
फैर सं० पुं० (बंदूक की गोली का) वार,-करब; अं० फ़ायर ।
फैलसूफ वि० पुं० व्यर्थ का व्यय करनेवाला, भा० -सुफई,- फी, अर० फलसफ़ी ।
फैसन सं० पुं० शौक़, वि०-हा,-निहा, अं० फैशन ।
फोक्ट वि० मुफ़्त,-मँ,-कै ।
फोटका स० पुं० फफोला,-परब, मु०-बोलब, व्यंग बोलना ।
फोडा सं० पुं० फोड़ा;-होब,-फुंसी, स्त्री०-रिश्रा ।
फोरब क्रि० स० फोड़ना, अपनी ओर कर लेना, प्रे०-राइब,-रवाइब ।
फौडम क्रि० वि० तुरत, प्र०-मँ, तुरंत ही, फ़ौरन, दे० फवरम ।
फौत दे० .फउत ।

व

वंक सं० पुं० बैंक अं० ।
वंगा सं० पुं० बच्चों का एक खेल जिसमें पानी में पत्थर, ईंट आदि फेंक कर सब चिल्लाते हैं "कैसेर वंगा" और फिर सब पानी में डुबकी लगा कर उसे ढूँढ़ते और कहते हैं--"अढ़ाई सेर वंगा" ।
बंगाला सं० पुं० वंगाल; ढाका-, दूर देश,-ली, वंगाल का निवासी ।
वँचाइव क्रि० स० पढ़ाना; प्रे०-चवाइव,-उव; वै० -उव ।
वंजर वि० पुं० जिसमें खेती न होती हो, (भूमि) जो उपजाऊ न हो ।
वंजारा सं० पुं० एक जाति जो घूमती रहती है और जिसके लोग शिकार आदि करते हैं, स्त्री० -रिन ।
वंझा दे० बाँझ ।
वंटाढार सं०पुं० नाश; बहुत गड़बड़;-होब,-करव।
वँठऊ सं० पुं० वाँठा (दे०) का घृ० रूप ।
वंडा सं० पुं० अरवी की तरह की एक तरकारी जिसकी पूती (दे०) बहुत बड़ी होती है ।
वंडी सं० स्त्री० वनयान; शायद 'वंदा' (दे०) से= जिसमें वंदा लगा हो ।
वँड़ऊ सं० पुं० वाँड़ा (दे०) का आ० रूप, वै० -वा, स्त्री०वाँडी ।
वंता सं० पुं० स्त्रियों के आने-जाने का मुहूर्त (जो 'बनता' हो), विना-के, विना ऐसा मुहूर्त होते हुए ।
वंदा सं०पुं० कपड़े के पतले वंद जो किनारे बाँधने के लिए लगे होते हैं, सं० वन्ध ।
वंधन दे० वन्हन ।
वंवं सं० बो० शिवजी की पूजा के समय उच्चारित शब्द,-महादेव,-शंकर, इस शब्द को कहकर पूजा करनेवाले जोर से अपने गाल बजाते हैं ।
वँवरा सं० पुं० कपडा पकड़कर हवा करने का तरीका (खलियान में नाज साफ़ करने को); -मारब ।
वँवरि सं० स्त्री० जंगली वेल, क्रि०-आव, वेल की तरह एक में लिपट जाना ।
वंस सं० पुं० पुत्र, कन्या आदि,-वृद्धि, परिवार की अधिकता, निर-, निःसन्तान होने की स्थिति, सं० वंश ।
वँसफोर सं० पुं० एक जाति जिसके लोग वाँस के पह्वे, टोकरे आदि वनाते हैं, वै०-वा, भा०-ई,-पन; दे० घरिकार ।
वइठक सं० पुं० वैठव, (वैलों की) सुस्ती;-का, वैठने का दालान, वि०-वाज, मित्रों में वैठनेवाला, भा० -जी ।
वइठकी सं० स्त्री० हलवाह के काम न करने का दिन, छुट्टी -करव, अनुपस्थित रहना ।
वइठव दे० वैठव ।
वइरि सं० स्त्री० वेर,-यस, छोटा (आम), वि०-रिहा, छोटा ।
वइरी सं० पुं० वैरी, दे० वयरी ।
बइसाख सं० पुं० वैसाख ।
वउँका सं० पुं० पानी का एक खर ।
वउआ सं० पुं० एक काल्पनिक जीव जिससे छोटे वच्चे डरते हैं; उन्हें डराने के लिए कहा जाता है "वउआ !"
वउआव क्रि० अ० निद्रा में कुछ वडबड़ाना; दे० कउआव ।
वउखल वि० पुं० कुछ पागल, स्त्री०-लि; क्रि०-लाब, पगलाना ।
वउखा दे० वौखा ।
वउचट वि० पुं० विक्षिप्त, मूर्ख, स्त्री०-टि ।
वउझकब क्रि० अ० पागल हो जाना, वै०-काब; दे० झक्क ।
वउर सं० पुं० फूल (आम का); क्रि०-व, सं० मुकुल, पा० मकुल, प्रा० मउल, सिं० मोर, पं० मौरना (फूलना), वं० मौला ।
वउरहपन सं० पुं० मूर्खता, सिधाई ।
वउरहा वि० पुं० मूर्ख, सीधा; स्त्री०-ही, दु-, ऐ सीधे (भले) आदमी ! कभी "-ही" भी पुं० में व्यवहृत होता है ।
वउराव क्रि० अ० पागल होना, पागल सी बातें करना, प्रे०-रवाइव ।
वउरेंठ वि० पुं० अर्द्ध विक्षित, स्त्री०-ठि ।
वउसव क्रि अ० गर्व से कहना, डींग मारना ।
वउसाव सं० पुं० शक्ति;-पुरइव, सामर्थ्य होना; वै० वाउस (दे०) ।
वउहरि दे० वहुअरि ।
वकइनि सं० स्त्री० वकायन, वै०-का-।
वकठैंठे सं० स्त्री० देर तक होनेवाली और व्यर्थ की वातें जो ज़ोर-जोर से हों, वक+ठायँ-ठायँ ।
वकला दे० वोकला ।
वकवादि सं० स्त्री० व्यर्थ का विवाद; वि०-दी ।
वकस सं० पुं० वक्स, वै० वाकस,-सा, अं० वाक्स ।
वकसव क्रि० स० दे देना; रक्षा करना, प्रे०-साइव, फ़ा० वख्श ।
वकसीस सं० स्त्री० इनाम,-देव,-पाइव; फ़ा० वख्शीश ।
वकसुआ सं० पुं० वक्सुआ जो वास्कट आदि में लगता है ।

बकाइब क्रि० स० बकाना, बोलने के लिए बाध्य करना; वै०-उब, प्रे०-कवाइब।
बकाया सं० पुं० शेष, वि०बाक़ी,-रहब,-करब, फा० बकायः।
बकिश्रा सं० पुं० बचा हुआ अंश, क्रि०-इब, बचा लेना, न देना, बाकी रखना, फ़ा० बकीयः।
बकिल परन्तु, "बल्कि" का विपर्यय, वै०-लुक।
बकेना सं० स्त्री० कुछ दिन की ब्याई हुई दूध देनेवाली गाय या भैंस; सी०-नी, सं० वष्कयणी।
बकैश्रा सं० पुं० बकनेवाला, प्रे०-कवैश्रा।
बकैयाँ क्रि० वि० दोनों हाथों तथा पैरों के बल (चलना),-बकैयाँ, इस प्रकार।
बकोट सं० पुं० मुट्ठी भर, यक-, दुइ-, वै०-टा।
बक्कब क्रि० स० बकना, बोलना, प्रे०-काइब।
बक्कल सं० पुं० चमड़ा,-फोरब, चमड़ी उधेड़ना, खूब पीटना, सं० वल्कल।
बक्काल सं० पुं० बनिया, बनिया-, नीच जाति के लोग।
बक्की वि० पुं० बकनेवाला; व्यर्थ बोलनेवाला, बक-, योंही बोलनेवाला।
बखर-सुद्ध दे० बखरी।
बखरा सं० पुं० हिस्सा,-हीसा,-देब,-लेब,-करब, पं० बखरा (अलग)।
बखरीं क्रि० वि० मालिक के घर पर; वै०-रियाँ।
बखरी सं० स्त्री० घर,-रि-सुद्ध, वि० जो गृह-निर्माण के हिसाब से लंबाई-चौड़ाई के माप में ठीक हो, प० बखरी (अलग)।
बखान सं० पुं० वर्णन, प्रशंसा, क्रि०-ब, वि०-ना, -नी, प्रशंसित।
बखार सं० पुं० नाज रखने का स्थान; स्त्री०-री (सी०)।
बखिश्रा सं० पुं० बखिया,-करब, क्रि०-इब, बखिया करना, फ़ा० बखियः।
बगल सं० स्त्री० दहिना और बायाँ किनारा, वै० -लि; क्रि० वि०-लीं,-लें, बगल में, क्रि०-लिआब, किनारे होकर निकल जाना,-आइब, अलग या किनारे करना।
बगली स० स्त्री० दरवाजे के बगल में दीवार काट कर चोरी,-काटब, इस प्रकार चोरी करना।
बगार सं० पुं० झुंड;-भर, अनेक।
बगिश्रा सं० स्त्री० छोटा बाग, फुलवारी, वै० -या।
बगुल-पंख वि० पुं० सफेद, बगुला + पङ्ख (बगले के पङ्ख की तरह सफेद)।
बगुला सं० पुं० बगला,-भगत, दिखावटी, धोकेबाज; स्त्री०-ली
बगेदब क्रि० स० भगाना, निकालना।
बघुआब क्रि० अ० गुर्राकर बोलना, बाघ की तरह गुर्राना, सं० व्याघ्र, दे० बाघ।
बघेल सं० पुं० एक प्रकार के क्षत्रिय,-ला, वि० शेर (बाघ) की भाँति बहादुर एवं तंदुरुस्त, सं० व्याघ्र; दे० बाघ।
बङला सं० पुं० अच्छा हवादार मकान।
बङुश्रा सं० पुं० बिना पता ठिकान का व्यक्ति; वि० लावारिस, मु० बेकार के लोग; असंबद्ध व्यक्ति; भा०-अई, क्रि०-आब।
बच सं० स्त्री० एक औषधि।
बचइब क्रि० स० बचाना, वै०-चा-,-उब; प्रे० -वाइब।
बचकानी वि० स्त्री० बच्चे का, छोटा; पुं०-ना।
बचति सं० स्त्री० बचत,-करब,-होब।
बचनि सं० स्त्री० बात, कुटुक-, कटु शब्द; सं० वचन।
बचब क्रि० अ० बचना, प्रे०-इब,-चाइब,-उब।
बचवाइब क्रि० स० रक्षा करना।
बचानि सं० स्त्री० बचने का दाँव या तरकीब,-रहब, -होब।
बचाव सं० पुं० बचने का दाँव; रक्षा;-करब।
बचैया सं० पुं० बचनेवाला; प्रे० बचवैया।
बछरू सं० पुं० बछड़ा, स्त्री०-छिया, सं० वत्स।
बछवा स० पुं० बछड़ा; स्त्री०-छिया, सं० वत्स।
बछिश्रा सं० स्त्री० छोटी गाय, मु०-यस, नामर्द, सं० वत्सतरी।
बछौश्रा सं० पुं० बछड़ा।
बजकब क्रि० अ० ऐसी स्थिति में पहुँचना कि कीड़े पड़ जायँ, प्रे०-काइब,-उब।
बजड़ब क्रि० अ० पहुँच जाना, भिड़ जाना, प्रे० -डाइब, मार देना।
बजडा स० पुं० बाजरा; स्त्री०-ड़ी, छोटा-छोटा बाजरा।
बजना स० पुं० बाजा;-बाजब, विज्ञापन होना; बरहो-बाजब, सभी प्रकार की दुर्गति होना; सं० वाद्य।
बजनिश्रा स० पुं० बजानेवाला, बने क-, सुख का मित्र, वै०-या।
बजनी सं० स्त्री० कुश्ती,-बाजब।
बजबजाब क्रि० अ० बजबज करना (भिगोई हुई वस्तु का), कीड़ों की अधिकता होना।
बजमार सं० पुं० डाकू, भा०-मरई, वै०-ट-।
बजर सं० पुं० वज्र; प्र०-ज्जर दे०, गीत-"दे दीना बजर केवाँर"; सं० वज्र।
बज्जर सं०पुं० वज्र,-कै, कठोर;-परब,-मारब; सं०।
बज्जह सं० पुं० महत्वपूर्ण विधि,-बूड़ब, बड़ी हानि होना, वै० जव्वह।
बज्जात वि० पुं० दुष्ट, स्त्री०-ति, भा०-ज्जतई, फ़ा० बदज़ात।
बझनि सं० स्त्री० व्यस्तता,-रहब,-होब वै०-झा-; सं० बन्ध।
बझब क्रि० अ० फँसना, प्रे०-झाइब; वै० बाझब; सं० बन्ध।

बटइलि सं० स्त्री० बटेर,-यस, दुबला-पतला।
बटखरा सं० पुं० छोटा बाट,-यस, हल्का, छोटा, स्त्री०-री।
बटगायन सं० पुं० रास्ता चलते गानेवाला, सच्चे गवैये को "सभा गायन" कहते हैं; बट (बाट) + गायन।
बटनि सं० स्त्री० बटन,-देब,-लगाइब, अं० बटन।
बटब क्रि० स० बटना, कातना, प्रे०-टाइब।
बटमार सं० पुं० डाकू जो रास्ते में लूटे; वै०-ज-; बट + मार।
बटाऊ सं० पुं० रहगीर, यात्री; 'बाट' से; तुल० "तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।"
बटिआ सं० स्त्री० पतला रास्ता. 'बाट' का लघु० रूप।
बटुआ सं० पुं० बटुवा।
बटुरब क्रि० अ० इकट्ठा होना; (प्रे०-टोरब,-टोरवाइब।
बटुला सं० पुं० बड़ा बर्तन जिसमें दाल या भात पकाया जाय, स्त्री०-ली।
बटोर सं० पुं० समूह; बमन-, ब्राह्मणों का जमाव; क्रि०-ब, प्र०-रा,-रिआ,-होब,-करब।
बटोही सं० पुं० यात्री, राहगीर; 'बाट' से।
बट्टा सं० पुं० बट्टा,-लागब,-देब।
बट्टी सं० स्त्री० धागे की गोली।
बड़ क्रि० वि० बहुत, प्र०-हैं,-हिहि, वि० बड़ा,-र, बड़े-बड़े।
बड़कई सं० स्त्री० बड़प्पन,-करब, बड़ाई करना; वि० बड़ी,-कऊ का स्त्री० रूप, वै०-नी।
बड़कऊ वि० पुं० बड़ा (भाई, बेटा आदि);-जने, स्त्री०-कई, वै०-नू।
बड़कवा सं० पुं० आदरणीय व्यक्ति।
बड़का वि०पुं० बड़ा, स्त्री०-की -बड़का, बड़ा-बड़ा।
बड़गर वि० पुं० थोड़ा बड़ा; स्त्री०-रि।
बड़र वि० पुं० बड़े-बड़े, स्त्री०-रि; "ज्यों बड़री अँखिया निरखि आँखिन को सुख होत।"
बड़वार वि० पुं० बड़े-बड़े, स्त्री०-रि, भा०-वरकी, बड़प्पन, प्रशंसा,-की करब,-बतुआब, प्रशंसा करना।
बड़हन वि० पुं० कुछ बड़ा, स्त्री०-नि।
बड़हर सं०पुं० एक पेड़ और उसका फल, कटहर-, तरह-तरह के फल।
बड़हार सं० पुं० व्याह का दूसरा दिन जब बारात ठहरी रहती है;-रहब, (बारात का) ठहरना।
बड़ा वि० पुं० बड़ा, स्त्री०-ड़ी, क्रि० वि० बहुत।
बड़ाई सं० स्त्री० प्रशंसा,-करब,-होब।
बड़ायल वि० पुं० कुछ बड़ा; स्त्री०-लि, वै० -ड़ाल।
बड़च्छा वि० पुं० जिसके कोई न हो, अकेला।
बढ़इता सं० पुं० जेठ या उसके भाई-बंद, गीतों में प्रयुक्त-"जेठवा बढ़इता।"
बढ़इब क्रि० स० बढ़ाना, (दही या मट्ठे में) पानी मिलाना, (दूकान) बंद करना, (दीया) बुझाना; वै०-ढ़ा-,-उब, प्रे०-वाइब-,-उब।
बढ़इनि सं० स्त्री० बढ़ई की स्त्री, एक चिड़िया जो लकड़ी में से कीड़े निकाल-निकालकर खाती है; इसे "कठफोरवा" (दे०) भी कहते हैं।
बढ़ई सं० पुं० लकड़ी का काम करनेवाला, स्त्री० -इनि, भा०-यपन।
बढ़उब क्रि० स० बढ़ाना, दे० बढ़इब।
बढ़ाइब क्रि० स० बढ़ाना, दे० बढ़इब।
बढ़िआँ वि० स० अच्छा;-बढ़िआँ, उम्दा-उम्दा।
बढ़ी वि० अधिक (भाव, मात्रा, तौल),-देब,-लेब, -होब,-उतरब।
बढ़ैता दे० बढ़इता।
बढ़ोतरी सं० स्त्री० बढ़ने की क्रिया।
बणावा वि० स० बाँड़ा, जिसके पूँछ न हो या पूँछ कटी हो, स्त्री० बाँड़ी, दे० बँड़ऊ।
बत अव्य० कि, सं० यत्।
बतउरी सं० स्त्री० किसी अङ्ग पर निकला फोड़ा ऐसा गोल मांस का लोथड़ा जो दर्द नहीं करता; -निकरब,-होब; सं० वात (?)।
बतकही सं० स्त्री० बातचीत;-करब,-होब; तुल० "करत बतकही अनुज सन"।
बतकड़ सं० पुं० लंबी बात; व्यर्थ की बात, बातिक ..।
बताइब क्रि० स० बताना, वै०-उब।
बतास सं० स्त्री० हवा, सं० वात।
बतासा सं० पुं० बताशा।
बतिआ सं० स्त्री० फलों का प्रारंभिक रूप;-लागब, -देब; वै०-या, तुल० "इहाँ कुहम्ड़ बतिया कोउ नाहीं"।
बतिआइब क्रि० स० (खेत के चारों ओर) बेरहा (दे०) में बाती (दे०) लगाना, कहा० "बेरहा बतिआयें सूद लतिआयें"।
बतिधर वि० पुं० जो अपनी बात पर पक्का रहे, जो बात को पकड़े, वै०-त-।
बतीसी सं० स्त्री० दाँतों के ऊपर लगा हुआ सोना या चाँदी, ३२ दाँतों का समूह।
बतुआब क्रि० अ० बातें करना; वै०-याब।
बतूनी वि० बातूनी, बात करनेवाला।
बतेरा वि० पुं० बातें बनानेवाला, स्त्री०-री,-रि।
बतौरी दे०बवउरी, वि०-रिहा, जिसके बतौरी हो।
बत्तक सं० स्त्री० बतख़; वै०-ख।
बत्तिस वि० बत्तीस,-वाँ, ३२वाँ,-ई, ३२ भाग; प्र० -सौ,-सै।
बत्ती सं० स्त्री० दीया, बिजुली-, टार्च; दिया-, घाव के भीतर डाला हुआ कपड़ा, दे० बाती।
बथब क्रि० अ० दर्द करना; प्र०-त्थब, सं० व्यथ्।
बथुआ सं० पुं० बथुआ का साग, उसका पौधा; वै०-वा, स्त्री०-ई।

बदकब क्रि० अ० पकने में शब्द करना; खुरना, प्रे० -काइब ।
बदनाम वि० पुं० जिसकी बदनामी हो गई हो, स्त्री०-मि; भा०-मी,-करब,-होब,-रहब ।
बदब क्रि० स० निश्चित करना, प्रे०-दाइब, भा० -नि,-दानि, निश्चित स्थान एवं समय (वादे का) ।
बदबू सं० स्त्री० दुर्गंध,-आइब, वि०-दार,-करब ।
बदमास वि० पुं० बदमाश; स्त्री०-सि; भा०-सी; -करब ।
बदरंग वि० पुं० जिसका रङ्ग ख़राब या उतरा हो, स्त्री०-गि; फ़ा० ।
बदरउख वि० पुं० कुछ-कुछ बादलवाला (मौसम); -होब,-रहब, क्रि० वि०-खें, ऐसे मौसम में, जब बादल हों; बादर+औख ।
बदरी सं० स्त्री० बादलवाला मौसम,-होब,-करब, -रहब,-बूनी, बादल और बूँदा-बाँदी का मौसम ।
बदलब क्रि० स० बदलना; अ० बदल जाना, प्रे० -लाइब,-लवाइब,-उब ।
बदला सं० पुं० बदला,-लेब,-देब ।
बदलावन सं० पुं० अदला-बदला;-करब,-होब, -देब, फ़ा० ।
बदली सं० स्त्री० (व्यक्ति की) एक स्थान से दूसरे को बदली,-करब,-होब, फ़ा० ।
बदहवास वि० पु० जिसका दिमाग खराब हो; स्त्री०-सि, भा०-सी,-रहब,-होब, फ़ा० बद+अर० +हवास ।
बदहोस वि० पुं० बेहोश, स्त्री०-सि, भा०-सी, -करब,-रहब, फ़ा०-श ।
बदा वि० पुं० भाग्य में निश्चित;-होब,-रहब ।
बदिवदि क्रि० वि० अवश्य, निश्चयपूर्वक ।
बदी स० स्त्री० बुराई,-करब, नेकी-,भलाई-बुराई, फ़ा० ।
बदौलति अव्य० कारण, बदौलत, अर०-त, वै० -दउ- ।
बद्द वि० पुं० शरारती; स्त्री०-द्दि, भा०-ई, फ़ा० बद, अं० बैड ।
बद्दरीनाथ स० पुं० प्रसिद्ध धाम बदरीनाथ, वै० -द्दिरी-,-बिसाल ।
बद्दवँ वि० बुरा, दुश्मन,-होब,-करब, फ़ा० बद ।
बद्धी वि० पुं० आख्ता, जिस (बकरे) का अंडकोष निकाल दिया गया हो, दे० बधिया; सं०-लागब, कसर रहना ।
बध सं० पुं० हत्या,-करब,-होब, क्रि०-ब, मारना, सं० ।
बधउआ सं० पुं० जन्मोत्सव पर भेजा उपहार, -देब,-लाइब ।
बधना सं० पुं० मुसलमानों का लोटा, स्त्री०-नी; बोरिया-, सारा सामान ।
बधब क्रि० स० मारना, प्रे०-धाइब,-धवाइब,-उब, सं० ।
बधिआ वि० पुं० (पशु) जिसका अंडकोष निकाल दिया गया हो,-करब,-होब; वै०-या,-द्धी ।
बधिक सं० पुं० मारनेवाला, वध करनेवाला ।
बन सं० पुं० जङ्गल, वि०-या, जङ्गली ।
बनइब क्रि० स० बनाना, प्रे०-वाइब,-उब, वै०-उब -नाइब; बार-, खाब- ।
बनइला वि० पुं० जङ्गली ।
बनकर सं० पुं० जङ्गलवाला भाग (गाँव का), जलकर-, तालाव, नदी, जङ्गल आदि ।
बनकासि सं० स्त्री० एक जङ्गली घास जिसकी रस्सी बनती है, वन+कासि (दे०), काँस ।
बनचर सं० पुं० जङ्गल के रहनेवाले, असभ्य लोग ।
बनजर सं० पुं० भूमि जिसमें कुछ न होता हो, वै० बं- ।
बनजारा सं० पुं० एक जङ्गली जाति, स्त्री० -जारिनि, वै० बं-, बजर से (जो बंजर पर रहता हो) ? भा०-जरई,-पन ।
बनब क्रि० अ० बनना, प्रे०-नइब,-नाइब,-नवाइब, -उब ।
बनवाई सं०स्त्री० बनाने की मजदूरी, क्रिया आदि ।
बनावनि सं० स्त्री० बनावट, वै०-वरी,-उरी ।
बनिअई सं० स्त्री० बनिये का काम, कंजूसी,-करब, वै०-य-, सं० वणिक् ।
बनिआ सं० पुं० बनिया, स्त्री०-नि,-आइनि, सं० वणिक् ।
बनिआइन सं० स्त्री० बनियान ।
बनिजि सं० स्त्री० तिजारत,-करब,-होब,-व्योपार, वै०-नी-, सं० वाणिज्य ।
बनेठी सं० स्त्री० लाठी की भाँति चलाने और फिराने के लिए एक लकड़ी जिसमें तीन गिट्टक लगे होते हैं,-भाँजब ।
बनेवा वि० निःसहाय,-होब,-करब, फ़ा० बेनवः (मात्रा के विपर्यय का उदाहरण) ।
बनौनी सं० स्त्री० बनाने की मजदूरी, वै०-नउ- ।
बन्न वि० पुं० बंद,-करब,-रहब, स्त्री०-न्नि, प्र०-न्ने, -न्नौ ।
बन्नय क्रि० वि० बिलकुल, एकदम, वै०-न्नै, बनाय ।
बन्नर सं० पुं० बंदर, दे० बानर ।
बन्हन स० पुं० बंधन,-तर, छत के नीचे,-ना बान्हब, प्रबंध करना ।
बन्हवाइब क्रि० सं० बँधवाना ।
बपस सं० पु० बाप से प्राप्त (भूमि पर) अधिकार बाप+अंश ।
बपई सबो० हे पिता ! बाप को सबोधन करने का शब्द, दूसरे शब्द बापी, बापू, बाबू आदि हैं ।
बपउती स० स्त्री० बाप की जागीर, बाप का अधि-कार, विशेषाधिकार वै०-पौती ।
बपऊ सं० पुं० दरिद्र बाप, बेचारा बाप ।
बपुरा वि० पुं० बेचारा, स्त्री०-री ।

वफइब क्रि० स० वाफ से थोड़ा पकाकर नरम करना, सं० वाष्प, प्रे०-फा-,-फवाइब, वै०-उब।
वफाव क्रि० अ० भाप से आधा पक कर नरम होना।
वफारा सं० पुं० भाप की गरमी,-देव,-लेव, भाप का सेंक देना या लेना; सं० वाष्प।
ववऊ सं० पुं० वावाजी (घृ०); इससे अधिक घृ० रूप "वववा" है।
ववुर सं० पुं० ववूल,-री वन, गीतों में (प्रायः आल्हा में) वर्णित कोई प्राचीन वन,-री, ववूल की छीमी।
वव्वरी वि० पुं० तगडा,-जवान· (शेर) 'ववर' से।
वभ्भन सं० पुं० गरीव ब्राह्मण।
वभनइआ सं० स्त्री० ब्राह्मणों की वस्ती; वै० -या।
वभनई सं० स्त्री० ब्राह्मणत्व।
वभनऊ वि० पुं० ब्राह्मणों जैसा, वै०-उआ।
वमक सं० स्त्री० वमकने की क्रिया, जोश।
वमकव क्रि० अ० वमकना, जोश में कुछ कह जाना; प्रे०-काइब,-क्वाइब,-उब, भा०-वाई।
वमनवटोर सं० पुं० ब्राह्मणों का जमाव, देर तक होनेवाली बातचीत,-करब,-होव।
वम्म सं० पुं० वम, ताँगे या इक्के का वम।
वम्मई सं० स्त्री० वम्वई, वि०-इहा, वम्वई का या वहाँ रहनेवाला।
वम्मड़ वि० पुं० उजड्ड, वेढंगा भा०-ई।
वम्मा सं० पुं० पानी का नल, वै०-म्वा।
वय सं० पुं० विक्री,-करव।
वयकल वि० पुं० फूहड़, वेढङ्गा, स्त्री०-लि, भा० -ई।
वयकुंठ सं० पुं० वैकुंठ,-ठें, स्वर्ग को, स्वर्ग में; सं० वैकुंठ क्रि०-व, शालग्रामजी को वन्द करके रख देना।
वयजा सं० पुं० अंडा,अर०-ज़।
वयना सं० पुं० उपहार जो व्याह अथवा पुत्रजन्म पर बाँटा जाता है, सं०वायन।
वयपार सं० पुं० व्यापार,-करव,-री, व्यापारी; सं० व्यापार।
वयम्मर सं० पुं० वखेड़ा-होव,-गाइब,-खड़ा करव।
वयर सं० पुं० दुश्मनी, वि०-री, सं० वैर।
वयल सं० पुं० वैल, मु० मूर्ख व्यक्ति।
वयलर वि० पुं० वेढङ्गा, फूहड़, स्त्री०-रि. प्र०-ड, वै० वै-।
वयस सं० पुं० राजपूतों की एक शाखा जो पहले वैसवाड़े के अधिपति थे।
वयसवाड़ा सं० पुं० वैसवाड़ा प्रान्त जिसमें वैस-वाड़ी वोली आती है। यह उन्नाव एवं रायवरेली के आस-पास है।
वर सं० पुं० वर,-कन्या,-हेरव,-देखव,-देखा, जो वर देखने आवे, सं० वर।

वरई सं० पुं० तमोली, स्त्री०-इनि, फ़ा० वर्ग (पत्ता)।
वरकव क्रि० अ० (खेत का) कुछ सूख जाना; जोतने या गोड़ने लायक हो जाना, प्रे०-काइब,-उब।
वरखा सं० स्त्री० वर्षा,-होव, क्रि०-सव।
वरखी सं० स्त्री० वार्षिक श्राद्ध,-करव,-होव।
वरगाह सं० पुं० वैश्यों की एक जाति और उसके लोग, वै०-रि-।
वरछा सं० पुं० वर्छा; स्त्री०-छी,-मारव।
वरजव क्रि० स० मना करना, प्रायः गीतों में प्रयुक्त, दे० हरकव, वै०-रि-।
वरजोरी सं० स्त्री० जवरदस्ती, करव,-होव, वै० वारा-, गीतों में प्रयुक्त -रीं, क्रि० वि० जवरदस्ती से; फ़ा० वज़ोर।
वरत सं० पुं० व्रत,-करव,-रहव, वै० वर्त, सं०, वि०-ती,-तिहा,-तहा।
वरदव क्रि० अ० (गाय का) गाभिन होना, सं० वर्द वै०-दाव, प्रे०-दाइव,-दवाइव,-उव।
वरदही सं० स्त्री० वैलों का व्यापार या वाजार, -करव,-लागव; सं० वर्द।
वरदा सं० पुं० वैल, क्रि०-व दे० वरदव।
वरदी सं० स्त्री० वैलों का समूह।
वरन सं० पुं० प्रकार; वरन-कै, कई प्रकार के; सं० वर्ण।
वरनि सं० स्त्री० वरने (दे० वरव) की पद्धति।
वरपा वि०उत्पन्न,-होव,-करव, फ़ा०वरपा (पैर पर)।
वरफ सं० स्त्री० वर्फ़,-परव।
वरफी सं० स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
वरव क्रि० अ० जलना, प्रे० वारव, स० वटना, (रस्सी), प्रे०-राइव,-रवाइव,-उव, मु० अत्याचार करना।
वरवराव क्रि० अ० वर-वर वर-वर करते रहना, अनु०।
वरवरिहा वि० पुं० वरावरी का; स्त्री०-ही।
वरवस क्रि० वि० जवरदस्ती से।
वरवाद वि० पुं० नष्ट; स्त्री०-दि, भा०-दी;-करव, -होव, फ़ा०।
वरम सं० पुं० भूत;-लागव,-हाँकव; वि०-हा,-ही; वै०-म्ह, सं० ब्रह्म।
वरमा सं० पुं० छेद करने का औज़ार; क्रि०-मव, -इव, वरमा लगाना।
वरमौज अव्य० वरावर, मुताबिक़, अनुसार;-जें।
वरम्हा सं० पुं० ब्रह्मा, स्रष्टा; वर्मा (देश), सं० ब्रह्मा।
वरम्ही सं० स्त्री० प्रसिद्ध वूटी जिसकी पत्ती बुद्धि-वर्धक होती है। सं० ब्राह्मी।
वरर-वरर क्रि० वि० वर-वर वर-वर।
वरसव क्रि० अ० वरसना; मु० ख़ूब देना, प्रे० -साइव, उव, वै०-रि-।
वरसवानी वि० वर्षा का (नदी या कुएँ का नहीं)।

बरहना सं० पुं० एक देवता जिसकी नीच जाति के लोग पूजा करते हैं और जिसे "-बाबा" कहते हैं, फा० बरहन: (नंगा)।
बरहा सं० पुं० पानी ले जाने की पतली नाली, -बनइब,-खोदब।
बरही सं० स्त्री० जन्म के १२ दिन के बाद का उत्सव,-होब,-मनाइब।
बरहें क्रि० वि० बारहवें स्थान पर (कुंडली में)।
बरहे वि० केवल बारह।
बरहौ वि० पूरे-पूरे बारह, बारह में से प्रत्येक, -व्यंजन,-बाजन (बाजा)।
बरा सं० पुं० बड़ा (खाने का),-भात, स्त्री०-री, -रिआ (दे०); सं० बटक।
बराइब क्रि० स० बराना (रस्सी), प्रे०-रवाइब, -उब, वै०-उब, भा०-ई, बटने का तरीका।
बराति सं० स्त्री० बारात,-करब, बारात में जाना, -तें जाब, मु० पूरी जमात, बहुत से, सं० वर-यात्रा।
बराती सं० पुं० बारात में जानेवाले, वै०-रतिहा।
बराभन दे० बाभन।
बरारी सं० स्त्री० रस्सी जिससे हेंगा (दे०) बाँधा जाता है।
बराव सं० पुं० भेद, विवेक;-करब; क्रि०-इब, बे- (दे०)।
बरिआ सं० स्त्री० पकौड़ी, गुर-,मीठी पकौड़ी।
बरिआब क्रि० अ० तगड़ा होकर गर्वीली बातें करना, शक्ति दिखाना, प्रे०-वाइब, सं० बली।
बरिआर वि० पुं० तगड़ा, स्त्री०-रि, वै० यार; सं० बल।
बरिआरा सं० पुं० एक जंगली पौदा जिसका पंचांग दवा में लगता है। वै०-या-।
बरिस सं० पुं० वर्ष, यक-,दुइ-,-भर।
बरी सं० स्त्री० बड़ी (खाने की)।
बरु अव्य० बल्कि, अच्छा हो, वै० क, स० वरं म० वर, प्र०-रू, तुल० "बरु भल बास नरक कर ताता"।
बरुआ सं० पुं० ब्राह्मण का पुत्र जिसका जनेऊ न हुआ हो, सं० वटु।
बरुआर सं० पुं० डाकू, वि० डाका डालनेवाला, भा०-अरई,-अरपन,-आरी।
बरुक दे० बरु।
बरुदि सं० स्त्री० बारूद,-होब, गर्म पड़ जाना, क्रोध करना, फा० बारूद।
बरेठा स० पुं० धोबी, यह शब्द प्रायः धोबी को संबोधित करने को प्रयुक्त होता है, स्त्री०-ठिन।
बरेत स० पुं० मोटा रस्सा जिससे पानी खींचा जाता है।
बरैआ सं० पुं० बरने या बटनेवाला, दे० बरब।
बरोठा स० पुं० कोठे के कोठा-।
बरोरीं क्रि० वि० ज़बरदस्ती, हठ करके।
बरौनी सं० स्त्री० आँखों के ऊपर का बाल, वै० -रउनी, सं० भ्रू।
बल स० पुं० शक्ति; छल-, मस्तिष्क एवं शरीर की शक्ति,-लगाइब,-लागब, वि०-ली,-गर,-थक।
बलगर वि० पुं० बलवान, स्त्री०-रि, भा०-ई।
बलथक वि० पुं० जिसका बल समाप्त हो गया हो; स्त्री०-कि, भा०-ई,-होब,-करब।
बलदेव सं० पुं० कृष्णजी के भाई;-जी; सं०।
बलराम स० पुं० बलराम जी,-जी, सं०।
बलहन स० पुं० छत के नीचे की लकड़ी का क्रम; -होब, ऐसा क्रम ठीक होना,-करब, 'बल्ली' + हन (बहुवचन का चिह्न), वै०-म फा० बरहस।
बलाइब क्रि० स० बुलाना, प्रे०-वाइब,-उब, वै० -उब, भा०-लउआ।
बलिहन सं० पुं० बालवाले नाज (गेहूँ, जौ आदि), बालि (दे०) + हन।
बली वि० पुं० बलवान।
बलुआ वि० पुं० बालूवाला, स्त्री०-ई, वि०-भासर, रद्दी ज़मीन, क्रि०-ब, वै०-हा,-ही।
बलुक अव्य० बल्कि, वै०-रुक, दे० बरु, स० वर, अर० बल + फा० कि।
बलुहट सं० पुं० बालूवाली भूमि।
बलैआ सं० स्त्री० बला,-सें, बला से;-लेब, बलैया लेना, वै०-या, फा० बला (आफ़त)।
बलौआ सं० पुं० बुलावा, निमंत्रण,-देब,-आइब, वै० बो-।
बवासीर स०पुं०प्रसिद्ध रोग, वि०-सिरहा, अर०।
बवाल सं० पुं० झंझट,-करब,-होब, वि०-ली, बौवाली; वै० बौ-,-आ-।
बवैआँ सं० पुं० बाईं ओर चलनेवाला बैल, वै० -वइयाँ; सं० वाम।
बस सं० पुं० बल,-चलब,-रहब, अव्य० बस, -करब,-होब।
बसगिति सं० स्त्री० बस्ती, निवास।
बसब क्रि० अ० बसना; प्रे०-साइब,-सवाइब,-उब, सं० वस्।
बसर सं० पुं० निर्वाह,-होब,-करब, गुजर-, किसी प्रकार निर्वाह।
बसहब दे० बेसहब।
बसही सं० स्त्री० स्त्री, पत्नी वै० बे-, सं० वस् से (घर बसानेवाली) या 'बेसहब' से (क्रीता दासी)।
बसाइब क्रि० स० बसाना, प्रे०-सवाइब, वै०-उब; सं० वस्।
बसाब क्रि० अ० बदबू करना।
बसिआ वि० पुं० बासी सं० रात का रखा हुआ भोजन;-खाब,-धरब,-रहब, स० वस (रहा हुआ) दे० बासी।
बसिआब क्रि० अ० बासी हो जाना; प्रे०-इब; वै० -याब।

वसिआरि सं० स्त्री० गन्ने की पेराई एवं गुड़ की तैयारी,-नधव (दे०)-नाधव,-चलव।
वसीकरन सं० पु० एक मंत्र जिसके जपने से दूसरा वश में हो जाता है; सं० वशीकरण।
वसुला सं० पु० बसूला, स्त्री०-ली, वै० वँ-।
वसेंट सं० पु० छोटा बाँस सं० वंश।
वसेड़ सं० पु० वसेरा,-लेब, वसेरा करना, सं० वस्।
वसैया सं० पु० रहनेवाला, वसनेवाला, प्रे० -सवैआ,-या सं० वस्।
वस्ता दे० वहता।
वस्तु सं० स्त्री० चीज़ चीज-।
वहँकटी सं० स्त्री० आधी बाँह की वनयान;-पहिरब।
वहँगा सं० पु० बाँस की लक्डी जिसके दोनों ओर लटकाकर बोझ ले जाते हैं, स्त्री०-गी, क्रि० -गिआइव, वहँगे में बाँधना या ले जाना।
वहँटिआइव क्रि० अ० वहाना कर देना, टाल देना; वै०-उव।
वहँड़आ दे० वहेंड़ुआ।
वहँस सं० पु० विवाद,-करव,-होव.-सी,-वहँसा, वहुत विवाद क्रि०-व, वहुत गर्व भरी बातें करना।
बहकव क्रि० अ० वहकना प्रे०-काइव,-उव।
बहकाइव क्रि० स० वहकाना, वहलाना, काम में लगा रखना, वहाना करना, वै०-उव, प्रे०-कवाइव।
वहकौना सं० पु० बहाना,-करव,-पाइव, वै०-आ, -कावा।
वहतर सं० पु० वस्त्र, वै० वस्तर; सं० वस्त्र।
वहता सं० पु० वस्ता, फ़ा० वस्तः (बँधा हुआ)।
वहतू वि० पु० वहता हुआ वै०-ता; कहा० "रमता जोगी वहता पानी"।
वहपट वि० पु० आवारा,-होव, स्त्री०-टि।
वहव क्रि० अ० वहना; आवारा हो जाना, प्रे० -हाइव,-उव,-वाइव,-उव, सं० वह्।
वहरवाँसू वि० पु० जो वाहर रहे; वाहर+वास।
वहरिआइव क्रि० स० वाहर कर देना; वै०-उव -हि-।
वहरिआव क्रि० अ० वाहर जाना।
वहरि-वहरि! संवो० साँड़ को खदेड़ने के लिए प्रयुक्त शब्द, अर्थ है "वाहर! वाहर (जाओ)"।
वहरी दे० वाहरि।
वहरुपिया सं० पु० वहरुपिया, वै०-आ।
वहरें क्रि० वि० वाहर,-करव,-जाव;-वहरें, वाहर-वाहर, प्र०-रें।
वहलि सं० स्त्री० ढकी हुई दरवाजेदार वैलगाडी, वै०-ली।
वहाइव क्रि० स० फेंकना, प्रे०-हवाइव।
वहादुर वि० पु० वीर, स्त्री०-रि, भा०-री,-हदुरई।
वहाना सं० पु० वहाना;-करव,-वनइव।
वहार सं० स्त्री सज़ा; वि०-दार:-करव,-देव,-रहव, फ़ा०।
वहारव क्रि० स० झाड़ू लगाना, साफ़ करना; प्रे० -हरवाइव, झारव-, सफ़ाई करना, झारु-वहारु करव, सफ़ाई करना।
वहाल वि० पु० जैसे पहले रहा हो;-करव,-होव, फ़ा० व+हाल (पहली स्थिति में), भा०-ली।
वहाव सं० पु० वहने का रुख़।
वहिआ सं० स्त्री० वाढ़ -आइव, सं० वह् (वहना), वै०-या,-ढ़ि-।
वहिनि सं० स्त्री० वहिन,-नौत; सं० भगिनी।
वहिपार वि० पु० जो वाहर घूमता रहे, आवारा; स्त्री०-रि, भा०-परई. वै०-ही-; सं० वहिः।
वहिर वि० पु० वहरा, स्त्री०-रि;-सनाका, जो वहुत वहरा हो, आधा पागल, भा०-ई,-पन, क्रि० -राव, वहरा होना।
वहिरिआव क्रि० अ० वाहर निकल पड़ना; प्रे० -आइव।
वहिरी सं० स्त्री० वहिर स्त्री।
वहिरू सं० पु० वहिर पुरुष (आ०)।
वहिला वि० स्त्री० पशु जो गाभिन न हो, क्रि० -व, वहिला हो जाना, सं० वंध्या।
वही सं० स्त्री० हिसाव की वही -खाता।
वहुअरि सं० स्त्री० वहू, गीतों में प्रयुक्त (वहुअरि वैठि डोलावै वेना), सं० वधू+अरि, वरि (आदर एवं स्नेह प्रदर्शक प्रत्यय), वै०-रिया,-वरि।
वहुत क्रि० वि० अधिक, वि० संख्या में अधिक; स्त्री०-वि (तुहु-हौ, तू भी अजीव है); प्र०-तै।
वहुमत सं० पु० भिन्न मत, मतभेद;-होव, प्र०-ता, वै०-ति, सं०।
वहुरव क्रि० अ० लौटना (व्यं०), प्रे०-राइव,-होरव, -रवाइव,-उव।
वहुरा चौथि सं०स्त्री० भादों कृष्णपक्ष की चौथ जव सधवाएँ व्रत करती हैं, इस संवंध में गाय एवं शेर की एक कथा है जिसमें गाय ने "लौटकर" शेर के पास आने का वचन दिया था। "वहुरव"(दे०) से।
वहुरिआ सं० स्त्री० नई वहू, दुलहिन, वै०-या।
वहुरी सं० स्त्री० गूड़ी (दे०) जौ की लाई,-वनइव, -चवाव।
वहू सं० स्त्री० पत्नी; अमुक-, अमुक की स्त्री।
वहेंड़ सं० पुं० स्थान जहाँ से खेत का पानी बहता हो, सं० वह।
वहेंतू वि० जिसका पता-ठिकाना न हो (व्यक्ति अथवा पशु), सं० वह्।
वहेरवाँसू दे० वहर-।
वहेरा सं० पुं० एक जगली पेड़ और उसका फल जो दवा में काम आता है; हर्रा-, दो फल जो आँवले के साथ मिलकर 'त्रिफला' (दे० तिरफला) कहलाते हैं। स्त्री०-री, छोटा बहेरा।

बहेल्ला वि० पुं० जो फेंकने योग्य हो, बेकार, काहिल (व्यक्ति); स्त्री०-ल्ली; 'बहाइब' से।
बहोरब क्रि० स० लौटाना, (गोरू) देखते रहना, प्रे०-रवाइब,-उब।
बाँक सं० पुं० टँड़िया (दे०) के ऊपर पहना जानेवाला स्त्रियों का एक आभूषण,-बिजायठ।
बाँका स० पुं० एक प्रकार की कुल्हाड़ी, स्त्री०-की, वि० बढ़िया, स्त्री०-की।
बाँचब क्रि० स० पढ़ना, प्रे० बँचवाइब,-चाइब, -उब, सं० वच्।
बाँझ वि० पुं० जो संतति उत्पन्न न कर सके, (पेड़) जिसमें फल न लगें, स्त्री०-झि, सं० वन्ध्या।
बाँठ सं० पुं० बटवारा,-बखरा, हिस्सा; क्रि०-ब, बाँटना।
बाँटब क्रि० स० बाँटना, प्रे० बँटाइब,-टवाइब, -उब।
बाँठा वि० पुं० बहुत छोटे कद का, स्त्री०-ठी, घृ० बठुल्ला,-ल्ली, बँठऊ सं० वामन, बटुक।
बाँडा वि० पुं० जिसकी दुम कटी हो, स्त्री०-डी; घृ० बँडुल्ला,-ल्ली।
बाँह सं० स्त्री० हाथ, वै०-हि, एक बार की जुताई, यक-, दुइ-; सं० वाह।
बाइब क्रि० स० खोलकर (मुँह) चौड़ा करना; प्रे० बवाइब,-उब।
बाइस वि० सं० बाईस, बइसवाँ, २२वाँ,-सई, २२वीं।
बाई सं० स्त्री० वायु का प्रकोप,-पचब, गर्व मिटना, -पचाइब, गर्व मिटाना।
बाउर वि० पुं० मूर्ख, स्त्री०-रि, हि० बावला, क्रि० बउराब (दे०)।
बाउस सं० पुं० पुरुषार्थ, शक्ति; वै० बउसाब, -पुरइब।
बाकस सं० पुं० बकस, अं० बक्स।
बागडबिल्ला सं० पुं० बेढंगा व्यक्ति, स्त्री०-ल्ली।
बागि सं० स्त्री० बाग, ल० बगिआ, फा० बाग।
बाघ सं० पुं० शेर; बहादुर व्यक्ति, सं० व्याघ्र, क्रि० बघुआब, गुर्राना।
बाघी सं० स्त्री० पशुओं का एक घातक रोग जो कभी-कभी मनुष्यों को भी हो जाता है।
बाऊड़ वि० बेढगा।
बाछ सं० पुं० चंदा, क्रि०-ब,-लगाइब, चंदा करना।
बाछा सं० पुं० बछड़ा, स्त्री०-छी, बछिआ, वै० बछवा, स० वत्स।
बाज सं० पुं० बाज (पक्षी) वि० कोई-कोई, एकाध, स्त्री०-जि।
बाजडा सं० पुं० बाजरा, स्त्री०-डी, वै० बज-।
बाजन सं० पुं० बाजा, बरहौं-बाजब, सभी प्रकार की दुर्दशा होना, वै० बजना।
बाजब क्रि० अ० लड़ना व बजना, प्रे० बजाइब, -जबाइब,-उब, दे० बजनी।
बाजा सं० पुं० बाजा;-बजाइब, मु० नाचि-होब, तमाशा (झगड़ा) होना।
बाजी सं० स्त्री० बाजी,-लगाइब,-जीतब,-हारब; फा०।
बाजीगढ सं० पुं० बाजीगर, भा०-ई, फा०।
बाजू सं० पुं० बाँह पर पहना जानेवाला स्त्रियों का एक आभूषण,-बंद।
बाझब क्रि० अ० फँस जाना; वै० ब-, प्रे० बझाइब -झवाइब,-उब।
बाढ सं० पुं० वृद्धि,-बियास, वृद्धि एवं विकास; क्रि०-ब, सं० वृध्।
बाढ़ब क्रि० अ० बढ़ना, प्रे० बढ़ाइब,-उब, सं० वृध्।
बाढि सं० स्त्री० बढ़ा भाव, जल की अधिकता, घाटि-, कम या अधिक भाव, आइब, बाढ़ आना, सं० वृद्धि।
बाधवाई क्रि० वि० व्यर्थ,बेकार।
बान सं० पुं० बाण,-लागब,-मारब, सं० बाण।
बानक सं० पुं० तरकीब, उपाय,-लागब,-लगाइब; सं० बाण।
बानगी सं० स्त्री० नमूना,-देब,-लेब।
बानर सं० पुं० बदर; स्त्री० बनरिन,-री, सं०।
बाना सं० पुं० एक पौदा जो दूसरे पेड़ों पर उगता है। इसकी गीली लकड़ी भी आग में जलती है।
बानी सं० स्त्री० बचन, बोल, सं० वाणी।
बान्ह सं० पुं० बाँध, पुल,-बान्हब, बाँध बाँधना, सं० बन्ध।
बान्हब क्रि० स० बाँधना, प्रे० बन्हाइब -न्हवाइब, -उब; सं० बंध।
बाप स० पुं० पिता, वै०-पी,-पू, बपई (प्रेम सूचक एव संबो० में), मु०-कै बाप, बहुत बड़ा।
बाफ सं० स्त्री० भाप, क्रि०-ब, बफाब, भाप में गरम होना या पकना, वै०-फि, सं० वाष्प।
बाफब क्रि० अ० बाफ देना, प्रे० बफाइब,-फवाइब, -उब, स० वाष्प।
बाबति सं० स्त्री० विषय, सबंध, अ० बाब (द्वार)।
बाबरी सं० स्त्री० सिर के आगे रखे हुए बड़े बड़े बाल, दे० जुलफी,-राखब,-रखाइब, अर० बब्र (बालदार शेर) बँ० बाबरी, चूल।
बाबा सं० पुं० पितामह, (स्त्री का) ससुर, स्त्री० दाई, कुछ शब्दों के साथ आदर के लिए जोड दिया जाता है। उदा० साधू-,-गुरु; फा०।
बाबू सं० पुं० राजा का छोटा भाई, अपने से बड़े के लिए प्रयुक्त सबोधनार्थ शब्द; नामों के पहले प्रयुक्त आदर प्रदर्शक शब्द फा० बा (सहित) + बू, सुगध, स्त्री० बबुई, बबुनी, लघु० बबुआ।
बाभन सं० पुं० ब्राह्मण, स्त्री०-नि, वै० दरा-,ग्रा-, -बिसुन, दान का पात्र-,गऊ,बरा-,हिंदुत्व के दो मुख्य अंग, सं० ब्राह्मण।
बाम सं० पुं० एक प्रकार की मछली।

बामकी सं० स्त्री० भविष्य जानने या अद्भुत बातें बताने की विद्या;-पढ़ब,-जानब।
बायें क्रि० वि० बाईं ओर, दहिने-, दोनों ओर; तुल० "जे बिन काज दाहिने बायें।"
बार सं० पुं० बाल;-बनइब, हजामत बनाना;-बन-वाइब,-उतारब, छोटे बच्चों का मुंडन कराना; मु०-बार बचना बाल-बाल बचना।
बारब क्रि० स० बालना, जलाना: दिया-, चूल्हा-, प्रे० बराइब,-रवाइब,-उब।
बारह सं० वि० दस और दो.-मास, सालभर,-मासी, सालभर होने वाला (फल, फूल)।
बारहाँ क्रि० वि० कई बार; फा०-हा।
बारा सं० पुं० बाड़ा; सुअर-,सुअरों केरखने का घर; वँ० बाड़ी।
बारिस सं० स्त्री० वर्षा,-होब; फा०।
बारी सं० पुं० दूसरों की सेवा करनेवाली एक जाति, नाऊ-, नौकर-चाकर।
बारी सं० स्त्री० पारी;-बारी, एक एक करके; किनारा (बर्तन का); दे० पारी; कान में पहनने का छल्ला।
बारीक वि० पुं० उम्दा (-चादर); स्त्री०-कि, पतली (-धोती); फा०, भा०-की, बरिकई।
बालब क्रि० सं० छोटे छोटे टुकड़े करना; प्रे० बला-इब,-उब; मु० सिर काट लेना, मार डालना।
बालभोग सं० पुं० भगवान का भोजन।
बालम सं० पुं० पति, प्रियतम; सं० वल्लभ; गीतों में प्रयुक्त वै० बलमा,-मू,-सा,-मवा।
बाला सं०पुं० बहुत सा बालू (रास्ते में).-परब, कुएँ में बालू निकलना;-होब, सड़क पर बालू होना।
बालि सं० स्त्री० (नाज की) बाल।
बालिक वि० पु० बालिग, जवान,-होब; ना-, छोटा; अर०।
बालू सं० पुं० बालू, रेत; सं० बालुका।
बालूचर सं० पुं० चिलम पर पीने का एक नशा।
बालूसाही सं० स्त्री० प्रसिद्ध मिठाई।
बालेमियाँ सं० पुं० मुसलमानों के एक पीर, कहा० एक हाथ कै बालेमियाँ नौ हाथ कै पूँछि।
बावँ सं० पुं० बायाँ-देब, बचा जाना, तितीक्षा करना.-दाहिन, उलटा सीधा, ऊँचा-नीचा, वै०-वाँ.-उँ; सं० वाम।
बावना दे० बौना।
बावाँ वि० पुं० बायाँ, बायें तरफ चलने वाला बैल स्त्री०-ईं।
बास सं० स्त्री० बू, बदबू,-माइब; क्रि० बसाब, बासब।
बासन सं० पुं० बर्तन: तुल० लेहि न-बसन चोराई।
बासठि वि० सं० बासठ, सं० द्वि+षष्ठि।
बासब क्रि० स० फूल रखकर सुगंधित करना (कपड़ा, कत्था आदि); प्रे० बसाइब।
बाह अव्य० शाबास.-बाह, बाह-बाह -बाही, अधिक प्रशंसा।
बाहब क्रि० स० (पशु का) मैथुन करना; सं० बाह (घोड़ा एवं बैल)।
बाहरि सं० स्त्री० सींचने के पानी को नीचे से ऊपर ले जाने का मार्ग।
बाहा सं० पुं० छोटा नाला, पानी बहने का मार्ग सं० वह।
बाहीं सं० स्त्री० खेत का वह टुकड़ा जो एक बाहा (दे०) से सींचा जाय, सं० बाहु।
बाहुक सं० पुं० लकड़ी का खम्भा जो मकान की छत को सँभालने के लिए लगाया जाता है, वै०-हू, सं० बाहु।
बिंग सं० पुं० व्यंग,-बोलब, सं० व्यङ्ग।
बिंड़िआइब दे० बींडा।
बिंचि सं० स्त्री० बेंच, अं०।
बिंजन सं० पुं० व्यंजन, बरहौ-,कई प्रकार के पक-वान: सं० व्यंजन।
बिंदी सं० स्त्री० बिंदी;-धरब, बिंदु रखना; -लगाइब, मत्थे में बिंदी लगाना, अक्षर के ऊपर बिंदु देना: सं० बिंदु।
बिउरब क्रि० स० (बालों को) एक-एक करके साफ करना; प्रे०-रवाइब,-राइब,-उब।
बिकब क्रि० अ० बिकना; वै०-काब, प्रे०-चाइब, बेचब,-चाइब; सं० वि+क्री।
बिकल वि० पुं० बेचैन,-होब,-रहब, स्त्री०-लि, वै० बे-।
बिकिनब क्रि० स० बेचना; बेचब-, व्यापार करना, सं० वि०+क्री, वँ० कीन।
बिक्रिरी सं० स्त्री० बिक्री,-होब,-करब।
बिख सं० पुं० विष-देब,-खाब,-करब, लड़कर विषाक्त कर देना, वि०-हा, सं० विष।
बिखड़ब क्रि० अ० क्रुद्ध होना; प्रे०-ड़ाइब,-उब, सं० विपरण।
बिखरब क्रि० अ० बिखर जाना प्रे०-रवे-, -राइब।
बिगड़ब क्रि० अ० बिगड़ना, नाराज होना· प्रे० -गाड़ब,-ड़ाइब,-उब; भा०-गाड़,-गड़ी-बिगड़ा, नाराज़गी।
बिगर अव्य० बिना, वै० बे- फा० बग़ैर।
बिगवा सं० पुं० भेड़िया; वै० बीग; सं० वृक।
बिगहा सं० पुं० बीघा, चक-, दुइ-।
बिगाड़ सं० पुं० वैमनस्य,-करब,-होब,-रहब; क्रि० -ब।
बिगाड़ब क्रि० स० नष्ट करना सम्बन्ध खराब कर देना, प्रे०-गड़ाइब,-गड़वाइब,-उब।
बिचऊपुर सं० पु० बीच का स्थान काल्पनिक स्थान जो न इधर हो न उधर; अनिश्चित स्थान; -में रहब, अंत तक न पहुँच पाना।
बिचकब क्रि० अ० बिचकना प्रे०-काइब,-उब।
बिचका वि० पुं० बीचवाला; स्त्री०-की, वै०-का।

बिचकाइब क्रि० स० टेढ़ा कर देना, मुँह-, घृणा या द्वेष से मुँह टेढ़ा करना।
बिचखोपड़ा सं० पुं० एक विषैला जंतु जो बड़ी छिपकली सा होता है। वै० स-।
बिचरब क्रि० अ० विचरना, घूमना, सं० वि+चर।
बिजायठ सं० पुं० ऊपर बाँह पर पहनने का एक आभूषण।
बिजुली सं० स्त्री० बिजली, स० विद्युत्।
बिजै सं० स्त्री० निमंत्रण का बुलावा,-देब,-पठइब, -आइब,-कहवाइब, सफलता,-होब,-करब, स० विजय।
बिटिआ सं० स्त्री० बेटी, घृ०-हिनी,-टुहनी,-यस, नामर्द की भाँति,-बेटारौ, स्त्रियाँ,-बेटवा।
बिड़मना सं० स्त्री० निंदा,-होब,-करब, सं० विडंबना, वै०-ट-।
बिड़र सं० पुं० बिरला, अलग-अलग, दूर-दूर (पेड़-पौदे);-बिड़र, दूर दूर (बोना, लगाना); स्त्री०-रि, क्रि०-राब, प्र०-रै, स० बिरल।
बिड़राब क्रि० अ० अलग अलग या दूर दूर हो जाना, भग जाना, प्रे०-राइब,-उब।
बिड़वा सं० पुं० पुआल का बना हुआ गोल छोटा मोढ़ा, सं० बेष्ठ, दे० बींड़ा।
बिढ़इब क्रि० स० कमाना, व्यं० खो देना, प्रे० -ढ़वाइब।
बिढ़ता सं० पुं० कमाया हुआ (अन्न, धन आदि), -खाब, कमाई खाना।
बितइब क्रि० स० बिताना, वै०-ताइब,-उब, प्रे० -तवाइब, सं० व्यतीत।
बित्ता सं० पुं० बीता, हाथ भर का आधा,-भर कै, बहुत छोटा (व्यक्ति)।
बिथुरब क्रि० अ० बिखरना, प्रे०-थोरब,-थुराइब।
बिदखोरब क्रि० स० खोद या कुरेद कर खराब करना, प्रे०-खोराइब,-उब।
बिदबिदाब क्रि० अ० घृणित सूरत का हो जाना, इधर उधर पड़ा रहना, प्रे०-दाइब।
बिदा सं० स्त्री० बिदाई,-करब,-होब, नष्ट होना, संसार से जाना, सं०।
बिदुर सं० पुं० महाभारत काल के प्रसिद्ध भक्त, -जी,-नीति।
बिदुरब क्रि० अ० टेढ़ा हो जाना (ओंठ); प्रे० -दोरब।
बिदोर वि० पुं० मूर्ख देखने में मूर्ख, चतुर-बिदोरवा, जो देखने में मूर्ख, हो पर चतुरता के कारण मूर्खता करे।
बिदोरब क्रि० स० टेढ़ा करना (मुँह, ओंठ), प्रे० -रवाइब,-उब।
बिधंस सं० पुं० विध्वंस,-करब,-होब, नष्ट करना, नष्ट होना, क्रि०-ब, सं० विध्वंस।
बिधना सं० पुं० ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता, स० विधि।
बिधवाँ सं० स्त्री० विधवा;-होब।
बिधाँ क्रि० वि० विधि से, भाँति, कउनिउ-, किसी प्रकार; प्र०-द्धाँ; सं० विधि, वै०-धीं।
बिधि सं० स्त्री० प्रणाली, तरीका; घर-, घर का सा आराम,-सें, अच्छी तरह,-बैठब, सब कुछ ठीक हो जाना,-बइठाइब, सब कुछ ठीक कर देना, सं०।
बिधीं दे० बिधाँ, वै०-धें।
बिधुआब क्रि० अ० हठ करते रहना, मचलना, प्रे०-वाइब।
बिन अव्य० बिना, बगैर; सं० विना।
बिनइब क्रि० स० बिनती करना, प्रार्थना करना, वै०-उब, सं० विनय।
बिनउठा दे० बेनउठा।
बिनउर सं० पुं० ओला, स्त्री०-री,-परब,-गिरब, वै० बे-।
बिनकर सं० पुं० बिनने वाला, कपड़ा बीनने वाला; भा०-ई।
बिटिया सं० स्त्री० बेटी, वै०-आ, कहा०-चमार की नाँव रजरनियाँ; घृ०-हिनी, पुं० बेटवा।
बिनती सं० स्त्री० प्रार्थना,-करब।
बिनय सं० स्त्री० विनय,-करब; सं०।
बिनवट सं० पुं० बिनावट, फरी-गतका की तरह का एक खेल।
बिनसब क्रि० अ० (दूध) फटना, बदबू करना, सं० वि+नश् (नष्ट होना)।
बिना अव्य० बिना, सं०।
बनाइब क्रि० स० बुनाना, प्रे०-नवाइब।
बिनावट सं० स्त्री० (खाट आदि के) बुनने का तरीका।
बिनास सं० पुं० विनाश,-होब,-करब, स०।
बिनिआ सं० स्त्री० (अन्न) बीनने का समय; कटिआ-, फसल काटने एवं खेत में गिरे हुए अन्न के बीनने का समय,-करब।
बिनु अव्य० बिना, प्रायः गीतों में प्रयुक्त, सं० विना।
बिनुआ वि० पुं० बीना हुआ (कंडा), जो जंगल से बीना गया हो (पाथा न गया हो); ऐसे कंडे से औषधि तैयार करने में विशेष महत्व माना जाता है। हाथ से पाथे हुए कंडे को "पथुआ" कहते हैं।
बिनैआ सं० पुं० बीनने वाला, प्रे०-नवैआ, वै० -या।
बिनौरी स० स्त्री० छोटे छोटे ओले के पत्थर, दे० बिनउर।
बिपता सं० स्त्री० विपत्ति, दे० बिपति, वै०-दा, जेहि पर बिपता परति है सो आवै यहि देस (रहिमन)।
बिपति सं० स्त्री० विपत्ति;-काटब,-परब,-भोगब, -आइब, वि०-हा, सं० विपत्ति, बिपति बराबर सुख नहीं...।

विवरा सं० पुं० बुवाई समाप्त होने पर छोटे बच्चों एवं हलवाहों को दिया गया अन्न;-लेव,-पाइव, -देव मै० सुठिया।
विवस वि० पुं० वेवस स्त्री०-सि; भा०-ई, सं० विवश।
विमउट सं० पुं० पृथ्वी के नीचे बनाया हुआ साँप आदि जंतुओं का घर या उसके ऊपर का भाग, वै० वे-, व्य-,-टा।
विमरस सं० पुं० रोष, विमर्ष;-करव, होव वै० वे-; सं० विमर्ष, दे० अमरख।
विमल वि० पुं० साफ।
वियहव क्रि० स० व्याह करना -दानव।
विया सं० पुं० बीज, प्र० बी-, वै०-आ;-छोड़व, -डारव, सं० बीज।
वियाड़ वि० पुं० जिसके भीतर का बीज पक्का हो गया हो स्त्री०-ड़ि -ड़ा, (खेत) जिसमें जड़हन का बिया बोया जाय, वै०-र, नै० वियाड़, पं० बिआड़, गु०-ड़ु।
वियाधा दे० व्याधा।
वियाधि सं० स्त्री० रोग, -होव; सं० व्याधि।
वियाव क्रि० अ० बच्चा देना, सं० जन्म देना; प्रे० -यवाइव,-उव; 'विया' से।
वियास सं० पुं० वृद्धि; वाढ़ि-, क्रि०-व, बढ़ना, शाखायें फेंकना; सं० व्यास।
वियाह सं० पुं० व्याह;-करव,-होव, सं० विवाह, क्रि०-वियहव (दे०), वि०-हा,-ही।
विरई सं० स्त्री० पौदा, जड़ीबूटी. दे० विरवा, अरई-, अरई-विरवा।
विरकुल क्रि० वि० बिलकुल, सारा; प्र०-लै,-ल्लै विलकुल।
विरछा सं० पुं० वृक्ष वै०-रिछ,-छा -तर वृक्ष के नीचे,-लगाइव कवने विरिछ तर भीजत ह्वै हैं रामलखन दुनौं भाय ? सं० वृक्ष।
विरता दे० विरता।
विराति सं० स्त्री० बहुत रात, विलंब;-करव,-होव सं० वि + रात्रि।
विरथा वि० व्यर्थ,-करव,-जाव,-होव सं० व्यर्थ।
विरधा सं० पुं० वृद्ध वि० अधिक आयु का, सं० वृद्ध, भा०-ई,-पन।
विरन सं० पुं० भाई, प्रियबंधु,-भैया,-ना (गीतों में), वीरन (दे०)।
विरमाइव दे० विलम्हाइव।
विरवा सं० पुं० पौदा, स्त्री०-ई; अरई-,जड़ीवूटी।
विरह सं० पुं० भीतर का दुःख; व्यंग -बोलव, व्यंग कसना वि०-ही, जिसे विरह हो, सं०।
विरहा सं० पुं० एक सर्वप्रिय गीत जिसे प्रायः अहीर गाते हैं। इसमें अधिकांश प्रेम कथा होती है; सं०।
विरहिनि सं०स्त्री० स्त्री जिसका पति या प्रेमी दूर हो; गीत एवं कविता में प्रयुक्त, सं० विरहिणी।
विरही सं० पुं० पुरुष जिसकी प्रेमिका या पत्नी दूर हो; सं०।
विराइव क्रि० स० मुँह बनाकर चिढ़ाना, वै० -उव।
विराग दे० विरोग।
विराजव क्रि० अ० शोभित होना।
विराना वि० पुं० दूसरा स्त्री०-नी; वै० वे-।
विरिआ सं० स्त्री० कानों में पहनने का आभूषण; वै०-या।
विरिछ दे० विरछा।
विरोग सं० पुं० हार्दिक दुःख;-करव,-होव,-सें।
विर्ति सं० स्त्री० दान में दी हुई भूमि,-पाइव, -मिलव,-देव. दे० अविर्ति -दार, जिसे विर्ति मिली हो सं० वृत्ति।
विर्धि सं० स्त्री० वृद्धि;-करव,-होव।
विलकव क्रि० अ० निःसहाय होकर रोना, दुःखी रहना; प्रे०-काइव,-उव वै०-खव।
विलग वि० पुं० पृथक्;-होव; अलग-।
विलगाइव क्रि० स० (द्रव को) पृथक् करना, अलगाइव-, लोगों को अलग करना; दे० अलगी-विलगा।
विलटव क्रि० अ० उलट जाना, नष्ट हो जाना; प्रे०-टाइव,-टवाइव।
विलनी सं० स्त्री० एक उड़ने वाला कीड़ा जो मिट्टी का घर बनाता है, आँख के किनारे होने वाली छोटी फुंसी।
विलपव क्रि० अ० रोना, विलाप करना, कविता में प्रयुक्त सं० वि + लप् (विलाप)।
विलविलाइव क्रि० स० 'विल-विल' कहना, (विल्ली को) भगाना।
विलविलाव क्रि० अ० रोते रहना; दुःख से जीवन काटना।
विलम सं० स्त्री० देर -करव,-होव, क्रि०-म्हाइव, सं० विलंव।
विलम्हाइव क्रि० स० फँसा रखना; (प्रेमी को) रोक रखना वै०-उव, सं० विलंव।
विललाव क्रि० अ० विपत्ति में रहना, दुःखी जीवन विताना।
विलल्ला वि० पुं० बेढंगा, स्त्री०-ल्ली, वै० वे-।
विलवाइव क्रि० स० नष्ट करना, नाश होने में सहायता करना; वै०-उव, सं० वि + लय।
विलसव दे० वेलसव।
विलाइति सं० स्त्री० विलायत, वि०-ती फा० वलायत।
विलान वि० पुं० नष्टप्राय; स्त्री०-नि,-पुरी, गया-बीता:-नी हाल, गई बीती दशा में भी।
विलाप सं० पुं० रोना,-करव; सं०।
विलाव क्रि० अ० नष्ट होना; प्रे०-लवाइव,-उव, सं० वि + ली।
विलारा सं० पुं० विल्ला।

बिलारि सं० स्त्री० बिल्ली,-यस, छोटा एवं चुप्पा (व्यक्ति)।
बिलारी सं० स्त्री० दरवाजे को भीतर से बंद करने की लकड़ी की सिटकिनी;-देब,-मारब, दरवाजा भीतर से बंद करना।
बिलि सं० स्त्री० बिल;-करब,-खोदब; सं० बिल।
बिलिया सं० स्त्री० छोटा सा मिट्टी का पात्र, दे० मलिया; वै०-आ।
बिलिर-बिलिर क्रि० वि० सिसक-सिसक कर बराबर आंसू बहाते हुए (रोना)।
बिलैक सं० पुं० चोरबाजार; अं० ब्लैक।
बिलौटा सं० पुं० बड़ा बिल्ला।
बिल्टी सं० स्त्री० पार्सल की रेल रसीद,-आइब -लेब,-पठइब।
बिसकब दे०-सु-।
बिसकरमा सं० पुं० विश्वकर्मा; वि० बड़ा चतुर, सं०।
बिसखोपरा दे० बिष-।
बिसगरभ सं० पुं० विषगर्भ तेल, स०।
बिसरब क्रि० अ० भूल जाना, प्रे०-सारब, सं० वि+स्मर।
बिसरवाइब क्रि० स० भुला देना; वै०-उब।
बिसार, सं० पुं० नाज उधार देने की पद्धति जिसमें दिये हुए नाज का सवाया लिया जाता है; डेढ़ी-बिसार, जिसमें ड्योढ़ा लौटाया जाय,-देब,-लेब, -काढ़ब, भा०-सरही, बिसार देने का व्यापार।
बिसाहिन वि० मछली की सी बू वाला,-आइब, ऐसी बू आना, वै०-सहिना, अं० फिश।
बिसुकब क्रि० अ० दूध देना बंद कर देना (पशु का), प्रे०-काइब,-उब, सं० शुष्क।
बिसेंडी सं० स्त्री० व्यंग भरी हुई बात,-बोलब, सं० विष।
बिसेख सं० पुं० विचित्र प्रभाव, अद्भुत बात, -मानब,-होब, सं०-शेष, क्रि०-खब, पगला जाना, स० विक्षिप्।
बिसेन स० पुं० क्षत्रियों की एक जाति।
बिसेस वि० पुं० विशेष; स्त्री० सि, सं०।
बिस्टा सं० पुं० गू,-खाब, बुरा काम करना, स०।
बिस्नु सं० पुं० विष्णु-भगवान, वै०-सुन, सं०।
बिस्नेनम. स० पुं० दान;-करब, दान दे डालना, सं० विष्णवेनमः।
बिस्वास सं० पुं० विश्वास,-करब,-होब,-रहब, वि०-सी, वै०-स्सास।
बिस्सा स० पुं० बिस्वा, मु० सो-स्सा, बहुत संभव है,-बिगहा, भूमि का माप।
बिहँसब क्रि० अ० प्रसन्न होकर हँसना, खुश होना, स० वि+हस।
बिहुइआ सं० स्त्री० छिरकनी,-यस, छोटा सा।
बिहुर वि० दूर, ओझल, आँखा से-,-करब, -होब।

बिहनैं क्रि० वि० कल ही,-भर, दूसरे ही दिन, दे० बिहान।
बिहफै सं० पुं० बृहस्पति (दिन),-फैया, स्त्री० बृहस्पति तारा, सं० बृहस्पति।
बिहवल वि० पुं० विह्वल, स्त्री०-लि,-होब,-करब, -रहब, सं०।
बिहरब क्रि० अ० विहार करना, मज़े उड़ाना; प्रे० -राइब, प्र०-इ-,सं० वि+हृ।
बिहाग सं० पुं० प्रसिद्ध राग, सं० वि-।
बिहान सं० पुं० प्रातःकाल;-होब;-करब; "साँझे धनुख बिहानें पानी"।
बिहार सं० पुं० आनन्द,-करब; प्र०-ड, सं०।
बिहाल दे० बेहाल।
बिहीदाना सं० पुं० एक औषधि।
बिहून वि० पुं० देखने में भद्दा, मूर्ख, स्त्री०-नि; वै० बे-।
बींडा दे० बिंड़वा, स्त्री०-ड़ी, छोटा बंडल (रस्सी का); क्रि० बिड़िआइब, रस्सी का बंडल बनाना, दे० बिड़वा।
बीग दे० बिगवा।
बीच सं० पुं० मध्य,-चें, बीच में, बिचवैं; बीच में ही,-बिचाव, मध्यस्थता, रोकथाम।
बीछी सं० स्त्री० बिच्छू, प्र० बिच्छी,-मारब; पुं० -छा, बिच्छा, बहुत बड़ा बिच्छू, सं० वृश्चिक।
बीज दे० बिया।
बीजू वि० बीज से उत्पन्न (कलम न किया हुआ, आम आदि)।
बीड़ी सं० स्त्री० बींड़ी, दे० बरई, बीरा, फ़ा बर्ग (पत्ती)।
बीतब क्रि० अ० बीतना, प्रे० बितइब,-ताइब,-उब, वै० बितब, सं० व्यतीत।
बीदुर सं० पुं० मुँह का कृत्रिम टेढ़ापन,-काढ़ब, क्रि० बिदुराब, वि० बिदोर (दे०), जिसके 'बीदुर' हो।
बीन सं० पुं० एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता है; सं० वीणा।
बीनब क्रि० स० बीनना, चुनना, बेल-,मारे-मारे फिरना, कातब-,कातना बुनना, प्रे०बिनाइब,-नवा-, सं० वृण।
बीन्हब क्रि० स० बींधना, काट लेना, प्रे० बिन्ह-वाइब,-उब, सं० विध्।
बीया दे० बिया।
बीर वि० पुं० बहादुर,-बाँकुड़ा।
बीरन स० पुं० प्यारा भाई (बहिनों द्वारा प्रयुक्त), गीतों में "बिरन,बिरना, रिरन भैया", दे० बिरन, सं० वीर।
बीरा सं० पुं० बीड़ा,-जोरब,-जोराइब,-कूँचब, -उठाइब, तैयार होना।
बीस वि० सं० बीस, प्र०-सें,-सों,-न,-योंं,-सी, बीस का एक बंडल, यक बीसी, दुइ-।

बीहड़ वि० सं० लंबा चौड़ा एवं मजबूत (व्यक्ति, वस्तु), स्त्री०- ड़ि; भा० बिहड़ई,-पन।
बुँचवा वि० पुं० बूँचा।
बुँदेला दे० बुनेला।
बुआ सं० स्त्री० बाप की बहिन, वै० बू-,-वा, फु-, फू-।
बुकनी सं० स्त्री० बूका (दे० बूकब) हुआ पदार्थ, सफूफ,-बुकाइब, फाँकना।
बुकला दे० बोकला।
बुकवा सं० पुं० उबटन,-लागब,-लगाइब, तेल-,-सेवा;-होब,-करब; 'बूकब' से (बूका, हुआ पिसा हुआ)।
बुकवाइब क्रि० स० बूकने के लिए कहना, पिट वाना. वै०-उब।
बुकाइब क्रि० स० फाँक लेना: सं० बुक्का (दे० बूक)।
बुखरहा वि० पुं० जिसे बुखार आया हो; स्त्री० -ही; फ़ा० बुखार+हा।
बुखार दे० बोखार।
बुजरी वि० स्त्री० निर्बल, नालायक, दु-, भगु-, आ०-री, बुरि+जरी (दे० बुड़जरी); वै०-जारि. फटकार एवं गाली के ही लिए प्रयुक्त।
बुजरुग वि० वृद्ध, वै०-क; भा०-गी,-की।
बुज्जा सं० पुं० बलबुला,-छोड़ब; क्रि०-जबुजाव, बुज्जा देना, होना।
बुझउवलि सं० स्त्री० पहेली, वै०-अलि,-झौवलि।
बुझवाइब क्रि० स० बुझाना, बूझने में सहायता देना।
बुझाइब क्रि० स० बुझाना, बूझब (दे०) का प्रे०, समझाइब-, संतोष दिलाना, समझाना।
बुझारति सं० स्त्री० संतोष,-करब,-होब।
बुटवलि सं० स्त्री० प्रसिद्ध स्थान जो नैपाल में है और जहाँ के संतरे अच्छे होते हैं। दूर की जगह, दे० मुलतान।
बुट्टब क्रि० स० उड़ा देना, लेकर भाग जाना, प्रे० -ट्टवाइब,-ट्टि जाब, गायब हो जाना,-लेब, गायब कर देना।
बुड़जरी सं० स्त्री० नालायक स्त्री, वै०-र- (बुरि+जरी, जिसकी योनि जल गई हो), दे० बुजरी।
बुड़वाइब क्रि० स० डुबो देना, दे० बूड़ब, वै० -ड़ाइब।
बुड़ानि सं० स्त्री० स्थान जहाँ डूबने भर को पानी हो,-होब,-रहब, वै०-व. 'बूड़ब' से।
बुड़ाव सं० स्त्री० (व्यक्ति विशेष के) डूबने भर का पानी.-ठे [illegible] 'बूड़ब' से।
बुड़ुअ [illegible] भीतर नीचे तक डूब कर। [illegible] ०-वा।
बुड़ुक [illegible]।
बुढ़क [illegible], बूढ़ा (फ़ा०) [illegible]
बुढ़नाब क्रि० अ० (अंग का) ठंढ से ठिठुर जाना।
बुढ़भस सं० पुं० बुढ़ापे के दुर्गुण।
बुढ़ाब क्रि० अ० बुड्ढा होना।
बुढ़िआ सं० स्त्री० बूढ़ी स्त्री,-अऊ,-यऊ (आ० रूप)।
बुतवाइब क्रि० स० बुझाने में सहायता देना, वै०-उब।
बुताइब क्रि० स० बुझाना (दीया अथवा आग), प्रे०-वाइब, वै०-उब।
बुताति सं० स्त्री० (खाने पीने का) सामान,-देब।
बुताब क्रि० अ० बुझना, शांत होना, प्रे०-ताइब, -उब,-तवाइब;-न, शांत, बुझा हुआ;-रहब शांत रहना-"जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना"।
बुत्त सं० पुं० मूर्त्ति; वि० चुपचाप, शांत,-होब, -रहब; फा० बुत।
बुत्ता सं० पुं० प्रोत्साहन;-देब।
बुदबुदाब क्रि० अ० बुदबुद करना; पकते रहना।
बुदुर-बुदुर सं० पुं० चूने की आवाज;-रोइब, आँसू चुवा चुवाकर रोना।
बुद सं० पुं० गिरने का शब्द,-सें;-बुद, धीरे-धीरे और एक एक करके (गिरना)।
बुद्ध सं० पुं० बुधवार।
बुद्धि सं० स्त्री० अक्ल,-रहब,-होब; वि०-मान; वै० -धि, सं०।
बुद्धू वि० मूर्ख, भा०-पन,-पना।
बुधि दे० बुद्धि, कहा० सिखई बुधि उपराजी माया।
बुनका सं० पुं० बिंदी, बूँद; स्त्री०-की,-धरब सं० बिंदु।
बुनिआ सं० स्त्री० बुँदिया; एक प्रकार की मिठाई, जिसमें छोटे गोल दाने चाशनी में मीठे किये जाते हैं-क लड्डू; सं० बिंदु; वै०-या।
बुनिआब क्रि० अ० बूँद पड़ना; बरसना; सं० बिंदु; दे० बूनी, बून।
बुनेला वि० बढ़िया; यह शब्द दोनों लिंगों में एक सा ही रहता है बुंदेलों की वीरता का इतिहास इसमें छिपा है।
बुमुआब क्रि० अ० चिल्लाना, पशु की भाँति क्रंदन करना: बूँ बूँ करना; वै० बुँबु-।
बुरा वि० पुं० खराब: भा०-ई,-करब,-बनब, बुरा हो जाना: स्त्री०-री, कबीर—बुरा जो देखन मैं चला ..।
बुरि सं० स्त्री० योनि;-मारी,-चोदी,-माँ, गाली देने के (स्त्रियों को) शब्द जो पुरुष प्रयोग करते हैं।
बुलाइब दे० बोलाइब।
बुल्ला सं० पुं० बुलबुला (पानी का); सं० बुदबुद।
बुवा दे० बुआ।
बुहरवाइब दे० बहारब।
बूँच वि० पुं० बूँचा, स्त्री०-ची।
बू सं० स्त्री० गंध,- आइब, दुर्गंध आना,-देब, -करब; बद-,खुश-; वै० बोय; फा०।

बूक सं० पु० मुट्ठी; यक-,मुट्ठी भर(पिसी हुई वस्तु), वै० प्र० बुक्का ।
बूकब क्रि० सं० बूकना, पीसना, मैदा करना; खूब मारना, प्रे० बुकवाइब, बुकाइब ।
बूझ सं० स्त्री० बुद्धि; समझ-, क्रि०-ब, समझना, समुझब-,अबूझ, मूर्ख वै०-झि. स० बुद्धि ।
बूझब क्रि० स० समझना, अंदाज लगाना, तर्क करना, प्रे० बुझवाइब, सं० बुझउवलि (दे०) ।
बूट सं० पुं० अंग्रेज़ी फैशन के जूते, अं० ।
बूटा सं० पुं० फूल पत्ता जो चित्र में बना हो; बेल-, पं० बूटा (छोटा पेड़) ।
बूटी सं० स्त्री० वन की औषधि, जडी-; पं० बूटा, छोटा पेड़ ।
बूड़ब क्रि० अ० डूबना, प्रे० बुड़वाइब, बोरब (दे०), मु०-उतिरब, दुविधा में पड़ा रहना ।
बूडा सं० स्त्री० अधिक वर्षा ।
बूढ़ वि० पुं० बुड्ढा, स्त्री०-ढ़ा (-माई)-ढ़ि, क्रि० बुढ़ाब, भा० बुढ़ापा,-ई, तुल०-जनु वर्षा कृत प्रगट बुढ़ाई, सं० वृद्ध ।
बूत सं० पुं० बूता, शक्ति, यनके-कै, इनके मान का, जिसे यह कर सके, प्र०-ता,-ते ।
बून सं० पुं० बूँद;-भर, यक-, क्रि० बुनियाब,-आब (दे०), स्त्री०-नी, (-परब), बूना-बानी (होब), बूँदे (वर्षा की); बूनै-बून, एक एक बूँद करके सं० विंदु ।
बूनी सं० स्त्री० छोटा बूँद;-परब,-आइब, क्रि० बुनिआब (दे०), सं० बिंदु ।
बूय दे० बोय ।
बूरा सं० पुं० शक्कर ।
बूवा दे० बुआ ।
बेंचब क्रि० स० बेंचना, प्रे० चाइब,-चवाइब, बिकाब,-कब ।
बेंची स०स्त्री० बिक्री का दस्तावेज,-लिखब,-करब ।
बेंड वि० पुं० चौड़ाई के आरपार,-बेंड़,-करब, नष्ट कर देना ।
बेंत सं० पुं०बेत, छड़ी,-मारब,-लगाइब ।
बेवड़ा सं० पुं० झोपड़ी का दरवाजा,-देब; टाटी -,सं० व्यवधान ।
बेवार सं० पुं० लंबा छेद, दराज़,-फाटब, वै०-रा, सं० ।
बेइलि सं० स्त्री० बेल (फूल आदि की), गीतों में '-या' ।
बेई सं० स्त्री० बारी,-बेई, बारी बारी से, बार-बार, 'बेरि' का 'र' लुप्त होकर यह शब्द बना है ।
बेईमान वि० पुं० बेईमान; भा०-नी,-करब ।
बेकरई सं० स्त्री० खराबी, वै०-पन, दे० बेकार, वै० व्य-।
बेकरका सं० पुं० किसी के मरने का १० वाँ दिन, -करब,-होब,-रहब,-मनाइब, 'बेकार' से, वै० व्य-।
बेकल दे० बिकल, वै० व्य-।
बेकाम वि० पुं० थका, विह्वल;-होब,-करब,-रहब, वै० व्य-, स्त्री०-मि ।
बेकार वि० पुं० खराब, रद्दी, वै० व्य-, स्त्री०-रि, भा० करपन,-ई ।
बेकूफ वि० पुं० मूर्ख, स्त्री०-फि, फा० बे+वकूफ, भा०-फी -फई ।
बेखउफ वि० पुं० निश्चित, निडर, स्त्री०-फि, -रहब होब-, फा० बेखौफ़ ।
बेग सं० पुं० थैला; मनी-, रुपया पैसा रखने का चमडे का बटुआ, अं० बैग ।
बेगारी सं० स्त्री० बेगार -लेब,-देब,-करब ।
बेगि क्रि० वि० शीघ्र (कविता में ही प्रयुक्त) ।
बेगी सं० स्त्री० बेगम या रानी (ताश के खेल में); बेगम ।
बेगुन वि० पुं० जिसमें गुण न हो वै० नी ।
बेघर वि० पुं० जिसके घर न हो, जिसका घर उजड गया हो ।
बेजह सं० स्त्री० अनुचित बात या व्यवहार,-करब, -होब,-रहब, फा० बेजा, वै०-जाहिं,-जाइँ,-जाहँ, वि०-जाहीं, अनुचित करनेवाला ।
बेजाँ दे० बेजह ।
बेजान वि० निर्जीव ।
बेजाप्ता वि० (बात, कार्रवाई आदि) जो नियम विरुद्ध हो ।
बेझरा सं० पुं० दो अन्न एक में मिले हुए, स्त्री०-री, मोटी रोटी जो प्राय: दो अन्नों के आटे से बनती है । वै०-र ।
बेटवा सं० पुं० बेटा, स्त्री० बिटिया, वि०-वही, पुत्रवती,-बिटिया, परिवार ।
बेटहना सं० पुं० छोटा लड़का, घृ० खराब छोकरा; स्त्री० बिटिहिनी ।
बेटा सं० पुं० पुत्र; स्त्री०-टी,-बेटी, परिवार ।
बेठन स० पुं० बाँधने का वस्त्र, स० वेष्ठन ।
बेडा सं० पुं० नावों का समूह;-पार होब,-पार करब, महत्वपूर्ण काम पूरा हो जाना ।
बेडिन सं० स्त्री० नीच श्रेणी की नाचने-गाने वाली स्त्री,-पतुरिया, दुश्चरित्र, स्त्रियाँ, दे० पतुरिया ।
बेडी सं० स्त्री० पैरों को बांधने की जेल वाली जंजीर, हथकड़ी-,-परब,-लगाइब ।
बेडौल वि० पुं० जिसके डौल में अनुपात न हो, बदशकल,-होय ।
बेढब वि० अद्भुत, बढ़िया ।
बेढ़ब क्रि० स० फँसा देना, प्रे०-ढाइब,-ढवाइब, 'बेढ़ा' (दे०) से ।
बेढा स० पुं० खेत या बगीचे के चारों ओर लगा कांटा या लकड़ी की दीवार,-लगाइब,-रून्हब ।
बेतकल्लुफ वि० जिसमें आडंबर न हो, भा० -फी ।
बेतरह क्रि० वि० बुरी तरह (बिगड़ना, नाराज़ होना) ।

वेतहासा क्रि० वि० विना साँस लिए, एकदम।
वेतान दे० तान।
वेताव वि० परेशान, निर्जीव;-करव,-होव,-रहव।
वेतोल वि० विना तौल का, अन्दाज़िया. फा० वे + सं० तुल्; वै०-तउल (दे० तउलव)।
वेद सं० पुं० वेद,-पुरान,-वाक्य; सं०।
वेदाग दे० अदग्ग।
वेदाना वि० विना वीज वाला (अंगूर, अनार)।
वेदिहा वि० पुं० वेदी का, पूज्य,-पंडित, धार्मिक कृत्य करानेवाला पंडित।
वेदी सं० स्त्री० स्थान जिस पर पूजा, वलिदान आदि हो; सं०।
वेध सं० पुं० शामत,-होव; ग्रहण में सूर्य या चंद्र का वेध,-लागव, क्रि०-व;-धा होव,-रहव, (कसी की शामत होना), सं०।
वेधड़क वि० निश्चिंत; क्रि० वि० निश्चिंत होकर।
वेधव क्रि० स० वेधना, ग्रस्त करना प्रे०-धाइव, -धवाइव, फाँसना।
वेधरम वि० पुं० धर्म-च्युत;-करव,-होव फ़ा० वे + सं० धर्म; भा०-ई।
वेन सं० पुं० प्रसिद्ध वाजा, कहा० भइँस के आगे -वजावै, भइँस खड़ी पगुराय, सं० वेणु (वाँस)।
वेनउठा सं० पुं० वाँस का छोटा टोकरा; सं०वेणु; स्त्री०-ठी।
वेनउर सं० पुं० ओला; स्त्री०-री, छोटे छोटे ओले; -परव,-गिरव; सी० विनौला।
वेनजीर वि० पुं० जिसकी तुलना न हो, स्त्री० रि; फ़ा० वे +।
वेना सं० पुं० पंखा; छोटा हाथ का पंखा; स्त्री० -निआ,-या,-डोलाइव,-हाँकव; सं० वेणु (वाँस जिसका वेना प्रायः वनता है।)
वेनी सं० स्त्री० स्त्री का वँधा हुआ वाल; प्रायः गीतों में प्रयुक्त, सुरुज मुख धीरे तपौ मोरी वेनी क रँग डुरि जाय"; सं०।
वेनुला सं० पुं० प्रसिद्ध घोड़ा जिसका वर्णन आल्हा में है।
वेनुली सं० स्त्री० जूड़ा वनाने में सहायक एक गोल छल्ला जिसे स्त्रियाँ प्रयुक्त करती हैं। इसका रिवाज कम होता जा रहा है। दे० 'जूरा'; विंदुली जो स्त्रियाँ मत्थे में लगाती हैं।
वेपरवाह दे० निपरवाह।
वेपर्द वि० पुं० नंगा, विना परदे के, स्त्री०-र्दि; वै० नि-।
वेफाँट वि० निरर्थक।
वेफायदा वि० जिसमें कुछ लाभ न हो, फा०।
वेफिकर दे० निफिकिर।
वेफै दे० विहफै।
वेवस वि० पुं० निःसहाय; स्त्री०-सि, भा०-सी, -सई; सं० विवश।
वेभाँति वि० वेमेल, वुरा लगने वाला,-कै, जिसका मेल न खा सके (काम)।
वेमउट दे० विमउट।
वेमान सं० पुं० विमान, वै०-वान, सं० विमान।
वेर सं० स्त्री० विलंव, वार, वै०-रि,-करव,-होव, क्रि० वि०-वेर, वार-वार, यक,-दुइ-।
वेरनि स० स्त्री० वीजों से उगे हुए पौदे,-डारव, -छोड़व, वै०-हनि; स० वीज-वपन।
वेरहम वि० पुं० निर्दय; स्त्री०-मि, भा०-मी, -मई।
वेराइव क्रि० स० अलग करना, चुनना; प्रे०-रवाइव, -उव, भा०-राव।
वेराम वि० पुं० वीमार; स्त्री०-मि,-होव,-परव, -रहव, भा०- मी; वै०-मार।
वेराय सं० स्त्री० दूसरी राय; जिसकी राय भिन्न हो।
वेराह वि० विना रास्ते का;-चलव।
वेरि सं० स्त्री० विलव; दे० वेर।
वेरुख वि० उदासीन,-होव, भा०-खी,-खई।
वेर्रा सं० पुं० कुमुदिनी के वीज।
वेल सं० पुं० वेल, प्रसिद्ध फल और उसका पेड़, -वीनव, मारा मारा फिरना, वेकार रहना।
वेलन सं० पुं० लकड़ी या लोहे का औज़ार जिससे वेला जाय।
वेलना सं० पुं० रोटी वेलने का हत्था,-यस, छोटा सा (वच्चा); वै० व्य-।
वेलव क्रि० स० वेलना, नष्ट करना; प्रे०-लाइव, -लवाइव,-उव, पापड़-, अधिक परिश्रम करना।
वेलल्ला वि० पुं० वेढंगा; स्त्री०-ली।
वेला सं० पुं० वेल को खोखला करके वनाया हुआ लकड़ी लगा छोटा वर्तन जिससे तेल निकाला जाता है, स्त्री०-लिआ,-या।
वेला सं० स्त्री० समय,-होव; सं०।
वेलौस वि० पुं० ममताहीन, स्त्री०-सि।
वेवकूफ दे० वेकूफ।
वेवरा सं० पुं० व्योरा,-देव,-लेव।
वेवहर सं० पुं० कर्ज़,- लेव,- देव तु० वेवहरिया।
वेवहार सं० पुं० व्यवहार; मैत्री,-करव,-रिक, मित्र, सं० व्यवहार।
वेवा सं० स्त्री० विधवा,-होव।
वेवाय सं०स्त्री० पैर के तलुवे में फटी दरार;-फाटव, कहा० जेहिके पाँय न होय वेवाई, सो का जानै पीर पराई।
वेवारिस वि० जिसका कोई वारिस न हो।
वेसक क्रि० वि० नि सदेह; वे + अर०
वेसन सं० पुं० चने का आटा।
वेसरम वि० पुं० निर्लज्ज स्त्री०-मि; भा०-मई. -मा पहलवान, वहुत ही निर्लज्ज, जो अपनी वेशर्मी में गर्व करता हो, फा० वेशर्म,- र्द, वेशर्मी के साथ।

बेसरि सं० स्त्री० नाक में पहनने स्त्रियों का एक आभूषण, वै० नक-।
बेसहनी सं० स्त्री० खरीद।
बेसहब क्रि०स० खरीदना, प्रे०-हाइब,-हवाइब, -उब।
बेसही सं० स्त्री० पत्नी, खरीदी हुई ('बेसही' हुई); दे० बेसहब, वै० बसही।
बेसहूर वि० पुं० बेढंगा, जिसे शहूर न हो; स्त्री० -रि; फा० बे +
बेसी वि० अधिक।
बेस्सा सं० स्त्री० वेश्या, वै०- स्या; सं०।
बेहनि सं० स्त्री० दे० बेरनि।
बेहबल दे० विह्वल।
बेहया वि० बेशर्म, निर्लज्ज, भा०-ई।
बेहाल वि० पुं० घबराया हुआ, मरणासन्न,-होब, -करब,-रहब, स्त्री०-लि, फा० बे+हाल।
बेहिसाब वि० अधिक, असंख्य, फा० बे+ ।
बेहूदा वि० पुं० बेढंगा, स्त्री०-दी।
बेहून वि० पुं० कुरूप, स्त्री०-नि।
बेहोस वि० पुं० बेहोश, स्त्री०-सि, भा०-सी, फा० बे+होश।
बैकल वि० मूर्ख, बेढंगा, स्त्री०-लि, भा०-ई।
बैकुंठ सं० पुं० स्वर्ग, क्रि०-ब, (भगवान् की मूर्ति को) स्नानादि के बाद सुला देना।
बैगन दे० भांटा।
बैजा दे० बयजा।
बैठक सं० पुं० घर के बाहर मेहमानों के बैठने का कमरा, दे० बइठक,-का,-की, वि०-बाज, जो दूसरो के यहाँ जाकर बहुत बैठा करे।
बैठनी स० स्त्री० बैठने का बीड़ा या लकड़ी आदि का पीढ़ा।
बैठब क्रि० अ० बैठना, पटना, जम जाना, प्रे० -ठाइब,-उब।
बैठाहुर वि० पुं० जो प्रायः बैठा रहे, कुछ काम न करे, स्त्री०-रि, वै०-उर।
बैतबाजी सं० स्त्री० अंत्याक्षरी,-करब,-होब।
बैताल सं० पुं० विक्रमादित्य के कथानकों में प्रश्न करनेवाला अलौकिक पुरुष।
बैद सं० पुं० वैद्य; भा०-ई,-पन, सं०।
बैदक सं० पुं० वैद्यक,-करब, भा०-ई, स०।
बैन सं० पुं० वचन, यह शब्द कविता में ही प्रयुक्त होता है।
बैना सं० पुं० व्याह अथवा पुत्र जन्म आदि अवसरों पर बटनेवाला उपहार,-बाँटब,-देब,-आइब, -लाइब, वै० बयना।
बैपरब क्रि० स० व्यवहार में लाना, काम में लेना (वस्तु का), व्यवहार करना (व्यक्ति का), अनुभव प्राप्त करना, सं० व्यापार।
बैपार सं० पुं० व्यापार,-री, व्यापारी,-करब, सं० व्यापार, क्रि०-परब (दे०)।
बैबी वि० बाहर का; अपरिचित (व्यक्ति या पशु)।
बैमान दे० बेईमान, भा०-नी।
बैर सं० पुं० दुश्मनी,-री, दुश्मन, सं०, वै० बयर, -करब,-राखब,-रहब।
बैरन वि० जिस पर महसूल लगे (पत्र), अं० बेयरिंग।
बैरा सं० पुं० खाना बनानेवाला नौकर, अं० बेयरर।
बैल सं० पुं० बैल, मु० मूर्ख।
बैलट सं० पुं० शक्ति, इंजिन, अं० ब्वायलर।
बैलर वि० पुं० फूहड़, स्त्री०-रि, भा०-ई।
बैस सं० पुं० ठाकुरों की एक जाति जिनके कारण बैसवाडा प्रांत का नाम पड़ा; वै० बयस।
बोंका सं० पुं० कीड़ा जो घास में रहता और कूद-कूदकर इधर-उधर बैठता है।
बोइब क्रि० स० बोना, प्रे०-आइब,-उब, मु० बात फैलाना, प्रचार करना, छींटब-, फेंकना।
बोउनी सं० स्त्री० बोने की क्रिया, उसका समय, -होब,-करब, प्रे०-वउनी।
बोकड़ब क्रि० स० (कपड़े या कागज़ को) चबा के खराब कर देना, बीच-बीच में छेद कर देना, प्रे० -ड़ाइब,-उब।
बोक्क सं० पुं० बड़ा सा मोटा डण्डा।
बोझ सं० पुं० भार, क्रि०-ब, लादना; वै०-झा।
बोझब क्रि० स० लादना, खूब भरना; मु० खूब डट कर खाना, प्रे०-झाइब,-झवाइब,-उब।
बोटा सं० पुं० लकड़ी का बड़ा और मोटा टुकड़ा, स्त्री०-टी, मास आदि का टुकडा, बोटी-बोटी, क्रि० वि० छोटे-छोटे टुकड़ों में (काटना), क्रि०-टिआइब।
बोड़ा सं० पुं० बड़े दाने की एक फली जिसका साग खाया जाता है।
बोतल सं० पुं० बड़ी शीशी, अ० बॉटल।
बोदा वि० पुं० सुस्त, भद्दा, स्त्री०-दी, भा०-पन।
बोध सं० पुं० ज्ञान, तृप्ति,-करब,-होब, सं०।
बोबा स० पु० स्तन (दूध भरा हुआ) पियब, स्त्रियों या बच्चा द्वारा प्रयुक्त, स्त्री०-बी, ग्रि०-बुयो, लें० बुब्बा।
बोमब क्रि० अ० जोर-जोर से चिल्लाना, व्यर्थ में बोलना।
बोय सं० स्त्री० बदबू, दुर्गंध;-करब, आइब बू।
बोरा सं० पुं० बोरा; स्त्री०-री, क्रि०-रिआइब, बोरों में भरना।
बोरो सं० पुं० एक प्रकार का चावल जो पानी में होता है। सं० व्रीहि।
बोल सं० पुं० बोली, शब्द, वै०-लि;-चाल, संपर्क।
बोलब क्रि० स० बोलना, कहना, प्रे०-लाइब,-उब, -लवाइब, बुलाना,-चालब, संपर्क रखना।

बोली सं० स्त्री० बोली, भाषा,व्यंग;-बोलब, व्यंग कहना, नीलाम में दाम लगाना।
बोह सं० पुं० (जल में भैंसों का) आनंद -लेब,-हा, चरने की घास की अधिक्ता।
बोहब क्रि० स० सान देना (तेल आदि में), जोग से पकड़ना, कक्कन-,दो व्यक्तियों की हाथ की उँग-लियों को मिलाकर पकडना. यह शब्द और दूसरे अर्थ में नहीं प्रयुक्त होता।
बौंका दे० बउँका।
बौंड़ा दे० बँवरा।
बौआब क्रि० अ० सोते समय बड़बड़ाना; दे० बउ-आब, वै० बउ-,-वाब।
बौखल दे० बउखल।
बौखा सं०पुं० थोड़ी देर तक चलनेवाली तेज हवा, आन्ही-,-आइब. वै० बउखा।
बौना सं० पुं० जो व्यक्ति कद में बहुत छोटा हो, वै० बावना, सं० वामन; स्त्री०-नी।
बौर दे० बउर, पं०मौरना, सिं० मोर।

भ

भँकार दे० भोंकार।
भँजाइब क्रि० स० भजाना (पैसा), प्रे०-जवाइब; भा० भँजवाई।
भँटइती सं० स्त्री० भाँट का सा व्यवहार, अनावश्यक प्रशंसा,-करब; दे० भाँट।
भंटा सं० पुं० बैंगन, भाँटा।
भंडा सं० पुं० किसी भारी वस्तु को उठाने के लिए लगाई हुई लकड़ी;-लागब,-लगाइब,-फोर, रहस्योद्घाटन,-करब,-होब।
भँड़इती सं० स्त्री० भाँड़ का सा व्यवहार,-करब, -होब, वै०-यती,-ड़ैती।
भँड़खेलि सं० स्त्री० गड़बड़;-करब,-होब; भाँड़ (दे०)+खेलि, भाँड़ों का खेल।
भँड़री सं० स्त्री० गन्ना पेरने का पहला दिन जब गुड़ भी तैयार होता है;-करब,-होब।
भँडसार सं० पुं० भोजनवाला घर; स्थान, जहाँ भोजन बने; वै०-सारा।
भँड़आ सं० पुं० वेश्या के साथ रहनेवाला पुरुष; गुलाम; नीच व्यक्ति, भा०-अई,-पन।
भँड़ेरि सं० स्त्री० गड़बड़;-करब,-होब, भाँड़ों का सा काम, वि०-री, 'भँड़ेरि' करने वाला।
भँड़ैती दे० भँड़इती।
भँवक्खा वि० पुं० जिसकी आंखें टेढ़ी हो; स्त्री० -खी, भँव+आँखि, जिसकी आंख भौं की ओर उठी हो।
भँवर सं० स्त्री० नदी की भँवर,-में परब, चक्कर में पड़ना, असमजस में रहना।
भँवरी सं० स्त्री० फेरी,-करब, (बनिये का) गाँव गाँव फिरकर सौदा बेचना।
भँवरा सं० पुं० भ्रमर, मु० इधर उधर फिरने वाला व्यक्ति, स्त्री०-री, मनुष्य के बालों का चक्र, पशु के मत्थे या पीठ आदि पर बालों का चक्र, सं० भ्रम्।
भ क्रि० अ० हुआ, हो गया; वै० भय, भै, स्त्री०-इ; उदा० जौन-तौन-, जो कुछ हुआ सो हुआ, सं० भूत:।
भइँस सं०पुं० भैंसा -साब, भैंस का गाभिन होना, -साहिन, भैंस की भाँति बू करनेवाला,-आइब; स्त्री० -सि,-यस, मोटा तगड़ा पर सुस्त व्यक्ति; सं० महिष।
भइँसि सं० स्त्री० भैंस,-यस, मोटी तगड़ी पर सुस्त स्त्री; सं० महिषी।
भइआ संबो० हे भाई, भैया;-भउजी, भाई भौजाई,-चारा, भाई का सा व्यवहार, बिरादरी।
भइने दे० भयने।
भउजाई सं० स्त्री० बड़े भाई की स्त्री, सं० भ्रातृजाया।
भउजी सं० स्त्री० भउजाई, ऐसी स्त्री को संबोधन करने का शब्द; सं० भ्रातृजाया।
भउरब क्रि० स० खुरपी से (पौदे की जड़ की) मिट्टी खोदकर उलट देना; प्रे०-राइब।
भउरी सं० स्त्री० मोटी गोल रोटी जो हाथ से ही बनाकर कंडे की आँच पर सेंकी जाती है, इसी को 'लीटी' भी कहते हैं,-लीटी,-लगाइब, मु० छाती पर -लगाइब, खूब तंग करना।
भकंदर दे०-गंदर।
भकचुम्मा वि० पुं० जो कुछ बोल न सके; स्त्री० -मी।
भकड़ब क्रि० अ० सड़ जाना (लकड़ी का)।
भकभेलर वि० पुं० फूहड़, बेढंगा; स्त्री०-रि, वै० -गा-।
भकसब क्रि० अ० सड़ जाना (लकड़ी, फल आदि का), बदबू करने लगना।
भकाभक क्रि० वि० जल्दी-जल्दी, निरंतर (धूएँ आदि के निकलने लिए), प्र०-क्क।
भकुहा वि० पुं० जो कुछ कर न सके; निःसहाय एवं मूर्ख, स्त्री०-ही, भा०-पन, क्रि०-आब।

भकोसब क्रि०स० जल्दी-जल्दी फाँकना या चबाना; प्रे०-साइब,-सवाइब,-उब ।

भक्खर सं० पुं० खाने का स्थान, बलिवेदी; भवानी क-, देवी की बलिवेदी, यह शब्द या तो इसमें या "-मँ परब" (संकट में पड़ जाना) में प्रयुक्त होता है; "भवानी क-मँ जाव" तू देवी की बलि हो जा; सं० भक्ष् ।

भक्साहिन वि० जिसमें सड़ी बदबू हो,-आइब, -लागब ।

भख सं० पुं० भोजन, कहा० "अजगर को-राम देवैया" इसी में इस शब्द का प्रयोग होता है। सं० भक्ष्य ।

भखवइआ सं० पुं० भाखनेवाला, भविष्यवाद करनेवाला; स्वीकार करनेवाला, सं० भाष्; वै० -या, वैया ।

भखवाइब क्रि० स० कहलवाना, कहने के लिए बाध्य करना, सं० भाष्, भा०-वाई, भविष्यवाणी करने की क्रिया, क्रम, मजदूरी आदि ।

भखाइब क्रि० स० कहलवाना, स्वीकार कराना, प्रे०-खवाइब,-उब, सं० भाष् ।

भगंदर सं० पुं० प्रसिद्ध रोग जिसमें गुदा से मवाद आता है ।

भग सं० स्त्री० स्त्री को गुप्तेंद्रिय, पुरुष की गाँड; स० ।

भगउती सं०स्त्री० देवी, भगवती, भगवान-, देवता भवानी,-माई, दुर्गा जी, वै०-गौती, सं० भगवती ।

भगत वि० पुं० भक्त; जो मांस मछली न खाय, स्त्री०-तिनि,-न, भा०-ई,-ती; सं० भक्त ।

भगति सं० स्त्री० कीर्तन,-करब,-होब ।

भगदरि सं० स्त्री० भागने की क्रिया; घबराकर भागने का क्रम,-परब,-होब,-करब ।

भगनहा स० पुं० एक जंगली पेड़ और उसकी लकड़ी ।

भगवा सं० पुं० छोटा सा कपड़ा जो गुप्तेंद्रियों पर गरीब लोग लपेट लेते हैं, स्त्री०-ई;-पहिरब, -बान्हब, सं० भग+वा ।

भगवान सं० पुं० परमात्मा, भगवान;-करै,-चाहैं; -जानैं, भगवान् की शपथ; जै-;-भगउती, परमात्मा की कृपा ।

भगाइब क्रि० स० भगाना, भगा ले जाना, वै० -उब, प्रे०-गवाबब, भा०-ई,-गवाई ।

भगाई वि० स्त्री० भगाई हुई (स्त्री), जिसे कोई पुरुष भगा लाया हो ।

भगोड़ा सं० पुं० भागनेवाला या भागा हुआ व्यक्ति ।

भगोना सं० पुं० खुले मुँह का बर्तन (धातु का) जिसका ढकना अलग हो, बटुली की भाँति का बर्तन ।

भङरइया सं० स्त्री० एक बूटी जो वर्षा में अधिक होती है, भृंगराज, सं०; वै०-रैया, भँग- ।

भङरा सं० पुं० बोरे का टुकड़ा; पुराने कंबल का भाग ।

भचक सं० पुं० पैर की खराबी, चलने में अड़चन; क्रि०-ब, लँगड़ा कर चलना, भचक कर चलना, प्रे०-काइब, पैर मचकाना प्र०-क्का,-मारब (व्यं०) ।

भचभचाब क्रि० अ० 'भच-भच' का शब्द करना; प्र० भचर-भचर करब, भचाभच्च करब, अनु० ।

भजन सं० पुं० भक्ति का गीत गाइब,-करब; -नानंदी, जिसे भजन में आनंद आवे ।

भजब क्रि० स० भजना, ध्यान करना; प्रे०-जाइब, -उब ।

भजभजाब क्रि० अ० 'भज-भज' का शब्द करना (सड़े हुए द्रव, कीचड़ आदि का), अनु० ।

भटक सं० पुं० सदेह, दुविधा,-रहब, करब ।

भटकब क्रि० अ० भटकना, प्रे०-काइब,-कवाइब ।

भटकोइया सं०पु० प्रसिद्ध कँटिदार बूटी जो खाँसी की दवा है; वै० भँ- ।

भटवासी स० स्त्री० एक जंगली पौदा जिसकी पत्तियों को उबालकर लगाने से जूँ मरते हैं ।

भट्ठा स० पुं० ईंट पकाने का भट्ठा, स्त्री-ट्ठी ।

भठब क्रि०अ० भट जाना, (कुँए, तालाब आदि का) बंद या पट जाना; प्रे० भाठब,-ठाइब,-ठवाइब,-उब, भा०-ठाई, पाटने की क्रिया, मजदूरी आदि ।

भठिआरा स०पुं० भट्ठी चलानेवाला, रोटी पकानेवाला (मुसलमान), खाना बेचनेवाला, स्त्री० -रिन ।

भड़ंग सं० पुं० दिखावा, व्यर्थ की बनावट;-करब; वि०-गी ।

भड़क सं० पुं० दिखावा, तड़क-,बाहरी टीम-टाम ।

भड़कब क्रि० अ० भड़कना, प्रे० काइब -उब ।

भड़कील वि० पुं० देखने में सुंदर, स्त्री०-लि; प्र० -खील ।

भड़भड़ाइब क्रि० स० 'भड़भड़' करना, पीटना (दरवाज़ा आदि) ।

भड़भड़ाब क्रि० अ० 'भड़भड़' होना; प्रे०-ड़ाइब ।

भड़भड़िया वि० बहुत बातें करनेवाला, वै०-आ ।

भड़भाड़ स० पुं० कँटीदार जंगली पौदा जिसे संस्कृत में स्वर्णचीरी कहते हैं ।

भड़ाक सं० पुं० किसी बर्तन के फूटने का शब्द; -दें, ऐसे शब्द के साथ, प्र०-का ।

भड़ाभड़ सं० पुं० 'भड़भड़' की निरंतर आवाज, -होब,-करब ।

भतइत सं० पुं० हलवाह जो भाता (दे०) पर काम करे; भा०-ती ।

भतखवाई सं० स्त्री० व्याह में भात खाने का नेग (दे०) जो समधी को दिया जाता है। भात+ खवाई; वै०-खउआ,-खौआ,-देव,-पाइय,-लेय ।

भतरहा वि० पुं० भूना या उबला हुआ पदार्थ जिस में कोई भाग गला न हो;-रहब, क्रि०-राब ।

भतरिन्हा सं० पुं० खाना बनाने वाला; भात+ रिन्ह; (दे०) रीन्हब।

भतहा सं० पुं० भात (दे०) वाला; भात खाने वाला नातेदार; भात+हा; सं० भक्त।

'भतार सं० पुं० पति, मालिक; सं० भर्तृ; वि० भतरहो (भतारवाली)।

भतिज-बहु सं० स्त्री० भतीजे की स्त्री; भतीज+ वधू।

भतीज सं० पुं० भाई का लड़का; सं० भ्रातृज; स्त्री०-जि, भतीजे की बहिन।

भत्ता सं० पुं० घर से बाहर जाने का खर्च; यात्रा का पूरा व्यय -लेब,-देब; 'भात' से ?

भथुरब क्रि० स० धीरे धीरे पर अच्छी तरह मारना; प्रे०-राइब,-रवाइब; दे० थुरब।

भदई सं० स्त्री० भादों में होनेवाली फसल, सं० भाद्र।

भदउहाँ वि० पुं० भादों का, भादों में होने वाला (फल, धूप); सं० भाद्र + हा, स्त्री०-हीं; वै०-वहाँ।

भद-भद क्रि० वि० 'भदभद' आवाज़ के साथ (गिरना), प्र०-द-द, भदर भदर, क्रि०-दाब, जल्दी जल्दी गिर पड़ना।

भद्राब क्रि० अ० खूब होना (पके फलों का), पक कर गिरना (आम का)।

भद्द सं० स्त्री० बदनामी, दुर्गति;-करब,-होब, वै० -द्दि।

भद्रा सं० पुं० खराब मुहूर्त, कहा० बरी मँ वर जरै नव बरी भद्दरा।

भद्दा वि० पुं० खराब, स्त्री०-द्दी, भा०-पन।

भद्र वि० पुं० जिसकी दाढ़ी मूछें मुँडी हों,-होब।

भनक सं० स्त्री० जरा सा शब्द, आवाज,-परब, क्रि०-ब, भ-।

भनछब क्रि० अ० फिरते रहना, तलाश करना, मारा मारा फिरना; प्रे०-छाइब,-उब।

भनब क्रि० स० कहना, वर्णन करना; काव्य में ही प्रयुक्त हुआ है।

भनभनाब क्रि० अ० भन भन करना, रुष्ट होना, बोलते रहना।

भन्न सं० पुं० 'भन्न' की आवाज;-सँ,-दै, ऐसी आवाज के साथ; क्रि०-न्नाब, रुष्ट हो जाना।

भभक सं० पुं० जल उठने का क्रम, किसी बंद रखी हुई वस्तु की उत्कट गंध, क्रि०-ब, जल उठना, भीतर से जोर मारना, 'भ भ' की आवाज करना; प्रे०-काइब।

भभका सं० पुं० सत निकालने का बर्तन;-लगाइब।

भभकाइब क्रि० स० यकायक गिरा देना (द्रव को), ढँढ़ेल देना।

भभक्का सं० पुं० बड़ा सा छेद,-करब,-होब।

भभरिआब क्रि० अ० सूज जाना (बीमारी के बाद चेहरे का); भा० भभरी।

भभूति सं० स्त्री० विभूति,-देब,-लेब,-लागब; सं० विभूति।

भभ्भाब क्रि० अ० जलन होना (अंग में)।

भय सं० पुं० डर,-लागब,-करब,-खाब, सं०।

भयवादी सं० स्त्री० बिरादरी, भाईचारा, प्र० -बद्दी।

भयरो दे० भैरव।

भर उप० पूर्ति का द्योतक यह शब्द अन्य शब्दों में जोड़ दिया जाता है, उदा० पेट-, अँजुरी-, मन-, जिउ-, आँखि-; माप या तोल का भी यह सूचक है, सेर-, यक-(एक तोला) दुइ-, गज-, हाथ-,कोस-।

भरइत वि० पुं० जो भार ले जाय, दे० भार।

भरता स० पुं० किसी फल या कंद आदि को आग में भूनकर उसमें तेल आदि डालकर बनाया हुआ साग,-करब,-होब, दवा देना, कुचलना।

भरती सं० स्त्री० भरती;-होब,-करब।

भरनी सं० स्त्री० एक नक्षत्र,-भद्रा, भिन्न-भिन्न नक्षत्र, फल (जइसन करनी तइसन-); सं० भरणी।

भरब क्रि० स० भरना, देना (कर्ज); प्रे०-राइब, -वाइब,-उब।

भरभर भरभर क्रि० वि० एक के पीछे दूसरे, -भागब, क्रि०-राब,-राइब।

भरम सं० पुं० भ्रम, भेद,-खोलब,-देब,-गँवाइब, -लेब; क्रि०-ब, भटकना; सं० भ्रम।

भरमाइब क्रि० स० भटकाना, प्रे०-मवाइब,-उब; भरमब (भटकना) का प्रे० रूप; सं० भ्रामय।

भरसक क्रि० वि० जहाँ तक हो सके; शायद, संभवतः यथाशक्ति, भर+शक्ति।

भरसा सं० पुं० छत को सँभालने के लिए भीत में से निकला हुआ लकड़ी का टुकड़ा; वै०-ड़-।

भरहा वि० पुं० किराये का; दे० भारा, स्त्री०-ही, जो (भैंस या गाय) 'भारे' (दे० भारा) से दूध दे।

भरा वि० पुं० पूरा, स्त्री०-री,-पुरा, अच्छी तरह भरा, संतुष्ट,-री-पुरी, (सधवा स्त्री) जिसके पुत्र पौत्रादिक हों।

भराइब क्रि० स० भराना, प्रे०-रवाइब; भा०-राई, भरने की रीति, मजदूरी या मिहनत, प्रे० भरवाई।

भरी सं०स्त्री०तोले की तौल, यक-, दुइ-, दे०भर।

भरुका सं० पुं० मिट्टी का छोटा प्याला, पुरवा; स्त्री०-रकी,-रुकी, वै० मुर-।

भरैया सं० पुं० भरने वाला, प्रे०-रवैया।

भरोस सं० पुं० भरोसा;-होब,-रहब,-करब, धरब।

भर्राब क्रि० अ० भर्र भर्र करना।

भल वि० पुं० अच्छा, सुंदर; स्त्री०-लि;-होब,-करब; -भल, कितना ही, बहुत (प्रयत्न), वै०-लि-भलि।

भलभलुआ वि० पुं० जो अपने व्यवहार से दूसरे का शुभचिंतक जान पड़े, पर वास्तव में स्वार्थी हो;-बनब।

भलमनई सं० पुं० सज्जन, वै०-मानुस; भा० -मनसी; भल+मनई (दे०)।

भलर-भलर क्रि• वि० धारा प्रवाह, निरंतर (बहना, चूना); प्र० भुलुर-भुलुर ।
भला सं० पुं० कल्याण;-करब,-होब; संयो० अच्छा (वाक्यों के प्रारंभ या अंत में आता है,-भला, बनके इहाँ क का हालि बा ?), कभी कभी प्रश्न सूचक भी है-बजार जाय के ई चीज़ लै आवो, भला ? भा०-ई; सं० वर, बँ० भाल ।
भलुहा सं० पुं० एक घास; लघु०-ही ।
भव सं० स्त्री० भूमि का आकस्मिक छेद;-फूटब, सं० भू ।
भवतव्यता सं० स्त्री० होनी, भाग्य, वै० हो-।
भवन सं० पुं० विचार, मंसूबा, व्यर्थ की भावना; -मँ रहब, व्यर्थ का मंसूबा बाँधना, सं० भावना ।
भवसागर सं० पुं० संसार के झंझट; व्यर्थ के विचार,-मँ परब, तर्क वितर्क में पड़ना; सं० ।
भवहिं सं० स्त्री० भौं,-सिकोरब, नाक-भौं सिकोड़ना, रुष्ट होना, सं० भ्रू ।
भवानी सं० स्त्री० दुर्गा, काली, देवी-, देवता-, भगवान्-,-परै,-लेयँ, (तुम्हें) भवानी नष्ट करें ! स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त साधारण शाप, लड़की, कन्या (छोटी); सं० ।
भसींड़ि सं० स्त्री० कमलनाल जिसकी तरकारी बनाकर खाते हैं ।
भसुआ दे० अरुआ-।
भसोट सं० पुं० शक्ति, प्राय: दूसरे को ललकारने के लिए प्रयुक्त, तोहार-बा ई कै लेवौ ? क्या तुममें शक्ति है इसे कर लेने की ?
भहर-भहर क्रि० वि० जोर जोर से (जलना), -बरब,-जरब, खूब जलना ।
भहराब क्रि० अ० गिर पड़ना, प्रे०-राइब, गिरा देना (पेड़, भीत आदि),-रवाइब ।
भाँज सं० पुं० रोक, विघ्न,-पारब, रोक देना, वै० -जी ।
भाँजब क्रि० स० भांजना, प्रे० भँजाइब ।
भाँट सं० पुं० गीत गाकर मांगने वाली एक जाति, भा० भँटैती,-भिखार, भिखमंगे ।
भाँटा स० पुं० बैंगन,-यस, छोटा सा (व्यक्ति) ।
भाँड़ सं० पुं० मसखरा, सभा में हँसी करनेवाला, भा० भँड़हती ।
भाँडा दे० बरतन-भाँड़ा; स० भाण्ड ।
भाँपब क्रि० स० भाँपना, पता लगाना ।
भाँवरि सं० स्त्री० व्याह में वर-वधू का चक्कर, -घूमब,-होब, सं० भ्राम् ।
भाइब क्रि० स० अच्छा लगना ।
भाई सं० पु० भ्राता,-बंद, बिरादरी के लोग,-बंदी, बिरादरी,-चारा, दे० भाय, सं० भ्रातृ, पं० भ्रा ।
भाउ सं० पुं० भाव, दर,-खुलब,-चढ़ब,-गिरब ।
भाकुर सं पुं० एक प्रकार की मछली ।
भाखब क्रि० स० कहना, भविष्यवाणी करना; प्रे० भखाइब,-खवाउब,-उब, सं० भाष् ।

भाखा सं० स्त्री० बोली, भाषा, बोलने का तरीका, कहा० खग जानै खग ही की-, सं० ।
भागब क्रि० अ० भागना, अलग होना, प्रे० भगाइब,-गवाइब,-उब ।
भागि सं० स्त्री० भाग्य, वि०-दार, अभागा, सं० भाग्य ।
भाङ्गि सं० स्त्री० भंग,-खाब,-घोंटब,-रगरब, कहा० लंगड़ भचंगड़ के तीन मेहरी, यक कूटै, यक पीसै, यक-रगरी । वि० भङेड़ी, जो भाँग खाता हो ।
भाठब क्रि० स० भाठना, पाटना, भरना; प्रे० भठाइब,-ठवाइब,-उब; पेट-, किसी प्रकार जीवित रहना ।
भाठी सं० स्त्री० भट्ठी ।
भाफ दे० वाफ ।
भाभरी दे० मसान-भाभरी ।
भाय सं० पुं० भाई; सं० भ्रातृ, पं० भ्रा, फ़ा० बिरादर, अं० ब्रदर; तुल० रामलखन अस भाय ।
भार सं० पुं० बोझ, बाँस के फट्टे के दोनो ओर लटकाया हुआ बोझ जो कंधे पर ले जाते हैं,-अङइब, दूसरों का उत्तरदायित्व सँभालना,-देब, किसी नातेदार के यहाँ उत्सव आदि में भार द्वारा सामान भेजना, सं०, फ़ा०बार, वि० भरइत (भार ले जाने वाला व्यक्ति) ।
भारा सं० पुं० किराया, भाड़ा;-देब,-लेब; सं० भार से;-किराया,-केरावा,-लादब, भाड़े से गाड़ी आदि चलाना ।
भारी वि० पुं० बड़ा, वज़नी, संभ्रांत (व्यक्ति); भा०-पन, सं० भार+ई (बोझवाला) ।
भारू वि० जो भारस्वरूप हो, जिसका भार न सँभाला जा सके (व्यक्ति),-होब, असह्य होना, -करब, सं० भार+ऊ ।
भाला सं० पुं० बरछा;-मारब ।
भालू सं० पुं० रीछ,-यस, जिसके शरीर पर बढ़े-चढ़े बाल हों, सं० भल्लूक ।
भाव सं० पुं० दर,-ताव, मोल-भाव,-करब, का-, किस भाव ?
भावना सं० स्त्री० विचार, प्राय: गलत अन्दाज, -मँ रहब, मुगालते में रहना ।
भास सं० पुं० कीचड़ या पानी में धँस जाने की स्थिति,-होब, क्रि०-ब, कीचड़ में फँस जाना ।
भासब क्रि० अ० जान पड़ना, बाहर से दिखना ।
भिग सं० पुं० दोष, छिद्रान्वेषण,-पारब, आपत्ति करना ।
भिखमगा सं० पुं० भीख माँगनेवाला, स्त्री०-गिनि; भा०-मँगाई, स० भिक्षा+माँगब, दे० मंगन ।
भिखारी सं० पुं० भिक्षुक, स्त्री०-रिनि,-दुखारी, कोई भी आवश्यकतावाला व्यक्ति, सं० भिक्ष् वैं०-र, तुल० तापस बनिक भिखार ।
भिच्छा सं० स्त्री० भिक्षा,-माँगब,-लेब,-मनन करब, भीख माँगकर काम चलाना; सं० ।

भिटहुर सं० पुं० उपलों या कंडों का समूह जिसे सुन्दरता से जमाकर रखा जाता है।-यस, लंबा-चौड़ा।
भिट्ट सं० पुं० तालाब के किनारे का ऊँचा भाग; -होब,-लागब, ऊँचा हो जाना (सड़कर या अधिक होकर), दे० भीट, सं० भित्ति (दीवार)।
भिड़काइब क्रि० स० (दरवाजों को) लगा देना, भिड़ा देना; वै०-उब।
भिडनी सं० स्त्री० संघर्ष, भिड़ंत,-होब,-करब, -कराइब; प्र०-इन्त, वै०-ड़ानि।
भिड़ब क्रि० अ० भिड़ जाना, लड़ जाना; प्रे० -ड़ाइब, लड़ा देना, मिला देना, एक दूसरे के सम्मुख कर देना।
भितराब क्रि० अ० अंदर जाना, प्रे०-राइब, भीतर ले जाना,-रवाइब,-उब।
भितरीं अव्य० भीतर, अंदर; प्र०-रैं,-रौं।
भितरैतिनि सं० स्त्री० स्त्री जो रसोई घर में हो, वै०-रइलिन।
भितल्ला सं० पुं० नीचे का भाग (रजाई, दुहरे कपड़े आदि का);वै०-रला (भीतर का); स्त्री०-ल्ली।
भितूरी सं० स्त्री० भीतर का स्थान, रसोई घर।
भित्तर क्रि० वि० अंदर, भीतर, क्रि०-तराब, अंदर जाना; वै०-तरीं, प्र०-तरैं,-तरै-भीतर, अंदर ही अंदर।
भिदुभिदाब क्रि० अ० भिद-भिद करना; प्रे०-दाइब, -उब।
भिदिर-भिदिर क्रि० वि० निरंतर और धीरे-धीरे (पानी बरसना),-होब।
भिनउखा सं० पुं० प्रातःकाल,-खाँ, सवेरे, दे० भिनसार, भिनहीं, भियान, बिहान।
भिनकब क्रि० अ० भिनभिनाना (मक्खी आदि का), प्रे०-काइब।
भिनब क्रि० स० (द्रव का) भीतर प्रवेश करना, प्रे०-नाइब,-नवाइब।
भिनि वि० भिन्न, दूसरा, पृथक, अलग, सं०।
भिन्न दे० भिनि।
भिन्नही सं० स्त्री० प्रातःकाल;-होब; भिनही (दे०) का प्र० रूप; प्र०-हवैं,-हियैं (प्रातःकाल ही)।
भिभिआब क्रि० अ० चिल्लाना, "भी-भी" करना, दे० घिघिआब।
भियान सं० पुं० प्रातःकाल, बिहान,-होब,-करब, रात बिताना; क्रि०वि० कल, रात बीतने पर, प्र० -नै,-नौ।
भिरब दे०-ड़ब, अभिरब।
भिरही सं० स्त्री० भीड़ का समय, काम का समय।
भिराब क्रि०अ० लग जाना, व्यस्त हो जाना, प्रे० -राइब,-रवाइब।
भिरोजा सं० पुं० प्रसिद्ध सुगंधित औषध।
भिलनी सं०स्त्री० भील की स्त्री, वै० प्र०-ल-,-लि-, भीलिनि।
भिलभिलाब क्रि० अ० असहाय की तरह रोना।
भिलिरभिलिर क्रि० वि० फूट-फूटकर (रोना), असहाय की भाँति, 'भिल-भिल' शब्द करके (अनु०)।
भिहलाब क्रि० अ० बिखर कर खराब हो जाना; फूट जाना, प्रे०-लाइब,-उब।
भीखि सं० स्त्री० भिक्षा;-माँगब,-देब,-लेब, सं०।
भीज वि० पुं० भीगा, स्त्री०-जि, क्रि०-ब।
भीजब क्रि० अ० भीगना; मु० अनुभव होना; कटु अनुभव आना, प्रे० भेइब,-उब; कवने बिरिछ तर भीजत ह्वैहैं रामलखन दुनौं भाय ?-गीत।
भीट सं० पुं० तालाब के किनारे का ऊँचा भाग, टीला, वै० प्र०-टा, भिट्ट (दे०), सं० भित्ति।
भीतर क्रि० वि० अंदर; बाहर-, भितरै-, अंदरही अंदर, दे० भित्तर।
भीति सं० स्त्री० दीवार, सं० भित्ति।
भीम सं० पुं० प्रसिद्ध योद्धा जो पांडवों में सबसे बली थे, वि० महाबली।
भीर सं० स्त्री० भीड़, काम की अधिकता;-होब, -रहब,-करब; वै०-रि, क्रि० भिराब।
भीरा सं० पुं०(काँटों का) बोझ; यक-, दुइ-, स्त्री० -री, छोटा बोझ।
भील सं० पुं० प्रसिद्ध जङ्गली जाति और उसके व्यक्ति जो मध्य भारत में अधिक हैं; स्त्री०-लिनि, भिलिलनी,-नि।
भुँकाइब क्रि० स० भूँकने या चिल्लाने को बाध्य करना; प्रे०-कवाइब, भा०-ई।
भुइँ सं० स्त्री० भूमि, क्रि० वि० भुइँ, पृथ्वी पर; सं०भूमि, भू, म० भुई, उ० भुई, प०भुइ, पं० भू, -दगधा, भूमि को काम में लाने का कर जो उसका मालिक लेता है।
भुकतब क्रि० अ० भुगतना; वै०-ग-, प्रे०-ताइब, -उब, भा०-तानि, सं० भुज्, नै० भुकताउनु।
भुकतान सं० पुं० भुगताने का क्रम या अंत, वै० -ग-,-नि,-करब,-होब, सं० भुज्।
भुकुडी सं० स्त्री० वर्षा में कुछ वस्तुओं पर लगी सफेद काई -लागब, क्रि०-ड़ब।
भुकुर-भुकुर क्रि० वि० आँसू गिरा-गिराकर, भूँ-भूँ शब्द करते हुए (रोना); अनु०।
भुक्का सं० पुं० सत्तू-छोर, जो सत्तू भी छीन ले, नीच, दरिद्र, दे० भूका,-छोर।
भुक्खड़ वि० पुं० बहुत भूखा; स्त्री०-ड़ि, सं० बुभुक्षा।
भुखहर वि० पुं० भूख से त्रस्त; स्त्री०-रि,-दुखहर, -रु, दुखिया, सं० बुभुक्षा+हर।
भुखाब क्रि० अ० भूख से आक्रांत होना; वि०-खान, भूखा,-नि।
भुगतब दे०-क-।
भुगुति सं० स्त्री० भुक्ति, मृत व्यक्ति की स्मृति में एक ब्राह्मण का भोजन,-खाब; सं० भुज् (भुक्ति)।

भुग्गा सं० पुं० मूर्ख,-बनाइब, उल्लू बनाना ।
भुच्चड वि० पुं० जिसकी समझ में बात जल्दी न आवे; स्त्री०-ड्डि ।
भुजइटा सं० पुं० एक काला पक्षी जो कौए से कुछ छोटा पर उससे भी काला होता है, करिया-, बहुत ही काला, वै०-जैंटा ।
भुजइनि सं० स्त्री० भूज की स्त्री ।
भुजरी दे०-जुरी ।
भुजवाइब क्रि० स० भुजाना, भुनवाना, 'भूजब' का प्रे० रूप ।
भुजाइब क्रि० स० भूनने के लिए बाध्य करना या उसमें मदद करना, भूनने के लिए कहना, प्रे० -जवाइब, यह शब्द स्वयं 'भूजब' का प्रे० रूप है । भा०-ई, भूनने की मजदूरी या पद्धति, नै० भुटा-उनु ।
भुजाली सं० स्त्री० नैपालियों द्वारा प्रयुक्त कुकड़ी, -मारब ।
भुजिया सं० पुं० धान को भिगोकर उबालने का क्रम,-करब, वि० ऐसा तैयार किया हुआ (चावल), वै०-या; दे० अरवा ।
भुजुरी सं० स्त्री० छोटा-छोटा टुकड़ा (प्रायः तरकारी का),-करब, काट डालना; क्रि०-रिआइब ।
भुट्टब क्रि० स० सीधे आग में डालकर भूनना जैसे भुट्टा; प्रे०-वाइब, तङ्ग कराना ।
भुट्टा सं० पुं० किसी भी अन्न की बाली जो सीधे आग में भूनी जाय, क्रि०-ट्टब ।
भुड़बब क्रि० अ० भुड़-भुड़ करना (बर्तन, दर्वाजे आदि को) प्रे०-काइब ।
भुड़काइब क्रि० स० भुड़भुड़ाना, (बर्तन अथवा दर्वाजे को) हिलाना ।
भुडभुडाइब क्रि० स० भुड़-भुड़ की आवाज करना (दर्वाजे, बर्तन आदि में) ।
भुडभुडाब क्रि० अ० भुड़भुड होना, प्रे०-इब, -उब ।
भुतहा वि० पुं० भूतवाला; स्त्री०-ही; भूत+हा ।
भुताब क्रि० अ० भूत की भाँति व्यवहार करना, भूत हो जाना, डर-, भूत के डर से आक्रांत हो जाना, डरभुति जाब, इस प्रकार डर जाना ।
भुताही सं० स्त्री० भूतों के प्रकोप की निरंतरता, -होब,-परब, भूतों के प्रकोप होते रहना, भूत+आही ।
भुनगा सं० पुं० मच्छड़ की तरह का एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा ।
भुरका सं० पुं० दे० भरुका, स्त्री०-की, प्र० भो-।
भुरभुरा सं० पुं० गुबरैले की तरह के कीड़े जो गंदी जगह की मिट्टी चालते हैं,-लागब ।
भुरभुराइब क्रि० स० भुरभुराना, छिड़कना (आटे की भाँति) ।
भुर्र-भुर्र क्रि० वि० भुर्र-भुर्र शब्द करके (उड़ना), प्र० भुरर-भुरर ।
भुर्रा वि० खुला हुआ; जो गोली के रूप में बँधा न हो (तंबाकू, शक्कर आदि) ।
भुलभुलाइब क्रि० स० (फल आदि को) आग में थोड़ा सा भून लेना ।
भुलवाइब क्रि० स० भुलाना, भूलने में सहायता करना, गुम कर देना (व्यक्ति को, छोटे बच्चे आदि को); वै०-उब ।
भुलाइब क्रि० स० भुला देना, प्रे०-लवाइब, -उब ।
भुलाब क्रि० स० भूलना, भा० भुलावा,-देब, चरका या धोखा देना, प्रे० भुलाइब,-लवाइब,-उब; भुलान-भटका, भूला-भटका ।
भुलुर-भुलुर क्रि० वि० आँसू गिरा-गिराकर (रोना), अनु० ।
भुलैया सं० पुं० भूल जानेवाला, वै०-आ ।
भुलौआ सं० पुं० भुलावा ।
भुवन सं० पुं० भुवन, सं० ।
भुवर वि० पुं० भूरा; स्त्री०-रि, क्रि०-राब, भूरा हो जाना; वै०-अर, प्र० भू-, भा०-ई,-पन ।
भुवा सं० पुं० सफेद बाल की सी चीज जो कुछ फूलों तथा पेड़ों में से निकलती है;-क नदी मँ परब, व्यर्थ की कल्पना करते रहना; क्रि०-ब, फूलना, भुवा निकलने की स्थिति पर पहुँचना; वै० -आ, प्र० भू- ।
भुसइला सं० पुं० घर जिसमें भूसा रखा जाय; वै०-उला,-उल ।
भुसहा वि० पुं० जिसमें भूसा बहुत हो, स्त्री० -ही ।
भुहराइब क्रि० स० छिड़कना (सूखी बुकनी, दवा आदि); प्रे० रवाइब ।
भूँई क्रि० वि० ज़मीन पर, फर्श पर,-भूई, पैदल, स० भूमि ।
भूँकब क्रि० अ० भूँकना; व्यर्थ का और बार बार कहना, प्रे० भुँकाइब,-कवाइब ।
भूँखा वि० पुं० व्रती;-रहब, व्रत करना, स्त्री०-खी, -दूखा, भोजनहीन एवं दुखी ।
भूँखि सं० स्त्री० भूख,-लागब;-मारब, भूख को दबाना; क्रि० भुखाब, भूखा होना, मु० इच्छा, ग़र्ज़,-होब ।
भूँभुरि सं० स्त्री० आग से भरी हुई राख ।
भूका सं० पुं० सत्तू की तरह की पिसी हुई अन्न की चीज़ जिसे बिना दाँतवाले फाँक सकें, सतुवा-, खाने का सामान, रास्ते का सामान,-छोर, जो खाने की चीज़ भी छीन या चुरा ले; नीच ।
भूज सं० पुं० भार (दे०) रखने और नाज भूजने वाला, भड़भूजा, स्त्री० भुजइनि ।
भूजब क्रि० स० भूजना, भूनना, तङ्ग करना, दुःख देना, प्रे० भुजाइब -जवाइब ।
भूजा सं० पुं० चबेना, कुछ भी अन्न जो भुना हो, वि० चंट, अनुभवी; बहु अनुभव प्राप्त; स्त्री०-जी;

-छोर, जो चबेना भी चुरा या छीन ले. दुष्ट एवं नीच।
भूत सं० पुं० शैतान,-भवानी, मनुष्यों को तङ्ग करनेवाले देवी देवता;-लागब,-उतारब,-छोड़ाइब वि० भुतहा (जिसमें भूत हो),-ही, क्रि० भुताव, भूत की भाँति व्यवहार करना; दे० भुताही।
भूवा दे० भुवा।
भूसा सं० पुं० भुस।
भूसी सं० स्त्री० नाज का छिलका, वि० भुसिहा,-ही, क्रि० भुसिआव।
भेंट सं० स्त्री० मुलाकात, उपहार, रिश्वत,-करब,-होब; वै०-टि, क्रि०-टाव (मिलना),-ब, गले मिलना;-घाँट, रिश्वत, मिलना-जुलना,-देब।
भेंड़ सं० पुं० विघ्न, छिद्रान्वेषण;-पारब, छिद्रान्वेषण करना, किसी बनते हुए काम में अड़ङ्गा डाल देना।
भेइब क्रि० स० भिगोना; 'भीजब' का प्रे० रूप, प्रे०-वाइब; वै०-उब।
भेख सं० पुं० भेस; आडम्बरपूर्ण पहनावा,-बनाइब; प्र०-खा,-सा सं० वेश।
भेजब क्रि० स० भेजना प्रे०-वाइब,-जाइब।
भेंडा सं० पुं० भेड़ का नर; स्त्री०-ड़ी; क्रि०-ब, भेड़ी का गाभिन होना।
भेद सं० पुं० रहस्य, अतर;-परब;-भाव, भिन्न व्यवहार; सं० भिद; वि०-दिहा,-या भेद जाननेवाला।
भेभन सं० पुं० मुँह से निकला हुआ थूक, पानी आदि;-निकरब,-निकसब।
भेव सं० पुं० रहस्य, अंतर;-परब; शायद 'भेद' का दूसरा रूप।
भेस दे० भेख।
भैंसासुर सं० पुं० प्रसिद्ध राक्षस मु० बहुत खाने एवं सोनेवाला व्यक्ति; सुस्त व्यक्ति; सं० महिषासुर; वै० भइँ-।
भैआ दे० भैया।
भैनवहु सं० स्त्री भैने (दे०) की स्त्री।
भैनवार सं० पुं० बहिन के पुत्र, पुत्री आदि, यह शब्द समूहवाचक है। वै० भयन-।
भैने सं० पुं० स्त्री० बहिन का पुत्र या पुत्री, यह शब्द दोनों लिंगों में प्रयुक्त होता है। वै० भयनें, सं० भागिनेय।
भैया सं० पुं० बड़ा भाई, पटवारी; बड़े भाई या अन्य प्रिय व्यक्ति को संबोधित करने का शब्द, स्त्री० भउजी; वै० भइया; सं० भ्रातृ।
भैरव सं० पुं० प्रसिद्ध देवता, वै० भय-; सं०।
भैवदी सं० स्त्री० भाई का रिश्ता; वै०-वादी।
भैवा सं० पुं० भाई, अपनी उम्र के या छोटे लोगों को स्नेहपूर्वक संबोधित करने का शब्द, कहो-, नाहीं-, अरे-।
भोंकब क्रि० स० भोंकना; प्रे०-काइब,-कवाइब।
भोंकार सं० पुं० ज़ोर से रोने का स्वर,-छोड़ब, ज़ोर से रोना क्रि०-करब, जोर से रोना।
भोंड़ी सं० स्त्री० पेट का मध्य भाग; यह शब्द प्राय: धमकी देने के ही लिए प्रयुक्त होता है, उ० भोंड़ी फोरि देब, पेट फाड़ दूगा; सं० भ्रूण।
भोंपा सं० पुं० भोंपू,-बजाइब, रो देना; स्त्री०-पी।
भोंभों सं० पुं० 'भों भों' शब्द।
भोंसड़ा सं० पुं० स्त्री का गुह्यांग (गाली में); स्त्री०-ड़ी, तोरे-में, दु तोरी-में।
भोग सं० पुं० देवता का भोजन, स्त्री-संभोग,-लगाइब, भोजन प्रारंभ करना,-करब, मैथुन करना, सुख या दुःख पाना, क्रि०-ब, उपयोग करना, सहना, सं० भुज्।
भोंडा सं० पुं० लंबी वस्तु जिसमें आरपार बड़ा छेद हो; प्र०-ड़ा।
भोज सं० पुं० राजा भोज; कहा० कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली।
भोजन सं० पुं० खाना,-करब; सं०।
भोटिया सं० पुं० छोटा-मोटा एवं हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति।
भोथा वि० पुं० भद्दा एवं कम समझवाला व्यक्ति।
भोर सं० पुं० सवेरा,-होब,-करब, विलंब करना,-हरी, बहुत सवेरे,-हरें, सूर्योदय के पूर्व।
भोरइब क्रि० स० बहकाना, फँसाना, आकर्षित कर लेना (पुरुष-स्त्री का); प्रे०-वाइब, वै०-उब।
भोरका दे० भुरका।
भौंरा सं० पुं० भ्रमर; देस क-,चारों ओर घूमनेवाला स्त्री०-री; सं० भ्रमर।
भौंरी सं० स्त्री० बालों का घुमावदार चक्कर (मनुष्य के सिर पर या पशु की पीठ आदि पर);-करब, घूम-घूमकर माल बेचना, क्रि०-रिआइब, जल्दी से भाँवर घूमकर ब्याह कर लेना; दे० भाँवरि।
भौंह दे० भवँहि।
भौचकब क्रि० अ० भौचक्का हो जाना; प्रे०-काइब।
भौजाई दे० भउजाई,-जी।
भौन दे० भवन।

म

मंगर दे० मङ्गर।
मंगली दे० मङ्गली।
मँगाइब क्रि० स० मँगाना, प्रे०-गवाइब,-उब, वै० -उब।
मँगुरी सं० स्त्री० एक प्रकार की मछली, पुं० मंगुर (दे०)।
मजूर वि० स्वीकृत,-करब, 'मानना,-होब; भा०-री, स्वीकृति; फ़ा०, दे० मनजूर।
मडल वि० बहुत सा, असंख्य; सं०।
मंडली सं० स्त्री० बहुत लोगों का दल, गिरोह; तुल० खलमंडली बसै दिन राती।
मतर सं० पुं० मंत्र,-देब,-लेब, दीक्षा देना, लेना, माला-,-जंतर, वि०-रिहा, दीक्षित,-मारब,-करब, मंत्र की शक्ति प्रयुक्त करना; स०।
मंतरा सं० पुं० मात्रा, -देब,-लगाइब, सं०, झोरी-, थोड़ा-बहुत सामान, सारी संपत्ति (दरिद्र की)।
मंतरिहा वि० पुं० मंत्र लिया हुआ व्यक्ति, स्त्री० -ही।
मंतिरी सं० पुं० सलाहकार,-क पूजा, व्याह तथा जनेऊ के समय होनेवाली एक पूजा जो वर के माता-पिता करते हैं। सं० मातृका।
मंथरा स० स्त्री० कैकेयी की दासी जिसकी कथा रमायण में है।
मंद-मद क्रि० वि० धीरे-धीरे; प्र०-दें-दें।
मंदाग्नि सं० स्त्री० रोग जिसमें पाचन शक्ति मंद हो जाती है, सं०।
मदिर सं० पुं० मंदिर, सुन्दर घर, तुल० मंदिर ते मंदिर चढ़ि जाई।
मदी सं० स्त्री० सस्ती, बाजार में भावों के कम होने की स्थिति,-होब,-रहब, सस्ती-।
मंसा सं० पुं० इच्छा, उद्देश्य वै०-य, मनूसा, -फलब, इच्छापूर्ति होना (प्राय: आशीर्वाद रूप में प्रयुक्त-"तोहार मंसा फलै !"), सं० मनस्।
मइआ संबो० हे माता ! 'माई' (दे०) का रूप जो संबो० या भावावेश में प्रयुक्त होता है। सं० मातृ।
मइजिल सं० पुं० मंज़िल, दूर का स्थान; यक-, दुइ-, दूरी जो एक दिन में पूरी हो सके, फ़ा०।
मइनि सं०स्त्री० एक जंगली पेड़ और उसका फल।
मइल वि० पुं० मैला, गंदा; स्त्री०-लि, (२) मील; अं० माइल; दे० मील।
मइला सं० पुं० गू,-खाब, बुरा काम करना।
मइलाब क्रि० अ० मैला होना।
मइलि सं० स्त्री० मैल।
मई सं० स्त्री० मई का महीना; अं० मे।
मउका सं० पु० मौक़ा, अवसर, मौकः, वै०-वका (दे०)।
मउगा सं० पुं० पुरुष जो स्त्रियों की भाँति बोले या वस्त्र पहने, वै० मौगा।
मउज सं० पुं० आनंद, मन की लहर,-करब, मजा करना; वि०-जी, जो अपने मन की बात करे, मन-, भावावेश, मन-जी फ़ा० मौज (लहर)।
मउजा सं० पुं० गाँव।
मउति सं०स्त्री० मृत्यु; दुःखदायी बात, काम आदि, सं० मृत्यु; लै० मार्ट।
मउन वि० पुं० मौन, चुपचाप,-नी, जो मौन रहे, सं०।
मउना सं०पुं० मूज का टोकरा, स्त्री०-नी, डलिया।
मउर सं० पुं० मौर, दूल्हे के सिर पर रखने का फूल पत्तों का बना ताज; स्त्री०-री, मौर जो दुलहिन के सिर पर रखा जाता है। सं० मौलि (सिर); क्रि०-राइब, हिलाना, गाँड़ि-, व्यर्थ घूमते रहना।
मउसा स० पुं० मौसी का पति -सी, माँ की बहिन; वै०-सिआ,-या,-सिआउत भाई, मउसी का लड़का, कहा० चोर-चोर-भाई, सेंति क धान मउसिया क सराधि, आन्हरि मउसी चूमै मचवा, मैं जानौं मोरि बहिनि क बेटवा।-सियान, मौसी का घर या गाँव, वँ० मास, स०।
मउहारी दे० महुआ,-री।
मकना सं० पुं० पतला कपड़ा, वैं० फ-।
मकरा स० पुं० मकड़ा; स्त्री०-री, मकड़ी, (२) एक अन्न जिसकी बाल मकड़े की भाँति गोल-गोल होती है।
मकलाब क्रि० अ० चिल्लाकर दौड़ना (भैंस का), बिना काम के घूमते रहना; वै० म्ब-,-नाब; दे० मकुना।
मकाई सं० स्त्री० मक्का।
मकान सं० पुं० घर,-मालिक, घर का मालिक, फ़ा०।
मकाबिला सं० पुं० तुलना, आमना-सामना, बातचीत,-करब,-होब, फ़ा० मुकाबलः।
मकाम दे० मोकाम।
मकुना स० पुं० हाथी जिसके बाहरवाले दाँत न हों; छोटा हाथी।
मकुनी सं० स्त्री० मोटी रोटी जो मटर चने या जौ के आटे की बनती है।
मकूला सं० पुं० कहावत,-कहब।
मकोरब क्रि० स० धीरे-धीरे आराम से खाना, प्रे०-रवाइब, वै०-लब, मकोला (नर्म ताज़ा चारा)।

मखउड़ा सं० पुं० व्य० प्रसिद्ध स्थान जहाँ दशरथ ने पुत्र्येष्ठि यज्ञ किया था। यह अयोध्या के पास सरयू के उत्तर ओर है जहाँ प्रति वर्ष मेला लगता है। सं० मख।

मखउलिया सं० पुं० मज़ाक, हँसी;-उड़ाइब, अर० मखौल।

मखमल सं० पुं० प्रसिद्ध कपड़ा, बारीक कीमती वस्त्र,-यस, वै०-क ; फ़ा० मखमल।

मखाना सं० पुं० पानी में होनेवाला एक पौदा और उसका फल जिसके भुने हुए लावे दूध में खाये जाते हैं। वै० ताल-।

मगन वि० पुं० प्रसन्न,-होब,-रहब, स्त्री०-नि; सं० मग्न।

मगहर सं० पुं० व्य० अयोध्या तथा गोरखपुर के बीच प्रसिद्ध स्थान जहाँ कबीर की समाधि है। -रिश्रा, मगहर का बना (कपड़ा या गाढ़े का जोड़ा)।

मग्गह सं० पुं० मगध, काशी क्षेत्र के बाहर का प्रदेश।

मग्घा सं० पुं० मघा नक्षत्र।

मघाड़ब क्रि० स० माघ में खेत का जोतना, प्रे० -घड़वाइब।

मघोचर सं० पुं० सीधा-सादा देहाती; स्त्री०-रि; भा०-ई।

मङता सं० पुं० माँगनेवाला, याचक, स्त्री० -तिनि।

मङनी सं०स्त्री० उधार दी हुई वस्तु, उधार;-माँगब, -देब,-लेब,-लाइब,-आइब, (२) छोटी जातियों का ब्याह के पूर्व का रस्म जो ब्राह्मण ठाकुरों की तिलक की भाँति होता है,-होब,-करब।

मङरइलि सं० स्त्री० मँगरैल, एक मसाला।

मङरा सं० पुं० रोग या उसका कीड़ा जो आलू, शकरकन्द आदि में लगता है, क्रि०-ब, ऐसे रोग से ग्रस्त होना।

मङवाइब दे० मँगाइब।

मङ्ङन सं० पुं० भिखमंगा स्त्री०-नि।

मङ्ङर सं० पुं० मंगलवार, वै० मगर।

मङ्ङरि सं० स्त्री० छप्पर या खपरैल के बीच का भाग जो सबसे ऊँचे पर रहता है।

मङ्ङली वि० जिसकी जन्मपत्री में पति या पत्नी के शीघ्र मर जाने का योग हो।

मचक सं० स्त्री० मचकने की क्रिया।

मचकब क्रि० अ० मचक-मचक कर चलना, नखरा करना, नखरे की बातें करना, प्रे०-वाइब, दे० चमकब।

मचब क्रि० अ० मचना; प्रे०-चाइब,-वाइब,-उब।

मच्चर-मचर सं०पुं० जूते या चमड़े की अन्य वस्तु की आवाज़,-करब,-होब।

मचवा सं० पुं० बड़ी मचिया; सं० मंच, कहा० आन्हरि मटर्सी चूमै मचवा।

मचाइब क्रि०स० मचाना;'मचब' का प्रे०;प्रे०-चवाइब,-उब, वै०-उब।

मचान सं० पुं० खेत की रखवाली करने के लिए गड़ा माचा (दे०) जिस पर खाट प्रायः बँधी रहती है, वै०-ना, माचा।

मचिआ स० स्त्री० रस्सी या नेवार से बुनी छोटी चौकी, वै०-या; पुं०-चवा (दे०)।

मचिआइब क्रि० स० नाधना (बैलों को), प० अ०।

मछरिहा वि० पुं० मछलीवाला; जो मछली खाता हो, जिसमें मछली पकती हो, स्त्री०-ही; सं० मत्स्य।

मछरी सं० स्त्री० मछली;-कुछरी, निकृष्ट खाद्य, कहा० मछरी न कुछरी दयाल बहू उछरी, सं० मत्स्य।

मछवाह सं० पुं० मछली मारनेवाला; वै०-छु-, भा०-ही, मछली मारने का पेशा।

मजकिहा वि० पुं० मज़ाक करनेवाला, स्त्री०-ही, मज़ाक।

मजकूर वि० उल्लिखित; प्रायः कचहरी के काग़ज़ों में प्रयुक्त।

मजका सं० पुं० हास्य,-मारब, मज़े करना।

मजगर वि० पुं० बढ़िया, अच्छा; स्त्री०-रि,मज़ा +गर; क्रि० वि०-रें, सुख में, अच्छी स्थिति में।

मजगोदरा वि० पुं० बीचवाला; जो किसी ओर का न हो, स्त्री०-री; वै०-र; सं० मध्य।

मजदूर दे० मजूर।

मजब क्रि० अ० मँजना, साफ होना, प्रे० माजब, मजाइब, (दे०), सं० मज।

मजबूत वि० पुं० सबल, पुष्ट, स्त्री०-ति, भा०-ती, वै०-गृत।

मजबूर वि० पुं० बाध्य,-करब,-होब; भा०-री।

मजरुआ सं० पुं० वह खेत जिसमें खेती होती हो, गैर-, वह खेत या भूमि जिसमें कृषि न हो, परती।

मजलिस सं० स्त्री० सभा,-लागब।

मजहम सं० पुं० भेद, रहस्य,-पाइब।

मजा सं० पुं० आनंद, सुख;-करब,-देब,-लेब, वि० -दार,-जेदार,-री।

मजाइब क्रि० स० मजवाना, 'माजब' का प्रे०; वै० -उब; भा०-ई।

मजाक सं० पुं० हँसी,-करब, वि०-की,-जकिहा (दे०), प्र०-क्रिया।

मजाज सं० पुं० अधिकार,-रहब,-होब।

मजाल सं० पुं० हिम्मत, बल,-होब,-रहब।

मजीठ सं० पुं० मजीठा जिसमें लाल रंग होता है।

मजीरा सं० पुं० मजीरा,-बजाइब।

मजुआब क्रि०अ० पीब से भर जाना (अंग, फोड़ा आदि); दे० माजु; सं० मज्जा।

मजुरिहा वि० पुं० मजदूरी का, स्त्री०-ही; दे० मजूरी।
मजूर सं० पुं० मज़दूर, स्त्री०-रिनि,-जुरनी, भा० -री, मजदूरी,-दरहा,-ही, पुरुष या स्त्री जो इधर-उधर घूमकर मजूरी करे।
मजैया सं० पुं० माँजनेवाला, प्रे०-जवैया।
मझधार सं० पुं० बीच की धारा, अधूरा काम; नि.सहाय स्थिति,-म छोड़ब, सं० मध्य+धार।
मझवाइब क्रि० स० मझाने में सहायता करना; दे० मझाइब।
मझाइब क्रि० स० (प्रांत या व्यक्तियों में) घूम-घूम कर अनुभव प्राप्त करना, जानना, भीतर जाना, सं० मध्य।
मझार अव्य० बीच में, प्राय: गीतों में और शब्दों के पीछे प्रयुक्त,-ठाईं, बीच में ही; गाँव-, गाँव के बीच में; सं० मध्य।
मझिअरिया सं० स्त्री० घर का वह भाग जहाँ भोजन बने, वै०-आ, सं० मध्य।
मझोला वि० पुं० बीच का, न बहुत बड़ा, न छोटा, स्त्री०-ली, सं० मध्य।
मटक सं० स्त्री० मटकने का ढंग, नखरा, चटक-, बाहरी दिखावट, क्रि०-ब,-काइब।
मटकब क्रि० अ० अंगों को टेढ़ा-मेढ़ा करके चलना, बोलना आदि; प्रे०-काइब, मुँह या हाथ टेढ़ा करके दूसरे को छेड़ने के लिए कुछ कहना।
मटका सं० पुं० (विशेषत: पशुओं की) आँखों से निकला हुआ अधिक मात्रा में एकत्रित सफ़ेद कीचड़,-बहब।
मटहा वि० पुं० जिसमें माटा (दे०) हों, स्त्री० -ही।
मट्टी सं० स्त्री० मिट्टी,-करब,-होब, व्यर्थ करना या होना, (२) शव;-देब, गाड़ना, दफ़न करना, सं० मृत्तिका, क्रि० मटिआइब, मिट्टी से साफ़ करना।
मट्ठर वि० पुं० सुस्त; जिसे काम करने की इच्छा न हो, स्त्री०-रि, भा०-ई, सं० मंथर।
मट्ठा दे० माठा।
मठ सं० पुं० मठ; कहा० बहुते जोगी मठ उजार; स्त्री०-ठिया, छोटा मठ, झोपड़ा।
मठहा वि० पुं० जिसमें मट्ठा हो (घी); दे० माठा।
मठारब क्रि० स० बार-बार जोतना, मु० किसी बात को अनेक बार कहते रहना।
मठाहिन वि० पुं० मट्ठे की गंधवाला,-आइब।
मठिआ सं० स्त्री० छोटा मठ, कुटी, झोपड़ी; दे० मठ।
मठेठब क्रि० स० (बात) सुनकर कुछ न करना, टाल देना, प्रे०-ठवाइब।
मडई सं० स्त्री० छप्पर, झोपड़ी, पुं० मड़हा, वै० -ड़ैया।
मड़क दे० मढ़क।
मड़राब क्रि० अ० मँड़राना, किनारे-किनारे चक्कर रहना, सं० मंडल।
मड़री दे० मेड़री।
मड़वा सं० पुं० ब्याह या जनेऊ का मंडप,-गाड़ब, -गड़ाइब; सं० मंडप।
मड़ुहा सं० पुं० छप्पर का ओसारा (दे०), स्त्री० -ई लघु०-हला,-हिला, फ़ा० मरहलः।
मड़िआ सं० स्त्री० कीचड़; तालाब या नदी के भीतर का कीचड़,-मारब, (भैंस का) पानी के भीतर डूबकर कीचड़ में लोटना, वै०-या।
मड़िहा वि० पुं० जिसमें माड़ी (दे०) हो, स्त्री० -ही, वै०-आर, नया (कपड़ा), जो पानी में भिगोया न हो।
मडुआ सं० पुं० एक अन्न जो काला होता है, वै० मे-।
मडैया दे० मड़ई, राम-, एकांत घर, सं० मठ।
मढ़ सं० पुं० बोझ, व्यर्थ का उत्तरदायित्व, व्यक्ति जिसकी उपस्थिति से ऐसा उत्तरदायित्व बढ़े।
मढ़क सं० पुं० बाधा, सं० मरक (महामारी)।
मढ़ब क्रि० स० मढ़ देना, लाद देना, प्रे०-ढ़ाइब।
मत सं० पुं० राय, सलाह,-देब,-मिलब,-लेब, प्र० -ता; सं०।
मतलब सं० पुं० उद्देश्य, अर्थ, वि०-बी, स्वार्थी, -बी यार, परम स्वार्थी,-निकारब,-काढ़ब।
मतवना वि० पुं० जिसके खाने से सिर घूमने लगे (फल,-अन्न आदि), स्त्री०-नी (कोदई); दे० मताइब।
मतवा सं० स्त्री० बूढ़ी माँ, हे माँ!,-जी,-राम; दू-, ज-! यह शब्द परम श्रद्धा दिखाने एवं प्राय. संबोधनार्थ ही प्रयोग में आता है। सं० मातृ।
मतवाइब क्रि० स० मता देना; पागल कर देना, 'मातब' (दे०) का प्रे० रूप, सं० मत्त।
मताइब क्रि० स० सिर घुमा देना, दे० मातब, भा०-ई।
मति सं० स्त्री० बुद्धि; प्रायः "मति भरष्ट होब,-करब" आदि प्रयोगों में ही यह शब्द आता है। (२) मत, दे० जिनि, दूसरे अर्थ में यह 'मत' का प्र० रूप है।
मत्थवानि सं० स्त्री० मत्थे में पानी स्पर्श करने की क्रिया,-करब, यह क्रिया किसी तीर्थ स्थान पर तब की जाती है जब या तो स्नान करनेवाला जल्दी में हो या बीमारी के कारण स्नान न कर सके।
मथब क्रि० स० मथना, प्रे०-थाइब,-थवाइब, सं०।
मथुरा सं० पुं० प्रसिद्ध नगर,-जी,-बिन्द्राबन, ब्रज-धाम।
मथुरिआ वि० पुं० मथुरावाली,-चौबे।
मद सं० पुं० घमंड, गर्व,-करब,-होब,-भरा, नशीला,-होल, गर्व या नशे में चूर, सं०।

मदति सं० स्त्री० मदद, मजदूरों का झुंड,-करब, -लागव, मदद ।
मदनी सं० स्त्री० स्त्री का गुप्तांग; मदन का घर, गालियों के गीतों में, वै० मे-।
मदरसा सं० पुं० स्कूल, वि०-सिहा, पढ़नेवाला; अर०-सः ।
मदर्रिस सं० पुं० अध्यापक; वै० मु-, मो-।
मदामी वि० सदा रहने या होनेवाला; बारहमास चलनेवाला; वै० मो-।
मदार सं० पुं० आक, सं० मंदार ।
मदारी सं० पु० बंदर नचानेवाला।
मदाहिन वि० पुराने गुड़ या राब की गंधवाला, -आइब, ऐसी गंध देना ।
मदोवरि सं० स्त्री० मंदोदरी, रानी-, रावण की रानी, प्राय: गीतों में प्रयुक्त, सं० ।
मद्दा वि० पुं० सस्ता, स्त्री०-दी ।
मद्धिम वि० कम, द्वितीय श्रेणी का,-होब,-परब, कम हो जाना (दर्द आदि), क्रि०-धिमाब, घटना, कम होना, सं० मध्यम ।
मद्धे क्रि० वि० हिसाब में, सम्बन्ध में, सं० मध्य, यह शब्द प्राय: हिसाब सम्बन्धी है ।
मधन्ध वि० पुं० सुस्त; भा०-ई, स्त्री०-धि ।
मधु सं० स्त्री० शहद,-कै माछी, मधुमक्खी ।
मन सं० पुं० हृदय,-करब, इच्छा करना;-होब, -राखब, इच्छापूर्ति करना,-लगाइब;-जउकी, जो अपनी इच्छा से ही प्रेरित होकर काम करे,-पवन, स्वतन्त्र इच्छा;-चित, पूरा ध्यान ।
मनई सं० पुं० मनुष्य, व्यक्ति,-तनई, नौकर-चाकर ।
मनउती दे० मनौती ।
मनकब क्रि० अ० धीरे-धीरे आवाज़ करना, असंतोष प्रगट करना, दे० भनक, भनकब, मिनकब ।
मनका सं०पुं० छोटी माला, जपने की माला,कबीर-"करका मन का छाडिकै, मनका मनका फेर"।
मनगढ़ंत वि० पुं० मन से गढ़ी हुई (बात), झूठी, काल्पनिक ।
मनगौ सं० स्त्री० एक प्रकार का अच्छा गन्ना ।
मनचलाक वि० जिसका मन चंचल हो, लालची; अनियंत्रित मनवाला, स्त्री०-कि, भा०-लकई ।
मनचाहा वि० पुं० मनवांछित; स्त्री०-ही ।
मनवनिया सं० स्त्री० मनाने की कोशिश,-करब, -होब; वै०-या,-नावनि ।
मनाइब क्रि० स० मनाना, प्रार्थना करना; वै०-उब, प्रे०-नवाइब ।
मनाही सं० स्त्री० मना करने की बात, वै०मि-।
मनि सं० स्त्री० मणि;-बरब, चमकना, चेहरे पर रोब रहना, सं० ।
मनिहार सं० पु० दूकानदार जो काँच तथा स्त्रियों के शृंगार का सामान बेचता हो, स्त्री०-रिन, भा० -री, सं० मणि + हार ।
मनीजर दे० मुनीजर ।
मनुआ सं० पुं० मन;-दर्र, ये शब्द छत पर चढ़कर गाँव की स्त्रियाँ उस दिन चिल्लाती हैं जब लडके का व्याह हो चुकता है। उस दिन दूल्हे के घर पर पूरा नाटक होता है और उसकी माँ का मजाक उड़ता है ।
मनुहारि सं० स्त्री० फुसलाने या मनाने की क्रिया, -करब,-होब ।
मनू सं० पुं० मनु,-जी,-महराज, सं० ।
मने क्रि० वि० भला, जरा सोचिये, सं० मन्ये (मैं समझता हूँ); वै०-नौ ।
मनेजर दे० मुनीजर ।
मनेआ सं० पुं० आदमी, नौकर, वै०-वा ।
मनैया सं० पुं० मनानेवाला; प्रे०-नवैया ।
मनो क्रि० वि० जैसे, मानो; वै०-नौ, मा-।
मनोकानिका सं० पुं० काशी का प्रसिद्ध मन-कर्णिका घाट ।
मनोकामना सं० स्त्री० हृदय की इच्छा, सं० मनः +कामना, तुल० पूजहिं मन कामना तुम्हारी ।
मनोरथ सं० पुं० मन की अभिलाषा ।
मनौती सं० स्त्री० किसी देवता को मानी हुई वस्तु या की गई प्रतिज्ञा,-मानब, वै०-नउती ।
ममता सं० स्त्री० अपनापन, प्रेम;-करब,-होब ।
ममानिअत सं० स्त्री० मनाही, रोक,-होब,-करब; वै०-यत; मु-।
ममारक सं० पुं० मुबारक,-करब,-होब,-रहब, वै० -ख; मुबारक; का०ममरखी (बधाई) ।
ममिआउत वि० मामा के यहाँ का,-भाई, मामा का लड़का,-बहिन, मामा की लड़की ।
ममिआ ससुर सं० पुं० पति का मामा, स्त्री० -सासु ।
ममूली वि० साधारण ।
मय अव्य० साथ ।
मया सं० स्त्री० प्रेम,-करब,-लागब,-होब, क्रि०-ब, प्रेम करना, स्नेह में व्याकुल होना ।
मरकब क्रि० अ० टूटने के पूर्व की सी आवाज करना, प्रे०-काइब, करीब-करीब तोड़ देना ।
मरकहा वि० पुं० जो मारता हो, बदमाश; स्त्री० -ही ।
मरगी सं० स्त्री० (वंश में) मृत्यु हो जाने की अवस्था,-परब, फा० मर्ग (मृत्यु) + ई, भो०-की ।
मरघट सं० पुं० स्मशान, दे० मुर्दघट्टा; मर + घाट ।
मरचा सं० पुं० लाल मिर्च, स्त्री० मर्चि, मरिच (काली मिर्च),-यस, बहुत कड़वा,-लागब, बहुत बुरा लगना, वि०-चहा, लाल मिर्चवाला (खेत, बर्तन आदि) ।
मरजि सं०स्त्री० रोग, वि०-हा,-ही, मर्ज, वै०मर्जि ।
मरजी सं० स्त्री० इच्छा, कृपा;-करब,-होब, कृपा करना, होना; मर्जी ।

मरट्ठा दे० मरहठा।
मरतकहा वि० पुं० दुबला-पतला, बीमार; मरणासन्न; स्त्री०-ही, सं० मृत्यु।
मरदई सं० स्त्री० बहादुरी, मर्द का सा व्यवहार, -करब; मर्द+ई।
मरदवा संबो० हत्तेरे की! भले आदमी! वै०-दे! -दे आदमी!
मरन सं० पुं० मरण, मृत्यु -होब, स्त्री०-नि, परेशानी, आफत,-नी,-नी करनी, मृत्यु सम्बन्धी कार्यक्रम।
मरब क्रि० अ० मरना, कष्ट करना, नष्ट होना, प्रे० मारब, मरवाइब, जरब-, सब कुछ करना, दुःख उठाना, सं० मृ।
मरभुक्खा सं० पुं० वह व्यक्ति जो भूख से मर रहा हो, स्त्री०-खी।
मरम सं० पुं० मर्म, भेद, रहस्य।
मरमराब क्रि० अ० मर्र मर्र शब्द करना, टूटने के निकट होना।
मरमहित सं० पुं० विशेष प्रेम करनेवाला, घनिष्ठ सवंधी, हित-, खास लोग, सं० मर्म+हित।
मरम्मति सं० स्त्री० मरम्मत, प्रबंध,-करब,-होब।
मरर-मरर सं० पुं० मर्र-मर्र की आवाज,-करब, -होब।
मरलहा वि० पुं० (अन्न) जो मारा हुआ हो, जिसमें पाला या ओला आदि लगा हो, स्त्री०-ही, वै० -रलहा,-ही।
मरवट सं० पुं० पेटुआ (दे०) या सन जो पानी में भिगोया न गया हो, मजबूत सन।
मरवाइब क्रि० स० मरवाना।
मरसा सं० पुं० प्रसिद्ध साग, वि०-सहा (खेत) जिसमें मरसा बोया गया हो।
मरहठा सं० पुं० महाराष्ट्र देश का निवासी; स्त्री० -ठिन,-नि, वै०-राठा, प्र०-ट्ठा।
मरहला दे० मड़हा।
मरा वि० पुं० मृत, स्त्री०-री।
मराइब दे० मरब, वै०-उब, भा०-ई, मरने या मारने की क्रिया, मुँह-, व्यर्थ का काम करना।
मरायल वि० पुं० मरने के निकट, दबा हुआ, निर्बल, स्त्री०-लि, वै० मरियल।
मराव सं० पुं० मराने का कार्यक्रम, मछरि-, मछली मारने का कार्यक्रम, शोरगुल का काम।
मरिच दे० मरचा।
मरियल वि० पुं० मरणासन्न, दुबला-पतला, स्त्री० -लि।
मरी सं० स्त्री० ग्राम देवी जिन्हें मरीमाई भी कहते हैं।
मरीज वि० पुं० रोगी, स्त्री०-जि।
मरु क्रि० अ० मर,-सारे, (साले तू मर) हत्तेरे की! यह वाक्यांश ऐसे समय पर कहकर किसी छोटे को संबोधित किया जाता है जब वह ठीक काम न कर रहा हो।

मरुआ सं० पुं० एक पौदा जिसका पत्ता तथा फूल देवी को चढ़ाया जाता है, गीतों में प्राय, "दवना मरुअवा" (दे० दवना) आता है।
मरोरब क्रि० स० (किसी अंग को) ऐंठ देना, प्रे० -रवाइब; वै० मि-।
मर्द स० पुं० पुरुष,-मनई,बहादुर व्यक्ति, क्रि०-ब, पूरा मर्द हो जाना (लड़के का), बालिग होना।
मलग सं० पुं० निर्जन स्थान में रहनेवाला मुसलिम भूत।
मल स० पुं० मैल, कचड़ा, शरीर के भीतर का मैल, सं०।
मलगा सं० पुं० एक छोटी मछली जो पतली और चिकनी होती है।
मलब क्रि० स० मलना, प्रे०-लाइब,-उब,-लवाइब, सं० मल=मैल (उतारना, निकालना)।
मलमल सं० पुं० प्रसिद्ध बारीक कपड़ा।
मलयागिर सं० पुं० एक पहाड़ जिसमें चंदन होता है,-चन्नन, वहाँ होनेवाला चंदन।
मलहम सं० पुं० मरहम, घाव पर लगाने की दवा, -पट्टी करब, ऐसी दवा करना, सेवा करना।
मलाई स० स्त्री० दूध की मलाई, (२) मलने की क्रिया,-दलाई।
मलाल सं० पुं० शिकायत एवं दुःख का भाव; -करब,-होब,।
मलिआ सं० स्त्री० मिट्टी की लुटिया, वै०-या।
मलिकई सं० स्त्री० मालिक का काम,-करब,-सम्हारब, दे० मालिक।
मलिच्छ वि० पु० गंदा, अपवित्र, भा०-ई,-पन, सं० म्लेच्छ।
मलीदा स० पुं० शक्कर घी एवं आटे का बना भोजन, बढ़िया खाद्य, फा० मलीदः (मला हुआ)।
मलीन वि० पुं० (चेहरा) जिस पर आभा न हो, भा०-लिनई,-लिनपन, सं०।
मलूकदास सं० पुं० प्रसिद्ध संत कवि, प्रायः "दासमालूका" की छाप से इनके पद गाये जाते हैं।
मल्लाह सं० पुं० एक जाति के लोग जो मछली मारने तथा नाव चलाने का काम करते हैं। अ० मलह (नमक), नमक बनाने वाला, ये लोग समुद्र के किनारे रहकर पहले नमक भी बनाते थे। -ही, नदीपार करने का कर, मल्लाह की मजदूरी।
मल्हार सं० पुं० प्रसिद्ध राग जो वर्षा में गाया जाता है। वै०-लार।
मवका सं० पुं० अवसर, प्र०-क्का, मौक,-परब, -पाइब,-रहब।
मवक्किल सं० पुं० वकील के पास जानेवाला व्यक्ति।
मवजा सं० पुं० गाँव, वै०-उजा, मौ-, दे० मव-, मौजूअ।
मवजी वि० जिसके मन में तरंग आवे, आनंद

करनेवाला;-उजी, वै० मौजी; फा० मौज (तरंग) दे० मउज।
मवजूद वि० वर्तमान, उपस्थित, वै० मौ-, मह-, फा०।
मवनी दे० मउन, मउना।
मवला वि० मस्त; अवला-, मनमौजी; अर० मौला।
मवसिआन दे० मउसिआ।
मवादि सं० स्त्री० पीब, मवाद;-परब, पीब पड़ जाना।
मवेसी सं० पुं० जानवर, पालतू पशु; मवेशी -खाना काँजीहौस (दे०)।
मसक सं० पुं० मशक, भिश्ती के पानी लाने का चमड़ा।
मसकब क्रि० स० दबाकर फोड़ना, फाड़ना, इस प्रकार फटना, फूटना; प्रे०- काइब।
मसका सं० पुं० मक्खन।
मसकुर सं० पुं० मसूड़ा।
मसखरा सं० पुं० हँसी करनेवाला;-री, हँसी, भा०-पन।
मसनंद सं० पुं० मसनद, गद्दी-तकिया; गद्दी।
मसनिआइब क्रि० स० थोड़ा पानी मिलाकर सानना; प्रे०-वाइब।
मसमस वि० पुं० कुछ भीगा हुआ; स्त्री०-सि; क्रि० -साब, नमी के कारण गिर जाना (दीवार आदि का)।
मसरफ सं० पुं० काम, उपयोग,-लायक, उपयोगी।
मसलहति सं० स्त्री० नीति, रहस्य।
मसवदा सं० पुं० पांडुलिपि; अदालती लेख; वै० -सौदा, मसविदः।
मसहरी सं० स्त्री० मच्छड़दानी,-लगाइब, वै०-से-, सं० मशक+हृ (जिसमें मच्छड़ न लगें)।
मसहूर वि० पुं० प्रसिद्ध स्त्री०-रि, मशहूर।
मसा सं० पुं० मच्छड़; स० मशक,-माछी।
मसान सं० पुं० स्मशान,-मामरी, व्यर्थ का डर; -मामरी देखाइब, सं० स्मशान।
मसाल सं० पुं० मशाल,-देखाइब,।
मसाला सं० पुं० मसाला; वि०-दार।
मसी सं० स्त्री० रोशनाई; सं० मसि।
मसीन सं० स्त्री० मशीन, यंत्र, अं०; (२) वि० पुं० सुस्त, स्त्री०-नि।
मसुआही सं० स्त्री० मांस (विशेषतः सूअर का) खाने का समय;-करब,-होब।
मसुगर वि० पुं० मांस वाला, जिसमें अधिक मांस हो; स्त्री०-रि, सं० मांस+फा० गर।
मसुड़ी सं० स्त्री० मसूर।
मस्त वि० पुं० मस्त, स्त्री०-स्ति, भा०-स्ती, वै०-हूब, -हती, क्रि०-स्ताब,-हवाब।
महंत सं० पुं० मंदिर का सर्वोच्च अधिकारी, स्त्री० -न्थिनि, वै०-न्थ, भा०-न्थी,-न्थी,-न्थई।
महक सं० स्त्री० सुगंध, क्रि०-कब सुगंध देना, वि० -कौआ,-दार।
महङ वि० पुं० महँगा; स्त्री०-ङि, भा०-ङी, महँगाई।
महजनई सं० स्त्री० महाजनी,-करब, दे० महाजन।
महतीनि सं० स्त्री० मालकिन,-बनब; सं० महत्।
महतो सं० पुं० (वैश्यों में) ससुर या जेठ; वै० -तौ; सं० महत् (बड़ा)।
महब क्रि० स० मथना, मट्ठा तैयार करना; प्रे० -हाइब।
महमह महमह क्रि० वि० ज़ोर से (सुगंध फैलना), -महकब।
महरा सं० पु० कहार, स्त्री०-रिन,-नि।
महराज स० पुं० महाराजा; ब्राह्मण, भोजन बनानेवाला; स्त्री०-जिन,-नि।
महला सं० पुं० मकान की एक मंजिल, यक-, दु-, ति-, चौ-आदि।
महलि सं० स्त्री० महल; पत्नी (पहली-, पहली स्त्री, दुसरी-)।
महल्ला सं०पुं०नगर का एक भाग, टोला-,पड़ोस।
महा वि० पुं० बड़ा,-भारी, बहुत बड़ा: स्त्री०-ही, (२) महाब्राह्मण;-खाब, मरने के ११वें दिन महापात्र का भोजन।
महाजन सं० पुं० मालदार व्यक्ति; उधार देनेवाला, भा०-नी, महजनई (दे०)।
महातम सं० पुं० महात्म्य, महत्व, स०।
महातमा सं० पुं० महापुरुष, व्यं० बदमाश, जिसका व्यवहार समझ में न आवे, सं०।
महावरा सं० पुं० अभ्यास, आदत,-करब,-होब।
महाभारत सं० पुं० विलंब से होनेवाली बात, -करब,-होब, वै० महनाभारत, प्र०-थ।
महामाई सं० स्त्री० महामाया, दुर्गाजी, काली, तुहैं-लेयँ, तू मरजा! सं० महामारी,-माया।
महाल सं० पुं० गाँव का एक भाग, (२) वि० कठिन।
महावरि दे० मेहावरि।
महास सं० पुं० महान् व्यक्ति, महाशय, सं० महाशय।
महिआब क्रि० अ० वर्षा के लक्षण दिखाई पड़ना; चारों ओर से हवा चलकर बादल छाना, सं०।
महिना सं० पुं० महीना,-महिन्ना, प्रतिमास, -नवारी, प्रतिमास का, मासिक धर्म,-होब।
महिमा सं० स्त्री० महत्व, महिमा, सं०।
महिलपन सं० पुं० दोनों ओर रहने का स्वभाव; वै०-लई।
महीन वि० पुं० बारीक, पते की (बात), दे० मेहीं, -कातब, पते की बात कहना; स्त्री०-नि।
महीना सं० पुं० मास, दे० महिना।
महुअरि सं० स्त्री० एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता है।

महुआ सं० पुं० प्रसिद्ध पेड़ जिसकी लकड़ी अच्छी होती और फल-फूल बड़े काम आते हैं,-री महुए का बाग; वै०-वा ।
महुलाब क्रि० अ० मुरझाना,-लान, मुरझाया हुआ ।
महूँ सर्व० मैं भी,-क, मुझको भी ।
महूरत सं०पुं० मुहूर्त, अवसर,-करब, प्रारंभ करना; सं० ।
महेर सं० पुं० रुकावट, विघ्न,-जोतब,-करब,-डारब, वि०-री, विघ्न करनेवाला, बाधक ।
महेल्ला सं० पुं० खड़े उर्द या मसूर की खिचड़ी जिसमें खूब मसाला पड़ा हो ।
महेसी सं० स्त्री० बवासीर; वि०-सिहा, जिसे बवासीर हो; स्त्री०-ही ।
महोखा स० पुं० एक बड़ी चिड़िया जो लाल-काले रंग की होती है, वै०-ख,-रंग, उस चिड़िया की भाँति का रंग, काला कत्थई रंग ।
महोबा सं० पुं० प्रसिद्ध स्थान जो आल्हा के गीत में वर्णित है और जहाँ का पान भी विख्यात है ।
माँगि सं० स्त्री० माँग,-काढ़ब, माँग निकालना ।
माई सं० स्त्री० माता, महा-(दे०), महामाई परैं, देवी का प्रकोप हो !,-क लाल, सभ्रांत व्यक्ति, स० मातृ ।
माख सं० पुं० प्रेमपूर्ण शिकायत;-करब, क्रि०-ब, बुरा मानना; दे० अमरख,-ब ।
माखन दे० मसका ।
माघ स० पुं० माघ का महीना;-घी, माघ में पड़ने वाला (दिन, पूर्णिमा, अमावस्या आदि), क्रि० मघाड़ब (दे०) माघ में जोतना, सं० ।
माङन सं० पुं० वरदान; माँगी हुई वस्तु,-माङब, गीतों में "मङन" ।
माङब क्रि० स० माँगना,-खाव, भीख माँगकर खाना, भीखि-, प्रे० मङाइब,-उब, मङवाइब ।
माचा स० पुं० मचान,-गाड़ब, सं० मंच ।
माछी सं० स्त्री० मक्खी,-लागब,-बैठब (घाव पर मक्खी का अंडा दे देना), वनकै-, तोहार-, उनके या तुम्हारे पितर लोग (ऐसा करेंगे) मुहँ माँ-आवत जात है, व्यक्ति बहुत सुस्त है । क्रि० मछिआब, (पशु का) तुराने की कोशिश करना, घबराना ।
माजब क्रि० स० माजना, साफ करना, प्रे०मजाइब, -उब, सं० मार्जय ।
माजु सं० स्त्री० मवाद ।
माझा सं० पुं० शरीर का मध्य भाग (कमर) कहा० यही जुवानीं माझा ढील ! (२) नदी के किनारे का प्रदेश, वि० मझहा, ऐसे प्रदेश का निवासी, स० मध्य ।
माटा सं० पुं० लाल चींटा,-लागब, चिउँटा-।
माटी स० स्त्री० मिट्टी, शव,-देब, गाड़ देना, दफन करना, वि० मटिहा, मु०-होब,-करब, व्यर्थ हो जाना या करना, दे० मट्टी, सं० मृत्तिका, क्रि० मटिआइब ।
माठा सं० पुं० मट्ठा, जिउ-करब, परेशान करना; जिउ-होब ।
माड सं० पुं० पक्ते चावलों का सफेद पानी, -काढ़ब, स्त्री०-ड़ी, सफेद पानी जो नये वस्त्रों में से धोने पर निकलता है;-ड़ी देब, कपड़े पर कलप देना, शव के दाह के बाद "माड़ काढ़ने" का कृत्य होता है जिसमें चावल का माड़ उड़द की दाल के साथ एक दोने में रखकर मृतात्मा को अर्पण किया जाता है ।
माडव सं० पुं० मंडप (व्याह एवं जनेऊ के समय का),-गाड़ब ।
माडवारी सं० पुं० मारवाड़ का निवासी, व्यं० धन का लोभी ।
मात सं० स्त्री० माता; प्रायः व्यक्तिवाचक शब्दों के पूर्व लगता है, मात जानकी, मात केकयी, वै०-तु, सं० मातृ ।
मातब क्रि० अ० नशे में आना; प्रे० मताइब,-उब, -तवाइब,-उब, सं० मत्त, वि० माता,-ती ।
माता सं० स्त्री० माँ, हे माँ (स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त, नाहीं-, हु-), वै० मतवा, सं० मातृ ।
माथ सं० पुं० मत्था,-थें, ऊपर, हमरे-, तोहरे-, सं० मस्तक ।
मादा सं० स्त्री० स्त्री जाति, नर नहीं ।
मान सं० पुं० आदर,-करब,-राखब, क्रि०-ब,-जान, आदर-सत्कार; सं० ।
मानब क्रि० स० मानना, प्रेम करना; प्रे० मनाइब, -उब,-नवाइब,-उब,-जानब, आदर एव प्रेम करना ।
माना सं० पुं० लकड़ी का एक वर्तन जिसमें नाज, दही, दूध आदि नापा जाता है, यक-, दुइ-।
मानी स० पुं० १६ सेर का तौल; एक मानी में १६ सेई (दे०) होती हैं ।
माफिक वि० अनुकूल ।
माफी सं० स्त्री० क्षमा, (२) भूमि या अन्य संपत्ति जो बिना मूल्य प्राप्त हो, देब,-पाइब ।
मामा सं० पुं० माता का भाई, स्त्री०-मी, मामा की स्त्री, कउआ क (दे० कउआ-) ।
मामूली वि० साधारण ।
माया सं० स्त्री० माया, मोह-,-जाल, सं० ।
मारक सं० पुं० रोकनेवाली, बंद करनेवाली (औषध), जैसे कफ कै-, पित्त कै-, वै०-ग ।
मारकीन सं० पुं० एक सफेद कपड़ा; वै०-लन-।
मारग सं० पुं० रास्ता, सं० मार्ग ।
मारन सं० पुं० मारण, मार डालने का मंत्र, उपचार आदि, सं० ।
मारफत अव्य० द्वारा ।
मारब क्रि० स० मारना;-पीटब,-फाटब; प्रे० मराइब -रवाइब,-उब ।

मारु सं० स्त्री० मार; लड़ाई,-करब, टूट पड़ना, किसी वस्तु के लिए बहुत प्रयत्न करना, ललचाना, -काट, मार-काट।
मारू वि० युद्ध सम्बन्धी (बाजा), जिसकी प्रेरणा से मार (लड़ाई) हो।
माल सं० पुं० द्रव्य, रुपया-पैसा -टाल; (२) बढ़िया पदार्थ -खाब,-उड़ाइब; खजाना. वि०-दार, -वर, धनी -पुआ, एक प्रकार का पकवान।
माला सं० स्त्री० माला जप-।
मालिस सं० स्त्री० तेल या औषध मलने की क्रिया-करब,-होब।
माली सं० पुं० फूल तथा बाग का काम करने-वाला, स्त्री०-लिन,-न्नि।
मावस दे० अमावस।
मास सं० पुं० महीना; क० एक-दुइ गहना, राजा मरै कि सहना; सं०।
मासा सं० पुं० तोले का भाग।
मासु सं० स्त्री० मांस।
माहूँ सं० पुं० छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो सरसों आदि के फूलों पर बैठता और बैठे-बैठे मर जाता है व्यं० सुस्त व्यक्ति।
मिउआँ दे० मेउआँ।
मिउडी दे० मेउडी।
मिचकुरी सं० स्त्री० छोटा पतला मेढक जो घरों के कोनों में रहता है;-यस, छोटा दुबला आदमी।
मिजाँ सं० पुं० पसंद;-बैठब, हिसाब ठीक बैठना, प्रबन्ध होना; मीज़ान।
मिजाइब क्रि० स० मिजाना; मीजने में सहायता करना, प्रे०-जवाइब।
मिजाज सं० पुं०मिजाज -करब, रोब गाँठना,-होब; वि०-जी, गर्व करनेवाला. मिज़ाज।
मिलान सं० पुं० हिसाब, योग -करब -बइठाइब, हिस्साब ठीक करना।
मिठअ वि० मीठा सं० मिष्ट।
मिठवाइब क्रि० स० मीठा करना; सं० मिष्ठ।
मिठाई सं० स्त्री० मिठाई, सं०।
मिठाब क्रि० अ० मीठा होना, मीठा लगना, प्रे० मिठवाइब· सं० मिष्ठ।
मिठास सं० पुं० मीठापन, सं०।
मिढब क्रि० स० मढ़ना; प्रे०-ढ़ाइब,-ढ़वाइब,-ढब; मु० झूठा अभियोग या षड्यंत्र खड़ा करना।
मितऊ दे० मीत।
मिताई सं० स्त्री० मित्रता; कहा० तिल गुर भोजन तुरुक मिताई, पहिल मीठ पाछे पछिताई।
मिती सं०स्त्री०दिन, महीने के दोनों पक्षों के दिन।
मिथिला सं० स्त्री० जनक का राज्य,-नगरी, जनकपुर।
मिथौरी दे० मेथौरी।
मिनकब क्रि० अ० ज़रा सी आवाज करना· दे० मनकब।
मिनमिनाब क्रि० अ० मिन्न-मिन्न करना; अस्पष्ट बोलते रहना धीरे-धीरे शिकायत करना।
मिनहा सं० पुं० मना;-करब भा०-नाहीं, रुकावट, इनकार।
मिन्न-मिन्न क्रि० वि० धीरे-धीरे बोलते हुए -करब, धीरे-धीरे बोलना: क्रि० मिनमिनाब, वि०-नमि-नहा, मिन्न-मिन्न करनेवाला, स्त्री०-ही।
मिमिआब क्रि० अ० मी-मी या मे-मे करना(बकरी की भाँति), बेबसी के साथ चिल्लाना, वै०-याब, तु० मेमना।
मियाँ सं० पुं० मुसलमान; बूढ़ा मुसलिम, फेर में पड़ा हुआ व्यक्ति छका हुआ पुरुष;-जी, स्त्री० -इनि, वै०-आँ फा० मियाँ, मध्यस्थ।
मियाना सं० पुं० छोटी पालकी वै०-आना।
मियानि सं० स्त्री० मीयान; तलवार का घर।
मिरगा स० पुं० मृग, स्त्री०-गी वै०-रिग, सं०।
मिरगिहा वि० पुं० जिसे मिरगी (दे०) आवे, स्त्री०-ही।
मिरगी सं० स्त्री० वह रोग जिसके कारण मनुष्य बेहोश होकर मुँह से फाग गिराता तथा हाथ-पैर पटकता है;-आइब।
मिरचा सं० मिरचा. लाल मिर्च; स्त्री०-ची, मु० -लागब, बुरा लगना,-भरब, तङ्ग करना।
मिरजई सं० स्त्री० छोटी अँगरखी, पुराने ढंग की कमीज, 'मिरजा' का पहनावा ?
मिरजा सं० पुं० मुसलमानों का एक संभ्रांत पद, मीर का पुत्र, अर० मीर+जा।
मिरदंग सं० पुं० मृदंग।
मिरदहा सं० पुं० कानूनगो और अमीन का सहायक।
मिरुकब क्रि० अ० टेढ़ा हो जाना, थोड़ा सा ऐंठ जाना (किसी अंग का), प्रे०-काइब।
मिरुग दे० मुरुग, वै०-गा।
मिरोरब क्रि० स० मरोड़ देना, ऐंठ देना; प्रे० -रवाइब;।
मिर्चि स० स्त्री० काली मिर्च, छोटी पतली लाल मिर्च, वि०- चिहा, मिर्च खाने का शौकीन, स्त्री० -ही।
मिलइब क्रि० स० मिलाना, एक करना; वै० -लाइब,-उब, प्रे०-लवाइब, सं० मिल्।
मिलकियति सं० स्त्री० सम्पत्ति, जायदाद; वि० -दार; वै०-अति।
मिलनी सं० पुं० बारात में दोनों पक्षों के मिलने का रिवाज, ऐसे रस्म में दिया गया उपहार,-करब, -देब,-पाइब, मिलने का अवसर (गी०), सं०।
मिलब क्रि० अ० मिलना, प्रे०-लाइब,-लइब,-उब, -लवाइब,-टब -जुलब, मिलना-जुलना,-मिलाइब, मिलना मिलाना, सं० मिल्।
मिलान सं० पुं० मिलान, तुलना,-करब, होब, सं०; वै०-नि।

मिलावट सं० पुं० दूसरी चीज मिला देने की क्रिया; गडबड़,-होब,-करब,-रहब; सं० ।
मिलि सं० स्त्री० मिल, कारखाना, अं० मिल, वि०-हा, मिलवाला, प्र० मी-।
मिलौनी सं० स्त्री० मिलाने की क्रिया, मजदूरी आदि ।
मिसिर सं० पुं० मिश्र, एक प्रकार के ब्राह्मण स्त्री०-राइन,-नि; कहा० मिसिर करैं बिसिर -बिसिर रहिला नोन चबायँ ।
मिसिरी सं० स्त्री० मिश्री; माखन-, प्रिय खाद्य (कृष्ण जी का विशेषतः) ।
मिस्तिरी सं० पुं० कारीगर, भा०-पन,-गीरी ।
मिस्सी दे० मीसी ।
मिहरी दे० मेहरी ।
मिहावर दे० मेहावरि ।
मीजब क्रि० स० मीजना रुपया बचाना, कंजूसी करना;-सारब, सेवा करना, हाथ पैर दबाना, प्रे० मिजाइब,-जवाइब ।
मीठ वि० पुं० मीठा, प्रिय. स्त्री०-ठि, क्रि० मिठाब (दे०) भा० मिठास,-ई सं० मिष्ठ; प्र०-ठै-मीठ ।
मीठा सं० पुं० मीठी वस्तु. मिठाई, सं० ।
मीत सं० पुं० मित्र, भा० मिताई (दे०), सं० मित्र ।
मीन सं० पुं० प्रसिद्ध राशि,-मेख करब,-निकारब, आगा-पीछा सोचते रहना ।
मीयाँ दे० मिया ।
मीर वि० प्रथम, आगे,-परब,-रैं परब. अच्छी स्थिति में रहना, दे० दोल्ह (मीर-दोल्ह, बच्चों के कौडी के खेल के दो शब्द), अर० मीर, आज्ञादाता, शासक ।
मील सं० पुं० आधा कोस, अं० माइल ।
मीसी सं० स्त्री० मिस्सी,-लगाइब, सं०मिश्र (?) ।
मीही दे० मेही ।
मुंगवा सं० पुं० मूँगा, सं० मुद्ग (मूँग), मूँगे का आकार मूँग की भाँति होता है, इसी से इसका यह नाम पड़ा ।
मुअब क्रि० अ० मरना, प्रे०-आइब; सं० मृत, वि० -आ, मरा हुआ ।
मुइला वि० पुं० मुँह चुरानेवाला, मक्खीचूस, स्त्री०-ली ।
मुई वि० स्त्री० मरी हुई-बिराइब, किसी प्रकार काम चलाना, कहा० मुई बछिया बाभन के नांव,
मुकछी सं० स्त्री० बरी,-काटब ।
मुकदिमा सं० पुं० अभियोग,-चलब,-करब,-चला-इब; वै० मो-, वि०-महा ।
मुकाम सं० पुं० स्थान, ठेकान-,-ठेकान, पता ठिकाना,-करब, ठहरना, वै० मो- ।
मुकाबिला सं० पुं० तुलना -करब,-होब, (आमने-सामने बात कराना, होना) "मुकाबला" का विपर्यय ।
मुकिआइब दे० मुक्का; वै०-उब ।
मुकुर सं०पुं०शीशा, आईना, तुल०निज मन मुकुर सुधारि; सं० ।
मुकौआ सं० पुं० गुलवरि (दे०) का वह भाग जिधर से धुआँ, आँच आदि निकले ।
मुक्का सं० पुं० घूसा,-मारब; स्त्री०-क्की, क्रि० -किआइब, घूसा लगाना, धीरे मुक्की लगाकर शरीर दबाना,-मुक्की, घूसेबाजी, सं० मुष्टिक ।
मुख दे० मुँह ।
मुखड़ा सं० पुं० चेहरा -देखब,-देखाइब ।
मुखतै क्रि० वि० मुफ्त ही,-मैं, मुफ्त में ही; वै० -फुत मैं, मुफ्त ।
मुखबिर सं० पुं० खबर देनेवाला, गुप्त भेद बताने-वाला, भा०-रई,-री (करब) ।
मुखानि सं० स्त्री० चेहरे की बनावट;-चीन्हब, सं० मुख ।
मुखिया सं० पुं० गाँव का मुख्य व्यक्ति, नेता; भा० -गीरी, मुखिया का काम, वै०-या, स्त्री०-इनि मुखिया की स्त्री, सं० मुख ।
मुगरा सं० पुं० बड़ी मुँगरी, स्त्री०-री; वै०-ग्दरा ।
मुगल दे० मोगल ।
मुचंडा सं० पुं० हट्टा-कट्टा युवक; वै० मो-, स्त्री० -डी ।
मुचमुचहा वि० पु० ढीला-ढाला (व्यक्ति), स्त्री० -ही ।
मुचलिका सं०पुं० अपराधी का बन्धेज,-लेब,-होब-, -देब; प्र०-चा-, वै० मो- जमानत-।
मुच्छाइब क्रि० स० एकाधिकार कर लेना; छुन लेना; दूसरे को न देना, वै०-उब ।
मुच्छारोइयाँ वि० पुं० नवयुवक; मुच्छ+रोवाँ (जिसकी मूछें अभी नई निकली हों),-गदह पचीसी, एकदम जवान वै० मो-।
मुछाडा दे० मोछाटा ।
मुजरा दे० मोजरा, मोजर ।
मुटुर-मुटुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (चबाना), क्रि० मुटुराइब, धीरे-धीरे आराम से खाना या चबाना ।
मुतना वि० पुं० मूतनेवाला; स्त्री०-नी ।
मुतवाइब क्रि० स० मुताना. मूतने में मदद करना, मूतने को बाध्य करना; मु० परेशान या तङ्ग करना ।
मुताइब क्रि० स० मूतब (दे०) का प्रे० ।
मुदर्रिस सं० पु० गाँव के स्कूल का अध्यापक, वै० मो-, भा०-र्सी अ० दरस (शिक्षा) ।
मुनक्का सं० पुं० मुनक्का ।
मुनगा सं० पुं० सहिजन की फली ।
मुनरी सं० स्त्री० अँगूठी कुँए की गोलाई, उसका व्यास गी० मुनरी बरन करिहाँव, गोल पतली कमर, मुद्रिका ।
मुनवाइब क्रि० स० मूँदने में मदद करना, मूँदने के लिए बाध्य करना, 'मूनब' का प्रे० ।

मुनसरिम सं० पुं० जज का पेशकार।

मुनसी सं० पुं० मुहर्रिर, लेखक स्त्री०-सिआइन, मुंशी की स्त्री।

मुनाइब क्रि० स० मूँदने के लिए बाध्य करना, मूँदने में सहायता करना प्रे०-नवाइब. दे० मूनब।

मुनासिब वि० उचित, ठीक; वै० मो-।

मुनि सं० पुं० मुनि, ऋषि-; सं०।

मुनिआ सं० स्त्री० छोटी लड़कियों को संबोधित करने का प्यार का शब्द, पुं०-नुआ, राय-, एक छोटी चिड़िया (दे०)।

मुनिजर सं० पुं० प्रबंधकर्ता, अं० मैनेज (प्रबंध करना) भा०-री, वै०-नी-, मने-,मुने-।

मुनुआ सं० पुं० छोटे लड़कों को बुलाने का प्यार का शब्द स्त्री०-निआ, वै०-न्नू. दे० मुन्ना।

मुनेजर दे० मुनिजर।

मुन्न सं० पुं० धीरे से बोलने का शब्द,-मुन्न, बहुत धीरे-धीरे, मुन्ना सं० पुं० छोटा बच्चा (पशु या मनुष्य का), स्त्री०-न्नी।

मुफट्ट वि० पुं० स्पष्टवक्ता; स्त्री०-ट्टि, प्र० मू-, मुह-; मुह+फट, जो फट से मुँह पर कह दे।

मुफती वि० विना मूल्य प्र०-तै,-पाइब,-लेब।

मुफस्सिल वि० विस्तृत,-करब, विस्तारपूर्वक जानना, कहना आदि, वै० मुह-।

मुबारक वि० धन्य,-होव, वै० ममारक,-ख।

मुमुआब क्रि० अ० मूमू करना (बकरी की भाँति); दे० मिमिआब, बुमुआब।

मुरई सं० स्त्री० मूली,-गाजरि, साधारण (व्यक्ति); सं० मूल।

मुरकब क्रि० अ० ऐंठ जाना, कुछ टूट जाना, प्रे० -काइब।

मुरखई सं० स्त्री० मूर्खता;-करब।

मुरगा सं० पुं० मुर्गा, स्त्री०-गी,-गी यस, दुबला-पतला छोटा सा (व्यक्ति); फ़ा० मुर्ग (चिड़िया)।

मुरगाबी सं० स्त्री० पानी की चिड़िया, फा० मुर्ग+आब (पानी)।

मुरचा सं० पुं० मोर्चा, लड़ाई का मुख्य स्थान, -लेब,-ठानब, युद्ध करना, मोरचः क्रि०-च, मुरचे मे प्रभावित होना।

मुरछा सं० स्त्री० मूर्छा, बेहोशी,-आइब।

मुरभुराब क्रि० अ० मुरभा जाना, दे० मुल-।

मुरदघट्टा सं० पुं० घाट जहाँ शव जलाये जायँ।

मुरदा सं० पुं० शव, वि० निर्जीव, निष्क्रिय।

मुरदार वि० पुं० (शरीर का भाग, चमड़ा) जो सूखकर निर्जीव हो गया हो, प्र० रें।

मुरहठा सं० पुं० साफा, बड़ी पगड़ी, वै०-रेठा -बान्हब।

मुरहा वि० पुं० चालाक, तरकीब करनेवाला, स्त्री० -हीं, वै०-हंठ, भा०-राही, सं० मुरहा (मुर राक्षस को मारनेवाला) कृष्ण।

मुराई सं० पुं० मुराव (दे०); सं० मूल (कंद मूल आदि उत्पन्न करनेवाला); स्त्री० मुराइनि।

मुराद सं० स्त्री० हार्दिक इच्छा,-पाइब, इच्छा प्राप्त करना; वै०-दि।

मुराव सं० पुं० शाक भाजी की खेती करनेवाली एक जाति के लोग जो मांस मछली नहीं खाते, दे० कोइरी स्त्री०-इनि।

मुराही सं० स्त्री० चालाकी, होशियारी,-करब।

मुरीद सं० पुं० चेला, शिष्य,-होब,-करब।

मुरेठा दे० मुरहठा।

मुरैला सं० पुं० मोर।

मुर्रब क्रि० अ० पेट का दर्द करना।

मुर्रा सं० पुं० एक प्रकार की भैंस; (२) पेट की ऐंठन; क्रि०-र्रब।

मुर्री सं० स्त्री० धोती का ऐंठा हुआ भाग जो कमर के चारों ओर बँधा रहता है।

मुलकाइब क्रि० स० पलक भाँजना; आँखि-, दे० मुल्ल-मुल्ल।

मुलकाति सं० स्त्री० मुलाकात, साक्षात;-करब, -होब, वै० मुला-।

मुलफुलाब क्रि० अ० मुरझा जाना, वै० मुर-फुराब।

मुलायम वि० पुं० नर्म, स्त्री०-मि, भा० -मियति।

मुलाहिजा सं० पुं० विचार, सङ्कोच, ध्यान;-करब, -होब; वै०-ल-।

मुलुर-मुलुर क्रि० वि० चुपचाप बैठे-बैठे, बिना कुछ बोले (आँखें जल्दी-जल्दी बन्द करते तथा खोलते हुए); निःस्पृह (ताकते रहना), दे० मुल्ल-मुल्ल।

मुलेहठी सं० स्त्री० मुलहठी, दे० जेठी मधु।

मुल्ल-मुल्ल सं० पुं० (आँख) जल्दी-जल्दी बंद करने तथा खोलने की क्रिया;-करब, दे० मुल-काइब; प्र० मुलुर-मुलुर।

मुल्ला सं० पुं० बड़ा मौलवी, धार्मिक एवं कट्टर मुसलिम;-जी।

मुवा वि० पुं० मरा हुआ, स्त्री०-ई, दे० मुअब; (२) एक चिड़िया जो रात को "मुवा-मुवा" बोलती है। वै०-चिरई।

मुवाइब क्रि० स० मुअब का प्रे०।

मुसकब क्रि० अ० धीरे-धीरे हँसना, मुसकाना, भा०-की; सं० स्म।

मुसकानि सं० स्त्री० मुसकान; सं०।

मुसकी सं० स्त्री० व्यंगपूर्ण हँसी,-मारब।

मुसचंड वि० पुं०-हट्टा-कट्टा; स्त्री०-डि, वै० -टण्ड।

मुसम्माति सं० स्त्री० स्त्री, प्रायः विधवा स्त्री; अर०।

मुसम्मी सं० स्त्री० मुसंबी; प्रसिद्ध फल।

मुसरा सं० पुं० जड़ का मुख्य भाग।

मुसरी सं० स्त्री० चुहिया,-होब, चुरवाप या डरपोक बन जाना, क्रि०-रिआब,-याब।
मुसआइब क्रि० स० चुरवाना, दे० मूसब जिसका यह प्रे० है। सं० मूष्।
मुसाइब क्रि० स० मूसब (दे०) का प्रे०।
मुसीबति स० स्त्री०आफ़त, दुःख,-मा परब।
मुस्ति सं० स्त्री० मुट्ठी; यक-, एक ही साथ (रुपये आदि), फ़ा० मुश्त।
मुह स० पु० चेहरा, मुँह,-ताकब, भरोसा करना, निर्भर रहना;-लुकवाइब,-देखाइब,-बाइब,-कौर, भरे मुँह का (उत्तर, आलोचना),-जोर, जोर से बोलनेवाला, निडर;-चोर, जो मित्रों से मुँह छिपावे,-तोर।
मुहटिआब क्रि० अ० (फोड़े या घाव का) मुँह निकालना, सं० मुख।
मुहटी स० स्त्री० फुडिया या घाव आदि का मुँह; वै० मो-, क्रि०-टिआब।
मुहड़ा सं० पु० सामना, भार,-आड़ब,-सँभारब, आवश्यकता पूरी कर सकना; वै० मो-।
मुहताज वि० पुं० आवश्यकतावाला, दरिद्र,-होब, -रहब, स्त्री०-जि, भा०-जी।
मुहर्रम सं० पु० मुसलमानों का प्रसिद्ध त्योहार, वै० मो-।
मुहलति स० स्त्री० फुर्सत;-पाइब,-लेब, वै० मो-।
मुहावरा दे० महावरा।
मुहाल वि० पुं० कठिन,-होब, वै० मो-।
मुहासा सं० पु० मुँह पर निकले दाने।
मुहिम सं० स्त्री० लड़ाई की तैयारी, लड़ाई।
मुहीं-मुहाँ सं० पुं० काना-फुसकी,-करब,-होब।
मुहूरत दे० महूरत।
मूआ दे० मुआ।
मूका सं०पु० घूसा;-मारब, क्रि० मुकिआइब, धीरे-धीरे बदन पर थपकी लगाना; सं० मुष्टिक।
मूङा सं० पुं० मूँगा।
मूङी सं० स्त्री० मूँग, वै०-ङि।
मूज सं० पुं० मूज देनेवाली लंबी घास, सं० मुञ्ज।
मूजि सं० स्त्री० मूज, जिसकी रस्सी बनती है, सं० मुञ्ज।
मूठा सं०पुं० हथेली, बँधी हुई हथेली, मुट्ठी,-बान्हब, यक-, दुइ-, एक मुट्ठी, दो-, सं० मुष्टि, फ़ा० मुश्त।
मूठि सं०स्त्री० बुवाई का प्रारंभ,-लेब, ऐसा प्रारंभ करना,-क कोन, ईशान कोण, यह काम ईशान कोण से प्रारंभ होता है। सं० मुष्टि।
मूड सं० पुं० सिर,-ढारब, प्रारंभ करना, प्र०-ड़ा, स्त्री०-ड़ी, क्रि० मुड़िआइब, प्रारंभ कर देना, -फोरब,-नाइब।
मूड़न सं० पुं० मुंडन,-होब,-करब, स० मुंड, दे० ईंढ़नि, वै०-नि।
मूड़ब क्रि०स० मूड़ना, प्रे० मुड़ाइब,-उब, सं० मुंड।
मूत सं० पुं० पेशाब, मूत्र,-बंद करब, खूब तंग करना, परास्त कर देना, क्रि०-ब, सं० मूत्र।
मूतनि स० स्त्री० मूतने का चिह्न, वर्धा-, बैल के मूतने का टेढ़ा-मेढ़ा चिह्न (जो किसी से पढ़ा न जाय)।
मूतब क्रि०स० मूतना, प्रे० मुताइब, खून-, आगि-, अत्याचार करना, सं० मूत्र।
मूनब क्रि० स० मूँदना, ढकना, ताइब-, ढाकब-, प्रे० मुनाइब,-उब।
मूर सं०पुं० मूल, मूलधन, सूद-, ब्याज तथा मूल, मूरै-, केवल मूलधन, सं०।
मूरख दे० मूरुख।
मूरुख सं० पुं० मूर्ख।
मूलमंतर सं० पु० मूलमंत्र, असली भेद, सं० -मंत्र।
मूस सं० पुं० चूहा, स्त्री० मुसरी; सं० मूषक।
मूसनि सं० स्त्री० चोरी, ढोवा-, चुराकर ले जाने की क्रिया, स० मूष्।
मूसब क्रि० स० चुराना; सब कुछ उठा ले जाना, ढोइब-, सं०।
मेउड़ी स० स्त्री० एक वृक्ष और उसकी पत्ती जो दवा में काम आती है।
मेख सं० पुं० खूँटी या खूँटा जो पृथ्वी में गाड़ा जाय।
मेघा सं० पु० मेढक, स्त्री०-घी, पानी न बरसने पर बच्चे चिल्लाते हैं—"काल कलौती उज्जर धोती मेघा सारे पानी दे।"
मेज सं० पुं० मेज़।
मेट सं० पु० सड़क पर काम करनेवाले मजदूरों का जमादार, अ० मेट (साथी)।
मेटब क्रि० स० मेटना, रोकना, प्रे०-टाइब।
मेटा सं० पु० मिट्टी का बड़ा बर्तन; स्त्री०-टी, वै० -टहा,-टवा।
मेड़ सं० पु० सीमा, मेड़, स्त्री०-ड़ी,-बान्हब,-चन्ही करब।
मेड़ुआ स० पु० एक अन्न।
मेथी सं० स्त्री० मेथी,-मूजब, रोब गाँठना।
मेथौरी सं० स्त्री० बड़ी जिसमें मेथी पड़ती है, वै० -थउरी,-काटब।
मेदनी दे० मदनी।
मेदा सं० पु० आमाशय।
मेम सं० स्त्री० अंग्रेज की स्त्री, वै०-मि, अं० मैडम।
मेर सं० पु० प्रकार, मित्रता, वि० री, प्रेमी, क्रि० -इब, मिलाना,-उब, यक-, दुइ-।
मेरइब क्रि० स० मिलाना, एक करना, प्रे०-वाइब, वै०-उब।
मेरचा दे० मरचा।
मेरसा दे० मरसा।
मेल सं० पु० मैत्री,-करब,-खाब, वि०-ली, स्नेही।

मेलहा वि० पुं० मेलावाला; स्त्री०-ही;-ठेलहा ।
मेला सं० पुं० मेला,-मेला, भीड़ ।
मेलान सं० पुं० एक प्रकार का भूत,-हाँकब, -करब।
मेलावट दे० मिलावट।
मेलिआ सं० स्त्री० मिट्टी का छोटा गोल बर्तन ।
मेली वि० मेलवाला, प्रिय,-मनई, दे० मेल।
मेवा स० पुं० मीठा फल, बढ़िया चीज;-त, मेवे; -ति ।
मेहरारू सं० स्त्री० स्त्री, पत्नी, फा० मेहर (चाँद) + रू (मुँह)।
मेहरी सं०स्त्री० जोड़, पत्नी, फा० मेहर (चाँद)।
मेहावरि सं० स्त्री० स्त्रियों के पैर में लगाने का लाल रंग,-देब,-लगाइब।
मेहीं वि० बारीक;-बाति,-मनई, दूर तक सोचने-वाला व्यक्ति ।
मैआ स० स्त्री० माता, प्रायः संबोधन में प्रयुक्त; वै०-या।
मैजिल दे० महजिल ।
मैदा स० पुं० बारीक आटा, मैदा ।
मैना सं० स्त्री० प्रसिद्ध चिड़िया ।
मोखा सं० पुं० घास या खर (दे०) का बाँधा हुआ भाग, यक-, दुइ-।
मोगल स० पुं० मुग़ल, वै०-लिआ; स्त्री०-लाइन।
मोघी वि० दुष्ट (प्रायः बच्चों के लिए) ।
मोच स० पुं० किसी अंग के ऐंठ जाने से आई चोट,-आइब।
मोची स० पुं० चमड़े का काम करनेवाला, जूता बनानेवाला।
मोछि सं० स्त्री० मूछ,-प ताव देब,-ऊपर रहब, -तरे होब, सं० श्मश्रु, वि० मोछाड़ा।
मोजा सं० पुं० मोज़ा, पायताबा ।
मोट सं० पुं० चमड़े का बर्तन जिसमे कुएँ में से पानी निकाला जाता है -चलब,-चलाइब।
मोट वि० पुं० मोटा, स्त्री०-टि, क्रि०-टाब, भा० -टाई।
मोटमर्द वि० पुं० संतुष्ट, चिंताहीन, दूसरे की न सुननेवाला; भा०-र्दी,-ई, वै० स्वट-।
मोटरि सं० स्त्री० मोटर।
मोटरी सं० स्त्री० गट्ठर, बोझ,-गठरी ।
मोटवाइब क्रि० स० मोटा करना; वै०-उब ।
मोटहा सं० पुं० बोझ ले जानेवाला, कुली ।
मोटाब क्रि० अ० मोटा होना, घमंड करना; कहा० मोटान सँमी लकड़ी चबाय ।
मोटासा वि० पुं० जो किसी का काम न करे, घमंडी, स्त्री०-सी ।
मोटिआ सं० पुं० मोटा कपड़ा, खद्दर; वै०-या।
मोढ़ा सं० पुं० बेत और रस्सी का बना बैठका; स्त्री०-ढ़िआ।
मोताब सं० पुं० अंदाज, अनुपात,-से।
मोतिआबिंद सं० पुं० आँख का प्रसिद्ध रोग, वै० -या-।
मोती सं० पुं० मोती, मु० बहुमूल्य वस्तु ।
मोथा सं० पुं० एक घास जिसकी जड़ में सुगंध होती है।
मोथी सं० स्त्री० मूँग की तरह की एक दाल और उसका पौदा ।
मोदर्रिस सं० पुं० दे० मुदर्रिस ।
मोदी सं० पुं० खाने-पीने का सामान बेचनेवाला दूकानदार।
मोनासिब दे० मुनासिब।
मोमि सं० स्त्री० मोम; वि०-मी,-मिहा ।
मोयन सं० पुं० निश्चय, निश्चित मूल्य,-करब, (मूल्य) निर्धारित करना;-होब, मुअय्यन ।
मोर सर्व० मेरा, स्त्री०-रि (कविता में 'मोरी')।
मोरङ सं० पुं० दूर का स्थान, इस नाम का एक स्थान नैपाल में है; जो बड़ा अस्वास्थ्यकर है, दूरी के अर्थ में मुनतान भी आता है; नै० काल ले बिरसे मोरङ झान्नू, यदि मृत्यु तुम्हें भूल जाय तो मोरङ चले जाओ।
मोरचा सं० पुं० लड़ाई का मुख्य स्थान,-करब, -होब,-लेब, (२) मुर्चा,-लागब, वै० मुर्चा।
मोरछल सं० पुं० हवा करने का या मक्खी उड़ाने का सुसज्जित पंखा।
मोरब क्रि० स० मोड़ना, प्रे-राइब,-उब ।
मोरब्बा सं० पुं० मुरब्बा ।
मोरम सं० पुं० ईंट के छोटे-छोटे टुकड़े ।
मोरी सं० स्त्री० नाली ।
मोल सं० पुं० खरीद, दाम,-करब,-लेब,-भाव, दाम का ठीक-ठाक; क्रि०-वाइब, मोल करना;-लस, जाय-दाद जो किसी व्यक्ति की खरीदी हुई हो, बपंस (दे०) न हो, मोल + अंश, बाप + अंश।
मोह सं० पुं० प्रेम,-करब,-लागब, क्रि०-हाय, प्रेम करना, सं०।
मोहबति सं० स्त्री० छत के नीचे लगी लकड़ी की पंक्ति, अर० महबत।
मौका दे० मउका ।
मौगा दे० मउगा ।
मौन वि० पुं० चुपचाप,-व्रत, न बोलने का व्रत, स्त्री०-नि,-नी, साधु जो मौन रहे; सं० ।
मौना दे० मउना,-नी ।
मौहारी दे० मउहारी, महुआ,-री ।

य

यइ वि० सर्व० यह; प्र०-ई, यही,-ऊ, यह भी; सं० एषः।
यक वि० पुं० एक, स्त्री०-कि; प्र०-क्कै,-क्कौ;-यक, एक एक,-दूँ, एक; सं० एक।
यकठा वि० पुं० अकेला, स्त्री०-ठी।
यकता वि० पुं० एक, बेजोड़, निराला।
यकवटब क्रि० अ० एक हो जाना; एकत्र होकर विरोध करना।
यकसठि वि० साठ और एक, सं० एकषष्ठि।
यकहरब क्रि० स० एक पर्त करना; वि०-रा, दुहरा नहीं।
यकहब वि० एकत्र, सगठित होकर एक; सम्मिलित, वै०-हौ।
यकाई सं० स्त्री० इकाई।
यकानबे वि० इक्यानबे।
यकाह वि० पुं० पहला (ब्याह), दुआह नहीं।
यक्का सं० पुं० इक्का;-दुक्का, एक दो, यक्की-यक्कों, क्रि० वि०, सं० एकाकी।
यक्की सं० स्त्री० ताश का इक्का;-दुक्की, तिक्की, क्रि० वि०-यक्कों, एक की अकेले दूसरे से (कुश्ती, लड़ाई आदि), सहसा, अकस्मात्, सं०।
यगारह वि० ग्यारह; सं० एकादश।
यठईं क्रि० वि० इस स्थान पर, वै०-ठाईं,-ठावँ; ई (यह)+ठावँ (स्थान) दे०।
यड़ाब दे० अड़ाब।
यतना वि० पुं० इतना; स्त्री०-नी।
यत्तवार सं० पुं० इतवार, रविवार; स० आदित्य-वार।
यत्तै क्रि० वि० इस ओर, इधर और निकट,-वत्तै, इधर-उधर; वै०-त्तहि, सं० अत्र।
यथाउचित दे० जथा-।
यथापरमान क्रि० वि० जितना आवश्यक हो, वै० ज-।
यथुआ सर्व० जिस, वै० ज-।
यन सर्व० इन;-काँ, इनको,-सें; बहु०-न्हन,-न्हने; -न्है-वन्है, इन्हें उन्हें।
यपहर क्रि० वि० इस पर; (गों०), यह पह का विपर्यय।
यवमस्त क्रि० वि० अच्छा, ऐसा ही हो! प्र० ए-, सं० एवमस्तु।
यस वि० ऐसा, स्त्री०-सि, क्रि० वि० ऐसे, इस तरह, प्र० यहसै,-सनै,-सस;-यस, ऐसा ऐसा; -वस, ऐसा वैसा।
यसवँ क्रि० वि० इस वर्ष, वै०-सौं, प्र०-वैं (इसी वर्ष),-वौं (इस वर्ष भी)।
यसस वि० पुं० ऐसा ऐसा; स्त्री०-सि, क्रि० वि० इस प्रकार, प्र०-सै,-सौ।
यहर क्रि० वि० इस ओर;-वहर, इधर उधर; प्र० -रै,-रौ।
यहि वि० इसी; प्र०-ही,-हू।
यहीं क्रि० वि० इसी स्थान पर; प्र०-हूँ (यहाँ भी), इहौं, इहैं।
याद सं० स्त्री० स्मरण;-करब,-रहब,-होब,-आइब; वै०-दि।
यार स० पुं० दोस्त; भा०-री, दोस्ती; फा०।
यावत दे० जावत।
याहू वि० इस, वै०-हौ;-बाति, यह बात भी।

र

रंक सं० पुं० दरिद्र व्यक्ति; राजा-।
रंग दे० रङ।
रंच वि० पुं० तनिक,-भर, थोड़ा सा, स्त्री०-चि, प्र०-चै,-चौ, वै०-चा,-क।
रंज सं० पुं० शोक,-करब, दुःख मानना,-रहब, रुष्ट होना, फ़ा० रंज।
रंजिस सं० स्त्री० तनातनी, रंजिश,-रहब,-होब।
रंडी सं० स्त्री० वेश्या;-मुंडी, दुश्चरित्र स्त्री।
रँड़ापा सं० पुं० वैधव्य,-खेहब, वैधव्य बिताना।
रँड़िरोवन सं० स्त्री० राँड़ का रोना, जीवन भर का दुःख।
रँड़पुतवा सं० पुं० राँड़ का पुत्र, दुलारा लड़का।
रदा सं० पुं० लकड़ी को छिलकर बराबर करने की मशीन,-करब, क्रि०-दब, इस प्रकार बराबर या साफ़ करना (लकड़ी को)।
रई स० स्त्री० लकड़ी या काँटे का पतला बारीक अंश जो किसी अंग में चुभ जाय।
रईस दे० रहीस।
रउताइनि सं० स्त्री० राउत (दे०) की स्त्री।
रउताई सं० स्त्री० इधर उधर लगाने की आदत; -बउताई (करब),-आइब, दे० राउत; वै० रव-।
रउतुआ स० पुं० रायता, वै०-व-,-य-।
रउनक दे० रवनक।
रउनब क्रि० स० रौंदना; मे०-नाइब,-नवाइब-उब।

रउरिआव क्रि० अ० कुछ पाने की आशा में डटा रहना; 'राउर' कहकर प्रसन्न करने की कोशिश करना।
रउरे दे० राउर।
रउल सं० पुं० चक्कर, पर्यटन;-घूमब; अं० रोल।
रखहाल दे० रवहाल।
रकत सं० पुं० रक्त; क्रि०-ताव, खून देना (अंग, फोड़े आदि का),-ताइब वि०-ताहिन, रक्त से भरा हुआ-तार: मु०-पियव, कसम दिलाने का शब्द (अपने पूते क रकत पिट, अपने पुत्र का रक्त पी); सं०।
रकवा सं० पुं० क्षेत्रफल; बहुत सी भूमि;-घेरब, -घेराइब।
रकम सं० स्त्री० किस्म; यक-, दुइ-. यक रकमै, एक तरफ से, (२) माल, रुपया पैसा, आभूषण; वैं०-मि; वि०-मी, बहुमूल्य, कीमती,-दार, मालदार,-मिहा, रकमवाला।
रकावी सं० स्त्री० तश्तरी, वै० रि-।
रक्खब क्रि० स० रखना; वै० राखब (दे०), प्रे० -खाइब,-खवाइब,-उब, सं० रक्ष्।
रखउनी सं० स्त्री० रक्षाबन्धन,-बान्हब,-मनाइब, सं० रक्षा।
रखवार सं० पुं० रक्षक, चौकीदार; भा०-री।
रखाइब क्रि० स० रक्षा करना, चौकीदारी करना; प्रे०-खवाइब; वै०-उब; सं० रक्ष्।
रखिआइब क्रि० स० राखी (दे०) लगाना (वर्तन के पीछे); वै०-उब, प्रे०-वाइब।
रखिहा वि० पुं० राख लगा हुआ, स्त्री०-ही।
रखुई सं० स्त्री० रखी हुई (विवाहित नहीं) स्त्री, रखैल स्त्री; सं० रक्ष्।
रखेलि सं० स्त्री० रखैल; सं० रक्ष्।
रखैआ सं० पुं० रखनेवाला, प्रे०-खवैया, वै०-या; सं० रक्ष्।
रखौना सं० पुं० रखाया हुआ घास का मैदान, चरागाह, वै०-खवना;-रखाइब,-राखब, सं० रक्ष्।
रखौनी दे० रखउनी।
रगर सं० स्त्री० ज़िद, ईर्ष्या,-करब, बार-बार किसी काम के लिए प्रयत्न करना; क्रि०-ब, रगड़ना, दे० रिगिर।
रगरब क्रि० स० रगड़ना, प्रे०-राइब,-रवाइब, भा० -राई, रगड़ने की क्रिया, मज़दूरी आदि।
रगरी वि० हठी, ईर्षालु; रगड़ करनेवाला।
रगवाही सं० स्त्री० वर्षा न होने का समय; वर्षा बंद हो जाने की बात;-होब,-करब. सं० रज (धूल)।
रगा सं० स्त्री० वर्षा न होने का दिन, सं० रज (धूल=पानी का अभाव), क्रि०-ब, सूखा मौसम होना।
रगिआइब क्रि० स० राग आरम्भ करना, राग से गाना; सं० राग।
रगेदब क्रि० स० खदेड़ना, पीछे पड़ना, दबाने की चेष्टा करना; प्रे०-दवाइब।
रङ्ग सं० पुं० रङ्ग; क्रि०-ब, रँगना।
रङ्गब क्रि० स० रँगना; लिख डालना, झूठी बात लिखना; प्रे०-ङाइब,-ङवाइब।
रङरूट सं० पुं० नया सिपाही, नया व्यक्ति; वह व्यक्ति जो अपना काम अच्छा न जानता हो; भा० -टी; अं० रेक्रूट।
रङरेज सं० पुं० रँगरेज; स्त्री०-जिन,-नि।
रङाई सं० स्त्री० रँगने की पद्धति, मज़दूरी आदि।
रचका वि० पुं० ज़रा सा, थोड़ा सा, स्त्री०-की।
रचब क्रि० स० रचना, सुन्दर बनाना; प्रे०-चाइब, -चवाइब, भा०-चाई; सं० रच्।
रचि-रचि क्रि० वि० अच्छी तरह, सुन्दरतापूर्वक।
रच्छा सं० स्त्री० रक्षा-करब; क्रि०-च्छब, राखब; वै०-च्छ, रच्छ ताकब,-रहब, रक्षा करते रहना (व्यक्ति की)।
रछसई सं० स्त्री० राक्षसपना, राक्षस की आदत, -करब; सं० रक्षस्।
रजऊ वि० पुं० राजा का सा (व्यवहार, ठाट-बाट आदि)।
रजया वि० राजा का।
रजवा सं० पुं० वह राजा; घृ०।
रजाई सं० स्त्री० रज़ाई, दुलाई;-ओढ़ब।
रजाब क्रि० अ० राजा की भाँति व्यवहार या शासन करना।
रजायसु सं० स्त्री० आज्ञा;-लेब,-पाइब।
रजिना वि० दैनिक; रोजाना; वै० रो-।
रजुरी दे० लेजुरी: सं० रज्जु।
रज्ज-गज्ज सं० पुं० अधिकता, आराम, चैन; सं० राज्य+फ़ा० गंज (ढेर);-होब,-रहब।
रट सं० स्त्री० याद करने की अधिकता, रटने की क्रिया;-लगाइब; क्रि०-ब।
रटनि सं० स्त्री० रटने की क्रिया; बराबर स्मरण; -लागब।
रटब क्रि० स० रटना, बिना समझे याद कर लेना, प्रे०-टाइब. भा०-टाई।
रट्टू वि० रटनेवाला, जो बुद्धि से काम कम ले, रटाई अधिक करे।
रतउन्ही सं० स्त्री० रात को न दिखाई पड़ने का रोग;-होब, वि०-न्हिहा, जिसे यह रोग हो। राति+ अन्ही (अंध)।
रतजगा सं० पुं० रात को जागने का काम, अधिक जागने का काम,-करब, वै० रति-।
रतिआही सं० स्त्री० रात को चोरी करने की आदत या प्रणाली,-करब,-होब, वै०-या-।
रत्ती सं० स्त्री० रत्ती का तौल,-भर, ज़रा सा, -मासा।
रथ सं० पुं० रथ; सं०।

रद्द वि० पुं० ख़राब, बदमाश; स्त्री०-द्दि, प्र०-द्दी, पुराना खराब कागज; क्रि०-द्दाब।
रद्दा सं० पुं० दीवार के ऊपर गीली मिट्टी का पक्ति, -धरब, वै०-दा, मु० तोहमत, बदनामी,-धरब, -पाइब,-धइ उठब।
रनिकजरा सं० पुं० एक प्रकार का काला धान; रानी + काजर (रानी का काजल) = काला।
रनिवास सं० पुं० महल, रानी का निवास, -करब, महल का सुख उठाना, रानी + निवास (वास)।
रपारप्प वि० पुं० तेज काटनेवाला (हथियार, तलवार आदि);-होब,-करब।
रपोट सं० स्त्री० रिपोर्ट,-करब, वै० रपट, अं०।
रफ़ू सं० पुं० पुराने ऊनी या रेशमी कपड़े की मरम्मत;-करब;-चक्कर वि० गायब;-करब,-होब; -गर, रफू करनेवाला।
रबड सं० पुं० रबर अं०।
रबड़ी सं० स्त्री० दूध की बनी प्रसिद्ध वस्तु,-बनइब,-खाब, मु० बारीक कीचड़; प्र० रा-।
रबाना सं० पुं० एक बाजा जो हाथ से बजाया जाता है;-बजाइब।
रबी सं० स्त्री० चैत की फ़सल; प्र०-ब्बी, अर० रबी (चैत में पड़नेवाले मुसलिम मास का नाम।
रमजान सं० पुं० एक मुसलिम महीना तथा त्योहार, अर०।
रमझल्ला सं० पु० आनन्द, गपशप,-उड़ाइब।
रमता वि० पुं० इधर-उधर फिरनेवाला,-जोगी, -राम, एक स्थान पर न रहनेवाला व्यक्ति, सं० रम्।
रमब क्रि० अ० किसी स्थान पर डट जाना, प्रे० -माइब, भभूति रमाइब, राख पोत लेना, साधू बन जाना।
रमायन सं० पुं० रामायण, व्यं० झगड़ा या गालीगलौज,-होब,-कहब, वि० रमयनिहा (पंडित), रामायण की कथा कहनेवाला, सं०।
रम्भा सं० पुं० कङ्कड खोदने या दीवार आदि गिराने का लंबा लोहे का औजार।
रयकवार सं० पुं० क्षत्रियों की एक उपजाति।
रयपर सं० पुं० चद्दर, गर्म चादर अं० रैपर।
रयफिल सं० स्त्री० बंदूक, रायफिल, अ० रायफिल।
रर्रा सं० पुं० बक-बक करने और माँगनेवाला, क्रि०-ब, रर्रा की भाँति व्यवहार करना,-यस, स्त्री०-र्री, बहुत से रर्रा।
रलवई दे० रेल-।
रवजक वि० परम प्रसन्न; प्रोत्साहित,-करब,-होब।
रव सं० पुं० दिशा, लक्षण,-भब, बातचीत, न भव, कोई चिह्न नहीं, कहा० रव न भव बिन बदरे का बरसा।
रवजा सं० पुं० रौजा, रौजः।
रवताई दे० रउ-।
रवतुआ दे० रउ-, वै० रौ-।
रवन्ना सं० पुं० खरीदी वस्तु, बैल आदि की रसीद जिसे लेकर 'रवाना' होने की आज्ञा मिले, -लेब,-देब,-पाइब, रवानः।
रवहाल वि० ख़ुश;-रहब, फ़ा० रव + हाल ?
रवा सं० पुं० छोटा दाना, टुकड़ा (आटे, शकर आदि का), (२) परवाह, फिक्र,-दार, परवाह या सहानुभूति करनेवाला।
रवाना वि० चलता,-करब,-होब, भा०-नगी, बिदाई, रवानः।
रवाव क्रि० अ० सूखते जाना (व्यक्ति का); (२) इर्द गिर्द घूमते या उड़ते रहना।
रस सं० पुं० शर्बत, जूस, आनंद, लाभ,-पाइब, -मिलब; वि०-गर,-दार,-सादार; क्रि०-साब, रस चूना, पानी निकलना, सं०।
रसउती सं० स्त्री० एक प्रकार की ईख, सं० रसवती (मीठी)।
रसता सं० पुं० राह, रास्ता,-देब, लेब,-धरब,-पाइब, -नापब।
रसदि सं० स्त्री० खाने-पीने का सामान,-देब;-पहुँचाइब।
रसम सं० स्त्री० रिवाज, दस्तूर, फ़ा० रस्म, वि० -मी।
रसरा सं० पुं० मोटी रस्सी, रस्सा, स्त्री०-री, सं० रज्जु।
रसवाई सं० स्त्री० पंचायती रूप से रस पेर कर बाटने की क्रिया,-करब,-होब दे० भँड़री।
रसहँग सं० पुं० हल्का ज्वर, शरीर की हरारत, -होब,-धरब।
रसाई सं० स्त्री० पहुँच, सिलसिला;-होब,-रहब।
रसातल सं० पुं० पाताल के नीचे का एक लोक, -जाब,-पहुँचब, नष्ट होना, पतित हो जाना, सं०।
रसिआव सं० स्त्री० मीठा भात,-खाब,-बनइब, सं० रस।
रसोई सं० स्त्री० भोजन, भोजन का स्थान;-घर, -बनाइब,-होब, दे० रसोय, वै०-इया,-दार, भोजन बनानेवाला।
रसोय सं० स्त्री० भोजन बनाने का स्थान, सीता क-, अयोध्या जी में एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ सीता जी का भोजनालय था।
रसौती दे० रसउती।
रहँटिआब क्रि० अ० दुबला होता जाना, वै० रे-, रहठा (दे०) से ? (सूखकर रहठा हो जाना)।
रहगर वि० पुं० चला हुआ, घर से बाहर,-होब, रवाना हो जाना, फ़ा० राहगीर।
रहट सं० पुं० पानी निकालने का रहट,-चलब, -लागब।

रहकल सं० पुं० एक पुराने प्रकार की बंदूक जो टूटदार होती थी।

रहठा सं० पुं० अरहर का सूखा पेड़, अरहर की लकड़ी।

रहता सं० पुं० रास्ता, पगडंडी;-धरब, फ़ा० राह।

रहनि सं० स्त्री० रहने की दशा, तुल०सुनहु पवन-सुत रहनि हमारी।

रहब क्रि०अ० रहना, ठहरना, पेट-,गर्भ रह जाना; बाकी-।

रहम सं०पुं० दया, कृपा,-करब; वि०-दिल, कृपालु, -होब, क्रोध समाप्त होना।

रहसुति सं० स्त्री० रहने की संभावना।

रहाइस सं० स्त्री० रहने की दशा, रहने की संभावना,-होब, रह सकना।

रहाइब क्रि० स० बंद कर देना, रोक देना (जाँत का चलाना), प्रे०-हवाइब।

रहार दे० रेहार।

रहिआब क्रि० अ० राह लेना, रवाना हो जाना, प्रे०-वाइब, रवाना कर देना, फ़ा० राह।

रहिला सं०पुं० चना, कहा० मिसिर करैं घिसिर-घिसिर रहिला नोन चबायँ।

रहीस सं० पुं० रईस, वि० शरीफ़, मालदार, भा०-सी,-हिसई, फ़ा० रईस।

रहूँ सं०पुं० धुएँ का जाला जो घाव आदि में दवा का काम देता है।

राँच वि० पुं० थोड़ा सा, स्त्री०-चि;-कै, थोड़ा ही सा, वै० रंच।

राँड़ि सं० स्त्री० विधवा,-होब,-रहब,-रेवा, दीनहीन; स्त्री; रँड़ि-रोवन (दे०), भा० रँड़ापा।

राई सं०स्त्री० सरसों का एक भेद,-नोन, दो वस्तुएँ जो कभी-कभी लाल मिर्च के साथ स्त्रियाँ नजर लगे हुए बच्चे के ऊपर उधार (दे० उआरब) कर आग में डाल देती हैं।

राउत सं० पुं० अहीर के लिए आदरप्रदर्शक शब्द; रावत, स्त्री० रउताइन,-नि (दे०); रा० रावल, रावला।

राकस सं० पुं० राक्षस; भा० रकसई, सं० रक्षस्।

राखब क्रि०स०रखना, बैठा लेना; मेहरारू-, भेड़ी-, मान-,बाति-,बाकी-, प्रे०रखाइब,-उब; सं० रक्ष।

राखी सं०स्त्री० राख;-करब,-होब, क्रि० रखिआइब, राख लगाना (विशेष कर चूल्हे पर चढ़नेवाले बर्तनों के पीछे), मु०-होब, जलन या क्रोध के मारे राख होना।

राग सं० पुं० गीत का राग,-अलापब, क्रि० रगिआइब, राग छेड़ना, राग से पढ़ना, सं०, दे० खटराग।

राङ सं० पुं० राँगा; वि० रङहा, जिसमें राँगा मिला हो।

राछस सं० पुं० राक्षस, वि०-सी, स्त्री०-सिन, सं० रक्षस्।

राछि सं० स्त्री० विवाह का एक रस्म,-घुमाइब, -घूमब।

राज सं० पुं० राज्य,-करब, सुख से रहना,-पाट, राज्य का कारबार, क्रि० रजाब।

राजा सं०पुं० शासक, राजा, स्त्री०रानी, कहा०जथा राजा तथा प्रजा (परजा), वि० राजसी,क्रि० रजाब; सं०।

राजी सं० स्त्री० स्वीकृति, प्रसन्नता,-खुशी, कुशल-मंगल, प्रसन्नता,-नामा, स्वीकृतिपत्र;-होब,-करब।

राजू अव्य० भले आदमी, "राजा" का प्रिय रूप, हु-, नाहीं-।

राडा सं० पुं० एक घास जो बहुतायत से होती है।

राढ़ा दे० रेढ़ा।

राति सं० स्त्री० रात,-दिन, दिन-,-बिराति, कुसमय सं० रात्रि।

रातिब सं० पुं० रात का भोजन (विशेष कर हाथी का)।

राधारानी सं० स्त्री० बोल-चाल की काल्पनिक आदर्श स्त्री, कहा०जहाँ गईं-तहाँ परा पाथर पानी।

रान सं० स्त्री० जाँघ, वै०-नि।

रानी सं० स्त्री० राजा की स्त्री, सुखी स्त्री।

रापट सं० पुं० ज़ोर का चपत,-मारब; वै० झापड़।

राब सं० स्त्री० गन्ने के रस की बनी द्रव वस्तु, वै० -बि, वि० रबिहा।

राबड़ी दे० रबड़ी।

राम सं० पुं० अयोध्या के प्रसिद्ध राम, अरे-, राम-राम, सीता-,-दोहाई (दे०)-जानैं,-धैं (शपथ), हाय-, सं०।

राय सं० स्त्री० सम्मति,-देब,-लेब,-होब,-करब; (२) ठाकुरों की एक जाति जो अपने नाम के अंत में 'राय' जोड़ते हैं।

रार सं० स्त्री० झगड़ा,-करब,-मचब,-मचाइब, वै० -रि।

राल सं० स्त्री० मुँह से गिरनेवाला पानी,-चुवब, -गिरब, वै०-लि।

राव सं० पुं० बड़ा जमींदार; राजा-।

रास सं० स्त्री० लंबी रस्सी या चमड़े की डोरी जिससे घोड़ा गाड़ी में चलाया जाता है।

रासि सं० स्त्री० ढेर; अनाज का ढेर जो खलिहान में तैयार हो;-ढोइब,-लाइब, सं० राशि।

राह सं० स्त्री० मार्ग;-चलब,-बताइब, सिखाना, टालना,-गीर, यात्री;-ही, राह चलनेवाला;-घाट, क्रि० रहियाब,-आब, फ़ा० राह।

रिकवँछि सं० स्त्री० जमीकंद के अधखुले पत्तों की रसेदार पकौड़ी,-बनाइब।

रिखि सं० पुं० ऋषि;-मुनि, सं०।

रिगिर सं० स्त्री० हठ, द्वेष;-करब, वि०-रिहा, क्रि० -रिआब।

रिचका वि० पुं० ज़रा सा, थोड़ा सा; स्त्री०-की।

रिचा दे० रीचा।

रिझवाइब क्रि० स० पकवाना; प्रसन्न कराना; 'रीझब' का प्रे०, सं० ।
रिधि-सिधि सं० स्त्री० ऋद्धि-सिद्धि (कविता में), सं० ।
रिन सं० पुं० क़र्ज,-लेब,-देव,-होब,-करब; वि० -निया; कर्जदार, सं० ऋण ।
रिपोट दे० रपोट; प्र० रपोटी-रपोटा, एक दूसरे की शिकायत ।
रिमझिम क्रि० वि० धीरे-धीरे पर लगातार (वर्षा होना), रिमझिम-रिमझिम ।
रियासति सं० स्त्री० रियासत, अच्छी संपत्ति, राज-; वि०-ती, रियासत संबंधी; फ़ा० 'रईस' का भा०, वै०-आसत,-ति ।
रिरिआव क्रि० अ० री री करना, निःसहाय की भाँति चिल्लाना, ध्व०, अनु० ।
रिवाज सं० पुं० दस्तूर, सामाजिक नियम, वै० र-।
रिसि स० स्त्री० क्रोध,-करब; वि०-हा, क्रुद्ध, क्रि० -आव, क्रोध करना;-आन, क्रोध में आया हुआ स्त्री०-नि;-अवधा, कुछ क्रुद्ध ।
रिसिवाइब क्रि० स० नाराज करना, वै०-उब, सं० रुष् ।
रिसिहा वि० पुं० अप्रसन्न, स्त्री०-ही, जिसको क्रोध अधिक आता हो,-परब,-होब, वै० -अवधा ।
रीकड़ सं० पुं० भूमि जिसमें कङ्कड़ पत्थर हो; खेत जिसमें कुछ उत्पन्न न हो; क्रि० रिकड़ाब, वै० -हि ।
रीचा सं० पुं० छोटी सी बात, बात का मूल, बतंगड़,-काढ़ब, सं० ऋचा ।
रीझब क्रि० पक जाना, प्रसन्न होना, प्रे० रिझा-इब,-झवाइब ।
रीठा सं० पुं० एक जङ्गली पेड़ और उसका फल जो दवा में काम आता है ।
रीढ़ सं० पुं० पीठ के बीच की हड्डी; वै०-ढ़ा, -रा ।
रीति सं० स्त्री० तरीक़ा,-भाँति,-रिवाज; वै०-त, सं० ।
रीन्हब क्रि० स० पकाना, रींधना, प्रे० रिन्हाइब, -न्हवाइब ।
रीरा सं० पुं० रीढ़ (दे०) ।
रुआब सं० पुं० रोब,-गाँठब,-झारब,-दिखाइब ।
रुइहर सं० पुं० रुई का छोटा टुकड़ा ।
रुइहा वि० पुं० रुई का बना, रुई से भरा, स्त्री० -ही ।
रुकब क्रि० अ० रुकना, प्रे० रोकब,-काइब,-उब ।
रुकमिनि सं० स्त्री० रुक्मिणी जी; गीतो में यह नाम प्रायः आता है ।
रुकसति स० स्त्री० विदाई, छुट्टी,-लेब,-होब वै० -ती ।
रुक्का सं० पुं० कागज का छोटा टुकड़ा, पत्र; -लिखब,-देब,-पठइब, फ़ा० रुक्कः ।
रुक्खर वि० पुं० सूखा, रूखा; सं० रूक्ष, स्त्री० -रि, क्रि०रुखराब, सूखना (घाव आदि का), भा० -ई ।
रुखानि सं० स्त्री० रुखान वै०-नी ।
रुगरुगाब क्रि० अ० अच्छा होना, जीने लगना, सं० रुज् (रोग से मुक्त होना) ।
रुचब क्रि० अ० अच्छा लगना, सं० रुच् ।
रुजुक सं० पुं० रोजी, जीवन यात्रा;-चलब, रिज़्क़, कहा० हिल्ले-बहानें मउति ।
रुतबा सं० पुं० स्थिति, उच्च स्थान ।
रुन सं० पुं० ऊन, मुलायम बालदार वस्तु जो कुछ फलों आदि पर होती है । वि०-दार ।
रुनझुन सं० पुं० सुरीली आवाज (घुँघुरु आदि की), स्त्रियों के उन गीतों में यह शब्द प्रायः आता है जो नातेदारों के भोजन के समय गाये जाते हैं—"रुनझुन भौंरा रे… " ।
रुन्हवाइब क्रि० स० रुँधाना, काँटे आदि से बंद करा देना (खेत, राह..),वै० न्हाइब, सं० रुध् ।
रुपया सं० पुं० रुपया, द्रव्य,-पैसा,-कमाव,-देब, -लेब, वि०-यहा,-ही ।
रुपहला वि० पुं० चाँदी का बना हुआ; स्त्री० -ली ।
रुमालि सं० स्त्री० रुमाल; प्र०-ली ।
रुरुआब क्रि० अ० इधर-उधर खाने पीने की आशा में मारे-मारे फिरना ।
रुवाई दे० रोवाई ।
रुसनाई दे० रोस- ।
रुसवति सं० स्त्री० घूस,-देब,-लेब, रिश्वत; वै० रो- ।
रुहकब क्रि० अ० किसी वस्तु के लिए तरसते रहना, प्रे०-काइब,-उब,-हुहकब, तरसते तरसते जीवन बिताना ।
रूख स० पुं० पेड़,-अस, चुपचाप, निष्क्रिय; कहा० रूख न बिरूख तहाँ रेंड़वै पुनीत, (२) वि०-सूख, रूखा-सूखा प्र०-खै, बिना घी तेल के, रुक्खै-सुक्खै, सं० रूक्ष ।
रूठब क्रि० अ० रूठना, अप्रसन्न होना, प्रे० रुठा-इब,-ठवाइब, सं० रुष्ट ।
रून्हब क्रि० स० रूँधना, काँटा लगाना, प्रे० रुन्हाइब,-न्हवाइब (दे०), सं० रुध् ।
रूप सं० पुं० शकल,-धरब,-बनाइब;-रंग ।
रूपा सं० पुं० चाँदी, सोना- ।
रूबरू क्रि० वि० आमने सामने (व्यक्ति के), मुँह पर; फ़ा० रू (चेहरा)+ब (साथ)+रू, प्र० रुहबरुह ।
रूल सं० पुं० नियम,-करब,-बनइब, अं० ।
रूला सं० पुं० पटरी, नापने का रूल; अं० रूल ।
रेंकब क्रि० अ० गधे की भाँति बोलना ।

रेंक-रेंकौं सं० पुं० सारङ्गी की आवाज़,-करब, -होव, अनु०, ध्व०; प्र०-कौं-रेंकौं ।
रेंड़ सं० पुं० एक पेड़ जिसमें रेंड़ी होती है; सं० एरण्ड, कहा० रुख न विरूख तहाँ रेंड़वै पुनीत; क्रि०-व।
रेंड़व क्रि० अ० दाने पड़ने के निकट होना (गेहूँ आदि के पौदे का)।
रेंडी सं० स्त्री० रेंड़ की फली; किसी पेड की फली जिसमें से तेल निकले,-क तेल, रेंड़ की फली का तेल; सं० एरण्ड ।
रूसा दे० अरूसा ।
रूसी सं० स्त्री० सिर या शरीर में से भूसी की भाँति निकलनेवाली हल्की पतली वस्तु, क्रि० रुसिआव, रुसी से भर जाना (सिर या शरीर का)।
रूह सं० स्त्री० आत्मा, प्राण,-काँपव, बड़ा डर लगना,-थराव, अर० रूह (आत्मा) ।
रेइव क्रि० स० टाँग देना; बहुत दिन तक टाँग रखना; प्रे०-वाइव ।
रेउरी सं० स्त्री० रेवडी।
रेखि सं० स्त्री० मूँछ की रेखा;-फूटव-आइव, मूँछें निकलना, वै०-ख,-फ (फँ०) सं० रेखा ।
रेङव क्रि० अ० रेङ्गना, धीरे-धीरे चलना· पहुँचना (खेत में पानी का); प्रे०-ङइव,-ङ्वाइव ।
रेचा दे० रीचा ।
रेजा सं० पुं० छोटा-छोटा टुकड़ा;-रेजा, टुकड़ा टुकडा ।
रेट दे० रैट ।
रेढ़ा सं० पुं० झगड़ा, बखेड़ा,-करव,-उठाइव ।
रेत सं० पुं० बालू: बालू-(गीतों में); वि०-हा, -ही,-तील ।
रेतव क्रि० स० रेतना, काटकर टुकड़ा करना: व्यं० डाँटना, धिक्कारना, एक ही बात को बार-बार कहते रहना ।
रेरिआइव क्रि० स० रे रे करना, किसी को हुकार कर बुलाना या पुकारना ।
रेल सं० स्त्री० रेलवे ट्रेन;-पेल, भीड़-भाड़,-वई, रेलवे, घं० ।
रेलव क्रि० स० ढकेलना, इकट्ठे ही भेज देना, प्रे० -लाइव,-लवाइव ।
रेह सं० स्त्री० नमक और सोडा भरी मिट्टी जिससे कपड़ा साफ़ होता है;-लादव, दुबला होता जाना वि०-हार, रेह से भरा हुआ (खेत, मैदान) ।
रेहनि सं० स्त्री० रेहन -लेव,-धरव ।
रैकवार स० पु० ठाकुरों की एक उपजाति ।
रैज सं०पुं० तरीका, व्यवहार;-निकरव,-होव,-निकारव, नियम कर देना फ़ा० रायज ।
रैनि स० स्त्री० रात वै० न, प्रायः गीतों में,-बसेरा, थोड़ी देर का निवास ।
रैपर सं० पुं० हलका गरम चद्दर,-ओढव, अं० ।
रैफिल सं० स्त्री० बंदूक, रायफिल, अं० ।
रैयत सं० स्त्री० असामी, प्रजा, वै०-अत,-वारी, एक पद्धति जिससे भूमि का विभाजन होता है।
रोआँ सं० पुं० पतला बाल;-रोआँ, रोम-रोम; वै० -वाँ; सं० रोम ।
रोइव क्रि० अ० रोना, शिकायत करना,-गाइव, अपना दुःख सुनाना; प्रे०-वाइव,-उव, वै०-उव ।
रोक सं० पुं० रुकावट,-थाम; क्रि०-व ।
रोकड़ सं० पुं० नकद रुपया; बचा हुआ द्रव्य; वै० -र ।
रोकव क्रि० स० रोकना; प्रे०-काइव, भा० रुकावट ।
रोकादानी सं० स्त्री० बेईमानी (खेल में);-करव, -होव ।
रोकैया सं० पुं० रोकनेवाला; प्रे०-कवैया ।
रोग सं० पुं० व्याधि,-होव; वि०-गी, क्रि०-गाव, रोगी हो जाना.-गिआव. सं० रुज् ।
रोगन सं० पुं० तेल, मसाला (लगानेवाला)।
रोचना सं० पुं० विवाह का एक रस्म ।
रोज क्रि० वि० प्रतिदिन;-ही, दैनिक मजदूरी,-रोज, फ़ा० रोज (दिन); प्र०-जै ।
रोजमर्रा क्रि० वि० प्रतिदिन, वै० रु-।
रोजही सं० स्त्री० दैनिक मजदूरी.-पर ।
रोजा सं० पुं० मुसलमानों का प्रसिद्ध व्रत,-राखव, -रहव,-खोलव, अर० रोज: ।
रोजाना क्रि० वि० प्रतिदिन; रोज, वै०-जिन्ना ।
रोजिगार स० पुं० पेशा, व्यवसाय,-री, व्यवसायी, -करव -होव ।
रोजी सं० स्त्री० जीवन यात्रा -चलव,-देव -लेव ।
रोजै क्रि० वि० रोज ही, प्रतिदिन;-रोज, नित्य-प्रति ।
रोट सं० पुं० बड़ी और मोटी रोटी रोटी जो देवता को चढ़ाई जाय ।
रोटी स० स्त्री० किसी के मरने पर की गई दावत; -करव,-होव भा०-टियाही, रोटी होने का ताँता ।
रोड़ा सं० पुं० पत्थर का टुकड़ा; रुकावट;-लगाइब, -अटकाइव ।
रोदन सं० पुं० रोने की क्रिया. जोर-जोर से रोना; -करव,-ठानव पं० तुल०रोदन ठाना ।
रोनउक दे० रोवनउक ।
रोपव क्रि० स० ऊपर से गिरती हुई वस्तु को पकड़ लेना प्रे०-पाइव,-पवाइव, रोप लेना, परसवाना (भोजन), स० रोपय् ।
रोव सं० पुं० आतंक -गाँठव,-वघारव,-दाव, वै० रुआव (दे०), वि०-बीला.-दार ।
रोय-धोय क्रि० वि० दु:खपूर्वक, किसी प्रकार, रो-धोकर इस कहावत में इन दोनों शब्दों को क्रिया के रूप में प्रयोग करते हैं । अपुना क रोई-धोई आन क अढ़ाई.पोई, अपने लिए तो रोना पड़ता है पर दूसरे के लिए २½ रोटी बनाकर देता है ।

रोरा सं० पुं० आँख का एक रोग,-फोरब,-क गुरिया, एक जंगली पौदे का काँटेदार फल जिसके बाँधने से रोरा सूखकर अच्छा हो जाता है। (२) छोटा टुकड़ा, यक रोरा नोन, गुर...।

रोरी सं० स्त्री० मत्थे में लगाने का रंग; छोटा टुकड़ा;-लगाइब।

रोवाइब क्रि० स० रुलाना, तंग करना, भा०-ई।

रोस सं० पुं० क्रोध का आवेश, क्रि०-साब, आवेश में आना।

रोसनी सं०स्त्री० प्रकाश,-करब,-होब; फा० रोशनी।

रोहनिया सं० पुं० एक प्रकार का आम जो रोहिणी नक्षत्र में सब आमों के समाप्त होने पर पकता है। वै०-हि-,-हा, सं० रोहिणी।

रोहब क्रि० अ० अच्छा फल देना, चलन होना, माना जाना (रिवाज या दस्तूर का), सं० रुह्, पनपना।

रौजा सं० पुं० कब्र।

रौनब क्रि० स० रौंदना, प्रे०-नाइब, वै० रउनब (दे०)।

रौहाल वि० पुं० प्रसन्न, स्त्री०-लि,-रहब।

ल

लका सं० स्त्री० प्रसिद्ध द्वीप और उसकी राजधानी, -पुरी।

लंगड वि० पुं० लँगडा, स्त्री०-डि, वै०-ङ्डड, क्रि० -डड़ाब, लँगड़े-लँगडे चलना,-ड्डु, आदर प्रदर्शक रूप।

लंपट वि० पुं० दुश्चरित्र, स्त्री०-टि, भा०-ई।

लइआ सं० स्त्री० लाई, भुना हुआ दाना, राम दाना क-, रामदाने के भुने हुए दाने।

लइका दे० लरिका।

लइन सं० स्त्री० पंक्ति, दिशा, कार्य की पद्धति, पेशा, अं० लाइन,-धरब, काम करना,-मे, क्रम से।

लइमड़ दे० लयमद।

लइसन सं० पुं० लैसंस, आज्ञा-पत्र,-लेब,-दार, जिसके पास आज्ञापत्र हो, अं० लाइसेंस, वै० लय-।

लउँचा सं० पुं० छोटी पतली डाल, स्त्री०-ची।

लउँड़ी सं० स्त्री० लौंडी, परिचारिका,-चेरिया, नौकरानियाँ, वै०-वँड़ी,-ड़िनि।

लउआर सं० पुं० चुँगली,-लगाइब, चुँगली कर देना, वि०-री,-रिहा, चुँगली करनेवाला, वै० -वार।

लउक-वरा सं० पुं० लौकी के टुकड़ों का बना हुआ बड़ा या पकौड़ा।

लउकी सं० स्त्री० लौकी।

लउछिआव क्रि० अ० लालच में पड़े रहना, कुछ पाने की आशा में डटे रहना;-आन रहब, वै०-व-, लौ-।

लउटब क्रि० अ० लौटना, प्रे०-टाइब,-उब, वै० -व-।

लउटानी सं० स्त्री० लौटती वार, वै०,-व-।

लउता-वउता सं० पुं० इधर-उधर की वात, भा० -ई-ई, ऐसी वातें करने की आदत, दे० रउताई।

लउर सं० पुं० बड़ा डंडा या लाठी,-चान्हब।

लउलीन वि० पुं० उत्सुक,-होब,-रहब, वै०-व-।

लउवार दे० लउआर।

लउहार दे० लवहार।

लकड़िहार सं० पुं० लकड़ी बेचनेवाला, स्त्री० -रिनि।

लकडी सं० स्त्री० काठ, लाठी का खेल, छड़ी, -मारब,-चलाइब, क्रि०-ड़िआब, सूखना (पेड़ या व्यक्ति का)।

लकलका वि० पुं० खूब साफ एवं चमकीला, प्र० लकालक्क,-होब,-रहब।

लकवा सं० पुं० प्रसिद्ध बीमारी जिसमें अंग मारा जाता है,-लागब,-गिरब,-मारब।

लखन सं० पुं० लक्ष्मण; तुल० उठे लखन निसि विगत सुनि ; वै०-छन, सं०।

लखनऊ स० पुं० अवध का प्रसिद्ध नगर जिसे लक्ष्मणपुर भी कहते हैं। वि०-नउआ, लखनऊ का (व्यक्ति, फैशन आदि)।

लखनी सं० स्त्री० बच्चों का एक खेल जिसमें पेड़ की डालों पर चढ़ते कूदते रहते हैं,-खेलब।

लखब क्रि० स० देखना, ताकते रहना, रखवाली करना, प्रे०-खाइब,-खवाइब, स० लक्ष्।

लखाइब क्रि० स० दिखा देना, वतला देना, दूर से दिखाना; सं० लख्।

लखाउरी वि० पुं० एक प्रकार की पतली ईंट जिनसे पहले मकान बना करते थे,-ईंटा, वै० -खउरी, स० लक्ष।

लखैया सं० पुं० देखनेवाला, रखवाली करनेवाला, प्रे०-खवैया।

लग अव्य० निकट प्र०-गें, पास -लग, वि० घनिष्ट (सम्बन्धी),-गें, पास में ही, अत्यंत निकट।

लगछुआई सं० स्त्री० सम्पर्क, छूत, सं० लग्+ छुअब।

लगन स० स्त्री० विवाह का समय;-लागब, सं० लग्न, वै०-नि।

लगव क्रि० अ० लगना, प्रभावित करना; वै० लागव, प्रे० लगाइब,-गवाइब,-उब ।
लगवना सं० पुं० जलाने की लकड़ी, कंडा आदि ।
लगा सं० पुं० प्रारम्भ;-लगाइब प्रारम्भ करना ।
लगामि सं० स्त्री० लगाम,-लागव,-लगाइब, रोकना ।
लगेनि वि० स्त्री० लगने या दूध देनेवाली (गाय, भैंस आदि) ।
लग्गा सं० पुं० फल आदि तोड़ने की लम्बी लकड़ी स्त्री०-ग्गी,-लगाइब प्रारम्भ करना;-लागब,-यसू, लम्बा ।
लग्गू-भग्गू सं० पुं० सहायक, गौण लोग; साधारण व्यक्ति, वै०-गुआ-भगुआ; (मौका पड़ने पर पास लग जानेवाले और फिर भग जानेवाले) ।
लङड़ा सं० पुं० प्रसिद्ध आम ।
लङड़ी सं० स्त्री० कुश्ती का एक पेच,-लगाइब, -मारब, यह पेच लगाना ।
लङोट सं० पुं० लँगोट, स्त्री०-टी;-लगाइब,-बान्हब; कहा० भागे भूत कै लङोटी ।
लचक सं० स्त्री० लचकने की प्रवृत्ति या शक्ति; क्रि०-ब, प्रे०-काइब ।
लचब क्रि० अ० लचना, झुकना; प्रे०-चाइब, -उब ।
लचर वि० पुं० ढीला-ढाला, सुस्त, स्त्री०-रि, भा० -ई,-पन, क्रि०-राब, दे० लीचर ।
लचाइब क्रि० स० लचाना, झुकाना, हराना, प्रे० -चवाइब ।
लचार वि० पुं० लाचार, निःसहाय; भा०-री, -चरई; फा० लाचार ।
लछन सं० पुं० लक्षण, चिह्न; वि०-छनवत,-ति, अच्छे लक्षणवाला (व्यक्ति),कु-(दे०) ।
लछन दे० लखन ।
लछनवति वि० स्त्री० अच्छे लक्षण वाली (स्त्री०) ।
लछमन सं० पुं० लक्ष्मण, वै०-छि-।
लजवाइब क्रि० स० लज्जित करना; वै०-उब, सं० लज्जा ।
लजाधुर वि० पुं० शर्मीला, स्त्री०-रि ।
लजाब क्रि० अ० लज्जित होना, शर्म करना; सं० लज्ज ।
लजुरी दे० लेजुरी ।
लटइब दे० लटब ।
लटकब क्रि० अ० लटकना, प्रे०-काइब,-उब ।
लटका सं० पुं० लटकाने या स्थगित करने का बहाना;-लगाइब ।
लटकाइब क्रि० स० लटकाना, फाँसी देना, वै० -उब, प्रे०-कवाइब,-उब ।
लटगेना सं० पुं० गेंद जो फूल की भाँति स्त्री की लट में लटका या लगा हो, गीतों में "लटगेनवा" और "फुलगेनवा" का प्रायः उल्लेख आता है ।
लटब क्रि० अ० झुकना, हारना, प्रे०-इब,-टाइब ।
लट्ठा सं० पुं० बड़ा ठंडा, एक प्रकार का कपड़ा; -पार, नैपाल राज की सीमा में ।
लठइत वि० पुं० लाठी चलानेवाला; झगड़ालू, वै०-ठैत ।
लठबाज वि० पुं० लाठीवाला, प्र०-ट्ठ-, लड़ाकू, भा०-बजई,-जी ।
लठिहा वि० पुं० लाठीवाला; स्त्री०-ही ।
लड्डू सं० पुं० मोदक; वै० ले-, गीतों में "लड़ुवा"
लडइआ वि० पुं० लड़नेवाला; वै०-या ।
लडकपिल्ली वि० पुं० चिबिल्ला लड़का, वै० -ल्ला ।
लड़खड़ाब क्रि० अ० हिलकर गिरने लगना, वै० -र-।
लडब क्रि० स० लड़ना, प्रे०-डाइब,-ड़वाइब, -उब ।
लड़हरा सं० पुं० चरी का लंबा पेड़ ।
लड़ाइब दे० लड़ब ।
लड़ाई सं० स्त्री० युद्ध, झगड़ा;-करब,-होब ।
लड़ाका वि० झगड़ालू ।
लढ़िआ सं० स्त्री० बैलगाड़ी,-ढकेलब; बड़ा परिश्रम करना (व्यं०), वै० लढ़ी,-या ।
लढ़िवान सं० पुं० गाड़ीवान; भा०-नी,-वनई ।
लढ़ी दे० लढ़िआ ।
लणवादि सं० स्त्री० परेशानी;-करब,-होब, लण (लिंग) + वादि (दे० अपवादि) ।
लतखोर वि० पुं० लात खाने वाला, स्त्री०-रि; दे० लुचखोर, फा० खुरदन (खाना); 'खोर' कई और निंदात्मक शब्दों में लगता है, जैसे, हरामखोर, हलालखोर (दे०) ।
लतमरुआ वि० पुं० लात का मारा हुआ, पिछड़ा, गया-बीता
लतरी सं० स्त्री० पुरानी जूती ।
लतिआइब क्रि० स० पैरों से सीधा करना (काँटे आदि को); मारना; प्रे०-वाइब; कहा० बेरहा बतिआयें, सूद लतिआयें, अर्थात् बेरहा (दे०) बाती (दे०) लगाने से और शूद्र लातों की मार से ठीक होता है ।
लत्ता सं० पुं० चिथड़ा, फटा कपड़ा ।
लथफथ वि० पुं० भीगा एवं थका; पसीने से तर; प्र०-त्थ-त्थ;-होब ।
लथेरब क्रि० स० मिट्टी, कीचड आदि में सान कर गंदा करना, गिराना, परास्त कर देना, प्रे० -रवाइब,-उब ।
लद-लद क्रि० वि० भद्देपन के साथ (गिरना) ।
लदनी सं० स्त्री० लादने की क्रिया;-करब,-होब ।
लदब क्रि० अ० लदना, चला जाना; नष्ट होना, जेल जाना, प्रे० लादब, लदवाइब, लदाइब, अं० लोड, लेड ।
लदर-लदर क्रि० वि० झूलता या लटकता । हुआ; वै०-फदर ।

लदवाइब क्रि० स० लादने में सहायता करना, भा०-वाई, लादने की क्रिया, मजदूरी आदि ।
लदाइब क्रि० स० लदवाना, भा०-ई ।
लद्धड वि० पुं० भारी एवं सुस्त, स्त्री०-ड़ि ।
लद्दू वि० जिस पर बोझ लादा जाय, सवारी न की जाय (घोड़ा, घोड़ी) ।
लधब क्रि० अ० (बीमारी में) खाट ले लेना, असाध्य हो जाना ।
लनूती वि० निंदा का,-दाग, अपयश, फा० लानत +ई (लानत का),-दाग लागब, अपयश लग जाना ।
लपकब क्रि० अ० लपकना, जल्दी से पकड़ने का प्रयत्न करना, दौड़ना, प्रे०-काइब, हाथ बढ़ाकर पहुँचाना ।
लपचा सं० स्त्री० एक प्रकार की लंबी पतली मछली, लघु०-ची ।
लपटा सं० पुं० नमकीन लपसी (दे०), फुहरी क-, व्यर्थ, गड़बड़ (करब, होब) ।
लपटि स० स्त्री० आग की आँच, लपट,-लागब ।
लपटिआब क्रि० अ० लग जाना, जुट जाना, कमर कस लेना ।
लपलप क्रि० वि० बार-बार (बाहर भीतर करना); क्रि० लपलपाइब, बाहर भीतर निकालना (जीभ), जल्दी जल्दी हिलाना (तलवार) ।
लपेटब क्रि० स० लपेटना, भा० लपेट, चक्कर,-म आइब, चक्कर में आ जाना, प्रे०-वाइब ।
लप्पड़ सं० पुं० तमाचा,-मारब,-देब,-लगाइब ।
लफब क्रि० अ० टेढ़ा हो जाना, झुकना, प्रे० -फाइब,-फवाइब ।
लबड़ा वि० पुं० बायाँ; स्त्री०-ड़ी,-ड़-हत्था, बायाँ हाथ काम में लानेवाला ।
लबड़िहा वि० पुं० जो अपना बायाँ हाथ प्रयोग में लावे, स्त्री०-ही ।
लबदा सं० पुं० ताजा तोड़ा हुआ डंडा जिससे फल तोड़ा जाय,-बहाइब,-मारब ।
लबनी सं० स्त्री० मटकी जिसमें ताड़ी चुवाई जाती है;-लगाइब ।
लबर-लबर क्रि० वि० जल्दी जल्दी और व्यर्थ (बोलना), क्रि० लबलबाब ।
लबलबी वि० पुं० जल्दबाज, कहा० लबलबी क बियाह, कनपटी मेँ सेनुर, जल्दबाज अपने ब्याह में दुलहिन की माँग में नहीं उसकी कनपटी में सिंदूर लगाता है । वै०-ब ।
लबाब सं० पुं० गाढ़ा द्रव,-होब ।
लबार वि० पुं० झूठा, स्त्री०-रि, भा० लबरई, -पन ।
लबालब क्रि० वि० पूरा पूरा, मुँह तक (भरा हुआ), प्र०-ब्ब ।
लबेद सं० पुं० मनमानी बात, वेद विरुद्ध बात, बेद और लबेद, शास्त्रीय मत तथा ढकोसला ।

लबेरब क्रि० स० पोत देना, प्रे०-वाइब, प्र०-भे-, दे० चभोरब ।
लमडझ वि० पुं० दूर का (रिश्तेदार); स्त्री०-झि; वै०-झा ।
लमछर वि० पुं० कुछ लम्बा, स्त्री०-रि, सं० लंब ।
लमटँगा वि० पुं० जिसकी टाँग लंबी हो, स्त्री० -गी ।
लमाब क्रि० अ० दूर जाना, दे० लाम ।
लमेरा सं० पुं० धान के साथ उगा हुआ वह पौधा जिसमें अन्न न पैदा हो, व्यर्थ की वस्तु, संतान जो असली पिता से न हुई हो ।
लम्मर सं० पु० संख्या,-लागब,-डारब, अं० नंबर ।
लम्मरी वि० पुं० नंबर वाला;-सेर,-मनई, बदमाश आदमी जिस पर पुलिस ने नंबर या अपराध का दफा डाल रखा हो, अं० नंबर ।
लम्मा वि० पुं० लंबा, स्त्री०-मी,-होब, भाग जाना ।
लय सं० स्त्री० गीत का तर्ज, यक-से, ठीक तरह से, वै० लै ।
लयमड़ सं० पुं० सुस्त और फूहड़ व्यक्ति, स्त्री०-ड़ि, भा०-ई,-पन ।
लर सं० स्त्री० पंक्ति (आभूषणों की), यक-, दुइ-; लड़ी, वै०-रि ।
लरखराब दे० लड़खड़ाब ।
लरिकई सं० स्त्री० लड़कपन, वै०-काई ।
लरिका सं० पुं० लड़का, छोटा बच्चा, स्त्री०-की, क्रि०-ब, लड़के की भाँति व्यवहार करना, भा० -काय, ऐसा, व्यवहार, मूर्खता आदि, लरिकाय करब, भा०-ई,-कई (दे०), वि०-कोरि, (स्त्री) जिसके संतान हो चुकी हो,-परिकोरि ।
ललका वि० पुं० लाल रङ्गवाला, स्त्री०-की ।
ललकार सं० स्त्री० चुनौती, क्रि०-ब ।
ललाई सं० स्त्री० लाल रङ्ग (किसी वस्तु का) ।
ललाब क्रि० अ० इच्छुक रहना, अतृप्त रहना (किसी अप्राप्त वस्तु के लिए); पाने के लिए ललचाते रहना; सं० लाल् ।
लल्ला सं० पुं० छोटा प्यारा बच्चा, स्त्री०-ल्ली; कविता में "-ला,-ली" प्रिय व्यक्ति के लिए, वै० -ल्लू ।
लवडा सं० पुं० छोटा लड़का, स्त्री०-डी, लड़की, भा०-यडपन,-ना, बच्चों की सी बात या व्यवहार ।
लव सं० पुं० रामचंद्र के पुत्र;-कुस, दोनों भाई ।
लवइया स० पु० लानेवाला, वै०-वैया,-यवैया, सं० नी (लाना) ।
लवछिआब दे० लउ-।
लवटब दे० लउ-।
लवटानी दे० लउ-।
लवता-यवता सं० पुं० इधर उधर की बात; -मारब, गप मारना ।

लवरि सं० स्त्री० लपट,-निकरव।
लवलीन वि० पुं० उत्सुक, व्यस्त,-होव,-रहव, भा० -लिनई।
लवहार सं०पुं० मर कर जीवित हो जाने की दशा; -रे जाव, ऐसा हो जाना।
लवा सं० पुं० प्रसिद्ध पक्षी।
लवाडि सं० स्त्री० लौंग;-देखव, ओझाई करना; पीठा-, देवी को चढ़ाने का सामान।
लस सं० पुं० चिपकने का गुण;-होव,-रहव।
लसकरि सं० स्त्री० फौज,-चढाइव, देवी की एक पूजा करना जिसमें मिट्टी के बने हुए सिपाही समर्पित किये जाते हैं। फ़ा० लश्कर।
लसव क्रि० अ० चिपक जाना, प्रे०-साइव।
लसम सं० पुं० चिपकने की प्रवृत्ति,-धरव, दे० लस।
लसर-लसर क्रि० वि० चिपकते हुए;-करव।
लसार वि० चिपकनेवाला (आटा, गुड़ आदि), -धरव,-होव।
लसिआव क्रि०अ० चिपक जाना, ख़राब हो जाना, गीत-'वान्हल जूरा लसिआय महिनवा दिनवा सावन कै"।
लसोड़ा सं० पुं० एक पेड़ और उसका फल जिसका अचार बनता है। वै०-हसोड़ा,-चोड़ा।
लस्सी सं० स्त्री० पतला शरबत।
लस्सुन दे० लहसुन।
लहँगरी सं० स्त्री० छोटा लहँगा।
लहँगा सं० पुं० लहँगा, वै०-डा।
लहकव क्रि० अ० चमकना, (आग का) जीवित रहना प्रे०-काइव, चमकाना।
लहकारव क्रि० स० उत्तेजित कर देना, उकसा देना।
लहचिचिरा-सं० पुं० एक जंगली पौदा, अपामार्ग।
लहजा सं० पुं० क्षण,-भर (२) ध्वनि।
लहतगा सं० पुं० सिलसिला,-लागव,-लगाइव, वै० -त्तगा।
लहना सं०पुं० रुपया जो पाना हो, सं० लभ् (प्राप्त करना),-तगादा।
लहव क्रि०अ० सफल होना (बात का); प्रे०-हाइव, लगाना, मदद करना, सं० लभ्।
लहबड सं० पुं० पताका, झंडा;-डिआ सुगा, एक प्रकार का तोता;-यस, लंबा।
लहमा सं० पुं० क्षण, लमह.।
लहर सं० स्त्री० तरङ्ग वि०-री, मौजी, वै०-रि, -आइव,-देव, साँप के काटे हुए व्यक्ति को विष की लहर आना क्रि०-राव,-रिआव।
लहरा सं० पुं० वर्षा का झोंका; यक-, दुइ-।
लहलहान क्रि० अ० लहलह करना, हरा भरा रहना।
लहसुन सं० पुं० लहसुन, वै० ले-, सं० लशुन, -पियाजि, ब्राह्मणों या वैष्णवों का अखाद्य पदार्थ।
लहाउर सं० पुं० लाहौर, दूर स्थान;-री नोन, एक प्रकार का नमक।
लहासि सं० स्त्री० लाश, शव।
लहिआव क्रि० अ० पक कर लाल हो जाना।
लहुआलोहान दे० लोहुआ-।
लहुरा वि० पुं० छोटा, कम अवस्था का, स्त्री० -री।
लाँगि सं० स्त्री० पहनी हुई धोती का एक भाग, वै०-ङि।
लाँघव क्रि० स० कूदना, प्रे० लँघाइव, दे० नाघव।
लाँड़ सं० पुं० पुरुष की जननेंद्रिय,-देखाइव, धोखा देना,-ड़े से, मेरी बला से।
लाइव क्रि० स० लाना, वै०-उब; प्रे० लवाइब।
लाई सं० स्त्री० लाई चना-,-चना,-लूसी, चुगली; -लगाइव।
लाख सं० पुं० लाख, यक-,दुइ-;-न, लाखों;-खौ, लाखों; सं० लक्ष।
लाग सं० स्त्री० लगन, चिंता,-करब,-रहब,-होब; वै०-गि,-से, फ़िक्र से, ध्यानपूर्वक।
लागव क्रि० अ० लगना, जल जाना; प्रे० लगाइब, -उब, आँखि-, मन-, चित-, जिउ-।
लाग-लीन वि० पुं० लगा हुआ (भूत प्रेत आदि); बाकी; लेना-देना (पैसा),-होब,-रहब।
लागुन वि० पुं० लगनेवाला (भूत प्रेत आदि), स्त्री०-नि (चुड़ैल), आक्रमण करनेवाला (पशु)।
लाज सं० स्त्री० लज्जा,-लागव, क्रि० लजाब, वि० लजाधुर।
लाट सं० पुं० लार्ड,-साहब,-कमंडल, लार्ड गवर्नर, अं० लार्ड।
लाटा सं० पुं० महुए को गर्म करके उसमें दूसरी चीजें मिलाकर बनाया हुआ पापड़।
लाठी सं० स्त्री० लाठी,-मारब, कठोर शब्द कहना, उजड्डता करना।
लात सं० पुं० पैर, क्रि० लतिआइब।
लादव क्रि० स० लादना, प्रे० लदाइब,-दवाइब, -उब।
लादी सं० स्त्री० धोने का उतना कपड़ा जितना एक गधे पर लद सके, यक-, दुइ-; (२) अंकुर (दे०) के पीछे लदी हुई मिट्टी जिसमें फूस मिला होता है और जिसके कारण वल्ली नीचे जाती है।
लानति सं० स्त्री० निन्दा,-मलामति करब, डाँटना, फटकारना; दे० लनती।
लापता वि० जिसका पता न हो; अर० ला+ पता।
लापरवाह वि० जिसे परवाह न हो; अर० ला (बिना)+परवाह; वै० ल-निपरवाह (दे०); भा० -ही।

लाबरलिल्ला वि० पुं० फूहड, बेढंगा, वै०-ह्-, स्त्री०-ल्ली ।
लाभ सं० पुं० तौलते समय अन्नादि का वह अंश जो अलग निकाल दिया जाता है,-निकारब,-लेब; सं० लभ् (लेना) ।
लाम वि० पुं० दूर, क्रि० वि०-में, क्रि० लमाब, दूर हो जाना, दूर चला जाना, सं० लम्ब ?
लामें क्रि० वि० दूर पर,-लामें, दूर-दूर ।
लाय-लाय सं०पुं० सिफारिश,-करब, अनुनय विनय करना ।
लायन सं० पुं० दहेज का वह भाग जो नकद नहीं वस्तुओं के रूप में दिया जाय ।
लार सं० पुं० मुँह का पानी,-गिरब,-टपकब ।
लारी सं० स्त्री० बड़ी मोटर,-चलब,-हाँकब, अं० ।
लाल सं०पुं० एक छोटी चिड़िया (२) एक बहुमूल्य पत्थर (३) वि० लाल रङ्ग का, भा० ललाई, लाली ।
लालरी सं० स्त्री० लाल रङ्ग या वस्तु की पंक्ति; -होब ।
लालसर सं० पु० एक चिड़िया जिसका मांस स्वादिष्ट होता और दवा के काम भी आता है ।
लाला सं० पुं० कायस्थ, पटवारी; स्त्री० ललाइनि ।
लाली सं० स्त्री० ललाई, लालिमा ।
लालसा सं० स्त्री० हार्दिक इच्छा;-करब,-होब, -रहब, सं० ।
लावनी सं० स्त्री० एक प्रकार का गीत,-गाइब, -होब ।
लावा सं० पुं० कुछ अन्नों का भुना हुआ दाना, -परछब, विवाह का एक संस्कार जिसमें धान का लावा वर-कन्या के ऊपर दुलहिन का भाई गिराता है । सं० लाज; स्त्री० लाई ।
लासा सं०पुं० गोंद;-लागब,-लगाइब, फँसाना, क्रि० लसिआब ।
लाह् सं० पुं० लाख,-लागब, दुबला होते जाना, बराबर स्वास्थ्य गिरते रहना ।
लाही सं० स्त्री० सरसों का एक प्रकार जिससे तेल निकलता है ।
लिखना सं० पुं० लिखा हुआ प्रतिज्ञापत्र;-करब, -होब,-लिखब,-कराइब, लिखाइब; सं० लिख् ।
लिखब क्रि० स० लिखना, प्रे०-खाइब, खवाइब, -उब, सं० लिख् ।
लिखवाई सं० स्त्री० लिखने का परिश्रम, उसकी मजदूरी आदि, सं० ।
लिखाई दे० लिखवाई ।
लिचड़ई सं० स्त्री० लोचड़पन, काहिली, दे० लीचड़ ।
लिटाब क्रि० अ० लीटा (दे०) हो जाना, वै० -टिआब ।
लिटिहा वि० पुं० जिसमें लीटा हो, गीला (गुड), वै०-टहा, स्त्री०-ही (भेली) ।
लिट्टी सं० स्त्री० आटे की गोल मोटी रोटी जो कंडे पर सेंकी जाती है, वै० लीटी,-लगाइब,-बनाइब ।
लिदिहा वि० पुं० जिसमें लीद हो, स्त्री०-ही ।
लिपवाइब क्रि० स० लिपवाना; भा०-ई, लीपने की क्रिया, मजदूरी, पद्धति आदि ।
लिपाइब क्रि० स० लीपने में सहायता करना, दे० लीपब ।
लिफाफा सं० पुं० पत्र भेजने का लिफ़ाफ़ा, बाहरी ठाट-बाट, आडंबर ।
लिवडी बिरताना सं०पु० पोशाक, दिखावटी कपड़े, अं० लिवरी ।
लिबलिब वि० पुं० लापरवाह और जल्दबाज, दे० लबलब, क्रि०-बाब, जल्दी करके काम बिगाड़ना ।
लिम्मस सं० पुं० अपयश,-लागब,-लगाइब, वि० -सहा, अपयशवाला, दे० निमोसी ।
लिलगाह् सं० पुं० नीलगाय, प्र० ली- ।
लिलवाइब क्रि० स० निगलवाना ।
लिल्ला सं० पुं० चमड़े के ऊपर निकला हुआ मसा (दे०) की तरह का मांस का भाग ।
लिल्लाह वि० पुं०मुक्त, दान में दिया हुआ, अर० अल्लाह के लिए; प्र०-ही, सेंत का (माल),-करब, -देब ।
लिल्ली घोड़ी सं० स्त्री० बरसात में होनेवाला एक कीड़ा जो एक दूसरे के ऊपर चढ़ा हुआ घूमता रहता है ।
लिवाइब क्रि० स० ले आना, वै०-याइब,-उब, सं० नी ।
लिहाज सं० पुं० ध्यान, संकोच, सद्भावना,-करब, -राखब ।
लिहाडा सं०पुं० उजड्ड व्यक्ति, मसखरा, प्र०-डिआ, भा०-हड़ई,-ड़पन,-हाढी, वै० लु-।
लीझी सं० स्त्री० उबटन लगाने के बाद गिरी हुई उसकी सूखी मैल ।
लीक सं० स्त्री० पहिये का चिह्न, रास्ता ।
लीखि सं० स्त्री० जूँ का अंडा ।
लीटा सं० पुं० गीला और खराब गुड़, क्रि० लिटि-याब, गुड़ का खराब हो जाना ।
लीटी स० स्त्री० दे० लिट्टी ।
लीडर सं० पुं० नेता, भा०-री, नेतागिरी ।
लीदि स० स्त्री० लीद,-करब ।
लीन-छाड़न सं० पुं० रिवाज, किसी बात को लेने और दूसरी को छोड़ने का क्रम ।
लीपब क्रि० स० लीपना,-पोतब, भूसा पर-, बात बनाना, भेद छिपाने के लिए कुछ कहना, प्रे० लिपाइब,-पवाइब,-उब ।
लील स० पुं० नील ।
लीलब क्रि०स० निगलना, जल्दी-जल्दी खाना, प्रे० लिलाइब,-लवाइब,-उब ।
लीला सं० स्त्री० नाटक, खेल,-करब,-भरब, सं० ।

लुंज वि० पुं० जिसके पैर न काम करें, स्त्री० -जि,-होब।
लुँडिआव क्रि० अ० प्रेम से हिलमिलकर किसी बच्चे का अपने से बड़े से खिलवाड़ करना, वै०-रि।
लुकवाइव क्रि० स० छिपा देना; वै०-उब; 'लुकाब' का प्रे०।
लुकाव क्रि० अ० छिपना; प्रे०-कवाइव,-उव।
लुकारा सं० पुं० जलता हुआ लकड़ी का टुकड़ा; स्त्री०-री।
लुकुड़ी सं० स्त्री० छोटी पतली लकड़ी।
लुक्क सं० पुं० जलती हुई लकड़ी; स्त्री०-क्की, प्र० -क्का, लूका,-वारव; क्रि० वि०-से, झटपट (जल उठना)।
लुगरी सं० स्त्री० फटा पुराना वस्त्र (स्त्री के पहनने का), पुं०-रा, प्र०-ग्गा।
लुङ्गी सं० स्त्री० धोती की भाँति पहनने का अँगोछा।
लुच्चा सं० पुं० नीच व्यक्ति, वि० नीच, भा० -च्चई, पन।
लुचुई सं० स्त्री० छोटी नरम पूरी; वँ० लूची।
लुजलुज वि० पुं० ढीला-ढाला; स्त्री०-जि।
लुजुर-लुजुर क्रि० वि० ढीलेपन के साथ;-करव, -होब।
लुटवाइव क्रि० स० लुटा देना, लूटने में मदद देना; वै०-उव।
लुटहौ सं० स्त्री० लूट, लूटने की क्रिया;-परव;-होव।
लुटाइव क्रि० स० लुटाना; प्रे०-टवाइव,-उव, वै० -उव, भा०-ई।
लुटिआ दे० लोटिया।
लुटेरा सं० पुं० लूटनेवाला व्यक्ति; भा०-रई,-रपन।
लुटैआ सं० पुं० लूटनेवाला, प्रे०-टवैया।
लुढकव क्रि० अ० लुढ़क जाना, प्रे०-काइव।
लुनिया दे० लोनिया।
लुप्प सं० पुं० जीभ बाहर निकालने की क्रिया -दें, -सें;-लुप्प, जल्दी जल्दी जीभ निकालते हुए; वै० -ब्ब।
लुबुर-लुबुर क्रि० वि० बिना सोचे समझे (बोलना)।
लुबुरिहा वि० पु० लुबुरी (दे०) लगाने वाला, स्त्री०-हीं।
लुबुरी सं० स्त्री चुंगली; इधर उधर लगाने की आदत;-लगाइब,-करब।
लुभाव दे० लोभाय।
लुमडा वि० पुं० फूहड, वेहूदा, स्त्री०-ड़ी, प्र० लू-।
लुरकी सं० स्त्री० कान में पहनने का एक छोटा गहना।
लुलवा वि० पुं० लूला; स्त्री० लूली, दे० लूल।
लुलुआइव क्रि० स० फूहड़ या मूर्ख बना देना; 'लूलू' (दे०) कहना या बनाना।
लुलुहा सं० पुं० हाथ का पंजा।
लुवाठ सं० पुं० हाथ का खड़ा अँगूठा;-दिखाइब, कुछ न देना; वै०-आ-।
लुवाठी सं० स्त्री० जलती हुई लकडी; वै०-आ-, -कारी, "कबिरा खड़ा बजार में लिए लुवाठी हाथ",-कबीर।
लुहाड़ा दे० लिहाड़ा।
लूँडि सं० स्त्री० घास या पुआल का छोटा गट्ठर जो बरहे (दे०) में ढकेला जाता है; वै० लुइँडि।
लूक सं० पुं० आकाश से टूटा हुआ तारा,-परब, -गिरब, तुल० "दिन ही लूक परन कपि लागे!"
लूगा सं० पुं० कपड़ा,-लूटब, अपमान करना, निंदा करना,-लत्ता,-रोटी, लघु०-लुगरी,-रा;-क लोंद, निरर्थक या बेकार व्यक्ति।
लूटब क्रि० स० लूटना; प्रे० लुटाइब,-टवाइब, -उब; लूगा-, भा०-टि,-ट, लुटहौ (दे०); रामनाम की लूट है...।
लून दे० नून, लोन, सं० लवण।
लूमड़ि दे० लुमड़ा।
लूल वि० पुं० लूला; स्त्री०-लि, घृ० लुलवा (दे०)।
लूलू वि० फूहड, मूर्ख; 'उल्लू' से? सं० उलूक।
लूह सं० पुं० लू; सख्त गर्मी,-चलब,-बरसब।
लेंड़ सं० पुं० गू का टुकड़ा; स्त्री०-ड़ी।
लेंढ़ा सं० पुं० छोटा कच्चा फल (विशेषतः कटहल का), स्त्री०-ढी।
लेइआइव क्रि० स० बर्तन के नीचे राख लगाना जिससे वह कम जले; वै०-उब, दे० लेवा।
लेई सं० स्त्री० आटे की लेई;-लगाइब,-बनइब।
लेक्चर सं० पुं० भाषण,-देव,-सुनब, अं०।
लेखा सं० पुं० हिसाब;-लेब;-जोखा, हिसाब-किताब, सं० लिख्।
लेजुरी सं० स्त्री० रस्सी, वै०-रि, सं० रज्जु।
लेट वि० पुं० विलंब से आया हुआ,-खाब, देर कर देना।
लेटब क्रि० अ० लेटना, दे० वलरब।
लौंड सं० स्त्री० लौंग, वै० लवाङि।
लौंचा दे० लउँचा।
लौंडा सं० पुं० लिंग,-लेब, कुछ न पाना;-देब, कुछ न देना।
लौंडी सं० स्त्री० दे० लउँडी।
लौछिआव दे० लउ-।
लौटब क्रि० अ० लौटना, प्रे०-टाइब,-टवाइब।
लौटानी क्रि० वि० लौटते समय।
लौता-चौता दे० लउता-।
लौहार दे० लवहार।

व

वइ वि० स्त्री० वे, पुं०-य ।
वइरब क्रि० स० (पीसना) प्रारम्भ करना, (जाँत या चक्की) चलाना, प्रे०-राइब,-रवाइब ।
वइसन वि० पुं० वैसा, स्त्री०-नि, क्रि० वि०; प्र० -नै,-नौ ।
वई वि० वही ।
वऊ वि० वह भी ।
वकलाई सं० स्त्री० के करने की इच्छा,-आइब, ऐसी इच्छा होना, वै०-कि-।
वकालति सं० स्त्री० वकालत, वकील का पेशा; -करब, अर० विकालत ।
वखरी सं० स्त्री० ओखली;-यस, मोटा ताजा, हट्टा-कट्टा, सं० ऊखल ।
वगरब क्रि० अ० चूना, बूँद-बूँद करके चूना, प्रे० -गारब ।
वछराब क्रि० अ० (घाव, कुल्हाड़ी या फावड़े की चोट का) हलका होना, हलका लगना, कम लगना; दे० ओछर; वै० ओ-।
वछाँह सं० पुं० पेड़ की निकटता के कारण खेत या फ़सल को हानि;-मारब; वै० ओ-।
वजह सं० पुं० कारण, प्र० वो-।
वझाई दे० ओझाई ।
वझास सं० पुं० ओझने या फँस जाने का स्थान; नदी, तालाब या जंगल का वह स्थान जहाँ से जल्दी निकलना कठिन हो; दे० ओझब ।
वठईं क्रि० वि० वहाँ, वै०-ठाईं ।
वठघन सं० पुं० सहारा, स्त्री०-नी ।
वठङब क्रि०अ०सहारा लेना, लेट जाना, वै०-घव, प्रे०-ङाइब (दरवाज़ा) लगा देना (बंद नहीं करना)
वतरा वि० पुं० उतना, स्त्री०-री, वै०-ना,-नी ।
वतहँत क्रि० वि० कुछ दूर, उधर, प्र०-तै, उधर ही, दे० यतहँत ।
वतीरा सं० पुं० तरीका, स्वभाव, वै० उ-।
वथुआ सर्व० उस ' यह शब्द उस समय प्रयोग में आता है जब उपयुक्त शब्द स्मरण नहीं हो पाता, वै०-थू ।
वदरब क्रि० अ० (मिट्टी, दीवार आदि का) फट-कर गिरना, प्रे०-दारब,-दरवाइब,-उब, सं०वि+दृ।
वन सर्व० उन,-काँ,-कर,-कै,-हूँ, वन्हैं, उनको ।
वनइस वि० बीस में एक कम, कुछ कम अच्छा, -बीस, थोड़ा सा अंतर, प्र०-न्न-।
वनचव वि० स० खाट की रस्सी तानना, प्रे० -चाइव,-चवाइब ।
वनचास वि० चालीस और नौ;-सौ बयारि, सभी आफतें ।
वनसठि वि० पचास और नौ ।
वनसिल वि० कुछ खराब; न+अर० असल ।
वनहत्तरि वि० सत्तर में एक कम ।
वनाइब क्रि० स० पकड़कर झुकाना, प्रे०-नवाइब, सं० नम् ।
वनान सं० पुं० आज्ञापालन;-देब, हुक्म मानना, काम करना ।
वफा सं० पुं० लाभ (दवा का),-करब,-होब, वै० ओ-, वफ़ः ।
वबा सं० स्त्री० संक्रामक बीमारी, बीमारी की देवी, -माई,-क जाव, मरना, वै० ओ ।
वमहाँ क्रि० वि० उसमें, वै० वहमाँ, अवधी में वर्ण विपर्यय के ऐसे नमूने बहुत हैं ।
वरखब क्रि० स० ध्यान देना, सुनना (बात), आज्ञा मानना ।
वरट सं० पुं० वारंट,-काटब,-आइब, अ० ।
वरमब क्रि० अ० लटकना, मोटा होकर या सूजकर लटक जाना, प्रे०-माइब ।
वरहन सं० पुं० उलाहना,-देब,-लेब ।
वस वि० पुं० वैसा,-स, वैसे-वैसे; स्त्री०-सि, वससि (बहु०),-हस, वैसे-वैसे; दे० यस ।
वसहन सं०पुं०नाज जो खलियान में वसाये जाते हैं।
वसाइब क्रि० स० हवा में गिराकर साफ करना (खलियान में फसल के नाज को), मु० अपनै-, अपनी ही बात कहते जाना, दूसरे की न सुनना, प्रे०-सवाइव, वसाने में सहायता करना ।
वसीअत सं० स्त्री० उत्तराधिकार;-लिखब,-पाइब; -नामा, अदालती कागज़ जिसमें कोई दूसरे को अपना उत्तराधिकारी बनावे ।
वसूल वि० प्राप्त,-करब,-होब, भा०-ली, क्रि०-ब, फा० वसल (मिलना)।
वह वि० पुं० वह, प्र० उहै; स्त्री०-हि, प्र०-ही ।
वहकारब क्रि० स० हाँकना; बैलों को हाँकने में 'व तता' ये तीन अक्षर के दो शब्द प्रयुक्त होते हैं, पहले शब्द 'व' से यह धातु बनता है और 'तता' से 'ततकारब' (दे०) ।
वहार सं० पुं० पालकी के चारों ओर परदा करने के लिए रंगीन कपड़ा,-डारब ।
वाजिब वि० उचित; प्र०-वी ।
वापस वि० पीछे,-जाव,-आइब,-करब, लौटाना,-लेब, -देब; फा० पस (पीछे) ।
वासिल वि० उचित रूप से प्रयुक्त, प्राप्त या मिला, -करब,-होब, फा० वसल (मिलना) ।
वासिलबाकी नवीस सं० पुं० तहसील का एक कर्मचारी जो आई हुई और बाकी लगान का हिसाब रखता है, फा०।
वाहियात वि० पुं० व्यर्थ, मूर्खतापूर्ण; स्त्री०-ति ।

स

संकर सं० पुं० महादेव,-जी,-महराज, सिव-,-भगवान सं० शंकर।
सँकरा वि० पुं० तङ्ग; स्त्री०-री; दे० साँकर।
संका सं० स्त्री० शंका, संदेह;-करब,-होब, लघु-, पेशाब (करब); सं० शंका।
संकेत सं० पुं० इशारा;-करब,-पाइब; दे० संकेत, सं०।
संकोच सं० पुं० विचार, ध्यान, संकोच,-करब, -होब,-चें; सं०।
संख सं० पुं० शंख,-बजाइब (व्यं०) विज्ञापन करना, कहते फिरना सं०।
संखानि सं० स्त्री० संतति; यक्कै-, एक ही प्रकार के (दो या अधिक लोग); सं०।
संखिया सं० पुं० एक प्रकार का विष,-देब,- खाब।
संग सं० पुं० साथ,-करब,-पाइब;-गें, साथ में,-गी, साथी, दे० सङ्ग।
सगीन वि० भारी (अपराध), अं० सँग्वीन ?
संगी-साथी सं० पुं० मित्र, परिचित लोग।
सँघरिया सं० पुं० साथी, वै०-री।
सँघरी सं० पुं० साथी, स्त्री० साथ, संगति,-करब, -धरब, सं० सङ्ग, सङ्घ।
संच सं० पुं० ठीक-ठाक, जमा-जमाया (कारबार), -होब,-रहब।
सँचरब क्रि० अ० प्रचार होना, फैलना; प्रे० चारब, सं० सं+चर।
सँचारब क्रि० स० प्रचार करना।
सजम सं० पुं० संयम;-करब,-राखब, वि०-मी; नेम-: स० संयम।
संजाफ सं० पुं० रंगीन किनारा,-लगाइब।
सँजोइब क्रि० स० तैयार करना, सं० संयोज्।
संजोग सं० पुं० अवसर,-लागब,-आइब,-परब, -पाइब,-मिलब; सं० संयोग।
संजोगिता सं० स्त्री० प्रसिद्ध स्त्री।
संझा सं० स्त्री० सायंकाल,-करब,-होब;-गाइत्री; सं० संध्या।
सँझलौझा सं० पुं० संध्या के निकट का समय, सं० संध्या।
सँझवैं क्रि० वि० बिलकुल सायंकाल, सं० संध्या।
सँझैया सं० पुं० सायंकाल का भोजन,-करब,-होब; दे० दुपहरिया।
संटर सं० पुं० केन्द्र; अं० सेंटर।
संटा सं० पुं० डंडा, स्त्री०-टी, सोंटी।
संड-मंड वि० सूजा हुआ; मोटा;-होब।
संडाब क्रि० अ० मस्त होना, किसी की न सुनना।
संडास सं० पुं० लम्बा-चौड़ा छेद; पाखाना।
संडासी सं० पुं० संन्यासी; सं०।
संडील सं० स्त्री० स्त्रियों के पहनने की जूती, अं० सैण्डल।
सँड़ाब क्रि० अ० साँड़ की भाँति होना या व्यवहार करना, दूसरों को छेड़ते रहना या तङ्ग करना।
संत सं० पुं० साधु, महातमा, साधू-।
सतरी सं० पु० पहरेदार, अं० सेण्ट्री।
संताइब क्रि० स० दु'ख देना, प्रे०-तवाइब, सं० संतप्, कहा० मुई सवति संतावै, काठे क ननदि बिरावै।
संतान सं० स्त्री० बच्चे।
सताप सं० पुं० हार्दिक दुःख;-करब,-देब,-होब, पर-, दूसरे को दुःख देने का पाप, पर-संतापी, ऐसा पाप करनेवाला; सं०।
संती अव्य० स्थान पर, बदले, हमार-, वनकै-।
संतोख सं० पुं० संतोष,-करब, जाने देना,-मारब, वि०-खी, संतोष करनेवाला, तुल० जिमि लोभहि सोखय संतोखा।
संतोला सं० पुं० संतरा।
संथाब क्रि० अ० सुस्ताना, आराम करना; प्रे० -थवाइब।
संदेह सं० पुं० संदेह,-करब,-होब,-रहब, सं०।
संपति सं० स्त्री० सुख का सामान;-विपति, सुख-दुःख, सं० संपत्ति।
संबंध सं० पुं० संबंध,-करब,-जोरब,-होब,-धी, नातेदार; स०।
संबल सं० पुं० शक्ति, सहायता,-करब,-देब।
सभू सं० पुं० शंकर, महादेव;-नाथ।
संसय स० पुं० सदेह,-करब,-होब,-रहब; सं० संशय।
संसर्ग सं० पुं० साथ, आना-जाना;-करब,-रहब, -होब; स०।
ससार सं० पुं० ससार;-भर, सभी लोग, सारी दुनिया, वि०-री, संसार का; सं०।
संहार सं० पुं० नाश,-करब,-होब।
संहुति सं० स्त्री० साथ, सगति,-करब,-पाइब-होब, वै०-घु-,-तिआ, साथी।
सइँतब क्रि० स० मिट्टी से लीपना, प्रे०-ताइब; -पोतब,-माजब;-लीपब।
सइका सं० पुं० मिट्टी का बर्तन जिससे कोल्हाड में रस उँड़ेलते हैं।
सइजन दे० सहिजन।
सइनि सं० स्त्री० सेना, समूह, सं० सैन्य।
सई सं० स्त्री० उत्तेजना, सहायता;-देब,-पाइब,फ़ा०।
सईस दे० सहीस।

सउँघ सं० पुं० सामना;-परब,-घें, सामने, सं० सन्मुख।
सउँपब क्रि० स० सौंपना; प्रे०-पाइब,-पवाइब, -पौनी, चरवाहे को नये पशु चराने के लिए प्रथम बार देने के समय प्राप्त इनाम।
सउँफि सं० स्त्री० सौंफ।
सउक सं० पुं० शौक; वि०-की,-कीन, क्रि०-किआब, प्रबल इच्छा करना।
सउगाति सं० स्त्री० उपहार,-आइब,-पठइब, वै० -हु-, फ़ा० सौग़ात।
सउचब क्रि० अ० आबदस्त लेना, प्रे०-चाइब; सं० शौच, वै०-उँ-।
सउजा दे० सौजा।
सउति सं० स्त्री० सौत, वि०-या (डाह);-तील (लरिका, साखु), सं० सहपत्नी।
सउनब क्रि० स० (कपड़े को) पानी, साबुन आदि से भिगोना, एक में मिला देना, प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब।
सउर सं० पुं० एक बड़ी मछली; स्त्री०-री।
सउरी सं० स्त्री० एक प्रकार की मछली, (२) बच्चे के जन्म का स्थान, जन्म की क्रिया;-परब, वि० -रिहा (कपड़ा)।
सउहाइनि दे० सहुआइनि।
सकठि सं० स्त्री० स्त्रियों का एक त्योहार।
सकठी वि० पुं० जो 'भगत' (दे०) न हो, अदीक्षित, वै०-ठिहा (भगतिहा से भिन्न); शक्ति?
सकड़ब क्रि० अ० हिचकना, डरना, भा० सकढ़ (हिचक) वै०-ढ़-।
सकती सं० स्त्री० शक्ति, लछमण जी को लगा हुआ शक्तिबाण,-लागब, स०।
सकदम सं० पुं० दमा, प्र०-म्म।
सकपकाब क्रि० अ० हिचकना, घबरा जाना।
सकब क्रि० स० सकना।
सकल वि० पुं० सारा, प्रायः कविता में प्रयुक्त -"सकल पदारथ है जग माहीं"।
सकारें क्रि० वि० सवेरे; बँ० सकाले।
सकिहा वि० पुं० जिसे दमा आता हो, स्त्री० -ही, दे० साकि।
सकीमी सं० स्त्री० कमी, तङ्गी,-पाइब,-धरब, वि० -म (कम बोला जाता है)।
सकुचाब क्रि० अ० सङ्कोच करना, हिचकना, सं० सं+कुच्।
सकूनति सं० स्त्री० निवास, फ़ा० सकूनत।
सकेत सं० पुं० कमी, (स्थान, पैसे आदि की), -होब,-पाइब,-तें, कष्ट में, वै० सँ-, प्र० स-।
सकेलब क्रि० स० कठिनता से भीतर करना, ढकेलना; बिना मन के खाना, प्रे०-लवाइब।
सकोरा सं० पुं० छोटा मिट्टी का बर्तन, वै० सि-, मै० कुच्ची।
सक्कर स० स्त्री० चीनी, घिउ-, मीठी वस्तु, मु० तोहरे मुहँमा घिउ सक्कर (घिउ गुर, गुर-घिउ) होय, तुम जो कहते हो ठीक निकले, सं० शर्करा।
सखा सं० पुं० सखी का पति; (२) कविता में, मित्र, साथी, स०।
सखी सं० स्त्री० स्त्री मित्र;-जोराइब, एक रस्म जिसमें लड़कियाँ या स्त्रियाँ पानी में जाकर सखी होने की प्रतिज्ञा करती और एक पान के बीडे को आधा आधा काटकर खाती हैं, ऐसी सखियाँ एक दूसरे का नाम नहीं लेतीं।
सखुआ सं० पुं० साखू; वै० से-।
सग वि० पुं० सगा; स्त्री०-गि,-भाई,-बहिनि; प्र०-गै,-गौ,-ग्गै।
सगपहिता सं० पुं० दाल जिसमें साग मिला हो, साग+पहिती (दे०)।
सगय दे० सग,-गै।
सगर वि० पुं० सारा, प्र०-रै,-रौ, सं० सकल, कहा० सगर गाँव जरि गै फूहरि कहैं लत्ता गन्हान।
सगरा स० पुं० बड़ा तालाब, सं० सागर।
सगहा वि० पुं० सागवाला स्त्री०-ही,-पतहा, जो साग-पात खाय।
सगाई सं० स्त्री० नीची जातियों का ब्याह,-करब, -होब।
सगाही सं० स्त्री० साग खोंटने का समय, रिवाज आदि,-परब,-करब।
सगियान वि० पुं० सचेत, बड़ा, स्त्री०-नि, वै० -ग्यान,-नि, प्र०-गि-, सं० सज्ञान।
सगुन सं० पुं० शकुन, अ-, अपशकुन, सं० शकुन।
सगोत वि० पुं० एक ही गोत्र का, वै०-ती।
सघन वि० पुं० घना, स्त्री०-नि।
सङ सं० पुं० सङ्ग, साथ,-सङ,-ङे,-ङें-ङे, साथ-साथ।
सङ्गहिनी सं० स्त्री० संग्रहिणी (रोग),-धरब, -होब, सं० संग्रहिणी।
सङहा सं० पुं० गुड बनाने के लिए एकत्र किया हुआ झोंकने का सामान;-पाती।
सङाब क्रि० अ० (साँप आदि जीवों का) मैथुन करना, स० सङ्ग (प्रसंग)।
सङिरहा सं० पुं० संग्रह, रक्षा-करब; सं०।
सङी सं० पुं० संगी,-साथी, मित्र स० सङ्ग।
सचे। वि० पुं० होशियार, जिसे बातों का ध्यान हो; स्त्री०-ति।
सच्चा वि० पुं० ईमानदार, स्त्री०-च्ची।
सच्चै क्रि० वि० सचमुच।
सजग वि० पुं० सचेत, स्त्री०-गि, वै०-जुग।
सजन सं० पुं० प्रेमी, स्त्री०-नि,-नी, प्रेमिका; प्रायः गीतों में, दे० साजन, स० सज्जन,-नी।
सजब क्रि० अ० सजना, शृङ्गार करना; प्रे० साजब, -जाइब,-बजब, तैयारी करना (बारात आदि की)।

स

संकर सं० पुं० महादेव;-जी,-महराज, सिव-,-भगवान सं० शंकर।
सँकरा वि० पुं० तङ्ग,स्त्री०-री; दे० साँकर।
संका सं० स्त्री० शंका, संदेह;-करब,-होब, लघु-, पेशाब (करब); सं० शंका।
संकेत सं० पुं० इशारा,-करब,-पाइब; दे० संकेत; सं०।
संकोच सं० पुं० विचार, ध्यान, संकोच,-करब, -होब,-चे, सं०।
संख सं० पुं० शंख,-वजाइब (व्यं०) विज्ञापन करना, कहते फिरना; सं०।
संखानि सं० स्त्री० संतति, यक्कै-, एक ही प्रकार के (दो या अधिक लोग); सं०।
संखिया सं० पुं० एक प्रकार का विष;-देब,- खाब।
संग सं० पुं० साथ,-करब,-पाइब;-गे, साथ में,-गी, साथी, दे० सङ्ग।
संगीन वि० भारी (अपराध) अं० सैंग्वीन?
संगी-साथी सं० पुं० मित्र, परिचित लोग।
सँघरिया सं० पुं० साथी, वै०-री।
सँघरी सं० पुं० साथी, स्त्री० साथ, संगति,-करब; -घरब, सं० सङ्ग, सङ्घ।
संच सं० पुं० ठीक-ठाक, जमा-जमाया (कारबार), -होब,-रहब।
सँचरब क्रि० अ० प्रचार होना, फैलना; प्रे० चारब; सं० सं+चर।
सँचारब क्रि० स० प्रचार करना।
सजम सं० पुं० संयम;-करब,-राखब, वि०-मी; नेम-; सं० संयम।
संजाफ सं० पुं० रंगीन किनारा,-लगाइब।
सँजोइब क्रि० स० तैयार करना, सं० संयोज्।
संजोग सं० पुं० अवसर;-लागब,-आइब,-परब, -पाइब,-मिलब, सं० संयोग।
संजोगिता सं० स्त्री० प्रसिद्ध स्त्री।
संझा सं० स्त्री० सायंकाल,-करब,-होब;-गाइत्री; सं० संध्या।
सँझलौका सं० पुं० संध्या के निकट का समय, सं० संध्या।
सँझयैं क्रि० वि० बिलकुल सायंकाल, सं० संध्या।
सँझैया सं० पुं० सायंकाल का भोजन,-करब,-होब, दे० दुपहरिया।
संटर सं० पुं० केन्द्र; अं० सेंटर।
संटा सं० पुं० डंडा; स्त्री०-टी, सोंटी।
संढ-मंड वि० सूजा हुआ; मोटा;-होब।
संडाब क्रि० अ० मस्त होना, किसी की न सुनना।
संडास सं० पुं० लम्बा-चौड़ा छेद, पाखाना।
संडासी सं० पुं० संन्यासी; सं०।
संडील सं० स्त्री० स्त्रियों के पहनने की जूती, अं० सैण्डल।
सँड़ाब क्रि० अ० साँड़ की भाँति होना या व्यवहार करना, दूसरों को छेड़ते रहना या तङ्ग करना।
संत सं० पुं० साधु, महातमा, साधू-।
संतरी सं० पुं० पहरेदार, अं० सेण्ट्री।
संताइब क्रि० स० दुःख देना; प्रे०-तवाइब; सं० संतप्; कहा० सुई सवति संतावै, काठे क ननदि विरावै।
संतान सं० स्त्री० बच्चे।
संताप सं० पुं० हार्दिक दुःख,-करब,-देब,-होब, पर-, दूसरे को दुःख देने का पाप, पर-संतापी, ऐसा पाप करनेवाला; सं०।
संती अव्य० स्थान पर, बदले, हमार-, वनकै-।
संतोख सं० पुं० संतोष,-करब, जाने देना,-मारब; वि०-खी, संतोष करनेवाला; तुल० जिमि लोभहिं सोखय संतोखा।
संतोला सं० पुं० संतरा।
संथाब क्रि० अ० सुस्ताना, आराम करना; प्रे० -थवाइब।
संदेह सं० पुं० संदेह,-करब,-होब,-रहब, सं०।
संपति सं० स्त्री० सुख का सामान;-विपति, सुख-दुःख, सं० संपत्ति।
संबंध सं० पुं० संबध-करब,-जोरब,-होब,-धी, नातेदार, सं०।
संबल सं० पुं० शक्ति, सहायता,-करब,-देब।
संभू सं० पुं० शंकर, महादेव,-नाथ।
संसय सं० पुं० संदेह,-करब,-होब,-रहब; सं० संशय।
संसर्ग सं० पुं० साथ, आना-जाना;-करब,-रहब, -होब; सं०।
संसार सं० पुं० संसार;-भर, सभी लोग, सारी दुनिया, वि०-री, संसार का; सं०।
संहार सं० पुं० नाश,-करब,-होब।
संहुति सं० स्त्री० साथ, संगति,-करब,-पाइब-होब, वै०-घु-,-तिआ, साथी।
सईंतब क्रि० स० मिट्टी से लीपना, प्रे०-ताइब; -पोतब,-माजब,-लीपब।
सइका सं० पुं० मिट्टी का बर्तन जिससे कोल्हाड में रस उँड़ेलते हैं।
सइजन दे० सहिजन।
सइनि सं० स्त्री० सेना, समूह, सं० सैन्य।
सई सं० स्त्री० उत्तेजना, सहायता;-देब,-पाइब,फ़ा०।
सईस दे० सहीस।

सउँघ सं० पुं० सामना;-परब,-घें, सामने; सं० सन्मुख।
सउँपब क्रि० स० सौंपना, प्रे०-पाइब,-पवाइब, -पौनी, चरवाहे को नये पशु चराने के लिए प्रथम बार देने के समय प्राप्त इनाम।
सउँफि सं० स्त्री० सौंफ।
सउक सं० पुं० शौक; वि०-की,-कीन, क्रि०-किआब, प्रबल इच्छा करना।
सउगाति सं० स्त्री० उपहार,-आइब,-पठइब, वै० -हु-, फ़ा० सौग़ात।
सउचब क्रि० अ० आबदस्त लेना, प्रे०-चाइब; सं० शौच, वै०-उँ-।
सउजा दे० सौजा।
सउति सं० स्त्री० सौत, वि०-या (डाह);-तील (लरिका, साखु), सं० सहपत्नी।
सउनब क्रि० स० (कपडे को) पानी, साबुन आदि से भिगोना, एक में मिला देना, प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब।
सउर सं० पुं० एक बड़ी मछली; स्त्री०-री।
सउरी सं० स्त्री० एक प्रकार की मछली, (२) बच्चे के जन्म का स्थान, जन्म की क्रिया;-परब, वि० -रिहा (कपड़ा)।
सउहाइनि दे० सहुआइनि।
सकठि सं० स्त्री० स्त्रियों का एक त्योहार।
सकठी वि० पुं० जो 'भगत' (दे०) न हो; अदीक्षित, वै०-ठिहा (भगतिहा से भिन्न); शक्ति?
सकडब क्रि० अ० हिचकना, डरना, भा० सकड़ (हिचक) वै०-ढ़-।
सकती सं० स्त्री०शक्ति, लक्ष्मण जी को लगा हुआ शक्तिवाण;-लागब, स०।
सकदम सं० पुं० दमा, प्र०-म्म।
सकपकाब क्रि० अ० हिचकना, घबरा जाना।
सकब क्रि० स० सकना।
सकल वि० पुं० सारा, प्रायः कविता में प्रयुक्त -"सकल पदारथ है जग माहीं"।
सकारें क्रि० वि० सवेरे; बँ० सकाले।
सकिहा वि० पुं० जिसे दमा आता हो; स्त्री० -ही, दे० साकि।
सकीमी सं० स्त्री० कमी, तङ्गी,-पाइब,-धरब, वि० -म (कम बोला जाता है)।
सकुचाब क्रि० अ० सङ्कोच करना, हिचकना, सं० सं+कुच्।
सकूनति सं० स्त्री० निवास, फा० सकूनत।
सकेत सं० पुं० कमी, (स्थान, पैसे आदि की), -होब,-पाइब,-तें, कष्ट में, वै० सँ-, प्र० स-।
सकेलब क्रि० स० कठिनता से भीतर करना, ढकेलना, बिना मन के खाना, प्रे०-लवाइब।
सकोरा सं० पुं० छोटा मिट्टी का बर्तन, वै० सि-, मै० कुञ्ची।
सक्कर स० स्त्री० चीनी, बिउ-, मीठी वस्तु, मु० तोहरे मुहँमा बिउ सक्कर (बिउ गुर, गुर-घिउ) होय, तुम जो कहते हो ठीक निकले, सं० शर्करा।
सखा सं० पुं० सखी का पति; (२) कविता में, मित्र, साथी, स०।
सखी सं० स्त्री० स्त्री मित्र;-जोराइब, एक रस्म जिसमें लड़कियाँ या स्त्रियाँ पानी में जाकर सखी होने की प्रतिज्ञा करती और एक पान के बीड़े को आधा आधा काटकर खाती हैं, ऐसी सखियाँ एक दूसरे का नाम नहीं लेतीं।
सखुआ सं० पुं० साखू; वै० से-।
सग वि० पुं० सगा; स्त्री०-गि -भाई,-बहिनि; प्र०-गै,-गौ,-ग्गै।
सगपहिता सं० पुं० दाल जिसमें साग मिला हो, साग + पहिती (दे०)।
सगय दे० सग,-गै।
सगर वि० पुं० सारा, प्र०-रै,-रौ, सं० सकल; कहा० सगर गाँव जरि गै फूहरि कहैं लत्ता गन्हान!
सगरा स० पुं० बड़ा तालाब, सं० सागर।
सगहा वि० पुं० सागवाला स्त्री०-ही,-पतहा, जो साग-पात खाय।
सगाई सं० स्त्री० नीची जातियों का ब्याह,-करब, -होब।
सगाही सं० स्त्री० साग खोंटने का समय, रिवाज आदि,-परब,-करब।
सगियान वि० पुं० सचेत, बड़ा, स्त्री०-नि, वै० -ग्यान,-नि, प्र०-गिग-, सं० सज्ञान।
सगुन सं० पुं० शकुन, अ-, अपशकुन, सं० शकुन।
सगोत वि० पुं० एक ही गोत्र का; वै०-ती।
सघन वि० पुं० घना, स्त्री०-नि।
सङ सं० पुं० सङ्ग, साथ,-सङ,-ङे,-ङें-ङे, साथ-साथ।
सङरहिनी सं० स्त्री० संग्रहिणी (रोग),-धरब, -होब, सं० संग्रहिणी।
सङहा सं० पुं० गुड़ बनाने के लिए एकत्र किया हुआ झोंकने का सामान;-पाती।
सङाब क्रि० अ० (साँप आदि जीवों का) मैथुन करना, स० सङ्ग (प्रसंग)।
सङिरहा सं० पुं० संग्रह, रक्षा,-करब; सं०।
सङी सं० पुं० संगी,-साथी, मित्र, सं० सङ्ग।
सचेत वि० पुं० होशियार, जिसे बातों का ध्यान हो; स्त्री०-ति।
सच्चा वि० पुं० ईमानदार, स्त्री०-च्ची।
सच्चै क्रि० वि० सचमुच।
सजग वि० पुं० सचेत, स्त्री०-गि, वै०-जुग।
सजन सं० पुं० प्रेमी, स्त्री०-नि,-नी, प्रेमिका; प्रायः गीतों में, दे० साजन, स० सज्जन,-नी।
सजब क्रि० अ० सजना, शृङ्गार करना; प्रे० साजब, -जाइब,-बजब, तैयारी करना (बारात आदि की)।

सजरा सं० पुं० वंशवृक्ष, अर०शजर: ।
सजाव वि० पुं० मलाई सहित (दही),-दहिउ, ऐसा दही ।
सजाय सं० स्त्री० दण्ड,-करब,-देब ।
सजिल वि० पुं० सजा हुआ, गँठा, सुव्यवस्थित ।
सजुग वि० पुं० तैयार स्त्री०-गि;-होब,-रहब ।
सज्जी वि० सारा, पूरा; प्र०-ज्जै; सं० सर्व ।
सझिया वि० साझे का ।
सटइब क्रि० स० सटा देना; वै०-टाइब ।
सटकब क्रि० अ० धीरे से खिसक जाना; प्रे० -काइब ।
सटब क्रि० अ० सट जाना, अत्यंत निकट आना, प्रे०-टाइब,-टवाइब ।
सटर-पटर क्रि० वि० किसी प्रकार, ढीलाढाला, वै०-फटर ।
सटल्लहा वि० पुं० रद्दी, पुराना, स्त्री०-ही, वै० -टि- ।
सटहा सं० पुं० डण्डा;-मारब, स्त्री० सोंटी,-ही, दे० सोंटा, क्रि०-हरब, खूब पीटना; वै० साँटा (दे०)।
सटाइब दे० सटब, साटब ।
सटाक क्रि० वि० झटपट; अ०-से,-दें,-पटाक ।
सटिआइब क्रि० स० मानना, अदब करना, दबाना ।
सट्ट-फट्ट सं० पुं० कुछ भी; थोड़ा बहुत (काम, भोजन) ।
सट्टा सं० पुं० सट्टा, वि०-ट्टहा;-पट्टा, गुप्त राय, सलाह;-ट्टेबाज,-जी ।
सट्टी सं० स्त्री० बाजार, सं०- हट्ट, पं० हट्टी (दूकान) ।
सठ वि० पुं० दुष्ट, भा०-ई, सं० शठ ।
सठिआब क्रि० अ० ६० वर्ष का हो जाना; बुद्धि-हीन होने लगना ।
सठौरा दे० सोंठउरा ।
सड़कि स० स्त्री० रास्ता, सड़क, वि०-हा, सड़क पर का ।
सढ़ुआइनि सं० स्त्री० साढ़ू की स्त्री, स्त्री की बहिन ।
सढआन सं० पुं० साढ़ू का घर या गाँव ।
सतगुरु सं० पुं० सच्चा गुरु जिसका उल्लेख प्राय. कबीर के पदों में है, वै०-र - ।
सतनजिउ अव्य० किसी के छींकने पर कहा हुआ शब्द, शतंजीव, सौ वर्ष जीओ; सं० ।
सतनाम स० पुं० सत्य नाम, भगवान् का नाम, संत कवियों ने इस शब्द का बहुत प्रयोग किया है ।
सतपुतिया सं० स्त्री० एक तरकारी, वै०-र-।
सतभतरा सं० पुं० सात भतार या पति,-के जाव, रे सात भतार कर ! स्त्रियों की एक गाली, सं० सप्त+भर्तार ।

सतवाँसा वि० पुं० सात महीने का (बच्चा), स्त्री०,-सी; सं० सप्त+मास ।
सताइब क्रि० स० सताना; वै०-उब, प्रे०-तवाइब ।
सतुआ सं० पुं० सत्तू,-पिसान बान्हब, तैयारी करना;-बान्हि कै, खूब तैयारी करके,-भूका, -पिसान, सामान,-सतुआनि (दे०) ।
सतुआनि सं० स्त्री० गर्मी का एक त्योहार जब सत्तू खाया और दान में दिया जाता है । वै० सतुआ- ।
सत्तरह् वि० दस और सात,-वाँ ।
सत्तरि वि० सत्तर;-वाँ,-ईं, कहा० सत्तरि चूहा खाय कै बिलारि भई भगतिनि ।
सत्तिमी सं० स्त्री० पक्ष का सातवाँ दिन; सप्तमी; सं० ।
सत्ती वि० स्त्री० सती;-होब; कष्ट उठाना, त्याग करना; सं० सती ।
सथवाँ क्रि० वि० साथ में, प्र०-वैं ।
सदर सं० पुं० मुख्य स्थान; सद्र (मुख्य) ।
सदरी सं० स्त्री० कपड़ा जो छाती के ऊपर पहना जाय ।
सदा क्रि० वि० हमेशा,-सर्वदा, सदैव,-फर, वह पेड़ जो १२ महीने फल दे,-गाभिनी, व्यं०पशु या स्त्री जिसके बच्चे न हों ।
सदावर्त सं० पुं० बारह महीने मुफ्त भोजन या भोजन सामग्री बाँटने की पद्धति,-देब,-लेब,-चलब, वि० -र्ती ।
सधब क्रि० अ० पटना, मैत्री भाव रहना, हो सकना, प्रे० सा-, सधाइब,-उब, नपब-, दे० साधब ।
सधर वि० पुं० बड़ा और बढ़िया (आम या अन्य फल) ।
सधा वि० पुं० जिसकी आदत पड़ी हो, स्त्री०-धी, -सधावा;-धी-सधाई ।
सधाइब क्रि० स० (कपड़ा या आभूषण) पहनकर देखना; वै०-उब ।
सधुअई सं० स्त्री० साधू की स्थिति, दशा या तपस्या;-करब,-निबाहब ।
सधुआइन सं० स्त्री० साधू की स्त्री या स्त्री जो साधुनी हो जाय; दूसरे अर्थ में 'साधुनि' शब्द है (दे०) ।
सधुआब क्रि० अ० साधू हो जाना ।
सनई सं० स्त्री० सन का पेड़ ।
सनक सं०स्त्री० विक्षिप्तता, क्रि०-ब, पागल होना; वि०-की, अर्द्धविक्षिप्त,-कातर,-रि, जो ऊल-जलूल बात करे;-कहा,-ही, जिसमें सनक हो ।
सनकाइब क्रि० स० पागल कर देना, मार देना (डंडा, लाठी आदि) ।
सनकारब क्रि० स० इशारा करना, इशारे से बुलाना; सं० संकेत ?

सनखर सं० पुं० सन का टुकड़ा; वै०-रा।
सनह्की सं० स्त्री० चीनी की तश्तरी।
सनफर वि० पुं० सस्ता, क्रि० वि०-रे, कम दाम में।
सनीचर सं० पुं० शनिश्चर; व्यं० बहुत भोजन करनेवाला, सं०।
सनेस सं० पुं० संदेश;-पठइब,-देब,-आइब,-पाइब, -मिलब, सं० संदेश।
सनेह सं० पुं० स्नेह, प्रेम; वि०-ही।
सनोहब क्रि० स० (दूध का) अंदाज लगाना; खरीदने के पहले पशु का दूध दुहना।
सन्नूखि सं० स्त्री० संदूक।
सन्नेह सं० पुं० संदेह,-करब,-रहब, सं० संदेह।
सपट्ट सं० पुं० चुप हो जाने की स्थिति,-मारब, -खींचब।
सपठा सं० पुं० लकड़ी का छोटा संदूक जिसमें जेवर रखे जाते हैं।
सपना सं० पुं० स्वप्न,-देखब, कविता एवं गीतों में "सपन";-होब, बहुत दिनों से न दिखाई पड़ना; सं०।
सपनाय सं० पुं० किसी देवता की प्रेरणा से आया हुआ स्वप्न,-होब।
सपरब क्रि० अ० तैयार होना, तैयारी करना; प्रे० -राइब,-उब, वै० सँ-, भा०-राई, तैयारी, (२) हो सकना, संभव होना, प्रे०-पारब, नाश कर देना।
सपहरि क्रि० वि० सब के सब; बिना किसी को छोड़े, वै० सँ-।
सपाट वि० पुं० साफ; स्त्री०-टि।
सपारब क्रि० स० नष्ट करना; उखारब-,हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना; दे० सँपरब, वै० सँ-।
सपेद वि० पुं० सफेद; भा०-दी;-दी करब,-होब, चूनाकारी करना या होना, (२) सपेदी= बुढ़ापा।
सफका वि० पुं० सफेद।
सफर सं० पुं० यात्रा; वि०-री, जो यात्रा योग्य हो (सामान), हल्का, छोटा, प्र०-ड़।
सफरा सं० पुं० बैलगाड़ी में बिछाने और ढकने के लिए चौड़ा मजबूत सुतली का कपड़ा।
सफवाइब क्रि० स० साफ कराना, सफाई कराना, फा० साफ।
सफहा वि० पुं० साफा बाँधे हुए, साफा वाला।
सफाइब क्रि० स० साफ करना; स्पष्ट कर लेना, प्रे०-फवाइब, वै०-उब।
सफाई सं० स्त्री० स्वच्छता, व्यं० हानि, नाश; -करब,-होब।
सफाचट्ट वि० समाप्त, जिसमें कुछ बचा न हो; वै०-ट।
सफाब क्रि० अ० साफ होना, प्रे० सफाइब, -फवाइब,-उब।

सफीना सं० पुं० उपस्थित होने का आज्ञा-पत्र, सम्मन-,-आइब,-मिलब,-तामील करब,-होब, लै० सब (नीचे)+पीना (दंड)=जिसके विरोध करने पर दंड मिले, अं० समन।
सफील वि० पुं० बहुत साफ; स्त्री०-लि।
सफेद दे० सपेद।
सफेदा सं० पुं० प्रसिद्ध आम जो सफेद रंग का होता है। (२) एक सफेद मसाला जो लकड़ी आदि में लगता है।
सब वि० सर्व० सारा, सब लोग, प्र०-बै,-भै, सं० सर्व।
सबज वि० पुं० हरा, स्त्री०-जि, वै०-बुज (प्रायः गीतों में), फा० सब्ज़।
सबजा सं० पुं० नाक का एक आभूषण; वै०-बु-।
सबजी सं० स्त्री० ताजा साग; साग-,-तरकारी।
सबद सं० पुं० शब्द, पवित्र शब्द;-सुनब; सं०।
सबन सर्व० सभों; सं० सर्व।
सबरी सं० स्त्री० नकब काटने का लोहे का हथियार।
सब्बल सं० पुं० लोहे का लंबा औजार जिससे कंकड़ आदि खोदते हैं।
सबाब सं० पुं० पुण्य,-करब,-मिलब,-पाइब; सवाब; अर०।
सबासी सं० स्त्री० साबाशी; वै० चाबसी;-देब, -करब।
सबुज वि० पुं० हरा, सब्ज।
सबुनहा वि० पुं० साबुन वाला, साबुन लगा हुआ, स्त्री०-ही।
सबुनाइब क्रि० स० साबुन लगाना, प्रे०-नवाइब, वै०-उब।
सबुनाहिन वि० पुं० साबुन की सी बू वाला, -आइब,-लागब।
सबुर सं० पुं० संतोष,-करब,-होब (नष्ट होना), फा० सब्र।
सबूत सं० पुं० प्रमाण;-देब,-लेब,-माँगब।
सबेर वि० पुं० जल्दी; समय से पूर्व, (२) प्रातः-काल (३)-रे, क्रि० वि० शीघ्र, सबेरे; अबेरे-, चाहे जब, प्र०-रवँ, दे० अबेर, सं० स+वेला (समय)।
सबै सर्व० सभी, सब लोग, दे० सब, प्र०-भै।
सभन सर्व० पुं० सभों, स्त्री०-नि।
सभा सं० स्त्री० सभा,-लागब,-होब,-करब,-बटोरब; सं०।
सम वि० पुं० बराबर,-करब,-होब,-सोझ, सीधा, -सें, सीधे से, स०।
समकब क्रि० अ० उभड़ना, उन्नति करना, विकास करना, प्रे०-काइब, दे० जमकाइब।
समकाइब क्रि० स० संगठित करना, विकसित करना, जमाना, दे० जम-।
समकिआइब क्रि० स० बटोरना (कपड़ा आदि), सीधा करना; प्रे०-वाइब।

समगम वि० शांत,-करब; प्र०-स्म-स्म; सं० सम + गम।
समझब क्रि० स० समझना, प्रे०-झाइब,-उब वै० -मु-।
समझि सं० स्त्री० समझ, बुद्धि; वै०-मु-।
समडङ वि० स्त्री० लम्बा और चिकना (बाँस, लकड़ी आदि)।
समथर वि० पुं० बराबर; जो ऊँचा नीचा न हो; स्त्री०-रि, सं० सम + स्तर, स्थल।
समथाब क्रि० अ० आराम करना, सुस्ताना।
समधिआन सं० पुं० समधी का घर; वह गाँव जहाँ लड़का या लड़की व्याही हो,-करब, समधी का मेहमान होना।
समधी सं० पुं० लड़की या लड़के का ससुर, स्त्री० -धिनि।
समन सं० पुं० कचहरी का आज्ञापत्र जिसमें किसी की उपस्थिति निश्चित समय एवं स्थान पर आवश्यक होती है। प्र०-स्मन,-आइब,-लेब, -पठइब; अं० समन।
समान दे० सामान।
समौ सं० स्त्री० ऋतु, मौसम, जमाना, सं० समय।
सम्मै वि० सारा, बहुत सा।
सयँभवार सं० पुं० कुर्मियों की एक जाति; वै० सैं-।
सय सं० स्त्री० वृद्धि;-होब।
सयकड़ा दे० सैकड़ा।
सयकिलि सं० स्त्री० पैरगाडी, बाइसिकिल; वि० -लिहा, सायकिल चलानेवाला।
सयगर वि० पुं० अधिक; क्रि०-राब, स्त्री०-रि, वै० सै-।
सयतान सं० पुं० शैतान, बदमाश; भा०-नी; अर० शैतान।
सयदै क्रि० वि० शायद ही, दे० सायद।
सयन सं० पुं० इशारा; वै० सैन; (२) सोने की क्रिया;-करब, सोना (देवता के लिए), सं० शयन।
सयमड़ वि० पुं० मस्त, मनमौजी, भा०-ई।
सयम्मर वि० बहुत सा।
सयराठ सं० पुं० झंझट, तैयारी;-करब, कष्ट उठाना, वै० सै-।
सयल दे० सैल।
सयलानी वि० मनमौजी; वै० सै-।
सयहरन सं० पुं० सहन;-करब,-होय, वै० सै-।
सयान वि० पुं० बड़ा, समझदार, स्त्री०-नि, भा० -वनई,-पन, सं० सज्ञान।
सयार वि० पुं० जल्दी होनेवाला (काम),-होब, -धरब।
सरऊ सं० पुं० साला, सार (दे०) का घृ० रूप।
सरकठ सं० पुं० प्रबन्ध, समझौता;-करब,-होब।
सरकब क्रि० अ० सरकना, प्रे०-काइब,-उब।
सरकस वि० पुं० प्रभावशाली, हिम्मतवाला, स्त्री० -सि, भा०-ई; फा० सरकश (सर=सिर, कश, उठानेवाला)।
सरका सं० पुं० सरकाने की क्रिया, हस्तमैथुन, -मारब।
सरकाइब क्रि० स० खिसकाना, वै०-उब, प्रे० -कवाइब।
सरकार सं० स्त्री० गवर्नमेंट, मालिक; वि०-री, नौकर मालिक को "सरकार" कहकर संबोधित करता है और उसके सामान को 'सरकारी' कहता है। सर्कार।
सरकिल सं० पुं० क्षेत्र, मंडल, सीमा; अं०।
सरकी दे० सेरकी।
सरखत सं० पुं० लिखित ठेका या किरायानामा।
सरग सं० पुं० स्वर्ग नरक-;-गें जाब, मरना; सं०।
सरगना सं० पुं० नेता, प्रभावशाली व्यक्ति, फ़ा० सरगनः।
सरगही सं० स्त्री० सूर्योदय के पूर्व का वह भोजन जो रोजे के दिनों में मुसलमान लोग करते हैं।
सरङी सं० स्त्री० सारंगी,-बजाइब; वि०-ङिहा, सारंगी बजानेवाला, सं०।
सरजि सं० स्त्री० प्रसिद्ध कपड़ा सर्ज, अं०।
सरजू सं० स्त्री० रामायण की प्रसिद्ध नदी सरयू; -जी,-माई, सं०।
सरति सं० स्त्री० शर्त, वै०-र्ति फ़ा०।
सरथब क्रि० स० समझाना,-भरथब, पट्टी पढ़ाना, प्रे०-थाइब-भरथाइब।
सरद-गरम सं० पुं० सर्द-गर्म,-पकरब,-धरब, सर्दी-गर्मी पकड़ लेना।
सरदार सं० पुं० नेता, स्त्री०-रिनि, भा०-री, बारात में जानेवाले लोग (नौकर-चाकर नहीं)।
सरदिआब क्रि० अ० सरदी से प्रभावित होना, बीमार पड़ना; वै०-याब।
सरदिहा वि० पुं० सरदीवाला, सरदी से जल्दी बीमार पड़ जानेवाला; स्त्री०-ही।
सरदी सं० स्त्री० ठंढक, जाड़ा,-परब,-होब,-खाब, -लागब।
सरधा सं० स्त्री० श्रद्धा -भगती, श्रद्धा भक्ति।
सरन सं० स्त्री० शरण -लेब,-देब,-पाइब; सं०।
सरनाम वि० पुं० प्रसिद्ध;-होब,-रहब; वै०-नाम; फा०।
सरप सं० पुं० साँप प्र०-प्फ।
सरपट सं० पुं० घोड़े की एक चाल, तेज चाल; -चलब,-दउरब,-दउराइब।
सरपत सं० पुं० मूँजा; एक लंबी जंगली घास।
सरपुत सं० पुं० साले का बेटा; सं० श्यालपुत्र।
सरपुतिया सं० स्त्री० लता में फलनेवाली एक तरकारी, वै०-या, सत-।
सरपोटब क्रि० स० बटोरकर खा लेना; झटपट खा लेना।

सरफ सं० पुं० व्यय,-करब,-होब, फा० ।
सरफा सं० पुं० खर्च,-करब,-होब ।
सरफारेउरी सं०स्त्री० एक छोटा खट्टा फल जिसका आकार रेवड़ी की भाँति होता है ।
सरफुराई सं० स्त्री० सनई की सूखी लकड़ी, वै० -लाई,-लफुलाई ।
सरब क्रि० अ० सड़ना, प्रे०-राइब,-उब ।
सरबत सं० पुं० शर्बत,-घोरब,-बनइब,-पियब ।
सरबती सं० पुं० एक बारीक कपड़ा ।
सरबदा क्रि० वि० सदैव, सर्वदा, सं० ।
सरबराहकार सं० पुं० मुकदमे या जमींदारी का काम देखनेवाला सहायक ।
सरबरि सं० स्त्री० बराबरी,-करब, वि०-हा, समकक्ष ।
सरबस सं० पुं० सर्वस्व, सब कुछ, सं० ।
सरबावलि सं० स्त्री० सर्वनाश, समाप्ति;-होब, -करब ।
सरम सं० पुं० शर्म, लज्जा, कभी-कभी यह स्त्रीलिंग में भी बोला जाता है, वि०-दार, क्रि० -माब ।
सरमाब क्रि०अ० लजाना, शर्म करना, प्रे०-मवाइव, शर्म ।
सरया सं० पुं० एक प्रकार का अच्छा धान ।
सरर-सरर क्रि० वि० सरसर आवाज करते हुए; वै० सर्र-सर्र ।
सरलहा वि०पुं० सड़ा हुआ, वै० सल्लाह (दे०) ।
सरवन सं० पुं० श्रवण जिसकी मातृ-पितृ-भक्ति प्रसिद्ध है; सं० ।
सरवरिआ सं० पुं० सरयू के उत्तर के प्रदेश का रहनेवाला (ब्राह्मण), वै०-रिहा; सं० सरयू, दे० सरवार ।
सरवाइब क्रि० स० ठंडा करना, वै० से-,-उब ।
सरवार सं०पुं० सरयू के उत्तर का प्रांत जो ब्राह्मणों की पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है; वै०-रुआर; सं० सरयू+पार ।
सरसई सं० स्त्री० किसी फल का गोल प्रारम्भिक रूप (विशेषतः आम के),-लागब ।
सरसव सं० स्त्री० सरसों, वै०-सौ, सं० सर्षप ।
सरहँग वि० पुं० लंबा चौड़ा (व्यक्ति) प्रभावशाली ।
सरहजि सं० स्त्री० साले की स्त्री ।
सरहद सं०पुं० सीमा; वि०-द्दी, सीमा पर स्थित ।
सरहर वि० पुं० पतला एवं लंबा, स्त्री०-रि, पहे० "सावन टेढ़ि चइत मा सरहरि, कहैं सबलसिंह बूझौ नरहरि ।"
सरहँस सं० पुं० सारस,-यस, लंबा (व्यक्ति) ।
सराइब क्रि० स० सड़ाना, प्रे०-रवाइब,-उब; वै० -उब ।
साराकति सं० स्त्री० साझा,-करब,-मँ,।वै०-री-, फ़ा० शिरकत ।
सराजाम सं०पुं० प्रबंध;-करब,-होब, फ़ा०सरंजाम ।
सराधि सं० स्त्री० श्राद्ध,-करब,-होब, कहा० सेंति क धान मडसिआ क सराधि ।
सराप सं० पुं० शाप;-देब, क्रि०-ब; सं० शाप ।
सरापब क्रि० स० शाप देना, प्रे० सरपवाइब,-उब; सं० ।
सराफा सं० पुं० सर्राफ की दूकान वृत्ति या बाजार, -फी, सर्राफ का काम ।
सराब सं० स्त्री० मदिरा, वि०-बी, फा० ।
सराबोर वि० पुं० खूब भीगा हुआ, स्त्री०-रि; -होब,-करब; क्रि० सरबोरब, कविता में "सरबोर" ।
सराय सं० स्त्री० धर्मशाला; सूनी-, निर्जन स्थान ।
सरारति सं० स्त्री० शरारत,-करब,-होब, वि०-ती, -ररतिहा,-ही ।
सरावट सं० पुं० हँड़िया में भिगोया प्याज़, महुआ आदि जो कई दिन सड़ने के बाद बैलों को पिलाया जाता है, खटाई से भरा हुआ पानी जिसमें माजनेवाले बर्तन भिगोये जाते हैं ।
सरासर वि० स्पष्ट, निःसंदेह ।
सराहना सं० स्त्री० प्रशंसा;-करब,-होब ।
सराहब क्रि० स० प्रशंसा करना ।
सरि सं० स्त्री० गड्ढा;-आठब, किसी प्रकार काम चलाना ।
सरिआइब क्रि० स० सड़ाना, प्रे०-वाइब ।
सरिष्ठ वि० बड़ा, सं० श्रेष्ठ ।
सरिहन दे० सरीहन ।
सरीक वि० सम्मिलित, हिस्सेदार;-होब, सामिल- ।
सरीख वि० बराबर, समान ।
सरीफ वि० पुं० सज्जन, भलामानुस; स्त्री०-फि ।
सरीफा सं० पुं० शरीफा ।
सरीर सं० पुं० बदन; गुप्तेंद्रिय, सं० शरीर ।
सरीराडंड सं०पुं० बीमारी, शारीरिक दंड (भगवान् द्वारा दिया हुआ) ।
सरीहन क्रि० वि० स्पष्टतः, खुल्लम-खुल्ला ।
सरुआर दे० सरवार ।
सरेख वि० पुं० चतुर, स्त्री०-खि, कहा० कहवैया ल सुनवैया सरेख होय, सं० श्रेयस् ।
सरौता सं० पुं० सुपारी काटने का औजार; स्त्री० -ती, वै० सरवता ।
सरौती सं० स्त्री० एक प्रकार का गन्ना जो नरम एवं पतला होता है ।
सर्हा वि० पुं० चिकना और ऊँचा (पेड़) वै० सर्रा ।
सलकठ सं० पुं० प्रबंध;-बइठब,-बइठाइब दे०-र- ।
सलतन्त वि० पुं० शांत, कुशलतापूर्ण,-होब,-करब, -रहब ।
सलफ वि०पुं० आसान, सस्ता, स्त्री०-फि; क्रि० वि० -फें, सस्ते में, वै०-भ, सं० सुलभ ।
सलाई सं० स्त्री० सलाई;-लागब,-लगाइब ।

सलाइब दे० सालब।
सलाकब क्रि० स० पेंसिल से कागज़ पर लिखने के लिए रेखायें खींचना; सं० शलाका।
सलाका सं०स्त्री० पेंसिल, क्रि०-कब; सं० शलाका।
सलाम सं० पुं० प्रणाम करने का मुसलिम तरीका; -करब, अर० सलम (परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे)।
सलामी सं० स्त्री० बार बार सलाम करने की पद्धति; महत्वपूर्ण अवसर पर सलाम; दीवार, छत आदि का थोड़ा सा झुकाव;-लेब,-देब,-दागब।
सलिल वि० पुं० आसान;-पाइब, आसान होना, -रहब; सं० सरल।
सलीपट सं० पुं० लकडी या लोहे का मोटा लंबा टुकड़ा; वै० सि-।
सलीपर दे० सिलीपर।
सलीफा सं० पुं० शरीफा।
सलीमा सं० पुं० सिनेमा,-देखब; अं०।
सलूक सं० पुं० व्यवहार;-करब,-होब।
सलूका सं० पुं० आधी बाँह की बनियान जिसमें सामने बटन लगते हों।
सलैआ स० पुं० सालदेने वाला; दे० सालब।
सलोन वि० पुं० नमकीन; सुन्दर; स्त्री०-नि, भा० -पन,-नई सं० सलवण, दे० अलोन।
सल्लाह सं० स्त्री० राय;-देब,-लेब,-करब, वि०-हूँ, सलाह की (बात), क्रि० वि०-न-, सलाह के लिए, -सूत, विचार-विनियम।
सल्लेब सं० पुं० मेल, एकमत;-करब,-होब।
सवँठई सं० स्त्री० साँवठ (दे०) का काम,-करब।
सवँपब दे० सउँपब।
सवँरिआ क्रि० अ० सावँला हो जाना, (अंग या व्यक्ति का), भुनकर काला पड़ जाना (चावल आदि का); वै०-राब; सं० श्यामल।
सवँला सं० पं० प्रेमी, पति; गीतों में प्रयुक्त, वै० -लिया,-आ, सं० श्यामल।
सवँलिआ सं० पुं० प्रेमी, पति, वै०-यार, साँ-; सं० श्यामल।
सव त्रि० सौ; यक-;दुइ-, वै० यक सय, दुइ सय।
सवकीन दे० सउक।
सवगंध सं० पुं० शपथ,-खाब,-लेब; वै० सौ-, सउ-।
सवति सं० स्त्री० सपत्नी,-आ डाह, सपत्नी वाली ईर्ष्या; वै० सौ-; सं० सहपत्नी।
सवतिन सं० स्त्री० कविता एवं गीतों में 'सवति' के ही अर्थ में, सं०।
सवदा सं०पुं० सौदा;-करब,-देब,-लेब,-सुलुफ, छोटा मोटा सौदा,-गर, व्यापारी, वै० सौदा; सौदः।
सवधंधी वि० जो अनेक कार्यों में व्यस्त रहे, सव (सौ)+धंधा।
सवन सं० पुं० गीतों में प्रयुक्त 'सावन' का संक्षिप्त रूप।
सवहर सं० पुं० पति; वि०-री, पति का (हिस्सा, हक आदि); वै०-ह; शौहर।
सवाई सं० सवागुना (नाज, रुपया आदि);-देब -लेब;-सूत,-डेढ़ी, सवाया तथा ड्योढ़ा (सूद लेने एवं नाज देने का तरीका)।
सवाङ सं० पुं० वयः प्राप्त पुरुष; सुन्दर व्यक्ति, स्त्री०-ङिनि; बारात में आये हुए मिहमान (नौकर नहीं)।
सवाचब क्रि० स० गिनकर ठीक करना; मिलाना; प्रे०-वचवाइब।
सवाद सं० पुं० स्वाद, आनंद, मजा,-लेब,-देब, -मिलब, क्रि०-च, वि०-दी,-दू; सं० स्वाद।
सवादब क्रि० स० मजा लेना; जीभि-, खाकर आनंद लेना; सं० स्वाद।
सवादी वि० स्वाद लेनेवाला, शौकीन (खाने पीने का); घृ०-दू।
सवाया वि० सवागुना।
सवार सं० पुं० चढ़ने वाला व्यक्ति,-करब,-होब।
सवारी सं० स्त्री० चढ़ने का वाहन; चढ़नेवाला व्यक्ति,-पाइब,-देब,-लेब,-मिलब,-सिकारी, चढ़कर जाने का साधन।
सवाल सं० पुं० प्रश्न, प्रार्थना,-करब, प्रार्थना करना;-जवाब, उत्तर-प्रत्युत्तर।
सवाल-खानी सं० स्त्री० कचहरी में प्रार्थनापत्र लेने का समय, दस्तूर आदि।
ससरी सं० स्त्री० साँस,-चलब, वै० सँ-,सं० श्वस्।
ससुर सं० पुं० स्त्री का पिता,-रें, (स्त्री की) ससुराल में, सं० श्वशुर।
ससुरा सं० पुं० गाली या घृणा में प्रयुक्त "ससुर" का रूप, दु ससुरा!
ससुरारि सं० स्त्री० ससुराल; सं० श्वशुरालय; गीतों में "सासुर";-रीं, ससुराल में।
ससेटब क्रि० स० बाध्य करना, प्रेरना; प्रे०-टवाइब।
सह सं० स्त्री० प्रोत्साहन,-देब,-पाइब, सं० सह (बल)।
सहज वि० पुं० आसान, सीधा; स्त्री०-जि, प्र०-जै, -जौ, भा०-ई,-पन क्रि० वि०-जें, सरलतापूर्वक, सं०।
सहजोर वि० पं० बलवान, स्त्री०-रि; सं० सह (बल)+फा० ज़ोर (बल)।
सहत वि० पुं० सस्ता; भा०-ई,-ती-ताई, क्रि०-ताब, सस्ता होना,-महँग, चाहे जिस मूल्य पर; क्रि० वि०-तें, सस्ते दाम में।
सहन वि० लंबा चौड़ा (स्थान); फा० सहन (आँगन)।
सहना सं० पुं० प्रजा; केवल कविता में, एक मास दुइ गहना, राजा मरै कि सहना। (२) फसल संबंधी मुकदमों में अदालत द्वारा नियुक्त पंच जो खड़ी फसल का उत्तरदायी होता है।

सहनाई सं० स्त्री० प्रसिद्ध बाजा, फा० शहनाई ।
सहनी सं० स्त्री० छोटी नाँद जिसमें गन्ने का रस गरम होता है ।
सहब क्रि० स० सहना, प्रे०-हाइब,-हवाइब; सं० सह ।
सहबई सं० स्त्री० साहबी, वै०-हे-।
सहबऊ वि० साहब का सा, अंग्रेजी,-ठाट वै० -हे-।
सहमब क्रि० अ० सहम जाना, प्रे०-माइब,-उब ।
सहर सं० पुं० नगर,-कहर, शहर जैसा स्थान; वि० -री,-रऊ,-राती ।
सहलोलवा वि० जो बोलने में चतुर और मीठा पर धोका देनेवाला हो; भा०-लई ।
सहवइया सं० पुं० सहन करनेवाला, वै० -वैया ।
सहवाइब क्रि०स० दंड देना, (किसी को) सह लेने के लिए वाध्य करना; वै०-उब, सं० सह ।
सहाना सं० स्त्री० एक प्रकार की चूड़ी जो प्रायः शादी में पहनी जाती हैं, फा० शाहानः ?
सहारा सं० पुं० आश्रय,-देब,-लेब,-पाइब ।
सहिजन सं० पुं० एक पेड़ जिसकी फली की तरकारी बनती है;-अति फूलै तऊ डार पात की हानि ।
सहिना सं० पुं० अरवी के पत्तों में पीठा लपेटकर बनाई हुई बड़ी बड़ी पकौड़ी,-बनइब; वै० सो-।
सही वि० ठीक,-करब, हाँ कर लेना,-सही, ठीक ठीक; इहै-, यही ठीक है, सहीह ।
सहीस सं० पुं० साईस; भा०-सी, साईस का काम ।
सहुआइन सं० स्त्री० साहु की स्त्री, वै०-नि, दे० साहु; कहा० सीलें सीलें-गभिनाय गई ।
सहुगाति सं० स्त्री० उपहार (प्रायः खाने-पीने की वस्तुओं का); दे० सउगाति ।
सहेजब क्रि० स० गिनकर या अच्छी तरह देखकर मिला लेना, सँभाल लेना, व्यर्थ न जाने देना (भोजन आदि को), प्रे०-जवाइब,-उब ।
सहेलरी सं० स्त्री० सहेली, सखी-।
सहैया दे० सहवइया ।
साँकर वि० पुं० तंग, स्त्री०-रि, भा० सँकरई ।
साँकलि सं० स्त्री० जंजीर, सं० शृंखला ।
साँच वि० पुं० सच्चा; स्त्री०-चि, स० सत्य ।
साँचा सं० पु० साँचा ।
साँची सं० पुं० एक प्रकार का पान जो शायद पहले पहल साँची में उत्पन्न होता रहा हो ।
साँचे-साँच क्रि० वि० सच्ची-सच्ची, ठीक-ठीक (कहना), वै० सच्चै-सच्च,-चौ-; (दे०) ।
साँझ सं० स्त्री० संध्या, क्रि० वि०-झें,-झौ-साँझ, -बिहान,-सवेरे;-करब,-होब, सं० संध्या, दे० संझा ।
साँट-गाँठ सं० पुं० मिल-जुलकर किया प्रबंध; -करब,-लगाइब, क्रि० साँटब-गाँठब, ठीक कर लेना ।
साँटा सं० पुं० मोटा बेत,-मारब, स्त्री०-टी;-लगाइब, वै० सँटहा; दे० सोंटा, सटहा; क्रि० सँटहरब (दे०) ।
साँड सं० पुं० साँड़, व्यं० मोटा तगड़ा व्यक्ति जो कुछ न करता हो, जवान लड़का;-होब,-यस; क्रि० सँड़ाब, साँड़ की भाँति व्यवहार करना, उद्दंडता करना ।
साँड़िनी सं० स्त्री० मादा ऊँट जो बहुत तेज दौड़ती है ।
साँड़िया सं० पुं० तेज दौड़नेवाला ऊँट जो पागल हाथी को भी पकडकर ठीक करता है ।
साँप सं० पुं० साँप; स्त्री०-पिनि, सं० सर्प ।
साँस सं० स्त्री० साँस,-लेब,-निकरब; मु० फुर्सत, -पाइब,-देब,-लेब, वै०-सि,-सु ।
साँसति सं०स्त्री० कष्ट, निरंतर पर साधारण दुःख, -करब,-होब, जिउ कै- ।
साँसा सं० पुं० प्राण, केवल साँस (शक्ति नहीं), -चलब, मरने के समय चलनेवाला साँस; सं० श्वास ।
साँसि दे० साँस ।
साइति सं० स्त्री० मुहूर्त,-देखब,-निकारब,-बिचारब; -सुदिना, अच्छा मुहूर्त, फा० सायत ।
साइरी सं० स्त्री० कविता, कहावत;-मसल, शायरी ।
साईं सं० पुं० मुसलिम फकीर, एक विशेष प्रकार के भिखमंगे जो मुसलमान होते और झाड़-फूँक करते है, स्वामी (प्राय. कविता में),-बाबा; सं० स्वामिन् ।
साई सं० स्त्री० बाजा बजानेवाले या अन्यान्य विशेष मजदूरों को काम करने के लिए दिया हुआ बयाना,-देब, निमंत्रित करना, बुलाना ।
साउधान दे० सावधान ।
साक सं० पु० रोब, प्रसिद्धि,-मर्जाद,-होब,-चलब, प्र०-का, सं० शाका ।
साकि सं० स्त्री० पुरानी खाँसी, वि० सकिहा ।
साकिन सं० रहनेवाला या वाली, कचहरी या कानूनी कागजों में स्त्री पुरुषों के नाम के आगे प्रयुक्त शब्द, फा० ।
साख सं० स्त्री० शाखा,-फूटब,-निकरब, प्र०-खा, सं० ।
साखी सं० पुं० गवाही,-भरब,-देब, गवाही-, प्रमाण; सं० साक्षी ।
साखोच्चार सं० पुं० विवाह में दोनों पक्षों के गोत्रों का पूरा विवरण जो पंडितों द्वारा सुनाया जाता है । सं० शाखा + उच्चार ।
साग सं० पुं० पत्तेवाली तरकारी;-पात, पत्तों का भोजन जिसमें मसाला आदि न पड़ा हो;-यस, सुविधापूर्वक (काट डालना); सं० शाक ।

साङठ सं० पुं० प्रबंध,-करव,-बान्हव, सं० स+गाठ (संगठन)।
साजन सं० पुं० प्रिय, प्रेमी, पति; प्रायः गीतों में; स्त्री०-नि, सजनी (दे०)।
साजव क्रि० स० सजाना,-बाजव,-तुलइव; ठाट-बाट से तैयार करना (दुलहे, दुलहिन आदि को); प्रे० सजाइव सजवाइव,-उब।
साज-बाज सं० पुं० ठाट-बाट, सजाने का उपक्रम या सामान -करव,-होव।
साटन सं० पुं० प्रसिद्ध कपड़ा।
साटव क्रि० स० चढ़ा देना, ऊपर सी देना या डाल देना (एक कपड़े पर दूसरा); प्रे० सटाइव।
साठा सं० पुं० साठ वर्ष का व्यक्ति, कहा० साठा सो पाठा (दे०)।
साठि वि० साठ; सं० षष्ठि।
साठी सं० पुं० एक प्रकार का धान।
साढा स० पुं० लालच, आकर्षण,-लगाइव, लालच देना।
साढ़ू सं० पुं० स्त्री की बहिन का पति,-भाई; स्त्री० सढुआइनि (दे०), दे० सढुआन।
सात वि० सात,-पाँच, अनेक लोग,-पाँच कै लाठी एक जने क बोझ, प्र०-तै,-तौ, सं० सप्त।
सातय वि० सात ही, वै०-तै।
सातव वि० सातो; वै०-तौ।
साथ सं०पुं० साथ,-करव,-देव,-धरव,-छोड़व,-रहव,-होव,-पाइव,-छेव, क्रि० वि०-थें-थें,-थै साथ, साथ ही साथ -थें, साथ में।
साथी सं० पुं० साथ रहनेवाला, स्त्री०-थिनि।
सादय क्रि० वि० सादे ढंग से ही;-बोदा, सीधे-सादे ढंग से; वै०-दै।
सादव वि० सादा भी, वै०-दौ।
सादा वि० पुं० सादा; स्त्री०-दी, सीधा-,-बोदा; दे० सोझ।
सादी सं० स्त्री० व्याह,-करव,-होव,-वियाह-; फा० शादी (ख़ुशी)।
साध सं० स्त्री० हार्दिक इच्छा, लालसा;-रहव, इच्छापूर्ति होना,-करव;-लागव,-न मरव, साध करते-करते मर जाना, इच्छापूर्ति न होना, वै०-धि।
साधव क्रि० स० साधना, ठीक करना, नापना, नापब-; प्रे० सधाइव,-उव, मु० बैर-, दुश्मनी निकालना।
साधा-लोभी क्रि० वि० इच्छा या साध के कारण (आवश्यकता से नहीं), साध+लोभ, प्रायः किसी ऐसी वस्तु के खाने के लिए जो प्रायः न खाई जाती हो।
साधि सं० स्त्री० लालसा; दे० साध।
साधू सं० पुं० साधु, भा० सधुप्पन, सधुआई,-अई, क्रि० सधुआव (दे०)।
सान स० स्त्री० तेजी (चाकू आदि की),-धरब,-धराइव,-चढ़व,-चढ़ाइव, वै०-नि।
सान सं० स्त्री० रोब, ठाट-करब,-देखाइव,-गाँठव, वि०-नी,-दार, क्रि० सनाव, शान में आना।
सानव क्रि० स० सानना (आटा, मिट्टी आदि), सम्मिलित करना, व्यर्थ में फँसाना; प्रे० सनाइव, सनवाइव,-उब।
सापट सं० पुं० शांति, चुप्पी,-मारव,-खींचव।
साफ वि० पुं० साफ,-रहव,-करव (मु० नष्ट करना),-होव,-सूफ, खूब साफ; स्त्री०-फि;-साफ, साफै-।
साफा सं० पुं० सिर पर बाँधने का साफा; स्त्री० फी, छोटा रुमाल जिसे साधू लोग चिलम में नीचे लगाकर गाँजा आदि पीते हैं। साफ ?
साबर सं० पुं० एक जंगली जानवर जिसका चमड़ा बहुत मजबूत होता है और जूते आदि बनाने के काम में आता है।
साबर सं० पुं० प्रसिद्ध मंत्र (पं०)।
साबस वि० बो० शाबाश ! वै० चा-।
साबित वि० सिद्ध;-करव,-होव।
साबुन सं०पुं० साबुन, वि० सबुनहा,-नाहिन; क्रि० सबुनाइव -दान, बर्तन जिसमें साबुन रखा जाय।
साबूत सं०पुं० सबूत, प्रमाण;-देव,-लेव, हाकिम का, वि०-ती (कागद) सबूतवाला (कागज) अर०।
सामग्रिही सं० स्त्री० कथा, पूजा आदि के लिए सामग्री,-लाइव,-धरव; सं०।
सामतूल वि० पुं० शांत, चारों ओर बराबर;-करव,-रहव, सं० सम्+तुल्; वै०-कूल।
सामने क्रि० वि० सम्मुख;-आमने-।
सामान सं०पुं० सामान,-करब, प्रबंध करना; वै० समान; फा० सामाँ।
सामि सं० स्त्री० लोहे की गोल टोपी जो मूसल में लगती है।
सामिल वि० सम्मिलित,-करव,-होव,-हाल, एकत्र, मिलकर (कई लोगों का रहना) फा० शामिल।
सायर सं० पुं० गाँव का ऊपरी काम,-दार, गाँव का चमार जो यह ऊपरी काम सँभाले।
सायरी सं० स्त्री० कविता, पुरानी मसल जो प्रायः कविता में रहती हैं। मसल, कहावत, फ़ा० शायरी।
सायल सं० पुं० प्रार्थी; फा०।
सार सं० पुं० साला, दु-रे, मरु-रे, डाँटने के शब्द; -बहनोई, दे० सरपुत, सरहजि, सारि, सरसरा, सढ़सढ़ा (साले का साला)।
सारङ सं० स्त्री० एक प्रकार की मधुमक्खी।
सारङा सं० स्त्री० रानी सारङ्गा जिनकी कहानी देहात में खूब कही जाती है।
सारव क्रि० स० दवा-दवा के मीजना; तेल लगाकर मलना; मीजव-,-मीजब, प्रे० सराइव।
सारा वि० पुं० पूरा; कुल; स्त्री०-री।
सारि सं० स्त्री० साले की बहिन।
सारी सं० स्त्री० जानवरों के बाँधने का घर, (२) साड़ी, लहँगा-।

साल सं० पुं० वर्ष, यक-भर,-तमामी (पूरे साल का लगान),-लौ साल, प्रतिवर्ष,-लै साल, वै०-लि, फा० ।
सालन सं०पुं० भात या रोटी के साथ खाने के लिए तरकारी ।
सालब क्रि० अ० दु:ख देना, खलना, हृदय में गड़ा रहना; गी० क०, (२) चूल मिलाना, खाट के सभी अंग ठीक करना, प्रे० सलाइब,-उब ।
सालम मिसिरी सं० स्त्री० एक प्रकार की बूटी जो देखने में मिश्री सी होती है । वै०-लि- ।
सालिकराम सं० पुं० शालग्राम; वै०-ग-; सं० ।
सालिस सं०स्त्री० षड्यंत्र,-करब, किसी से मिलकर गड़बड़ करना;-होब,-रहब ।
सावकास सं० पुं० फुर्सत, बीमारी की कमी;-होब, -पाइब; सं० स+अवकाश ।
सावधान वि० पुं० शांत, ठीक-ठाक,-रहब, -होब ।
सावन सं० पुं० श्रावण,-भादौं; कहा०-के अन्हरे क हरिअरी सूझत है ।
सावाँ सं०पुं० एक नाज जिसका चावल गोल और पीला होता है;-कोदो, साधारण देहाती अनाज ।
सासु सं० स्त्री० सास, अजिया-, सास की सास, ननिया-, मयभा-(दे० मयभा), सं० ।
सासुर सं० पुं० (स्त्री के) ससुर का घर; नैहर-; गी० ।
साहू वि० ईमानदार, जो चोर न हो, सं० साधु ।
साहब सं० पुं० अंग्रेज, मेम-, लाट-, बड़े-, वै० -है- ।
साही सं०स्त्री० प्रसिद्ध जंगली जानवर जिसके पीठ पर काँटे होते हैं, (२) शासन,-बियापब, अधिकार या शासन होना, फा० शाह (सम्राट्) ?
साहु सं०पुं० सेठ, धनी व्यापारी, स्त्री० सहुआइनि, किसी भी बनिये को "साहु" कहकर पुकारा जाता है, सं० साधु ?
सिंघासन सं० पुं० सिंहासन ।
सिंघुरब क्रि० अ० बीमारी के बाद ठीक होना, वै०-हु- ।
सिंचवाइब क्रि० स० सिंचाना, वै०-उब, सं० सिच् ।
सिंचवाई सं० स्त्री० सींचने की मजदूरी या पद्धति, सं० ।
सिंचाइब क्रि० स० सिंचाना, सींचने में मदद करना, प्रे०-चवाइब,-उब, सं० ।
सिंचाई सं० स्त्री० सींचने का क्रम, उसकी मजदूरी,-करब,-होब; सं० ।
सिंचानि सं० स्त्री० सींचने की मिहनत ।
सिंहुरब दे०-घुरब ।
सिहोर सं० पुं० एक जङ्गली पेड़ जिसकी छाल दवा में काम आती है ।
सिंहोरा सं० पुं० लाल डिब्बा जो प्रायः लकड़ी का बना और सिंदूर रखने के लिए होता है; लाल -,खूब लाल,-यस लाल ।
सिउ सं० पुं० शिव;-जी,-बाबा,-लिउ,-पारबती, सं० शिव ।
सिकन सं०स्त्री० चमड़े या कपड़े आदि की सिकुड़न या रेखा,-परब,-डारब ।
सिकमी सं०पुं० छोटा या मुख्य काश्तकार के नीचे का जुतारा ।
सिकहर सं० पुं० छीका कहा०-टूट बिलारी क भागि से ।
सिकस्त वि० थका या हारा,-करब, हरा देना, गिरा देना (दीवार, मकान आदि)-खाब, हार जाना ।
सिकाइति सं० स्त्री० शिकायत,-करब,-होब, वि० -ती, शिकायतवाली (चिट्ठी, बात आदि) ।
सिकार स० पुं० शिकार;-करब,-खेलब,-पाइब, फा० ।
सिकारी सं० पुं० शिकार खेलनेवाला, वि०-मनई, -जिउ ।
सिकुरब क्रि० अ० सिकोड़ना; प्रे०-कोरब ।
सिकोरब क्रि०स० सिकोड़ना, नेकुरा-, नाक सिकोड़ना, सं० सं+कोच् ।
सिकौला सं० पुं० सींक का बना टोकरा, स्त्री० -ली, वै०-कहुला,-ली ।
सिक्का सं०पुं० सिक्का;-जमाइब, प्रतिष्ठा स्थापित करना ।
सिखइब क्रि० स० सिखाना,-पढ़इब; वै०-खा-,-उब, -खा-, स० शिक्ष् ।
सिखरन स० पुं० दही या मट्ठा मिला हुआ शर्बत; -घोरब,-पियाइब; स० श्रीखंड ।
सिच्छा सं० स्त्री० उपदेश, शिक्षा;-लेब,-देब, सं० ।
सिजिल वि० बना हुआ, ठीक-ठीक, सजा हुआ, "साजब, सजब" से, सं० सज् ।
सिझवाइब क्रि० स० सीझने में मदद करना, लेना, वै०-झाइब,-उब ।
सिटकिनी सं० स्त्री० दरवाजे की सिटकिनी, -लगाइब,-देब; वै० चटकनी ।
सिटकी सं० स्त्री० एक जङ्गली पेड़ जिसकी पत्तियाँ कभी-कभी दवा में काम आती हैं ।
सिट्ट-पिट्ट सं० पुं० आपत्ति के शब्द,-करब, प्र० टिर-पिटिर, क्रि०-टपिटाब ।
सिट्ठी दे० सीठी ।
सिड़बिड़हा वि० पुं० टेढ़ा-मेढ़ा, बेढंगा; स्त्री० -ही ।
सिडाब क्रि० अ० ठंड से गीला हो जाना, दे० सीड़ा ।
सितार सं० पुं० प्रसिद्ध बाजा;-रिया, सितार बजानेवाला ।
सितिआब क्रि० अ० ओस से प्रभावित होना, दे० सीति; सं० शीत ।

सिथिल वि० पुं० थका हुआ, पुराना (शरीर, व्यक्ति),-परव,-होव, सं० शि- ।
सिद्ध सं० पुं० सिद्ध पुरुष;-महात्मा, पहुँचा हुआ साधु, भा०-ई,-द्धाई; (२) वि० ठीक,-करव,-होब, सं० ।
सिद्धि सं० स्त्री० योग आदि की सिद्धि; प्रायः-द्धी रूप में बोला जाता है, सं० ।
सिधवाइव दे० सोझवाइब ।
सिधाई सं० स्त्री० सीधापन, दे० सोझाई ।
सिधारव क्रि० अ० चला जाना, मर जाना; सरग- ।
सिधि वि० सिद्ध क० में; तुल० "जेहि सुमिरत -धोय" ।
सिन्नी सं० स्त्री०मुसलमानों के यहाँ बँटनेवाली मिठाई; फ़ा० शीरीनी,-बाँटब,-चढ़ाइब । कहा० अन्हरा बाँटै सिन्नी घरै घराना खाय ।
सिप्पा सं० पुं० तिकड़म, सिलसिला,-लगाइब, तरकीब करना ।
सिपारस सं० पुं० सिफारिश,-करव,-लाइब,-पहुँचाइब, फ़ा०-फारिश; वि०-सी, जो सिफारिश करे ।
सिपाही सं० पुं० सिपाही, योद्धा, पहरेदार; भा० -हगीरी, वि०-हियाना ।
सिपिहा वि० पुं० (आम) जिसके फल में पतली सीपी (दे०) सी गुठली हो ।
सिपावा सं० पुं० बैलगाड़ी के आगे लगाने के लिए लकड़ी के दो पैर जिससे गाड़ी खड़ी रहे ।
सिपुरुस सं० पुं० अधिकार, उत्तरदायित्व; सिपुर्द; -करव,-होव ।
सिपों-सिपों सं० पुं० गदहे के चिल्लाने का शब्द; -करव; प्र० सी- ।
सिफर सं० पुं० शून्य;-धरव, यक-,दुइ- ।
सियव क्रि० स० सीना;-फारव, खिलाई आदि करना ।
सियरडंडा सं० पुं० अमिलतास का लंबा फल, सियार+डंडा (दे०) ।
सिया सं० स्त्री० सीता,-जी सीताजी,-वर; रामचंद्र; -वर रामचंद्र की जै, प्रायः रामायण के पाठ के अन्त में यही कहते हैं ।
सियाई सं० स्त्री० सिलाई, सीने की मजदूरी, उसकी पद्धति ।
सियार सं० पुं० गीदड़; स्त्री०-रिनि,-फेंकरत है, निर्जन स्थान है ।
सियाराम सं० पुं० सीताराम, तुल०-मय सब जग जानी ।
सिरई सं० स्त्री० चारपाई में लगी वह लकड़ी जो सिर की ओर हो;-पाटी, चारपाई की चार लकड़ियाँ (पायों के अतिरिक्त); सं० शिरः ।
सिरका सं० पुं० गन्ने या दूसरे फलों के रस की बनी द्रव की खटाई ।
सिरकी सं० स्त्री० मूजा (दे०) की लंबी-पतली लकड़ी, ऐसी लकड़ी (सींक) का बना छप्पर जिसे गाड़ी पर तानते या छत की भाँति झोपड़ों में लगाते हैं । दे० सींकि ।
सिरजनहार सं० पुं० बनानेवाला, भगवान्, सं० सृज् ।
सिरजना सं० स्त्री० रचना, जन्म, सृष्टि,-करब,-होब, सं० सृज् ।
सिरजव क्रि० स० बचाकर रखना; बचाना, रक्षा करना; प्रे०-जाइव,-जवाइब; सं० सृज् ।
सिरताज सं० पुं० अगुआ, शिरोमणि, फ़ा० सरताज ।
सिरनेति सं० पुं० क्षत्रियों की एक शाखा, श्रेष्ठ व्यक्ति; बड़ा-, अपने को श्रेष्ठ समझनेवाला, वै० सिन्नेत,-त; सं० श्रीनेत्र ।
सिरमिट सं० पुं० सीमेंट;-लगाइब, अं० ।
सिर्री वि० पुं० झक्की, जिद्दी, सं० झक्की व्यक्ति, भा०-पन,-पना ।
सिरसा सं० पुं० सिरसा; सं० शिरीष ।
सिलउटि सं० स्त्री० पत्थर जिस पर नाई उस्तरा साफ करता है; वै०-वटि; सं० शिला ।
सिलगर वि० पुं० जिसमें शील हो, दयालु; दूसरे का ख्याल करनेवाला, स्त्री०-रि, भा०-ई; सं० शील+फ़ा० गर; दे० सिलार ।
सिलबिल्ला वि० पुं० बेढंगा, स्त्री०-ल्ली ।
सिलवर सं० पुं० जर्मन सिलवर; अं० ।
सिलसिला सं० पुं० संबंध, सिलसिला, फ़ा० ।
सिलापट सं० पुं० लंबी चौड़ी लकड़ी ,कटी लकड़ी का टुकड़ा; अं० स्लीपर; दे० सिलीपर ।
सिलाब क्रि० अ० शील में आना, दया करना; सं० शील ।
सिलार वि० पुं० शीलवाला, दूसरे का ध्यान रखनेवाला; सं० शील, दे० सील ।
सिलिप सं० स्त्री० सिमेंट की पटरी,-लगाइब, वै० -लीप, अं० स्लैब ।
सिलीपर सं० पुं० रेल का स्लीपर; पैर में पहनने का स्लिपर, अं० स्ली- ।
सिल्ली सं० स्त्री० बड़ा टुकड़ा (लकड़ी, पत्थर आदि का), सं० शिला ।
सिव सं० पुं० शिव;-बाबा,-महराज,-सिव, घृणा एवं खेद का द्योतक शब्द, सं० ।
सिवान सं० पुं० पड़ोस का गाँव; सीमा; वै० सिउ-,-आन; सं० सीमा ।
सिवार दे० सेवार ।
सिवाला सं० पुं० शिवालय; वै०-उवाला, सं० ।
सिसकव दे० सुसकव ।
सिसहा वि० पुं० शीशेवाला, शीशे का, स्त्री० -ही ।
सिहटाचार सं० पुं० ब्याह के दूसरे दिन का एक व्यवहार;-करब,-होब, सं० शिष्टाचार ।

सिहरब क्रि० अ० सिहरना।
सिहिटि सं० स्त्री० मछली पकड़ने का एक लोहे का काँटा,-लगाइब।
सींकड़ि सं० स्त्री० जंजीर; पतली जंजीर; सं० शृंखला; वै० सिकड़ी।
सींका सं० पुं० नीम का सींका।
सींकि सं० स्त्री० सींक; मूजे का सींका,-यस, दुबला पतला।
सींङि सं० स्त्री० सींग,-पूँछि; सं० शृंग।
सींचब क्रि० स० सींचना; प्रे० सिंचाइब,-चवाइब, -उब, सं० सिच्।
सीजन सं० पुं० (गन्ने की) फसल का समय, वह ऋतु जब गन्ना मिल पर पेलने के लिए जाये, अं०।
सीझब क्रि० अ० उबल के पक जाना, खूब पक जाना, प्रे० सिझाइब,-झवाइब,-उब, सं० सिध्।
सीठा सं० पुं० सूखा हुआ नीरस अंश, स्त्री०-ठी, क्रि० सिठियाब।
सीड़ा सं० पुं० सीलन, क्रि० सिड़ाब (दे०)।
सीता सं० स्त्री० रामचंद्र की स्त्री जिनके संबंध में अवधी में अनेक गीत हैं। गीतों में प्रायः इन्हें "सितल रानी" कहा जाता है।
सीति सं० स्त्री० ओस;-परब,-घाम, सभी प्रकार का मौसम; क्रि० सितिआब,-आव।
सीधा स० पुं० भोजन का कच्चा सामान; यक-, दुइ-, एक या दो व्यक्ति के भोजन का सामान; -पिसान, ऐसा सामान,-बान्हब,-लेब,-देब; सं० सिद्ध।
सीन-पसीना वि० पसीने से तर;-होब।
सीना सं० पुं० एक छोटा कीड़ा जो कपड़ों में लगता है; (२) छाती,-निकारब,-फुलाइब,-जोरी, जबरदस्ती।
सीनियर वि० पुं० बड़ा; स्त्री०-रि, भा०-रई, अं०।
सीया दे० सिया।
सीरा सं० पुं० शीरा, फ़ा० शीरः।
सीरि सं० स्त्री० स्वयं जोता हुआ खेत,-करब, -कराइब, खेती करना (खेत को असामी द्वारा न जुताना); वै०-र; सं० सीर (हल)।
सील स० पुं० लिहाज़,-करब,-सङ्कोच, वि०-दार, सिलगर, सिलार, सं०।
सीला सं० पुं० फसल का वह भाग जो काटते समय खेत में ही गिर जाता है, इसे बाद को गरीब लोग बीन ले जाते हैं, तुल० "सीला बिनत मजूर'।
सीव सं० पुं० सीमा, पराकाष्ठा; कविता में "सीवा" (तुल० अतुल बल सीवा), सं० सीमा।
सीसा सं० पुं० शीशा, आईना, फ़ा० शीशः।
सीसी स० स्त्री० शीशी; (२) सी सी की आवाज, -करब, क्रि० सिसिआब।

सुँघनी सं० स्त्री० सूँघने की वस्तु, वै०-ङ-।
सुअना दे० सुगना।
सुअरा दे० सुवरा।
सुआव क्रि० अ० क्रोध में फूला रहना।
सुइलार वि० पुं० नुकीला, स्त्री०-रि।
सुकउआ सं० पुं० शुक्र (तारा); वै० सुकवा; सं०।
सुकसुकहा वि० पुं० सुस्त एवं अकर्मण्य; स्त्री० -ही।
सुकाल स० पुं० अच्छा समय, जमाना; दे० सुदिन, अकाल, सं०।
सुकुराना सं० पुं० काम हो जाने पर दिया हुआ द्रव्य;-देब;-लेब,-पाइब, फ़ा० शुक्र (धन्यवाद, कृतज्ञता)।
सुकुल सं० पुं० एक प्रकार के अच्छे ब्राह्मण, स्त्री० -लाइन, सं० शुक्ल।
सुक्खै क्रि० वि० बिना किसी सालन के (खाना); मु०-खाब, देखकर कुढ़ना।
सुख सं० पुं० आराम;-करब,-देब,-पाइब,-रहब, -होब; क्रि० वि०-खें, सुखपूर्वक, सरलता से; वि०-खी, कविता में-खारी; सं०।
सुखइब क्रि० स० सुखाना; वै०-उब,-खाइब, प्रे० -खवाइब, स० शुष्क।
सुखमी वि० सुख करनेवाला, सुख का अभ्यस्त।
सुखरसी सं० स्त्री० पानी की सुविधा,-होब,-रहब; केवल पेड़ों या फसल के लिए प्रयुक्त,=रस (पानी) का सुख (शब्द-विपर्यय)।
सुखवन सं० पुं० सूखने के लिए फैलाया हुआ अन्न,-डारब,-छोड़ब,-फइलाइब, सं० शुष्क।
सुखवाइब दे० सुखइब।
सुखान वि० पुं० सूखा हुआ, स्त्री०-नि; सं० शुष्क।
सुखाब क्रि० अ० सूखना; प्रे०-खाइब,-खवाइब, दे० सूखब, सं० शुष्क।
सुखारी वि० सुखी; कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त; सं०।
सुखी वि० सुखपूर्ण;-रहब,-होब,-करब, आशीर्वाद में कभी-कभी कहते हैं—"सुखी रहौ।"
सुखें क्रि० वि० सुगमता से, दे० सुख।
सुगना सं० पु० प्यारा तोता, परम प्रिय व्यक्ति, सं० शुक।
सुगाब क्रि० अ० रुष्ट होना, भीतर ही भीतर रुष्ट रहना, वै०-आव, सं० शुच्?
सुगा सं० पुं० तोता, स्त्री०-गी, सं० शुक।
सुघर वि० पुं० चतुर, दक्ष, स्त्री०-रि, भा०-ई,-पन, अ०-ग्वर, सं० सुगृह?
सुच्चा वि० पुं० असली (सोना आदि), स्त्री० -ची, सं० शुचि।
सुजनी स० स्त्री० बिछौना जिसमें बहुत पास-पास तागा डाला जाता है, फा० सोजनी।

सुजान वि० पुं० अच्छी तरह जाननेवाला, 'अजान' (दे०) का उलटा, सं० सु+ज्ञा (जानना)।
सुज्जा दे० सूजा।
सुझवाइब क्रि० स० सुझाना।
सुझाइब क्रि० स० सुझाना, 'सूझब' का प्रे०।
सुटकुनी सं० स्त्री० पतली छड़ी, क्रि०-लिआइब, जरा सा मार देना, सुटकुनी से मारना; वै०-टु-।
सुटुर-सुटुर क्रि० वि० धीरे-धीरे, बिना आवाज किये (खा जाना)।
सुठउरा दे० सोंठउरा।
सुढ़रब क्रि० अ० सुधर जाना, प्रे०-राइब,-ढारब, सं० सु+धृ।
सुतना वि० पुं० खूब सोनेवाला (बच्चा); इसी प्रकार 'मुतना' (दे०) भी बनता है।
सुतरा सं०पुं० नाखून के किनारे का पतला चमड़ा; -उखरब, इस चमडे का खिंचकर बाहर निकलना।
सुतरी सं० स्त्री० सुतली, पतली सन की रस्सी, -बीनब,-बरब,-बनइब।
सुतही सं० स्त्री० सूद पर रुपया देने का काम, -चलाइब, ऐसा पेशा करना; फा० सूद।
सुताइब क्रि० स० सुलाना; मारकर गिरा देना; वै० सोवाइब; सं० सुप्त।
सुताई सं० स्त्री० सोने की क्रिया; आदत, वै० सोवाई, सं० सुप्त।
सुतार वि० पुं० सीधा, आसान; स्त्री०-रि; क्रि० वि०-रें, सीधे-सीधे, ठीक तरह से, शांतिपूर्वक, भा०-तरपन।
सुतुहा सं० पुं० बड़ा चम्मच, स्त्री०-ही, सीपी, सं० शुक्ति।
सुतैया वि० सोनेवाला, दे० सूतब।
सुत्तब दे० सूतब।
सुथना सं० पुं० पाजामा; प्र०-न्ना, स्त्री०-नी; "सुथना पहिरे हर जोतै औ पउला पहिरि निरावै ..."-घाघ।
सुदामा सं० पुं० प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त,-क चाउर, दरिद्र मित्र का उपहार।
सुदिन सं० पुं० अच्छा दिन, बहुत घोर वर्षा के बाद खुला दिन;-करब,-होब, दे० कुदिन।
सुद्र दे० सूद।
सुध सं० पुं० किसी की मृत्यु के बाद का दसवाँ दिन जब उसके सम्बन्धी बाल बनवाकर शुद्ध होते हैं, सं० शुद्ध;-करब,-होब।
सुधब वि० पुं० सीधा, ठीक; स्त्री०-धि, वै०-द्ध, -करब, ठीक करब,-उतरब,-रहब,-होब; वखर-, शास्त्रीय माप के अनुकूल बना (मकान); दे० वखरी।
सुधरब क्रि० अ० सुधरना; प्रे०-धारब,-धरवाइब, सं० सु+धृ।
सुधाँ अव्य० साथ, लेकर, घर-, घर लेकर या सम्मिलित करके, प्र०-द्धाँ।
सुधारब क्रि० स० ठीक करना।
सुधि सं० स्त्री० याद, स्मृति,-करब,-आइब,-होब, -रहब।
सुधिआब क्रि० अ० पता लगना, मिलने की आशा होना, वै०-याब; सं० शोध।
सुनगा सं० पुं० कोपल; दे० फुनगी।
सुनब क्रि० स० सुनना, बात मानना; प्रे०-नाइब, -नवाइब; सं० श्रृण्।
सुनरई सं० स्त्री० सुन्दरता; वै०-पन, सुनराई; सं० सुन्दर+ई।
सुनराइब क्रि० स० सुन्दर करना या बनाना; प्रे० -रवाइब, वै०-उब।
सुनराई दे० सुनरई, प्राय: गीतों में प्रयुक्त।
सुनवाई सं० स्त्री० सुनने का अवसर (शिकायत, उलाहना आदि को),-होब।
सुनाइब क्रि० स० सुनाना; प्रे०-नवाइब, वै० -उब।
सुन्न सं० पुं० शून्य; एक रोग जिसमें चमड़ा कड़ा हो जाता है।
सुन्नर वि० पुं० सुन्दर; स्त्री०-रि, भा०-नरई; (२) क्रि० वि० अच्छी तरह, सं० सुन्दर, कहा० पहिरि ओढ़ि कै सुन्नरि भईं छोरि लिहिस छछुन्नरि भईं।
सुन्नी सं०पुं० मुसलमानों की एक उपजाति; सीया-, शीया एवं सुन्नी।
सुपनेखा सं० स्त्री० शूर्पणखा, रावण की बहिन; कुरूप स्त्री।
सुपारी सं० स्त्री० सुपाड़ी; लिंग का मुँह,-देब, -बाँटब, निमंत्रण देना, वै० सो-।
सुपास सं० पुं० आराम, सुविधा;-देब,-करब,-होब, -रहब।
सुफल सं० पुं० तीर्थ (विशेषकर गया) का मुख्य फल;-बोलब, पंडे का प्रसन्न होकर पितरों को तारने का फल देना,-बोलाइब।
सुबरात सं० पुं० प्रसिद्ध मुसलिम त्योहार, शबे-बरात; वै०-ति।
सुबहा सं० पुं० संदेह;-करब,-होब, फा० शुब्ह:।
सुबिस्ता सं० पुं० सुविधा,-होब,-लागब,-खाब-सुविधा मिलना,-पाइब।
सुभ वि० शुभ,-असुभ, शुभाशुभ;-मानब,-मनाइब; सं०।
सुभई सं० स्त्री० विवाह के पूर्व का एक रस्म,-आब, -पठइब,-आइब; सं० शुभ।
सुभरा सं० पुं० संदेह, व्यर्थ की आशा।
सुमई सं० स्त्री० कंजूसी, दे० सूम;-करब; वै० -मडई।
सुमिरन सं० पुं० स्मरण;-करब, सं०।
सुमिरनी सं० स्त्री० भजन करने की माला का बड़ा दाना, सं०।
सुमेर सं० पुं० प्रसिद्ध पर्वत सुमेरु; सं०।
सुर सं० पुं० स्वर, राग;-भरब।

सुरऊ सं० पुं० अंधा व्यक्ति, दे० सूर (जिसका यह भा० रूप है)।
सुरकब क्रि० स० हाथ से दानों को एकत्र खींच लेना; जोर से द्रव पदार्थ को मुँह से खींचना, मु० सब खा डालना, वै०-रु-, प्रे०-काइब,-उब।
सुरका वि० (चूड़ा) जो हाथ से तोड़े या सुरके हुए जड़हन का बना हो।
सुरखी सं० स्त्री० लाल रोशनाई, पिसी हुई लाल मिट्टी जो जुड़ाई में लगती है।
सुरति सं० स्त्री० स्मृति,-करब,-बिसारब, वै०-ता।
सुरती सं० स्त्री० खाने का तंबाकू, वि०-तिहा, सुर्ती खाने का अभ्यस्त।
सुरमई सं० पुं० एक प्रकार का कपड़ा जो सुरमे के रंग का होता है; सुरमे का रंग।
सुरमा स० पुं० सुर्मा,-देब,-लगाइब,-दानी, सुर्मा रखने की डिबिया; वि०-महा, सुर्मावाला।
सुरवा सं० पुं० अंधा व्यक्ति, 'सूर' का घृ० रूप।
सुरसा सं० स्त्री० रामायण की प्रसिद्ध राक्षसी।
सुरहा सं० स्त्री० एक प्रकार की गाय,-गाय, वै० -ही।
सुराख सं० स्त्री० छेद, सूराख;-करब।
सुराग सं० पुं० पता, गुप्तचरों द्वारा चोरी आदि का भेद,-लेब,-लागब,-लगाइब।
सुराज सं० पुं० स्वराज।
सुराही स० स्त्री० पानी ठंडा करने का बर्तन।
सुरिआ सं० स्त्री० अंधी स्त्री; सूरि (दे०) का घृ०।
सुरुआ सं० पुं० शोरबा, मांस आदि का रस।
सुरुज सं० पुं० सूर्य; वै० सुर्ज।
सुरू सं० पुं० प्रारम्भ,-करब,-होब; शुरुअ।
सुरेमनि स० पुं० परमप्रिय पदार्थ,-होब, अलभ्य होना; सं० शिरोमणि।
सुर्र सं० पुं० कबड्डी की तरह का एक खेल; इसमें "सुर्र-सुर" बोलते हैं; क्रि०-र्राइब, "सुर्र" कहकर दौड़ना।
सुलगब क्रि० अ० धीरे धीरे जलना, सुलगना; प्रे०-गाइब,-उब।
सुलझब क्रि० अ० सुलझना, प्रे०-झाइब,-उब।
सुलतान सं० पुं० शासक,-नी, राजा की (आज्ञा); असमानी-सुलतानी बादि, दैवयोग या राजाज्ञा को छोड़ कर; कभी कभी इसी अर्थ में "दैवराजा बादि" कहते हैं।
सुलफा सं० पुं० एक प्रकार का नशा जो चिलम पर रखकर पिया जाता है;-पियब।
सुलभ दे० सलफ।
सुलह सं० स्त्री० शांति;-करब, होब, प्र०-ल्लह;-सपाटा, समझौता।
सुलाखब क्रि० स० किसी को लक्ष्य करके व्यंग कहना।
सुलुफ दे० सवदा।
सुवर सं० पुं० सूअर, स्त्री०-रि, भा०-ई,-पन, सूअर का सा व्यवहार, नीचता,-बारा, सूअर का घर, प्र० सू-, सं० शूकर।
सुवरा सं० पुं० एक घास जिसका बीज कपड़ों में चिपक कर घुस जाता है, वै०-अरा।
सुसकब क्रि० अ० सिसकना प्रे०-काइब।
सुसुरी सं० स्त्री० नाक और गले में पानी चढ़ जाने से बोलने में बाधा,-चढ़ब, वै०-रसुरी।
सुहराइब क्रि० स० हाथ से धीरे धीरे सहलाना, नूनी-, पेल्हर-, खुशामद करना; प्रे०-रवाइब।
सुहाग दे० सोहाग।
सूँघब क्रि० स० सूँघना, भाँप लेना, मजा पा जाना, प्रे० सुँघाइब,-उब, सं० घ्रा।
सूँड़ सं० पुं० सूँड़, स० शुंड।
सूँड़ी सं० स्त्री० एक बालदार कीड़ा जिसके छूने से शरीर में खुजली हो जाती है;-लागब।
सूई सं० स्त्री० सुई, सं० सूची।
सूक सं० पुं० शुक्रवार; सं०।
सूखब क्रि० अ० सूखना; प्रे० सुखाइब, सुखवाइब।
सूखा सं० पुं० पानी न बरसने का अकाल,-दाहा, सूखा तथा अति वृष्टिवाला अकाल,-परब।
सूजब क्रि० अ० सूजना।
सूजा सं० पुं० लंबी मोटी सूई जिससे बोरा आदि सीते हैं; प्र० सुज्जा।
सूजी सं० स्त्री० सूजी जिसका हलवा बनता है।
सूझ सं० स्त्री० दृष्टि, समझ-बूझ; वै०-झि।
सूझब क्रि० स० सूझना, दिखाई पड़ना;-बूझब, प्रे० सुझाइब,-झवाइब,-उब।
सूट-बूट सं० पुं० ठाट बाट,-लगाइब,-पहिरब।
सूटर स० पुं० गर्म बनियान, स्वेटर;-बीनब,-पहिरब, अं०।
सूत सं० पुं० धागा,-कातब; सूतै-, एक एक सूत, सं० सूत्र, (२) सूद, ब्याज,-लेव,-देव, फा०।
सूतब क्रि० अ० सोना, निद्रा में आना, प्रे० सुताइब, सं० सुप्त।
सूती वि० रुई का, ऊनी नहीं,-कपड़ा।
सूथनि स० स्त्री० पाजामा, पुं० सुथना।
सूद स० पुं० शूद्र,-बाबर, नीची जाति का व्यक्ति, स्त्री०-दिनि, भा० सुदई, कहा० गगरी भ दाना सूद उताना, सं०।
सूदक सं० पुं० परिवार का वह समय जब उसमें किसी के मरणोपरांत १३ दिन तक अशुद्धि रहती है।
सूधि वि० स्त्री० सीधी (गाय, भैंस आदि, पुं० -ध), जो आदमी को मारने न दौड़े या ठीक से दूध दे), भा० सुधाई, सं० शुद्ध।
सून वि० पुं० सूना, स्त्री०-नि,-लागब,-होब, समाप्त हो जाना;-सराय,-सान, सं० शून्य।
सूना-सराय सं० परम निर्जन स्थान, वै०-नी-।
सूप सं० पुं० पछोरने का सूप, कहा० सूप हँसै त हँसै चलनी कस हँसै जेकरे बहत्तरि छेद?

सूवा सं० पुं० प्रांत (२) प्रांत-पति, बड़ा व्यक्ति।
सूवेदार सं० पुं० फौज का एक कर्मचारी; भा०-री, स्त्री०-रिनि; सूवः (प्रदेश) + दार।
सूम सं० पुं० कंजूस व्यक्ति, स्त्री०-मि,-मिनि; (२) वि० कंजूस, भा० सुमई, घृ० सूमड़ा।
सूर सं० पुं० अंधा मनुष्य, स्त्री०-री; (२) वि० अंधा, स्त्री०-रि; आ०-दास,-रा, घृ० सुरवा, सुरिया।
सूरी सं० स्त्री० सूली;-फाँसी,-चढ़ाइव।
सूल सं० पुं० दर्द वाय-,वायु का दर्द (पेट में), -उठव,-पकरव,-होव; क्रि० हूलव (दे०)।
सूवर दे० सुअर।
सूस सं० पुं० पानी का एक बड़ा जानवर; वै०सूँ-।
सेंक स० पुं० सेंकने की क्रिया,-करव,-देव।
सेंकव क्रि० स० सेकना; मु० आँखि-, प्रेम या काम वासना की दृष्टि से देखना प्रे०-काइय, भा० सेंक,-काई।
सेंगा-पोढा सं० पुं० बहुत सा सामान,-लिहें, सब कुछ लादे; दे० पोडा; कभी कभी "सेङ्ड़ी-पोङ्ड़ी" भी बोलते हैं।
सेंठा सं० पुं० सरपत या मूज के भीतर की लकड़ी, सन का डंठल।
सेइव क्रि० स० सेवा करना, रक्षा करना; प्रे० -वाइव,-उव, वै०-उव; सं० सेव्।
सेई सं० स्त्री० सेर भर के लगभग की एक तौल; इस तौल का एक लकड़ी का बर्तन; यक-; दुइ-।
सेवकाई दे० सेवक।
सेखी सं० स्त्री० गर्व, गर्वीली बातें,-करव,-बघारव
अशेख (ऊँची कोटि का मुसलिम)।
सेखुआ सं० पुं० साखू; स्त्री०-ई, छोटा या हलके प्रकार का साखू।
सेज सं० स्त्री० विस्तर, वै०-जि, गीतों में-रिया; सं० शय्या।
सेत-मेत क्रि० वि० मुफ्त, बिना कुछ दिये, अ०-ती-ती; वै०-ति-ति।
सेना सं० स्त्री० फौज।
सेनुर सं० पुं० सिंदूर;-देव,-लगाइव;-दान, विवाह; सं०।
सेन्हा सं० पुं० सेंधा नमक, सं० सैंधव; वै०-नोन, -लोन।
सेन्हि सं० स्त्री० सेंध;-काटव;-फोरव, सं० संधि।
सेन्हिहा सं० पुँ० सेंध काटने वाला; (२) वि० इस प्रकार का (चोर)।
सेवरी दे० सयरी।
सेवरी सं०-स्त्री० प्रसिद्ध भक्त भीलनी; सं० शबरी।
सेम सं० स्त्री० प्रसिद्ध तरकारी, पुं०-मा, बड़ी फली वाली सेम, वै०-मि।
सेमर सं० पुं० सेमल; कहा० सेमर सेइ सुवा पछिताने; सं० शाल्मली।
सेमरुआ सं० पुं० मूसल का वह भाग जो लोहे का बना होता है; वै० सामि (दे०)।
सेमा सं० पुं० सेम का एक प्रकार जिसकी फली तथा दाने बहुत बड़े होते हैं; दे० सेम।
सेर सं० पुं० चार पाव की तौल: (२) वि० शेर, बहादुर; क्रि० वि०-न, सेरों, अधिक मात्रा में।
सेरकी सं० स्त्री०; पानी में होनेवाले एक घास की जड़।
सेरख वि० घमंडी; स्त्री०-खि, क्रि०-खाव, घमंड करना, अकड़ना, बात न सुनना; भा०-ई, वै० -खराव।
सेरवाइव क्रि० स० ठंडा करना (भोजन, दूध आदि)।
सेराव क्रि० अ० ठंडा होना (भोजन आदि का), मु० पुराना हो जाना या ठंडा पड़ जाना (मामले का)।
सेल्हव क्रि० अ० अकस्मात् मर जाना।
सेल्हा सं० पुं० फल या फूल का समूह जो छेद करके रस्सी या लकड़ी में लटकाये हों; यक-, दुइ-।
सेवँई सं० स्त्री० सिवँईं;-पूरब, सिवँई बनाना।
सेवक सं० पुं० सेवा करनेवाला; नौकर; भा०-काई तुल० नाथ हमारि यहै सेवकाई, सं०।
सेवर वि०।
सेवा सं० स्त्री० सेवा,-करव,-होव,-सुसूखा, कहा० जे करै सेवा ते खाय मेवा; सं०।
सेवाय वि० अधिक,-होय, (२) अव्य० सिवाय; बनके-, यकरे-।
सेवार सं० पुं० पानी में होनेवाली घास;-री सक्कर, एक प्रकार की शक्कर जिसे इस घास में दबाकर फिर कूटते है। सं०।
सेसनाग सं० पुं० शेषनाग,-महराज; सं०।
सेहरी सं०स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली; तुल० पात भरी सेहरी सकल सुत बारे बारे।
सेहा सं० पुं० स्याहा, हिसाब की समाप्ति,-करब, फ़ा० स्याह (काली=मुहर)।
सेहुँआ सं० पुं० चमड़े के ऊपर चित्तीदार चिन्ह; -होव।
सेहुँड़ सं० पुं० एक जंगली काँटेदार पेड़ जिसमें से दूध निकलता है।
सैकड़ा सं० पुं० सैकड़ा; यक-;दुइ-;-न, सैकड़ों।
सैका दे० सइका।
सैगर दे० सयगर।
सैतान सं० पुं० शैतान; भा०-तनई,-तानी; (२) वि० पुं० बदमाश, स्त्री०-नि, अर० शैतान।
सैनि दे० सइनि।
सैर सं० पुं० सैर,-करब,-सपाटा, यात्रा, मनोरंजन वै०-ल, फ़ा०।
सैराठ दे० सयराठ।

सैल सं० पुं० मौज,-करब, वि०-लानी, वै०-र।
सैलानी वि० मौजी,-जिउ, मौजी या मनमौजी व्यक्ति।
सैहरन दे० सयहरन।
सोंटा सं० पुं० डंडा, स्त्री०-टी, क्रि०-टहरब, सोंटे से मारना।
सोंठि सं० स्त्री० सोंठ;-ठउरा, गुड़, घी तथा सोंठ का बना लड्डू जो बच्चा होने पर बाँटा जाता और जच्चा को खिलाया जाता है। सं० शुंठि।
सोंथ सं० पुं० सूजन,-होब, क्रि०-ब, दे० फूलब-सोंथब।
सोइँठा वि० पुं० अकड़ा हुआ, स्त्री०-ठी, क्रि० -ब, कड़ा हो जाना, अकड़ जाना (किसी वस्तु का)।
सोइ वि० वही, प्र०-ई।
सोइब क्रि० अ० सोना, प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब, सं० स्वप्।
सोई सं० स्त्री० भूमि जिसमें धान की खेती हो।
सोऊ सर्व० वह भी; वि० वह भी, वै० सोउ।
सोक सं० पुं० खाट की बिनावट का छेद,-कै सोक, एक-एक छेद में, प्रत्येक स्थान पर।
सोकन वि० पुं०थोड़े-थोड़े काले बालोंवाला (बैल) स्त्री०-नि।
सोकाड़ा सं० पुं० कुएँ के किनारे का वह स्थान जहाँ ढेकली चलाते समय पानी गिरता है।
सोखब क्रि० स० सोखना, शोषण करना, प्रे० -खाइब,-उब, सं० शोष्।
सोखा सं० पुं० भूत, पिशाच आदि के प्रकोप का पता लगानेवाला व्यक्ति; भा०-ई, इस प्रकार की खोज का काम या पेशा,-ई करब, ऐसी खोज करना।
सोग सं० पुं० शोक,-करब,-होब; क्रि०-गाब।
सोगह्ग वि० पुं० पूरा-पूरा, सीधा, समूचा; प्र० -गै, स्त्री०-गि।
सोगाब क्रि० अ० शोक पाना, दुःखी होना, वि० -न।
सोच सं० पुं० फिक्र, चिंता;-करब,-होब,-बिचार, -फिकिर; सं० शुच्।
सोचब क्रि० स० सोचना, विचार करना;-बिचारब।
सोझ वि० पुं० सीधा; स्त्री०-झि; क्रि० वि०-झै, सीधे-सीधे, साफ-साफ, क्रि० सोझाब,-झवाइब, -उब; स०।
सोझवा-साही वि० सीधा-सादा, सीधा-सच्चा।
सोझाब क्रि० अ० सीधा होना, प्रसन्न होना, प्रे० -झवाइब,-उब, सीधा करना।
सोडा सं० पुं० सोडा,-लगाइब, (कपड़े में) सोडा लगाना,-साबुन, अं० सोडा।
सोता सं० पुं० सोता, स्रोत, स्त्री०-ती, नदी की शाखा, क्रि०-तिआइब, सोते का पता लगा लेना (कुँआ खोदते समय), सं० स्रोत।

सोध सं० पुं० पता,-लगाइब,-बोध, पता ठिकाना, समस्या का हल, सं० शोध+बोध।
सोधब क्रि० स० विचार करना, ढूँढ़ना (मुहूर्त); साइति-, मुहूर्त निकालना, प्रे०-धाइब,-धवाइब, -उब; सं० शोध।
सोन सं० पुं० सोना,-हुला, सोने का बना, सौ सोने क, बहुत अच्छा, सं० स्वर्ण।
सोनार सं० पुं० सुनार, भा०-नरई,-नरपन, स्त्री० -रिनि, सं० स्वर्णकार।
सोन्ह वि० पुं० सोंधा,-लागब,-करब, मुँह (जीभि) -करब, स्वाद लेना, स्त्री०-न्हि, भा०-न्हाई।
सोन्हिआर सं० पुं० एक जंगली जानवर जो पेड़ों पर चढ़ जाता और प्रायः रात को फसलों पर आक्रमण करता है।-यस, काला-कलूटा।
सोन्हौला वि० पुं० सुनहला, सं० सोने के बने आभूषण; वै० सोनहुला, स० स्वर्ण।
सोपारी दे० सुपारी।
सोफियाना वि० पुं० बढ़िया, ऐसा जो बड़े लोगों को शोभा दे (कपड़ा, आभूषण आदि), स्त्री०-नी, फा० सूफियानः।
सोभब क्रि० अ० शोभा देना, अच्छा लगना (देखने में), सं० शोभ्।
सोभा सं० स्त्री० शोभा,-देब, अच्छा दिखना।
सोम सं० पुं० सोमवार; वै०-म्मार, सुम्मार; सं०।
सोय सर्व० वही, दे० सोई, (२) क्रि० सोकर;-कै सो करके; सं० स्वप्।
सोर सं० पुं० शोर,-करब,-होब, प्रसिद्ध हो जाना, फा० शोर।
सोरह वि० सोलह;-आना, पूरा-पूरा।
सोरहिया सं० पुं० मछली मारनेवाली एक जाति, वै०-आ।
सोरहौ स० पुं० मृत्यु के उपरान्त का एक संस्कार जिसमें महाब्राह्मण को प्रत्येक वस्तु १६ की संख्या में दान दी जाती है;-करब,-देब, ऐसा दान देना, सं० षोडश।
सोरा सं० पुं० शोरा,-होब, ठंडक से ठिठुर जाना, शोरः।
सोरि सं० स्त्री० जड़, खोदब,-उखारब, हानि करना; -साखा, चिन्ह, शेष, ध्वंसावशेष (परिवार आदि का)।
सोलख वि० हलका, कम (बीमारी),-होब।
सोल्हवाइब क्रि० अ० मीठी-मीठी बातें करके खुश करने की कोशिश करना, ऐसा करनेवाले को "सोल्हा" कहते हैं।
सोवता सं० पुं० सोने का समय, घोर निद्रा का समय,-परब, देर हो जाना, सं० स्वप्।
सोवनार सं० पुं० सोने का स्थान।
सोवा सं० पुं० सोया,-मेथी,-पालक।
सोवाइब क्रि० स० सुलाना, व्यं० मारकर गिरा देना।

सोसइटी सं० स्त्री० सहकारी सघ अं० सुसायटी।
सोहगइली सं० स्त्री०सधवा स्त्री सुहागवाली स्त्री, सं० सौभाग्य।
सोहव क्रि० अ० अच्छा लगना, प्राय: गीतों में; सं० शोभ्।
सोहवति सं० स्त्री० साथ;-करव; शोभा,-लागव, फा० सोहबत।
सोहर सं० पुं० जन्मोत्सव पर गाया जानेवाला गीत;-गाइब,-होय।
सोहरति सं० स्त्री० प्रसिद्धि, नाम,-करब,-होब; फा० शुहरत।
सोहारी सं० स्त्री० बड़ी-बड़ी पतली पूड़ी,-तरकारी।
सोंहिना दे० सहिना।
सौक दे० सउक।
सौति सं० स्त्री० सौत;-या डाह; दे० सवति; सं०।
सौदा दे० सवदा।
सौ-सौ वि० सैकड़ों;-गारी,-बाति; सं० शत।

ह

हँकवा सं० पुं० शिकार के पहले जंगल में जानवरों को एक ओर हाँक देने का क्रम,-हँकाइब, इस प्रकार पशुओं को निकालना।
हँड़कोली सं० स्त्री० छोटी-छोटी हाँड़ी, पुं०-ला (बृ०), दे० पतकोली; सं० भाण्ड-हंड-हँड़।
हँड़वाई सं०स्त्री० भोजन बनाने के बर्तन जो किसी भले आदमी के साथ अलग चलते हैं; हंड (भांड) +वाई।
हँढ़वाइब क्रि० स० मरवाना; स्त्री का पुरुष-प्रसग कराना।
हँसब क्रि० अ० हँसना, सं० उपहास करना; प्रे० -साइब,-सवाइब।
हँसमुसना वि० पुं० जो हँस-हँसकर बात टाल दे जो कुछ करे न, केवल बात करे स्त्री०-नी; हँसब + मूसब (मूस का सा व्यवहार करना)।
हँसमुसनी सं० स्त्री० हँस-हँसकर बात टालने की आदत;-करब।
हँसारति दे० हँसी।
हँसिआ सं० पुं० हँसिया; वै०-सुआ, कहा० हँसिया लाम कि परोसिन क नेकुरा ?
हँसी सं० स्त्री० हास्य, उपहास;-करब,-होब,-हँसारति, उपहास सं० हस्।
हँसुआ सं० पुं० दे०-सिआ।
हँसुली स० स्त्री० गले में पहनने का गोल छल्ला; हँसुली।
हँसोड़ वि० पुं० जिसे हँसी करने का शौक हो, स्त्री०-ड़ि।
हँसौआ सं० पुं० मज़ाक-करब. वै०-सउआ, सं० हस्।
ह ! अव्य० हाय !-ह !, हाय, हाय !
हइँचनी स०स्त्री० लकड़ी जिससे रस्सी खींची जाय, वै० अ-।
हइँचव क्रि० स० खींचना, प्रे०-चाइब, वै० अइँ-।
हइँसि सं० स्त्री० एक जंगली मोटी बेल जिसकी जड़ फोड़ों पर गर्म करके बाँधी जाती है।
हइजहा वि० पुं० जहाँ हैजा पड़ा हो (गाँव), स्त्री० -ही।
हइजा दे० हयजा।
हइवी-दइवी सं० स्त्री० आकस्मिक घटना, आपत्ति, -परब,-आइब, सं० दैवी।
हइमस सं० पुं० द्वेष;-करब,-होव, वि०-हा,-ही, वै०-य-।
हइलाइब क्रि० स० (बकरी) भगाना, हाँकना; इस जानवर को खदेरते समय "हइले-हइले" कहा जाता है।
हइवारी दे० हयवारी।
हइहाइब क्रि० स० ज़ोर से डाँटना, खदेड़ना, कई जनों का मिलकर किसी को डाँटना, दे० हउहाइब।
हई सं० स्त्री० हानि, दूसरे के खेत या पेड़ से नाज, फल आदि की चोरी,-करब,-होब।
हई वि० यह, यही, प्र०-ईहै,-हौ।
हउँकब क्रि० स० पंखा हाँकना (आग सुलगाने के लिए); मारने का प्रयत्न करना (जानवर का), प्रे० -काइब, वै० हौं-।
हउँकी-चउँकी दे० घउँकी-वउँकी।
हउकि-हउकि क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और अधिक मात्रा में (पानी पीना)।
हउचियाव क्रि० अ० घबरा जाना, दंग रह जाना।
हउद सं० पुं० हौज।
हउदा सं० पुं० हाथी का हौदा; वै०-व-।
हउदी स० स्त्री० नाँद; यक-, दुइ-, पूरा भरा नाँद, -यस, मोटा पर छोटा (व्यक्ति); हौज।
हउफा सं० पुं० जनश्रुति;-करब,-होब;-उड़ाइब।
हउलाति सं० स्त्री० हवालात,-करब,-होब,-रहब।
हउलू वि० जो अपना काम बेढंगे हिसाब से करे, फूहड़; भा०-पन।
हउवा सं०पुं० एक काल्पनिक व्यक्ति जिसका स्मरण बच्चों को डराने के लिए कराया जाता है; वै० -आ।

हउसिला सं०पुं० उत्साह, महत्त्वाकांक्षा;-रहब,-होव, -करब; वै०-च-।
हउहाब क्रि० स० डाँट लेना, अ० जल्दी करना, घबराकर कुछ कर डालना, कहा० हउहानि कोहा-इनि छुतरे पर आँवा (दे०), प्रे० प्र०-हब।
हउहार सं० पुं० जोर की हवा;-बहब,-चलब, वै० हौ-।
हउहै वि० वही।
हऊ वि० वह, प्र०-उहै।
हक सं० पुं० अधिकार, प्र०-क्क,-दार; जिसका हक हो।
हकतलफ सं०पुं० अधिकार का ह्रास,-होब,-पाइब, अहक+तलफ (फटना); भा०-फी।
हकदार दे० हक्क।
हकलाब क्रि० अ० हकलाना।
हकसफा सं० पुं० मुकदमा जिसमें प्रथमाधिकार का निश्चय हो; अर० हकशफा:.-करब,-होब।
हक्का-बक्का वि० पुं० चकित,-होब; स्त्री०-क्की-क्की।
हगनउरी सं० स्त्री० गुदा; वै०-नौरी; 'हगब' से= हगने का स्थान।
हगना वि० पुं० बहुत हगनेवाला (लड़का), स्त्री० -नी।
हगब क्रि०अ० हगना, टट्टी फिरना; व्यं० खूब रुपया देना; प्रे०-गाइब,-गवाइब, भा० हगाई।
हगाई सं०स्त्री० हगने का क्रम, हगने की आदत, प्रे० -गवाई।
हगासि सं० स्त्री० हगने की इच्छा,-लागब।
हग्गी सं० स्त्री० हगने की क्रिया,-करब, यह शब्द बच्चों के ही लिए प्रयुक्त होता है।
हचकब क्रि०अ० हचका लगना, हचका देना (गाड़ी या पहिये का), प्रे०-काइब।
हचका सं०पुं० पहिये में धक्का,-लागब,-देब, क्रि० -इब।
हचकिचाब क्रि० अ० हिचकना, आपत्ति करना, वै० हि-।
हचर-हचर सं० पुं० पहिये के ढीले होने का शब्द, -करब,-होब।
हचहचाब क्रि० अ० हचहच करना, ढीले होने की आवाज करना।
हच्चा सं०पुं० पहिये को गड्ढे में से धक्का,-लागब, -खाब।
हजम सं० पुं० पाचन,-करब,-होब, बेईमानी से ले लेना या खाया जाना।
हजरत सं० पुं० चालाक व्यक्ति, भा०-ई।
हजार सं० पुं० सहस्र,-न, असंख्य, बहुत से;-खाँद, दो चार सौ।
हजूर सर्व० आप; ऊँचे अफसर या बहुत संभ्रांत व्यक्ति को संबोधित करने का शब्द, फ़ा० हुजूर (सम्मुख)।
हजूरें क्रि० वि० सामने, सम्मुख,-होब,-आइब, सामने आना।
हज्ज सं० पुं० मक्का मदीना की यात्रा, तीर्थयात्रा; -करब कहा० सात सै मूस खाय के बिलारि चलीं हज्ज करै।
हज्जाम सं० पुं० नाई, भा० हजामति, कहा० नाऊ देखें हजामति याद़ै।
हटब क्रि० अ० हटना, प्रे०-टाइब,-टवाइब।
हट्ठा-कट्ठा वि० पुं० हृष्ट-पुष्ट; स्त्री०-ट्ठी-ट्ठी।
हठ सं० पुं० जिद,-करब, वि०-ठी,-ठील।
हड्डहा वि० पुं० जिसकी हड्डियाँ निकली हों, स्त्री० -ही।
हड्डाब क्रि० अ० मांसहीन हो जाना, हड्डियां प्रदर्शित करना।
हडकप सं० पुं० अधिक भय,-करब,-होब,-नाधब, -डारब,-परब, हाड़ (हड्डी)+कंप (काँपना)=डर के मारे हड्डी काँप उठना।
हड़गर वि० पुं० जिसकी हड्डियाँ मोटी हों, स्त्री० -रि; हाड़+फा० गर।
हड़ताल दे० हरताल।
हडहा सं० पुं० पशु; हड़ (हड्डी)+हा (वाले); प० अ०।
हड़ाइब क्रि० स० "हड़े-हड़े" कहना, (कौए को) उड़ाना, दे० "हड़े-हड़े"।
हड़ावरि सं० स्त्री० हड्डियों का ढेर।
हतक सं० स्त्री० अपमान;-करब,-होब।
हतना वि० पुं० इतना, स्त्री०-नी।
हतब क्रि० स० मार डालना, सं० घ्न, दे० हनब।
हथउडी सं० स्त्री० हथौड़ी, पुं०-ड़ा।
हथपोई वि० स्त्री० हाथ की बनाई हुई (रोटी)।
हथवड सं० पुं० हत्था (जाँत आदि का), वै०-थि।
हथार वि० पुं० हाथवाला,-गोड़ार; हाथ पैरवाला, अपने ऊपर निर्भर रहनेवाला (प्रायः बड़े बच्चों के लिए); सं० हस्त।
हथिआइब क्रि० स० दे० हाथा।
हथिआर सं० पुं० हथियार, लिंग।
हथिवान सं० पुं० पीलवान; सं० हस्ती, दे० हाथी।
हथिहा वि० पु० हाथीवाला।
हदबंदी सं० स्त्री० सीमा का निर्धारण,-करब; हद +बंद (सं० बंध, फा०)।
हदस सं० पुं० डर, भय,-खाब,-करब, क्रि०-ब, प्रे० -साइब, डराना।
हदहद वि०पुं० छोटा (व्यक्ति), छोटे कद का; स्त्री० -दि, वै० हुदहुद।
हद्द सं० पुं० सीमा;-करब,-होब, पराकाष्ठा को पहुँ-चाना, हद, दे० सरहद्द; दु-भै, जा भला आदमी, तूने हद कर दी।
हनब क्रि० स० मारना; प्रे०-नाइब, सं० घ्न।
हन्नहवा सं० पुं० तीन तारों का समूह जो एक

सीध में रहते और देहात के लिए रात में घड़ी का काम देते हैं।

हन्ना सं० पुं० हिरन; स्त्री०-न्नी ।

हफ़्ता सं० पुं० सप्ताह; वै०-फ़ना, वि०-वारी, सं० सप्ताह, फा० हफ़्त: ।

हफ़र-हफ़र क्रि० वि० जल्दी-जल्दी साँस ले-लेकर, हाँफते हुए।

हवस सं० स्त्री० उत्कट इच्छा; फ़ा० हवस,-करब, -होब ।

हवहवाब क्रि० अ० जल्दी करना, अनावश्यक शीघ्रता से काम खराब करना, तु० अं० हबब ।

हम सर्व० हम,-काँ, मुझे, प्र०-म्में ।

हमजोली सं० पुं० साथी।

हमला सं० पुं० आक्रमण,-करब ।

हमार सर्व० पुं० मेरा, हमारा, स्त्री०-रि ।

हमासुमा सं० पुं० सर्व साधारण; हम जैसे लोग फा० शुमा, आप ।

हमेसाँ क्रि० वि० सदा, प्र०-सैं, हर-हमेस, सदा ही।

हयकड़ वि० पुं० मज़बूत, प्रभावशाली, स्त्री०-ड़ि, भा०-ई।

हयचड़ वि० पुं० कठिन काम करनेवाला, सहनशील; भा०-ई, स्त्री०-ड़ि।

हयजा सं० पुं० हैजा;-माई, हैजा का देवता।

हयमस दे० हइमस।

हयराठिया वि० सब कुछ सहन करनेवाला, भा० -रठई ।

हयवारी सं० स्त्री० फ़सल को पशुओं द्वारा हानि पहुँचाने की आदत;-करब,-होब।

हया सं० स्त्री० लज्जा, बे-, निर्लज्ज ।

हर सं० पुं० हल,-नाधब,-चलाइब,-जोतब, गदहा क- नाधब, ऊधम मचाना; सं० हल ।

हरचटी सं० स्त्री० हल के साथ रहने का क्रम ।

हरउति दे० हरवति ।

हरकब क्रि० स० मना करना, प्रे०-काइब,-कवाइब।

हरक्कति सं० स्त्री० हर्ज, बाधा,-करब,-होब।

हरख सं० पुं० आनंद, हर्ष, सं०; क्रि०-खाब, प्रसन्न होना।

हरदी सं० स्त्री० हल्दी, चुतरें-लागब, ब्याह होना, सं० हरिद्रा।

हरजा सं० पुं० हानि,-करब,-होब; हैजा, दे० हयजा,-वै०-जवा ।

हरजाई वि० स्त्री० पुंश्चली, परपुरुषगामी; वेश्यावृत्ति करनेवाली, फा० हर (प्रत्येक)+जा (स्थान)+ई (वाली) जो कहीं भी या किसी पुरुष के पास जा सके, भा०-जैपन।

हरजाना सं० पुं० दण्ड; किसी का हर्ज करने का दण्ड,-देब,-लेब,-पाइब, फा०हर्ज ।

हरब क्रि० स० हर लेना, ले लेना; अपहरब ।

हरबा-हथियार सं० पुं० अस्त्र-शस्त्र, अर०-हर्ब: ।

हरसा सं० पुं० हल या कोल्हू की लंबी लकड़ी ।

हरहट वि० पुं० बदमाश (पशु); भागनेवाला, तुरानेवाला; स्त्री०-टि, भा०-ई ।

हरवाह सं० पुं० हल चलानेवाला, भा०-ही ।

हराँस सं० पुं० ज्वर का ताप,-धरब ।

हराइब क्रि० स० हराना, प्रे०-रवाइब, वै० -उब ।

हराम सं० पुं० बिना परिश्रम का धन, वि०-कै, -खोर, हराम का खानेवाला,-रमई, हरामखोरी ।

हरामी वि० जो अपने बाप का न हो ।

हरारति सं० स्त्री० गर्मी; ज्वर ।

हरावनि सं० स्त्री० मजबूरी;-परब,-डारब ।

हरवति सं० स्त्री० हल चलाने का मुहूर्त;-करब ।

हरसि सं० स्त्री० हल की लंबी लकड़ी जिसमें जुआठा (दे०) बाँधा जाता है। वै०-र्सि ।

हरिअर वि० पुं० हरा, स्त्री०-रि, वै०-यर, तुल० मुनिहिं हरिअरे सूझ, सं०, हरा सरसों आदि का पौदा जो खेत से उखाड़कर लाया जाय (पशुओं को खिलाने के लिए)।

हरिआरा सं० पुं० सोंठ, गुड़ आदि का द्रव हलवा जो प्राय: प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है। वै०-य-,-रेरा; सं० हरित ।

हरिअराब क्रि० अ० हरा हो जाना; वै०-आब, "तुलसी बिरवा राम के पर्वत पर हरिआयँ", वै०-य-, सं० हरित ।

हरिअरी सं० स्त्री० हरियाली, वै०-य-, सं० हरित ।

हरी सं० स्त्री० असामी का अपना हलबैल ले जाकर जमींदार का खेत मुफ़्त जोतने की पद्धति, -देब -बेगारी (दे०), सं० हल।

हरेरा दे० हरिअरा, सं० ।

हरौं सं० पुं० संतोष, सहन,-करब ।

हर्रय सं० स्त्री० हड़, सं० हरीतकी, वै०-रैं ।

हर्रा सं० पुं० बड़ी हड़; कहा० न हर्रा लागै न फिटकिरी,-बहेर्रा ।

हलइब क्रि० स० हलाना, वै०-ला-, प्रे०-वाइब ।

हलका सं० पुं० क्षेत्र, मंडल, अर० हल्क: ।

हलकानि वि० तकलीफ़ में; वै०-ला-,-होब,-करब ।

हलकोरा सं० पुं० पानी का टक्कर,-लागब, वै० हि-।

हलकोरब क्रि० स० (पानी को) हटाकर साफ़ करना, अ० पानी का उठना या टक्कर मारना भा०-रा, लहर,-मारब ।

हलचल सं० स्त्री० आन्दोलन।

हलफ सं० स्त्री० गङ्गाजल अथवा अन्य पवित्र वस्तु उठाकर शपथ खाने का नियम,-उठाइब, -लेब ।

हलानि सं० स्त्री० नदी या तालाब में पाँव-पाँव चलने की संभावना ।

हलब क्रि० अ० घुसना, प्रे०-लाइब।
हलब्बी वि० बढ़िया;-सीसा; मोटा अच्छा दर्पण।
हलर-हलर क्रि० वि० काँपता हुआ,-करब।
हलवाई सं० पुं० मिठाई का काम करनेवाला, वै० -लु-; भा०-वैपन।
हलसाइब क्रि० स० हिलाकर उखाड़ने की कोशिश करना।
हलाइब क्रि० स० घुसेड़ना, वै०-उब, भा०-ई।
हलाल वि० मरा, मारा, परेशान,-करब,-होब, भा० -ली, मृत्यु।
हलालखोर वि० मांसाहारी, बदमाश, प्रायः स्त्रियों द्वारा गाली की भाँति प्रयुक्त, फ़ा० हलाल (किया हुआ) (मांस)+खोर, खानेवाला।
हलुक वि० पुं० हल्का; स्त्री०-कि, प्र०-ल्लु-, भा० -ई, तु०-हर, क्रि०-काब।
हलैया सं० पुं० हलनेवाला; प्रे०-लवैया, वै० -आ।
हलोरब क्रि० स० सूप में धीरे-धीरे साफ करना; मु० मुनाफ़ा उठाना, कमाना; प्रे०-रवाइब,-पछोरब।
हलोरा सं० पुं० पानी की लहर;-लेब, खूब आनंद से नहाना।
हलोहल्ल वि० पुं० बहुत अधिक (फ़सल, पानी आदि); वै०-ला-।
हल्ला सं०पुं०शोर;-गुल्ला;-करब, अफ़वाह उड़ाना।
हल्लोक सं० पुं० संसार,-परलोक, हरलोक-परलोक, -लागब, अपराध या पाप लगना,-लगाइब।
हवदा दे० हउदा।
हवफा दे० हउफा।
हवलदार सं० पुं० पुलिस तथा फौज का एक छोटा अफ़सर।
हवलदिल वि० जिसकी मस्तिष्क फिर गया हो, जो अनाप-शनाप बातें करता हो; वै० हौल-; हौल +दिल।
हवसिला दे० हउसिला।
हवा सं० स्त्री० वायु, रङ्ग ढङ्ग, वि०-ई, व्यर्थ, आधार-हीन,-पानी, जलवायु;-खाब, बेवक़ूफ़ बन जाना।
हहक सं० पुं० स्नेहपूर्ण उत्साह; वियोग-जनित इच्छा; क्रि०-ब, ऐसी भावना करना।
हहरब क्रि० अ० उत्कट इच्छा करना, किसी बात के लिए लालायित होना, वि०-री, खाने-पीने में सदा असंतुष्ट रहनेवाला।
हहान-खहान सं० पुं० शोकाकुल स्थिति;-परब, ऐसी स्थिति हो जाना।
हहाब क्रि० अ० 'हा हा' करना; दे० हिंहिआव।
हाँक सं० पुं० रोब, प्रभाव;-मर्जाद, इक़बाल, दे० साक, साका।
हाँकब क्रि० स० हाँकना; प्रे० हँकाइब,-कवाइब, -उब।
हाँड़ी सं० स्त्री० हंडी, मिट्टी की बड़ी पतीली; यक-,दुइ-,-भर; सं० भांड।
हाँफब क्रि० अ० हाँफना, प्रे० हँफाइब,-फवाइब; -डाँफब, थक जाना; शीघ्र ऊब या घबरा जाना।
हाँफा सं० पुं० साँस फूलने की अवस्था,-आइब, -लागब।
हाँसि सं० स्त्री० हँसी, उपहास,-होब।
हाँहाँ सं० पुं० स्वीकृति;-भरब।
हाट सं० पुं० बाजार,-बज़ार, बजार-।
हाड़ सं० पुं० हड्डी, हाड़े-, एक-एक हड्डी; मु० पुरानी शत्रुता, वंश परंपरागत वैर;-परब, ऐसी शत्रुता होना।
हाड़ा सं० पुं० ततैया, बरैया, स्त्री०-ड़ी,-पाका, ऐसा फोड़ा जो हड्डी तक पहुँच गया हो या अच्छा न होता हो,।
हाड़ी सं० स्त्री० कटहल के भीतर की लम्बी लकड़ी जिसकी तरकारी बनती है।
हाथ सं० पुं० हाथ, दो वित्ते की नाप; यक-; दुइ-, -भर; सं० हस्त; क्रि० वि०-न, अपने हाथों (देना, लेना)।
हाथा सं० पुं० लकड़ी का बर्तन जिसमें लंबा हत्था लगा रहता है और जिससे सिंचाई होती है,-मारब, हाथे से पानी देना; क्रि० हथिआइब, इस प्रकार सींचना।
हाथी सं० स्त्री० प्रसिद्ध जानवर, पुं०-था, नर हाथी;-नसीन, जिसके पास हाथी हो,-वान, पीलवान, महावत; दे० हथिवान।
हादिक सं० पुं० औषध करनेवाला, जिसे रोगों का ज्ञान हो वि० होशियार।
हानि सं० स्त्री० चिंता;-करब,-होब।
हाबब क्रि० अ० घबरा जाना।
हामी सं० स्त्री० स्वीकृति; हाँ में हाँ मिलाने की बात,-भरब, हाँ में हाँ मिलाना।
हाय सं० स्त्री० दुःख की साँस; "जाकी मोटी हाय"-कबीर।
हाय विस्म० हाय !-हाय, हाय हाय !
हायल वि० बीता हुआ,-होब, समाप्त हो जाना, थक जाना; का० (मियाद हायल होब)।
हार सं० पुं० नुक़सान, घाटा,-परब; (२) गले में पहिनने का आभूषण, हार जाने की स्थिति; -जीति।
हारब क्रि० अ० हारना, प्रे० हराइब,-रवाइब, -जीतब; थक जाना, मजबूर हो जाना।
हारिल सं० पुं० एक प्रसिद्ध चिड़िया जिसके संबंध में सूरदास ने लिखा है-"हमारे हरि हारिल की लकड़ी"।
हारे-खाङे क्रि० वि० विशेष आवश्यकता पड़ने पर; कहा० राम रसोइया दुइ जने,-तीनि जने, चउपटा चारि जने। मै० हरले-खङ्ले।

सीव में रहते और देहात के लिए रात में घड़ी का काम देते हैं।
हन्ना सं० पुं० हिरन; स्त्री०-न्नी ।
हफ्ता सं० पुं० सप्ताह; वै०-फता, वि०-वारी, सं० सप्ताह, फा० हफ़्त: ।
हफर-हफर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी साँस ले-लेकर, हाँफते हुए ।
हवस सं० स्त्री० उत्कट इच्छा; फा़० हवस,-करब, -होब ।
हबहबाब क्रि० अ० जल्दी करना, अनावश्यक शीघ्रता से काम खराब करना; तु० अं० हबब ।
हम सर्व० हम,-कां, मुझे, प्र०-म्मैं ।
हमजोली सं० पुं० साथी ।
हमला सं० पुं० आक्रमण,-करब ।
हमार सर्व० पुं० मेरा, हमारा; स्त्री०-रि ।
हमासुमा सं० पुं० सर्व साधारण; हम जैसे लोग फा़० शुमा, आप ।
हमेसाँ क्रि० वि० सदा, प्र०-सैं, हर-हमेस, सदा ही ।
हयकड़ वि० पुं० मज़बूत, प्रभावशाली, स्त्री०-ड़ि, भा०-ई ।
हयचड़ वि० पुं० कठिन काम करनेवाला, सहनशील; भा०-ई, स्त्री०-ड़ि ।
हयजा सं० पुं० हैजा;-माई, हैजा का देवता ।
हयमस दे० हइमस ।
हयराठिया वि० सब कुछ सहन करनेवाला, भा० -रठई ।
हयवारी सं० स्त्री० फ़सल को पशुओं द्वारा हानि पहुँचाने की आदत;-करब,-होब ।
हया सं० स्त्री० लज्जा, बे-, निर्लज्ज ।
हर सं० पुं० हल -नाधब,-चलाइब,-जोतब; गदहा क- नाधब, ऊधम मचाना; सं० हल ।
हरउटी सं० स्त्री० हल के साथ रहने का क्रम ।
हरउति दे० हरवति ।
हरकब क्रि० स० मना करना; प्रे०-काइब,-कवाइब ।
हरक्कति सं० स्त्री० हर्ज, बाधा,-काब,-होब ।
हरख सं० पुं० आनंद, हर्ष, सं०; क्रि०-खाब, प्रसन्न होना ।
हरदी सं० स्त्री० हल्दी, चुलरें-लागब, ब्याह होना, सं० हरिद्रा ।
हरजा सं० पुं० हानि;-करब,-होब; हैजा, दे० हयजा,-वै०-जवा ।
हरजाई वि० स्त्री० पुंश्चली, परपुरुषगामी; वेश्यावृत्ति करनेवाली, फा० हर (प्रत्येक)+जा (स्थान)+ई (वाली) जो कहीं भी या किसी पुरुष के पास जा सके, भा०-जैपन ।
हरजाना सं० पुं० दण्ड; किसी का हर्ज करने का दण्ड,-देब,-लेब,-पाइब, फा० हर्ज ।
हरब क्रि० स० हर लेना, ले लेना; अपहरब ।
हरबा-हथियार सं० पुं० अस्त्र-शस्त्र, अर०-हर्ब: ।
हरसा सं० पुं० हल या कोल्हू की लंबी लकड़ी ।
हरहट वि० पुं० बदमाश (पशु);-भागनेवाला, तुरानेवाला; स्त्री०-टि, भा०-ई ।
हरवाह सं० पुं० हल चलानेवाला, भा०-ही ।
हराँस सं० पुं० ज्वर का ताप,-धरब ।
हराइब क्रि० स० हराना. प्रे०-रवाइब, वै० -उब ।
हराम सं० पुं० बिना परिश्रम का धन, वि०-कै, -खोर, हराम का खानेवाला,-रमई, हरामखोरी ।
हरामी वि० जो अपने बाप का न हो ।
हरारति सं० स्त्री० गर्मी; ज्वर ।
हरावनि स० स्त्री० मजबूरी;-परब,-हारब ।
हरवति सं० स्त्री० हल चलाने का मुहूर्त,-करब ।
हरसि सं० स्त्री० हल की लंबी लकड़ी जिसमें जुआठा (दे०) बाँधा जाता है । वै०-र्सि ।
हरिअर वि० पुं० हरा; स्त्री०-रि; वै०-यर तुल० मुनिहिं हरिअरे सूझ, सं०; हरा सरसों आदि का पौदा जो खेत से उखाड़कर लाया जाय (पशुओं को खिलाने के लिए) ।
हरिअरा सं० पुं० सोंठ, गुड आदि का द्रव हलवा जो प्राय: प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है । वै०-य-,-रेरा, सं० हरित ।
हरिअराब क्रि० अ० हरा हो जाना, वै०-आब, "तुलसी बिरवा राम के पर्वत पर हरिआयँ", वै०-य-, सं० हरित ।
हरिअरी सं० स्त्री० हरियाली, वै०-य-, सं० हरित ।
हरी सं० स्त्री० असामी का अपना हलबैल ले जाकर जमींदार का खेत मुफ़्त जोतने की पद्धति, -देब -बेगारी (दे०), सं० हल ।
हरेरा दे० हरिअरा, सं० ।
हरौं सं० पुं० संतोष, सहन,-करब ।
हर्र सं० स्त्री० हड़, सं० हरीतकी, वै०-रैं ।
हर्रा सं० पुं० बड़ी हड, कहा० न हर्रा लागै न फिटकिरी,-बहेर्रा ।
हलइब क्रि० स० हलाना, वै०-ला-, प्रे०-वाइब ।
हलका सं० पुं० क्षेत्र, मंडल, अर० हल्क: ।
हलकानि वि० तकलीफ़ में; वै०-ला-,-होब,-करब ।
हलकोरा सं० पुं० पानी का टक्कर;-लागब, वै० हि-।
हलकोरब क्रि० स० (पानी को) हटाकर साफ़ करना, अ० पानी का उठना या टक्कर मारना भा०-रा, लहर,-मारब ।
हलचल सं० स्त्री० आन्दोलन।
हलफ सं० स्त्री० गङ्गाजल अथवा अन्य पवित्र वस्तु उठाकर शपथ खाने का नियम,-उठाइब, -लेब ।
हलानि सं० स्त्री० नदी या तालाब में पाँव-पाँव चलने की संभावना ।

हलब क्रि० अ० घुसना, प्रे०-लाइब ।
हलब्बी वि० बढ़िया;-सीसा; मोटा अच्छा दर्पण ।
हलर-हलर क्रि० वि० कांपता हुआ,-करब ।
हलवाई सं० पुं० मिठाई का काम करनेवाला; वै० -लु-; भा०-वैपन ।
हलसाइब क्रि० स० हिलाकर उखाड़ने की कोशिश करना ।
हलाइब क्रि० स० घुसेड़ना, वै०-उब, भा०-ई ।
हलाल वि० मरा, मारा, परेशान,-करब,-होब, भा० -ली, मृत्यु ।
हलालखोर वि० मांसाहारी, बदमाश, प्रायः स्त्रियों द्वारा गाली की भाँति प्रयुक्त, फ़ा० हलाल (किया हुआ) (मांस)+खोर, खानेवाला ।
हलुक वि० पुं० हल्का; स्त्री०-कि, प्र०-ल्लु-, भा० -ई, तु०-हर, क्रि०-काब ।
हलैया सं० पुं० हलनेवाला; प्रे०-लवैया; वै० -आ ।
हलोरब क्रि० स० सूप में धीरे-धीरे साफ करना; मु० मुनाफ़ा उठाना, कमाना, प्रे०-रवाइब,-पछो-रब ।
हलोरा सं० पुं० पानी की लहर;-लेब, खूब आनंद से नहाना ।
हलोहल्ल वि० पुं० बहुत अधिक (फ़सल, पानी आदि), वै०-ला-।
हल्ला सं०पुं०शोर,-गुल्ला;-करब, अफ़वाह उड़ाना ।
हल्लोक सं० पुं० संसार,-परलोक, हरलोक-परलोक, -लागब, अपराध या पाप लगना,-लगाइब ।
हवदा दे० हउदा ।
हवफा दे० हउफा ।
हवलदार सं० पुं० पुलिस तथा फौज का एक छोटा अफ़सर ।
हवलदिल वि० जिसकी मस्तिष्क फिर गया हो, जो अनाप-शनाप बातें करता हो; वै० हौल-; हौल +दिल ।
हवसिला दे० हउसिला ।
हवा सं० स्त्री० वायु, रङ्ग ढङ्ग, वि०-ई, व्यर्थ, आधार-हीन,-पानी, जलवायु;-खाब, बेवकूफ़ बन जाना ।
हहक सं० पुं० स्नेहपूर्ण उत्साह; वियोग-जनित इच्छा; क्रि०-ब, ऐसी भावना करना ।
हहरब क्रि० अ० उत्कट इच्छा करना, किसी बात के लिए लालायित होना; वि०-री, खाने-पीने में सदा असंतुष्ट रहनेवाला ।
हहान-खहान सं० पुं० शोकाकुल स्थिति,-परब, ऐसी स्थिति हो जाना ।
हहाब क्रि० अ० 'हा हा' करना; दे० हिहिआब ।
हाँक सं० पुं० रोब, प्रभाव,-मर्जाद, इक़बाल, दे० साक, साका ।
हाँकब क्रि० स० हाँकना; प्रे० हँकाइब,-कवाइब, -उब ।
हाँडी सं० स्त्री० हंडी, मिट्टी की बड़ी पतीली, यक-,दुइ-,-भर; सं० भाँड ।
हाँफब क्रि० अ० हाँफना; प्रे० हँफाइब,-फवाइब; -डाँफब, थक जाना; शीघ्र ऊब या घबरा जाना ।
हाँफा सं० पुं० साँस फूलने की अवस्था,-आइब, -लागब ।
हाँसि सं० स्त्री० हँसी, उपहास,-होब ।
हाँहाँ स० पुं० स्वीकृति;-भरब ।
हाट सं० पुं० बाजार,-बजार, बजार- ।
हाड़ सं० पुं० हड्डी, हाड़ै-, एक-एक हड्डी; मु० पुरानी शत्रुता, वंश परंपरागत वैर;-परब, ऐसी शत्रुता होना ।
हाड़ा सं० पुं० ततैया, बरैया, स्त्री०-ड़ी,-पाका, ऐसा फोड़ा जो हड्डी तक पहुँच गया हो या अच्छा न होता हो, ।
हाड़ी स० स्त्री० कटहल के भीतर की लम्बी लकड़ी जिसकी तरकारी बनती है ।
हाथ सं० पुं० हाथ, दो बित्ते की नाप; यक-; दुइ-, -भर; सं० हस्त; क्रि० वि०-न, अपने हाथों (देना, लेना) ।
हाथा सं० पुं० लकड़ी का बर्तन जिसमें लंबा हत्था लगा रहता है और जिससे सिंचाई होती है,-मारब, हाथे से पानी देना; क्रि० हथिआइब, इस प्रकार सींचना ।
हाथी सं० स्त्री० प्रसिद्ध जानवर, पुं०-था, नर हाथी;-नसीन, जिसके पास हाथी हो;-वान, पील-वान, महावत, दे० हथिवान ।
हादिक सं० पुं० औषध करनेवाला; जिसे रोगों का ज्ञान हो वि० होशियार ।
हानि सं० स्त्री० चिंता;-करब,-होब ।
हाबब क्रि० अ० घबरा जाना ।
हामी सं० स्त्री० स्वीकृति; हाँ में हाँ मिलाने की बात,-भरब, हाँ में हाँ मिलाना ।
हाय सं० स्त्री० दुःख की साँस; "जाकी मोटी हाय"-कबीर ।
हाय विस्म० हाय !-हाय, हाय हाय !
हायल वि० बीता हुआ,-होब, समाप्त हो जाना, थक जाना; का० (मियाद होय) ।
हार स० पुं० नुकसान, घाटा,-परब, (२) गले में पहिनने का आभूषण, हार जाने की स्थिति; -जीति ।
हारब क्रि० अ० हारना, प्रे० हराइब,-रवाइब; -जीतब; थक जाना, मजबूर हो जाना ।
हारिल सं० पुं० एक प्रसिद्ध चिड़िया जिसके संबंध में सूरदास ने लिखा है-"हमारे हरि हारिल की लकड़ी" ।
हारे-खाड़े क्रि० वि० विशेष आवश्यकता पड़ने पर, कहा० राम रसोइया दुइ जने,-तीनि जने, चउ-पटा चारि जने । मै० हरले-खड़्ले ।

हाल सं० स्त्री० समाचार,-चाल।
हालति सं० स्त्री० दशा।
हालब क्रि० अ० हिलना, प्रे० हलाइब।
हालर वि० पुं० हिलने या काँपनेवाला, प्रायः गीतों में प्रयुक्त; "हालर मोतिया" नामक एक गीत भी है। दे० हलर हलर; मो०।
हालि सं० स्त्री० लकड़ी के पहिए पर चढ़ा हुआ लोहे का छल्ला।
हाली क्रि० वि० शीघ्र,-हाली, जल्दी जल्दी, वै० -लीं।
हाव-भाव सं० पुं० शरीर के लक्षण तथा मन के भाव,-देखाइब, सं०।
हाहा सं० पुं० खाने पीने की जल्दी तथा लालच; -परब।
हिंवार वि० ठंढा, बहुत ठंढा; वै० हें-; सं० हिम।
हिंस्सा सं० पुं० भाग;-हँसिया, अंश,-पाती; -लेब,-करब,-पाइब, वै० हींसा; अर० हिस्सः।
हिआव सं० पुं० हिम्मत;-करब,-धरब, वै०-या-।
हिआरी सं० स्त्री० स्मृति,-मैं बइठब; याद रहना, वै०-रौ,-या-; सं० हृद्।
हिकला वि० पुं० निर्लज्ज. स्त्री०-ली, भा०-लई।
हिगरब क्रि० अ० स्पष्ट होना, अलग होना; प्रे० -गारब,-गरवाइब, भा०-गार।
हिचकब क्रि० अ० हिचकना।
हिच्छा सं० स्त्री० इच्छा,-भर,-माफिक, पूरा पूरा क्रि० हिनछब (दे०), वै० इ-(दे०)।
हिजरा वि० पुं० जिसमें स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व का चिह्न न हो, भा०-रपन,-रई।
हित सं० पुं० कल्याण; मित्र, भा०-तापन,-ताई; -तैपन; क्रि०-ताब, अच्छा लगना;-मीत,-मित्र।
हिनछब क्रि० स० कोई बुरी इच्छा करना, भविष्य के संबंध में दुर्भावना करना।
हिनमिनहा वि० पुं० छोटा तथा दुबला पतला, स्त्री०-ही, सं० हीन+फा० मिनहा (शेष, घटा हुआ)।
हिनवता सं० स्त्री० नम्रता,-करब।
हिनहिनाब क्रि० अ० घोड़े का बोलना।
हिनाई सं० स्त्री० छोटापन, हीनता,-करब, -देखाइब; सं० हीन।
हिब्बा सं० पुं० दान;-नामा, दानपत्र;-लिखब, -करब।
हिम्मत सं० स्त्री० हिम्मत; वि०-वर,-ती,-करब, -होब।
हियाँ क्रि० वि० यहाँ; प्र०-यैं,-औं।
हियाव सं० स्त्री० हिम्मत; वि०-दार;-करब।
हिरइब क्रि० स० पास में रखना (व्यक्ति को); आदत डालना,प्रे०-राइब,-रवाइब।
हिरकब क्रि० अ० लालच के कारण दूसरे के पास सटे रहना; प्रे०-काइब, किसी वस्तु को ऐसे रख देना कि जल्दी वह हट न सके।
हिरदै सं० पुं० मन, चित्त;-मैं आइब,-मैं बसब, -मैं धरब, सं० हृदय।
हिरास सं० पुं० कमी;-होब,-रहब।
हिरिंह सं० पुं० कै करने की इच्छा,-लागब, ऐसी इच्छा होना।
हिलब क्रि० अ० हिलना, हट जाना।
हिलवाइब क्रि० स० हिलाना; गिराना (फल आदि), भा०-ई, वै०-उब।
हिलाइब क्रि० स० हिलाना; वै०-उब; प्रे०-वाइब।
हिल्ला सं पुं० संबंध, सिलसिला; बहाना;-करब, -मिलब,-पाइब;-हवाला; वै० हीला;-ल्लें लागब, व्यय हो जाना, लग जाना।
हिसका-दाँजी सं० पुं० प्रतिस्पर्धा;-करब,-होब; फा० रश्क+दाँज (दे०)।
हिसाब सं० पुं० लेखा-जोखा;-देब,-करब,-लेब;- किताब, वि०-बी।
हिंहिआब क्रि० अ० हँसना; हीं हीं करना; वै० -याब।
हींकि सं० स्त्री० हींक; गंध जो अच्छी न लगे; -आइब,-देब।
हीअब! अव्य० बछड़े या गाय को बुलाने का शब्द; वै०-यो; प्रयोग में "हीअव बाछा!" बोलते हैं।
हीक सं० स्त्री० पूरी इच्छा,-भर, खूब।
हीकब क्रि० स० मारना, खूब पीटना, प्रे० हिकाइब,-कवाइब।
हीकावोर क्रि० वि० जितनी इच्छा हो।
हीन वि० पुं० नीच, छोटा, दुबला-पतला, कमजोर, स्त्री०-नि, भा० हिनाई, हिनौता,- हियाती, जीवन भरका।
हीबा सं० पुं० दान पत्र;-करब,-लिखब; वै० हि-, हिब्बा;-नामा,-दार (जिसको हिबा लिखा जाय), अर०।
हीर सं० पुं० असली या बहुमूल्य भाग।
हीरा सं० पुं० हीरा, वि० बढ़िया, प्रशंसनीय।
हीरामन सं० पुं० प्रसिद्ध तोता जो कई लोकगीतों में आता है। वै० हि-।
हीलब क्रि० अ० हिलना, हटना; बहुत डर जाना; प्रे० हिलाइब,-लवाइब।
हीला सं० पुं० बहाना, सिलसिला;-हवाला, टालमटूल,-करब।
हीसा सं० पुं० हिस्सा,-बखरा,-हसिया, अधिकार; -दार,-लेब,-देब,-माँगब, वै० हीं-, प्र० हिस्सा; हिस्सः।
हुँआब क्रि० अ० रोना, चिल्लाना; हुँआ हुँआ करना, सियारों की भाँति बोलना।
हुँकरब क्रि० अ० "हुँ हुँ" शब्द करना; चिल्लाना (पशुओं का); सं० हुंकार।
हुँड़ार सं० पुं० पानी में रहनेवाला एक प्रकार के साँप या मछली जो प्रायः कुंड में ऊपर मुँह करके

कूदते तथा तैरते रहते हैं।-करब, ऊधम मचाना, -मचाइब,-मचब, वि०-री, ऊधमी।
हुइहाइब क्रि० स० खदेड़ना, भगाना, वै० हइ-।
हुकुर-पुकुर क्रि० वि० धक-धक (काँपना),-करब, -होब; वै० धुकुर-।
हुकुम सं० पुं० आज्ञा;-देब,-होब; क्रि०-माइब, वि०-मी;-मी बंदा, केवल नौकर (जिसकी बात न चले)-हाकिम, निश्चय, फैसला (मुकदमे का)।
हुक्क सं० पुँ० कोट में लगाने का हुक; अ०।
हुक्का सं० पुं० तंबाकूपीने का बर्तन,-यस (मुँह), खुला हुआ, चुपचाप;-पानी, आदर सत्कार,-बंद करब, त्याग देना, कहा० धन नाते-पोसाक नाते चिलम।
हुड़कब क्रि० अ० किसी की याद में विकल होना; प्रे०-काइब।
हुड़का सं० पुं० हाथ से बजाने का एक छोटा बाजा जिस पर चमड़ा लगा रहता है;-जोड़ी, "हुड़का जोड़ी बाज थै, चमारे क लारका नाच थै।" -गीत।
हुड़दंगा सं० पुं० व्यर्थ का शोर-गुल, मस्ती भरा झगड़ा,-मचाइब,-करब, वै०-र-।
हुदहुद वि० पुं० छोटा (बच्चा); नासमझ।
हुद्दा सं० पुं० पद, उहदा, अर० उहदः।
हुन्नर सं० पं० हुनर, ढङ्ग; वि०-री।
हुमना वि०पुं० इधर-उधर घूमनेवाला, बेकार, स्त्री० -नी, भा०-नई।
हुमासब क्रि० स० उभाड़ना, खोदकर निकालना; प्रे०।
हुम्मी-हुम्मा सं० पुं० एक दूसरे को खूब मारने की प्रतिस्पर्धा,-करब,-होब।
हुरदंगा दे० हुड़दंगा।
हुरपेटब क्रि० स० डाँटकर या डराकर किनारे कर देना।
हुरफब क्रि०स० डाँटना, फटकारना,-गुरफब (दे०)।
हुरब क्रि०स० मिट्टी से भरना, दबाना,मारना; खूब खाना, प्रे०-राइब,-रवाइब, दे० हुरा।
हुरमति सं० स्त्री०इज्जत, इज्जति-;अर०हुरमत; वि० -हा।
हुरहुर सं० पुं० एक जंगली पौदा जिसके बीज, पत्ते आदि दवा में काम आते हैं।
हुराइब क्रि० स० कूट-कूटकर भराना या भरना, खिलाना, प्रे० हुरवाइब, वै०-उब।
हुराह वि० तंग, कोताह, कम;-पाइब, कम पड़ना।
हुरिआइब क्रि० स० बाध्य करना, ढकेलना, दे० हूरा, भो०।
हुर्र वि० गायब, लुप्त;-होब,-करब, उड़ जाना या उड़ा देना।
हुलसब क्रि० अ० प्रसन्न होना, प्रे०-साइब, सं० उल्लास।
हुलास सं० पुं० प्रसन्नता, उल्लास; सं०।
हुलिआ सं० पुं० व्यक्तिगत चिह्न,-जाड़ी, पुलिस द्वारा हुलिया की विज्ञप्ति, वै० हो-।
हुलुम-दुलुम्मा सं० पुं० आन्दोलन, विप्लव; -मचाइब,-मचब।
हुलुर-हुलुर क्रि० वि० बार-बार (काँपना), धीरे धीरे; प्र०-लुर-लुर।
हुसिआर वि० पुं० होशियार; स्त्री०-रि, भा०-री,- -आरई,-पन, फा० होशियार।
हुस्स सं० पुं० दे० हूस।
हुहुआब क्रि० अ० हू-हू करना (ठंड या दर्द के मारे)।
हूँचा सं० पुं० कुहनी का धक्का;-मारब,-देब; क्रि० हुँचिआइब।
हूँसब क्रि० स० बार-बार और धीरे-धीरे डाँटना, हुँसवाइब।
हूक सं० पुं० दर्द जो झट से उठे और बंद होकर फिर उठे;-उठब।
हूरा सं० पुं० किनारा; क्रि० हुरिआइब, लकड़ी की नोक से किसी को उठाना, मजबूर करना; कहा० "न सौ पूरा चरन न यक हूरा चरन।"
हूल सं० पुं० झटके का दर्द,-मारब; क्रि०-ब, दर्द करना; सं० शूल; भो०।
हूस सं० पुं० उजड्ड, बेढङ्गा; प्र० हुस्स।
हूही सं० स्त्री० अफ़वाह, झूठी खबर,-उड़ब,-उड़ाइब,-झूही, पुं०-हा।
हेंढ़ा वि० पुं० उजड्ड, बेढङ्गा, भा०-ढ़ई।
हेंगा सं० पुं० जुते खेत की मिट्टी बराबर करने का लम्बा लकड़ी का टुकड़ा, क्रि०-इब, ऐसी लकड़ी से खेत बराबर करना, वै० सरावन।
हेत सं० पुं० प्रेम, अव्य० वास्ते, लिए।
हेई वि० यह, यही; प्र०-ही,-हइ।
हेऊ वि० यह भी।
हेकड़ी सं० स्त्री० गर्व, अकड़।
हेठ वि० पुं० नीचा; स्त्री०-ठि, भा०-ठी, निचाई, क्रि० वि०-ठें, क्रि०-ठाब, नीचे चला जाना (पानी का)।
हेर-फेर सं० पुं० परिवर्तन,-करब,-होब।
हेरब क्रि० स० खोजना, प्रे०-राइब,-वाइब, भा० -राई।
हेराब क्रि०अ० खो जाना, प्रे०-रवाइब।
हेलवाई सं० पुं० हलवाई, स्त्री०-इनि, भा०-वैपन।
हेल वि० जिसकी कोई चिंता न करे, निरादृत, -होब।
हेला सं० पुं० मेहतर; स्त्री०-लिनि; भा०-लैपन।
हेलुआ सं० पुं० हलुवा।
हेवँत सं० पुं० कठोर जाड़ा,-परब, वि०-हा, ठंड का मारा हुआ, सं० हेमंत।
हेहर क्रि०वि०इधर; 'येहर' का प्र०रूप, प्र०-रै,-रौ।
हैंचल वि० पुं० जो कष्ट सह सके, स्त्री०-दि, वै० हइँ-।

हैकड़ वि० पुं० शक्तिशाली, परिश्रमी, दुःख या विरोध का सामना करनेवाला; स्त्री०-ड़ि; भा० -पन,-ई,-ड़ी।
हैकड़ी सं० स्त्री० गर्व, गर्वीली बात।
हैकल सं० स्त्री० हवेल (दे०) के बीच की बड़ी चौकी।
हैजा सं० पुं० प्रसिद्ध बीमारी, वि०-जहा,-ही।
हैवति सं० स्त्री० आश्चर्य की बात, अद्‌भुत घटना।
हैवी-दैवी दे० हइवी।
हैरठपन सं० पुं० हैराठिया (दे०) होने का गुण; वै०-ठई।
हैरति सं० स्त्री० आश्चर्य,-करव,-होव।
हैराठिया वि० पुं० जो कठिन से कठिन कार्य कर सके, भा०-रठपन,-ठई।
हैरान वि० पुं० परेशान, चकित; स्त्री०-नि, भा० -नी।
हैवान सं० पुं० पशु; भा०-वनपन।
हैहँस सं० पुं० निरंतर पर छोटे-छोटे कष्ट; वै० खइ-, हइ-।
होंठ दे० ओंठ।
होंफव क्रि० स० डाँटते रहना, निरंतर भय में रखना; प्रे०-फाइब,-फवाइब, मो०।
होकर वि० पुं० उसका; स्त्री०-रि, वै० ओ-; 'वोकर' का प्र० रूप।
होनहर वि० पुं० होनहार, अच्छा; स्त्री०-रि, भा०-ई; कहा० होनहर विरवा क चिक्कन पात।
होनहार सं० पुं० होनेवाली बात।
होनी सं० स्त्री० भवितव्यता;-होव;-रहब।
होव क्रि० अ० होना;-जाब, जन्म-मरण; प्रे० -वाइब।
होम सं० स्त्री० हवन;-अगियारि, होम एवं हवन, पूजा अथवा धार्मिक कृत्य; मु०-होब, मर जाना; त्याग करना।
होरसा सं० पुं० छोटी पत्थर की चौकी जिस पर चन्दन घिसा जाय, वै० ह्व-,-ड़-; मो०।
होरहा सं० पुं० होला, चने का भुट्टा; मु०-होव, परेशान होना, धूप में थकना; वै० ह्व-; मो० मे० ओ-।
होलिका स० स्त्री० जलनेवाली होली;-माई, जिसके चारों ओर जलते समय बच्चे घूम-घूमकर कहते हैं-"होलिका माता देव असीस, लरिकै जीयें लाख बरीस;" स०; वै० ह्व-।
होवाई सं० स्त्री० होने की क्रिया।
होस सं० स्त्री० चेतना; स्मृति;-करब, याद करना, -आइव,-होव; क्रि०-साब, वि०-गर, बे-; वै०-सि; फ़ा० होश।
होहर क्रि० वि० उधर, उस ओर; 'ओहर' प्र० रूप वै० ह्व-; वै० ओम-।
हौंकव दे० हउँकव।
हौज सं० पुं० पानी का भंडार; वै० हउद (दे०)।
हौदी दे० हउदी।
हौहाव दे० हउहाव।
हौहार दे० हउहार।

परिशिष्ट

छूटे हुए शब्द तथा अर्थ

अ

अंक सं० पुं० संख्या का चिह्न; दे० आँक,-लगाइब, -मारब ।

अँकाइब साँड़ दगाना या कनगुर (दे०) गोंठना ।

अंकार सं० पुं० चिह्न, चेहरे का एक सा होना; सूचना,-देखब,-देखाब; 'अंक' से;-नाहीं छपत, किसी का चेहरा छिपा नहीं रहता अर्थात् प्रत्येक की असलियत देखने से ही स्पष्ट हो जाती है ।

अंकुस सं० पुं० रोक,-राखब, नियंत्रण रखना; सं० अंकुश ।

अंकोर . वि०-रिहा, सी० घूस-, वै०-क्वार ।

अंखा-पंखा, सं० पुं० काजल के चिह्न जो छोटे बच्चों को शृंगार के पश्चात् मत्थे पर दोनों ओर इसलिए लगा दिये जाते हैं कि नजर (दे०) न लगे।

अंग-अंग क्रि० वि० प्रत्येक अंग; प्रत्येक अवयव में, प्र०-गैअंग, सारे अवयव । वै०-गें-गे; देहें-अंगें, शरीर के लिए;-लागब, लाभ करना (किसी खाद्य का) ।

अंग-भंग सं० पुं० किसी अवयव का टूट जाना,-करब,-होब, तुल० अंग-भंग करि पठवहु बंदर ।

अंगुर सं० पुं० एक अंगुल;-भर, जरा सा, सं० अंगुलि, दे० अंहुरा,-री ।

अंजल सं० पुं० दे० अनजल,-होच, बदा होना, भाग्य में होना; सं० अन्न + जल ।

अंजहा वि० पुं० दे० अनजहा ।

अंजाद सं० पुं० दे० अनजाद; वि०-दू, अनुमान पर निर्भर;-मामिला,-बाति; फ़ा० ।

अँजुरी...खलियान में पुण्यार्थ निकाला अन्न, -काढ़िब,-काढ़ब,-निकारब ।

अंट-बंट सं० पुं० उलटे-सीधे शब्द, अपशब्द, वै० अंड-बंड, अट्ट-पट्ट,-संट;-कहब,-बोलब,-बक्कब ।

अंटी सं० स्त्री० धोती का वह ऐंठा हुआ भाग जो कमर के ऊपर चारों ओर बँधा हो, रुपया रखने का स्थान; कोष (क्योंकि देहाती प्रायः इसी स्थान पर नक़द रुपये-पैसे रखते हैं)-खोलब, रुपया निकालना ।

अंझी स० पुं० एक प्रकार का चावल ।

अंड-वंड सं० पुं० व्यर्थ या अनुपयुक्त बात;-करब, -बक्कब ।

अंडा सं० पुं० अंडा, अंडकोष के भीतर की गोली, बे-, वह अंडा जिसमें से बच्चा न निकले, सं०-ड ।

अंडा सं० पुं०-बच्चा, सारा परिवार;-बंडा, उलटा-पलटा; वै० अंड-बंड, अंट-बंट,-संट;-देब,-सेइब (ये दोनों मुहावरे काहिलों के लिए प्रयुक्त होते हैं उ० घर माँ बइठ-सेवत (देत) हौ, घरमें बैठे-बैठे अंडे से (या दे) रहे हो ?)

अँडसठि...साठ और आठ,-वाँ,-ई, ६८वाँ भाग ।

अँड़सब क्रि० अ० फँस जाना, ठूँस उठना, प्रे० -साइब,-उब ।

अँडोरब क्रि० स० उँड़ेलना, प्रे०-रवाइब,-उव, दे० उँड़ेलब ।

अंत सं० पुं० अंतिम भाग;-देब,-पाइब,-लेब, भीतरी बात या रहस्य खोलना, ज्ञात करना अथवा पता लगाना, सं०, वै० अंतर, अंत्र ।

अंतर सं० पुं० भीतरी भाग, रहस्य;-देब,-पाइब, -लेब;-दोखी, जो भीतर या हृदय का साफ़ न हो, -छली, सं० ।

अंदाजब क्रि० अ० स० पता लगाना, अनुमान करना, अनुमान से कहना । विपर्यय से कभी-कभी 'अंजादब' भी कहते हैं । फ़ा० अंदाज़ ।

अंदाजू वि० अनुमान पर निर्भर, अनिश्चित; लग-भग; फ़ा० अंदाज़ ।

अंधाधुंध क्रि० वि० बिना सोचे समझे, अनियंत्रित रूप से; सं० अंध ।

अंस सं० पुं० भाग; भाग्य,-दार, भाग्यवान्;-इत, अंश या भाग्यवाला,-हीन, अभागा,-हा, नक्षत्रवाला; दे० अनसइत; वै०-सा (उ०-के अंसा कै,-के भाग्य का); सं० अंश ।

अंसोहाति सं० स्त्री० जो बात अच्छी न लगे, वै० अनसुहाति, अन+सोह (ब). दे० सोहब; उ० -बोलेव न, ऐसी बात न कहना जो किसी को बुरी लगे, प्र०-तै,-तिहि ।

अइया . ह० में माता के लिए प्रयुक्त ।

अउँघाई.. वि०-न,-सा,-सी (नींद में) ।

अउन्हाइब क्रि० स० उलटकर रखना (वर्तन), ढक देना ।

अउलाइ . सी० हुबकाई ।

अकहत्थी नै० एकहाते ।

अकिलि.. -गुम्म होब, बुद्धि काम न करना ।

अकोल.. वै०-कोहरू (सी० ह०) ।

अखनी.. सी० पँचई ।

अखरा...वै०-वा (सी०); सी० खलियान में रखा नाज या भूसे का निरर्थक अंश ।

अखोर...फ़ा० आख़ोर (लीद) ।

अगत सं० पुं० अगला जन्म,-पिगाडब ।

अगउरा सं० पुं० गन्ने का ऊपरी भाग (सी०)।
अगरदव्व वि० (गाड़ी) जो आगे दबी हो।
अगरदावाद वि० ऊधमवाली (स्थिति),-करब, -उठब,-उठाइब।
अगहर वि० पुं० आगे (फ़सल आदि), स्त्री०-रि।
अगाड़ी...वै०-री (सी० ह०)।
अगिआइब...(सी० ह०) आग में तपाना (वर्तन)।
अगियारि.. वै०-री,-ग्यारि (सी० ह०)।
अङहर सं० पुं० रुई का टुकड़ा (घाव आदि पोंछने को)।
अङुठा.. (सी०) अँगूठे का आभूषण, अनवट।
अङैअङ क्रि० वि० प्रत्येक अंग में; सं०।
अडन्ड़-खड़न्ड़ सं० पुं० व्यर्थ का सामान।
अचेला सं० पुं० साधुओं के पहनने का कपड़ा जिसे धोती की भाँति ऊपर छाती तक लपेट लेते हैं।
अच्छत सं० पुं० बिना टूटा चावल; यक-न, कुछ भी (अन्न) नहीं; सं० अक्षत; दे० आखत।
अच्छर...-रै-एक-एक अक्षर।
अच्छा...(२) हाँ।
अठवारा सं० पुं० आठ दिन का अवसर; यक-, दुइ-, सं० अष्ट।
अठवाल सं० स्त्री० पालकी जो आठ कहारों से उठे।
अठुर . क्रि०-राब, अकड़ना।
अठुली सं० स्त्री० नवांकुरित कुच; केवल इस कहावत में प्रयुक्त "-अठारह आना, खड़ी चूँची बारह आना, लतरी अढ़ाई आना।"
अड़वंग...वै०-ग्गम।
अड़ाव...सी० डारिव (दूसरे अर्थ में)।
अढार सी० ह० बरारी।
अतरि-खोतरि...सी०-रे-दुतरे।
अताताई वि० पुं० अत्याचारी, दुष्ट; सं० आततायी।
अत्तौ वि० बराबर (हिसाब),-करब,-होब; फ़ा० अदा ?
अथक्क...(२) बहुत थका हुआ (सी० ह०)।
अदरइबो क्रि० स० विशेष आदर करना (सी० ह०)।
अद्दा...(२) छोटी बैलगाड़ी जिसमें एक बैल जुतता है (सी० ह० ल०)।
अधटरवा...छोटी टोकरी (सी० ह०)।
अनदाज सं०पुं० अनुमान,-लगाइब, क्रि०-ब, पता लगाना, अनुमान करना, वै०-जा, फ़ा०।
अनवंतु सं० पुं० बिगाड़; सी० ह०; अन+बनब (बनना)।
अनवासब...सं० अनु+वस्।
अन्हिआर...तुल० निहार (जनुनिहार महँ दिनमनि दुरा)-लं०।
अन्होरी...म० घनौरी,-घौ-; सं० घर्म (धूप)।
अपूरी...सं० आ+पूर; निरर्थक अ ?
अमरख सं० पुं० प्रेमहीनता का अनुभव करके अपने ही जनों पर अप्रसन्न होने का भाव; क्रि० -ब, सं० आ+मर्ष,-करब।
अमलोस वि० पुं० कुछ खट्टा;-लागब।
अमावट...सी०-मउट,-त, अँवाउटु।
अमिरथा वि० व्यर्थ,-जाब,-होब, दोनों लिंगों में एक ही रूप।
अमिल सं० पुं० जादू, टोना;-करब; सी०।
अमिलतास...सं० अम्लवेतस्।
अरगासन सं० पुं० गऊ आदि के लिए पहले से निकाला भोजन;-निकारब; सं० अग्र+अशन।
अरबजब क्रि० अ० भिड़ना, लड़ जाना, प्रे० -जाइब।
अरवा ..सी०-रिया।
अरहरि...सी०-र्ही, वि०-हिहा।
अरूस...वै० रुसाहु (सी० ह०)।
अरोरब दे० हलोरब (सी० ह०)।
अलगोजा सं० पुं० दुहरी बाँसुरी,-बजाइब।
अललाब क्रि० अ० जोर-जोर से चिल्लाना; कहा० बिउ देत बाभन अललाय।
अलहिदा दे० इलहिदा।
अवाहि क्रि० वि० गहरा (जोतना), उ० सेव (दे०) दे० आकर।
असरमक्खी वि० सब कुछ खानेवाला, बहुत खानेवाला; सं० सर्वभक्षी।
असीस सं० पुं० आशीर्वाद,-देब,-लेब; क्रि०-ब।
अस्त वि० समाप्त, डूबा,-होब, डूब जाना, वै० -हत।
अहटियाइब क्रि० स० पता लगाना, खोजना; आहट से।
अहथूल वि० स्थूल, निश्चित,-करब,-होब, सं० स्थूल।
अहरी...बाँ० चरही।
अहिवात...सी० ह०-उहात,-ती।

आ

आछत क्रि० वि० रहते हुए, कविता में "अछत।"
आढ़ति...सी० ह० बाधा, अड़चन;-डारब।
आना सं० पुं० डेहरी का मुँह, दे० डेहरा; सं० आनन ?
आमाझोर क्रि० वि० जोर-जोर से (वायु अथवा युद्ध के लिए); सं०आम्र+झोरब, अर्थात् ऐसे वेग से जिसमें आम पेड़ से टूटकर गिरें।
आलम सं० पुं० संसार, बड़ी भीड़, अर०।
आलस सं० पुं० आलस्य, वि०-सी, अरसील (सी० ह० ल०); वै०-रसु (सी० ह० ल०)।
आब-बाब सं० पुं० उलटी-सीधी बात;-बकब।

आवाँ सं० पु० मिट्टी के बर्तनों का ढेर जो एकत्र पकाये जायँ,-लागब,-लगाइब।
आवा-गवा सं० पु० अतिथि, आगंतुक।

इ

इमान...धरम, धरम-।
इहाँ...वै० हियाँ (दे०)।
इहै...जा० ताकर-सो खाना पियना (पद० ४)।

ई

इटा सं० पु० ईंट, स्त्री०-टि, दे० इटकोह।

उ

उअथ..."नजवौं आजु .." के स्थान में "न जनौं .." पढ़ें।
उगिलब क्रि० स० उगलना, इच्छा विरुद्ध देना, प्रे० -लाइब,-लवाइब।
उठम्मू वि० जिसका कोई निश्चित स्थान न हो, जो एक स्थान से उठकर दूसरे को जाता रहे, प्र० -म्हू।
उड़उआ सं० पुं० उड़ान, कहा० तीनि-म तित्तिर नाहीं।
उतन्ना सं० पु० कान के ऊपरी भाग में पहनने का छल्ला।
उताहिल वि० पुं० शीघ्रता करनेवाला; स्त्री० -लि।
उतिन्न वि० मुक्त (ऋण, उपकार आदि से),-होब, -करब; सं० उत्तीर्ण; दे० उरिन।
उतिनब क्रि० स० उतारना, उधेड़ना;-पतिनब, प्रे० -नाइब।
उत्तिम वि० उत्तम।
उद्दिम सं० पुं० काम, परिश्रम; बुरा काम, सं० उद्यम।
उनइब...प्रे०-वनाइब, सं० उत्+नम्।
उपरसंसी सं० स्त्री० रोग जिसमें ऊपर से साँस नीचे आने में कष्ट हो; सं० उपरि+श्वास।
उपरेहित सं० पु० पुरोहित, भा०-ती, सं०।
उलका वि० पु० उतावला, स्त्री०-की, कहा० उलकी धेरिया उलको दमाद, नाचै धेरिया गावै (घाखै) दमाद, सी० ह०।
उलार वि० पुं० (गाड़ी) जो पीछे दबी हो, स्त्री० -रि।
उलारा सं० पु० छोटा-सा गीत जो अंत में गाया जाता है।
उसकिना...सी ह०-जूना।
उसिनब...सी० ह०-स्याइब,-से-।

ऊ

ऊकड़-बाकड . सी० ह०-ख-।
ऊम-डाम सं० पुं० दिखावा, उत्साह,-करब; सं० आडंबर।

ओ

ओंका-बोंका ..सी० ह० अक्कू-बक्कू।
ओंडा.. वै० टावाँ (सी० ह०)।
ओकलाई...वै० उबकाई, उकाई (सी० ह०)।
ओगरब क्रि० अ० धीरे-धीरे चूना, बूँद-बूँद गिरना; प्रे०-गारब, व-, भा० ओगार, वगार।
ओझरी सं० स्त्री० आँत आदि का ढेर,-निकरब, -फेंकब, सी० ह०; पूर्वी अवधी में इसे खेढ़ी (दे०) कहते हैं।
ओझा प्रथम अर्थ में वै० नाउत (सी० ह०)।
ओझाई ..वै० ..नउताय,-ई।
ओदी ..(२) भीगी धोती पहनने से हुई दाद की सी बीमारी (सी० ह० ल०)।
ओनम सं० पु० वर्णमाला,-पढ़ब,-पढ़ाइब; ओनामासी का संक्षिप्त रूप, कहा० ओनामासी धम बाप पढ़े ना हम। (पाँड़े क चुटिया तं, बाप पूतनइ) सी० ह० यह शब्द ओं नमः शिवाय से बना है।
ओनाइब क्रि० स० बोने के पूर्व तैयार खेत को पटेला, सरावनि या हेंगा (दे०) से बराबर कर देना (सी० ह०)।
ओनान...क्रि०-ब, आज्ञा मानना।
ओर...-सीर, एक किनारे से दूसरे किनारे तक।
ओरउनी ..वै०-ती (सी० ह०)।
ओरहन सं० पुं० उलाहना,-देव,-करब, क्रि० वि० -नें, उलाहना देने के लिए।

क

कंगा...वै० (सी० ह०)-मंगा।
कंडउरा...वै० (सी० ह०)-री।
कँडिया...सी० ह० गाली।
कंतरी सं० स्त्री० एक मिठाई जिसे-रिया भी कहते हैं; प० अ०।
कंस...वि० ..कउँखो (सी० ह०), मकसी।
कउँची...वै०-इती (सी० ह०)।
कउँडिल्ला सं० पु० एक जंगली लता और उसका फल,-यस, छोटा सा (बच्चा), कउड़ी से, क्योंकि यह फल कउड़ी जैसा होता है।
कउआ . (२) गले के भीतर का भाग जिसे घाँटी (दे०) भी कहते हैं।
कउरब...वै०-हलब (सी० ह०)।

ककनिआइब...वै० बटिआइब।
कक्कू ..वै०-कुआ (सी०)।
कखउरी ..वै० अड़उली, बद (सी० ह०)
कचहिल वि० पुं० थोड़ा कच्चा, अनुभवहीन, सुस्त।
कछनी...पं० कच्छा।
कजरवटा...कहा० आँखि हइयै न-नवहूँ।
कजरी...सावन भादों का प्रसिद्ध गीत कजली; -गाइब।
कटलासी सं० स्त्री० फटा हुआ आम।
कटार...इसकी दूसरी पंक्ति "कटारी" शब्द से संबद्ध है।
कटारि सं० स्त्री० एक जंगली फल जिसके पेड़ में बहुत काँटे होते हैं।
कठचइठी सं० स्त्री० पेचीदा हिसाब या पहेली जो बिना लिखे "बैठा" लिया जाय, काठ + बइठब (काठ की भांति बैठने या लगनेवाला)।
कटौ-कट्ट सं० पुं० कलह;-करब,-होब।
कठुला..-पहुँची, दो गहने जो बच्चे पहनते हैं।
कठेठ...वै०-ठा,-ठी।
कड़बड़ाब क्रि० अ० शोर करना, शिकायत करना।
कड़े-कडे...वै० हड़ा-हड़ा,-ड़े- (सी० ह०)।
कढ़ायन वि० अनुपयोगी, व्यर्थ (व्यक्ति), वै०-ल (काढ़ब से=निकाला हुआ)।
कतवार...सी० ह० पत-, पतावरि।
कथरी...कहा० केकर-केकर लेई नांव, कथरी ओढ़े सज्जै गांव (व० फै०), बड़े जाड़ बड़े पाला, कथरी ओढ़े मरिगे लाला (सी० ह०)।
कदराब...तुल० तात प्रेम बस जनि कदराहू (रा० अ०)।
कनइल...प्र० कंडैल (दे०)।
कनगुर सं० पुं० कान के नीचे की फुड़िया जिसे रवि तथा मङ्गलवार को कायस्थ के कलम से आँकाते या गोंठ्ते हैं; सी० ह० ल०।
कनट्रउल सं० पुं० खाद्य द्रव्य, वस्त्र आदि का नियंत्रण, अं० कंट्रोल।
कनापोटी सं० पुं० कनकौआ नामक एक घास जिसके पत्तों की पकौड़ी बनती है, वै० का-।
कन्हावरि ..सु० रा० ब० ह० साराजोरी, सी० लहमुजवा।
कबड्डी सं० स्त्री० प्रसिद्ध खेल, सी० ह०, ग-।
कबिरा...प्र० दास कबीरा (दास कबीरा कहि गये ..)।
कबुली...वै०-लहिया।
कबूतर...प्र०-तुत्तर।
कमान...तैयार किया हुआ खेत।
कमासुत वै०-(ह०)-मे-।
कमोरा...वै० करसा,-सी (सं० कलश), मटना, -नी (सी० ह०)।

करइली दे० करैला; यह शब्द सावन के गीतों में यों ही प्रयुक्त होता है।
करकच्ची सं० स्त्री० एक कीड़ा जो प्रायः गीली भूमि में रहता है।
करकर वि० पुं० कुछ हृष्ट पुष्ट; प्र०-ड-ड़, भा० -ई।
करकराब क्रि० अ० जोर-जोर से बोलना; लड़ना।
करकोलब क्रि० स० खोखला कर देना, हाथ से खोद लेना; सं० कर (हाथ)?
करजा . -काढ़ब, ऋण लेना;-कुआम, किसी प्रकार प्राप्त किया हुआ धन।
करतब सं० पुं० पेंच; तरकीब, चालाकी। वि०-बी, -ब्यी; सं० कर्तव्य।
करम सं० पुं०;काम, मृतक की तेरहवीं; किरिया-, -करब,-होब।
करवँट सं० पुं० करवट,-लेब, कासी-।
करसी सं० स्त्री० कंडे का टूटा बारीक भाग; नीक-टारब, अच्छे भाग्य का होना, पुं०-सा, त्रि० -सिहा।
करा...सी० ह० पूँजा।
करिन्दा सं० पुं० कारिंदा, प्रतिनिधि; भा०-न्दई, फा० कारिंदः।
करिया...-करिंगन, खूब काला-काला।
करुआसन वि० कटु, कर्णकटु,-लागब,-करब, सं० कटु।
करू वि० कड़ुआ;-तेल,-लागब; सं० कटु, क्रि० -रुआब।
करेज...-माठा करब, परेशान करना।
करेर...-करब, तक़ाज़ा करना, क्रि० वि०- रें, जोर से।
करब क्रि० स० रगड़ना, पीसना (दांत), दे० दँत-करौं।
कलक ..निराशा, दुःख, वि० सा० "पर इक कलक होति बड़ि ताता, कुसमय भये राम बिनु भ्राता" (पृ० २७७)।
कलिकानि सं० स्त्री० दुःखदायी स्थिति;-करब, परेशान करना।
कल्ला...सं० कलह (तीसरे अर्थ में)।
कल्लें क्रि० वि० धीरे से,-कल्लें; धीरे धीरे।
कवरा...-राही करब, इधर उधर माँग कर खाते रहना।
कसीदा सं० पु० बेल बूटा,-काढ़ब; फा० कशीदन (खींचना)।
कातरि...कतरी, कौं-।
कानागोई सं० पुं० कानूनगो, वै०-नगोइ।
कानाफूसी सं० स्त्री० कान में कही गुप्त बात, -करब, सं० कर्ण + फुसफुसाब (दे०)।
किंगिरी...कहा० अपनी-अपनी-अपना अपना राग (सी० ह०)।

किनराब क्रि० अ० किनारे जाना, निकट आना; प्रे०-राइब।
किनारा सं० पुं० किनारा, स्त्री०-री; वै०-र, -काटब, अलग हो जाना,-रें, यक-रीदार, किनारी सहित (कपड़ा; धोती)।
किलहँटा सं० पुं० मैना जाति का पक्षी, स्त्री०-टी, अवाचा-होब, किंकर्तव्य किमूढ़ हो जाना।
किसमति सं० स्त्री० भाग्य, नाई के सामान का छोटा बक्स,-दार, भाग्यशाली।
किसमिस सं० स्त्री० किशमिश।
किसिम सं० स्त्री० प्रकार,-किसिम कै, कई प्रकार के।
किसुली सं० स्त्री० गुठली, यक-, दुइ-, एक पेड़, दो पेड़ (आम), वै० जिबली।
कुकुरउँछी सं० स्त्री० कुत्तों को काटनेवाली मक्खी, सं० कुक्कुरमक्षिका।
कुकुर-झौंझौं सं० स्त्री० झिकझिक,-करब, -होब।
कुकुसब...वै० पकु-।
कुचं सं० पुं० एँड़ी के ऊपर की नस, कहा० कुच कट खटिया बतकट जोय।
कुट्ट...वै० खु-(गों०), खुट्टी (सी०)।
कुढ़ सं० पुं० हल का वह भाग जो जोतनेवाला हाथ से पकड़ता है, वै०-रह,-फार।
कुदिन सं० पुं० दुर्भाग्य का दिन, वर्षा का वह दिन जब पानी के मारे आना जाना न हो सके,-करब, -घेरब।
कनमुनाब क्रि० अ० जग जाना, होश में आना।
कुँनाई (२) बुरादा (गों०)।
कुँबेरी बेरिया सं० स्त्री० गोधूली, इसे कहीं कहीं सँझवतिया और गोरुवारी भी कहते हैं, सी० ह०।
कुरइब...मु० झट से खूब दे देना, बहुत देना (द्रव्य)।
कुरकुर वि० पुं० चुरमुरा, स्त्री०-रि, क्रि०-राब।
कुरब क्रि० अ० कोसना; दाँत-, दाँत पीसना, (२) हंस या सारस का बोलना; वै० करंब (पहले अर्थ में)।
कुल...-खूँट, कुल परंपरा।
कूटि...वै० कूठ (सी०)।
केतत...प्र०-त्तत।
केवइयाँ सं० पं० एक पौदा और उसका फल जो आग के जले पर दवा का काम देता है, इसके पत्तों का साग भी खाते हैं।
कोंहरगड्ढा सं० पुं० वह स्थान जहाँ से कुम्हार अपने बर्तन बनाने की मिट्टी ले,-क माटी, ऐसे स्थान की मिट्टी, अच्छी मिट्टी, सं० कुंभकार+ गड्ढा।
कोइआँ सं० पुं० कुमुदिनी; मुँह-होब, चेहरा फीका पड़ जाना; वै०-ईं।

कोइँडार सं० पुं० कोइँरी (दे०) का काम, खेत आदि,-करब,-होब।
कोम्हिलाब क्रि० अ० कुम्हलाना, मुँह-, मुँह सूखना।
कोरचा...सी० ह०-ल-।

ख

खँचिआ सं० स्त्री० छोटी टोकरी, लघु० खँचोला, -चुली, दे० खाँची,-चा।
खँड़खैंचा सं० पुं० खंजन, वै०-रैचा, खिरखिदा, सी० ह०; दे० खिड़रिचि।
खटमिट्ठा वि० पुं० कुछ खट्टा, कुछ मीठा, स्त्री० -ट्ठी।
खदुआ-बरहना सं० पुं० कोई भी साधारण व्यक्ति, फा० बरहनः (नंगा)।
खबीस..."किलकैं खबीस दसबीस आसपास बैल बेभ्रत देवाल मौन कौन को बिगारौगे ?"-बेनी कवि।
खभार सं० पु० चिंता, खलबली,-मँ परब, सुनि रावन मन परेउ खभारा-वि० सा० (पृ० ९७८)।
खर ..-ओखधवा, जंगली जड़ी बूटी की दवा।
खरर-खरर क्रि० वि० खर खर आवाज के साथ, -खजुआइब।
खराई...सी० ह०-फूटब, नाक से खून गिरना।
खरिआ ..(२) गँजिआ (सी० ह०) दे०, क्रि० -आइब, कमा लेना, बटोर लेना।
खरीता ..सी० ह०-लित्ता।
खर्रा सं० पुं० लंबा पत्र,-लिखब,-पठइब।
खलड़ा...सी० ह० ग्वाँड़ा।
खवही.. सी० ह० ल० नजर।
खारुआँ . वँ०-याँ; सं० खदिरक।
खियाइब क्रि० स० खिलाना,-पियाइब, खलाना पिलाना, खाब-, वै०-उब।
खुटुर-खुटुर क्रि० वि० खुट खुट आवाज के साथ।
खुदुर-बुदुर सं० पुं० छोटा मोटा काम,-करब।
खुहुर सं० पुं० कचड़ा, खर-, घास आदि का टुकड़ा।
खुरिहारब क्रि० स० खुर से खुरचना, मिट्टी निकालना, सं० खुर।
खूँटा ..यक खूँटी बाँस, बाँस का एक पेड़।
खड़ सं० पु० गन्ना, ईख, सं० इक्षु→ईखि→उखुड़ि (दे०)→खुड़ि→खूँड दे० ईखि; यह शब्द केवल सी० ह० में बोला जाता है।
खून...-खच्चर,-खराबा, मार-काट,-होब,-करब।
खूसट ..इस नाम का एक पक्षी होता है जो उल्लू का एक प्रकार है।
खेलब...-खाब, मौज करना।

खोङ...खोङिल-वाङिल, टेढ़ा-मेढ़ा, टूटा-फूटा; यह मनुष्यों तथा पशुओं के लिए भी प्रयुक्त होता है।

ग

गगनधूरि सं० स्त्री० भुइँफोर (दे०) की राख जो उसे सुखा कर बनाई और जले की दवा के काम में लाई जाती है. सी० ह० जहाँ भुइँफोर को धरती का फूल कहते हैं।
गँड़-उघरा वि० पुं० बेशरम, स्त्री०-री, गाँड़+उघार (खुला), जिस की गांड़ खुली हो; प्राय: गाली के लिए प्रयुक्त।
गँड-खोदउब्बलि सं० स्त्री० छिद्रान्वेषण; एक दूसरे की गांड़ खोदने की आदत, मनोमालिन्य; -करब।
गँड़-खोल्ला वि० पुं० निर्लज्ज; जिसके गुप्तांग खुले हों; भा०-लई।
गज्झा...वि०-उमेदार, बढ़िया (सी० ह०)।
गड़िपेलई सं० स्त्री० दूसरे की बात न मानने की आदत;-करब; गांड़+पेलब (दे०)।
गदोरी...सी० ह०-देरिया।
गन्हौरा...वै०-न्हउरा।
गबच्चू...वै०-द्दू (-द्द नहीं)।
गरदबवा सं० पुं० बीमारी जिसमें पशुओं का गला सूज जाता है (सी० ह०), गर+दावब (दे०)।
गरमसब क्रि० अ० (मौसम का) गर्म होना।
गरह...-दसा, ग्रहों की स्थिति, भाग्य।
गलफा ..सं० जल्प।
गल्लई सं० स्त्री० अधिआ (दे०) पर देने की प्रणाली,-पर देब।
गवँ सं० स्त्री० दाँव, मौका,-ताकब,-पाइब, गवँ-, धीरे धीरे, चतुरतापूर्वक।
गहदी...सी० ह० (२) हथेली के किनारे का ऊँचा भाग।
गाँव...-गिरावँ।
गाँस ..डाँट-, डाँट फटकार।
गाँसब ..सीमित करना।
गाटा...सी० ह० गईठा, गदर-गहना।
गाड़ब क्रि० स० गाड़ना; प्रे० गड़ाइब।
गाड़ा ..-करब,-ढारब (जादू डालना) सी० ह०, -बंदी, रास्ते रोक कर आक्रमण करने का क्रम; वै० गाँ-।
गादर...वै० खा-(सी० ह०)।
गिंजाई ..(२) लिरजी बोदी (दे०) सी० ह० ल।
गिमटी सं० स्त्री० रेल की लाइन पर बना कमरा जिसमें चौकीदार रहे, वै० गु-।
गिरँव सं० स्त्री० गिरवीं,-धरब,-होब।
गिरई सं० स्त्री० एक छोटी मछली।
गिरगिटान सं० पुं० गिरगिट;-चढ़ब, दुर्भाग्य घेरना।
गिरब क्रि० अ० गिरब, चूक जाना; प्रे०-राइब, -रवाइब।
गिलटी सं० स्त्री० गिल्टी,-निकरब,-फूटब, वि० -टिहा।
गुच्चा वि० पुं० छोटा, मोटा और मजबूत, स्त्री० -ची।
गुमेचब क्रि० स० लपेटना, प्रे०-चवाइब।
गुर...क्रि०-बधब, पकने लगना (फल का),-गोंइठा होब, सब काम बिगड़ जाना।
गुरगा सं० पुं० छोटा बच्चा, संदेश वाहक, दरिद्र व्यक्ति; फा० गुर्गः ?
गुरगुराब क्रि० अ० काँपना।
गुरफब क्रि० अ० डांटना, चिल्लाना।
गुरम्ही सं० स्त्री० फोड़े की भांति की गोल गांठ; -परब; क्रि०-म्हिआब।
गुर्चि सं० स्त्री० प्रसिद्ध औषधि जिसकी बेल चलती है क्रि०-आब, गांठ पड़ जाना, सं० गुडुचि।
गुर्राब क्रि० अ० गुर्राना।
गुल्ली...(२) गले में पहनने का चांदी या सोने का आभूषण।
गूँड़ा सं० पुं० घोड़े की पीठ पर रखने का सामान जो जीन के नीचे रहता है; वै० सुँड़ि का (सी० ह० ल०)।
गेंगटा सं० पुं० केकड़ा (सी० ह०)।
गेरावँ...वै० ..-रैयां, गरियैयां (सी० ह०)।
गोंयड़ सं० पुं० गांव का पड़ोस, क्रि० वि०-ड़े; कहा० जब-ड़े आय बरात त समधिनि के लागि हगासि।
गोजई सं० स्त्री० गेहूँ और जौ का मिश्रण; सं० गोधूम+यव।
गोड़वारी सं० स्त्री० खाट का वह भाग जो पैर की ओर रहे, उल० मुड़वारी।
गोदा सी० ह० गदिया।
गोरसी सं० स्त्री० अँगीठी जिस पर दूध गरम हो, वै० ग्व-।
गोसयाँ सं० पुं० मालिक, गर-, उत्तरदायी व्यक्ति; स्त्री०-इनि, सं० गोस्वामी।
गोसाई ..स्त्री०-सांइनि।
गोहिया...वै०...वर्ते (सी० ह०) (२) एक जाति जो पत्थर, रस्सी आदि का काम करती है (सी० ह०)।

घ

घंता-मंता ..सी० ह० खंती-मंती।
घन...(२) सं० पुं० लुहार का घन।
घवदि ..प्र०-दा (सी० ह०),-रि (ह०)।
घाता ..सी० ह०-ता, रुँक (ह०)।
घिग्घी सं० स्त्री० गले के रुँध जाने की स्थिति, -बन्हब।

घुघुआ सं० पुं० उल्लू, वै०-घ्घू।
घुच्ची.. सी० ह० टेउँटी।
घुड़कव.. भा०-की।
घुमची सं० स्त्री० गुंजा।
घंटा वै० घैंटा।
घोड़तैयाँ सं० पुं० किसी बच्चे या व्यक्ति को घोडे की भाँति पीठ पर ले चलने की स्थिति,-लेब,-लादब, वै०-ढैयाँ, सी० ह० कँधैयाँ, सं० घोटक।
चुहिल वि० उत्साहवर्धक (स्थान, वायुमंडल); -लागब।
चूर . वै० चूल,-बैटब,-बइठाइब।
चेफ...वै०-चिफुरी, चीफुर (लख०)।
चोंकरब...दे० भोंकरब।
चोंड़ा.. सी० ह० चूहा।
चोकर.. कहा० जे खाय चुनी चोकर मोटाय होय धोकर।

च

चउरिआर वि० पुं० जो स्वाद में कच्चे चावल की भाँति हो;-लागब, 'चाउर' से।
चउरेठा सं० पुं० चावल का आटा।
चनइनी सं० स्त्री० प्रसिद्ध लोकगीत और उसकी नायिका जिसे चनवा या चँदवा भी कहते हैं। यह गीत कथानक के रूप में कई दिन तक गाया जाता है और इसके नायक लोरिक के नाम पर इसे भोजपुरी में लोरिकायन भी कहते हैं, वै०-नैनी।
चभका सं० पुं० पशुओं के मुँह की एक बीमारी (सी० ह०)।
चवन्हा सं० पुं० दृष्टि, हिम्मत,-खुलब।
चवन्हिआब क्रि० अ० चकाचौंध में पड़ जाना, वै० -उ-।
चसका...-लागब,-परब।
चिउँटहरि सं० स्त्री० चींटों के रहने का स्थान।
चिउँटा सं०पुं० चींटा;-माटा, स्त्री०-टी, टिआ चाल, धीरे-धीरे।
चिकनाइब क्रि०स० बराबर करना, चिकना बनाना; मीठी बातों से दूसरों को भुलावा देना; सं० चिक्कण।
चिक्कन वि० पुं० चिकना, स्त्री०-नि,-मुक्कन, सुंदर, भा०-कनई।
चिनगी सं० स्त्री० चिनगारी।
चिरई...-चिरगुन,-चुनगुन (लख०) छोटे-छोटे जीव।
चिरउरी...कहा० कंबर पर जब परै पिछौरी जाड़ बेचारा करै चिरउरी।
चिरकब क्रि० स० जरा छिड़क देना, प्रे०-काइब।
चिरुआ...(२) चुल्लू, यक-,-भर।
चिल्हकब क्रि० अ० रह-रह कर दर्द करना।
चीजु...-बिक्खय, सामान।
चीलर...वै० चिलुआ (सी० ह०)।
चील्हि...वै० चिल्हरि (सी० ह०)।
चुटकी...हँसी,-लेब, थोड़ा आटा, चावल आदि, -माँगब,-देब।
चुनब...मु० आराम से खाना।
चुन्ना सं० पुं० पेट का पतला सफेद कीड़ा,-परब, -काटब।
चुम्मा...कहा० पहिलें-ओंठ टेढ़।

छ

छंटा.. कहा० छंटा घोड़ी सूद क जोय पहिलेइ बेंत म चउपट होय।
छछुन्नरा सं० पुं० झूठा अपयश,-छोड़ब, -छूटब।
छछन्न सं० पुं० चालाकी; वि०-न्नी;-आइब,-करब, सं० छंद।
छउँका सं० पुं० प्यास की अतृप्ति,-लागब।
छछुन्नरि सं० स्त्री० छछूँदर, कहा० पहिरि ओढ़ि कै सुन्नरि भईं छोरि लिहिस-भईं।
छठई सं० स्त्री० छठवाँ भाग, सं० षष्ठ।
छड़बढुआ वि० पुं० जो छोड़ देने से खराब हो गया हो, स्त्री०-ई।
छत्तुर सं० पुं० देवी देवताओं को चढाने की छोटी चाँदी आदि की छतरी; सं० छत्र।
छन्न सं० पुं० घी, तेल या पानी के गरम बर्तन पर गिरने का शब्द,-से, छना-।
छपछप.. मुँह-, पन-, मुंह या ऊपर तक (भरा पानी आदि)।
छरछब दे० झरछहा।
छाडन सं०पु० त्याग की हुई वस्तु, अपवाद, लीन-, परंपरागत बातें।
छाडू सं० पुं० जीभ का प्रसिद्ध रोग;-होब।
छिउँकाब क्रि० अ० डाल का चींटों द्वारा रुग्ण हो जाना, वै०-कियाब।
छिउँकी स० स्त्री० एक प्रकार की चींटी।
छिछिला...(२) सं० पुं० आम के छिले हुए टुकड़ों का अचार,-डारब; पहले अर्थ में स्त्री०-ली, दे० छीछिल।
छिटकब.. बिटकब।
छिनरझप्प स० पुं० नखरा, दोनो ओर की बातें, -करब,-आइब।
छिबुलकी...आ०-कौ।
छिरकब...छुअब,-दान पुण्य करना।
छुच्छा सं० पुं० नरकुल (दे०), स्त्री०-च्छी, नाक का एक आभूषण।
छुछुआब क्रि० अ० अतृप्त होकर मारे-मारे फिरना, दु:खी रहना।
छुटब क्रि०अ० छूटना, प्र० छू-, प्रे० छोड़ब,-ड़ाइब, -ड़वाइब।

छुटहर वि० पुं० जो पति या पत्नी से बहुत दिन तक अलग रहा हो; स्त्री०-रि ।
छूँछ.. प्र०-छुँच्छै;-मूँछ ।
छूटन सं० पुं० छूटा हुआ भाग,-छाटन, अवशिष्ट, उच्छिष्ट ।
छोकलाई सं० स्त्री० छिलका ।
छोडव . -छाड़व ।
छोहारा सं० पुं० छुहारा ।
छौना.. प्रिय पुत्र, तुल० ।

ज

जठेर सं० पुं० बड़ा भाई, व्यं० में प्रयुक्त ।
जडहन.. वि० नाऊ ही ।
जव...-तव, (अब-तव) लागव, मरणासन्न होना; सं० यदा ।
जवोर वि० पुं० प्रभावशाली, हृष्ट-पुष्ट, स्त्री०-रि, दे० जाविर ।
जमुना सं० स्त्री० यमुना,-मैया,-जी, सं० ।
जमोग सं० पुं० आश्वासन, जमानत;-देव, क्रि० -व ।
जमोगा सं० पुं० बच्चों की एक बीमारी,-धरव ।
जरखुराही...वि०-रहा,-ही ।
जरता सं० पुं० वह अंश जो जल जाय,-जाब, -निकरव ।
जरि...-पेवना, आदि, मूल ।
जरीवाना...वै०-रि, जुल-, फा० जुर्म ।
जरूर . प्र०-रै,-लागव,-परब ।
जलै क्रि० वि० जव तक, वै० जौलै ।
जवाइनि सं० स्त्री० अजवायन ।
जहता सं० पुं० जस्ता ।
जहो-विहो वि० छिन्नभिन्न;-होव,-करव ।
जाँयड़ सं० पुं० (पशु की) संतति ।
जाखि...सी० चाक जो कंडी के रूप में होता है, क्रि० चाक्व, अन्न की राशि पर उलटे खाली टोकरे से थापना ।
जागा सं० स्त्री० भीख माँगनेवाली एक जाति जिसके पुरुष प्रायः प्रशंसा के गीत सुनाते हैं । सी० ह० ।
जाड . पाला, कहा० बड़े जाड़ बड़े पाला कथरी ओढ़े मरिगे लाला ।
जावा...सी० ह० मुसक्का ।
जायँ.. -देजायँ,-वेजाहिं ।
जायल...दे० हायल ।
जायाँ . अर० जायः ।
जालिआ...अर० जयल ।
जिउ.. लुकवाइव ।
जितली सं० स्त्री० जीत की स्थिति,-चढव, सं० जी ।
जिनि क्रि० वि० मत ।
जिरवानी...सं० जीरक ।
जुआँर सं० स्त्री० बैलगाडी का जुआठा(दे०) सी० ह० ।
जुइ.. सी० ह० हेव ।
जुगुर-जुगुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (जलना), कहा० -दिया बरै मूस लैगा वाती ।
जुज वि० थोड़ा, थोड़ा सा (काम, भोजन) सी० ह०; फा० जुज़ ।
जुड़पित्ती सं० स्त्री० ठंडक के कारण शरीर पर पड़े दाने,-होव,-उछरव ।
जुड़वनिया सं० स्त्री० ठंडक, ठंड का आनंद;-लेब, -पाइब ।
जुरका...बूड़त कै-, अंतिम सहारा ।
जुरति.. वि०-ती, हिम्मती, अर० ।
जुलुम...जोर-, अधिकार ।
जुवान...जहील, हृष्ट-पुष्ट ।
जूड़...जूड़े-जूड़े, ठंडक में ।
जेठीमधु...सी० ह० मौरेठी ।
जोगाड़ सं० पुं० तरकीब, उपक्रम;-करब,-लगाइब, सं० योज् ।
जोगें क्रि० वि० योग्य,-के-,-के उपयुक्त; सं० ।
जोठा...सी० ह० माची ।
जोतानि.. सी० ह० वइँठि ।
जोर...तोर, प्र०-ड, वि०-दार ।
जोरती सं० स्त्री० गणना, मुजरा,-करव,-होब ।
जोरव...पानी जोराइव, पानी चलाने का प्रबंध करना बीरा-, पान लगाना ।
जोलहा...सी० ह०-लाह,-हिनि ।
जोवा...सी० ह० ढेवढ़ा, सवैया ।
जोसन सं० पुं० बाँह पर पहनने का एक आभूषण, -बाजू ।
जौलै क्रि० वि० जब तक ।

झ

झँकाव क्रि० अ० बुरी गंध देना ।
झँकोर ..क्रि०-ब ।
झँटिहा.. वै०-टु-(मूर्ख) सी० ह०
झकझोरव क्रि० स० पकड़कर हिलाना; वै०-ग-।
झक्क सं० पुं० सनक, वि०-क्की, वै०-क्कि ।
झड़ी...वर्षा या दस्तों ..;-होव ।
झनझन सं० पुं० झन की आवाज, प्र०-ना-अ, क्रि०-नाव ।
झराव क्रि० अ० उत्कट गंध देना ।
झापस सं० पुं० बादल घिरे रहने और पानी धीरे धीरे बरसने का मौसम;-करव,-होव ।
झाम...वहू, एक काल्पनिक स्त्री जिसके संबंध में कहावत है—सदा क गोरसही झाम वहू !
झारव...फटकारना,-झूरव,-पोंछव ।
झिटकउआ वि० पुं० चोरी का (माल) ।

झीपब क्रि० स० उड़ा देना।
झोंखरी वि० स्त्री० गंदे बालोंवाली स्त्री।
झोर सं० पुं० झोल, तरकारी, मछली आदि का मसालेदार रसा।

ट

टडवरिहा सं० पुं० बैलों के व्यापार करनेवाली एक जाति का व्यक्ति।
टाँड सं० पुं०.. (२) लकड़ी का छोटा आला।
टाँडे सं० पुं० अयोध्या के पास का एक व्यापारिक केन्द्र, कहा० भैया आये टाँड़े से गुर पिउ काढ़ैं फाँड़े से।
टाँसब...सी० ह० रांजव, रँजाइब।
टाठ वि० पुं० कड़ा (पाग, हलुआ आदि), स्त्री० -ठि,-ठी (दाल आदि) सी० ह०।
टिउआ...सं० टिप्पण।
टींटा स० पुं० स्त्रियों का कोई गुप्तांग; गाली में प्रयुक्त शब्द, वै०-गा,-डा।
टींड़ी सं० स्त्री० टिड्डी।
टीम-टाम सं० पुं० ठाट-बाट।
टीहा...वै० ठी-।
टेढ़...-सोझ,-मेढ़, सौ टेढ़े क टेढ़, बहुत ही टेढ़ा।

ठ

ठठनगोपाल ..सी० ह० शोहदा।
ठठऋब...वै० घ-।
ठेंका सं० पु० कुदाल या फावड़े का बेंट।
ठेंगा . (२) कुछ नहीं,-लेब,-पाइब।
ठेउका सं० पुं० सहायता के लिए लकड़ी, स्त्री० -की, पानी को ऊपर चढ़ाने के लिए खोदा दूसरा गड्ढा;-लगाइब।
ठेकहरब क्रि० स० खूब पीटना, प्रे०-राइव।
ठोर्रा...र्री, छोटी मधुमक्खी।

ड

डँडवरिहा बाबा सं० पुं० एक काल्पनिक भूत जिसके मुँह से आग निकलती रहती है; सी०ह०, वै० भौंतेरवा, दे० धोकरकसा।
डँड़िआ सं० स्त्री० गांव से बाहर का मैदान।
डखुरहा ..भा०-राही (करब)।
डर ..-पोकना,-नी।
डराइब क्रि० स० डारब (दे०) का प्रे०।
डहकब . (२) जोर-जोर से बोलना (विशेषत: बैल का), सी० ह०।
डहला सं० पु० छोटा सा गड्ढा, वै०-ल (सी० ह०)।
डाँड़.. क्रि०-डिआइब, इस प्रकार सीना (दूसरे अर्थ में), दंड के अर्थ में,-बान्ह।
डाढा.. (२) हींग की सूखी छौंक।
डावी सं० स्त्री० हलवाई का लकडीवाला करछुला, सी० ह०, दे० दबिला।
डाभ सं० पुं० कुश, स० दर्भ; सी० ह०।
डाल...चङरिया (सी० ह० ल०)।
डिंगारा सं० पुं० ततैया, दे० हाड़ा, सी० ह०।
डिंभ सं० पुं० आडंबर, वि०-भी (सी० ह०)।
डिउहार...सी० ह० मुहँहार।
डिल्ल...सी० ह० ठिल्ला।
डिहवन्हई सं० स्त्री० डीह या गाँव के देवताओं को बांधने की पूजा,-करव; वै०-न्हाई।
डिहुला सं० पुं० एक प्रसिद्ध धान।
डीभी सं० स्त्री० खेत में जमे नये अंकुर, कहा० पैरा (दे०) से-नाहीं होत।
डुँहुही...वै० ढुंढुआ (सी० ह०)।
डुभकी.. वै०-कउरी (जा०)।
डुहकब...वै० रु-।
डूम-डाम सी० ह० ताम-झाम।
डेरा.. -उखरब,-उखारब।
डोकवा सं० पुं० तेल तथा उबटन रखने का लकड़ी का डिब्बा, स्त्री०-किया, दे० अढ़िया।
डोरिआ सं० पुं० प्रसिद्ध कपड़ा।

ढ

ढकेलब क्रि० स० ढकेलना, मु० खूब खाना, प्रे० -लवाइब।
ढेलवाँसि सी० ह० गोंफनी।
ढेपुनी.. व्र० ढेंप,-पी।
ढोलनी सं० स्त्री० गले में पहनने की गुल्ली (दे०) सी० ह०।

त

तउला सं० पुं० तौलनेवाला, जिसका पेशा बाजार में तौल करना हो।
तकाइब मु० दूर चले जाना, भाग जाना।
तक्खा वि० जो तिरछा ताके; स्त्री०-क्खी, सी० ह० दे० भँवक्खा।
तडतावड क्रि० वि० एक के बाद दूसरा, तुरन्त ही।
तडपी-तडपा सं० पुं० गर्ज-गर्ज कर बोलने की आवाज;-होब,-करब।
तताव क्रि० अ० गर्म होना (सी० ह०) सं० तप्त।
तनतनाव क्रि० क्रोध भरी बातें करना।
तनब...-विनव, दौड़-धूप करना।
तनुखाह सं० स्त्री० वेतन।

तन्नु सं० स्त्री० आवश्यक्ता,-लागव,-परव ।
तपोभूमि...प्र०-भूम्मि,-म्हि ।
तबीज...अर० तावीज़ ।
तमाकू...सं० तमाखु ।
तमून...अर० ताऊन ।
तय ..-तमाम, समाप्त, ठीक।
तरकी ..दे० कनफूल, प्र० तरौना ।
तरकुल...सं० ताल ।
तरपासब क्रि० स० डाँटना; गाँसब-, फटकारना।
तरहँत वि० कम, नीचे;-परव,-होव, हलका पड़ना, क्रि० वि०-तें,दे० तर; सं० तल ।
तलफव.. तड़पना ।
तले क्रि० वि० तब तक वै०-लै, प्र०-ल्लै,-ल्ले ।
तवँकब क्रि० अ० गर्मी में ताव खा जाना; प्रे० -काइब, वै०-ऊ-।
तवर ..पूरे-से, भली भाँति, अर० ।
तवहीन सं० स्त्री० अपमान,-करब,-होव; वै०-नी, अर०; दे० तौ-।
तवान...फ़ा० तावान ।
तसफीहा सं० पुं० निश्चय,-करब,-होव,-देव, फ़ा० -हः ।
तहदिल वि० निश्चित,-होव,-करब; क्रि० वि०-लें, निश्चित होकर, मा०-ई ।
तहबह वि० शांत (झगड़ा, व्यक्ति आदि),-करब, -होव ।
तहलका सं० पुं० घबराहट, अशांति;-मचब, -मचाइब ।
तात...कान-करब, धमकाना, सावधान करना, (२) प्रिय; तुल० प्राय: संयो० में प्रयुक्त।
ताव.. वि० तवगर, जिसे आवश्यकता हो,-बावला (होव) घबराया हुआ, फ़ा० तहो-बाला (ऊपर नीचे, अस्तव्यस्त) ।
तिरकोना वि० पुं० जिसमें तीन कोने हों, स्त्री० -नी, वै० ति- ।
तिरछा...-कोनी, जो कोनों की ओर तिरछा हो ।
तिरपुछ वि० पुं० थोड़ा सा तिरछा, स्त्री०-छि ।
तिरिन सं० स्त्री० तृण, कुछ भी, यक-नाहीं, कुछ भी नहीं ।
तिलंगा सं० पुं० सिपाही; यह शब्द शायद ईस्ट इंडिया कंपनी के इतिहास की स्मृति है, क्योंकि तेलंगी भाषा-भाषी सिपाही उस कंपनी ने उत्तर भारत को भेजे होंगे ।
तिलक.. -फलदान ।
तिवराइब क्रि० स० मटकाना (सी० ह०) वै० -ऊ-।
तिहाई...-पात, अन्न की उपज ।
तीकटि सं० स्त्री० प्राय: "तीन-" रूप में प्रयुक्त; कहा० तीन-महा तीकट, अर्थात् तीन व्यक्ति एक साथ जायँ तो कार्य ठीक न हो ।
तीव...मा० तिहाई ।
तुक्का ..कहा० लागै त तीर नाहीं तुक्का ।
तुम्मी...सी० ह० तोंबी ।
तुरही...वै०-ड़ु-; अर० तूर ।
तुरुक . कहा० तिल गुर भोजन-मिताई, आगे मीत पाछे पछिताई ।
तेल.. तेलवानि (सी० ह०-चारु) ।
तोबा...अर० तोबः ।

थ

थनिहा सं० स्त्री० पेड़ (बाँस का), यक-, दुइ-, दे० खूँटा,-टी, सी० ह० ।
थवना...सी० ह० नेड़या ।
थाल्हा सं० पुं० छोटे पौदे के चारों ओर बनाया घेरा ।
थुवा . छिआ-, फ़ज़ीता ।
थोरि.. अपमान, हेठी ।

द

दँतकरौं सं० स्त्री० ईर्ष्या, दाँत पीसने की बात; दांत+करंव (दे०) ।
दँवव क्रि० अ० डट जाना; प्रे०-ताइब, (लकड़ी, डंडा आदि) दबाना ।
दकहिआ क्रि० वि० न जाने कब, प्र० दौ-।
दगधि सं० स्त्री० (शव) जलाने की क्रिया,-देव, सं० दह् ।
दगाइव क्रि० स० दागव का प्रे० ।
दरसन...कहा० नाँव बड़ा-थोर ।
दरि...क्रि०-याव, अपने लिये किसी प्रकार स्थान बनाकर खड़ा होना या बैठना; फ़ा० दर (स्थान) ।
दर्रा.. सी० ह०-रवा ।
दराइब..."मनुआ-दर्र" कहकर बड़हार (दे०) के दिन वर के वर पर स्त्रियाँ एक दूसरे को दर्राती हैं ।
दल...-बादर, बड़ा शामियाना ।
दवँरी...सी० ह० मँड़नी ।
दस्तावेज...दस्त+आवेख्तन (लिखना) ।
दहाइब...खापब (दे०)-किसी प्रकार काम चलाना (व्यय का) ।
दाइँव.. सी० ह० माड़ब ।
दाखिल अर० दख़्ल ।
दादनी सं० स्त्री० सरकारी सहायता जो अफीम की खेती आदि के लिए किसानों को मिलती थी ।
दाहिन वि० दायाँ, बावँ-, दाहिना दायाँ,-दयाल, परम कृपालु,-चलब, (बैल का) दहिने ओर चलना; सं० दक्षिण ।

दिउँका...सी० ह०-यँक।
दिउठी सी० ह०-यट,-टा।
दिउल सं० पुं० चने की दाल, वै० दील (सी० ह०) स्त्री०-ली, चने की भुनी दाल।
दिउली . वै०-अ-, सं० दीप।
दिक्क...सी० ह० क्रुद्ध, रुष्ट, क्रि०-क्काब, रुष्ट होना।
दिखरुआ...सी० ह०-नी।
दिहात.. फ़ा० देह।
दीदा ..फ़ा० दीदन (देखना)।
दुमना सी० ह० हलना,-नी।
दुर्रे ..सी० ह० धुत्तू।
दूना वि० पुं० दुगना, स्त्री०-नी।
देखवार. सी० ह० बियहुआ, दे० बरदेखा।
देसवरिआ सी० ह० झरि कोलहा।
दोना . सी० ह० उरई-दुनहुया।
दोहा ..(२) वह ब्याह जिसमें दूल्हे की पहली स्त्री मर चुकी हो, सं० द्वि।

ध

धउँजब क्रि० स० काँड़ना (दे० काँड़ब), पीटना, मारकर बेकार कर देना, प्रे०-जाइब।
धनिया...सी० ह०-ना।
धनुख ..इंद्रधनुष, कहा० साँझे-बिहाने पानी, यदि शाम को इंद्रधनुष दिखे तो प्रातःकाल वर्षा अवश्य होगी।
धन्हा .कहा० न बत्त चलै न-न्है।
धरउआ ..सी० ह०-नो,-नु,-राउनु (करब)।
धरनि सी० ह०-न्नी।
धरिकार ..वै० धानुक, धनुकिनि।
धवँका सं० पुं० गर्म हवा का झोंका, -लागब।
धवलागिरि सं० पं० प्रसिद्ध पहाड़ जो उत्तर में है।
धिरइब...सं० धृ।
धिरकार सं० पुं० धिक्कार, क्रि०-ब, धिक्कारना।
धिरिष्टब क्रि० स० डाँटना, धिक्कारना, प्रे० -वाइब।
धुअँठब...सी० ह०-माय।
धुइँहर...सी० ह०-मारु।
धुनकी ..दूसरे अर्थ में सी० ह० गदरगैयाँ।
धुरकुल्ली सं० स्त्री० गाड़ी के धुरे का किनारा, पुं० -ल्ला।
धूसस ..सी० ह० दुसु।
धोकरकसा.. सी० ह० भौंतेरवा (जिसके मुँह से आग निकलती है)।
धोवन...चुरिया क-, घर का बना भोजन (जिसमें स्त्री की चूड़ी का धुलना आवश्यक है)।

न

नंगा...सी० ह०-ग।
नगरवट सं० पुं० तालाब में होनेवाली लंबी घास जिसकी जड़ में सुगंध होती और डंठल से रस्सी बनती है।
नचना...सी० ह०-चाई।
नटई...सी० ह०-ट्टी, नरी।
नटिआ सं० पुं० छोटा नाटा बैल, वै०-टुई (सी० ह०)।
नथिआ.. वै०-थुनी।
नरकट सं० पुं० लंबी घास जिसके डंठल का कलम बनता है। दे०-कुल।
नरी...(२) गले के सामने का भाग (सी० ह० ल०)।
नरों सं० पुं० सिंचाई का एक प्रकार जिसमें बिना कोहा (दे०) कटाये पानी दिया जाता है।
नरोह . सी० ह० नरो।
नव...डीगर, गड़बड़,-उमिरि, युवक,-ढ़ेर, जवान, -हड़िया, जो दूसरे के घर अपने हाथ से भोजन बनाये।
नवधुआ वि० पुं० नया (छोटा पेड़)।
नसीब सं० पुं० भाग्य,-दार, भाग्यवान्,-फूटब, -चमकब।
नसुहा...वै० रुइआ (सी० ह०), दे० नेसुहा।
नहनह...-टांड़ना (ताड़ना) होब।
नाहाँ ..उल० हां-हां (दे०)।
निछल वि० पुं० निश्छल, स्त्री०-लि।

प

पइती ..स० पवित्री।
पकन्न...(दिन या मौसम)।
पतील.. वै० पत्तुल।
पियादा..,सं० पद फ़ा० पा (पांव)।
पीठी.. सं० पिष् (पीसना)।
पेम...कलम (कमल नहीं)।

फ

फकना...कफन (अर०) ..।
फरिआब क्रि० अ० स्पष्ट होना, शुभ होना, प्रे० -वाइब (स्पष्ट करना)।
फार...यस, लंबा और तेज दिखाई पड़ना।

ब

बकाइब...सी० ह० हँसी करना, छेड़ना।

वडउखा सं० पुं० एक प्रकार का लंबा पर सख्त गन्ना, वड़+ऊखि (दे०)।
वराइव - (२) परहेज करना, बचाना, इस अर्थ में वै० वे-, भा० वराव एवं वेराव।
वहेंड आ वि० पुं० अनियंत्रित, आवारा, कहा० एकहि पुतवा-एकहि धेरिया छिनारि।
विचकुलव क्रि० अ० मोच आना।
विचलव क्रि० अ० स्थान छोड़ देना, प्रे०-लाइव।
वियहा वि० पुं० व्याहा, स्त्री०-ही-वरी, विवाह संबंध।
वियहुता सं० पुं० व्याह का कपड़ा, वि० व्याह का;-ती सारी, व्याह में आई साड़ी।
वियाकुल वि० पु० व्याकुल, स्त्री०-लि,-होव, -रहव।
वियान सं०पुं० संतति; आपन-, निज के पुत्रादि।
वीछव क्रि० स० चुनना; प्रे० विछाइव,-छवाइव, वि० वीछा, विच्छा,-छी।
वीरा...भभूति,प्रसाद (देवता का)।
वूड़व...मु०-उतिराव...।
वेझव क्रि० स० जानबूझकर किनारे हटा रहना, छोड़ने का प्रयत्न करना, सं० विध्।
वेसहूर. .फ़ा०वे+शऊर।

भ

भउर दे० आगि।
भठव...भठ...सं० भ्रष्ट।
भतार...-काटी,-गाड़ी,-भूजी, स्त्रियों के गाली देने के शब्द।
भवानी. .दे० भक्खर।
भाता सं० पुं० हलवाही करने की वह पद्धति जिसके अनुसार उसे पूरी उपज का ⅙ मिलता है, नकद नहीं। दे० भतइत।
भार...(२) भाड़।
भुइँ ..-फोर,-वर्षा में निकला छत्राक जिसका साग खाते हैं।

म

मटकोरव क्रि० स० बैठे-बैठे खाना, मजे से खाते रहना।
मटुका सं० पुं० मटका; स्त्री०-की, गीतों में-क (दधि मोर खायो मटुक मोर फोरयो)।
मड़हा...मड़ुहा नहीं।
मनजउकी वि० जो मन में आई बात कर डाले, दोनों लिंगों में एक रूप।
मनफेर सं० पुं० मनबहलाव,-करब।
मनवढ़ वि० पुं० जिसकी हिम्मत बढ़ गई हो; स्त्री०-ढ़ि, भा०-ई।
मनसेधू सं० पुं० पुरुष, मर्द, पति, वै०-सोवी।
ममिआससुर...पति या पत्नी...।
मरगज वि० पुं० बहुत मैला (कपड़ा); ब्र० मर-गजे चीर (बिहारी);-होव,-करब।
मलेपंज वि० अशक्य,थका, जिसका पंजा टूट गया हो।
मिजाँ...अर० मीजान।
मुला अव्य० परन्तु, वै०-दा।
मुसकी...व्यं० प्र०-क्का।
मेलहा ..(ब्राह्मण) जो बिना निमंत्रण के ही भीड़ में खाने आ जाय।
मोट...-हन, कुछ मोटा,-टट, थोड़ा और मोटा।
मोटहो वि० बहुत परिमाण में, अधिक (वर्षा आदि)।
मौरुसी वि० पैत्रिक, अर०।

य

यपहर...“यहपर” का विपर्यय।

र

रुसबति...फ़ा० रिश्वत।
रोवनउक वि०पुं० रोने की स्थिति में,-होब स्त्री० -कि।
रौहाल...दे० रवहाल।

ल

लङ्गोट...सं० लिङ्ग+ओट? प्र०-टा,-टिया, बच-पन का साथी।
लचलच वि० पुं० नरम, ढीला, स्त्री०-चि।

व

वनइस...वनइस-बीस, थोड़ा सा अंतर।

स

सहूर सं० पुं० ढंग, अर० शऊर।

ह

हियारी सं० स्त्री० स्मृति, समझ,-में आइव, वैठव; -सं० हृदय?

जाब (जाना) क्रिया के भिन्न रूप

पुंल्लिग

(१) वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष ऊ जात है (अहै),-जाथै, जातबा (बाय), -बाटै	वै जात हैं, जाथैं, जात अहैं,-बाटैं,-बाटेन
मध्यम पुरुष तैं जात हये,-जाथये,-जात अहे,-बाटे, तूँ जात हया,-हौ, -अहौ, आपु जात हैं (अहैं), -आथैं, -थिन	तोन्हन जात हये (जाथ्य),-जात बाट्य तूँ सब (तूँ सभें) जात हया,-बाट्य,-जाथया,-जात अह्य,-हव,-हउअ (जौ०)। आपु लोग जात हैं (अहैं),-जाथैं,-जाथिन ,, लोगे, -गै ,, ,,—,, ,,
उत्तम पुरुष मैं जात हौं (जाथौं),-अहौं,-जात बाटेउँ, -व्यों	हम जाइत है (जाइथै),-जातबाटी,-जाथई; हम जात हई,-अही; हमसब,-सबें,-सभे हम लोग,-पंचम।

(२) भूत

एकवचन	बहुवचन
अ० पु० ऊ गा, गै, गय, गवा, ग रहा, गवा रहा	वय (वै) गइन, गे, गये, ग रहे
म० पु० तैं गये, गे, गइसु, गै (गय) रहे, तूँ गयव, गयो, (रामा० गयऊ) आप,-पु गयन, गयेव, -यौं,-यो।	तोन्हन गये (गे), गयव,-येव, ग रहेव तोहरे सब, तूँ सब, तोहरे सभें, गयेव, गयव, ग रहेव, आप, -पु सब, सभें,-भै, लोग,-गे,-गन,-गै गयेव, ग रहेन
उ० पु० मैं गयों (प्र० महूँ गयों), ग रह्यों,-रहेवँ।	हम सब,पचन, -पंचन, -सभें, गयन, ग रहेन, गेन, गे रहन,-गवा रहेन

(३) भविष्य

एकवचन	बहुवचन
अ० पु० ऊ जाई,-जाये (प्र० उहै, उहवै जाई, जाये)।	वै, वन्हन, जइहैं,-हयँ
म० पु० तैं जाबे, तूँ जाब्य,-बौ (प्र० तुहूँ,-हीं..) आपु,-पे जइहैं, जाबै,-जाबौ (प्र० आपुइ,-पू,-पौ जइहैं, जाबै, जाबै)	तोन्हम, तोरे सभें जावे,-ब्य, तूँ सव,-में तोन्हने जाव्य, आप,-पु लोग,-गे, जइहैं, जाबै, जैहैं (प्र० आपुइ,-पै,-पौ ..) आप पचन,-पंचन,-सव,-सभें (रा० ब० आप हरे) जाबौ, जइहैं, जैहैं,-हौ, जइबौ
उ० पु० मैं जाबौं, जइहौं, जावूँ (प्र० महूँ,-हीं...) (छु०)	हम जाब, हम सब,-सबै, सभें,-सभै, (जइबा, ल०) जाव,-जावै,-जाबइ

स्त्रीलिंग

वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
ऊ जाति है (अहै), बाय; बाटै, बा	वै जाति हईं,-जाथईं,-जाति बाटीं,-जाथीं
तैं जाति हये (अहे),-जायये,-जाति बाटे, तूँ जाति हौ (अहौ),-जाथिउ,-बाटिउ	तोन्हहि जाति हई,-बाटी,-जाथी, तूँ सभें जाति हौ (अहौ),-जाथिउ,-जाति बाटिउ
आपु जाति हइउ,-जाथिउ,-जाति बाटिउ ,, ,, अहिउ,-जाति हईं,-जाथईं	आपु सब,-सभें,-लोग जाति हैं (अहैं) ,, ,, ,, जाथीं, जाति बाटी, -बाटिउ,-बाटू (जौ०)
मैं जाति हौं,-अहिउँ,-हइउँ,-बाटिउँ ,, जाथइउँ,-जाथिउँ	हम जाइति है (जाईथे),-जाति अहेन, ,, जाति बाटी,-अही।

भूत

एकवचन	बहुवचन
ऊ गइ, यय, गै	वइ (उइ), तै, वय, गईं
तैं गवे, गे, गइसु, गै (गय) रहे, तूँ गइन, गइउ, -ग रहिउ	तूँ सब, तूँ लोग, तूँ पचन (तोहरे पचन) गइउ, -इव, तोहरे सब, तोहरे पचन,-पंचन, गइउ,-ग रहिउ, आप,-पु सब,-लोग,-पचन,-सभें, गईं, -गइव, गयन, ग रहेन
आप,-पु गयन, गईं, ग रहेन,-रहिव,-उ, गैन, गइन	
मैं गइउँ,-ग रहिउँ।	हम गयन,-गयेन,-गे रहेन, गयी रहीं, गई रहीं।

भविष्य

एकवचन	बहुवचन
ऊ जाई,-जाये	वन्हन,-नि जइहैं,-ने (प्र०-नै), वै, उइ, जइहैं
तैं जावे,-तहूँ (प्र०) तुहूँ, आप,-पु,-पौ,-पुइ (प्र०) जइहैं, जावै।	तोन्हन (प्र०-नै,-नौ)-नि,-ने, जाब्य,-बिउ,-ब्यू -नहन,-नि, सब जाब्य, -बिउ, -ब्यू आप,-पु लोग, -सब,-सबै,-सभै,-पचन जैहैं, जइहैं
मैं (प्र० हूँ,-महीं) जावौं,-थिउँ।	हम,-सब,-पचन,-पंचन,-सबै,-सभें,-लोगै,-लोगनि जाव, जाबै,-बइ (जइबा, ल०)

पाठ्य-सामग्री

१—सर जार्ज ग्रियर्सन, लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया
२—डा० आर० एल० टर्नर, नैपाली-अंग्रेजी कोष
३—डा० बाबूराम सक्सेना, एवोल्यूशन ऑव अवधी (इंडियन प्रेस, प्रयाग)
४— ,, ,, लखीमपुरी ए डायलेक्ट ऑव अवधी
५—श्री रामाज्ञा द्विवेदी, अवधी के नामधातु तथा प्रत्यय (हिंदुस्तानी, १९३१)
६— ,, ,, अवधी की कुछ प्रवृत्तियाँ (हिंदुस्तानी, १९३३)
७— ,, ,, अवधी की कुछ पहेलियाँ (हिंदुस्तानी, १९३५)
८— ,, ,, देहात की दानाई (सम्मेलन-पत्रिका, १९३०)
९— ,, ,, अवधी तथा मैथिली में साम्य (माधुरी, १९४२)
१०— ,, ,, अवधी की कुछ कहावतें तथा लोरियाँ (वीणा, सं० १९९२)
११—डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, अवधी भाषा और साहित्य